कृमिकुष्ठनुदः चि०.१९,९१.
कृमिकुष्ठप्रशमनः सू०.१५, २९.
कृमिकुष्ठभगंदरप्रमेहक्षतनाडीव्रणरोहणाः उ०.२८, ३७.
कृमिकुष्ठी क०.२,५८.
कृमिग्रंथिः उ०.१०,९.
कृमिग्रंथिम् उ०.११,६.
कृमिघ्नम् सू०.६,५६.
" " १५,१..
" उ०.२८,२९.
" " ४०,४९.
" चि०.६,५८.
कृमिजा उ०.४०,४८.
कृमिजाकृमित्द्दद्रोगगर्दितैः चि०.६,२२.
कृमिजाम् नि०.५,३८.
कृमिजित् सू०.६,१४९.
" उ०.२४,१३.
कृमिजित्पटोलमधुपर्ण्यः चि०.१९,९१.
कृमिजित्पथ्याभल्लातकैः चि०.१९,१३.
कृमिजे उ०.२४,१५.
" चि०.६,५८.
कृमिणम् शा०.५,११६.
कृमिणोदरे चि०.२०,१९.
कृमितृड्विषम् सू० १०,१४.
कृमितृष्णाम् नि०.५,३७.
कृमिदंतकः उ०.२१,२०.
कृमिदंतकम् उ०.२२,१९.
कृमिदंतम् उ०.२२,१६.
कृमिदूषितमूर्द्धनि सू०.२०, २७.
कृमिनुत् सू०.६,७७.
कृमिभक्षणात् उ० २५,१९.
कृमिभिः नि०.५,४३.
" उ०.२३,२.
" " २४,१८.
कृमिभ्यः नि०.८,३.
कृमिमत् नि०.१३,१५.
कृमिमान् चि०.२०,२८.
कृमिशूलजित् उ० २२,२०.
कृमिशोफोदरानाहशूलपांडुकफानिलान् सू०५,८१.
कृमिश्लीपदशोफान् चि०. १२,३५.
कृमिश्लीपदत्द्दत्कंठशिरोरोगान् सू०.५,१०.
कृमिषु उ०.४०,४९.
" चि०.२०,२८.
कृमिसंभवः उ०.३३,८.
कृमिहरम् सू०.२०,३७.
कृमीन् सू०.२९,७४.
" नि०.१४,५.
" चि०.२०,३५.
कृशः सू०.१४,३४.
" " १८,४९.
" " १९,४.
" शा०.२,१६.
" नि०.७,२३.
" उ०.३५,५०.
" चि०.३,८७.
कृशक्षमिणि क०.२,५.
कृशताम् नि०.१५,१०.
कृशत्वम् सू०.७,२४.
कृशदीर्घाकृतयः शा० ३,८७.
कृशदुर्बलरूक्षाणाम् चि० ६, ८१.
कृशदुर्बलवृद्धानाम् उ०.२२, २६.
कृशम् सू०.६,६९.
" चि०.१२,३७.
कृशरः चि०.२२,३०.
कृशरया क०.१,४५.
कृशरा सू०.१६,४०.
कृशराम् चि०.१०,८५.
कृशशुष्कवराहाविगोमहिषामिषम् सू०.८,४०.
कृशशुष्कामिषासात्म्यतिलपिष्टविरूढकैः नि०.८,२.
कृशस्थूलहितम् सू०.५,६४.
कृशस्य उ०.३९,१५८.
" चि०.१०,६६.
कृशा उ०.१७,१९.
कृशाः नि०.१२,४.
कृशांगता सू०.११,१८.
" उ०.६,६.
कृशान् चि०.३,९९.
कृशानाम् सू०.५,५६.
" " ८,४८.
" नि०.२,६४.
कृशाशक्तवातलालयाशिनाम् उ०.२७,६.
कृशे सू०.१४,१६.
कृशेषु सू०.१६,२१.
कृष्णः उ०.२१,५४.
" " २५,६.
" " ३१,२४.
" " ३७,५७.
कृष्णकेशः उ०.३९,१५१.
" " " १६०.
" " " १७७.
कृष्णगंधया चि०.१८,२५.
कृष्णगंधा चि०.१८,११.
कृष्णचूचुकौ शा०.१,५१.
" चि०.१३,२८.
कृष्णताम् उ०.३५,४४.
कृष्णतिलप्रकुंचम् उ०.३९, १५९.

Indira Gandhi National
Centre for the Arts

कृष्णतिलाः शा०.२,५४.
" उ०.३२,१८.
कृष्णतिलात् चि०.१६,४१.
कृष्णतिलाद्वितीयाम् उ०. ३९,१०८.
कृष्णत्वङ्नखविण्मूत्रनेत्रवक्रः नि०.७,३३.
कृष्णदुष्टास्रविस्रावी उ०. ३५,४२.
कृष्णधान्यगुडोदश्विल्लवण्पसवचर्मणाम् शा०.६, २०.
कृष्णनीलम् नि०.६,३०.
कृष्णपराजयम् उ० ३५,२८
कृष्णपाटल्या उ०.५,४२.
कृष्णभागम् सू०.३०,२९.
कृष्णभागे उ०.११,५६.
कृष्णम् सू०.१०,२७.
" " १८,४०.
" शा०.५,३१.
" " " ७४.
" नि०.५,३२.
" " १४,३०.
" उ०.७,११.
" " ८,२.
" " " १८.
" " १०,२८.
" " १३,३९.
" " १५,११.
" " " १४.
" " २९,२०.
" " ३१,२७.
" " ३५,५३.
" " ३७,११.
" " ३८,१०.
" " ३९,१३३.
कृष्णमंडलम् उ०.१०,२३.
" " " २७.
कृष्णमृच्छंखयष्ट्याव्हक्षौद्रासृक्कंडूलोदकम् चि०.९, ९१.
कृष्णमृत् चि०.२,२६.
प्रष्णमृत्तिकया चि०.९,७३.
कृष्णमृत्तिका उ०.२४,४२.
कृष्णमृदा चि०.१५,११.
कृष्णमृल्लिप्तम् उ१.३९,७२.
कृष्णया उ०.३९,१४७.
कृष्णराजिमान् उ०.२१, ५४.
कृष्णरूक्षारुणसिरान्खविण्मूत्रनेत्रता नि० १३,९.
कृष्णलोहरजोव्योषसैंधवत्रिफलांजनैः उ०.१३,७१.
कृष्णलवेंहैः उ०.३९,१७१.
कृष्णसर्पम् चि०.१,१०४.
कृष्णसर्पवदने उ०.१३,३८.
कृष्णसर्पवसा उ०.१३,४१.
कृष्णसर्पेण उ०.३६,५८.
कृष्णसर्पोद्भवा चि० २०,१२
कृष्णस्फोटावृतः नि०.११, १०.
" " " २५
कृष्णा शा०.५,६०.
" " ६,५८.
" उ०.१२,२१.
" " १३,८२.
" चि०.१,१५९.
" " ४,४२.
" " १४,१२१.
" सू०.२२,१९.
" " २६,३६.
कृष्णाः नि०.१५,३८.
" उ०.८,६.
" " २४,४०.
" " " ४१.
कृष्णाकल्कः क०.४,२६.
कृष्णाकाकनासासितान्वितैः उ०.३४,४२.
कृष्णात् उ०.१४,११.
कृष्णातन्मूलयोः चि०.१०, १६.
कृष्णातन्मूलसैंधवम् चि०. १३,४३.
कृष्णाधात्रीफलरजः उ०. ४०,२७.
कृष्णान् उ०.२७,३६.
" " ३१,२६.
कृष्णानाम् शा०.७,५७.
" चि०.९,९२.
कृष्णानि उ०.३३,२५.
कृष्णापुराणपिण्याकशिग्रुत्वकूसिकतातसीः चि०. १७,३४.
कृष्णाम् क०.४,२९.
" चि०.३,१६.
" " ५,१६.
कृष्णायट्वैलाः उ०.२२,७५.
कृष्णायष्टीसर्षपसैंधवैः उ०. ९,२५.
कृष्णारुणकलापाभम् नि०. १४,१३.
कृष्णाविडंगत्रिफलाकषायैः चि०.९,१५.
कृष्णासन्नाः उ०.१०,१९.
कृष्णासिराततम् नि०.१२, १४.
कृष्णासैंधवाभ्याम् उ०.१६, ३४.
कृष्णास्याम् उ०.४,३९.
कृष्णाहिः उ०.३०,३०.
कृष्णाहिकंचुकैः शा०.१,८३.

Indira Gandhi National
Centre for the Arts

कृष्णे सू०.६,१४६.
" उ०.४,११.
" " १०.२२.
" " " ३१.
" क०.६,२०.
कृष्णैः उ०.३९,१६१.
कृष्णोपकंचुके उ०.३४,३२.
कृष्यते शा०.६,४०.
कृसरा उ०.३४,५८.
कृसरैः चि०.२१,३.
कृत्स्नान् चि०.१९,९७.
कृप्तनखः उ०.२६,४४.
कृप्तनखेन शा०.१,९१.
कृप्ताः चि०.१५,९१.
केचित् सू०.१९,२१.
" शा० ३,६५.
" " ५,३.
" नि०.७,$३^{२}_{०}$.
" " १४,$४^{२}_{३}$.
" " " ५१.
" " १५,३७.
" " " ४०.
" उ०.२,$७^{२}_{०}$.
" " २५,५६.
" " ४०,६०.
" चि०.१,$४^{२}_{२}$.
केदारः शा०.१,५६.
केम्बुकम् सू०.६,७६.
केम्बुकान् सू०.१४,२६.
केवलजलधौतम् उ०.३९, १३४.
केवलवातनुत् चि०.२२,५०.
केवलवातान् सू०.६,६४.
केवलवात्त्यार्ताः सू०.१९,७.
केवलवातिकः चि० २१, १५.
केवलानिलजम् चि०.३,१.
केवलानिलवीसर्पम् चि०.१, १६५.
केशघ्नम् सू०.६,१२८.
केशचक्षुषाम् सू०.२,१७.
केशदोषः सू०.२१,२२.
केशनखातिवृद्धिः नि०.१०, ३८.
केशभुवः सू०.२२,२९.
केशरोम शा०.५,६.
केशलुंचनम् उ०.३,९.
केशलुंचनवेदनाम् शा०.५, ६७.
केशशातः उ०.३,२९.
केशशातस्फुटनधूपने सू०. २२,२५.
केशसंवर्धनम् उ०.२४,४२.
केशाः उ०.३९,३१.
केशात् उ०.१२,९.
केशादाः नि०.१४,५२.
केशान् शा०.५,११८.
" उ०.१६,३०.
" " २३,२९.
" " २४,४१.
केशानाम् चि०.७,११९.
केशान्तम् उ०.१८,५२.
केशान्ते शा०.४,३२.
केशाम्बराश्रयाः नि०.१४, ४४.
केशास्थितुषभस्मादिराशौ नि०.५,१२.
केशास्यकंधरास्कंधपुष्टिला-वण्यकांतिदम् उ०.१३, ५३.
केशी उ०.६,३४.
केशेषु क०.५,१४.
केशैः उ०.३९,१७३.
केशोंदुकेन सू०.२८,३७.
केश्यः सू०.६,२१.
" " " १०८.
केश्यम् सू०.५,६०.
" " ६,१२१.
" " " १५६.
केसरम् उ०.३२,३१.
" " ३६,८३.
" चि०.१,१२६.
" " ८,१२८.
केसरयष्ट्याह्वपिप्पलीक्षीरशाड्वलैः चि०.१६, ३८.
कैंडर्यः उ०.१,४९.
कैलासः उ०.३७,२६.
कोकिलः उ०.३८,१.
कोकिला उ०.१३,७०.
कोकिलाक्षत्तनिर्व्यूहः चि०. २२,१८.
कोठः उ०.३१,३३.
कोठकुष्टार्शोव्रणजंतुजित् सू०.५,५९.
कोठपिठिकाकंडूगंडान् नि०. १४,४५.
कोठे उ०.३२,३३.
कोठोन्नतिः नि०.१४,११.
कोथः सू०.१२,५१.
" उ०.३८,४.
कोथतः उ०.३७,२३.
कोद्रवभुक् उ०.२२,७०.
कोद्रवसंस्कृतकांजिकेन चि०.१९,२३.
कोद्रवेभ्यः सू०.२३,२६.
कोद्रवैः चि०.६,६२.
कोद्रवोद्दालकैः नि०.३,१.
कीपः सू०.१२,२३.
" नि०.२,४३.
" " ७,७.

Indira Gandhi National Centre for the Arts

कोपक्षुत्ध्यानशोकभ्रमादिभिः सू०.११,३९.
कोपनः नि०.१३,६.
कोपनम् सू०.१,१६.
" नि०.१४,१२.
कोपनामिशितुरुष्कनतैः चि०.२१,६६.
कोपनैः उ०.३७,१.
कोपनैर्मलाः नि०.१३,१.
कोपम् सू०.१२,२०.
" " " २१.
" " " २२.
" " " २६.
" उ०.१६,६.
" चि०.६,२३.
कोपयेत् सू०.१३,१६.
कोपात् उ०.१६,१.
कोपिताः सू०.८,४.
कोपिते उ०.२३,१२.
कोपे सू०.१२,३४.
" नि०.२,४३.
कोमलैः सू०.३,३६.
कोरका उ०.१६,२३.
कोरदूषः सू०.६,११.
कोरदूषतृणक्षारवारिप्रक्षालनम् उ०.२४,२७.
कोरदूषाः चि०.१९,२५.
कोरिते उ०.१८,१३.
कोलकर्कंधूलकुचाम्रातमारुकम् सू०.६,१३५.
कोलगोधाहिशशजाहकाः शा०.६,२६.
कोलदाडिमघर्मांबुतक्रमद्याम्लकांजिकैः चि०.१४,२९.
कोलदाडिमतोये चि०.१०,१५.
कोलदाडिमवृक्षाम्लचुक्रीकाचुक्रीकारसः चि०.७,३१.
कोलद्विप्रस्थसंयुक्तम् चि०.१५,९३.
कोलम् क०.६,२६.
" चि०.५,५६.
" " ६,२६.
कोलमज्जसितालाजामक्षिकाविट्कणांजनम् चि०.६,१६.
कोलमज्जा सू०.६,१२३.
" उ०.३२,२०.
कोलमज्जावृषान् सू०.२२,१८.
कोलमात्रः उ०.८,११.
कोलमात्रगुटिकार्धविषांशाः चि०.१९,६४.
कोललाजामलद्राक्षापिप्पलीनागराणि चि०४,४०.
कोलवत् उ०.२१,४९.
कोलवृक्षाम्लकलशीधावनीश्रीफलैः चि०.१,३२.
कोलसमैः चि०.१६,४३.
कोलात् चि०.१४,१२.
कोलानाम् चि०.९,२९.
कोलानि चि०.११,१९.
कोलाभः उ०.२१,४०.
कोलाभाः चि०.१५,१०६.
कोलांबुमधुरौषधैः शा०.१,५९.
कोलाम्लचांपेयोः चि०.९,४८.
कोलास्थिदलतुल्यास्या सू०२५,३७.
कोलैः चि०.१४,१५.
कोविदारस्य क०.१,७.
" चि०.८,३१.
कोविदारसदिवारिणा क०.१,११.
कोशबंधेन उ०.२६,२७.
कोशवत्यौ सू०.१५,१.
कोशस्वस्तिकमुतोलीचीनदामानुवेल्लितम् सू०.२९,६०.
कोशातकारग्वधदेवदारुमूर्वाश्वदंष्ट्राकुटजार्कपाठाः क०.४,१७.
कोशातकावल्गुजकौ सू०.६,८१.
कोशातकाश्वघ्नरूपिकासप्तपर्णजम् उ०.१८,५७.
कोशातकीः सू०.३०,११.
कोशातक्यभिकःपाठासूर्यवल्यमृताभयाः उ०३५,२१.
कोशातक्या क०.१,४२.
कोशातक्याः उ०.३८,२१.
कोष्ठः उ०.२५,१३.
कोष्ठगः चि०.१०.७९.
कोष्ठगते चि०.१८,४.
कोष्ठगे चि०.२१,१६.
कोष्ठजरुजोगुल्मोदरादीन् चि०.१४,३६.
कोष्ठदाहरुजापहम् चि०१४,४९.
कोष्ठपृष्ठांसशूलजित् चि०.१४,५०.
कोष्ठभेदः उ०.२६,४०.
कोष्ठरुक्करे चि०.१०,१०.
कोष्ठघातहरम् चि० १०,१४.
कोष्ठविवर्जितम् उ०.२६,४.
कोष्ठशुद्धौ उ०.२८,३३.
कोष्ठशूली चि०.९,४७.

Indira Gandhi National Centre for the Arts

कोष्ठस्थम् चि०.१३,१८.
कोष्ठकशीर्षः नि०.१५,५२.
कोष्ठे नि०.२,३५.
" उ०.२,७.
" क०.५,२२.
" चि०.१,३३.
कोष्ठः सू०.१,९.
" " १२,४५.
" " १८,३४.
कोष्ठगता सू०.१९, ९५.
कोष्ठगाः सू०.१७,३०.
" " १८,९.
कोष्ठगे नि०.५,१४.
कोष्ठपृष्ठहृत्पार्श्वगा नि०.७, ४८.
कोष्ठप्रपन्नाम् सू०.१३,२३.
कोष्ठम् सू०.१३,१८.
" " " २२.
" " १७,३०.
" " १८,१५.
" " " ३३.
" शा०.३,५५.
" नि०.५,५५.
" " ८,४.
" " १२,२१.
" उ०.२६,४६.
" क०.६,१२.
" चि०.४,३.
कोष्ठमंत्राणि शा०.२,३४.
कोष्ठशांखाश्रयम् नि०.१३, २६.
कोष्ठशोधनकर्षणम् शा०.१, २५.
कोष्ठसंश्रिले सू०.२८,८.
कोष्ठांगानि शा०.३,१२.
कोष्ठांगेषु नि०.११,५८.
कोष्ठात् सू०.१३,१७.
कोष्ठानाम् नि०.२,३१.
कोष्ठे सू०.१२,८.
" " १६,२९.
" शा०.२,१४.
" " ४,१.
" " " १७.
" नि०.५,२१.
" " ११,३९.
" उ०.२६,३२.
" " " ४२.
" क०.२,५.
" " " ४२.
" " ५,५०.
" चि०.१,१०२.
" " १६,३५.
" " १९,२०.
" " २१,९.
कोष्णः उ०.१६,११.
" " २२,५८.
" चि०.६,३१.
कोष्णक्षीरानुपः चि०.१४, ४२.
कोष्णजलेन चि०.१४,३६.
कोष्णतोयेन चि०.६,१८.
कोष्णपानीयप्लुतेन सू०२३, ४.
कोष्णम् सू०.८,४७.
" " १९,३०.
" " २,२९.
" " २३,२.
" उ०.१६,१७.
" " " २९.
" " २६,४९.
" चि०.३,६८.
" " ४,८.
" " ५,३९.
" " ६,१०.
" " ९,६८.
" " १४,६७.
" " १५,३५.
कोष्णवारिणा क०.३,३३.
" चि०९,१०६.
" " १०,१०.
कोष्णा उ०.२५,३५.
कोष्णाः चि०.२२,३९.
कोष्णान् उ०.३७,२२.
कोष्णाम् चि०.११,५७.
कोष्णांबुतप्तेन उ०.९.३.
कोष्णांबुना चि०.८,३४.
कोष्णांबुमस्तुभिः उ०.५८.
कोष्णांबुसिक्तायाः शा०.२, २४.
कोष्णांभोमग्नया उ०.११, ३९.
कोष्णारनालेन उ० ३७,३०
कोष्णे चि०.१६,६.
कोष्णेन सू०.१९,५१.
" " २७,३७.
" उ०.१,७.
" " १४,२०.
" " ३४,१३.
" चि०.३,१९.
" " ९,११९.
" " २२,२३.
कोष्णैः चि०.८,१२४.
" " २,२४.
कोष्णौ सू०.२४,२०.
कौटजत्रिफलानिंबपटोलघननागरैः चि०.१६, २३.
कौटजम् क०.१,४५.
" " २,२३.
" चि०.१०,१३.
" " १२,४२.

Indira Gandhi National Centre for the Arts

कौटजम् चि०.८,१२८.
कौटजेंगुदकारंजबीजशम्या-
कवल्कलैः उ०.१८,४९.
कौणपः शा०.६,१५.
कौण्यम् शा०.४,९.
" नि०.१४,३५.
कौंतीरुष्णास्रोतोजसैंधवैः
उ०.१३,८६.
कौपम् सू०.३,४६.
कौलत्थः सू०.६,३२.
कौलत्थात् क०.४,२२.
कौलत्थेन चि०.७,३७.
" " १५,६८.
कौलत्थैः चि०.१७,१८.
कौशाम्रतिल्वकैरंडसुकुमार-
कमिश्रकैः चि०१३,३०.
कौष्ठिकम् उ०.३२,३३.
कौसुंभम् सू०.६,९९.
क्रकचम् चि०.८,१४८.
क्रकचेन नि०.५,४४.
क्रकरः सू०.६,४३.
~~[illegible]~~ सू०.६,५८.
क्रमविवर्धितभागसमास्तृता-
न् चि०.८,१५७.
क्रमवृद्धम् उ०.२८,३८.
क्रमवृद्धैः उ०.१३,४४.
क्रमवृत्त्या उ०.३९,९८.
क्रमात्ययः चि०.१९,५५.
क्रमुककुटरणी सू०१५,४५.
क्रमुकधवकुलिंगच्छागकर्णा-
श्वकर्णाः सू०.१५,१९.
क्रमेणाल्पाल्पम् चि०७,५२
क्रमैः उ०.५,२०.
क्रशिमा सू०.१४,३३.
क्रव्यभोजिनाम् चि०८,८५
क्रव्यादाः सू०.६,६०.
क्रव्यान्मांसम् चि०.५,६.
क्रव्यान्मांसरसेन चि०.५,
१५.
क्रव्यामिशितनिर्यूहम् चि०.
३,८७.
क्रिमिहृद्रोगलिंगैः नि०.५,
३८.
क्रियाकालम् सू०.१३,३६.
क्रियाक्रमः सू०.४,१६.
" उ०.३४,११.
" चि०.१,२.
क्रियाक्रमम् चि०.१६,५७.
क्रियातियोगभीशोकचिंता-
व्यायाममैथुनैः नि०.१,
१५.
क्रियानिवृत्ते चि०.१५,७७.
क्रियायोगैः उ०.२२,२३.
क्रियासौकर्यतः सू०.२६,
३२.
क्रीडाविहंगैः चि०.७,७८.
क्रुद्धः नि०.११,२१.
" " " ४९.
" " १३,६५.
" " १५,७.
" " " १६.
" " १६,३.
" उ०.२,६३.
" " १०,१.
" " १९,१५.
" " २६,१९.
" " ३३,२९.
" " " ४४.
" " ३६,८.
क्रुद्धगंधवहार्दितः नि०.४,
१६.
क्रुद्धज्वरिततांताक्षिशिरोरु-
कृशीकजागरे सू०.२३.
२२.
क्रुद्धम् नि०.१६,८.
" उ०.३६,८७.
क्रुद्धाः सू०.४,२६.
" नि०.१,२४.
" " ११,३६.
" उ०.५,४९.
" " १९,२.
" " २१,३.
क्रुद्धे शा०.२,१६.
" नि०,१०,१९.
क्रुद्धैः उ०.७,३५.
क्रूरः सू०.१,९.
" " १८,३४.
" शा०.६,१५.
" नि०.२,२.
क्रूरकर्माणम् शा०.६,३.
क्रूरकोष्ठ सू०. १८,५२.
क्रूरम् उ०.४,२८.
क्रूराणाम् शा०.६,१९.
क्रूराशय क०.५,६.
क्रूरे सू०.१६,२९.
" क०.२,५.
" चि०.१९,२०.
क्रोधः नि०.२,१.
" " ६,९.
" " ७,१९.
" उ०.६,१०.
क्रोधजः चि०.१,१६८.
क्रोधनः नि०.६,२७.
क्रोधनम् उ०.४,१६.
" " " १९.
क्रोधम् सू०.२९.७९.
" उ०.२०,९.
" चि०.२२,[illegible].
क्रोधशोकभयैः सू०.७,५७.
क्रोधात् नि०.२,४२.
क्रोधादिजम् चि०.११,६८.

Indira Gandhi National
Centre for the Arts

क्रोधेन शा०.३,९४.
" चि०.१,१६८.
क्रोशनम् उ०.३,१६.
क्रोष्टुकशीर्षके सू०.२७,१६.
क्रोष्टुकशीर्षवत् नि०.१५,५२.
क्रौंचस्य सू०.७,१५.
क्रौंचादनम् सू०.६,९१.
क्रौंचोष्ट्रासभास्थीनि चि०.११,२८.
क्लमः सू०.२,१२.
" " १६,३०.
" " २६,४५.
" शा०.१,७४.
" " २,२३.
" नि०.२,८.
" " ३,५.
" " ५,४१.
" " " ४९.
" " ८,२०.
" " १६,४४.
" उ०.३५,११.
क्लमनाशः सू०.२०,२९.
क्लमम् चि०.२२,२७.
क्लमांगभंगवमथुक्षवथुश्वयथुज्वरैः नि०.७,२५.
क्लमापाये उ०.३९,१२१.
क्लांतदेहस्य नि०.९,३७.
क्लांता सू०.२४,१२.
क्लांतान् सू०.७,५७.
क्लियति उ०.२६,३५.
क्लियते सू०.७,४.
क्लिन्नः नि०.१३,६३.
क्लिन्नभिन्नांत्रभेदेन उ०.२६,४०.
क्लिन्नम् सू०.१९,१४.
" उ०.३१,१८.
क्लिन्नांत्रः उ०.२६,४१.
क्लिन्नैः उ०.३०,श्लो०.१८.
क्लिष्टः नि०.१३,५५.
" उ०.३५,५४.
क्लिष्टम् उ०.७,३७.
क्लिष्टाख्यवर्त्मनी उ०८,१७.
क्लिष्टे नि०.५,३७.
क्लीबः शा०.१,५.
क्लीबक्रूरश्वपाकानाम् शा०.६,२१.
क्लीबता सू०.७,५३.
क्लीबम् शा०.१,७२.
क्लेदः सू०.१२,५१.
" " २९,४५.
" नि०.१४,३४.
क्लेदकः सू०.१२,१७.
क्लेदकंडूघ्नम् उ०.१६,५२.
क्लेदजंत्वाढ्यम् नि०.१४,२५.
क्लेदनः सू०.१०,१०.
क्लेदनाय सू०.३०,३२.
क्लेदबहुलाः उ०.२३,२२.
क्लेदम् उ०.१८,२९.
क्लेदमेदोवसामज्जाशकृन्मूत्रोपशोषणः सू०.१०,१५.
क्लेदमेदोविशोषणः सू०.१०,२०.
क्लेदयन् उ०.२८,१६.
क्लेदयित्वा उ०.१३,३९.
क्लेदरुजा नि०.१०,२७.
क्लेदवर्जिताः उ०.२५,२२.
क्लेदवाहनम् सू०.११,५.
क्लेदविधृतिः सू०.११,५.
क्लेदस्तंभनः उ०.३४,५७.
क्लेदहरः सू०.२८,४२.
क्लेदा नि०.१०,३०.
क्लेदात् नि०.११,१७.
क्लेदिते उ०.२३,१२.
क्लेदिनः उ०.२५,६७.
क्लेदी उ०.३७,४९.
क्लेदे चि०.१३,२२.
" " १९,९०.
क्लेदेन उ०.३७,५८.
क्लेशभीरवः शा०.३,९५.
क्लेशप्रायम् चि०.७,८८.
क्लेशयंति सू०.१३,२१.
" " १८,५२.
क्लेशैः उ०.४०,५.
क्लैब्यव्याधिर्यतोमर्यशर्कराश्मरिपीडितः चि०.७,२५.
क्लैब्याभिमार्दवछर्दिरामप्रायविकारदाः नि०.७,४१.
क्लोमफुप्फुसम् शा०.३,१२.
क्लोम्नि नि०.११,१४.
क्वणन् नि०.९,११.
क्वणेत् उ०.३,३३.
क्वथन् नि०.४,१३.
क्वथितः उ०.२२,१०५.
क्वथितकल्कितैः चि०११,३.
क्वथितम् उ०.२,१८.
" चि०.३,५४.
" " " ७७.
" " ६,६०.
" " १४,४९.
" " १८,५.
" " २१,५५.
क्वथितशीतम् चि०.१,७८.
क्वथितशीतलम् सू०.५,१८.
क्वथिता चि०.१२,६.
क्वथिताः शा०.२,८.
" उ०.२२,७४.
" चि०.९,१०५.
" " १८,७.

Indira Gandhi National Centre for the Arts

क्वथितैः उ०.११,२१.
" " २२,६०.
" चि०.१,१३९.
क्वाथः उ०.१६,११.
" " " १३.
" " " ३३.
" " २२,५५.
" " " ७८.
" " २५,४२.
" " ३४,४.
" क०.६,१०.
" चि०.१,६०.
" " " ८९.
" " " १३०.
" " ६,१५.
" " " ३१.
" " " ६८.
" " ७,१६.
" " ९,९६.
" " ११,३१.
" " १६,१३.
" " १७,३२.
" " १९,३७.
क्वाथद्वयम् क०.५,४.
क्वाथनात् उ०.२२,९०.
क्वाथम् सू०.१९,४५.
" शा०.२,४१.
" उ०.५,७.
" " ९,२६.
" " १३,६८.
" " २२,१०३.
" " ३८,२६.
" क०.१,२५.
" " ६,१४.
" चि०.१,११८.
" " " १२८.
" " ६,५१.
" " ८,१३.
" " " १५३.
" " ९,५३.
" " " ५८.
" " १५,८७.
" " २२,१४.
क्वाथयित्वा उ०.२,१४.
" चि०.२०,२०.
क्वाथयेत् सू०.१९,३६.
" " २०,३७.
" उ०.१३,७.
" " ३९,८६.
" चि०.१,१२०.
" " १०,५४.
क्वाथाः चि०.१,१५२.
" " २,२७.
क्वाथाढके उ०.३९,७९.
क्वाथात् सू०.१४,३९.
क्वाथाभ्याम् चि०.२१,६३.
क्वाथे उ०.३,५२.
" " १६,५०.
" क०.१,२४.
" चि०.३,९२.
" " ४,२०.
" " ६,५१.
" " ८,१०५.
" " ११,२०.
" " " २३.
" " " ३८.
" " १३,१६.
" " १४,१५.
क्वाथेन उ०.९,२.
" " २२,८२.
" " २८,४१.
" " ३९,११९.
" क०.१,१०.
" " " ४२.
" " २,४५.
" चि०.३,१२०.
" " १४,१२१.
" " १५,३०.
क्वाथैः उ०.१४,२१.
" " २२,१३.
" " " २२.
" " ३९,१३४.
" " " १३६.
" क०.५,३७.
" " १५,४९.
क्वाथौषधव्यत्यययोजनेन उ०.२२,९५.
क्वाथ्यम् उ०.१३,१०.
" चि०.२१,६३.
क्षणादिः सू०.१,२४.
क्षनिणाम् उ०.३९,१४४.
क्षणोति उ०.२८,१९.
क्षतः चि०.३,८७.
क्षतकासे चि०.३,१७६.
क्षतक्षयस्वरभ्रंशप्लीहशोकाढ्यमारुतान् चि०.३,८२.
क्षतक्षामबालवृद्धसुखात्मसु सू०.२०,२६.
क्षतक्षीणपरीसर्पशस्त्राग्निग्लपितात्मनाम् सू०.५,३८.
क्षतक्षीणबलावहः चि०.९,९७.
क्षतक्षीणहितम् सू०.५,२२.
क्षतक्षीणहिताः सू०.५,४९.
क्षतक्षीणे चि०.१,१५.
क्षतच्छेददाहाद्यैः नि०.२,३८.
क्षतजः नि०.३,३६.
" उ०.२८,२०.

Indira Gandhi National Centre for the Arts

" " " २८.
क्षतजनिते चि०.१७,४०.
क्षतजम् चि०.१७,४०.
क्षतजागमः उ०.३६,३६.
क्षतजात्यर्थप्रवृत्तेः शा०.४, ६४.
क्षतजिह्वः उ०.३,३३.
क्षतजौ उ०.२१,९.
क्षततः उ०.२८,१९.
क्षतदोषे चि०.३,१४६.
क्षतनेत्रवत् उ०.२६,१९.
क्षतपित्तज्वरोक्तम् चि०.६, ४३.
क्षतपित्तास्रकृत्सौतुकुपित्तचक्षुषाम् सू०.२,६.
क्षतम् उ०.३४,३९.
" " ३९,२८.
क्षतवत् उ०.२७,६.
क्षतविद्रधौ उ०.१८,३६.
क्षतविधिम् उ०.३४.१९.
क्षतशुक्रकम् उ०.१०,२३.
" " ११,३३.
क्षतशुक्रम् उ०.११,३४.
क्षतशुक्रे उ०.११,३०.
क्षतसर्वोत्थौ नि०.१३,६७.
क्षतात् नि०.१३,६५.
" " ३६,३६.
क्षतिनाम् चि०.३,१२५.
क्षती चि०.३,७५.
क्षते सू०.२२,६.
" नि०.३,२८.
" " ९,१०.
" " ११,११.
" " १४,३६.
" उ०.१७,१४.
" " ३१,२१.
" क०.२,३१.
" चि०.३,७२.
" " " ९३.
" " " १४५.
" " ५,३३.
क्षतेन नि०.११,३.
क्षतोद्भवः सू०.२९,१२.
क्षतोरस्कः सू०.१९,४.
" चि०.३,९०.
क्षतोष्मणाः उ०.२६,७.
क्षतोष्मा नि०.११,११.
क्षपणानि चि०.२१,४९.
क्षपणेन चि०.१,१४६.
क्षप्येत् सू०.१०,१४.
" नि०.२,६०.
क्षपाशयः सू०.१६,२५.
क्षपिते चि०.१,३.
क्षमावान् सू०.४,३६.
" शा०.३,१०१.
क्षयः सू०.२,९.
" " " १२.
" " ११,२५.
" शा०.३,१०५.
" नि०.५,१.
" " " ३.
क्षयकासः चि०.३,१७८.
क्षयकासनिपीडितः चि०.३, १६०.
क्षयकासवान् चि०.३,१५२.
क्षयकासहरैः चि०.६,८०.
क्षयकासिनाम् चि०.३, १६५.
क्षयकासिने चि०.३,१७५.
क्षयकासिभ्यः चि०३,१७७
क्षयकासे चि०.३,१७६.
क्षयजः नि०.३,३६.
क्षयजायताम् चि०.६,७९.
क्षयजे चि०.३,१५०.
क्षयप्रदम् उ०.१९,३.
क्षयम् सू०.११,२३.
" " " २५.
" " १२,५९.
" शा०.१,७.
" उ०.३४,३९.
" " ४०,३१.
" चि०.१,९१.
" " ३,१३०.
" " ७,८९.
" " १४,७१.
क्षयरूपाणि नि०.३,३५.
क्षयवृद्धिभाक् नि०.२,६५.
" उ०.२९,२५.
क्षयसमताविवृद्धिभेदैः सू०. १२,७८.
क्षयहितम् चि०.६,७९.
क्षयहेतुकः नि०.१५,४१.
क्षयात् सू०.११,४५.
" शा०.४,५.
" नि०.५,२४.
" " " २६.
क्षयाय चि०.३,१८.
क्षयी शा०.५,१०१.
" नि०.५,२२.
" उ०.३५,५२.
क्षये शा०.५,९४.
" चि०.५,३३.
" " २१,५४.
क्षयेण सू०.११,२४.
क्षवः नि०.२,४१.
" " " ७९.
" " ५,७.
" उ०.१९,३.
" " " २६.
क्षवकसरसिभागी सू०.१५, ३०.

Indira Gandhi National
Centre for the Arts

क्षवकासादिषु शा०.५,२३.
क्षवग्रहः नि०.१५,३५.
क्षवथुम् उ०.१४,१८,
" " १९.१५.
क्षवथूद्गारकास्वप्नान्नमैथूनम् सू०.२,४०.
क्षवथूद्गारच्छर्दिनिद्रावधारणैः नि०.१६,२१?
क्षवथूद्गाधारणम् उ०.३३,४६.
क्षवथूद्गारविष्टंभत्वद्दूग्रहारोचकप्रदाः नि०.७,३१.
क्षवथोः नि०.२,१७.
" उ०.१९,१३.
क्षवथौ उ०.२०,१८.
क्षवपुटप्रणुत् उ०.११,१९.
क्षववत् सू०.४,१६.
क्षवानुगाम् नि०.४,२०.
क्षामः सू०.११,४.
" नि०.५,२४.
" " ७,२३.
" उ०.३,३४.
" चि०.३,८५.
" " १५,२७.
क्षामक्षीणकृशांगानाम् चि० ३,१११.
क्षामक्षीणकृशान् चि०.१०,७६.
क्षामता सू०.१८,२६.
" " २०,२५.
" शा०.१,५०.
" नि०.५,५०.
क्षामतादिकम् नि० ११,५१.
क्षामतोद्गारभूरिता नि०.७,१८.
क्षामत्ववेगितास्वेदाः सू०.२७,३६.
क्षामदेहबलानलम् क०.५,५१.
क्षामप्रसन्नवदनाम् शा०.१,२१.
क्षामभिन्नस्वरः नि०.७,२६.
क्षामस्वरः सू०.७,१४.
क्षारः सू०.६,१४९.
" " १०,२७.
" " १४,२४.
" " ३०,१.
" " " २०.
" " " २५.
" " " ३९.
" उ०.११,४५.
" " १८,२६.
" " २२,१०.
" चि०.३,१२.
" " ७,७.
" " ८,१३१.
" " " १४१.
" " १०,५८.
" " ११,३२.
" " १४,१०६.
" " " १०७.
" " १९,५६.
क्षारकर्मणा उ०.२५,५०.
क्षारक्षीरयवाग्वादिद्रव्यैः चि०.११,२७.
क्षारघृताम्ललवणैः चि०.६,३०.
क्षारचूर्णात् चि०.२१,१६.
क्षारचूर्णासवारिष्टमूत्रतक्राणि चि०.१७,३४.
क्षारचूर्णासवारिष्टान् चि०.१०,७३.
क्षारचूर्णैः उ०.२२,१८.
क्षारताम् चि०.७,५.
क्षारतैलम् उ०.१८,३०.
क्षारतोयवत् नि०.१०,१४.
क्षारत्वात् चि०.१४,१०७.
क्षारदग्धम् सू०.३०,३३.
क्षारदग्धाः सू०.२९,७३.
क्षारद्वयम् चि०.२०,१६.
क्षारनिस्यंदम् सू०.३०,१५.
क्षारपीतेन उ०.३०,३८.
क्षारबुद्बुदकोपमः उ०.१०,३.
क्षारम् सू०.३०,२७.
" " " ३१.
" उ०.२२,३९.
" " २७,३५.
" चि०.२,४४.
" " ३,१६९.
" " ४,२७.
" " " ३१.
" " १०,१३.
" " ११,९.
" " १४,१०५.
" " " १२५,
" " १५,८६.
" " " १०३.
" " २०,५.
क्षारमूत्रान्वितान् चि०.२१,५१.
क्षाररास्नावचाहिंगुपाठायष्याह्वधान्यकैः चि०,३,४.
क्षारलेपः सू०.३०,२९.
क्षारवन्हिभ्याम् उ०.९,४१.
क्षारवारितान् सू०.३०,४४.
क्षारविषाग्निजात् सू०.२९,५२.
क्षारविषाग्न्यादीन् शा०.४,६९.

Indira Gandhi National Centre for the Arts

क्षारव्योषान्वितैः चि०.१७, १८.
क्षारसंयुते चि०.८,२०.
क्षारसाध्ये सू०.३०,२७.
क्षारसूक्तैः उ०.२८,२७.
क्षारस्य चि०.१०,६४.
क्षाराः उ०.२५,३७.
" चि०.१४,१०२.
क्षाराग्निभ्याम् उ०३०,१७.
क्षाराज्यम् चि०.१५,८८.
क्षारात् सू०.३०,४०.
" चि०.१५,७२.
क्षारान् चि०.६,५३.
" " १५,६९.
क्षारांबु सू०.३०,२३.
क्षारांबुगंडूषः सू०.२२,९.
क्षारांबुना सू०.२९,७६.
क्षाराम्लतीक्ष्णोष्णलवणः क०.५,२३.
क्षारारिष्टाग्निकर्मभिः चि०. १४,१००.
क्षारे सू०.२५,३६.
" उ०.३९,२५.
" चि०.२०,१४.
क्षारेण नि०.१०,१४.
" उ०.२२,१६.
" " २८,२५.
" " " २६.
" " ३२,१०.
" " " १४.
" " ३५,४६.
" क०.४,३५.
" चि०.४,५१.
" " ८,३.
" " १४,१२३.
" " १५,९५.
" " १८,३३.
क्षारेणाक्तः चि०.२०,१०.
क्षारैः चि०.१५,४६.
क्षारोक्षितक्षतसमव्यथः उ०.२५,८.
क्षारोक्षितक्षतसमाः उ०. २१,६१.
क्षारोक्षितक्षताक्षित्वम् उ०. १५,९.
क्षारोत्थे सू०.३०,१६.
क्षारोदकनिभम् नि०५,३३.
क्षारोदकेन चि०.११,१४.
क्षारोषितैः उ०.२२,११०.
क्षारौ चि०.३,१५९.
" " १०,१४.
" " " ६१.
" " १५,१५.
" " " २६.
क्षारौषधक्रमे सू०.२५,३८.
क्षारौषधानि उ०.२५,३७.
क्षालनम् सू०.२३,२६.
" उ०.९,१७.
" " २५,४२.
" " ३४,४.
क्षालनाद्येषु उ०.२५,४१.
क्षालयते सू०.१०,३.
क्षालयित्वा सू०.२९,२५.
" उ०.३८,१९.
क्षालयेत् चि०.५,४६.
क्षालितम् चि०.१३,४.
क्षिणुयात् सू०.१२,७२.
क्षिण्वन् क०.५,२४.
क्षितौ उ०.७,८.
क्षिपन् नि०.३,२०.
" " ४,१७.
क्षिपाः उ०.२७,३६.
क्षिप्रकारी उ०.२३,१७.
क्षिप्रजः उ०.२५,७.
क्षिप्रजाः उ०.२१,४३.
क्षिप्रपाकम् नि०.१२,१७.
क्षिप्रपाका नि०.१०,३२.
क्षिप्रपाकार्तिरागिणी उ०. २१,४३.
क्षिप्रमर्मणः सू०.२७,१७.
क्षिप्रापालपवृहतीनितंबस्तनरोहिताः शा०.४,५४.
क्षिप्रोत्थानप्रपाकः नि०. ११,८.
क्षिप्रोत्थानशमः नि०.१३. ३१.
क्षीणः सू०.११,३५.
" नि०.१०,२०.
" चि०.३,८७.
क्षीणक्षतदुर्बलमूर्छितकृशशुष्कशुद्धदेहनाम् क०.४, ७२.
क्षीणक्षतातिसारासृक्पित्तदाहानुबंधजान् चि०.४, १९.
क्षीणक्षतोरस्कः चि०.३, ८५.
क्षीणक्षामशरीरस्य चि०. १०,६७.
क्षीणदेहः चि०.३,१५२.
क्षीणदेहस्य शा०.५,१०६.
" नि०.४,३०.
क्षीणपानीये सू०.३०.२३.
क्षीणपापस्य चि०.२०,१८.
क्षीणम् सू०.४,२२.
" शा०.१,११.
" " ५,७९.
" नि०.५,२३.
" उ०.२६,५७.
" चि०.७,५०.
क्षीणविट्कस्य क०.५,२७.

Indira Gandhi National Centre for the Arts

क्षीणशुक्रबलेंद्रियः चि०.३,९०.
क्षीणस्य शा०.५,१०१.
„ नि०.३,३२.
„ „ ११,१९.
„ „ १२,३७.
„ उ०.६,३.
क्षीणस्वरधातुबलानम् शा०.५,१०१.
क्षीणाः सू०.११,४३.
„ „ „ ४४.
क्षीणान् शा०.५,१०२.
क्षीणानाम् सू०.१६,४४.
„ नि०.३,३६.
क्षीणास्त्ररेतसः सू०.१६,५.
क्षीणे सू०.८,५०.
„ „ ११,१५.
„ शा०.१,१४.
„ नि०.२,६६.
„ „ १०,५.
„ उ०.२१,८.
„ क०.२,३१.
„ चि०.७,२९.
„ „ „ ४७.
„ „ „ ४९.
„ „ ९,११६.
„ „ „ १२०.
„ „ १०,६९.
„ „ „ ८१.
„ „ १८,९.
क्षीणेषु नि०.१०,४०.
„ चि०.३,१५२.
„ „ १०,९१.
क्षीणैः सू०.१२,७६.
क्षीयते सू०.३,२७.
„ नि०.१२,६.
„ उ०.३३,४५.
क्षीणमाणामयप्राणाः उ०.४०,६१.
क्षीयेत सू०.११,३९.
क्षीरकाकोलीम् क०.४,६०.
क्षीरकुंभसहितम् उ०.३९,७६.
क्षीरकुंभे उ०.१३,३९.
क्षीरक्षीरान्नसेविनम् उ०.२,३२.
क्षीरक्षौद्रघृतोपेतम् उ०.९,३३.
क्षीरघृतम् शा०.२,४.
„ चि०.६,६४.
क्षीरघृताशित्वात् उ०.९,८.
क्षीरघृते सू०.५,४२.
„ उ०.४०.५४.
क्षीरघृतैः सू०.११,३१.
क्षीरचतुर्गुणं चि०.३,१०२.
„ „ ५,२१.
क्षीरजले क०.४,४५.
क्षीरजीवनीयसितोत्पलैः उ०.१३,६७.
क्षीरण्योषधः उ०.१,१८.
क्षीरतः उ०.३९,१७१.
„ चि०.१३,१४.
क्षीरतुल्येन उ०.३४,३६.
क्षीरदध्याज्यमिश्रकोदनगुग्गुलुः उ०.५,३४.
क्षीरद्राक्षारसाढके चि०.३,१६१.
क्षीरद्राक्षेक्षुकाश्मर्यस्वादुस्कंधवराम्रसैः क०.२,८.
क्षीरद्रुमत्वग्भिः चि०९,८०.
क्षीरद्रोणम् चि०.१५,३२.
क्षीरद्रोणे उ०.७,२६.
क्षीरद्विगुणितः चि०.८,१३०.
क्षीरद्विप्रस्थसंयुक्तम् क०४,३८.
क्षीरद्विप्रस्थसंयुतम् उ०.१८,९.
क्षीरधात्रीविदारीक्षुछागमांसरसान्वितम् चि०.३,९६.
क्षीरपः उ०.३९,५८.
क्षीरपक्वम् चि०.३,७८.
क्षीरपानम् चि०.१५,९८.
क्षीरपिष्टक्षुम् चि०२२,३४.
क्षीरपिष्टाः उ०.३२,१६.
क्षीरपिष्टानि उ०.२४,४२.
क्षीरपिष्टैः उ०.३२,१५.
क्षीरपेया सू०.१६,४१.
„ शा०.१,६४.
क्षीरप्रयोगम् चि०.७,५२.
क्षीरप्रस्थे चि०.८,१२६.
क्षीरबस्तयः चि०.१५,९७.
क्षीरबस्तिभिः चि०१५,६१.
„ „ २२,१३.
क्षीरबस्तीन् चि०.१६,५५.
क्षीरभुक् उ०.२४,३४.
क्षीरभुजः उ०.२४,३६.
क्षीरभोजनः चि०.९,८८.
„ „ १७,१०.
क्षीरम् सू०.३,३३.
„ „ ४,२२.
„ „ १८,१४.
„ „ २२,३.
„ „ २६,४३.
„ शा०.२,५९.
„ „ „ ६०.
„ उ०.१,१६.
„ „ „ ३८.
„ „ „ ४५.
„ „ ९,१८.

Indira Gandhi National Centre for the Arts

" " " ३०.
" " १३,२.
" " २२,१४.
" " २४,४.
" " " ३९.
" " २६,५३.
" " ३२,३२.
" " ३७,३३.
" " ३९,३०.
" " ४०,१७.
" " " ३१.
" " " ५१.
" क०.१,१२.
" " " २८.
" " " २९.
" २,४५.
" चि०.१,१९.
" " " १०६.
" " " ११४.
" " " १२२.
" " २,११.
" " " ३६.
" " ३,३६.
" " ३,६७.
" " " १७५.
" " ५,६.
" " ६,४०.
" " " ८३.
" " ७,५०.
" " " ५३.
" " ८,१३.
" " ९,३८.
" " " ६८.
" " ११,३३.
" " १४,६३.
" " " ६८.
" " १५,४१.

" " " ५५.
" " " ६५.
" " " १३१.
" " १६,८.
" " १७,३०.
" " २१,६७.
" " २२,७.
" " " ९.
" " " १०.
" " " २३.
" " " ५५.
" " " ५९.
क्षीरमद्यरसान् सू०.७,६५.
क्षीरमद्यवसासु उ०.१३, २६.
क्षीरमस्तुयुतम् उ०.२,४२.
क्षीरमांसरसाशनः चि०.३, १८.
क्षीरमांसरसाशिनम् उ०. ४०,८.
क्षीरमांसरसाशिना चि०. ३,९८.
क्षीरमांसाद्यैः सू०.६,३०.
क्षीरयुतम् चि०.३,११८.
क्षीररोपणभैषज्यसृतेन उ०. २५,५७.
क्षीरवर्जिता क०.४,४८.
क्षीरवान् चि०.२२,५४.
क्षीरवृत्तिः उ०.३९,५५.
" चि०.३,११८.
" " १५,११८.
क्षीरवेधुकम् उ०.४०,६७.
क्षीरशुक्ला सू०.१०,२४.
क्षीरशृंगत्वचः शा०.२,५६.
क्षीरशेषम् क०.४,३८.
" " " ४५.
" चि०.१,११८.

" " १४,४५.
क्षीरशेषे चि०.८,१२७.
क्षीरसंयुतम् उ०.१३,४९.
क्षीरसंतानम् क०.१,२१.
क्षीरसमम् उ०.२४,४८.
" " ३०,२९.
" चि०.१,९३.
" " १४,६७.
" " २२,४५.
क्षीरसर्पिः उ०.१३,९३.
" " २२,५४.
" चि०.५,४२.
क्षीरसर्पिषा उ०.११,५७.
" " ३९,९९.
क्षीरसर्पिषी उ०.२४,१२.
क्षीरसर्पिषिम् चि०.५,८३.
क्षीरसौहित्यम् चि०.९,३८.
क्षीरस्य सू०.९,२७.
क्षीरज्यतक्रमद्यादिभिः चि०.१४,१०५.
क्षीराज्यैः शा०.१,२०.
क्षीरांजलिभ्याम् उ०.[illegible], १०६.
क्षीराणि चि०.२०,३५.
क्षीरात् शा०.३,९.
" उ०.२४,३७.
" " ३४,६५.
" क०.४,२१.
" चि०.३,८९.
" " ५,१९.
" " " २५.
" " ८,३०.
" " २१,६३.
क्षीरादीन् चि०.२,४७.
क्षीरानुपानम् चि०.९,८७.
" " २२,१२
क्षीरान्नभुक् चि०.११,३४.

Indira Gandhi National Centre for the Arts

क्षीरान्नम् उ०.९,३०.
क्षीरान्नादाः उ०.३९,५८.
क्षीरान्नोभयवर्तनः उ० ३,१.
क्षीरार्थः चि०.१४,२६.
क्षीरार्धदग्धम् उ०.१३,४२.
क्षीरालसकम् उ०.२,२३.
" उ०.२४,५.
क्षीरावशिष्टम् चि०.९.४०.
क्षीराशनः उ०.३९,१६३.
•क्षीराशी चि०.९,८७.
" " १५,४१.
क्षीराष्टांशम् उ०.१३,९३.
क्षीरिणाम् उ०.२२,१३.
क्षीरिण्यौ सू०.१०,२४.
क्षीरितोयेन चि०.१३,४.
क्षीरिद्रुमाणाम् उ०.३४,३.
क्षीरिभ्यः उ०.३,६०.
क्षीरिवृक्षकषायेण उ०.१,६.
क्षीरिवृक्षजैः उ०.३७,६९.
क्षीरिवृक्षत्वगंकुरैः उ०.३२.१५.
क्षीरिवृक्षत्वगालेपः उ०.३७,२६.
क्षीरिवृक्षांबु उ०.३२,३२.
" चि०.११,५६.
" " १२,३९.
क्षीरिवृक्षांबुगंडूषः उ०.२२,४२.
क्षीरीभूर्जार्जुनकदंबजैः सू०.२९,७२.
क्षीरीवृक्षकषायेण चि०.११,५९.
क्षीरीवृक्षांकुरक्काथकल्कसिद्धम् चि०.५,४०.
क्षीरीवृक्षैः चि०.६,६९.
क्षीरे सू०.७,७.
" शा०.१,३९.
" " " ८८.
" उ०.९,१३.
" " १३,४९.
" " १६,१०.
" " १८,२३.
" " २०,१२.
" " २४,६.
" " २५,३१.
" " २७,३६.
" " ३४,४२.
" " ३४,५२.
" " ४०,२३.
" क०.४,४९.
" चि०.३,७४.
" " " ७६.
" " " ९२.
" " ९,५३.
" " २१,६१.
क्षीरेक्षुगोक्षुरद्राक्षादिः सू०.१०,२५.
क्षीरेक्षुधात्रीनिर्यासे चि०.१३,१७.
क्षीरेक्षुरसगौडिकाः चि०.३,२४.
क्षीरेक्षुरसयोः उ०.७,२६.
क्षीरेक्षुविकृतिः सू०.२९,३९.
क्षीरेक्षुस्वरसद्रवैः उ०.२५,२७.
क्षीरेक्ष्वादिरसप्लुतान् चि०.२,४६.
क्षीरेण सू०.१८,३४.
" " २०,६.
" शा०.१,४०.
" उ०.११,२१.
" " २४,९.
" " " ३८.
" " २६,४५.
" " ३९,४४.
" " " ५७.
" " " ५८.
" " " १४२.
" " " १६४.
" " ४०,३४.
" क०.४,१५.
" चि०.३,३९.
" " " ७३.
" " " १२०.
" " ८,६३.
" " ९,८८.
" " १४,५२.
" " १५,४२.
" " " ६२.
" " १६,९.
" " १८,२२.
" " २०,११.
" " २२,३.
क्षीरैः चि०.३,३.
" " ६,३.
" " २२,२५.
क्षीरोचितस्य चि०.१,१०५.
क्षीरोदकात् सू०.२६,४३.
क्षीरोदके चि०.१४,४५.
क्षीरोदनाशनः चि०.२२,११.
क्षीरोद्भवम् सू०.५,३६.
" चि०.९,८७.
क्षुद्रान् चि०.१,३७.
क्षुण्णपीडितात् उ०.३४,३६.
क्षुण्णम् चि०.२,४०.
क्षुण्णाद्याः क०.६,९.
क्षुण्णानि उ०३०,श्लो०१८.
क्षुण्णाम् चि०.३,६२.

Indira Gandhi National Centre for the Arts

क्षुण्णे उ०.२४,४.
क्षुत् नि०.२,५४.
" चि०.१,३.
क्षुतजृंभितविण्मूत्रस्त्रीसेवा-शस्त्रकर्मणाम् सू०.२१,५.
क्षुतम् शा०.६,१७.
क्षुतिम् सू०.४,११.
क्षुतिहास्यविजृंभणम् सू०.२,३५.
क्षुत्तृट्श्रमनेत्रामयव्रणान् सू०.६,३७.
क्षुत्तृट्सह्योदयः सू०.१४,१७.
क्षुत्तृड्दुःखक्लेशधर्मैः शा०.३,९६.
क्षुत्तृड्रुचिप्रभामेधाधीशौ-र्यतनुमार्दवैः सू०११,३.
क्षुत्तृड्व्यायामातपमारुताः सू०.१४,७.
क्षुत्तृष्णा नि०.८,२३.
क्षुत्तृष्णाकामलापांडुमेहिन्कः सू०.१७,२४.
क्षुत्तृष्णाग्लानिदौर्बल्यकुक्षि रोगजरापहा सू०६,२७.
क्षुत्तृष्णाघर्मदौर्बल्यक्रोधशो-कभयश्रमैः उ० ३५,६१.
क्षुत्तृष्णादिविधारणात् उ०.१३,९५
क्षुत्तृष्णानिग्रहैः सू०.१४,१४.
क्षुत्तृष्णोल्लिखनस्वेदरूक्षपाना न्नभेषजम् सू०१६,३३.
क्षुते सू०.४,१०.
क्षुत्क्षाम् चि०.९,९.
क्षुदुपगमने सू०.८,५५.
क्षुद्रः नि०.४,२१.
क्षुद्रकः नि०.४,२.
क्षुद्रजंतवः सू०.७,१८.
क्षुद्रबृहतीफललेपिते चि०.८,४४.
क्षुद्रम् नि०.४,५.
क्षुद्ररोगाः उ०.३१,३३.
क्षुद्ररोगेषु सू०.१,४७.
क्षुद्रा नि०.४,१९.
क्षुद्राः शा०.३,३४.
क्षुद्रागुडूचीसुमनःप्रवालिदा-र्वीयवासत्रिफलाकषायः उ०.२२,९७.
क्षुद्रांत्रावयवम् नि०.११,२९.
क्षुद्राम् नि०.४,२१.
क्षुद्रतः सू०.१६,१९.
" उ०.२३,१९.
क्षुद्रता क०.३,१.
क्षुद्रती शा०.१,९४.
क्षुद्रान् सू०.७,७१.
" " ८,३६.
" " १८,२८.
क्षुधः सू०.४,१२.
क्षुधा सू०.१७,२९.
क्षुधार्तस्य क०.३,२३.
क्षुधितः सू०.३,५०.
" " १८,३,
क्षुधितम् चि०.७,३५.
" " ६,१९.
क्षुधितस्य चि०.९,५५.
क्षुधितायाः उ०.१,१९.
क्षुन्नाशः नि०.१२,५.
क्षुभितः नि०.११,२९.
" क०.५,४६.
क्षुरकस्य चि०.१५,९५.
क्षुरघृष्टयोः उ०.२४,२४.
क्षुराकारम् सू०.२६,६.
क्षुरैः क०.४,५२.
क्षैरेयः सू०.७,४०.
क्षैरेयम् शा०.१,२५.
" उ०.५,२८.
क्षैरेयीम् क०.१,१३,
क्षैरेयीम् चि०.३,२२.
क्षोदम् नि०.२,१२.
क्षोभणम् शा०.२,१८.
क्षोभणैः नि०.११,२९.
क्षोभते चि०.७,९५.
क्षोभम् नि०.११,२७.
" उ०.३८,९.
क्षोभयन् नि०.७,२१.
क्षोभात् सू०.२८,१३.
" उ०.२५,२१.
क्षोभिणा नि०.१३,२७.
क्षोभिण्या सू०.२८,१७.
क्षोभितम् सू०.८,११.
क्षोभिते नि०.८,१२.
क्षौद्रघृतान्वितानि उ०.३९,३०.
क्षौद्रजातीरसान्विता चि०.११,२४.
क्षौद्रतंडुलवारिभ्याम् चि०.१०,४०.
क्षौद्रतैलाभ्याम् क०.४,३५.
क्षौद्रद्राक्षारसोपतम् क०.२,२४.
क्षौद्रद्रुतम् उ०.३९,१५१.
क्षौद्रपादम् चि०.९,१००.
क्षौद्रपादयुतम् चि०.१०,५१.
क्षौद्रपादिकम् चि०.९,१०१.
क्षौद्रपिप्पलीलिप्तम् क०.२,५२.
क्षौद्रम् सू०.१३,१२.
" उ०.१३,७७.

Indira Gandhi National Centre for the Arts

" " १८,१०.
" " २४,४२.
" " ३९,१४६.
" " ४०,५७.
" चि०.३,११५.
" " १९,४८.
क्षौद्रमंजिष्ठागृहधूमयुतम् उ०.३६,५९.
क्षौद्रमिश्रम् चि०.२०,७.
क्षौद्रयुक्तम् चि०.२,११.
क्षौद्रयुक्तैः उ०.३४,१२.
क्षौद्रयुतः उ०.१६,८.
" चि०.६,१९.
" " १६,१३.
क्षौद्रयुतम चि०.६,१८.
क्षौद्रयुताः चि०.१२,७,
" " " ८.
क्षौद्रयुतान् चि०.२०.२७.
क्षौद्रयुताम् चि०.३,७२.
क्षौद्रयुतैः उ०.२,१७.
" " २८,३९.
" " ३४,५.
क्षौद्रवत् सू०.३,४७.
क्षौद्रवर्णे चि०.३,११३.
क्षौद्रविंशत्युपेतम् चि०.८, १४७.
क्षौद्रशतैः उ०.३९,२०.
क्षौद्रशर्कराभ्याम् चि०.३, १०६.
क्षौद्रसंयुक्तः उ०.३४,५६.
क्षौद्रसंयुताम् चि०.१,३४.
क्षौद्रसंयुतैः चि०.१८,२९.
क्षौद्रसर्पिर्युतम् उ०४०,२६.
क्षौद्रसर्पिषा चि०.५,३४.
क्षौद्रसाव्हया उ०.३५,२१.
क्षौद्रसैंधवप्रतिसारित उ०. ११,४.
क्षौद्रस्य क०.४,१८,
क्षौद्राढकार्धम् चि०१२,२९.
क्षौद्रात् सू०.१०,३३.
" उ०.४०,२०.
" चि०.३,११७.
" " १७,१६.
क्षौद्रान्वितम् उ०.३२,५.
क्षौद्रे सू०.७,८.
" " ८,४७.
" उ०.१३,२८.
क्षौद्रेण उ०.२२,९७.
" क०.२,२२.
" चि०.२,२९.
" " ६,१७.
" " ७,१०६.
" " २१,४८.
क्षौमगर्भाम् उ०.२०,१७.
क्षौमपत्त्रोर्णकौशेयदुकूलमृगचर्मजः सू०.२६,३३.
क्षौमम् सू०.२९,५७.
क्षौमवालजलैः सू०२८,३९
क्षौमादिभिः उ०.३६,४२.
क्षौमे चि०.३,१४७.
क्षौमेण उ०.१८,४.
क्ष्माम् सू०.९,१.
क्ष्मांभोग्निक्ष्मांबुतेजःखवाय्वग्न्यनिलगोनिलैः सू०. १०,१.
क्ष्वेडः क०.१,४१.
क्ष्वेडकार्थे क०.१,४३.
क्ष्वेडन् शा०.५,११९.
क्ष्वेडरसे क०.१,४३.

ख.

खगमृगाः शा०.६,२४.
खगाः शा०.५,२०.
खजः सू०.२६,२३.
खजक्षोभणेन उ०.३९,७७.
खजसमाहितम् सू०.१९, ४१.
खजाहृतम् उ०.३९,१२६.
" चि०.५,३१.
खजाहृतात् उ०.१३,५९.
" चि०.१५,३१.
खजितम् चि०.२२,२१.
खजेन उ०.३९,२०.
" क०.४,२१.
" चि०.३,११५.
" " १५,२९.
खंजः नि०.१५,४५.
" चि०.२१,४०.
खंजता शा०.४,६.
खंजन् नि०.१५,४६.
खंजम् नि०.१६,११.
खट्वाम् शा०.१,६०.
खट्वाविबंधस्थगिकाविता-नोत्संगगोफणाः सू०. २९,६०.
खड्गः सू०.६,४९.
खंडचक्रम् सू०.२८,१५.
खंडम् शा०.६,२.
खंडशः सू०.३०,१०.
" शा०.२,३५.
" चि०.१५,५१.
खंडात् चि०.३,११४.
खंडैः उ०.३९,१७०.
खंडोष्ठविहितम् उ०.२२,५.

Indira Gandhi National Centre for the Arts

खंडोष्ठस्य उ०.२२,१.
खंडौष्ठः उ०.२१,३.
खदिरः सू०.१०,३१.
" चि०.१,८६.
खदिरक्वाथे उ०.३९,९२.
खदिरजंबूयष्ट्यानंताम्रैः उ० २२,८८.
खदिरतुलाम् उ०.२२,८४.
खदिरनिंबुगुडूचीदेवदारुर-जनीः चि०.१९,३९.
खदिरवृषनिंबकुटजाः चि०. १९,९१.
खदिरश्रेष्ठानिंबपत्रैः उ०.९, २४.
खदिरसारात् उ०.२२,९०.
खदिरस्य उ०.२२,८२.
" " " १०६,
" " ४०,५०.
खदिरांगारतप्तानि चि०१२, ३१.
खदिरार्जुनतालीसकुष्ठचंदन जे उ०.२,६१.
खदिरकीशिग्रुभिः उ० ९,२१
खदिरात् उ०.३९,९४.
खदिरायोवनपार्थमदत्यंत्य-हिमारकैः उ०२२,१०७.
खदिरासनयूषभाविताः उ०. ३९,१५३.
खदिरेन उ०.२२,९६.
खनेत् चि०.१२,३६.
खपुरः उ०.४०,५२.
खफानुगे सू०.६,५४.
खम् नि०.६,३०.
खरः सू०.१,११.
" उ०.२१,३४.
" " ३१,२४.
" क०.६,२१.
खरचिक्कणः क०.६,१९.
खरता उ०.८,२१.
खरंधारत्वम् सू०.२६,३०.
खरधारम् सू०.२६,१६.
खरधूसराणि शा०.३,८८.
खरबुसवृषकर्णीकटूफलम् सू०.१५,३०.
खरम् नि०.१४,१३.
" उ०.१८,५८.
" " २३,३०.
" " २९,२०.
" चि०.८,९५.
खररोमा चि०.१३,३०.
खरा नि०.२,३०.
खराः नि०.७,२९.
" उ०.८,१८.
" " २१,३६.
खराश्वश्वाविदुष्ट्रार्क्षगोधान-कुलशल्यकम् उ०.५,४.
खरोष्ट्रमहिषारूढम् शा०.६, ४.
खरोष्ट्रमार्जारकपिशार्दूलसू-करैः शा०.६,४६.
खर्जूरम् सू०.१०,३२.
" उ०.४०,१८.
" चि०.३,८०.
" " १३,१६.
" " १४,१४.
खर्जूरमृद्वीकामधुकैः चि०. ५,१८.
खर्जूरसदृशः उ०.३७,३.
खर्जूरसदृशम् उ०.२१,८.
खलः चि०.९,२५.
" " " २८.
" " " ११६.
खल्कः चि०.१२,११.
खलकान् चि०.९,६५.
खलतिः शा०.१,४८.
" उ०.२३,३२.
खलतिम् सू०.१०,१३.
खलतेः उ०.२३,२६.
खलतौ उ०.२४,३३.
खलाः चि०.६,४.
खलादिभिः चि०.९,११५.
खलु उ०.२१,१५.
खलोद्दालयवश्यामाककोद्र-वाः सू०.१६,३३.
खलयाम् सू०.१७,२६.
खल्ली नि०.१५,५५.
खांज्यन् चि०.२२,५१.
खांडवः चि०.३,१४५.
खांडवाः सू०.७,६.
खात् शा०.३,३.
खादिरन् चि०.१९,४८.
खादीनाम् शा०.५,४६.
खानि सू०.११,३६.
" शा०.३,३.
खानिलाभ्यब्भुवाम् शा.३,२
खार्जुरम् सू० ५,१२
खिन्नः चि०.६,४८.
खुडकात् उ०.३०,३४.
खुडम् नि०.१६,४.
" चि०.२२,२०.
खुडवातता चि०.२२,५१.
खुडे सू०.२७,१६.
" क०.१,४४.
खुडाक्तम् चि०.२२,७२.
खुरखुरायते नि०.५,२६.
खे शा०.३,६९.
खेदयेत् उ०.४०,२४.
खेदितोदकाः सू०.५,९.
खेभ्यः शा०.५,१३.
" उ०.२६,३५.
खेषु शा०.३,६३.

Indira Gandhi National Centre for the Arts

" उ०.७,२.
खैः उ०.२८,५.
" " ३७,११.
ख्यातम् उ०.३४,६६.
" क०.२,३.
ख्याताः उ०.११,४१.

ग.

गगनम् शा०.३,८८.
गंगांबु सू०.५,२.
गजकणापाठाकारवीरचकौ-
लकैः चि०.८,५०.
गजदंतिका उ०.३६,६१.
गजपिप्पली उ०.३,४८.
" " ३७,२७.
गजम् सू०.२,१४.
गजवाजीरथक्षोभभग्नजर्ज-
रितात्मनाम् क०४,५१.
गजलिंडजे चि०.२०,१४.
गजस्थ चि०.२०,१४.
गजाव्हा उ०.५,८.
गजैः उ०.६,५०.
गडूचीपद्मकारिष्टधानकाः
सू०.१५,१६.
गडूचीम सू०.१४,२२.
गणः सू०.१०,२५.
" " " २७.
" " १५,८.
" " " १०.
" " " २७.
" " " ४२.
" " २१,१८.
" उ०.३,५०.
" " २४,३९.
" चि०.१,५३.
" " ३,९३.
गणनाम् सू०.१०,४४.
गणम् उ०.२,१५.
" " " २४.
" " ३६,७९.
" चि०.३,७४.
" " २१,२८.
गणे उ०.१८,३.
गणेन चि०.१२,४०.
गणैः चि०.१,१२९.
" " ६,६८.
गणौ सू०.१५,३९.
गंडम् उ०.१८,६१.
गंडमालापचो उ०.२९,२९.
गंडमालाप्रलेपनम् उ०.३०.
क्षे०१९.
गंडमालार्बुदग्रंथिस्थौल्यकु-
ष्टभगंदरम् चि०.१२,
३५.
गंडयोः शा०.२,३३.
गंडश्वयथुसंभवः नि०७,४९.
गंडान् उ०.२९,२४.
" चि०.१९,५.
गंडानि क०.५,३.
गंडार्बुदग्रंथिगंडोरुदरवृद्धिताः
सू०.११,१०.
गंडालजी उ०.२१,११.
गंडा [illegible]यम् उ०.१,३१.
गंडि[illegible]भिः चि०.८,१४७.
गंडीरन् सू०.१५,३३.
गंडूपदमुखे सू०.२५,२९.
गंडपदमुखैपुणी सू०.२६,८.
गंडूपदास्यरूपाणि नि०.७,
२६.
गंडूपदोपमाः नि०.१४,४७.
गंडूषः सू०.२२,१.
" " " ११.
" उ०.२२,१४.
" " " २४.
" " " ३६.
" " " १०७.
गंडूषघर्षणे उ०.२२,६४.
गंडूषधारणम् उ०.२२,१४.
" " " ५३.
गंडूषधारणे उ०.२२,६.
गंडूषधूमान् सू०.४,१९.
गंडूषनावनम् उ०.२२,५९,
गंडूषम् सू०.२२,११.
" उ०.२२,२२.
गंडूषमात्रम् उ०.३९,१२०.
गंडूषविहितौषधैः सू०.२२,
१३.
गंडूषाः सू०.७,२१.
" चि०.६,६५.
गंडूषादि उ०.२२,३९.
गंडूषे उ०.२२,७८.
गंडे उ०.२१,१२.
" " " ६४.
" " २२,११.
गंडैः नि०.१४,२२.
गतप्रसकालार्थे चि०.१४,
११९.
गतयः उ०.२८,१८.
गतरुजः सू०.३०,२६.
गतवेगे उ०.२६,१३.
गतसूताभिधाना शा०.१,
१००.
गतायुषम् सू०.१,३४.
गतासोः शा०.५,१२९.

Indira Gandhi National
Centre for the Arts

गतिः सू०.२८,१.
" शा०.३,१९.
" उ०.२८,१४.
" " " १९.
" " २९,२७.
" " " २८.
" " ३०.४२
गतिक्षयः नि०.१४,३५.
गतिभिः उ०.२८,१७.
गतिवाक्कंपमोहाः शा०.५, ६६.
गतीः उ०.३२,१०.
गते सू०.१८,३३.
" नि०.१५,२८.
" उ०.१६,६५.
" " ३८,३.
" " ३९,१२१.
" चि०.१,११५.
" " ६,५४.
गतेः सू०.२६,८.
गतेन उ०.२२,८२.
" " २८,३१.
" चि०.२०,१५.
गतैः नि०.११,३२.
गतोष्माणम् शा०.५,१२१,
गतौ नि०.१६.४८.
गत्यपक्षेपणोत्क्षेपनिमेषोन्मेषणादिकाः सू०.१२, ७.
गदः सू०.१,३१.
" नि०.११,२३.
" उ०.५,१३.
" " " ४३.
" " १२,२५.
" " १४,४.
" " ३३,२०.
" चि०.१३,५०.
" " " ५१.
गदपानम् उ०.३५,१८.
गदम् उ०.२,२२.
" " " ७७.
गदशुकतरुपुष्पबीजोग्रयष्टिकर्णांनिकुंभानिबिल्वैः उ०.५,२०.
गदस्य उ०.३०,३१.
गदाः सू०.४,३२.
" " ११,३५.
" " १२,४५.
" " १४,३७.
" " २७,४.
" नि०.३,३८.
" " ६,२४.
" " १४,४१.
" उ०.२,४४.
" " ९,२६.
" " १०,३१.
" " १२,३३.
" " १५,२३.
" " १६,६०.
" चि०.२२,५२.
गदात् सू०.२७,९.
गदान् सू०.१०,९.
" " १९,२५.
" नि०.५,६.
" " १६,२१.
" " " २५.
" " " २६.
" उ०.११,२३.
" " २१,३.
" " २२,१०४.
" " ३३,३१.
" क०.२,१६.
" " ३,५.
" चि०.८,१३४.
" " १९,७.
गदानि उ०.३०,३३.
गदित उ०.१६,६०.
गदे सू०.१३,३८.
" " १७,२४.
" " २३,१९.
" " ३०,२७.
" क०.५,३.
" चि०.१५,२७.
गदेषु क०.१,३६.
गदैः चि०.१९,५७.
गदोद्भवः उ०.६,१०.
गदोद्रेकः सू०.२०,२५.
गद्गदः शा०.५,३८.
गद्गदवाक् उ०.३५,३५.
गंधः सू०.२१,२२.
" शा०.३,२.
" " ५,२४.
" " ६,१५.
" " " ३६.
गंधजलाभिषिक्ताम् चि०.७, ७६.
गंधज्ञानास्यवैरस्यश्रुतिनिद्राचलक्षयाः नि०५,५०
गंधतैलम् उ०.२७,४१.
गंधद्रव्याणि सू०.२१,१८.
गंधनाः सू०.६,८.
गंधनामा उ०.३१,१२.
गंधपलाशम् चि०.१४,१४.
गंधपाषाणपंचकम् उ०.१३, ३१.
गंधफलपुष्पान्नपानजाः चि० ६,६.
गंधमादनः उ०.३७,७४.
गंधमाल्यरतिम् उ०.४,४०.
गंधमाल्यादिकम् चि०.५, ८२.

Indira Gandhi National Centre for the Arts

गंधमाल्यानि उ०.५,२३.
गंधरसस्पर्शान् शा०.५,३५.
गंधर्वहस्तबृहतीव्याघ्रीगोक्षु-
रकेक्षुरान् चि०११,२१.
गंधर्वाः उ०.४,१०.
गंधर्वाध्युषितम् उ०.४,१९.
गंधर्वान् शा०.५,३२.
गंधर्वाय उ०.५,२५.
गंधवर्जितः सू०.६,१४६.
गंधवर्णरसस्पर्शैः नि०.१०,
१४.
गंधवर्णानुवृत्तेः नि०.३,३.
गंधविज्ञानहारिणौ शा०.४,
३०.
गंधवेदिन्यौ शा०.३,२९.
गंधसंपत् क०.१,३४.
गंधाः सू०.२१,१७.
" उ०.५,२८.
" चि०.६,६.
गंधाज्ञानम् नि०.१५,३५.
गंधानाम् सू०.१३,५.
गंधा[illegible] सू०.७,१०.
गंधी नि०.१३,३४.
गंधे उ०.२५,१०.
गंधैः सू०.१७,२.
गंधैरंडशतावरीः चि०.१३,
४१.
गंधोपलः चि०.१९,६७.
गमनम् शा०.३,४५.
" " ६,६९.
गमनारंभे नि०.१५,४६.
गमनोद्यमः उ०.६,९.
गमयेत् सू०.३,२५.
गमिष्यतः शा०.५,६९.
गंभीरः शा०.३,१०१.
" " ५,७१.
" नि०.११,४.

गंभीरपाकः नि०.१३,६३.
गंभीरपाका उ०.२१,४५.
गंभीरम् सू०.२९,८.
" नि०.१६,९.
" उ०.३९,२८.
" चि०.२२,४.
" " " ३८.
गंभीरव्रणमांसानाम् सू०.
२५,९.
गंभीरा नि०.४,१९.
" " " २९.
गंभीराः उ०.२५,६७.
गंभीरानुगतम् क०.२,६.
गंभीराम् उ०.१२,३३.
गंभीरे सू०.२६,६.
" नि०.१६,१०.
" उ०.२५,४६.
गंभीरेण नि०.४,२९.
गंभीरेषु सू०.२९,५१.
गरः उ०.३५,५०.
गरतृष्णारुजाकासश्वासहि-
ध्माज्वरापहम् उ०.३५,
५९.
गरदूषीविषाद्यैः नि०.१२.
२०.
गरदोषाणाम् चि०.१५,३७.
गरम् उ०.३५,४९.
" चि०.१५,३०.
" " १९,७.
गरयोगावचूर्णनात् नि०.
१३,४१.
गरशोफकफानिलान् सू०.
६,९६.
गरशोफहा सू०.६,१०७.
गरसंज्ञम् उ०.३५,६.
गरात् नि०.१,२२.
गरार्तः उ०.३५,५५.

गरिमा शा०.१,५५.
" उ०.३६,२६.
गरी क०.२,५४.
गरीयः सू०.५,२३.
" " " २९.
" " ६,७०.
गरीयसः सू०.८,२८.
गरीयान् सू०.६,६४.
गरुडसमम् उ०.१३,३३.
गरे सू०.२७,२८.
" " १९,९.
" उ०.६,२९.
गरेषु उ०.४०,४९.
गरापहतपावकः उ०३५,५८
गर्दभी उ०.३१,१०.
गर्भः शा०.१,१.
" " " ९.
" " " ३७.
" " " ४७.
" " " ४८.
" " " ७९.
" " " ८०.
" " २,१४.
" " " १६.
" " " २०.
" " ३,६३.
गर्भकोष्ठम् उ०.३३,४०.
गर्भकोष्ठविशुद्ध्यर्थम् शा०.
२,१०.
गर्भदम् उ०.३४,२९.
" " " ४१.
गर्भधृक् शा०.१,४३.
गर्भपातसमुत्पन्नाः नि०.१५,
२१.
गर्भभूवेश्मशयनम् चि०.१,
१४३.
गर्भम् शा०.२,३७.

Indira Gandhi National
Centre for the Arts

" " " ६१.
" " " ६२.
" उ०.३३,५२.
" " ३४,४४.
" " " ६१.
" चि०.२,४३.
गर्भमाता शा०.२,६२.
गर्भवत् नि०.११,५४.
गर्भवृद्धिप्रपीडनात् नि०.७,
१४.
गर्भवृद्धिप्रसवरुक्क्लेदास्रस्रुतिपीडनैः शा०.१,९९.
गर्भशंकुः सू०.२५,३२.
गर्भशंकुना शा०.२,३२.
गर्भसंगे शा०.१,८३.
गर्भस्थस्य उ०.२३,२१.
गर्भस्य शा०.१,५४.
" " " ५६.
" " २,३५.
" " " ३६.
" नि०.१५,१३.
गर्भाकृतित्वात् शा०.२,६१.
गर्भादिनीरुजाम् शा०.३,
११५.
गर्भाभम् नि०.९,२१.
गर्भाभः उ०.१,१०.
गर्भावक्रांति उ०.१,३९.
गर्भाशयः शा०.३,२१.
गर्भाशयम् शा०.१,३.
गर्भाशयात् उ०.३३,३८.
गर्भाशयाश्रयः चि०११,५३
गर्भाशये शा०.१,८.
" नि०.११,५३.
गर्भास्पंदः शा०.२,२३.
गर्भिणी सू०.६,६७.
" " १८,३.
" " २९,६.

गर्भिणीनाम् नि०.११,२०.
" उ०.२,५३.
" " ३४,६७.
गर्भिणीबालवृद्धेषु उ०.३६,
८२.
गर्भिणीम् सू०.१७,२४.
" शा०.२,२२.
गर्भिणीसूतिकाजीर्णपित्तास्रश्वासकासिनाम् सू०.
२७,७.
गर्भिणीसूतिकाबालवृद्धान्
सू०.१४,९.
गर्भिण्याः शा०.१,५३.
" " " ५८.
" " २,१.
" " " २१.
" उ०.१,१९.
गर्भे शा०.१,७०.
" " " ८१.
" " २,९.
" " " १४.
" " " २२.
" " " ५८.
" " १७,१३.
" " चि०.३१,२१.
गर्भेण शा०.१,५८.
गर्भोत्पादः सू०.११,
गर्भोदकस्रुतिः शा०.१,७६.
गर्हितम् सू०.२,१८.
गलगंडः उ०.२१,६९.
" " २२,६५.
गलगंडयोः सू०.२७,१४.
गलगंडवान् सू०.१९,९.
गलगंडादीन् नि०.१६,२२.
गलगंडोभवेत् उ०.२१,५३.
गलग्रहः नि०.११,१४.
गलग्रहे चि०.१५,२०.

गलतालु सू०.१८,१९.
गलतालुशोषः चि०१०,३९.
गलंती सू०.१७,१०.
गलपार्श्वगः उ०.२१,४६.
गलपीडादिकर्म क०.५,५०.
गलपीडावसन्ने उ०२६,१९.
गलम् क०.५,५०.
गलमार्गार्गलोपमः उ०.२१,
४८.
गलरोगेषु क०.१,३२.
गलविद्रधिः उ०.२१,५२.
गलशुंडिका उ०.२१,३८.
गलश्रोतोरोगच्छेदनभेदने
सू०.२६,१५.
गलात् उ०.३९,११२.
गलापीडम् क०.५,१५.
गलामयघ्नी उ०.२२,१०१.
गलामयोदर्दकुष्ठालसकशोफजित् सू०.१०,१७.
गलायुकः उ०.२१,५०.
गलार्बुदम् उ०.२१,५३.
गले उ०.२१,४१.
" " " ५६.
" " " ६४.
गलौघः उ०.११,४८.
" " २१,६७.
गल्लिरः उ०.१७,२३.
गवयः सू०.६,४९.
गवाक्षितम् नि०.१२,१०.
गवाक्षी सू०.१५,४५.
गवाक्षीम् चि०.१५,१३.
गवादिशकृत्कोथात् उ०३७,
७.
गवाम् शा०.६,३६.
" उ०.५,२५.
" " " ३०.
" " " ४३.

Indira Gandhi National Centre for the Arts

" " ६,५८.
" " ७,२९.
" " ३८,२९.
" " ३९,४९.
" चि०.४,१३.
" " १५,१२३.
" " २०,१३.
गवांषु चि०.१९,४२.
गवाश्वगुदमुकानाम् चि०. १२,१०.
गवाश्वशकृतः चि०.२,२८.
गव्यदध्नः उ०.१६,३४.
गव्यम् सू०.५,२१.
" उ०.१,२०.
" चि०.८,१०७.
" " १५,२.
" ७ " २७.
" " २७,७.
गव्यमाहिषम् सू०.२२,२७.
गव्यमूत्रेण चि०.१९,४१.
गव्याजपयसा चि०१४,७४.
गव्याजयोः चि०.३,१०७.
गव्याविकच्छागः चि०.२२, २५.
गव्ये सू०.५,४२.
गव्येन उ०.५,१६.
गह्नेषु उ०.५,२७.
गांगम् सू०.५,३.
गाढघनतिर्यग्भिः सू०.२६, ५३.
गाढतरम् चि०.१५,११७.
गाढम् सू०.२७,२०.
" " " ३१.
" " ५९,६२.
" " " ६३.
" शा०.१,८५.
" उ०.२४,२८.
" चि०.१२,३२.
गाढवर्चसाम् चि०.८,५२.
" " " १४३.
गाढविट् चि०.९,१९.
गाढविट्प्रतिपीडिताः नि०. ७,४४.
गाढस्थाने सू०.२९,६५.
गाढाम् सू०.२९,४५.
गाढेन उ०.२७,१७.
गात्रगौरवम् नि०.२,६.
" उ०.१९,६.
" " ३६,२१.
गात्रपंचकम् शा०.१,५४.
गात्रभंगः उ०.३६,२७.
गात्रभेदे चि०.३,९०.
गात्रम् सू०.१७,१०.
" " २६,५१.
" " ३०,२५.
" शा०.२,२७.
" " ४,६६.
" नि०.२,५.
" " १३,३२.
" " १५,१८.
" उ०.३५,४१.
" चि०.१,१३१.
गात्ररुक्षोदकंपनम् नि०१३, ९.
गात्र[illegible]कनखैः सू०.२,४३.
गात्र[illegible]ावताम् उ० ३७,१७.
गात्रसादः नि०.८,५.
गात्राणाम् उ०.३६,२५.
गात्राणि सू०.८,८.
" चि०.२१,६.
गात्रे शा०.५,२१.
" " " १११.
" नि०.११,४२.
" उ०.२६,२२.
" " " ३३.
" " २९,१२.
" " ३६,११.
गात्रेषु शा०.५,२६.
" नि०.१६,३५.
" उ०.३१,८.
गानम् उ०.७,८.
गंधर्वकाव्यादिकथाप्रवीणाः उ०.४०,४२.
गांधारि उ०.३५,३०.
गांधीर्म् उ०.२२,८६.
गांभीयात् उ०.२५,१९.
" चि०.२२,५२.
गायत्रिदार्वीकृमिघ्नद्रुद्वचा- नाम् चि०.१२,७.
गायत्रीविंशतिपलक्काथे उ०. ५,३८.
गायत्रीशिखिशिंशिपासन- शिवाबिल्लाक्षकारुष्करान् उ०.३९,१७२.
गार्दभम् उ०.११,३५.
गार्धम् उ०.१३,३७.
गालयेत् सू०.२४,९.
" " ३०,१४.
" क०.२,३८.
गालान् चि०.१,६.
गालितम् चि०.१५,२९.
गावेधुकम् उ०.३६,६६.
गिरः शा०.६,३७.
गिरयः उ०.३९,१३१.
गिरिकर्णिका उ०.३६,५७.
गिरिजम् उ०.३९,१३५.
" " " १३७.
" " ४०,४८.
गिरिजस्य चि०.१७,३८.
गिरिजाह्वयम् उ०.३९, १४१.

Indira Gandhi National Centre for the Arts

गिरिसंभवन् चि०.२१,४९.
गिरिसंभूताम् उ०.३६,९१.
गीतनर्तनकारिणम् उ०.४, १८.
गीतनर्तनहास्यादिविकृतेहाप्रवर्तनम् नि०.२,२८.
गीतभाष्यप्रसंगे सू०८,५३.
गीतम् सू०.१३,६.
" चि०.७,७८.
गीतवादित्रवागंगविक्षेपास्फोटनानि उ०.६,७.
गीतवादित्रशब्दैः चि०.७, ११५.
गीतवादित्रोत्सवसंश्रुतिः चि०.५,८३.
गीतहासमृगयाकलिलोलाः शा०.३,८६.
गुग्गुलम् चि०.४,१३.
" " १३,२५.
" " १४,९९.
" " १५,४१.
" " १७,४.
" " २१,४३.
गुग्गुलुः उ०.२८,३८.
" " ४,४८.
" " " ५६.
" चि०.११,२५.
गुग्गुलुना उ०.२८,३९.
गुग्गुलुपंचपलम् उ०२८,४०
गुग्गुलुमरिचविडंगैः चि०. १९,७१.
गुग्गुलोः सू०.१४,२३.
गुग्गुल्वगुरुसिद्धार्थहिंगुसर्जरसान्वितैः सू०२९,२५.
गुग्गुल्वतसिगोदंतस्वर्णक्षीरी उ०.२५,३७.
गुग्गुल्वाभम् उ०३९,१३३.
गुंजाफलत्र्यूषणशंखचूर्णम् चि०.२०,१९.
गुंजामूलफलैः उ०.२४,२९.
गुंजालाबुशुकाह्वाः उ०.२२, ७०.
गुंजाविद्रुमसंन्निभाः नि०७, ४३.
गुंजासूरणकुष्मांडबीजैः चि०.८,२१.
गुटिका उ०.२२,५७.
" " ३७,३६.
" चि०.८,१५५.
" " १०,५९.
गुटिकाः उ०.११,४१.
" " १३,४३.
" " १६,४१.
" " २२,८२.
" " " ९४.
" " " ९६.
" क०.२,२२.
" चि०.३,८१.
" " १५,१०६.
गुटिकानाम् उ०.३९,१६६.
गुटिकाम् उ०.५,७.
" " ३७,४३.
" क०.२,४६.
" चि०.३,१७२.
" " १६,१५.
गुटिकार्धम् उ०.३९,१६७.
गुडः सू०.५,४७.
" उ०.१३,८२.
" " ३२,२२.
" " ३७,२३.
" " ३८,३६.
" क०.२,२१.
" चि०.८,२४.
" " " १५२.
गुडक्षारघृतानि चि०.८,५४.
गुडक्षारोषणकणादाडिमम् चि०.३,५२.
गुडक्षीरमत्स्याद्यैः चि०.२०, १९.
गुडक्षौद्रघृतैः क०.४,२.
गुडगुडायते नि०.१२,१०.
गुडगोमूत्रसंयुतैः चि०.८, १३७.
गुडघृतक्षौद्रधान्यकृष्णाविडंगतः क०.६,६.
गुडतः चि०.८,१११.
गुडतक्रेण चि०.९,१०९.
गुडतुलाम् चि०.३,१२८.
" " ८,६९.
" " " १५१.
" " १७,१५.
गुडतैलनिशाद्राक्षाकणारास्त्रोषणानि चि०.४,४०.
गुडतैलेन चि०.९,१८.
गुडनागरम् चि०.१७,५.
गुडनागरमंडरतिलांशान् चि०.१६,१९.
गुडपलशतयोजितम् चि०. ८,१५०.
गुडम् सू०.७,२४.
" शा०.२,२५.
" उ०.३२,२५.
" " ३९,११.
" क०.२,३६.
" चि०.४,४५.
" " ९,३५.
" " १४,९३.
" " १५,१२५.
" " २०,३५.
गुडमंजर्याः उ०.४०,५२.
गुडयुतम् चि०.३,६८.

Indira Gandhi National Centre for the Arts

गुडवत् उ०.३५,६३.
गुडवारिभिः चि०.५,५१.
गुडवार्ताकभुक्तस्य चि०.८, ५८.
गुडवैकृतम् चि०.१०,८५.
गुडव्योषत्रिजातकरजान्वितम् शा०.१,९३.
गुडयोषवरावेल्लतिलारुष्कर- • चित्रकैः चि०.८,१५५.
गुडशीतांबुना चि०१०,३८.
गुडस्य सू०.१९,४०.
" क०.२,५८.
" चि०.८,१४४.
" " " १४५.
" " ११,५७.
" " १४,४१.
" " १९,३१.
गुडहरीतकीम् चि०.८,३३.
गुडांशकूमाः चि०.१९,४४.
गुडाः चि०.८,१६०.
गुडाढ्येन चि०.११,५८.
गुडा~~त् क०.२०~~,६.
" चि०.३,५१.
" " " १६६.
" " ८,६६.
" " १२,२९.
" " १३,४२.
गुडान् उ०.५,१६.
" चि०.३,११२.
" " ८,१५७.
" " १६,२६.
गुडारूपामिषक्षीरतिलमाष- सुरादधि सू०.१६,४३.
गुडान्विताम् चि०.८,५९.
गुडाभयम् चि०.१७,५.
गुडामांसरसाघृतानि चि०. ६,२४.
गुडांबु चि०.६,७६.
गुडांबुना क०.२,४८.
गुडार्धतुलान्वितान् क०.२, १९.
गुडारुष्करजंतुघ्नसोमराजी- कृता चि०.१९,४७.
गुडूची चि०.४०,५०.
गुडूचीकंटकारिका चि०.१, ६६.
गुडूचीकंटकारीभ्याम् चि०. ३,३.
गुडूचीचतुरंगुलम् चि०.११, १२.
गुडूचीत्रिफलादंतीक्वाथैः उ० ३४,३३.
गुडूचीनिंबकल्कोत्थः उ०. २२,७८.
गुडूचीनिंबकुटजहंसपादीब- लाद्वयैः उ०.२२,६८.
गुडूचीभद्रमुस्तानाम् चि०. २५,७.
गुडूचीम् क०.४,१.
" चि०.१,१५२.
" " १८,६.
" " २२,१५.
गुडूचीयष्टिपत्तंगसिद्धम् उ०. २२,६.
गुडूचीसैर्यकाभीरुशुकनासा- पुनर्नवैः उ०.३४,२८.
गुडूचीस्वरसक्षीरसाधितेन चि०.१६,५३.
गुडूचीस्वरसे चि०.२२,७.
गुडूच्यपामार्गदेवदारूणी चि०.१९,८६.
गुडूच्यंबुपयः चि०.६,१४.
गुडूच्या चि०.१,९३.
" " १२,६.
गुडूच्याः उ०.३९,४४.
" चि०.१६,४३.
गुडूच्येरंडभूतिकभार्ङ्गीवृष- करोहिषाम् क०.४,५४.
गुडे चि०.९,२७.
गुडेक्षुमद्यमार्द्वीकशुक्तम् सू० ५,७७.
गुडेन सू०.७,३०.
" " " ३५.
" उ०.२२,२०.
" " " ४१.
" " ३९,८०.
" " " १४७.
" क०.२,१५.
" चि०.८,१५७.
" " " १५८.
" " १०,१७.
" " " २१.
" " १९,४५.
गुडोदकम् शा०.१,९४.
" चि०.३,७७.
" " ६,७८.
गुडोपदंशान् चि०.११,१५.
गुडौदनम् चि०.५,३८.
गुणः शा०.३,१२०.
" चि०.७,७२.
गुणकल्पनाभिः उ०१४,३२
गुणक्षयः नि०.१३,४.
गुणदोषमयी शा०.५,६४.
गुणम् चि०.२,३३.
" " ६,२६.
गुणमयीम् शा०.३,१०४.
गुणवत् उ०.४,१.
गुणवताम् क०.[illegible],३२.
गुणवत्तमाः सू०.५,४९.
गुणवान् उ०.३९,६२.
गुणाः सू०.१,१८.

Indira Gandhi National Centre for the Arts

" " ७,४९.
" " ९,४.
" " १२,२०.
" " " २२.
" शा०.३,२.
" नि०.६,२.
गुणान् सू०.३,३.
" " १२,३३.
" " २०,३२.
" नि०.६,३.
" उ०.३९,७४.
" " " १३९.
" " " १७७.
गुणानाम् सू०.११,२४.
गुणांतरेण सू०.९,२३.
गुणावेलाहरेणुका चि०.११, २५.
गुणे उ०.२४,४.
गुणैः सू०.६,८.
" " " १२३.
" " " १६३.
" " ८,५०.
" शा०.३,१०४.
" नि०.६,३.
" उ०.१,४८.
" " ५,१४.
" " ६,३४.
" " २४,५५.
" " ३५,८.
" " ३९,१८१.
" चि०.७,४.
" " " ९.
" " " ५१.
" " २,११४.
" " १२,३२.
" " १३,१५.
" " " १७.
" " १७,१३.
" " " २१.
" " १९,११.
गुणोत्कर्षापकृष्टता सू०२०, ३४.
गुण्ठः चि०.११,२२.
गुंठत्रिकंटकम् चि०११,१९.
गुदः शा०.४,१०.
" " " ४५.
" उ०.२८,१५.
" चि०.८,९७.
गुदकीलकान् चि०.८,१५.
गुदकीलौ चि०.१९,४०.
गुदकुदके उ०.२,७५.
गुदकुंदम् उ०.२,७०.
गुदकुष्टस्य क०.५,८.
गुदजकुष्टप्लीहगुल्मोदराणि चि०.८,१५४.
गुदजक्षयम् चि०.८,४५.
गुदजग्रहणीपांडुकुष्टोदरगरज्वरान् चि०.८,६७.
गुदजच्छिदः चि०.८,१५७.
गुदजनाशनाः चि०८,१६०.
गुदजप्लीहगुल्मोदराणि चि० ८,१४४.
गुदजशातनी चि०.८,२०.
गुदजाः चि०.८,४२.
" " " ६०.
" " " ८८.
गुदजान् चि०.८,३१.
गुदजानि चि०.१६,२३.
गुदनिःसरणम् सू०१८,४१.
" चि०.८,९१.
गुदपाकम् चि०.९,८२.
गुदपाके सू०.२९,७३.
गुदभ्रंशम् चि०.८,७७.
" " ९,५४.
गुदभ्रंशातिगुदजग्रहणीगदमारुतान् नि०.८,७९.
गुदभ्रंशे चि०.८,१३३.
" " ९,५१.
" " " ९७.
गुदम् शा०.२,२९.
" " ३,१३.
" नि०.७,५९.
" उ०.२०,१५.
" " २८,१४.
" " " १३.
" " " २०.
" क०.३,३८.
" " ५,२४.
" " " ४४.
" चि०.९,५२.
" " ११,६३.
गुदमार्गनिरोधतः नि०७,२.
गुदमेढ्रयोः चि०.११,५०.
गुदरुक्भ्रंशयोः चि०.९,४८.
गुदवंक्षणम् शा०.५, १०७.
गुदवंक्षणवे[redacted]८, ७६.
गुदवत् सू०.१९,७५.
गुदशिरोविण्मूत्रमरुतः चि० ८,१३९.
गुदश्वयथुकंड्वार्तिनाशनम् चि०.८,४८.
गुदश्वयथुशूलार्तः चि०.८, ३२.
गुदसेचने चि०.९,८४.
गुदस्थूलांत्रसंश्रयः नि०.७, ३.
गुदस्य सू०.३०,३६.
" चि०.९,९४.
गुदागमे चि०.२,४५.
गुदांकुराः नि०.७,२८.

Indira Gandhi National Centre for the Arts

" चि०.८,२७.
" " " ५८.
गुदांकुरान् चि०.८,१९०.
गुदात् नि०.११,१७.
" " १२,३३.
गुदाश्रये चि० ८,६०.
गुदास्थिविवराश्रयाः नि०. ९,१.
गुदे सू०.१९,२४.
" " ३०,३६.
" नि०.७,४३.
" " १२,२८.
" उ०.२,६९.
" " ३,१९.
" " २८,२७.
" क०.५,४१.
" " ५,४६.
" " " ४८.
" चि०.८,८८.
" " " ९२.
" " " १३५.
" —— ३८.
" " ९,१२०.
" " ११,५०.
गुदेन सू०.१३,३१.
" नि०.७,२७.
गुदोपस्तंभविधुरशृंगाटानि शा०.४,४२.
गुदोपस्थम् नि०.११,६१.
गुदोष्टः नि०.७,५.
गुंद्राभीरुः सू०.१५,६.
गुप्तम् चि०.२,३३.
गुप्तये उ०.३६,५३.
गुप्ताम् चि०.३,१२५.
गुरवः सू०.६,५.
" " " १६.
" " " ४०.
" नि०.२,५९.
गुरशीतसरस्निग्धमंदसूक्ष्म-मृदुद्रवम् सू०.१६,१.
गुरु सू०.५,६.
" " " २१.
" " " २८.
" " " २९.
" " " ४७.
" " " ५७.
" " " ६०.
" " " ६५.
" " " ७२.
" " ६,३३.
" " " ३४.
" " " ६२.
" " " ८२.
" " " ८६.
" " " ९१.
" " " ९३.
" " " ९९.
" " " १०२.
" " " ११९.
" " " १२५.
" " " १२७.
" " " १२८.
" " " १३०.
" " " १३३.
" " " १३४.
" " " १४५.
" " " १४७.
" " ८,४५.
" " १४,३६.
" " १६,३.
" " १७,१८.
" " २९,४०.
" शा०.१,१८.
" " " ४४.
" नि०.३,२६.
" " ८,१०.
" " " २७.
" " १२,१९.
" " १४,१६.
" " " ३८.
" उ०.२९,२१.
" " ३९,१३३.
" चि०.१,१७३.
" " ४,१२.
" " ८,९७.
" " १०,९०.
" " १५,१२५.
" " १७,४१.
गुरुः सू०.१,१२.
" " ५,४२.
" " " ६७.
" " ६,६.
" " " ९.
" " " ११.
" " " १२.
" " " १४.
" " " १७.
" " " १८.
" " " २१.
" " " २२.
" " " ३०.
" " " ३६.
" " " ३९.
" " " ५७.
" " " ५८.
" " " ६७.
" " " १०८.
" " " ११४.
" " ९,८.
" " १०,८.
" " " २०.

Indira Gandhi National
Centre for the Arts

" " " ३८.
" शा०.५,११.
" नि०.२,३०.
" " ९,१४.
" " ११,२५.
" " " ४६.
" " १३,३५.
" " " ६३.
" उ०.१०,१३.
" " २१,२४.
" " " ३२.
" " " ५५.
" " ३३,७.
" क०.५,२९.
गुरुकोष्टस्य क०.५,१.
गुरुगात्रत्वम् नि०.१६,४७.
गुरुणा चि०.१६,४७.
गुरुणी सू०.६,६७.
गुरुता सू०.६,११२.
" " २०,२४.
" नि०.१६,४८.
" उ०.३६,२५.
गुरुताम् क०.४,१०.
गुरुत्वम् शा०.१,३६.
गुरुदेवद्विजद्विषम् उ०.४, १६.
गुरुदेवनृपालयम् सू०७,७०.
गुरुपंचमूलम् चि०२१,३२.
गुरुप्रकोपि क०.२,५२.
गुरुप्रावरणम् सू०.१७,२८.
गुरुबस्तिगुदोदरः नि०.७, ११.
गुरुभारातिरुदितहास्याद्यैः नि०.१६,२१.
गुरुभिः नि०.६,३४.
गुरुम् सू०.१२,६९.
" चि०.१४,१००.
गुरुमंदहिमस्निग्धश्लक्ष्णसांद्रमृदुस्थिराः सू०१, १८.
गुरुविष्टंभी सू०.५,४५.
गुरुवृद्धर्षिसिद्धाभिशापचिंतानुरूपताः उ०.४,४३.
गुरुवृद्धादयः उ०.४,१२.
गुरुव्याधौ सू०.१२,७०.
गुरुशीतदिवास्वप्नस्निग्धाम्लमधुरान् सू०.३,२६.
गुरुस्तिमितशीतता उ० २३, १०.
गुरुस्थूलस्थिरगंधगुणोल्बणम् सू०.९,५.
गुरुस्निग्धमंदसांद्रहिमस्थिरैः चि०.१०,८३.
गुरुस्निग्धहिमम् सू०९,१२.
गुरुस्निग्धाः सू०.६,५५.
गुरू नि०.१५,५०.
" उ०.२१,६.
गुरूणाम् सू०.८,२.
" शा०,३,१०२.
गुरूणि सू०.८,१.
" शा०.५,१२.
गुरूदरम् नि०.१२,४२.
गुरून् सू०.८,३७.
गुरूष्णः सू०.६,२०.
गुरूष्णम् सू०.६,१०४.
" उ०.२०,२.
गुरूष्णवीर्यम् सू०.६,१३५.
गुरूष्णस्निग्धमधुराः सू०.६, ५९.
गुरोः उ०.४,७.
गुरौ सू०.२३,१३.
गुर्वंगम् नि०.१५,११.
गुर्वम्लस्निग्धशीतलम् नि०. १३,२५.
गुर्वल्पव्याधिसंस्थानम् सू०. १२,६८.
गुर्वादयः सू०.९,४.
" " " १६.
गुर्वादिषु सू०.९,१४.
गुर्वाद्यन्नेन चि०.६,७९.
गुर्वाभरणभाराद्यैः उ०.१७, २१.
गुर्वी सू०.६,८३.
" " " ८४.
" " " १५९.
" उ०.२१,५९.
गुलिका चि०.१९,४३.
गुलिकामुखम् सू०.१९,१०.
गुल्पस्य उ०.३०,११.
गुल्फः शा०.४,५.
गुल्फवत् शा०.४,८.
गुल्फसंधिः शा०.४,४.
गुल्फस्य सू०.२७,१६.
" उ०.३०,९.
गुल्फौ शा०.४,४५.
" " " ६१
गुल्मः शा०.५,८८.
" नि०.११,३२.
" " " ४०.
" " " ४३.
" " " ४४.
" " " ४६.
" " " ५४.
" " " ५५.
" चि०.१४,६८.
" " " ११४.
गुल्मकामलापांडुरोगनुत् चि०.१६,४१.
गुल्मकासक्षयश्वासव्रणनेत्रगलामयान् सू०.६, १३१.

Indira Gandhi National Centre for the Arts

गुल्मकुष्ठोदरव्यंगशोफपांड्वा-
मयज्वरान् चि०.१४,
५७.
गुल्मकृमिप्लीहान् सू०.५,
७१.
गुल्मघ्नम् चि०.१४,७.
गुल्मजठरपांडुशोफविसर्पिषु
सू०.१,४२.
गुल्मज्वरोदरप्लीहग्रहणीपां-
डुपीनसाम् चि०.५,२६.
गुल्मतूतिप्रतूनिजित् सू०.
६,३२.
गुल्मनाशनम् चि०१४,९९.
गुल्मनिदानोक्तैः नि०.५,
३९.
गुल्मप्रभेदनम् चि०.१४,
१२७.
गुल्मप्लीहापहम् चि०.१५,
९०.
गुल्मप्लीहार्यैः चि०८,१५२.
गुल्मप्लीहोदरानाहशूलघ्नम्
सू०.६,१६५.
गुल्मप्लीहोदराष्ठीलासंभवः
नि०.७,३४.
गुल्मभेदनैः चि०.१८,३१.
गुल्मम् सू०.६,१५५.
" " १५,२२.
" " " ४५.
" नि०.१५,५३.
" उ०.३३,३०.
" क०.२,१६.
" चि०.१४,१.
" " " ३.
" " " ७.
" " " ४७.
" " " ७७.
" " " ८५.
" " " ८६.
" " " १००.
" " " ११३.
" " " ११५.
" " १५,७३.
गुल्ममेहार्शोविबंधकफमा-
रुतात् क०.२,५६.
गुल्ममेहाश्मरीपांडुमेदोर्शः-
कफशुक्रजित् सू०.१५,
३२.
गुल्मरुजापहम् चि०.१४,
१२१.
गुल्मवत् नि०.११,४.
" चि०.१३,२५.
गुल्मविद्रधिम् चि०१५,३०
गुल्मविधिना चि०१५,९६.
गुल्मविलयोन्नमने सू०२५,
२८.
गुल्मशैथिल्यजननीम् चि०
१४,१२२.
गुल्महृत् सू०.६,१४८.
गुल्महृद्रोगदुर्नामशोफाना-
हगरोदरान् चि०१४,९६.
गुल्महृद्रोगदुर्नामश्वासका-
सजित् चि०.३,६६.
गुल्महृद्रोगसंमोहाः सू०.
४,१५.
गुल्माः नि०.११,४७.
" चि०.१४,८.
" " " ७१.
गुल्माख्यम् नि०.११,३८.
गुल्मान् चि०.१४,३३.
गुल्मानाम् चि०.१५,३७.
गुल्मानाहखुडप्लीहशुद्धाती-
सारशूलिनः सू०१९,२.
गुल्मानाहामवातान् चि०.
१६,१२.
गुल्मानाहार्तिजित् चि०.६,
२५.
गुल्मारुचिविषश्वित्रकुष्ठा-
र्शांसि सू०.५,८१.
गुल्मार्शोविद्रधीकुष्ठवातरक्त
गलामयान् सू०.२६,
क्षिप्र०.
गुल्मार्शोविस्फोटव्यंगकाम-
लाः सू०.१८,८.
गुल्माश्मवर्ध्मग्रहणीगुदो-
त्थान् क०.४,१०.
गुल्मिनाम् चि०.१४,९०.
गुल्मिभिः चि०.१५,१८.
गुल्मी सू०.१८,५.
" शा०.५,१०२.
" क०.२,५४.
गुल्मे नि०.११,५५.
" " " ५७.
" क०.१,३३.
" " २,५०.
" चि०.१३,५१.
" " १४,४.
" " " ५.
" " " ६.
" " " ६०.
" " " ६१.
" " " ७३.
" " " ८३.
" " " ८४.
" " " ११९.
" " " १२०.
" " १५,६.
गुल्मेन शा०.६,४३.
गुल्मोदरगरत्वग्रोगमधुमे-
हिषु क०.२,४३.
गुल्मोदरवर्ध्मशूलघ्नम् चि०.
१४,३९.

Indira Gandhi National Centre for the Arts

गुल्मोदरश्वयथुपांडुगदोद्र-
भेषु चि०.१४,३८.
गुल्मोदरार्शः चि०.१७,७.
गुल्मोदरार्शःशूलानि सू०.
६,१३१.
गुल्मोदरार्शोग्रहणीशोषहृन्
सू०.५,६७.
गुल्मोदरेषु चि०.६,३३.
गुल्मोदावर्तरुक्क्रमाः सू०.
४,२.
गुल्मोदावर्तबध्माशोंजठरग्र-
हणीकृमीन् चि०.१४,
१३५.
गुल्मोन्मादौ चि०.२१,६७.
गुहस्य उ०.३,१.
गुहाम् सू०.२९,३१.
गुह्यपाणितलोष्ठेषु नि०.१४,
४१.
गुह्यपृष्ठस्तनग्रीवाजठराना-
भिकांकुलीः शा०.६,९.
गुह्यम् उ०.३३,४.
गुह्यरोगे सू०.१,४७.
" शा०.१,१७.
गुह्यवेदना सू०.४,२०.
गुह्यस्य उ०.३३,११.
गुह्यासृक्पिशिताश्रयैः उ०.
३३,९.
गुह्ये उ०.२,८.
गूढदृढाः सू०.२६,२०.
गूढप्रहाराभिहते उ०.२६,
५६.
गूढमांसम् चि०.१४,१००.
गूढमूलाम् उ०.२८,६.
गूढवंशम् शा०.३,११३.
गूढस्निग्धश्लिष्टसंध्यस्थिमां-
सः शा०.३,९६.
गूढाः शा०.३,३८.
गूढाम् नि०.१६,५६.
गृग्रस्याम् सू०.२७,१५.
गृंजनकः सू०.६,१११.
गृंजनकस्य चि०.४,४५.
" " ९,३२.
गृद्धिः नि०.८,२३.
" उ०.६,९.
गृध्रः उ०.१३,३७.
गृध्रगंधित्वम् उ०.३,३०.
गृध्रनख्याः उ०.३५,४६.
गृध्रभासखरोष्ट्रम् चि०.५,७.
गृध्रसी नि०.१५,५५.
गृध्रसीम् नि०.१५,५४.
" चि०.१४,४६.
गृध्रस्य नि०.१५,१४.
गृध्रास्याम् सू०.२७,१७.
गृध्राहिकुक्कुटोत्था उ०.१३,
५६.
गृष्टिक्षीरचतुर्गुणम् उ०.६,
३२.
गृष्टिक्षीरम् उ०.२७,२१.
गृष्टिपयोनुपः उ०.४०,२४.
गृहकपोतपुरीषम् उ०.३७,
४०.
गृहतंत्रताम् चि०.७,८८.
गृहधूमः चि०.२२,३६.
गृहधूमताक्ष्यपाठाव्योषक्षा-
राग्न्ययोवरातेजोह्वैः
उ०.२२ ९९.
गृहम् सू०.१७,२८.
गृहाणि सू०.१३,८.
गृहे शा०.५,१२७.
" उ०.६,५०.
" " ४०,२३.
गृहोत्थे चि०.१,१६६.
गैरिकम् उ०.१६,५२.
" " ३२,३१.
" " ३८,३९.
" चि०.१८,१४.
गैरिकांजनकृष्णाम् चि०.४,
३८.
गैरिकेण उ०.९,३९.
गोः नि०.९,७.
" चि०.१७,१०.
गोःकलाबंधम् चि०.९,५२.
गोकंटकाभीरुसृतम् चि०.२,
३७.
गोकुलस्थः उ०.३९,५७.
गोक्षीरभुक् चि०.१५,३.
गोक्षीरान् चि०.१५,३१.
गोक्षुरकः उ०.३९,५६.
गोक्षुरकम् चि०.११,६.
गोक्षुरुः उ०.४०,५५.
गोखराश्वतरोष्ट्राश्वद्वीपिसिं-
हद्वानराः सू०.६,४६.
गोखराश्वोष्ट्रदशनाः उ०.
११,४७.
गोगजाश्वखराहोष्ट्रखरमेषा-
जविड्रसम् चि०.४,३६.
गोगोधाच्छगलोष्ट्राणाम्
चि०.८,८५.
गोजाविमहिषीगजोश्वोष्ट्रख-
रोद्भवम् सू०.५,८०.
गोजिव्हा सू०.६,७५.
" उ०.३८,३९.
गोडम् चि०.१७,४१.
गोतीर्थकः उ०.२८,३१.
गोतीर्थसर्वतोभद्रदललांग-
ललांगलाम् उ०.२८,
३०.
गोत्रे शा०.१,३०.
गोदध्ना उ०.१६,२२.
गोदंतः उ०.३७,७८.
गोदंतशंखफेनः उ०.११,३५.

Indira Gandhi National
Centre for the Arts

गोदंतसदृशार्धांगुलानना सू०.२६,१२.
गोधाकर्कबसान्वितम् उ०. १६,४५.
गोदंतसदृशार्धांगुलानना सू०.२६,१२.
गोधाकर्कबसान्वितम् उ०. १६,४५.
गोधानकुलनागानाम् उ०. ७,३०.
गोधानकुलमार्जारिक्षषपित्त-प्रपेषितान् उ०.५,९.
गोधानकुलमार्जारशल्यकौं-दुरजम् क०.४,४८.
गोधासुतः उ०.३६,७.
गोधूमः सू०.६,१४.
" " ९,२८.
गोधुमचूर्णम् चि०.१०,८८.
गोधूमतः सू०.१०,३३.
गोधूमपिष्टमाषेक्षुविकृतीः सू०.३,१२.
गोधूममाषविकृतीः चि०. ७,१५.
गोधूमान् उ०.४०,२३.
गोधूमान्नैः चि०.१८,२८.
गोनसजम् उ०.३६,६७.
गोपकन्याकाकोल्यौ चि०, २७.
गोपतेः शा०.६,३६.
गोपसुता सू०.१५,९.
गोपांगनाचंदनपद्मकर्धिय-ष्ट्याह्वरोध्राणि क०.४, १२.
गोपुच्छवत् सू०.१९,७१.
गोपुच्छाकारम् सू०.१९, १०.
गोपुच्छाकृतिः नि०१२,३२
गोभिः चि०.१२,३७.
गोमयः उ०.३७,३३.
गोमयचूर्णाभम् शा०,५, १७.
गोमयजैः उ०.१८,४८.
गोमयतोयेन उ०.१३,८५.
गोमयनिष्पीडाशर्कराघृत-माक्षिकैः उ०.३७,७३.
गोमयरसः उ०.३८,२३.
गोमयस्वरसक्षीरदधिमूत्रैः उ०.७,१८.
गोमयाग्निना उ०.३९,७३.
" चि०.९,७३.
गोमयेन क०.१,३.
गोमयैः उ०.३९,२९.
गोमांसचूर्णेन उ०.११,५६.
गोमांसम् सू०.६,६४.
गोमायुमार्जारनकुलव्याल-बानरान् उ०.३५,५२.
गोमूत्रकल्कितः सू०.२९, ७६.
गोमूत्रकल्कितैः चि०८,२१.
गोमूत्रक्वथनविलीनविग्रहाणाम् उ०.२२,१०२.
गोमूत्रगंधि उ०.३९,१३३.
गोमूत्रजीर्णपिण्याककृवाकु-मलैः उ०.२४,२२.
गोमूत्रादिकम् उ०.५,४७.
गोमूत्रपिष्टैः उ०.३०,२४.
गोमूत्रसमगंधता उ०३,२७.
गोमूत्रसिद्धैः क०.५,१९.
गोमूत्रांजलिना चि०१६,८.
गोमूत्राभ्युशितान् चि०.८, ५५.
गोमूत्रे उ०.५,११.
" " " ४०.
" " १३,३३.
" " ३२,२५.
" क०.२,२७.
" चि०.१६,१८.
" " २०,११.
गोमूत्रेण उ०.२२,१०१.
" " ३०,९.
" क०.४,३४.
" " ५,१७.
" चि०.१३,३३.
" " १४,९९.
" " १५,४०.
" " १६,५२.
गोमृगाजरसैः क०.२,५४.
गोमेदकोपनम् चि०.९,१०.
गोरचना उ०.३२,३१.
गोरदंडम् शा०.१,३९.
गोरसः चि०.८,३०.
गोर्वाक्षीरपस्यशकृतम् चि०. ३,३०.
गोवारिणा उ०.३६,६७.
गोवृषभान् शा०.६,६५.
गोव्यजाश्वखरादग्धाकटुतैलेन उ०.३०,३०.
गोशकृता उ०.२,६७.
गोशकृद्भिः उ०.१३,३७.
गोशकृद्रसदुग्धाज्यैः उ०. १३,९१.
गोशकृन्मूत्रवर्तिः चि०.१२, ३७.
गोशृंगलोमवालाहिनिर्मोक-विशदंशविट् उ०.३,५६.
गोश्वयानम् शा०.६,६८.
गोष्ठीकथाभिः सू०.३,२५.
गोष्ठीमहोत्सवोद्यानम् चि०. ७,६४.
गोष्फणाबंधः उ०.२६,२३.
" " " २५.

Indira Gandhi National Centre for the Arts

गोसर्गं शा०.५,११०.
" " ६,६२.
गोसलिलेन चि०.१९,७०.
गोस्तनसन्निभाः नि०७,३९.
गोस्तनाकारम् सू०.२५,१६.
" " " २१.
गौडः सू०.५,७३.
गौडम् सू०.३,१२.
" चि०.८,६१.
" " " ८५.
गौधेरः उ०.३६,७.
गौरः सू०.६,६.
" उ०,३५,५३.
गौरवम् सू०.६,६८.
" " ८,३१.
" " ११,१३.
" चि०.१३,४.
" उ०.२६,३५.
" " ३६,२०.
" चि०.१४,२८.
गौरवसंयुतः शा०.३,११८.
गौरवस्थैर्यसंघातोपचयावहम् सू०.९,६.
गौरवात् चि०.८,१४.
गौरवारुचिकाठिन्यैः नि०. १२,२७.
गौरवारोचकानाहमंदवन्हयस्तिसारिणाम् चि०.१५, १३०.
गौरसर्षपकल्केन चि०.५, ८१.
गौरसर्षपाः सू०.२२,१८.
गौरसर्षपैः उ०.२०,१३.
गौरस्थिः उ०.३२,२१.
गौरान् शा०.६,६६.
गौरि उ०.३५,३०.
गौरोष्णांगः शा०.३,९०.
गौर्यः शा०.३,३८.
गौल्मिकान् चि०.८,३२.
ग्रथितः नि०.१६,१०.
" उ०.८,२४.
" " ३६,१८.
" चि०.४,२.
ग्रथितत्वम् सू०.१९,१७.
ग्रथितम् सू०.१९,१७.
" नि०.३,२९.
" " ७,३२.
" " ८,६.
" उ०.२९,१३.
ग्रथिता उ०.३१,१.
ग्रथिताः शा०.३,३४.
ग्रथिताख्यम् उ०.३३,२१.
ग्रथिताम् उ०.३१,१८.
ग्रथिते चि०.२,२९.
" " " ४४.
ग्रथितोन्नतः नि०.११,४.
" उ०.२१,४५.
ग्रथितौ उ०.२१.१०.
ग्रथित्वा उ०.१८,५२.
ग्रंथनात् उ०.२९,१.
ग्रंथयः शा०.३,४५.
" उ०.३,३०.
" " ३१,३.
" " ३६,२०.
" " ३८,४.
ग्रंथाः उ०.३९,१४९.
ग्रंथाख्ये चि०.१८,२.
ग्रंथिः नि०.९,३१.
" " ११,६०.
" उ०.८,११.
" " " २३.
" " २९,१.
" " " ५.
" " ३१,१७.
" " " २०.
" " " २१.
" चि०.११,५१.
" " १८,३२.
ग्रंथिकम् चि०.१६,१६.
ग्रंथिकशुंठी चि०.९,५७.
ग्रंथिकृमियुताः उ०.१०,९.
ग्रंथिगंडविलापनः उ०.३०, १६.
ग्रंथितः उ०.२९,१४.
ग्रंथितम् सू०.२६,५३.
" उ०.३३,१८.
" " ३४,२०.
ग्रंथिनाडिकृमिश्लेष्ममेदोमारुतरोगिषु सू०१६,८.
ग्रंथिभिः उ०.३८,७.
ग्रंथिम् नि०.९,२४.
" उ०.२९,६.
" " " ८.
" " " ११.
" " ३०,२.
" चि०.१२,२६.
" " १८,२३.
ग्रंथिरूपिणम् नि०११,३८.
ग्रंथिवीसर्पः नि०.१३,५९.
ग्रंथिवीसर्पशूले चि०.१८, २४.
ग्रथिषु सू०.२७,११.
" उ०.३०,१.
ग्रंथिसन्निभः उ०.३७,६३.
ग्रंथिसन्निभम् शा०.१,११.
ग्रंथी उ०.३०,५.
ग्रंथीन् सू०.२९,४९.
" चि०.१५,११.
" उ०.३०,३२.
ग्रंथीनाम् नि०.१३,५८.
ग्रंथ्यग्निसैंधवात् चि०९,४३

Indira Gandhi National Centre for the Arts

ग्रंथ्यपच्यर्बुदोदरी क०.१, ११.
ग्रंथ्यर्बुदापचीस्थौल्यपांडुरोगाढ्यमारुतान् चि०. ८,५७.
ग्रंथ्यादौ सू०.१,४७.
ग्रंथ्याभम् नि०.११,२९.
ग्रंथ्याभे शा०.१,१४.
ग्रंथ्यार्तवे शा०.१,१६.
ग्रतनम् शा०.६,५६.
ग्रस्तः नि०.७,२४.
ग्रस्तस्य नि०.२,४५.
ग्रस्ते चि०.१०,९३.
ग्रस्यते चि०.१०,९३.
ग्रहः सू०.२६,२९.
” नि०.२,१३.
” ” ” १७.
” ” ७,१६.
” ” ११,१५.
ग्रहभ्रम् उ०.५,१९.
” ” ३४,६७.
ग्रहजित् उ०.३,५१.
ग्रहणम् उ०.७,१४.
” चि०.१९,२३.
ग्रहणात् शा०.३,५०.
ग्रहणाहरणे नि०.९,१५.
ग्रहणी शा०.३,५०.
” ” ” ५३.
” नि०.८,३०.
” चि०.४,५१.
ग्रहणीगदः नि०.८,१५.
ग्रहणीगदे सू०.५,३१.
” चि०.१०,४०.
ग्रहणीदीपनम् उ०.२,३९.
ग्रहणीदोषः नि०.८,१८.
ग्रहणीदोषगुलमनुत् चि०. १०,३८.
ग्रहणीदोषम् चि०.१२,२८.
ग्रहणीदोषाः नि०.८,३०.
ग्रहणीदोषान् चि०१०,५२.
ग्रहणीदोषिणाम् चि०.१०, ४.
ग्रहणीदोषे चि०.१०,६२.
” ” १५,२०.
ग्रहणीपांडुकंडूकोठार्शसाम् क०१२,६०.
ग्रहणीपांडुकुष्ठार्शःशोफशोषोदरज्वरान् सू०५,७०.
ग्रहणीपांडुप्लीहानाहगलामयान् सू०.६,१४०.
ग्रहणीपांडुरोगान् क०२,२०
ग्रहणीप्रदोषम् चि०.१९, ३०.
” ” ” ५२.
ग्रहणीबलः शा०.३,५३.
ग्रहणीम् चि०.१०,१.
” ” ” ५०.
ग्रहणे सू०.२६,१६.
ग्रहण्यर्शोनिलश्लेष्महितोष्णा सू०.६,७३.
ग्रहण्यर्शोविकारघ्नः सू०.६, ७२.
ग्रहण्याः शा०.३,५३.
ग्रहण्याम् चि०.१०,४५.
ग्रहम् उ०.४,४३.
” ” ” ४४.
ग्रहवेशान् नि०.१,२२.
ग्रहाः उ०.१,४२.
” उ०.३,१.
” ” ४,५.
” ” ” ९.
” ” ५,२१.
ग्रहादौ नि०.२,४३.
ग्रहान् उ०.३,५५.
” ” ५,१३.
” ” ” ५२.
ग्रहापहान् उ०.५,९.
ग्रहापाये उ०.३,६१.
ग्रहावेशौषधिविषक्रोशभीशोककामजः नि०२,४०
ग्रहिण्याम् उ०.४०,५०.
ग्रहीतुम् सू०.२८,२२.
ग्रहीष्यताम् उ०.३,३.
ग्रहेण नि०.२,४०.
ग्रहेषु सू०.१,३१.
ग्रहैः नि०.१,२२.
ग्रहोन्मादान् उ०.५,८.
ग्रामणीः उ०.३९,११३.
ग्रामदेशानाम् नि०.५,१२.
ग्राम्यः सू०.६,५७.
ग्राम्यधर्मे सू०.७,६८.
ग्राम्यसुखनिस्पृहचेतसः सू० ७,६७.
ग्राम्यानूपम् चि०.१७,४१.
ग्राम्यानूपोदकैः चि०३,१९.
ग्राम्योदकनूपरसैः चि०.२१, २.
ग्रासग्रासांतयोः सू०.१३, ३९.
ग्रासशल्यम् सू०.२८,३८.
ग्रासे सू०.१३,३३.
ग्राहबहुले नि०.६,३९.
ग्राहि सू०.५,२९.
” ” ६,७१.
” ” ” ८८.
” ” ” ९१.
” ” ” १०५.
” ” ” ११६.
” ” ” १२४.
” ” ” १२५.
” ” ” १२७.

Indira Gandhi National Centre for the Arts

" " " १६१.
" चि०.५,५७.
" " १५,१२५.
ग्राहिणी सू०.६,२८.
" " " ७३.
ग्राहिदीपत्वपाचनैः चि०.९, ११.
ग्राहिभेद्यादिभेदतः सू०. १४,३७.
ग्राहिभेषजम् चि०.२२,६६.
ग्राही सू०.६,६.
" " " ११.
" " " ५५.
" " " ५६.
" " " ७७.
" " " १११.
" " १०,२१.
" नि०.२,७१.
" चि०.३,१२५.
" " ९,२८.
ग्राह्येयम् उ०.९,१९.
ग्राह्यम् सू०.२५,४२.
" " २६,३२.
" क०.६,७.
ग्रीवया उ०.१,२७.
ग्रीवा शा०.३,१११.
ग्रीवाकर्णशंखशिरःश्रिताः सू०.२७,११.
ग्रीवादुर्द्धरता उ०.२,६५.
ग्रीवाबाहुशिरोंतरे शा०.४, २५.
ग्रीवाम् शा०.४,२५.
" नि०.४,६.
" " " २४.
ग्रीवायाम् शा०.३,२६.
" उ०.१,५.
ग्रीवाललाटमुष्कस्फिङ्मेढ्र-पायूदरादिषु सू०.२९, ५०.
ग्रीवाललाटहृदयम् शा०. ५,६१.
ग्रीवाश्रितसिराव्यधे सू०. २७,२६.
ग्रीष्मकाले क०.२,२६.
ग्रीष्मजम् सू०.४,३५.
ग्रीष्मलीलया उ०३९,११४.
ग्रीष्मवर्षाशरद्धिमाः सू०.३, १.
ग्रीष्मवर्षाहिमचितान् सू०. १३,३४.
ग्रीष्मावर्षाहिमप्रगमाः सू०. १३,३४.
ग्रीष्मवसंतयोः क०.१,२.
ग्रीष्मादिषु सू०.१२,२४.
ग्रीष्मह्नोरात्रिभुक्तांते नि०. १,१६.
ग्रीष्मे सू०.३,२६.
" " ७,५६.
" " १४,९.
" " २०,१५.
" " २९,६६.
" " ३९,६६.
" " " १३१.
" चि०.१,१५.
" " " ३५.
ग्रीष्मौपतप्तस्य चि०.७,५०.
ग्रैष्म्यः सू०.१३,१४.
ग्लपनः सू०.६,२९.
ग्लपनम् सू०.६,३३.
ग्लानिः सू०.७,१५.
" " ८,३०.
" " ११,१७.
" शा०.१,३६.
" " " ७४.
" उ०.२७,३५.
" " ३६,१७.
ग्लानिभ्रमापक्तितंद्रारोगाः सू०.७,६४.

घ.

घटः क०.६,२८.
घटचतुष्के उ०.२२,९०.
घटस्य चि०.१४,१०४.
घटिका सू०.२५,३.
घटिकाम् चि०.१४,८५.
घटितकर्णिकम् सू०१९,१४
घटितानि सू०.२६,१.
घटी सू०.२५,२८.
घटे सू०.२६,४६.
" चि०.१४,१०४.
" " २१,३२.
" २ " ५७.
घट्टनम् नि०.११,१४.
घट्टयन् शा०.५,११७.
" चि०.३,११३.
घनकल्केन् क०.४,२९.
घनचंदनशुंठ्यंबु चि०१,१५
घनताम् उ०.२२,८२.
घनत्वग्वर्णान् उ०.२३,२७.
घनदूषिके सू०.२३,९.
घननीलकेशः शा०.३,९७.
घनपक्ष्मणी शा०.३,१०९.
घनपिच्छिलसंस्रावा उ०. २९,३०.

Indira Gandhi National Centre for the Arts

घनपूतिबहुक्लेदम् उ०.१७, १३.
घनभूरिलसीकासृक्प्रायम् नि०.१४,२७.
घनवाससा उ०.२६,२३.
घनवृंदम् उ०.३८,३७.
घनश्लेष्मणि चि०.३,२७.
" " " ३३.
घनस्निग्धश्वेतश्लेष्मप्रवर्तनम् नि०.३,२७.
घनस्पर्शत्वम् सू०.२९,९.
" " " ११.
" " " १२.
" " ३३,१२.
घनांगता नि०.१०,३८.
घनात्यये सू०.४,३५.
" उ०.३५,६४.
घनांतयोः सू०.३,५६.
घनापाये उ०.३५,६४.
घनाभिवृष्टम् सू०.५,३.
घनाम् सू०.२९,२७.
घनीभवति चि०.१५,१०४.
घनीभूतः उ०.२२,१०५.
घनीभूतम् शा०.५,३०.
घने उ०.११,४२.
" " १३,७७.
" " १६,२५.
" " २२,९०.
" चि०.३,२८.
घनोदये उ०.१९,११४.
घनोन्नतः नि०.११,४८.
घनोन्नतप्रसन्नत्वक्स्कंधग्रीवास्यवक्षसः सू०.२०, ३९.
घनोन्नतम् उ०.१०,१६.
घनोन्नताः उ०.३१,२.
घर्मकाले नि०.८,१०१.
घर्मसेविनः चि०.१९,७४.
घर्मस्वेदपरीते उ०.३१,१२.
घर्मांबु चि०.३,४४.
घर्मे सू०.१६,१२.
" उ०.२७,१७.
घर्मेच्छा नि०.२,१८.
घर्षतोद्भेदोपदेहवत् उ०. १५,१६.
घर्षणम् उ०.११,४३.
" " २२,१०.
" " " ३४.
" " " ४९.
" " " ६१.
घर्षणयोजितः उ०.५,१४.
घर्षणादि उ०.२२,४५.
घर्षणेन उ०.२२,९८.
घर्षम् उ०.१६,३५.
घर्षयेत् उ०.२२,४६.
घर्षरागाश्रुरुग्धरान् उ०१६, ३४.
घर्षशूलाश्रुरागन्वित् उ०. १६,३८.
घर्षाश्रुशोफकंडूविनाशनाः उ०.१६,४२.
घर्षेत उ०.२२,६०.
घाटा उ०.२३,४.
घा[illegible]म् उ०.२६,२२.
घुणप्रिया सू०.१५,३३.
" चि०.१६,११.
घु[illegible]वल्लभाम् चि०.८,१०३.
घुंघुरकम् नि०.४,७.
घुंघुरम् उ०.१९,२०.
घूर्णति उ०.२३,५.
घूर्णनोद्वेष्टनम् उ०.३७, १७.
घृणित्वम् नि०.५,१०.
घृतकुंभे उ०.३९,२६.
घृतक्षीरनिषेवणात् उ०.२, ३१.
घृतक्षीररसैः शा०.२,१७.
घृतक्षीरशालिषष्टिकभोजनः उ०.३९,७०.
घृतक्षीरसमन्वितः चि०.९, ९६.
घृतक्षौद्रचतुष्पलम् उ०३६, ७३.
घृतक्षौद्रप्लुतम् उ०.३९,५९.
घृतक्षौद्रम् उ०.३६,५४.
घृतक्षौद्रयुक्ताः उ०३२,१९.
घृतक्षौद्रयुतैः क०.४,१५.
घृतक्षौद्रवसातैलैः क०.४, ३०.
घृतक्षौद्रसमन्वितम् उ०. ४०,२८.
घृतक्षौद्रेण चि०.४,३९.
घृतगुडव्योषभार्ङ्गीरजोन्वितः चि०.१४,१२०.
घृततैलद्विकुडवे चि०.१०, ५४.
घृततैलपाक चि०.१९,७७.
घृततैलरसक्षीरशर्कराक्षौद्रसंयुतान् उ०.४०,७.
घृततैलाटकम् उ०.३४,४२.
घृततैलात् चि०.१५,५.
घृतदिव्योदकक्षीरक्षौद्रदाडिमसैंधवम् उ०.८,४३.
घृतनल्वणम् उ०.३९,४७.
घृतपलम् चि०.१४,५६.
घृतपात्रस्थम् चि०.८,४६.
घृतपात्रे उ०.३९,१२६.
घृतपानम् उ०.१३,९८.
घृतप्रस्थः चि०.१७,१२.
घृतप्रस्थम् उ०.५,३०.
" " ६,२३.

Indira Gandhi National
Centre for the Arts

" " ७,२५.
" " १३,२.
" " " ५.
" " " १३.
" " २४,४८.
" " " ४९.
" " ३४,६५.
" चि०.३,५९.
" " " १६१.
" " ४,५०.
" " ५,३०.
" " १४,१५.
" " " ५५.
" " " ६४.
" " १५,७.
" " १५,३२.
" " " ९४.
" " १९,२२.
घृतप्लुतम् चि०.३,११.
" " ४,१४.
घृतप्लुतैः सू०.२९,२६.
" चि०.५,७१.
घृतभर्जितम् उ०.३४,३१.
" चि०.९,८७.
" " २२,१२.
घतभर्जिताः उ०.३९,९७.
घृतभर्जितैः चि०.६,६३.
घृतभाजने उ०.३९,२०.
" चि०.४,२९.
" " ८,६५.
" " १२,३०.
घृतभृष्टम् उ०.१६,४.
" " " १६.
" " " ३२.
" चि०.३,१७.
" " " ८७.
" " " १७३.
" " ५,३७.
घृतभृष्टान् चि०.२,१९.
घृतभृष्टाम् चि०.९,५९.
घृतभेषजैः चि०.१४,२९.
घृतमंडः उ०.२२,३१.
घृतमंडम् चि०.२१,६१.
घृतमंडमधुद्रुतैः उ०२२,३०
घृतमंडस्य उ०.१८,३३.
घृतमंडांजनयुतम् क०.३,-३७.
-घृतमंडानुवासनम् क०.३,३८.
घृतमंडेन चि०.३,१५५.
" " १८,२१.
घृतमंडोपसेवनान् चि०.९,३३.
घृतमत्स्यांगशस्त्ररक्तनिपातनैः सू०.२६,४१.
घृतमध्वक्तम् सू०.३०,३१.
" " " ४५.
घृतमध्वाक्ताम् उ०२०,२५.
घृतमांसोपसाधितम् क०.३,३१.
घृतमाक्षिकप्लुताया सू०३९,१५३.
घृतमाक्षिकम् उ०.११,१०.
घृतमात्रया चि०.३,१०३.
घृतमार्द्रकनागरस्य चि०.१७,८.
घृतमिश्रितैः उ०.३,४७.
घृतमुख्यम् चि०.१९,३९.
घृतमूर्च्छितम् चि०.३,३८.
घृतमूर्च्छिताः चि०.१८,७.
घृतयुक्तैः उ०.३५,६७.
घृतयुतः चि०.१,५९.
घृतशुक्तयुक्तान् उ०.३९,१२७.
घृतसंयुतान् चि०.४,१२.
घृतसंयुताम् उ०.२,३३.
घृतसिक्तस्य शा०.६,४३.
घृतस्निग्धम् उ०.१८,७.
घृतस्य चि०.१,९३.
" " ३,५५.
" " ६,२९.
" " १६,३.
" " २१,५७.
घृतश्लेष्मगुडाक्षोडमोचचोचपरूषकम् सू०.१०,२२.
घृताक्तः सू०.३०,३४.
घृताक्तान् उ०.१६,३०.
घृताक्ताम् चि०.४,१२.
घृताक्तैः सू०.२९,२७.
" उ०.१६,३५.
घृताटकम् उ०.६,२२.
" " ३४,३६.
" " ४०,१६.
" चि०.३,७.
" " १५,२८.
घृताढ्यम् उ०.३९,५१.
घृताढ्या सू०.१६,४१.
घृताधिकाः चि०.१८,१८.
घृतान्वितम् उ०.३९,१३.
" चि०.३,७६.
" " " ७८.
" " १८,१४.
घृतान्विताः चि०.१८,१९.
घृतान्वितान् उ०.२४,२.
घृताप्लुतम् उ०.१४,१७.
" " ३६,५४.
" चि०.१०,५५.
घृताभ्यक्तशिराः उ०.२४,१.
घृताभ्यक्तैः उ०.१६,३८.
घृतार्थकम् चि०.३,११५.
घृतोपमम् उ०.३५,६९.

Indira Gandhi National Centre for the Arts

घृष्टः उ०.१६,३४.
घृष्टम् नि०.१४,२१.
" उ०.८,२२.
" " १३,९६.
" " १६,३८.
" " २६,२.
" चि०.१९,७२.
घृष्टाः उ०.१३,८८.
घृष्टान उ०.१६,३०.
घृष्टानि चि०.१९,५८.
घृष्टावकृतविच्छिन्नप्रविलंबितपातितम् उ०.२६,२.
घृष्टे उ०.२६,१०.
" " " १४.
घृष्टेषु उ०.२१,२८.
" " २२,४३.
घृष्टेष्टिकाचूर्णकणैः उ०.३९,७५.
घोंटाफलत्वग्लवणम् उ०.३०,४०.
घोरः उ०.२१,४८.
" चि०.३,१७८.
घोरदर्शनः उ०.३५,१.
घोरम् नि०.५,४५.
" " १२,३४.
" उ०.१३,१.
" क०.३,१६.
" चि०.७,३३.
घोररुक् उ०.२८,९.
घोरा सू०.१८,२६.
" नि०.९,७.
घोराः उ०.२३,१३.
घोरान् सू०.८,३५.
घोरे उ०.३६,६१.
घोरैः उ०.३५,५४.
घोरौ नि०.२,४४.
घोषया उ०.१३,५४.
घोषाभयातुत्थकयष्टिरोध्रैः उ०.१६,७.
घ्नद्भिः शा०.५,१३२.
घ्नंतम् उ०.४.२५.
घ्राणकर्णाक्षिच्छेदने सू०२६.८.
घ्राणकर्णास्यरोगजित् उ०.१३,९.
घ्राणगंधास्थि शा०.३,४.
घ्राणगे चि०.२,४६.
घ्राणपाकः उ०.१९,१९.
घ्राणम् सू०.१२,३.
घ्राणमार्गम् शा०.४,३०.
घ्राणवक्रगुदस्रवाः सू०.१६,३१.
घ्राणवक्रयोः उ०.२४,१५.
घ्राणशिरोगते सू०.२१,१०.
घ्राणस्रवः उ०.२३,६.
घ्राणाक्षिमुखपाकाद्याः उ०.२,२२.
घ्राणात् सू०.२६,२४.
घ्राणार्जबंधः उ०.३०,३४.
घ्राणार्बुदार्शसाम् सू०.२५,२०.
घ्राणार्बुदेषु सू०.३०,२९.
घ्राणास्यतः उ०.२०,१७.
घ्राणे सू०.२५,३५.
" उ०.२०,२५.
घ्राणेन सू०.१३,३१.
घ्राणोपरोधनिस्तोददंतशंखशिरोव्यथाः उ०.१९,४

च.

चकितहरिणलोलप्रेक्षणीभिः चि०.७,७९.
चकोरस्य सू०.७,१५.
चक्रतैलम् उ०.२७,१९.
चक्रतैलेन उ०.२६,३१.
" " ३७,२९.
चक्रनाभिः शा०.३,३९.
चक्रवत् शा०.३,६६.
चक्रोज्वलभुजम् उ०.३९,१७४.
चक्षुः सू०.२,५.
" " २३,१७.
" शा०.५,६९.
" उ०.१३,१६.
" " " ३३.
" " " ३८.
चक्षुरक्षायुषम् उ०.१३,९७.
चक्षुरादीनाम् नि०१६,२०.
चक्षुर्निमीलनम् उ०.३,१५.
चक्षुर्बलम् क०.४,६.
चक्षुर्हृदयरोधनम् सू०.७,२२.
चक्षुषः सू०.१०,३४.
चक्षुष्यः सू०.६,३१.
" क०.४,२९.
" " " ४२.
चक्षुष्यम् सू०.५,५१.
" " " १६९.
" चि०.५,३२.
चक्षुष्या सू०.६,८५.
" " " ११३.
चंक्रमिते नि०.१५,५७.
चंचुः सू०.६,८३.

Indira Gandhi National Centre for the Arts

चंचुफलम् उ०.३०,३९.
चटकाः सू०.६,५९.
चटचटायते उ०.२५,७.
" " ३६,४९.
चणकादिरसानुपः चि०.५, ६२.
चंडम् सू०.१,३४.
चंडागुग्गुलदेवधूपसपुराः सू०.१५,४३.
चंडागुरुविलेपने चि०.१७, ३६.
चंडातामलकीलोहभाङ्गीं- नागरवालकम् चि०.४, ४२.
चंडालि उ०.३५,३०.
चंडालैः शा०.६,४४.
चंडावचूर्णानि चि०१९,६५.
चंडावालकपौष्करम् चि०. ४,४४.
चतसृभिः चि०.५,१३.
चतस्रः सू०.१०,२३.
" " ३०,११.
" शा०.३,१५.
" " " ३१.
" " ४,२७.
" " " २८.
" " " ४४.
" चि०.१,१२०.
चतुः सू०.२१,१३.
चतुःकुवलयम् उ०.३९,४९.
चतुःपलम् क०.६,१३.
" चि०.१०,५८.
" " १४,४५.
चतुःप्रयोगम् चि०.२२,४४.
चतुःप्रयोगान् उ०.२७,३३.
चतुःशकालम् सू०.२५,२३.
चतुःषष्टिः सू०.१६,१५.
चतुःषष्टिम् उ०.१३,२०.
चतुरः सू०.१०,४१.
" " १९,७६.
" उ०.१३,३९.
" " ३३,२७.
चतुरंगुलः क०.२,३१.
चतुरंगुलम् सू०.१९,७९.
" " २५,१६.
" " " २१.
" " " ३३.
चतुरंगुलमज्ञः क०.२,३५.
चतुरंगुलमानम् चि०.१५, १०९.
चतुरंगुलाः सू०.२६,२२.
चतुरंगुलात् उ०.१,५.
" चि०१५,१०८.
चतुरंगुले सू०.२७,१५.
" " " २९.
" उ०.३६,४२.
चतुरस्रा सू०.२६,२५.
चतुरस्राकृतिः उ०.२५,१४.
चतुरुत्तरा शा०.३,२८.
चतुरुत्तराः शा०.३,३९.
चतुर्गणम् सू०.१,२७.
चतुर्गणा चि०.१५,१६.
चतुर्गुणम् उ०.१,४५.
" " १८,२८.
" " ३४,६५.
" " ४०,१७.
" क०.६,२२.
" चि०.११,६८.
चतुर्गुणविवर्धितम् क०.६, १५.
चतुर्गुणसितान्विताः चि०. १०,२०.
चतुर्गुणाभ्याम् उ० ३९,२५.
चतुर्गुणे उ०.५,११.
" " " ३०.
" " " ४३.
" " १३,४९.
" " १४,२८.
" " १८,२३.
" " ३०,२२.
" " ३४,४२.
" क०.४,६०.
" चि०.८,७८.
" " १५,७.
चतुर्गुणेन उ०.२४,५०.
" चि०.१,१७९.
चतुर्जातकतालीसमुस्तागंध- पलांशकैः चि०.१७,२३.
चतुर्जातम् सू०.६,१५८.
" उ०.३९,३८.
" चि०.१०,१७.
" " १२,२५.
चतुर्जातात् चि०.१४,९४.
चतुर्णाम् चि०.१०,६.
चतुर्थः सू०.१९,५०.
" " " ६०.
चतुर्थकः नि०.२,७२.
चतुर्थकविपर्ययः नि० २,७३
चतुर्थके सू०.२७,१३.
चतुर्थभक्तांतरितः उ०.३९, ८८.
चतुर्थम् सू०.८,४६.
" उ०.१२,७.
" क०.६,१६.
चतुर्थशेषम् क०.४,१.
चतुर्थसुषिरा सू०.२५,१६.
चतुर्थांशम् सू०.१९,३९.
चतुर्थिका क०.६,२७.
चतुर्थिकाम् चि०.१४,९४.
चतुर्थिके चि०.३,१४१.
चतुर्थे शा०.१,२६.

Indira Gandhi National
Centre for the Arts

ASTÂNGAHṚÎDAYAM.

A COMPENDIUM OF THE HINDU SYSTEM

OF

MEDICINE.

COMPOSED BY

VĀGBHATA.

WITH THE COMMENTARY OF

ARUṆADATTA.

VOL. II.

INCLUDING CHIKITSÂ, KALPA AND UTTARA.

REVISED AND COLLATED

BY

ANṆÁ MORESHVAR KUNTE, B. A., M. D.

DEMONSTRATOR OF ANATOMY, GRANT MEDICAL COLLEGE.

BOMBAY.

PRINTED AT GANPAT KRISHNAJI'S PRESS, BY THE PROPRIETOR ATMARAM KANOBA

1880.

Indira Gandhi National Centre for the Arts

Registered for copy-right under Government of India's Act XXV of 1867.

Indira Gandhi National
Centre for the Arts

अष्टांगहृदयम्

(उत्तरार्द्धम्) (चिकित्सा—कल्प—उत्तर—).

श्रीमद्वाग्भटविरचितम्

श्रीमदरुणदत्तकृतया सर्वांगसुंदराख्यया टीकया सहितम्

कुंटेइत्युपाव्हेन मोरेश्वर सूनुनाऽनंतेन परिशोधितम्

प्रकाशितम्

तच्च

मुम्बापुर्याम्

गणपत कृष्णाजी मुद्रायंत्रालये तदध्यक्षेणात्मारामकानोबाभिख्येन मुद्रितम्

१८८०.

Indira Gandhi National
Centre for the Arts

ह्या पुस्तकाची मालकी सन १८६७ च्या २५ व्या आक्ताप्रमाणें नोंदिली आहे.

Indira Gandhi National
Centre for the Arts

उत्तरार्द्धम्.

१ अथज्वरचिकित्साध्यायः १
आगमप्रामाण्यम्
ज्वरादौलंघनम्
लंघनेकारणम्
२ लंघनफलम्
सामज्वरेवमनम्
३ वमनद्रव्याणि
वमनेविशेषणम्
ज्वरितानामुपवासः
४ वातकफज्वरेउष्णांबुपानम्
केवलपित्तज्वरेनोष्णांबुपानम्
५ उद्रिक्तपित्तादिभ्योघनादिसाधितं-शीतंतोयम्
ज्वरेपित्तस्यविरुद्धाहारादित्यागः
ज्वरेस्नानादित्यागः
सामज्वरेशूलघ्नौषधपाननिषेधः
६ उदर्दादियुतज्वरेस्वेदःशस्तः
स्नेहोक्ताचारविधेरनुपालनम्
मलानांलंघनादीनिपाचनानि
७ अस्यविशिष्टविषयेऽपवादः
तेषुबृंहणरूपंशमनम्
८ ततोज्वरितस्यपेयाभिरुपाचारः
९ पेयोपक्रमः
सशुंठीमाक्षिकशीतपेयापानम्
१० गोक्षुरसाधितपेयापानम्
पृश्निपर्ण्यादिसाधितपेयापानम्
हिध्मादिमतःपेयापानम्
कोष्ठेविबद्धेचविकादिसाधितपेया-पानम्
परिकर्तिनिकोष्ठेकोलादिसाधितपे-यापानम्
११ पेयोषधेरसादिकरणम्
अर्थविशेषेषुपेयानिषेधः
१२ तेषुकर्तव्यप्रकारः
ततोजीर्णेतर्पणभोजनादि
१३ एवंज्वरस्यषडहोतिवाह्यः
ततःकषायः
१४ पित्तादौतिक्तादिकषायः
१५ तरुणज्वरेकषायनिषेधः
१६ औषधदानेमतभेदः
भैषज्यायोजनेकारणम्
१७ भैषज्ययोजनेकालः
औषधपानम्
यथायोगंपूर्वोक्तकषाययोजनम्
१८ पंचानांसंततादीनांशमनाः
वातजेज्वरेचिकित्सा
पित्तजेचिकित्सा
कफजेवत्सकादिगणादि
१९ रुग्बंधादियुक्तज्वरेदीपनपाचनम्
द्राक्षादिगणोवातपित्तज्वरनाशकः
सर्पिर्युक्तोरसविशेषोज्वरदाहनाशकः
वातश्लेष्मणिवचादीनांकषायादि
व्याघ्र्यादिक्वाथोवातश्लेष्मज्वरादि-जित्
२० पथ्यादिपाचनंसिद्धचूर्णम्
आरग्वधादिःसक्षौद्रःकफपित्तज्वर-घ्नः
तथातिक्तादयः
सन्निपातेपाचनम्
वातश्लेष्माधिकेज्वरेनागरादिपाच-नम्
मधूकपुष्पादिकःकषायः
ज्वरघ्नःकषायः
२१ जीर्णौषधेपेयाद्यन्नेऽव्यवस्था

Indira Gandhi National Centre for the Arts

तंत्रकारस्याप्ययंमार्गः
२२ पुराणज्वरेजीर्णाःशाल्यादयः
श्लेष्मणियवाःपथ्याः
ज्वरिणओदनप्रकारः
ज्वरापहायूषाः
२३ ज्वरेरसाहिताः
केचित्सितामधुभ्यांयुताः
२४ तत्ररुच्यानिव्यंजनानि
अनुपानेपितेषांयोजनादि
ज्वरिणोभोजनकालः
यथोचितकालेवाभोजनम्
२५ सर्पिष्पानकालनिरूपणम्
जीर्णज्वरानुवृत्तिः
२६ जीर्णज्वरनाशार्थंसर्पिष्पानम्
जीर्णेवातपित्तोत्तरेसर्पिर्दानम्
२७ घृतंज्वरोष्मादिजित्
यथामलंपूर्वेसर्वेकषायाःसघृतायो-ज्याः
२८ घृतेनसहयोजितःक्वाथोज्वरादिहा
द्रव्यविशेषैःसाधितंघृतंज्वरजित्
जीर्णकफज्वरचिकित्सा
पंचस्नेहाजीर्णज्वरघ्नाः
२९ घृतेपरिणतेरसाशनम्
मुद्गकारवेल्लादिरसाःकफपित्तघ्नाः
एवंकृतेशमनाभावेवमनम्
पक्वेपुनर्दोषेत्रिफलादिभिर्विरेचनम्
ज्वरिणःपयसात्रिफलादिपानम्
३० विरिक्तादीनांसंसर्गीकर्तव्या
ज्वरोत्क्लिष्टमलस्योपेक्षा
एवमामसंग्रहणेदोषाः
आमज्वरेआमनिर्हरणार्थमौषधंन
३१ ज्वरेणक्षीणस्यपयआदिनामल-निर्हरणम्
क्षीरोचितस्यक्षीरंहितम्
क्षीरंवपुषोजीवनकरम्
३२ क्षीरंद्रव्यांतरेणसंस्कृतंग्राह्यम्
शुंठ्यादियुतंक्षीरंतृड्दाहजित्
तथाद्राक्षादिभिःशृतम्
पंचमूलीशृतंपयःकासादिभ्योमो-चकम्
एरंडमूलादिनाशृतंज्वरविमोचकम्
३३ शुंठ्यादिभिःसाधितंपयःशोफादि-जित्
वृश्चीवादिभिःसाधितंपयोज्वरशो-फनुत्
शिंशपासारेणशृतमाशुज्वरापहम्
दोषेपक्वाशयंगतेनिरूहोबलादिकरः
विरेचनादिवातादिहारकम्
३४ प्रक्षीणकफपित्तस्यानुवासनम्
पटोलादिभिःक्वाथोज्वरनाशनः
ज्वरहृद्बस्तिः
ज्वरेऽनुवासनादि
३५ वक्ष्यमाणाबस्तयोज्वरनाशनाः
जीर्णज्वरेविरेचनाख्यंनस्यम्
यथायोगंधूमादिकल्पना
अरुचावास्येमातुलुंगस्यकेसरादि-धारणम्
त्वगाश्रितेजीर्णज्वरेऽभ्यंगादयः
३६ दाहेऽभ्यंगविशेषः
दाहज्वरेतैलविशेषः
तेनमस्तकलेपनम्
३७ पूर्वोक्तगणक्वाथेनावगाहादि
कपित्थादिफेनलिप्तेंगेदाहनाशः
पित्तहरक्रमेणदाहज्वरनाशः
सुखोष्णेनतैलेनाभ्यंजनम्
३८ पूर्वोक्तैर्लेपनादि
तथास्वेदादिशीलनम्
३९ सन्निपातचिकित्सा
४१ सन्निपातज्वरस्यांतिकर्णमूलेशोफः
तत्रचिकित्सा
पूर्वोक्तैरुपशमाभावेबाह्वोःशिरामो-चनम्
अयमेवविधिर्विषमज्वरे
४२ विषमज्वरघ्नाःक्वाथाः

Indira Gandhi National Centre for the Arts

विषमज्वरेत्रिफलादीनांपृथक्पृथग्-
योजनम्
अथवाभल्लातकयोजनम्
विषमज्वरेलशुनयोजनादि
विषमज्वरेचिकित्सांतरम्
४३ तद्देहवर्तनप्रकारः
सर्पिषोवामात्रापानेपुनर्वमनम्
ज्वरगमनवासरेनीलिन्यादिपानम्
तैलविशेषेणनयनांजनम्
ससैंधवनस्ययोजनम्
सर्वेषुज्वरेषुपलंकषाधूमः
४४ विषमज्वरेचित्तवैकृतीयधूपादयः
दैवाश्रयंचौषधंज्वरादिनाशकम्
विषमज्वराशांतौयथास्वंसिराव्यधः
केवलानिलादिज्वरेसर्पिष्पानादि
४५ ग्रहोत्थेज्वरेबलिमंत्रादिसाधनम्
ओषधीगंधजादौपित्तशमनादि
क्रोधादिजेज्वरेचिकित्सा
क्रोधजादिज्वराणांशांतिप्रकारः
शापाद्युत्थेज्वरेदैवव्यपाश्रयोविधिः
तेषुज्वरेषुदोषानुसारेणाहारादिक-
ल्पनम्
४६ वातादिकोपानुसारेणाहारादिकल्प-
नम्
ज्वरकालस्मृत्योर्हारिभिर्विषयैर्हर-
णम्
कृपापरंचेतःसर्वज्वरनाशकम्
आबललाभाद्व्यायामादित्यागः
विज्वरस्यापिसर्वान्नवर्जनम्
४७ ज्वरिणस्तत्तत्कालेभेषजदानंकारणंच
ओषध्याद्योज्वरघ्नाः
अथरक्तपित्तचिकित्सिताध्यायः २
पुंसऊर्ध्वगरक्तपित्तोपक्रमः
४८ अधोगस्यापियापनम्
रक्तपित्तेचिकित्सितविचारः
४९ रक्तपित्तस्यविरेकादिनासाधनादि
ऊर्ध्वप्रवृत्तेरसादि
५० अधोगेबृंहणादि
ऊर्ध्वगादौतर्पणादि
अशुद्धरक्तधारणनिषेधादि
लेहः
त्रिवृतादिभिर्मोदकःसन्निपातोत्थ-
रक्तशोफज्वरहृत्
५१ तत्रवमनादि
उभयोःक्रमेणमंथपेयादी
मंथप्रकारः
मंथस्यान्यःप्रकारः
पेयाप्रकारः
५२ मांससाधनप्रकारः
रक्तपित्तेशूकशिंबिजधान्यादि
पानीयप्रकारः
५३ रक्तपित्तिनःशशमांसादिशस्तम्
रक्तपित्तकारणत्यागः
वासकरसेनफलिन्यादिकपानंरक्त-
पित्तशमकम्
रक्तपित्तजयिनस्त्रयःक्काथाः
५४ अथवापलाशत्वक्क्काथः
ग्रथितेरक्तपित्तेलेहः
अतिस्रुतरक्तस्यरुधिरपानादि
रक्तपित्तजित्कषायः
चंदनादिजःप्रसादोरक्तस्यातिप्रवृत्ति-
नाशकः
इक्षुगंडिकाजलंपूर्वगुणम्
५५ रक्तपित्तेपित्तज्वरीयकषायाः
पूर्वोक्तैःशमाभावेछागपयोयोजनादि
शृतविशेषान्मूत्रमार्गगतरक्तनाशः
गुदगतेरक्तपित्तेशृतपयोविशेषः
५६ रक्तेरक्तातिसारदुर्नामचिकित्सा
पूर्वोक्तकषायपानानंतरंभोजनम्
पित्तशोणितादिनाशकोघृतविशेषः
रक्तपित्तघ्नंशृतम्
रक्तविशेषेलेहादि
५७ अंभोजरेण्वादिकोलेहः
गुदागमेरक्तेबस्तिः

Indira Gandhi National Centre for the Arts

घ्राणगेरुधिरेनस्यम्
अन्यदौषधंरक्तपित्ते
५८ अथकासचिकित्सिताध्यायः ३
कासेस्नेहाद्युपाचारः
५९ गुडूच्यादिरसादिसिद्धप्रस्थःकासा-
दिजित्
सर्पिःप्रस्थःकासादिजित्
घृतविशेषःपंचकासादिजित्
६० सिद्धंसर्पिःकासजित्
लेहादिःकासजित्
विडंगचूर्णकासादौयोज्यम्
वातजेकासेदुरालभादीनांलेहः
वातजेकासेदुःस्पर्शादिचूर्णानांलेहः
कदुष्णजलेनपिप्पलीपानादि
६१ मदिरादिभिर्बदरमज्जपानादिवा
कासादिःस्नैहिकादिधूमपानम्
यूषैर्हितशाल्यादिभक्षणम्
वातजेकासेयवान्यादिभिःसिद्धपेया-
पानम्
पंचकोलगुडयुतपेयापानम्
६२ मांससाधितपेयापानम्
वातजेकासेवास्तुकादयोभक्ष्याः
पित्तकासेतुसर्पिषावमनम्
पित्तकासेतनुकफादौत्रिवृतादिसेव-
नम्
६३ हृतदोषनरस्यपेयादिक्रमः
पित्तकासादौसितादिभिर्लेहादि
त्वगेलादिभिर्लेहः
घनश्लेष्मपित्तकासेयवादयः
६४ तनुकफेपित्तेशाल्यादि
पित्तकासेमांसरसादयः
पित्तकासेद्राक्षादिसाधितपानम्
शठ्यादिरसपानम्
पित्तकासेलेहः
६५ कफकासेपानप्रकारः
दशमूलांम्बवादिपानम्
पिप्पल्यादयस्त्रयोलेहाःकफकासहराः
६६ कफकासेमरिचलेहः
देवदार्वादयस्त्रयोलेहाः
दाडिमाद्यंचूर्णपीनसादिजित्
गुडादिकंपूर्वोक्तगुणम्
पथ्याकुस्तुंबरीत्यादिकंपाचनस्यपा-
नम्
६७ कफकासिनोदीप्यकादिक्वथितपा-
नम्
तत्रद्वितीयःप्रतीकारः
सर्ववातकफामयघ्नंपेयानुपानम्
घृतविशेषःकासादिजित्
तथाविडंगरसादौसाधितंघृतम्
पुनर्नवादिरसैःसिद्धंघृतंकासादिजित्
६८ कफव्याधिनाशनंकंटकारीघृतम्
दुर्नामादिजिल्लेहः
कफकासादौधूमपानम्
६९ वातश्लेष्मोत्तरकासजिद्धूमपानम्
तमकेपित्तकासक्रिया
वातश्लेष्मात्मककासादौस्निग्धक-
र्मादि
कफानुबंधपवनादौकफकासहरक-
र्मादि
अंतःक्षतउरसिचिकित्सा
७० पार्श्वबस्त्यादिरुगादौलाक्षायुतसुरा-
पानादि
दीप्ताग्न्यादेःक्षीरविशेषपानम्
ज्वरदाहेघृतयुतामयवचूर्णपानम्
कासवतोमधुरौषधसाधितसर्पिष्पा-
नम्
७१ कासवदादेःसघृतमाक्षिकमधूका-
दिलेहः
गुटिकावृष्याःपित्तशोणितादिघ्नाः
रक्तष्ठीविनःपुनर्नवादिचूर्णादिपानम्
मुखादिनाविसृतेरक्तेऔषधम्
मूढवातस्याजामेदआदिभक्षणम्
क्षामादेःसरेणसघृतक्षौद्रादिभक्षणम्
७२ अथवाक्षीणादेःशर्करादिकोलेहः

Indira Gandhi National Centre for the Arts

तस्यनिर्यूहादेःपानम्
क्षतोरस्कादेःसर्पिर्विशेषेणशाल्योदनभक्षणम्
वातपित्तपीडितादेर्घृताभ्यंगादि
त्दृत्पार्श्वपीडासुजीवनीयस्यसर्पिषःपानम्
७३ क्षतकासेघृतविशेषोहितः
लेहविशेषादिःप्रकारः
७४ घृतात्मस्थःसिद्धोवातपित्तत्दृद्रोगशूलनुत्
समसक्तुघृतंक्षतक्षीणेरक्तगुल्मेचहितम्
घृतविशेषोयक्ष्मादिहरः
७५ अभ्यधिकपित्तादौघृतलेहपानादि
क्षामादीनांचूर्णैःसहपूर्वपानानांयोजनादिवीर्यप्रापकम्
७६ कूष्मांडाख्यंरसायनंकासादिहरम्
पुष्ट्यादिकरःप्रयोगः
७७ नागबलासर्पिःपित्तरक्तादिजित्
दीप्ताग्न्यादावेतद्वृध्यादि
७८ अगस्त्यनिर्मितंरसायनंपंचकासादिजित्
वसिष्ठेनकथितंरसायनमगस्त्यलेहाद्गुणैरधिकम्
७९ रुच्यादिगुणकंचूर्णम्
८० अन्नपानेषुखांडवःप्रदेयः
क्षतदोषेयक्ष्मविहितोविधिः
कफेवृद्धेकासवतःपुंसोधूमपानम्
८१ द्विमेदादिभिर्धूमपानादि
मनःशिलादिभिर्धूमपानादि
सर्पिषासहधूमपानम्
क्षयजेकासेबृंहणादि
क्षीणदेहस्यसिद्धसर्पिष्पानम्
८२ पित्तादिषुक्षीणेषुकासवतःसाधितघृतपानम्
मूत्रवैवर्ण्यादौसाधितघृतादेःपानम्
शूलमेढ्रादौघृतमंडेनानुवासनादि
ततोभोजनादि
८३ कफकासार्तस्यसिद्धघृतपानादि
शोषादिहरोघृतप्रस्थः
रसकल्कैःपक्वघृतंकासादित्दृत्
भोजनोपरिसिद्धघृतपानादि
८४ क्षयकासिनांचव्यादिविपक्वघृतान्यग्निवर्धनानि
लेहविशेषःश्वासकासजित्
सूच्यादीनांश्वासकासहरत्वादि
८५ श्वासकासेषुमुखेगुटिकादिधारणम्
तिल्वकस्यपत्रकल्कंछर्द्यादिजित्
सर्वकासेषुमुद्गयूषः
क्षयकासिनोयूषादयः
८६ क्षयकासेसानुपानाधूमाबृंहणादिच
सन्निपातोद्भवक्षयकासेसन्निपातोक्तंदेयम्
अथश्वासहिध्माचिकित्सिताध्यायः ४
श्वासहिध्मायास्तुल्यमेवचिकित्सितम्
८७ श्वासहिध्मातुरस्यप्राक्स्वेदोपचारः
स्विन्नस्यरसैःसहस्निग्धभोजनादि
कफेनिर्दृतेसुखप्राप्त्यादिः
८८ तद्विशेषस्यहिंग्वादियुतान्नादि
अत्रहेतुः
विशोधनकारणम्
तेनाशांतौवक्ष्यमाणधूमपानादि
८९ धूमप्रकाराः
स्वेदार्हाणांस्वेदाः
९० उद्धतेपवनेस्निग्धाहारादिभिःशमः
श्वासहिध्मानांकषायादिभिःशमः
मधुरादिभिर्हिध्माश्वासोपचारः
क्वाथविशेषेजांगलरसयूषाः
कासादौपेया
९१ दशमूलादिभिःकषायपानादि
कासादिशांत्यर्थेशाल्यादिभोजनम्
अथवासमासिकसक्तुपानविशेषः

Indira Gandhi National
Centre for the Arts

अन्नेक्षारादियोजना
हिध्माश्वासवतोदशमूलक्काथादि
तक्रविशेषःश्वासकासजित्
९२ पाठादिकपानम्
पित्तकफानुगेसप्तपर्णस्यस्वरसपानम्
पित्तानुबंधिनिउत्कारिकायोजनादि
हिध्माभिष्यंदकासघ्नलेहः
९३ बहुकफस्यगोगजोदीनांशकृद्रसले-
हादि
जीवंत्यादिकंचूर्णंहिध्मादिहरम्
९४ शठ्यादिकंचूर्णंपूर्वगुणम्
सगुडशुंठीभक्षणादि
हिध्माश्वासार्तानांनस्यम्
हिध्माश्वासार्तस्यघृतविशेषपानादि
शाखानिलादिघ्नंघृतविशेषपानम्
९५ क्षारेणसर्पिष्पानादि
हिध्माश्वासार्तायहितपदार्थाः
हिध्माश्वासानांसामान्येनचिकित्सा
९६ हिध्माश्वासशमकरणेहेतुः
श्वासकासयोःपरस्परभेषजैरुपाचारः
अथराजयक्ष्मचिकित्सिताध्यायः ५
९७ यक्ष्मिणःशोधनवमनविरेचनानि
तत्रवमनम्
विरेचनम्
बृंहणदीपनादि
९८ आजमांसादिक्षयजित्
काकोलूकादिकंमांसंहितम्
पित्तकफादौहितपशवः
आजरसपानंपीनसादिनिवर्तकम्
९९ जीर्णमद्यपानंस्रोतोविशुद्धिकरम्
सिद्धसर्पिरादियोजना
घृतविशेषोरोगराजहरः
१०० वैस्वर्यादिहरोघृतविशेषः
पार्श्वांसशूलादिहरंघृतम्
पीनसादिनाशकंघृतम्
स्रोतसांविशोधनंगुल्मादिजिच्चसिं-
द्धंघृतम्
१०१ शोषजिद्घृतम्
अश्वगंधशृतक्षीरादुद्धृतंघृतंपूर्वोक्त-
गुणम्
मांससर्पिर्वातपित्तघ्नंकासादिजिच्च
गुल्मादिनाशकोलेहविशेषः
१०२ क्षयेक्षतसंबंधिसर्पिर्गुडाः
त्वगेलादयःस्वर्याःकासादिघ्नाश्च
क्षयिणःस्वरसादेनस्यधूमादि
वातजेस्वरसादेसाधितघृतपानादि
१०३ अथदार्षदर्याःपत्रकल्कम्
मधूकादिभिःपक्वतैलनिषेचनंवा
अनुपानाशनम्
पित्तोद्भवेसमाक्षिकसर्पिः
बलादिभिःसिद्धसर्पिर्नस्यंस्वर्यंच
पित्तजेस्वरसादेनस्यचूर्णलेहौ
१०४ कफोद्भवेमूत्रेणसहकटुकरसद्रव्य-
पानादि
अन्यसिद्धयवागूपानादि
अभिहतस्वरस्यशर्करामाक्षिकमि-
श्रपयःपानम्
अरोचकेनानाविधमन्नंपथ्यम्
बहिःशुद्ध्यादिरुचिकरम्
१०५ अरुचौरुचिकराभक्ष्याः
वातेनारुचौचूर्णपानादि
पित्तादरुचौगुडवारिणावमनादि
कफादरुचौनिंबजलैर्वमनादि
१०६ एलादिकंचूर्णंप्रसेकादिघ्नम्
रुच्यंचूर्णंविबंधादिघ्नम्
दीपनंकासजिच्चचूर्णं
प्रसेकेभक्षणादि
१०७ स्निग्धोष्णैःकफप्रसेकजयः
पीनसादावस्यप्रयोगः
पीनसेविशेषेणाभ्यंगादि
शिरोंसपार्श्वशूलेषुदोषानुसारेणोप-
क्रमादि
दोषसंसर्गेतगरादिभिःप्रलेपः
१०८ पुनर्नवादिभिर्नस्यादीनि

Indira Gandhi National
Centre for the Arts

शृंगाद्यैर्यक्ष्मिणोदुष्टरक्तहरणम्
पद्मकादिभिःप्रलेपः
बटादिसिद्धतैलादिनाऽभ्यंगः
यक्ष्मिणोऽतीसारग्रहणीविहितमौषधम्
१०९ राजयक्ष्मिणःशुष्यतःपुरीषरक्षणंकारणंच
युक्त्यामांसादिशीलनेयक्ष्मणोऽनवकाशः
स्रोतोविबंधमोक्षायर्थंसुरानुपानादि
स्नेहादिकोष्ठेष्वभ्यक्तस्यावगाहनादि
पुष्ट्यादिप्रदंचूर्णादि
११० अत्रस्नानादीनिप्रशस्तानि
१११ अथछर्द्यादिचिकित्सिताध्यायः ६
छर्दिषुलंघनादि
वमनादनंतरंक्रमशोविरेकौषधम्
११२ छर्दिषुपरिशुष्कादिगुणयुक्ताद्यन्नम्
वातच्छर्दिषःसैंधवान्वितसर्पिष्पानादि
११३ पित्तजायांविरेकार्थंद्राक्षादिभिस्त्रिवृदादि
जंब्वाम्रादिजक्काथादिछर्द्यादिघ्नम्
११४ धात्रीरसेनमुद्गदलांबुपानादि
कफजायांछर्दिषिनिंबादियुक्तकोष्णजलेनवमनादि
द्विष्टार्थछर्दिषोऽनुकूलव्यापारेणशमनम्
कृमिजायाःकृमिहृद्रोगगदितैःशमः
११५ छर्दिषिस्तंभनबृंहणे
वातजेहृद्रोगेतैलपानम्
सैंधवादिभिःपक्वंतैलंतथागुणम्
क्काथपक्वतैलेननस्यादि
११६ शुंठ्यादिभिःपक्वघृतप्राशनंहृद्रुजादिजित्
घृतप्रस्थोहृद्रोगादिजित्
घृतादियुतपानंविकर्तिकाशूलहरम्
हृदयादिशूलगुल्मादिषुकल्कविशेषभक्षणम्
११७ वातजेहृद्रोगेस्वेदादीनिहितानि
पंचमूलादिनासाधितजलपानादि
अस्याश्चिकित्सायास्थानम्
सहृद्रोगस्यबलातैलपानादि
महास्नेहपानादि
११८ दीप्तेग्नौवातरोगेक्षीरादि
क्षारादिवर्ज्यस्थानानि
कफानुबंधेतस्मिन्रूक्षोष्णक्रियासेवनम्
पैत्तेहृद्रोगादौविरेकादि
साधितंमाहिषंसर्पिःपित्तहृद्रोगनाशनम्
११९ क्षारयुक्तपक्वघृतादि
कफोद्भवेक्वथितजलेनवमनादि
चूर्णपानादि
लेहविशेषःकफविकारहा
१२० श्लेष्मगुल्मोदितानांपानम्
शिलाजतुप्रयोगादि
उष्णांबुनाकुष्ठादिकृतचूर्णपानम्
फलैर्विरेचनादि
१२१ आमाशयगतमारुतस्यशुद्धिलंघनपाचनैरनुलोमनम्
कृमिजेहृद्रोगेकृमिघ्नमौषधम्
तृष्णासुसर्वासुवातपित्तघ्नोविधिः
आंतरिक्षजलादिशस्तम्
१२२ पवनोत्थतृष्णायांसगुडदध्यादि
१२३ पित्तोत्थायांपक्वोदुंबरफलजरसादि
कफोद्भवायांनिंबप्रसववारिणावमनादि
१२४ सर्वैरामाच्चतृष्णायांसन्निपातघ्नादिक्रियाः
श्रमात्तृष्णायांमांसरसादि
आतपात्तृषिसक्तुभिर्मंथपानादि
शीतस्नानात्तृषिमद्यांबुपानादि
मद्यात्तृष्यर्धजलमद्यादि

Indira Gandhi National Centre for the Arts

१२५ स्नेहतीक्ष्णतराग्नेःस्वभावशीतलजलपानम्
अजीर्णादिस्तृष्णायामुष्णांबुपानादि
स्निग्धान्नतृषितस्यहिमशीतलगुडोदकपानम्
गुर्वाद्यन्नेनतृषितस्यवमनादि
क्षयजायांबृंहणम्
कृशादीनांतृषिक्षीरादि
सोर्ध्ववातायांक्षीरम्
रोगोपसर्गज्ञातायांधान्यांब्वादि
पूर्वतृष्णाजयः
१२६ अथमदात्ययचिकित्सिताध्यायः ७
मदात्ययेचिकित्साप्रकारः
तत्रहेतुः
१२७ मद्योत्पन्नव्याधेर्मद्येनैवशांतिः
विषान्मद्यस्यवैलक्षण्यम्
विधियुक्तमद्यपानंशस्तम्
१२८ तत्रहेतुः
पूर्वोक्तगुणैर्मद्यंधातुसाम्यकरम्
पानात्ययौषधकालः
ततस्तद्रोगानुसारेणभेषजप्रयोगः
१२९ विशेषेणचिकित्सितम्
वातोल्बणेमदात्ययेपिष्टकृतमद्यदानादि
१३० पित्ताधिकेमदात्ययेबहुजलशर्करमद्यादि
रसैःशालिषष्टिकभोजनम्
तृड्विदाहवतोमदात्ययिनोवमनादि
१३१ पित्तमदात्ययेकासेगुडूच्यादिरसयोगादि
वातपित्तेधिकेद्राक्षारसपानादि
तृषितस्यामल्पमद्यपानादि
१३२ मद्यातिपानेनिशीथपवनाहृतांभःपानादि
मुखालेपस्तृष्णाशमकः
मद्येनोष्मणिशीतबिध्यादि
श्लेष्माधिकमदात्ययस्यवमनोपवासौ
१३३ ततोजातक्षुधःशार्करबहुमाक्षिकपानादि
कौलत्थयूषेणभोजनादि
यथाग्निमांसभक्षणादि
१३४ कफाधिकेमदात्ययेऽष्टांगलवणादिहितम्
उपायविशेषैःसहजागरणेकफाधिकमद्यात्ययनाशः
दोषबलमपेक्ष्यसर्वमदात्ययेचिकित्सा
१३५ सर्वेषुमदात्ययेषुरुच्यंपानकम्
मदात्ययेहर्षणीक्रियासहेतुका
तथाप्युपशमाभावेपयःपानम्
१३६ मद्यक्षीणस्यक्षीरदानेकारणम्
पयसाविजितेरोगेअल्पाल्पमद्यपानप्रकारः
विट्क्षयध्वंसकयोर्घृतंक्षीरंचचिकित्सितम्
मद्यसंयोगेकारणम्
१३७ सुरागुणाः
१३९ युक्तमद्यपानात्सर्वरोगनाशः
मद्येनबिनाजांगलमांसपरिणामाभावः
मद्येनविनालशुनस्याल्पोगुणः
१४० पीतमद्यस्यैववैद्यकदर्थनासहनम्
मद्यादन्यन्नारोग्यकृत्
तस्मान्मद्यंपेयम्
मद्यपानेविधिः
१४३ मद्यपानोत्तरंकर्तव्यम्
मद्यप्रशंसा
१४४ मद्यपानानंतरंशयनम्
मद्यपानस्यसुरैरपिस्पृहणीयत्वम्
तस्माद्व्यवस्थयापानंहितम्
१४५ एवंधनिनांविधिः
वाताधिकस्यमद्यपानप्रकारः

Indira Gandhi National Centre for the Arts

पैत्तिकस्यमद्यपानप्रकारः
१४६ श्लैष्मिकस्यमद्यपानप्रकारः
वातादौहितमद्यप्रकारः
पानकालः
मदेषुप्रायेणवातपित्तघ्नंचिकित्सितम्
तेषामुपक्रमः
१४७ प्रसक्तवेगेषुमुखनासावरोधनादि
दोषबलानुसारेणक्रिया
१४८ मदादिषुनस्यादियोजना
संन्यासेशीघ्रंनस्यादियोजना
मदादिमतउपाचरणंतत्रकारणंच
१४९ अथार्शश्चिकित्सिताध्यायः ८
अर्शोयुतस्ययंत्रादि
१५१ बव्हर्शसःप्रागुदक्षिणार्शसउपचारादि
सुदग्धार्शसोलक्षणम्
बस्तिशूलेनाभेरधोलेपादि
शकृन्मूत्रप्रतीघातेक्वाथप्रयोगादि
१५२ दाहानर्हस्यतैलेनगुदकीलकसेचनादि
१५३ अर्शसांधूपनादि
गुदजशातनीवर्तिः
तथागुणाअन्यावर्तिः
लेपविशेषःपूर्वगुणः
अन्योलेपः
१५४ कुष्ठादिभिःकल्पितंप्रलेपनम्
अर्कक्षीरादिकल्पितंप्रलेपनम्
आनुवासनिकैर्लेपः
पूर्वोक्तलेपनद्रव्यैस्तैलान्यभ्यंजनानि
धूपनादिभिर्दुष्टरुधिरस्रावः
अर्शोभ्योरुधिरहरणम्
रक्तावसेचनेकारणम
१५५ गोरसपानादिकर्तागुदजजित्
दुर्नामकस्यनाशकंपानादि
श्वयथुशूलार्तस्यहिंग्वादिचूर्णदानम्
तक्रेणतर्पणंयवसक्तुदानादिच
१५६ अत्यर्थमंदकायाग्नेस्तक्रमेवनत्वन्नम्
तक्रयोजनकालादि
१५७ त्रिविधतक्रंदोषादिजित्

तक्रप्रयोगेगुणः
तक्रप्रयोगानंतरमन्नाद्विनापुष्ट्यादयः
मथितविशेषपानेगुदजक्षयः
१५८ तक्रारिष्टपानम्
कुंभविशेषेजाततक्रमर्शोहरम्
भार्ग्यादिष्वप्येषसंविधिः
वन्हेर्दीपनंस्नेहपेयादि
कठिनपुरीषाणांवक्ष्यमाणक्रमः
१५९ स्नेहाद्यैःसक्तुभिर्लवणवारुणीपानादि
तथाकरंजपल्लवभक्षणम्
तथागुडेनसहशुंठीपानादि
द्विद्विपथ्याख्यफलखादनंदुर्नामादि-
हृत्
अजशृंगीमूलकल्कपानंगुदांकुरना-
शकम्
१६० श्रेष्ठारसेनत्रिवृतादिभक्षणंगुदजना-
शकम्
वातवर्चोनुलोमनंतक्रादि
देहहुताशयोर्बलकरंपानम्
१६१ संयुक्तपारादुर्नामकनाशनी
अभयारिष्टसंज्ञोग्निदीपकोगुदजादि-
नाशकश्च
आनुलोमितरोऽरिष्टः
१६२ दुरालभारिष्टः
भक्तात्पूर्वंघृतविशेषपानादि
साधितंघृतंवातशकृन्मूत्रविबंधजित्
पक्वघृतमर्शोघ्नंदीपनंच
१६३ पक्वघृतंगुदादिवेदनादिजित्
चांगेरीघृतमानाहादिघ्नम्
विड्वातसंग्रहनिवृत्त्यर्थंमांसरसविशे-
षदानम्
मंदाग्नेर्बद्धवर्चसश्चिकित्सितम्
१६४ वातवर्चोनुलोमनंपानम्
१६५ विड्वातकफपित्ताऽनुलोमनेहेतुः
उदावर्तयुक्तादिष्वनुवासनमिष्टम्
अनुवासनप्रकारः
१६६ अथवानिरूहप्रयोगः

Indira Gandhi National Centre for the Arts

वातायनुबंधावलोकनपूर्वचिकित्सा
वातानुबंधकफानुबंधयोर्लक्षणम्
१६७ दुष्टेऽस्रेयथाबलंलंघनादि
यावद्दोषैःकालुष्यंतावद्रक्तस्रुतेरुपेक्षणम्
रक्तस्रुतेरनंतरंतिक्तद्रव्यैरुपचारः
प्रक्षीणदोषादेरक्तस्राबेचिकित्सा
पित्तोल्बणरक्तस्यस्तंभनम्
कफानुगतेरक्तेक्कथितशुंठ्यादिपानादि
१६८ तंडुलजलेनरसांजनादिपानम्
लेहविशेषोरक्तातीसारादिशमकः
१६९ अर्शःप्रभृतिजित्लेहविशेषः
अजादुग्धेनरोध्रादिपानादिपूर्वगुणम्
शीतजलादिनायष्ट्याव्हादिपानम्
रक्तार्शस्सुतंडुलांबुनारोध्रादिपानंपूर्वगुणम्
१७० यवान्यादीनांचूर्णोरक्तादौहितः
एतस्मिन्सिद्धंसर्पिःप्रशस्तम्
शर्करादिसहितनवनीतमर्शोघ्नम्
छागनवनीतादीनिरक्तौषधम्
१७१ पेयादिप्रयोजितपलांडूरक्तवातजित्
रक्तेऽतिस्रुतेतज्जयेयत्नः
रक्तपित्तेप्रवृद्धेशीतोपचारः
एवंशमाभावेरसैस्तर्पणम्
पिच्छाबस्तिःसिद्धःप्रवाहिकादिहरः
१७२ पक्वःस्नेहोऽनुवासनम्
अर्शःप्रभृतिषुसाधितंघृतंदेयम्
१७३ व्यत्यासेनमधुराम्लयोजनम्
उदावर्तार्तस्यस्वेदादि
गुदेएतेषांचूर्णवा
तद्विघातेस्निग्धवस्त्यादि
१७४ कल्याणकोनामक्षारउदावर्तादिनाशकः
गाढवर्चसामर्शसांप्रोक्तमत्रयोज्यम्
गुदजादिजित्चिकित्सितम्
१७५ चुक्रमर्शोघ्नंवन्हिदीपनंपांड्वादिघ्नंच
अर्शसांगुल्मस्यचनाशकमौषधम्
१७६ लीढोगुडविशेषोगुल्मादिजित्
त्रिकटुकादिचूर्णयुक्तोलेहोदारुणकुष्ठादिजित्
गुडादिगुलिकादुर्नामादिनाशिका
१७७ साधितसूरणकंदोदुर्नामोपशमकः
मरीचादीनिगुदांकुरच्छेदकानि
द्रव्यविशेषाणांपिंडीदुर्नामजित्
पथ्यादिचूर्णभोजनजीर्णकरम
कलिंगादिभिर्गुडावटिकाशोघ्ना
तक्रलोडितसैंधवादिपानमर्शोघ्नम्
१७८ शुष्कादिष्वर्शस्सुभल्लातकादिभैषज्यम्
दुर्नामवतामौषधादिस्वीकारत्यागयोर्विचारः
अर्शआदावग्निरक्षणंकारणंच
१७९ अथातीसारचिकित्सिताध्यायः ९
अतीसारेलंघनम्
अतीसारिणिवमनम्
दोषविशेषेषुपथ्याशित्वम्
१८० आमातिसारिणिभेषजनिषेधः
विबद्धेदोषेहरीतकी
मध्यदोषातीसारिणोभूतिकादिपानम्
१८१ अल्पदोषातिसारिणामुपवासः
वचादियुक्तविपक्वजलपानम्
क्षुत्क्षामातिसारिणोलघ्वन्नम्
१८२ कदाचित्तक्रादिनासात्म्योपचारः
अतिसारिणोभोज्यानि
कफपित्ताधिकेपेयाहिता
बहुदोषातिसारविषयेचिकित्सितम्
१८३ अतिसार्यामेचिकित्सा
१८४ तक्रयवागूःपक्वातिसारजित्
प्रवाहिकौषधम्
अपराजितःप्रवाहिकाघ्नः
धान्ययूषप्रकल्पनादि
१८६ बालबिल्वादिलेहः

Indira Gandhi National Centre for the Arts

क्षीरसौहित्योपयोगः
सवेदनामनाशकम्
पिप्पल्याश्चूर्णपानंप्रवाहिकानाशनम्
१८७ निरामरूपादेःक्षारसहितघृतपानम्
सद्योतिनाशनंतैलम्
तैलप्रस्थंपक्कंनिःसारकरुजापहम्
पानादिभिःप्रयुक्तंतैलंपुरीषग्रहशूलजित्
१८८ तत्रहेतुः
तैलस्यैवसेव्यत्वम्
गुदरुजिगुदभ्रंशेचसक्षीरघृतविशेषयोजनम्
१८९ अन्यप्रकारेणसिद्धंघृतंपूर्वगुणम्
गुदशूलिनःस्नेहवस्त्यादियोजनम्
प्रवाहणादिषुमधुराम्लैःशततैलाद्यनुवासनम्
पानाभ्यंगेनतैलंगुदभ्रंशजित्
१९० पैत्तेत्वतीसारेवातातिसारवत्
पित्तातिसारिणोऽष्टांगजलपानादि
एवमप्यनुबंधेशक्रयवाख्यपिष्टपानम्
१९१ अन्यदौषधम्
तंडुलजलेनकिराततिक्तादियोगायोज्याः
निशादिकाथःपक्कातिसारजित्
रोध्रादिगणपानम्
तत्रसदधिदाडिमपेयादिकल्पनम्
१९२ निरामेऽजापयःप्रयोगादि
परस्परंशरुद्धकक्षेपेकाथविशेषपानादि
त्रायमाणाप्रयोज्यावा
शूलानुवृत्तावनुवासनादि
अनुवासनप्रकारः
१९३ एवमतीसाराशांतौपिच्छाबस्तिः
पित्तातिसारादिजिद्वस्तिः
सर्वातिसारादिजित्कुटजोत्थादि
१९४ अतीसारविशेषस्यपुटपाकेरुपचारः
अतीसारिणोरसविशेषपानम्
अन्यसहितस्योनाकत्वगतीसारनाशिनी
अतीसारविशेषेछागक्षीरादि
१९५ तद्वद्रसादयोऽन्नपानयोर्हिताः
रक्तातिसारनाशिनीपेयालेहश्च
प्रवृद्धरक्तेछागघृतादिभोजनम्
रक्तातिसारिणःशतावरीकल्कपानादि
१९६ सिद्धघृतादित्रिदोषातीसारादिजित्
तंडुलजलालोडितंश्लक्ष्णमृदादिकंरक्तजित्
कृष्णतिलकल्कपानंरक्तनियामकम्
तंडुलजलेनचंदनादिपानंदाहादिनाशकम्
गुदस्यदाहादौहिमाःसेकलेपाः
रक्तादौपिच्छाबस्तिः
१९७ पिच्छास्रुत्यादौपिच्छाबस्तिः
प्रपौंडरीकपक्वघृतेनानुवासनम्
विट्सहितरक्तातिसारस्यशतावरीघृतलेहः
पूर्वविकारेलेहविशेषः
अधऊर्ध्वंवारक्तप्रवृत्तौलेहविशेषः
१९८ श्लेष्मातिसारेवातातीसारोक्तमामपचनम्
तेनानुपशमेबिल्वकर्कटिकादिपानम्
कथिताःपाठादयःश्लेष्मातीसारभेषजम्
श्लेष्मातिसारस्यसौवर्चलादिपानम्
जठररोगमोचकोलेहविशेषः
१९९ जठररोगनाशकमौषधम्
गुडतक्रेणपाठादिपानमतीसारनाशकम्
अतीसारादिजिच्चूर्णविशेषः
दाडिमाष्टकचूर्णोवातातीसारनाशकः
२०० श्लेष्मातिसारजित्खलः
क्षीणश्लेष्मणिपूर्वोक्तमम्लघृतम्
वातश्लेष्मविबंधादौपिच्छाबस्तिः

Indira Gandhi National Centre for the Arts

२०१ कफवातार्तेऽनुवासनम्
क्षीणकफादौवायुजयःकार्यः
तत्रवातहरक्रियाहर्षणाश्वासना-
निच
२०२ शांतोदरामयलक्षणम्
अथग्रहणीदोषचिकित्सिताध्यायः१०
ग्रहण्यामजीर्णवदुपाचारादि
अतीसारोक्तविधिनाआमपाचनम्
अन्नकालेयवाग्वाद्यन्नादिदेयम्
२०३ आमेपेया
ग्रहणीदोषिणस्तक्रंहितम्
२०४ चूर्णकासादिजित्
नागरादिपाक्यपानमामघ्नम्
पुरीषआमेबिडेनलवणपानम्
२०५ छर्द्यादिषुकलिंगादिकपानादि
अग्निदीप्त्यर्थेपिप्पल्यादिकपानम्
पाचनीदीपनीगुटिका
वातकफात्मकच्छर्द्यादिशांतिकराव-
टकाः
२०६ मारुतग्रहणीगदस्यदीपकौषधघृत-
पानादि
२०७ शुद्धरूक्षाशयस्यानुवासनादि
पक्वघृतमग्निदीप्तिकरंशूलादिघ्नम्
बीजपूरकरसेनसिद्धघृतपानंवा
२०८ एभिःसिद्धतैलेनाभ्यंजनंवा
वातेउष्णांबुनापंचमूलादिचूर्णपानम्
अग्नेर्निर्वापकपित्तहननंकृत्वासंधु-
क्षणम्
हृद्रोगनाशकचूर्णलेहादि
२०९ शीतांबुनाचूर्णविशेषपानंग्रहणीरो-
गादिहरम्
पैत्तिकग्रहणीगदादौनागरादिचूर्णम्
पित्तग्रहण्यांघृतविशेषपानम्
२१० श्लेष्मग्रहण्यांवमनोत्तरंक्षारैरग्निवर्ध-
नम्
कथितपंचकोलादिभिःपेयादिकम्
आसवप्रयोगोग्रहणीदीपकः

२११ आसवविशेषोग्रहणीदोषजित्
मधूकपुष्पकाथासवपानम्
क्षारविशेषोवातकफरोगादिघ्नः
२१२ वन्हिदीपनंपानम्
क्षारविशेषोऽग्निवर्धकः
गुलिकाःकासादिहिताविषूचिकादि-
घ्यश्च
मातुलुंगादिचूर्णपानंबलादिवर्धनम्
२१३ श्लैष्मिकेग्रहणीदोषेमातुलुंगादिभि-
र्घृतपचनादि
अग्निबलादिवृद्धयेपक्वघृतपानम्
सन्निपातजेग्रहणीदोषेपंचकर्मयो-
जनम्
प्रतिदोषादिमंदाग्नित्वमाश्रित्यचि-
कित्सितम्
२१४ दुर्बलानलदीपनायस्नेहःश्रेष्ठः
कफेक्षीणेपुरीषशिथिलमोकेऽल्प-
शोघृतपानम्
२१५ काठिन्यात्कृच्छ्रेणपुरीषमोकेपंचलव-
णयुक्तघृतपानम्
रौक्ष्यान्मंदेग्नौदीपनैःसर्पिरादिपा-
नम्
स्नेहातिपानान्मंदेग्नौक्षारादिपानम्
उदावर्तान्मंदेग्नौनिरूहस्नेहवस्तयः
दोषातिवृद्ध्यामंदेग्नौवमनादि
व्याधिमुक्तस्यमंदेग्नौसर्पिर्दीपनम्
अध्वादिभिर्मंदेग्नौयवाग्वासहघृतपा-
नम्
२१६ दीर्घकालप्रसंगान्मंदेग्नौसाम्लरसैर्भो-
जनादि
स्नेहादिभिःशरीराग्न्योर्बलवर्धनम्
कोष्ठगाग्नेःस्नेहैर्वर्धनेदृष्टांतः
२१७ भोजनातिभोजनाभ्यांकायाग्निवर्ध-
नंनेतिसदृष्टांतम्
अग्निवर्धनप्रकारः
२१८ भस्मकाख्याग्नेःशांतिनयनंसदृष्टां-
तम्

Indira Gandhi National Centre for the Arts

अजीर्णेभोज्यानि
आविकमांसादनम्
तृषितस्यपयःपानादि
२१९ संक्षेपेणचिकित्सा
अत्यग्नयेगुर्वादिभोजनदानेकारणम्
प्रकृत्यैवविरुद्धान्नादि
२२० अथमूत्राघातचिकित्सिताध्यायः ११
मूत्रकृच्छ्रेबलातैलेनाभ्यंगादि
सिद्धास्तैलादयःशूलहराः
२२१ दशमूलादिद्रव्यादीनांनानान्नादौ-
योजनम्
मूत्ररुजापहमदिरापानम्
पैत्तेमूत्रकृच्छ्रेशीतलसेकलेपादियो-
जनम्
समधुशर्करशतावर्यादिकपानम्
द्राक्षाजलेनवृषादिककल्कपानंमूत्रा-
घातनाशकम्
२२२ तंडुलांभसाएर्वारुबीजादिकपानादि
कफजेमूत्रकृच्छ्रेवमनादि
तथामद्येनसूक्ष्मैलापानादि
पानविशेषलेहविशेषौ
२२३ सन्निपातात्मकेमूत्रकृच्छ्रेयथावस्थं-
पूर्वोक्तम्
अश्मर्यामपीदम्
अश्मर्याःसाध्यत्वादि
अश्मर्याःप्राग्रूपेषुस्नेहादिक्रमः
अथस्नेहकथनम्
२२४ वाताश्मरीभेदनपानम्
पित्ताश्मरीभेदनंसाधितघृतपानम्
साधितघृतंकफजाश्मरीघ्नम्
२२५ क्षारादिकल्पना
शर्कराशातनंपानम्
सुरादिनाक्रौंचास्थ्यादिपानंशर्करा-
शातनम्
चूर्णपानमश्मरीपातनम्
क्वाथश्चाश्मरीपातनः
क्षारपानमश्मरीनाशनम्
कपोतवंकामूलपानादि
२२६ शेषेषुमूत्राघातेषुक्रियाविभागः
सर्वमूत्रविकारजिज्जलविशेषादि
मूत्राघातेषुदेवदार्वादिपानम्
धन्वयासस्यरसपानादिवा
२२७ मद्यपानपूर्वकंरथेनगमनादिनाश्म-
रीच्युतिः
क्वाथादिषुवीरतरादिकयोजना
शुक्राश्मर्याचिकित्सा
एवमुपशमाभावेराज्ञःप्रश्नपूर्वकंश-
स्त्रावचारः
२२८ प्रश्नप्रकारः
ततःकर्तव्यप्रकारः
२३० ततआतुरावगाहादि
ततोमूत्रसंशुद्ध्यादि
२३१ कषायेणव्रणप्रक्षालनादि
ततोव्रणस्वेदादि
ततऊर्ध्वंवर्षपर्यंतंनगाद्यारोहणनिषे-
धादि
२३२ अथप्रमेहचिकित्सिताध्यायः १२
मेहिनोवमनरेचनादि
२३३ अनुबंधरक्षार्थंशमनानि
असंशोध्यस्यसर्वमेहेषुतेषांपानम्
तेषांकथनम्
कफपित्तयोस्त्रयस्त्रयःकषायाः
२३४ रोध्रादिभिर्यथायोगंपानान्नकल्प-
नादि
वातोल्बणेषुतैरेवस्नेहप्रकल्पना
यवादिविकारादीनिप्रमेहेहितानि
२३५ सीधुनासक्तुविशेषपानादि
कफपित्तप्रमेहेषुशालादिजपुष्पपा-
नादि
वातकफजादौतैलादिप्रकारः
साधितघृतंसर्वप्रमेहपिटिकादिजित्
२३६ रोध्रासवःप्रमेहादिनाशकः
२३७ अयस्कृतीरोध्रासवाद्गुणैरधिका
प्रमेहिणेहितमुद्वर्तनादि

Indira Gandhi National
Centre for the Arts

रसायनंमेहादिजित्
२३८ धनरहितप्रमेहिणोमुनिवृत्यादि
कृशनरस्यौषधयुक्ताहारैर्बृंहणम्
पिटिकानांशोफवत्तमुपचारः
तासांप्राग्रूपएवक्षीरिवृक्षांब्वादिपानम्
२३९ तत्रतैलादिकरणम्
पाठादिचूर्णलेहः
मेहिनःशिलाजतुपलशतादनेनपुनर्न-
वत्वम्
२४० अथविद्रधिवृद्धिचिकित्सिताध्यायः १३
आमविद्रधौशोफवदुपक्रमः
पक्वेतुव्रणवच्चिकित्सा
वातविद्रधौवातिकव्रणेलेपविशेषः
विशोधनव्रणरोपणादि
पैत्तव्रणस्यशोधनलेपनादि
२४१ कफजव्रणस्यशोधनलेपनादि
रक्तायुद्भवेपित्तविद्रधिवत्क्रिया
अंतरेविद्रधौपानम्
अपक्वाभ्यंतरोत्थितेविद्रधौसिद्धघृ-
तपानादि
२४२ पानादिषुमधुशिग्रुक्वथिःपक्वविद्र-
धिहरः
त्रायंत्यादिक्वाथोविद्रध्यादिनाशकः
साधितंघृतंपूर्वगुणम्
अन्यत्साधितंघृतंपूर्वगुणम्
२४३ शृंगादिभीरक्तहरणम्
विद्रधेरुपनाहः
पक्वविद्रधिभेदनादि
अंतर्भागस्यविद्रधेश्चिन्हम्
विद्रधौदोषविशेषस्योपेक्षादि
२४४ यवादिजैर्यूषैःस्हान्नंप्रशस्तम्
दशाहादनंतरंशोधनादि
विद्रधेर्गुल्मवदुपक्रमः
सर्वविद्रधिषुकषायैर्गुग्गुलुयोगः
यत्नेनपाकवारणादि
२४५ स्तनजेविद्रधौप्रायोव्रणवत्क्रिया-
क्रमः
स्निग्धस्यशोधनादि
ततोवातघ्नकषायकल्कस्नेहैर्निरूहादि
२४६ पित्तरक्तोत्थितवृद्धावामशोफक्रियादि
श्लैष्मिकेवृद्धौगोमूत्रेणदार्वीकल्कपा-
नम्
मेदोजवृद्धौरोगस्यदारणादि
२४७ मूत्रजवृद्धौवेधादि
अंत्रजेवृद्धौवातवृद्धिसदृशीचिकि-
त्सा
सुकुमारसंज्ञंरसायनम्
२४८ बध्मशांत्यभावेबस्तिकर्मादि
तत्रानेकमतानि
२४९ अथगुल्मचिकित्सिताध्यायः १४
गुल्मस्यतैलसाधनादि
गुल्मेस्नेहपानादि
२५० वातिकेगुल्मेबृंहणान्यन्नादीनि
सानुवासननिरूहप्रयोगः
बस्तिकर्मगुल्मघ्नम्
वातगुल्मवतांशूलादिजित्साधित-
घृतपानम्
२५१ सिद्धसर्पिर्गुल्मादिजित्
दाधिकंनामघृतमपस्मारादिनाशकम्
२५२ सिद्धघृतंवातगुल्मनुत्
सिद्धंघृतंसर्ववातगुल्मविकारजित्
२५३ साधितंघृतंवातगुल्मजित्
वातजेगुल्मेकफोद्गमनम्
शूलादिषुक्वाथचूर्णगुटिकाः
चूर्णपानम्
कफवातिकेगुल्मेचूर्णवटकाः
२५४ हिंग्वादिचूर्णंहृच्छूलरुच्छ्रगुल्मादि-
नाशकम्
लवणादिकंचूर्णंवैश्वानरदीपनम्
चूर्णकोजठराग्निजनकोवातगुल्म-
हाच
२५५ शार्दूलाख्यश्चूर्णोव्याधिनाशकः
सिंधूत्थादिचूर्णपानंकफवातजरोग-
नाशकम्

Indira Gandhi National
Centre for the Arts

गुल्मादिषुदधिमस्तुयुतंचूर्णम्
चूर्णादिगुल्मादिघ्नम्
सुरामंडेनमातुलुंगरसादिपानंवातगु-
ल्मरुजापहम्
२५६ शुंठ्यादिचूर्णंवातहृद्रोगादिजित्
गुल्मवतःप्रसन्नयासहएरंडतैलपानम्
वातगुल्मिनःपित्तेविरुद्धेविरेचनादि
क्षीरशेषंवातगुल्मादिनाशकम्
२५७ तैलादिकपानंगुल्मादिनाशकम्
शूलादिषुचित्रकादिक्वाथः
पुष्करादिक्वथितपानंकोष्ठदाहादि-
हृत्
क्वथितपानंकोष्ठादिशूलजित्
वातगुल्मिनःशिलाजतुपानादि
उदावर्तेसतियूषैर्भोजनादि
सदीपनरस्याविडादियुतंघृतम्
२५८ नीलिनीघृतंगुल्मादिघ्नम्
कुक्कुटादयावातगुल्मोपक्रमः
वातगुल्मिनांभोजनपानम्
पैत्तिकेगुल्मेविरेचनम्
२५९ रूक्षोष्णजेसर्पिस्तिक्तादिसंशमनम्
आत्ययिकेगुल्मेस्रंसनम्
सिद्धघृतंपित्तगुल्मघ्नम्
२६० पित्तगुल्मशांत्यर्थंद्राक्षादिपानम्
पैत्तिकगुल्मशमनंपानम्
पैत्तिकेगुल्मदाहेऽभ्यंगादि
विदाहपूर्वरूपेषुगुल्मादिषुरक्तहरणम्
तत्रकारणम्
२६१ हृतदोषादेःसर्पिरभ्यासः
पाकोन्मुखेगुल्मेपित्तविद्रधितुल्या-
क्रिया
शाल्यादिभोज्यंसाधितजलपानंच
श्लेष्मजेगुल्मेवमनादि
गुल्मसंशोधनादि
२६२ पक्वसर्पिःकफगुल्मघ्नम्
भल्लातकघृतंकफगुल्महरंप्लीहादि-
जिच्च

ततोस्यगुल्मदेहयोःस्वेदाचरणम्
सर्वगुल्मेस्नेहस्वेदयोःकृतयोःक्रिया-
सिद्धिः
गुल्मेशैथिल्यगतेयंत्रविध्युदितघटि-
कायोजनादि
२६३ अथवाकफगुल्मस्यलेपनादि
ततःशोधनादि
मिश्रकाख्यःस्नेहोगुल्मिनांवृद्ध्यादि-
ष्वमृततुल्यः
२६४ अथवानीलिनीघृतपानादि
दंतीहरीतक्यःप्लीहादिघ्न्यः
चूर्णलेहादि
२६५ गोमूत्रेणकुष्ठादिपानादि
गुल्मनाशननिरूहयोजना
क्षारादिभिर्गुल्मजयः
कफाधिकेगुल्मेऽश्मरीग्रहणीषूक्ताः-
क्षाराः
क्षारपानंगुल्मादिजिद्विषनाशकंच
२६६ क्षारःश्लेष्मपतनकृत्
मंदेऽग्नावरुचौमार्गशुद्धयेआसनादि-
योजना
अत्रभक्तपाने
२६७ पिप्पल्यादिभिःसहसुराजांगलश्च-
गुल्मजित्
एवंशमाभावेहृतेरक्तेशरादिभिर्दा-
हकरणम्
दाहविधानम्
आमान्वयेवन्हिसंधुक्षणादि
२६८ नार्याअस्रसंभवेगुल्मेस्नेहविरेचनम्
रक्तोत्थेगुल्मेतिलक्वाथः
तिलक्वाथेनचूर्णपानंगुल्मरुजाहृत्
गुल्मशैथिल्यजनन्यामात्रायाःप्र-
योगः
एवंप्रभेदनाभावेयोनिविरेचनम्
तस्ययोनौक्षारयुक्तमृष्टतिलचूर्णादि
२६९ अप्रवर्तमानेरक्तेगुल्मप्रभेदनम्

Indira Gandhi National
Centre for the Arts

प्रवृत्तेरक्षेयमकाम्यकदेहायाःसमुपेक्षणादि
रुधिरेतिप्रवृत्तेरक्तपित्तादिहराःक्रियाः
२७० अथोदरचिकित्सिताध्यायः१५
उदरिणोविरेचनम्
विरेचनप्रकारः
उदरघ्नसर्पियोजना
साधितघृतप्रस्थयोजना
२७१ पानंसर्वोदरापहंकफमारुतोत्थेगुल्मेहितंच
उदरिणःसिद्धसर्पिष्पानम्
अथवान्येनसिद्धघृतपानम्
स्नेहैःस्निग्धनरस्यविरेचनम्
चूर्णपानादिजातसलिलसर्वोदरनाशकम्
२७२ गवाक्ष्यादिचूर्णपानम्
नारायणोनामचूर्णोरोगगणापहः
२७३ गुल्मादिषुहपुषादिचूर्णपानंवातादिनाशकम्
नीलिन्यादिकंचूर्णमुद्रगुल्मनुत्
पूर्ववद्दुग्धपानादि
चूर्णविशेषपानमुदरादिघ्नम्
२७४ स्नुक्क्षीरसिद्धमाज्यंपूर्वगुणम्
घृतादीनांपश्चात्पेयादिपानम्
२७५ जीर्णेघृतेशुंठीसाधितजलपानादि
पुनःपुनःसर्पिष्पानम्
गुल्मादिरोगाणांशांतयेएतानिसिद्धघृतानि
आनाहभेदनघृतपानादि
हृतदोषस्यशाल्योदनभक्षणम्
उदरिणोदोषशेषनिवृत्तयेहरीतकीसहस्रभक्षणादि
२७६ अथवाचित्रकदेवदारुकल्कपानम्
सौधितपयःपानंप्रवृद्धोदरजित्
भोज्याहारभोजनादि
समीरणेपार्श्वशूलादिकृतिबिल्वादियुततैलपानादि
२७७ कफादौवातेनावृतेएरंडतैलंहितम्
उदरस्यबाह्यांतःप्रलेपनम्
क्वाथादिभिर्जठरसेचनम्
उदरस्यस्वेदपूर्वकंवेष्टनम्
पुनराध्मानेनिरूहादिभिरुपचारः
वायौनरमाध्मापयतिबस्तयः
२७८ इतिजठरिणांसामान्यतःक्रियाः
वातोदरेपक्वघृतपानादि
संसर्जनेकृतेबलार्थंक्षीरम्
अनंतरमुदरिणोबस्तिनानिरूहादि
ततस्तिलादिभिरनुवासनम्
२७९ बलिनःपैत्तेजठरेस्नेहनपूर्वकंविरेचनादि
दुर्बलस्यानुवासनपूर्वकंशोधनादि
२८० पुनःक्षीरंपुनर्बस्त्यादि
कफोदरेबलवतःस्नेहनादि
ततोनिरूहादि
अरिष्टदानादि
२८१ क्षारउदरगुल्मादिनाशकः
दुर्बलस्यकफोदरस्यारिष्टपानेनजयः
मूलकबीजैर्जठरजयादि
सन्निपातोदरेदंत्यादितैलपानम्
२८२ त्रिदोषजेजठरेउदरिणश्चिकित्सा
अथवापानभोजनसंयुक्तंस्थावरविषदानादि
हृतदोषस्यस्नानपूर्वकंशीतपयःपानादि
२८३ एवंदोषेनिर्हृतेदुर्बलस्यकरभपयःप्रयोगः
प्लीहोदरेचिकित्सा
बलेजातेविशोधनपूर्वकंक्षारपानादि
२८४ उष्णांबुनाचूर्णपानम्
विडंगादिकपानंगुल्मप्लीहघ्नम्
प्लीहनाशप्रकारः
कामलादिघ्नंसिद्धजलादिपानम्
२८५ साधितघृतंप्लीहाभिवृद्धिनाशकम्
तैलपानंकफवातोत्थप्लीहनाशकम्

Indira Gandhi National Centre for the Arts

एवमप्यनुपशांतौगुल्मविधानेनाभि-
कर्म
पित्तोल्बणेप्लीह्निसाधितसर्पिरादि
यकृतिप्लीहवत्कर्म
दक्षिणबाहौसिरामोचनम्
बद्धोदरिणःसानुवासननिरूहादि
२८६ छिद्रोदरस्यश्लेष्मोदरवदाचारः
उदकोदरेपूर्वमपांदोषहरयोजनादि
२८७ उदकोदरेगुटिकापानम्
एवमशांतौशस्त्रप्रयोगः
बद्धोदरादावुदरपाटनादि
२८८ जलोदरस्यान्येषामपिजातजलानां-
जठराणांचिकित्सा
२८९ सलिलोदरस्यवत्सरेणजयप्रकारः
उदरिणआहारादौवर्ज्यावर्ज्ये
सर्वोदरेवातादिशमनक्रियाप्राश-
स्त्यम्
२९० उदरिणोदीपनानिलघूनिचभोज्यानि
उदरिणांयवागूभक्षणादि
उदरिणस्त्याज्यानि
उदरेपानव्यवस्था
२९१ वातकफादीनांतक्रंप्रशस्तम्
सर्वप्रयोगाणामनुक्षीरंतक्रप्रयोगः
भेषजोपचितानांक्षीरमेवप्रशस्तम्
२९२ अथपांडुरोगचिकित्सिताध्यायः १६
पांडुातुरस्यादौकल्याणाख्यसर्पिष्पा-
नादि
सिद्धंघृतंत्दृदयाद्यर्तिजित्
स्नेहितस्यवमनादि
२९३ पांडुरोगघ्नंपानम्
स्वर्णक्षीर्यादिकपानादि
लोहचूर्णपानादि
हरीतकीलेहः
पांडुरोगादिघ्नंचूर्णपानम्
२९४ वासादिकाथःपांड्वादिघ्नः
कामलादिनाशनंचूर्णितमयोरजः
पांडुरोगिणोगुटिकाः
मंडूरवटकाःपांडुामयिनांप्राणदाःकु-
ष्ठादिघ्नाश्च
२९५ ताप्यादयःपांडुरोगघ्नाः
वटकाःपांड्वादिघ्नाः
२९६ लेहोहलीमकादिनियामकः
पानभोजनेन्ह्रस्वपंचमूलजलंशस्तम्
इतिपांडुरोगेसामान्यौषधम्
२९७. पवनजादौपांडौस्नेहप्रायादिभेषजम्
पांडौकायान्मृद्धरणंघृतयोजनाच
शृतंघृतंमृत्तिकाकृतविकारनाशकम्
केसरादिभिःपक्वंसर्पिःपूर्वगुणम्
मृद्भेषणार्थंभावितमृद्दानम्
२९८ दोषानुगमाद्भेषजयोजना
कामलायांपित्तहरमौषधम्
पक्वोघृतप्रस्थःकामलादिघ्नः
कामलापहौषधपानम्
निकुंभकल्कपानादिवा
कामलिनस्त्रिफलाद्यन्यतमरसयो-
जना
निशाद्भिभिरंजनंकामलादित्दृत्
२९९ आतुरविशेषस्यकफहरद्रव्यैःपित्त-
जयः
आतुरविशेषस्यचिकित्सा
ततःकामलाविहितोविधिः
३०० कुंभकामलायांशिलाजतुपानादि
हलीमकवतश्चिकित्सा
३०१ पांडुरोगेषुशोफचिकित्सितम्
अथश्वयथुचिकित्सिताध्यायः १७
श्वयथौलघुभोजनपूर्वकंनागरादिपा-
नादि
मंदाग्नेस्तक्रपानादि
३०२ प्रयोगविशेषोगुल्मादिजित्
शोफाद्यभिभूतस्यसाधितघृतपानम्
३०३ पक्वोघृतप्रस्थःशोफादिहा
पक्वंघृतंपूर्वगुणम्
अभयाघृतयोजनम्
प्रवृद्धशोफादिनाशकमौषधम्

Indira Gandhi National
Centre for the Arts

३०४ श्वयथौहितभोजनादि
शोफादिमतांपेया
३०५ अन्यापेयापूर्वोक्तगुणा
शैलेयादिभिरभ्यंजनतैलादि
निंबादिवारिणास्नानम्
एकांगजेशोफेपुनर्नवादिभिर्लेपः
३०६ अनिलजेशोफेत्रिवृत्पानादि
पित्तश्वयथौतिक्ताख्यघृतपानादि
अंतस्तापतृष्णादिघ्नःक्वाथः।
कफोद्भवेशोफेआरग्वधादिसिद्धतैल-
पानम्
स्रोतोविबंधादौसतिक्षारादिशीलनम्
३०७ प्रलेपोन्मर्दनयोर्योजना
कुष्ठादिभिःसिद्धेमूत्रजलेस्नानाय
एकांगकेशोफेलेपः
दोषानुसारेणशुद्ध्यादि
अजाज्यादिपानंत्रिदोषोत्थशोफघ्नम्
३०८ क्षतोत्थादौशोफेऽसृग्विशोधनादि
शोफिनोग्राम्यादिमांसादिवर्जनम्
अथविसर्पचिकित्सिताध्यायः१८
विसर्पेषुपूर्वंलंघनादि
३०९ विसर्पेवमनादि
विसर्पेविरेचनादि
अल्पदोषेशमनप्रकारः
दुरालभादिपानम्
दार्व्यादिपानम्
शाखादुष्टेरक्तेरक्तहरणम्
३१० निरामेपुंसिघृतादिकंहितम्
रक्तेनिर्हृतेप्रलेपसेकादि
वातविसर्पेशतपुष्पादिकंप्रलेपनम्
पित्तविसर्पेप्रलेपः
अन्योपिलेपः
३११ लेपःश्लेष्मविसर्पेद्वत्
अन्यविधोलेपः
एभिःसेकादिकाः
कफस्थानगतेसामेवायौलेपाः
३१२ संसृष्टदोषेचिकित्सितम्
अग्निविसर्पेघृतप्रलेपादि
ग्रंथिविसर्पेचिकित्सितम्
३१३ अथवाप्रदेहादि
दंत्यादिद्रव्यलेपगुणः
ग्रंथिभेदचिकित्सितम्
३१४ ग्रंथ्युपशमाभावेदाहः
ग्रंथिविसर्पक्षतोरक्तमोक्षः
प्रक्लिन्नेबाह्यांतर्व्रणवच्चिकित्सितम्
३१५ रक्तहरणाकारणम्
विसर्पिणोघृताभावादि
अथकुष्ठचिकित्सिताध्यायः १९
३१६ कुष्ठिनःस्नेहः
वातोत्तरेकुष्ठेतैलादि
पित्तकुष्ठादिजयप्रकारः
३१७ महातिक्तसंज्ञस्यप्रकारः
कफोत्तरेपक्वघृतादि
सर्वकुष्ठेषुचिकित्सितम्
कुष्ठजयस्यान्यप्रकारः
पूर्वोक्तैरभ्यंजनम्
स्निग्धस्यकुष्ठिनःशोधनादि
३१८ कुष्ठिनःशिराविमोचनादि
स्नेहैराप्यायनादि
वज्रकसंज्ञंघृतम्
महावज्रकम्
३१९ उर्ध्वाधोविशुद्धिकरघृतप्रकारः
कुष्ठादिविजिगीषोश्चिकित्सितम्
लेलीतकवसाकुष्ठघ्नी
शाल्यादिकमन्नपानंकुष्ठेहितम्
अम्लादिकमहितम्
३२० अन्यःकुष्ठनाशनप्रकारः
जितेंद्रियाणांकुष्ठादिनाशनप्रकारः
३२१ कुष्ठादीनांपरमंभेषजम्
त्रिफलादिलेहोवा
वृक्षककाथस्त्वग्योगनाशकः
अन्यत्कुष्ठनाशकम्
३२२ दार्व्यादयःकुष्ठनाशकाः
निशादिकषायादिःकुष्ठनाशकः

Indira Gandhi National Centre for the Arts

पाठादियुतगोमूत्रपानंकुष्ठनाशकम्
लाक्षादिचूर्णयुतगोमूत्रपानंतथा
३२३ कृच्छ्रकुष्ठनाशनप्रकारः
कुष्ठाजिद्रसायनम्
अन्यत्कुष्ठनाशकम्
शशांकलेखालेहःकुष्ठनाशकः
पथ्यादिपिंड्याकुष्ठजयः
३२४ खदिरचूर्णकिटिभादिनाशनम्
सितादिलेहःकुष्ठनाशकः
कुष्ठघ्नंचूर्णम्
तुवरास्थिशीलनम्
एवंदोषेजितेलेपादि
३२५ कुष्ठानांपोटलैःस्वेदादि
कुष्ठविशेषेषुक्षारनिपातनम्
कुष्ठविशेषेलेपः
मुस्तादिकषायः
३२६ कुष्ठापहःक्काथः
क्काथलेपःकुष्ठघ्नः
शिरीषत्वगादिलेपःकुष्ठजित्
चूर्णेनोद्वर्तनादि
३२७ चूर्णेनदद्र्वादिनाशः
कल्कोविचर्चिकानाशकः
गुग्गुल्वादिभिःकुष्ठनाशः
लेपविशेषेणसिध्मनाशः
३२८ सुवर्णलतातैलाभ्यंगेनसिध्मनाशः
लेपविशेषःसिध्मनाशकः
घृततैलपाकादिनाचर्मैककुष्ठादिनाशः
३२९ त्वग्दोषाणांवज्रकसंज्ञंतैलंनाशकम्
महावज्रसंज्ञंश्वित्रादिघ्नम्
तैलविशेषःकुष्ठहृत्
तैलविशेषःकच्छ्वादिनाशकः
दद्रुपूक्तलेपादि
३३० चित्रकादयोवातादिघ्नाः
पित्तकफकुष्ठेप्रलेपः
घृतविशेषैरभ्यंगःकुष्ठेषुहितः
खादिरादयःकृमियुतकुष्ठनाशकाः
३३१ वाताधिककुष्ठेषुघृतादि
लेपानांसिद्धिकारणम्
बहुदोषकुष्ठिनःसंशोधनम्
कुष्ठिनोवमनादिकालः
३३२ कुष्ठिनःकृत्स्नदोषनिर्हरणंकार्यम्
व्रतादीनिकुष्ठनाशकानि
अथश्वित्रकृमिचिकित्सिताध्यायः २०
श्वित्रशमाययत्नकरणेहेतुः
३३३ श्वित्रेपूर्वसंशोधनादि
कंटकेनस्फोटकभेदनादि
कल्कपानादि
३३४ श्वित्रवतोगोमूत्रविशेषपानम्
भृंगराजखादनादिवा
प्रलेपःश्वित्रादिघ्नः
श्वित्रेदग्धचर्मविशेषलेपोहितः
पूतिकीटलेपःश्वित्रघ्नः
श्वित्रशांत्यैभल्लातकलेपः
३३५ लेपविशेषाःपूर्वगुणाः
श्वित्रेपिष्टविशेषःसवर्णकरः
श्वित्रेलेपविशेषः
कुष्ठेषुभल्लातकादिकलेपः
३३६ कृमिचिकित्सितम्
कृमिणोदरेबस्तियोजनादि
३३७ मूर्धगेषुकृमिषुशिरोरोगनिषेधोक्ताचारः
विडंगादिभिस्तक्रसाधितपेयापानम्
शिरीषादिरसपानादि
कृमिमतोलेहः
शिरोगतेषुकृमिषुचूर्णनस्ये
३३८ पूपलिकाभक्षणादि
नीपादिष्वेतद्विध्यादि
पानेबस्तौचतैलयोजना
पुरीषजेषुकृमिषुबस्तिविरेचने
कफजन्मसुशिरोविरेकादि
रक्तोत्थकृमिचिकित्सा
३३९ कृमिजिहासोःक्षीरादिवर्जनम्

Indira Gandhi National Centre for the Arts

अथवातव्याधिचिकित्सिताध्यायः
२१
वायोरादौस्नेहोपचारादि
३४० स्नेहकरणेकारणम्
अत्रदृष्टांतः
स्विन्नस्यहर्षादिशमनादि
स्विन्नस्योपयुक्तेस्नेहफलम्
३४१ आतुरस्यपुनःस्नेहस्वेदयोजना-
एवंशमाभावेविशोधनम्
सिद्धघृतपानादि
मारुतानुलोमनेहेतुः
विरेचनार्हस्यनिरूहैरुपाचारादि
३४२ आमाशयगतेवातेषट्चरणादियो-
जना
अधोनाभेःस्थितेवायावबपीडकः-
शस्तः
कोष्ठगेक्षाराद्याःपाचनादीपनाश्चहि-
ताः
हृत्स्थेस्थिरासिद्धंपयः
शिरोगतेशिरोबस्त्यादि
त्वगाश्रितेस्वेदादीनि
३४३ रक्तस्थेशीतप्रदेहादि
मांसमेदःस्थेविरेकादि
अस्थिमज्जास्थस्यस्नेहैर्जयः
शुक्रस्थेप्रहर्षादि
रुद्धमार्गशुक्रदर्शनेविरेकादि
वातेनगर्भेशुष्केउत्थापनेसिद्धंक्षीरम्
स्नावादिप्राप्तेस्नेहादि
संकुचितेंगेऽभ्यंगः
रक्तेस्नुतेआगारधूमादिभिर्लेपः
३४४ अपतानकार्तस्यत्वरितमुपक्रमः
तस्मिन्नस्यादि
स्नेहाःस्वेदाश्चपवननाशकाः
३४५ वेगांतरेपुमूर्धविरेचनादि
वायावधिकेसर्पिर्हितम्
सिद्धंघृतंदुष्टवातादिनाशकम्
महानिंबस्याशोकस्यतिल्वकवद्वि-
धिः
एवंशुद्धवातापतानकेसंसृष्टदोषदोष-
द्वयोक्रम्
३४६ कफयुक्तेतुंबुर्वादिचूर्णपानम्
बाह्याभ्यंतरयोरायामयोरर्दितवत्क्रि-
यादि
विवर्णदंतलक्षणादिरूपस्यशीघ्रंजी-
विताभावः
एतद्विपर्ययेणमंदेषुवेगेषुजीवनादि
३४७ जिह्वास्तंभेवातस्योपक्रमः
अर्दितादौनावनादिचिकित्सितम्
पक्षाघातेस्नेहनादि
अवबाहौनस्यादि
उरुस्तंभेनस्यादिनिषेधादि
३४८ अथवात्रिफलादिकल्कलेहादि
व्योषादिभिर्गुग्गुलुभक्षणंमेदःश्ले-
ष्मामवातजघ्नः
एवंमरुतःशमनादि।
उरुस्कंभिणोव्यायामादि
३४९ शेषवातरोगेषुस्थानदूष्याद्यालोच्य-
चिकित्सितम्
मारुतार्दितशरीरस्यक्वथितादिपानम्
रास्नादिपक्वसर्पिर्वातरोगघ्नम्
पक्वसर्पिर्बल्यादिनाशकम्
३५० शिरोगतेवातेनस्यंप्रयोज्यम्
पक्वतैलंकफयुक्तवातनाशकम्
३५१ तैलप्रस्थंशेषवातरोगघ्नम्
तैलाढकंतुल्यक्षीरंसिद्धंकृच्छ्रमारुता-
दिनाशनम्
सिद्धंतैलंवातादिजित्
३५२ बलातैलंकासादिनाशकंवातरोगघ्नंच
३५३ धानाद्यवसरेउक्तस्नेहप्रयोगेशीघ्रंदु-
ष्टवातनाशनादि
कफविशेषादेर्बस्तिभिर्जयः
अथवातशोणितचिकित्सिताध्यायः
२२

Indira Gandhi National
Centre for the Arts

वातशोणितिनोशोणितहरणादि
३५४ रुग्रागादिषुजलौकाभीरुधिरहरणादि
अंगम्लानौरुधिरहरणनिषेधादि
विरेचनयोग्यस्यविरेचनम्
वाताधिकेवातरक्तेपुराणघृतपानम्
सिद्धंघृतंवातशोणितहृत्
सिद्धघृतपानादि
३५५ बलादिभिःशृतंपयोवातरुजांनाशनम्
धारोष्णंगोमूत्रयुतमनुलोमनम्
पित्तेवातशोणितेपक्वशतावर्यादिपानं
बहुदोषस्यविरेकार्थमेरंडतैलपानादि
हरीतकीनांक्काथादि
वातरक्तवतःक्षीरबस्तिभिर्मलनिर्हरणम्
३५६ कफोत्तरेवातशोणितेमुस्तादीनांक्काथपानम्
स्नेहिनोरूक्षणम्
शूलयुतेवातरक्तेचिकित्सितम्
कोकिलाक्षकक्काथपानंवातरक्तशमनम्
लेलीनकीवसापानंमुरूढखुडजित्
३५७ आभ्यंतरमुद्दिष्टमतःपरंबाह्यम्
पक्वसर्जरसपानंज्वरदाहार्तिनुत्
पिंडतैलाभ्यंगोवातरक्तरुजाहरः
दशमूलेनसिद्धंसर्पिःशूलहृत्
स्तंभादिभिरार्तस्यकोष्णस्नेहैःपरिषेचनंवा
स्तंभाक्षेपकहिध्मासुशूलार्तस्यप्राग्वत्परिषेचनम्
स्तंभाद्यार्तस्यनिक्काथादिभिःपरिषेचनम्
३५८ सेकार्थद्रव्याणि
सुखस्पर्शाःस्त्रियोदाहनाशकाः
रुग्दाहादिनिबर्हणोलेपः
शूलघ्नमुपनाहनम्
३५९ उपनाहेनस्तंभादिनाशकानि
प्राग्वत्प्रलेपयोजना
शूलनिवृत्त्यर्थोलेपः
अनिलेऽधिकेमूत्रादिसिद्धांजनम्
सेकाभ्यंगयोःसमाक्षिकंचुक्रम्
३६० कफोत्तरेवातरक्तेगृहधूमादिप्रलेपः
वातकफोत्तरेवातरक्तेप्रलेपः
वातकफोत्तरेवातरक्तेलिप्तस्याम्लैःसेचनम्
लेपादिभिरुत्तानवातरक्तचिकित्सा
गंभीरवातशोणितस्यविरेकादिभिश्चिकित्सा
वातश्लेष्मोत्तरेकोष्णालेपाद्याः
पित्तरक्तोत्तरेवातरक्तेलेपादयोहिमाः
३६१ वातासृगादीनामार्तिनुत्सिद्धतैलम्
सिद्धतैलंवातशोणितोद्भववातरक्तहृत्वादिगुणम्
३६२ मार्गसंरोधात्कुपितेवातेस्नेहनबृंहणादि
प्राणादिचिकित्सा
निरामतांनीतेवातेशुद्धवातचिकित्सितम्
अंगशोषादयोवश्यंचिकित्स्याः
३६३ पित्तावृतेवायौपर्यायेणशीतोष्णक्रियादि
पित्तावृत्तेवायौसक्षीरबस्तियोजनादि
पित्तावृतेवातेमधुयष्टितैलादिनासेचनादि
३६४ कफावृतेयवान्नादीनि
संसृष्टेपित्तबिनिर्हरणादि
रक्तसंसृष्टेवातेशोणितिकीक्रिया
मांसावृतेस्वेदादयः
आढयवातेमेदसावृतेप्रमेहमेदोवातघ्नमौषधम्
अस्थिमज्जस्थेवातेमहास्नेहादि
रेतसावृतेपूर्वोक्तम्
३६५ अन्नावृतेपाचनीयादि
मूत्रणावृतेत्रपुसादीनि
वर्चसावृतेवातेएरंडतैलादि
सर्वस्थानावृतेकफपित्तयोरविरुद्धादि

Indira Gandhi National Centre for the Arts

सर्वधात्वावृतेपानौषधादि
३६६ अपानेआवृतेदीपनादि
एतद्विचार्यभिषजाकर्तव्यम्
विमार्गगवायूनांस्वमार्गनयनम्
३६७ पित्तरक्तसंसर्गवर्जवातावरणहालशुनः
रक्तावृतेपित्तहरादि
एतच्चायुर्वेदफलम्सूत्रंचिकित्सितम्
औषधस्यपर्यायाः
३६९ अथवमनकल्पाध्यायः १
अत्रमहर्षयःप्रमाणम्
वमनविरेचनयोर्मदनत्रिवृन्मूलेश्रेष्ठे
व्याधिवशाज्जीमूतादेर्विशिष्टता
३७० वमनेमदनफलचूर्णयोजना
अनंतरंपानादि
३७१ अथवापिप्पलीचूर्णपानम्
हृदयदाहादौक्वथितक्षीरादिपानम्
३७२ कफच्छर्द्यादौदधिसरादिवमनेहितम्
कफेनाभिभूताग्नौशुष्यच्छरीरेचवमनम्
लेहविशेषेणवमनादि
समूलव्याधिनाशककषायादि
पुष्पाघ्राणेनवमनम्
३७३ फलाभावेवमनेमदनपुष्पादि
तत्रजीमूताद्याःकल्प्याः
विशेषेणज्वरादिषुजीमूतयोजना
३७४ तुंबीकोशातकीष्वपीयंकल्पना
पित्तश्लेष्मज्वरिणश्चूर्णपानम्
पित्तज्वरेजीमूतचूर्णपानादि
३७५ कासाद्यार्तेवमनविषयेइक्ष्वाक्वादि
इक्ष्वाकुप्रवालसाधितक्षीरयोजनम्
कफकासादिषुवमनार्थंदधिविशेषपानम्
पांड्वार्दितस्येक्ष्वाकुफलमध्यपानादि
विषगुल्मादिषुछगलीक्षीरेणतद्बीजपानम्
३७६ कफोद्भवज्वरादिषुमंथपानादि
गुल्मादौमांसरसैस्तुब्याःकल्कपानादि
कासादिषुगदेषुकोशफलाख्यइष्टः
कासहृदयदाहयोर्लेहाः
३७७ कफविशेषेउष्णोदकानुपानलेहावमनाय
धामार्गवस्यकल्कोविषघ्नः
धामार्गवफलपानादिवमनाय
प्रगाढेषुकुष्ठादिषुक्ष्वेडः
अनूपमांसपानादि
३७८ रोगविशेषेषुकुमारेषुकुटजंवमनम्
अन्यसहितकुटजबीजपानादि
एवंवमनेऽन्यौषधकल्पना
३७९ अथविरेचनकल्पाध्यायः २
त्रिवृतःस्वरूपकथनम्
सर्वरोगजित्त्रिवृत्
त्रिवृतोमूलंद्विप्रकारकम्
३८० श्यामंमूर्छादिकृत्
तस्यामूलग्रहणप्रकारः
वातामयादौविरेचनप्रस्तावेतच्चूर्णपानम्
हृद्यंविरेचनंलेहः
३८१ सन्निपातज्वरादिपीडितस्याजगंधादिचूर्णलेहः
इक्षुगंडिकाभक्षणम्
वातपित्तकफोत्थादिषुचूर्णपानंविरेचनम्
लेहोगुल्मादिरोगघ्नः
३८२ कल्याणसंज्ञोगुडःकुष्ठादिनाशकः
मूत्रकृछ्रादिषुगुटिकाः
३८३ त्रिवृदादिकंविरेचनम्
ज्वरादिषुत्रिवृद्गुरालभादिकंविरेचनम्
हेमंतेत्रिवृतादिकचूर्णपानम्
ग्रीष्मर्तौत्रिवृच्छर्कराविरेचनम्
स्निग्धानांमलदोषहृद्योगः
रूक्षाणामपिश्यामाद्यंचूर्णम्
ज्वरादिषुराजवृक्षोधिकपथ्यः

Indira Gandhi National Centre for the Arts

३८४ बालादौचतुरंगुलस्ययोजना
शम्याकफलस्यग्रहणादि
दाहाद्यार्तेशम्याकफलमज्जासुखंविरेचनम्
चतुरंगुलमज्ञकषायपानम्
तन्मज्ञपानंप्रकारांतरेण
३८५ तिल्वकमूलचूर्णपानम्
तिल्वकस्यलेहःश्रेष्ठंविरेचनम्
सुधाप्रयोगनिषेधस्थानम्
३८६ सुधाप्रयोगस्थानम्
सुधागुलिकापानम्
घृतेनत्रिवृतादिपानम्
३८७ तथैवगुडांबुनाव्योषादिपानम्
श्लेष्मामयाद्येषुफलमूलविशेषकल्पना
कफजत्द्द्रोगादिषुशंखिनीसप्तलयोः कर्षमात्रापिंडकल्पना
दंतीद्रवंत्युद्रवंमूलंपित्तश्लेष्मविलायनम्
अभिष्यन्नदेहादिभिस्तन्मूलपानम्
३८८ तत्सिद्धंघृतविसर्पादिजित् ॥
सिद्धंतैलंगुल्मादिजित्
त्रिवृद्धरीतक्याअपिविधानम्
विशेषेणग्रहण्यादीनांहितामोदकाः
३८९ संश्लेषादिभिरल्पस्यमहार्थत्वंप्रभूतस्याल्पकर्मता
त्वक्केसरादिभिर्विरेचनानि
अथवमनविरेचनव्यापत्सिद्धिरध्यायः ३
३९० वमनेऽधोगतेपुनर्वमनप्रकारः
अजीर्णिनऊर्ध्वगतेवमनेपूर्ववत्
ततस्तृतीयमपि
३९१ अस्निग्धस्विन्नशरीरादेर्विरेचनौषधंगदजनकम्
उत्क्लिष्टदोषस्यानुवासनादि
आध्मातस्यनरस्योदावर्तहरमभ्यंगादिकर्म
३९२ पंचमूलादिकृतयवागूःशूलादिनाशिनी।
प्रवाहिकादिषुपिप्पल्यादिपानम्
पीतौषधस्यकुपितवातादिकृत्यम्
तस्मिन्नवस्थाविशेषेवमनादि
३९३ अतिवमतःप्रतिक्रिया
पीतभेषजस्यवेगनिग्रहादौवातहरंस्वेदादि
विरेचनातियोगेविरेचनद्रव्योद्धरणं
अतिवमनादौविरेकादि
३९४ विरेकातियोगहरंपानं
वमनातियोगेपानादि
छर्दयतोंतरेप्रविष्टायांजिव्हायांकवलग्रहादि
वाग्ग्रहादिवातरोगेषुयवाग्वादियोजना
जीवादानेशोणितपित्तपरीक्षा
३९५ तृष्णाद्यार्तस्यशोणितेस्रवंत्येवप्राणरक्षणक्रिया
३९६ श्यामादिभिर्वाशृतपयआदि
गुदभ्रंशेक्वाथैस्तंभनादि
विसंज्ञस्यसामवेदादिश्रवणं
अथदोषहरणसाकल्यबस्तिकल्पाध्यायः ४
सर्वगदप्रमाथीबस्तिः
तत्रकल्कः
३९७ सर्वानिलव्याधिहरोनिरूहः
बस्तिर्दीपनोमांसादिप्रदश्च
३९८ वातश्लेष्मोत्थरोगजिद्बस्तिः
यष्ट्याव्हादिभिःशृतपयःपित्तामयघ्नं
निरूहादिर्दाहादिघ्नः
३९९ कफरोगितादेर्निरूहः
सुकुमाराणांनिरूहाः
४०० बस्तिर्वातघ्नोबलवर्णकृच्च
वातजिद्बस्तिः
अभिष्यंदादिहाबस्तिः
विट्संगादिदिजिद्बस्तिः

Indira Gandhi National Centre for the Arts

४०१ शुक्रकरोबस्तिः
अथसिद्धबस्तिकथनम्
मधुतैलिकोनिरूहःप्रमेहादिजित्
रक्तपित्तजिच्चक्षुष्यश्चबस्तिः
पार्श्वादिशूलजिद्बस्तिः
४०२ निरूहकल्पना
युक्तरथनामाबस्तिः
दोषहृत्शिवश्चबस्तिः
सिद्धबस्तिसंज्ञः
कफामयादिहृद्बस्तिः
४०३ वातहरोवृष्यश्चबस्तिः
४०४ परमशुक्रकृद्बस्तिः
त्तित्तिर्यादिष्वप्येवंकल्पना
व्यायाममथितोरस्कादीनांपुनर्नव-
कारकोबस्तिः
४०५ आत्मगुप्तादिभिःसिद्धेनपयसाभो-
ज्यम्
सिद्धद्रव्यैःस्नेहबस्तिप्रकल्पनम्
अधुनास्नेहबस्तयः
सर्ववातविकारजिदनुवासनम्
अनूपप्राणिनांसाधितावसापूर्वगुणा
शताह्वादिभिःपक्वंतैलंसमीरणे
४०६ सैंधवेनतप्तंघृतंसमीरणजित्
अनुवासनंबृंहणादिगुणम्
अनुवासनंकफरोगजिद्वर्ध्मादिनाश-
कंच
४०७ साधितंतैलंकफघ्नम्।
सिद्धमनुवासनंकफे
तीक्ष्णादिबस्तिः
बस्तेस्तीक्ष्णत्वमार्दवे
सिद्धोबस्तिःस्वस्वामयनाशकः
बस्तियोजनप्रकारः
विशोधनानर्हाः
४०८ अथबस्तिव्यापत्सिद्धिरध्यायः ५
अस्निग्धादिदेहस्यबस्तिनावातादि-
ग्रहः
४०९ तत्रावस्थायांपानविरेचनादि
अल्पवीर्येबस्तौदत्तेवायुरोधादि
तत्रफलवर्तियोगादि
४१० वेगसंरोधंकुर्वतःपुंसोबस्तिर्मूर्छादिप्र-
वर्तकः
४११ तत्रावस्थायांशीतांबुनामुखसेचनादि
अत्युष्णादिबस्तिःकुक्षिरुग्जनकः
तत्रविरेचनातियोगवत्लक्षणचिकि-
त्सिते
४१२ पैत्तिकद्रव्यक्षारादिरूपेबस्तौदाहादि
तत्रचिकित्सितम्।
निरूहव्यापत्तीनामेवंचिकित्सितं
अथानुवासनव्यापत्तीनांचिकित्सि-
तम्
अधिकेवातादियोगेचिकित्सा
४१३ पित्तावृतेस्नेहबस्तौतस्यविनिर्हरणम्
कफावृतेस्नेहबस्तौविनिर्हरणम्
४१४ अत्यशनावृतस्नेहबस्तौहितमौषधम्
विडावृतस्नेहबस्तौविनिर्हरणम्
अभुक्तादौस्नेहबस्तौविनिर्हरणम्
४१५ अपक्वस्नेहेविनिर्हरणम्
अनुच्छ्वासस्यबस्तेर्वदनेबद्धेविनिर्ह-
रणम्
शीघ्रप्रणीतादौचिकित्सितम्
पीड्यमानेबस्तिपुटकेचिकित्सितम्
४१६ अतिप्रपीडितेबस्तिपुटकेविनिर्हरणम्
वमनाद्यैर्विशुद्धदेहस्यवैद्यकर्तृकरक्ष-
णम्
विकृतस्यप्रकृतिनयनप्रकारः
४१७ प्रकृतिगतस्यलक्षणम्
अथभेषजकल्पाध्यायः ६
प्रशस्तभेषजलक्षणम्
४१८ औषधग्रहणप्रकारः
पयआदीनांग्रहणप्रकारः
कषाययोनयःपंचरसाः
४१९ स्वरसलक्षणम्
कल्कलक्षणम्
४२० चूर्णलक्षणम्

Indira Gandhi National Centre for the Arts

क्वाथलक्षणम्
शीतलक्षणम्
फांटलक्षणम्
योजनाप्रकारः
स्वरसस्यमध्यममानंचतुःपलम्
पेष्यस्यमध्यमंमानंकर्ष
४२१ क्वाथप्रमाणम्
शीतकषायप्रमाणम्
फांटप्रमाणप्रकारः
स्नेहपाकप्रमाणप्रकारः
स्नेहविषयेशौनकमतम्
४२२ स्नेहपाकलक्षणम्
अन्यल्लक्षणम्
४२३ शाणादिसंज्ञाः
शुष्कार्द्रद्रव्ययोर्योजनाप्रकारः
अनुक्तद्रवेपेषणेलोडनार्थेवारियो-
जना
द्रव्यपरिमाणाभावेतुल्यभागकल्पना
४२४ वटकादिसंज्ञाः
४२५ शैलभेदाद्द्रव्यविशेषप्रकारः
४२६ अथबालोपचरणीयाध्यायः १
अत्रमहर्षयःप्रमाणम्
जातमात्रस्यबालस्यशोधनादिप्र-
कारः
४२७ स्वस्थीभूतस्यबालस्यनाभ्युपरिसू-
त्रेणबंधनादि
ततोदक्षिणहस्ततर्जन्यातालून्नम-
नादि
ततोबालस्यलेहः
ततोगर्भांभोवमनम्
४२८ ततोजातकर्म
स्तन्यप्रवर्तनेहेतुः
प्रथमदिवसेशिशुभोजनप्रकारः
द्वितीयतृतीयदिवसयोस्तत्प्रकारः
बालस्योत्तमस्तन्यप्रकारः
४२९ स्तन्यनाशकारणानि
बालस्यरोगहेतुस्तन्यम्
स्तन्याभावेछागादिपयः
षष्ठ्यांरात्रौबांधवानांजागरणम्
४३० दशमदिवसेपूर्णेसूतिकोत्थानादि
ततआयुषःपरीक्षणादि
धूपनेकाकःशस्तः
बालस्यशुभहेतुर्मण्यादिधारणम्
४३१ पंचषष्ठमासयोःक्रमेणधरण्युपवेश-
नान्नप्राशने
षट्सप्तमाष्टममासेषुकर्णव्यधः
व्यधप्रकारः
४३२ सिराव्यधाद्रागादयः
रागादीनांचिकित्सितम्
उक्तस्थानेव्यधेफलम्
ततःसूत्रस्थापनादि
जातदंतस्यस्तनादपसारणादि
४३३ अपस्तनस्यशिशोःप्रीणनेमोदकः
सौम्यौषधैरोगजयः
बालस्यत्रासोनकार्यः
तस्यवस्त्रवातादिभ्योरक्षणम्
वाङ्मेधाकृत्साधितंपयः
अष्टांगपानंधन्यादिगुणकम्
४३४ सारस्वतंघृतंवाङ्मेधादिकरम्
वचादिभिःसाधितंघृतंपूर्वगुणम्
वपुरादिकृतश्चत्वारोयोगाः
वचादिभिर्वाक्शुद्धिः
४३५ अथबालामयप्रतिषेधाध्यायः २
त्रिविधबालस्वास्थ्यकारणम्
शुद्धक्षीरलक्षणम्
वातदुष्टलक्षणम्
पित्तदुष्टलक्षणम्
कफदुष्टलक्षणम्
४३६ संसर्गदुष्टलक्षणम्
तत्क्षीरंबालस्ययथास्वंव्याधिजन-
कम्
रोदनात्पीडावेदनम्
अवयवविशेषरोगवेदनप्रकारः
शिरआदौपीडावेदनप्रकारः

Indira Gandhi National Centre for the Arts

यथादोषंधात्र्याउपाचारकरणम्
वातेनदुष्टेस्तन्येदशमूलपानादि
४३७ ततोवातव्याधिचिकित्सितोक्तघृतपानादि
शिशोर्लेहः
पित्तेनदुष्टेबालधात्र्योःक्काथपानादि
अथवासिद्धघृतलेहादि
४३८ श्लेष्मदुष्टेमधुयष्टीघृतपानादि
धात्र्यावमनादि
त्रिदोषदुष्टेक्षीरालसकगदोत्पत्तिः
४३९ तत्रद्वयोरपिवमनोपक्रमः
पेयादिकेकृतेवचादिगणादिप्रयोगः
पाठादयस्तन्यदोषहराः
अनुबंधेयथारोगंचिकित्सितम्
दंतोद्भेदोरोगाणांहेतुः
दंतोद्भवेबालपीडायांदृष्टांतः
४४० तत्रदोषानुसारिणप्रयोगः
पूर्वोक्तंबालानांभैषज्यम्
बालानांमृदुवमनम्
स्तन्यतृप्तस्यवमनम्
पेयापीतवतोबालस्यवमनम्
४४१ विरेकेणसाध्येरोगेवस्त्यादियोजना
मूर्वादिलेहास्तन्यदोषहराः
पिप्पल्यादिचूर्णेनशिशोर्दंतपालीप्रतिसारणम्
लावादिचूर्णंदंतकेसरवन्मुखकरम्
दंतोत्थानेवचादिभिःपक्वंघृतम्
रजन्यादिचूर्णलेहः
४४२ साधितंघृतंदंतोत्थरोगनाशकम्
दंतोद्भवेतीव्रबालयंत्रणंन
दिवास्वापवतोबालस्यारोचकादयः
तेषुसमधुघृतसैंधवादियोजना
४४३ तथापंचकोलादियोजना
सिद्धंघृतंस्रोतसांविशोधनम्
सिंह्यादिभिर्घृतंपूर्वगुणम्
मधुयष्टिकादिभिःसाधितंघृतंशोषजित्
साधितंशशशिरोबालस्यातिपुष्टिकरं
सिद्धंतैलमभ्यंजनेहितम्
४४४ लाक्षादिसंज्ञंतैलंज्वरादिजित्
कासादिपीडितबालस्यलेहः
अन्योलेहः
पक्वंसर्पिर्वमिशमकम्
४४५ सदंतेबालेजातिशात्यादिकम्
कुक्कणकतालुमांसतालुकंटकादि
तत्रयवक्षारक्षौद्राभ्यांप्रतिसारणम्
कुकूलादौस्वेदादि
४४६ शिशोस्तालुकंटकेऔषधम्
गुदेरक्तकफोद्भवोऽनेकसंज्ञोरोगः
तत्रधात्र्याःक्षीरशोधनम्
व्रणलेपादि
४४७ गुदकुट्टकेपित्तव्रणतुल्यंचिकित्सितम्
मृत्तिकोद्भवरोगनाशकोलेहः
उक्तौषधलिप्तस्तनपानेरोगनाशः
४४८ अथबालग्रहप्रतिषेधाध्यायः ३
सदाशिवोत्पादितद्वादशग्रहाः
ग्रहनामानि
अभिलष्यतांतेषांरूपादि
तेषांसामान्यंरूपम्
स्कंदगृहीतस्यलक्षणम्
४४९ विशाखगृहीतस्यलक्षणम्
मेषाख्यस्यलक्षणम्
श्वग्रहस्यलक्षणम्
४५० पितृग्रहस्यलक्षणम्
शकुनिग्रहस्यलक्षणम्
पूतनालक्षणम्
शीतपूतनालक्षणम्
अंधपूतनालक्षणम्
४५१ मुखमंडितालक्षणम्
रेवतीलक्षणम्
शुष्करेवतीलक्षणम्
अचिकित्स्यबाललक्षणम्
४५२ भुंजानइत्यादिलक्षणस्यनाशिकाशुष्करेवती

Indira Gandhi National Centre for the Arts

ग्रहग्रहणेत्रीणिकारणानि
हिंसात्मकेग्रहेसतिलक्षणादि
रतिकामेग्रहेलक्षणादि
अर्चाकामेग्रहेलक्षणादि
४५३ तेषांजयप्रकारः
साध्यग्रहबालस्यधूपनादिप्रकारः
४५४ पूत्यादिभिर्धूपःसर्वग्रहमोचकः
सर्वग्रहजित्कश्यपेननिर्मितोधूपः
शिशोर्घृतविशेषपानंग्रहजित्
सर्वरोगग्रहघ्नंपक्वंसर्पिः
४५५ पानाभ्यंजनाभ्यांपक्वंसर्पिःसर्वग्रह-
नाशनम्
गोशृंगादिसर्पनिर्मोकादिधूपनार्थे-
हितम्
अत्रभूतविद्यायांवक्ष्यमाणसर्पिर्यो-
जनादि
उत्काथतोयस्नपनंशिवम्
४५६ औषधैःसमुपक्रमः
अथभूतविद्याज्ञानाध्यायः ४
यद्यद्रूपानुकरणंतत्तद्भूतलक्षणम्
भूतोष्टादशविधः
४५७ भूतानुषंगेहेतुः
ग्रहग्रहणेहेतुः
भूतग्रहणकालः
४५८ देवग्रहगृहीतलक्षणम्
दैत्यग्रहगृहीतलक्षणम्
४५९ गंधर्वगृहीतलक्षणम्
सर्पगृहीतलक्षणम्
यक्षगृहीतलक्षणम्
ब्रह्मराक्षसगृहीतलक्षणम्
४६० पिशाचगृहीतलक्षणम्
प्रेतग्रहगृहीतलक्षणम्
कुष्मांडगृहीतलक्षणम्
४६१ निषादगृहीतलक्षणम्
औंकिरणगृहीतलक्षणम्
वेतालगृहीतलक्षणम्
पितृग्रहगृहीतलक्षणम्
गुर्वादीनांशापचिंतानुवचनादिभि-
रुद्ग्रहवेदनम्
त्याज्यलक्षणम्
४६२ अथभूतप्रतिषेधाध्यायः ५
अहिंसाकामभूतस्यजपादिभिर्जयः
ग्रहापहःप्रयोगः
४६३ तस्याभ्यंजनसेकाग्रहापहाः
सिद्धसर्पिःपाननस्ययोर्ग्रहनाशकम्
एभिःकल्पितोगदःपूर्वगुणकः
गुडकाअंजननस्यलेपैर्दुष्टव्रणादि-
नाशकाः
स्कंदादिघ्नंधूपनम्
४६४ भूतरावाह्वयपानंग्रहघ्नम्
महाभूतरावसंज्ञकंघृतंसर्वग्रहनाश-
कम्
४६६ ग्रहग्रहणदिनेबल्यादिप्रयोगः
ग्रहप्रियवस्त्रादिकंदेयम्
तथारत्नादीनि
अयंसामान्योविधिः
सुरादिभ्योबलिदानस्थानानि
४६७ देवानामिष्टबलिकथनम्
पक्वघृतपानादिभिर्ग्रहमोचनम्
नस्यांजनाभ्यांग्रहमोचनम्
दैत्यानामिष्टोबलिः
नागानामिष्टोबलिः
४६८ यक्षाणामिष्टोबलिः
गोमूत्रक्षीरघृतंनस्यादौहितम्
हरीतक्यादिपिष्टंनावनांजनेहितम्
ब्रह्मरक्षसामिष्टोबलिः
पक्वंघृतंपानादिषुहितम्
४६९ रक्षसामिष्टोबलिः
नस्याभ्यंजने
सिद्धघृतंरक्षोग्रहेनिवारणम्
पिशाचानामिष्टोबलिः
पक्वंघृतंपानाभ्यंजनयोः
४७० नस्यांजने
देवर्षिपितृगंधर्वेवर्ज्यांवर्ज्ये

Indira Gandhi National
Centre for the Arts

पिशाचमंतरेणग्रहेषुप्रतिकूलाचरणंन
जपविशेषःसर्वग्रहजित्
महाविद्याश्रवणम्
भूतेशपूजादिः
४७१ वक्ष्यमाणाध्याययोरुक्तमत्रहितम्
अथोन्मादप्रतिषेधाध्यायः ६
उन्मादाःषट्
उन्मादस्वरूपम्
उन्मादानामुत्पत्तिक्रमः
उन्मादानांसामान्यलक्षणम्
४७२ विशिष्टंलक्षणम्
वातादुन्मादेकृशांगत्वादि
पित्तादुन्मादेसंतर्जनक्रोधादयः
४७३ कफादुन्मादेऽरोचकादयः
त्रिदोषोत्थोमारणात्मकः
धनादिनाशेनोन्मादः
४७४ विषेणोन्मादेःश्याववदनः
पवनजोन्मादेस्नेहपानादि
कफपित्तभवेवमनादि
एवमप्यनुवृत्तौतीक्ष्णनावनांजन-
योजना
उन्मादादिजिद्घृतम्
४७५ ब्राह्मीघृतमुन्मादादिजित्
भूतग्रहादिषुकल्याणकाख्यंसर्पिः
४७६ महाकल्याणसंज्ञंपूर्वस्माद्गुणैरधिकम्
४७७ वर्तिर्नस्यादिभिरुन्मादद्घ्नन्
अवपीडादयोहिताः
शृगालादिमूत्रादिभिर्धूपादिकम्
श्वगोमत्स्यैर्धूपः
४७८ पैत्तिकेतून्मादेतिक्तकादिहितम्
तथाशिराव्यधादि
४७९ जलवर्जितकूपेप्रक्षिप्यक्षु-
धाशोषणादिवा
४७९ इष्टविनाशादुन्मादेतादृशप्राप्त्यादि
कामादिजानांकामादिभिःशमः
भूतोन्मादेभूतनिर्दिष्टमौषधम्
४८० भूतानुबंधेचतुष्पथेबलिः
उन्मादाप्राप्तौहेतुः
विगतोन्मादलक्षणम्
४८१ अथापस्मारप्रतिषेधाध्यायः ७
अपस्मारलक्षणम्
अपस्मारश्चतुर्विधः
४८२ अपस्मारेउद्भूर्षतिकंपादयः
वातादपस्मारलक्षणम्
पित्तादपस्मारलक्षणम्
४८३ कफादपस्मारलक्षणम्
सर्वलिंगापस्मारलक्षणम्
वमनादिभिर्हृदादीनांप्रबोधनम्
वातिकादौचिकित्सा
अपस्मारिणोऽपस्मारशोधनार्थयो-
गाः
साधितंघृतमपस्मारघ्नम्
४८४ महत्पंचगव्यंज्वरादिहरम्
साधितंसर्पिरुन्मादादिजित्
सिध्दतैलप्रस्थाद्यपस्मारमोचकम्
घृतप्रस्थंवातपित्तजापस्मारनाशक-
म्
४८५ क्वाथविशेषेशृतंक्षीरंतद्वत्
पक्वंघृतप्रस्थमपस्मारजित्
गवादीनांपित्तंनस्येहितम्
साधितंतैलंनस्येऽभ्यंगेचशस्तम्
उन्मादापस्मारिणोःसाधिततैलंन-
स्येचूर्णंवा
४८६ अपस्मारिणोधूपयोजना
तैललशुनशीलनादि
दुश्चिकित्स्यस्यरसायनानि
त्वमित्थंकृतवानितिवचननिषेधः
४८७ अथवर्त्मरोगविज्ञानीयाध्यायः ८
नयनरोगसंप्राप्तिः
कृच्छ्रोन्मीलनाख्योनेत्ररोगः
४८८ निमेषाख्योरोगः
वातहताख्योरोगः
कुंभीसंज्ञाःपिटिकाः
पित्तोत्क्लिष्टसंज्ञः

Indira Gandhi National Centre for the Arts

पक्ष्मशातनाख्यः
पोथकीसंज्ञाःपिटिकाः
४८९ कर्कोत्क्लिष्टसंज्ञा
लगणाख्यः
उत्संगाख्याःपिटिकाः
तद्वदुत्क्लिष्टाख्यमर्शोनाम
आंजननामिकापिटिका
४९० बिसवर्त्माख्यः
उत्क्लिष्टवर्त्माख्यः
श्यावबर्त्माख्यः
क्लिष्टवर्त्मनी
सिकतावर्त्म
कर्दमाख्यम
बहलंनाम
४९१ शिशोःकुकूणकः
पक्ष्मोपरोधवर्त्मनांसंकोचादि
आलजीग्रंथिः
अर्बुदाख्यः
४९२ वर्त्मसंश्रयाणांसंख्या
तेषुसाध्यासाध्यत्वप्रकारः
शस्त्रसाध्येपक्ष्मसदनकुट्टनादि
अथवर्त्मरोगप्रतिषेधाध्यायः ९
कृच्छ्रोन्मीलेपुराणघृतादियोजना
४९३ कुंभीकावर्त्मविलेखनादि
वर्त्मविलेखनप्रकारः
४९४ सुलिखितवर्त्मलक्षणम्
अतिलेखनाद्रुजादीनि
तत्रप्रतीकारः
नवनीतेनाभ्यंगादि
अतिलिखितेचिकित्सा
४९५ कठिनोन्नतपिटिकाभेदनादि
सर्ववर्त्मलेखनेभेदनेचायंक्रमः
पित्तरक्तोत्क्लिष्टयोःशिराविमोक्षणादि
पक्ष्मणांसदनेरोममूलविकुट्टनादि
४९६ पक्ष्मशातेश्लेष्मंजनम्
क्वथितखदिरादिभिःसेचनादि
कल्कोत्क्लिष्टेविलिखिताद्
लगणेप्येवमेव
अशांतावग्निनादहनम्
कुकूणेस्तनदायिन्याःपानादि
स्तनदायिन्याविरेचनम्
४९७ मुस्तादिकल्केनकुचालेपादि
शुद्धायाःक्वाथपानम्
शिशोर्वर्त्मनिर्लिखितेसेचनम्
शिशूनांसर्वव्याधिषुसहेतुकंवमनम्
तत्रवमनम
तत्रशोधनम्
४९८ कुकूणेवर्त्यादि
कुकूणपोथक्योर्वर्तिः
पक्ष्मरोधेप्रवृद्धेषुरोमसुछेदनादि
४९९ अशांतौदाहादि
अथसंधिसितासितरोगविज्ञाना-
ध्यायः १०
५०० संधिरोगकथनम्
पवनाज्जलस्रावाख्योरोगः
कफात्कफस्रावेश्वेतादिस्रावः
श्लेष्मणाशोफउपनाहाख्यः
रक्तेनताम्रास्रस्रावः
रक्तमुत्थपिटिकाशूलदाहवती
पूयस्रावाख्येपूयस्रावः
५०१ कनीनसंधौपूयालसोव्रणः
कनीनस्यांतःशोफोऽलजी
अपांगेकनीनेवाक्रिमिग्रंथिः
उपनाहादिचतुर्णांशस्त्रेणसाधनम्
आस्रवादिचतुर्णामलजेश्चत्यागः
सितेनेत्रदेशेशुक्तिकसंज्ञोरोगः
५०२ कफाच्छुक्लभागेशुक्लार्म
बलासग्रथितमर्म
दिष्टकंनामार्म
शोणितात्शिरोत्पातः
तत्रचिकित्सिताभावेऽवलोकनाभा-
वः
शिराजालेशिराजालंनाम
५०३ अर्जुनंनाम

Indira Gandhi National
Centre for the Arts

प्रस्तार्यर्म
स्नावार्म
अधिमांसार्म
शिरसंज्ञाःपिटिकाः
एषांत्रयोदशानांसाधनप्रकारः
तत्रवर्ज्यावर्ज्यविचारः
५०४ अथकृष्णरोगाः
पित्तात्क्षतशुक्रकंत्रिधा
कफात्शुक्रंशुक्रकम्
रक्तेनाजकाख्या
५०५ सरक्तमलैःशिराशुक्रादि
तीव्ररुजंशुक्रकम्
वर्ज्यंशुक्रकम्
५०६ एवंकृष्णेपंचगदाः
अथसंधिसितासितरोगप्रतिषेधा-
ध्यायः ११
उपनाहचिकित्सा
संधिरोगलेखनादि
अर्मवच्चिकित्सा
५०७ पूयालसेशिराव्यधादि
सैंधवादिभिश्चूर्णांजनप्रयोगादि
कृमिग्रंथिभेदनादि
शुक्त्याख्यरोगस्यपित्ताभिष्यंदवदु-
पाचारः
बलासग्रथितपिष्टकयोरुपचारः
५०८ शोफकंडूघ्नमंजनंवर्तिः
शिरोत्पातादौरक्तस्यंदवत्क्रिया
शिरोत्पातादौविशेषेणहितकथनम्
अर्मणश्चिकित्सतम्
अर्मणःशस्त्रचिकित्सा
छेदनप्रकारः
५०९ छेदादनंतरंबंधनादि
५१० हीनातिछेदनजगदजयप्रकारः
श्लेष्मतिमिरादिजिदंजनम्
तिमिरघ्नान्यंजनानि
५११ कठिनशिराणांमर्मवच्चिकित्सा
शुक्रेपुफलादियोजना
क्षतशुक्रेपक्कघृतपानादि
वर्तयःपित्तास्रप्रसादकार्यःक्षतशुक्र-
घ्नाश्च
दंतवर्तिःक्षतशुक्रनिवृत्तिकरी
५१२ वर्तिःसर्वशुक्रहृत्
अंजनंसव्रणाव्रणगंभीरत्वक्स्थशु-
क्रहरम्
निम्नशुक्रस्योन्नमनम्
शुद्धशुक्रेहरिद्रादिकाथेनसेचनम्
शुक्रघ्नागुटिकाः
५१३ मरीचादिभिर्घर्षणकरणम्
घर्षणाद्यद्वौयोगौ
चूर्णःशुक्रहर्षणमंजनम्
मुद्गाअंजनम्
त्दृष्टशुक्रहरावर्तिः
५१४ बालादिभिःशुक्रलेखनम्
सिराशुक्रेव्रणइवचिकित्सा
वर्तिर्नेत्रांजनम्
अशांतौशस्त्रप्रयोगः
असाध्याजकायांवेदनोपशमादि
असाध्यशुक्रेअंजनम्
५१५ अजकयाव्यधादि
शुक्रेषुपातादौपक्कघृनम्
५१६ अथदृष्टिरोगविज्ञानीयाध्यायः १२
तिमिराख्यरोगलक्षणम्
प्रथमपटलप्राप्तस्यकार्यम्
द्वितीयपटलप्राप्तस्यकार्यं
५१७ तृतीयपटलप्राप्तस्यकार्यम्
चतुर्थपटलप्राप्तस्यकार्यम्
वातेनतिमिरव्याविद्धवदवलोकना-
दि
५१८ वातेदृक्शिरासंकोचादि
पित्तजेतिमिरेविद्युदादिदीपितादि
कफेनतिमिरेस्निग्धशुक्लावलोकनादि
५१९ रक्तेनतिमिरेरक्ताभाद्यवलोकनादि
संसर्गसन्निपातेषुसंकीर्णलक्षणवेद-
नादि

Indira Gandhi National
Centre for the Arts

नकुलांधस्यदिवादृष्टीरात्रौन
५२० दिवादर्शनेयुक्तिः
उष्णविदग्धाख्यादृष्टिः
अम्लेनविदग्धादृष्टिः
धूमरोनामरोगः
५२१ औपसर्गिकलिंगनाशः
एवंदृष्टिमंडलेसप्तविंशतिरोगाः
५२२ अथतिमिरप्रतिषेधाध्यायः १३
तिमिरस्यशीघ्रमुपक्रमः
साधितघृतप्रस्थपानंतिमिरापहम्
साधितपुराणघृतप्रस्थंकाचादिनाशकम्
५२३ घ्राणादिरोगजिद्घृतम्
तिमिरिणस्त्रिफलाघृतपानम्
महात्रैफलंसर्पिर्दृष्टिविकारजित्
५२४ लेह्नेनगारुत्मतचक्षुर्लाभः
संयुक्तत्रिफलातिमिरघ्नी
तिमिरातुरस्यपायसादिभक्षणम्
५२५ चूर्णांजनंसर्वतिमिरघ्नम्
अंजनंतिमिरादिशांतिकृत्
कफामयजिच्चूर्णं
सर्वाक्षिरोगेष्वंजनम्
५२६ भास्करश्चूर्णोविशेषेणतिमिरघ्नः
अंजनंतिमिरांतकरंद्वितीयोभास्करः
गरुडतुल्यनयनकरंतुत्थम्
५२७ सीसशलाकातैमिर्यादिघ्नी
नयनयोर्गृध्रतुल्यबलकरोयोगः
भिन्नतारचक्षूरक्षकश्चूर्णः
५२८ अंजनविशेषादंधस्यापिदृष्टिः
अंधानांदृष्टिप्रदारसक्रिया
तिमिरेऽप्रतिसाराख्यमंजनम्
गुटिकातिमिरनाशिन्यः
षण्मासिकोयोगस्तिमिरादिघ्नः
५२९ अशेषदृष्टिरोगहरंचूर्णांजनम्
दृष्टिबलकारकंनस्यम्
नेत्ररोगिणःस्नेहादिभिरुपक्रमः
इतःपरंप्रतिदोषंसाधनम्
वातजेतिमिरेक्वाथपक्वघृतपानादि
५३० ऊर्ध्वजत्रुजरोगादिनाशकंनस्यम्
तैलंनस्येनसर्वजत्रूर्ध्वरोगादिजित्
अंजनेवैयाघ्रादिवसा
स्रोतोंजनंतिमिरहरम्
५३१ एवंशमाभावेतर्पणम्
घृतविशेषःश्रेष्ठंतर्पणम्
अन्यत्तर्पणम्
तत्रश्वाविदादीनांवसाकल्पना
पुटपाकादियोजना
वातजेतिमिरेपीनसवन्निरूहानुवासने
पैत्तजेतिमिरेसर्पिष्पानादि
५३२ समाक्षिकशर्करादिभिर्विरेचनम्
नेत्रस्यशिरस्सुशिशिरसेकलेपादयः
अंजनेसारिवादिभिर्वर्त्यादि
तिमिरजित्सौवीरांजनादिकंमंजनम्
नस्येपक्वंघृतम्
श्लेष्मोत्थतिमिरेघृतपानपूर्वकशिराव्यधादि
५३३ पक्वंतैलंनावनम्
दृग्वैमल्यायविमलाकोकिलाख्येवर्ती
तिमिरशुक्रहरार्तिः
रक्तजेतिमिरेपित्तवदुपक्रमादि
रक्तोत्थतिमिरनाशकमौषधम्
संसर्गजेतिमिरेचिकित्सितम्
५३४ तत्रनावनमुखलेपौ
नावनशिरोबस्त्योःसाधितंतैलम्
सर्वोत्थतिमिरेहितमंजनम्
सन्निपातिकेतिमिरेंजनम्
काचेशिरारहितापूर्वोक्ताक्रिया
५३५ अंजनंकाचयापनम्
रात्र्यांध्येश्रेष्ठमंजनम्
नक्तांध्यत्द्वर्तिः
निशांध्यघ्नीवार्तिः
निशांध्येहितावर्तयः

Indira Gandhi National Centre for the Arts

राज्यांध्येपरमंजनम्
माहिषप्लीहयकृद्भक्षणम्
५३६ जीवंत्याःपल्लवभक्षणादि
धूमराख्याम्लपित्तविदाहेस्नेहादि
गोशकृदादिभिर्विपक्कांजनादि
पक्कघृतेनावनम्
क्षीरभवसर्पिस्तर्पणादि
५३७ चितादिभिस्तिमिररोगवद्वलोकनम्
तत्रौषधयोजनम्
सूर्योपरागादिदर्शनेनोपहतदर्शनस्य-
स्निग्धहिमादितर्पणम्
चक्षूरक्षाकरणंसहेतुकम्
त्रिफलादिकंनेत्ररक्षा
ईक्षणस्यपररक्षणमहिताशननिवृ-
त्यादि
५३८ अथलिंगनाशप्रतिषेधाध्यायः १४
कफोद्भवलिंगनाशस्यव्यधादि
तत्रहेतुः
श्लेष्मिकलिंगनाशेआनीलतागदः
५३९ आवर्तकीदृष्टिस्वरूपम्
राजीमतीस्वरूपम्
विषमास्वरूपम्
चंद्रकीस्वरूपम्
छत्रकीस्वरूपम्
अशिराहादीनांनराणांलिंगनाशन-
व्यधोन
दक्षिणाक्षिव्यधप्रकारः
५४० सुविद्धलक्षणादि
५४१ सद्याहंक्षवथ्वादिनिषेधः
शक्त्यनुसारेणलंघनादि
अतिसूक्ष्मादिदर्शननिषेधादि
५४२ शोफादीनामधिमंथस्यचोद्भूत्यादि
रुग्रागशमनायमुखालेपः
सर्षपयुततिलैःपूर्वगुणालेपश्च
श्चोतनेऽजाक्षीररुजादिहृत्
मधुकादिभिर्वाऽजाक्षीरं
एवमप्यशांतौशिरामोक्षादि
५४३ विद्धनयनेवर्तिः
विद्धनयनेप्रसादजननंपिंडांजनम्
अथसर्वाक्षिरोगविज्ञानाध्यायः १५
नेत्रवातेनाभिषण्णेउपशमनम्
५४४ अधिमंथेकर्णनादादिः
अधिमंथात्हताधिमंथः
मन्यादिभ्योवायुस्तीव्रव्यथाकरः
अन्यतोवातविपर्ययेजिह्मनेत्रम्
पित्ताभिष्यंदलक्षणम्
५४५ अधिमंथलक्षणम्
कफजेभिष्यंदेजाड्यादिकम्
अधिमंथेरुष्णमंडलादि
रक्तस्यंदेनरक्ताश्रुराज्यादिकंनयनम्
मंथलक्षणम्
सर्वेऽधिमंथाःस्यंदाधिकव्यथाः
५४६ शुष्काक्षिपाकोरोगः
सशोफोनेत्ररोगः
अक्षिपाकात्ययाख्योरोगः
५४७ अम्लोषिताख्यः
सर्वनेत्रगारोगाःषोडश
एतेषुहताधिमंथाक्षिपाकात्यय
योस्त्यागः
एषांदृष्टिघ्नत्वेकालपरिमाणम्
५४८ अथसर्वाक्षिरोगप्रतिषेधाध्यायः १६
स्यंदेषुतीक्ष्णगंडूषकादिकर्तव्यंप्रायू
पे
स्यंदेदाहादिशांत्यैबिडालकादिकार-
णम्
सद्यःप्रकुपितेनेत्रेचूर्णावगुंठनम्
५४९ चूर्णनेत्रकोपजित्
नेत्रेऔषधधारणम्
सर्वदोषकुपितेचक्षुषिसेकः
शोभांजनकरसोनेत्रपीडाजित्
सुकुपिंडिकारोगहंत्री
५५० मारुतजेभिष्यंदेआश्चोतनादि
रक्तपित्तजेस्यंदेकसेरुकादिरजः
पुंड्रादिभिर्भूतीदाहादिहृत्

...ndhi National Centre for the Arts

सूक्ष्मरजीकृतश्वेतरोध्रंपित्तादि-
जित्
कर्कनागरादिरसआश्चोतनम्
५५१ सान्निपातिकेभिष्यंदेआश्चोतनम्
शिरोबदनलेपादि
तिमिरप्रतिषेधस्यपर्यालोचनपूर्वकं-
चिकित्सितम्
अयमेवविधिर्मंथादिष्वपि
अशांतौभ्रुवोरुपरिदाहः
वाताक्षिरोगनाशिनीवर्तिः
५५२ पित्तरक्तहृद्वर्तिः
श्लेष्माक्षिरोगजिद्वर्तिः
सर्वाभिष्यंदोत्थरोगघ्नःपाशुपता-
ख्योयोगः
शुद्धाक्षिपाकेघृतपानतर्पणादि
तत्रांजनम्
५५३ श्रेष्ठांजनम्
सशोफेल्पशोफेवाशिराव्यधादि
शूलहृत्सेकः
आश्चोतनेक्वाथः
घर्षादिहरसंधावप्रयोगः
घृष्टताम्रादिवेदनाघ्नम्
५५४ ताम्रघृष्टशंखघर्षादिघ्नम्
घृष्टोदुंबरफलंदाहादिजित्
शिग्रुपल्लवरसःशोफादिघ्नः
मृत्कपालंघर्षादिजित्
स्तन्येनाश्चोतनम्
गुटिकावर्षादिघ्नाः
५५५ व्याघ्र्यादिकंशोफरुक्प्रणुत्
अम्लोषितेनेत्ररोगेपित्ताभिष्यंदचि-
कित्सितम्
उत्क्लिष्टादयोष्टादशरोगाः
पिल्लाक्षिरोगवतोवर्त्मनिर्लेखनम्
पिल्लनाशनःसेकः
५५६ पिल्लेंजनमौषधम्
क्लेदकंडूहृदंजनम्
हरीतकीक्वाथपिष्टतगरादिपिल्लघ्नम्
सैंधवादिभ्योवर्तिःपिल्लशुक्लहृत्
पैल्लयपक्ष्मशातघ्नमंजनम्
५५७ चूर्णःपिल्लेपुरोमकारकः
मषीपिल्लानांरोपणार्थेश्रेष्ठा
पिल्लरोगिणःपुनःपुनर्वर्त्मावलेखादि-
कम्
स्वस्थनेत्रस्यापिपुराणयवादिकसे-
वनम्
५५८ बेगसंरोधादिकवर्जनम्
शिराणांनयनदुःखसुखकरत्वम्
उपानदभ्यंजनादिसेवनम्
५५९ अथकर्णरोगविज्ञानीयाध्यायः १७
कुपितवायुःकर्णविवरेशूलकरः
पित्तेनदाहान्वितशूलादि
कफात्शिरआदिगौरवादि
५६० दूषितरक्तात्कर्णशूलः
समुदितदोषैःशोफादियुतशूलादि
कर्णनादः
उपेक्षितोवायुःकर्णनादोवाबाधिर्य-
करः
प्रतीनाहसंज्ञकोगदः
५६१ कंडूशोफाख्यौगदौ
कफःपूतिकर्णकरः
कृमिकर्णकाख्यः
कर्णविद्रधिः
कर्णार्शःकर्णार्बुदे
५६२ कुचिकर्णसंज्ञः
कर्णपिप्पली
विदारिकाख्यः
पालीशोषसंज्ञः
तंत्रिका
परिपोटसंज्ञः
५६३ उत्पातसंज्ञः
श्यावाख्यः
गल्लिराख्यः
दुःखवर्धनसंज्ञः
लेह्याख्याःपिटिकाः

Indira Gandhi National
Centre for the Arts

एषांसाध्यत्वादि
५६४ अथकर्णरोगप्रतिषेधाध्यायः १८
वातोद्भवेकर्णशूलेमांसभोजनादि
वातहरेगणेअम्लादिषुचमहास्नेहः
सद्योरुजापहःस्नेहः
५६५ अन्यस्नेहयोजना
वातव्याधिप्रतिश्यायविहितमत्र
शिरसासहस्नानवर्जनादि
पित्तशूलेस्निग्धस्यविरेचनादि
शूलादिघ्नंतैलम्
कर्णलेपनम्
५६६ कफोत्थेवमनादि
कर्णपूरणेलशुनादीनांस्वरसः
रसःशूलजित्
बीजपूरादिरसेनपूरणादि
सिद्धंतैलंपूरणेहितम्
रक्तजेकर्णशूलेपित्तवत्कर्म
५६७ पक्केपूयवहेकर्णेधूमादिकादियोजनम्
पिचुवर्तिभिःकर्णस्रोतःपूरणादि
एषशूलादिनिवर्तकोविधिः
तैलविशेषपूरणात्स्रावनिर्हारः
नादबाधिर्ययोर्वातशूलोक्तमौषधम्
तैलंनावनादिभिर्नादादिघ्नम्
५६८ पक्वंतैलंपूरणाद्रुजादिजित्
कर्णनादेसर्षपोत्थंतैलम्
पक्वंतैलंपूरणात्सरुच्छ्रकंड्वादिजित्
यदिकर्णौसुप्ताविवतदास्रहरणम्
५६९ कर्णयोःसशोफक्लेदयोर्नरस्यवमनम्
बालवृद्धचिरजातबाधिर्याणांवर्ज-
नम्
प्रतिनाहेकर्णविशोधनादि
कटूष्णैर्लेपनम्
पूतिकर्णकृमिकर्णयोःकर्णस्रावोक्तं-
चिकित्सितम्
कर्णविद्धोवमिपूर्वाविद्रधिक्रिया
क्षतविद्रधौपित्तोत्थकर्णशूलोक्तम्
५७० अर्शोर्बुदेषुनासाचिकित्सितम्
कर्णविदारिकायाःकर्णविद्रधिवत्
पालीशोषेवातश्रोत्रशूलइवनस्या-
दिच
पालीनांपुष्टिकृत्पक्वंतैलम्
पाचिततैलंपालीपोषणवृद्धिकृत्
पालीछेदनादि
५७१ परिपोटेप्येषएवविधिर्याप्याख्यः
उत्पातेशीततैलैर्लेपः
अभ्यंजनेसिद्धतैलादि
उन्मंथेसिद्धतैलाभ्यंजनादि
दुर्विद्धेपालीसेचनादि
पारिलेहिकालेपनादि
५७२ छिन्नेकर्णेचिकित्सा
कर्णरोगविधानम्
सुरूढादिगुणंकर्णविवर्धनम्
५७३ कर्णवर्धनोभ्यंगः
नासासंधानम्
५७४ छिन्नोष्ठस्यनासासंधानवद्विधिः
अथनासारोगविज्ञानाध्यायः १९
५७५ दोषानासायांप्रतिश्यायजनकाः
वातात्प्रतिश्यायेमुखशोषादयः
पित्तात्प्रतिश्यायेतृष्णादयः
कफात्प्रतिश्यायेकासादयः
त्रिदोषजःप्रतिश्यायोवृद्धिमांश्छां-
तिमांश्च
दुष्टंरक्तंप्रतिश्यायकृत्
५७६ दुष्टप्रतिश्यायलक्षणम्
प्रतिश्यायेषुपक्कलक्षणानि
भृशक्षवाख्यः
५७७ नासिकाशोषस्यलक्षणम्
नासानाहाख्यः
घ्राणपाकाख्यः
घ्राणस्रावाख्यः
नासाप्रवृद्धःकफःपीनसाधिकरुक्करः
५७८ दीप्तिसंज्ञालक्षणम्
पूतिनासालक्षणम्
पूयरक्तसंज्ञलक्षणम्

Indira Gandhi National
Centre for the Arts

पुटकलक्षणम्
दोषलिंगैरर्शोर्बुदज्ञानम्
सर्वेष्वर्शस्त्वर्बुदेषुरुच्छ्रादुच्छ्वसना-
दयः
५७९ तेषांमध्येदुष्टपीनसस्ययापनम्
अथनासारोगप्रतिषेधाध्यायः २०
पीनसेपुस्नेहनादि
५८० पीनसादिदृदोषधम्
बसादियुक्तधूमपानम्
स्नानादित्यागः
वातप्रतिश्यायेसाधितघृतपानादि
पित्तरक्तोत्थयोःशृतसर्पिष्पानादि
५८१ तैलंनावनम्
कफजेलंघनादि
घृतादिभिःसान्निपातिकप्रतिश्याय-
जयः
दुष्टपीनसेयक्ष्महरंक्रमिहरंचिकि-
त्सितम्
नासयामुखेनवर्तिपानम्
पुटपाकाख्येतीक्ष्णैःप्रधमनम्
५८२ नस्यंक्षवपुटपणुत्
नासाशोषेबलातैलपानादि
नासापाकादौपित्तघ्नचिकित्सितादि
पूतिनासापीनसयोःकफपीनसवदु-
पक्रमः
बमनादि
पूतिनासापीनसयोर्नस्यम्
पूयरक्तेनबेरक्तपीनसइवचिकित्सित-
म्
५८३ अर्शोर्बुदेषुघ्राणेवर्तिप्रवेशादि
अथमुखरोगविज्ञानाध्यायः २१
मुखरोगकारकादोषाः
खंडोष्ठलक्षणम्
पवनादोष्ठकोपेओष्ठयोस्तब्धत्वम्
५८४ पित्तात्तीक्ष्णासहनत्वादि
कफेनशीतासहत्वादि
सन्निपातादोष्ठयोर्नानावर्णपिटिका-
वृतत्त्वादि
रक्तोपसृष्टयोरुधिरस्रवत्त्वादि
मांसेनमांसपिंडोपमत्त्वादि
मेदसातैलाभश्वयथुक्लेदत्त्वादि
५८५ क्षतजयोरसकृद्भेदनत्वादि
वातकफादोष्ठेजलार्बुदं
गंडेगंडालजीनामकः
शीतदंतसंज्ञोदालनश्च
दंतहर्षेदंताःसरुजाः
दंतभेदेदंताल्लोदादियुताः
चालाख्योरोगः
करालाख्योरोगः
अधिदंताख्यः
५८६ पूतिगंधाख्यः
शर्कराख्यः
कपालिकाख्यः
श्यावाख्यः
प्रलूनाख्यः
शीतादसंज्ञकः
५८७ उपकुशसंज्ञः
दंतपुप्पुटसंज्ञः
दंतविद्रधिः
सुषिरसंज्ञः
महासुषिराख्यः
५८८ अधिमांसकः
विदर्भाख्यः
पंचगतयः
वातदूषितजिह्वायालक्षणम्
पित्तदूषितजिह्वायालक्षणम्
कफदूषितजिह्वायालक्षणम्
अलसाख्यः
५८९ अधिजिह्वाख्यः
उपजिह्वाख्यः
तालुपिटिकाः
गलशुंडिकाख्यः
तालुसंहतिः
अर्बुदम्

Indira Gandhi National Centre for the Arts

५९० कच्छपाख्यः
पुप्पुटाख्यः
पाकाख्यः
तालुशोषः
रोहिणी
वातरोहिण्याःकार्यं
पित्तरोहिण्याःकार्यं
५९१ कफरोहिण्याःकार्यं
असृग्रोहिण्याःकार्यं
सन्निपातरोहिण्याःकार्यं
कंठशालूकः
वृंदाख्यः
तुंडिकेरिकाख्यः
५९२ गलौघाख्यः
वलयाख्यः
गलायुकाख्यः
शतघ्नी
गलविद्रधिः
गलार्बुदं
५९३ गलगंडः
वातगलगंडः
पित्तगलगंडः
कफगलगंडः
मेदोगलगंडः
श्लेष्मगलगंडः
५९४ मुखपाकः
ऊर्ध्वगदः
पित्तजेमुखपाकेदाहादि
रक्तजेपाकेतद्वत्
कफजेपाकेमधुरमुखत्वादि
५९५ कफोर्बुदकरः
मलैःसर्वलक्षणः
दंतकाष्ठविद्विषःपूतिवक्त्रत्वम्
पंचसप्ततिरामयाः
तेषांसाध्यत्वादि
५९६ अथमुखरोगप्रतिषेधाध्यायः२२
खंडोष्ठचिकित्सा
तैलमभ्यंजनम्
साधिततैलंनस्यम्
५९७ वातजओष्ठकोपेपिचुः
महास्नेहेनप्रतिसारणंवा
वातोष्ठस्यस्वेदः
तत्रखंडोष्ठोक्तनस्यादि
पित्तजओष्ठकोपेजलौकोभीरक्तस्रावः
पित्तोष्ठेरोध्रादिभिःप्रतिसारणम्
सिद्धंघृतमभ्यंजने
पित्ताभिघातजयोःपित्तविद्रधिवत्क्रिया
शोणितजेपीदमेव
५९८ कफोत्तरओष्ठेप्रतिसारणादि
मेदोजौष्ठकोपेस्वेदादि
जलार्बुदेघर्षणादि
गंडेलजीरोगस्यशोफवदुपक्रमः
शीतदंतस्यपालीविलेखनादि
५९९ दंतभेदेहर्षेचवातघ्नक्रियादि
प्रचलद्द्विजेगुंडूषादि
अधिदंतकेकृमिदंतमिवचिकित्सा
दंतेभ्यःशर्कराहरणादि
६०० कृमिदंतकस्यविस्रावादि
हिंग्वादिचूर्णदंतेधृतंरुजाघ्नत्
सिद्धतैलगंडूषधारणम्
एवमप्यशांतपीडदंतस्योद्धरणादि
६०१ ततःपक्वतैलंनस्यम्
कृशादीनांदंतोद्धरणनिषेधादि
विस्राविताशीतादेःप्रतिसारणादि
उपकुशेदंतमांसस्वेदादि
६०२ दंतपुप्पुटकेस्वेदादि
दंतविद्रधौकवललेपनादि
सौषिरच्छिन्नलिखितयोःप्रतिसारणादि
अधिमांसकेछेदनादि
६०३ विदर्भेदंतमूलच्छेदनादि
विरेकादिनाशोधनादि

Indira Gandhi National Centre for the Arts

वातोत्थकंटकेषुवातोष्ठकोपोक्तंचि-
किल्सितम्
पित्तजातेषुजिह्वाकंटकेषुप्रतिसार-
णादि
कफोत्थेष्वपिप्रतिसारणादि
६०४ नवेजिह्वालसेएषएवोपक्रमः
अधिजिह्विकायांछेदनादि
उपजिह्वायांपरिस्रावादि
शुंडिकायांनस्यादि
वृद्धगलशुंडिकायांछेदनादि
६०५ सम्यक्छिन्नायांघर्षणम्
संहतौपुप्पुटकेकच्छपेविलेखनादि
अपक्वेतालुपाकेघर्षणादि
पक्वेतालुपाकेप्रतिसारणादि
तालुशोषेसर्पियोजनादि
कंठरोगेषुरक्तमोक्षादि
६०६ अत्रप्रतिसारणम्
रुजाशोफघ्नोलेपः
वातजरोहिण्याःस्वेदादि
६०७ पितजविस्राविण्याविस्रावादि
रक्तजांप्रत्याख्यायपित्तजायाइवो-
पक्रमः
कफोत्थायाःप्रतिसारणादि
वृंदादिषुकफरोहिणीवच्चिकित्सा
विद्रधौस्रावादि
वातोद्भवगलगंडेस्वेदादि
गलगंडिनःपक्वतैलपानम्
६०८ कफोत्थेप्येतत्
कफजेगलगंडेलेपः
क्षारपानादि
मेदोभवेगलगंडेशिराव्यधादि
अशांतौपाटनादि
मुखपाकेषुमुखधावनाखिफलादयः
६०९ अनिलान्मुखकेप्रतिसारणादि
पित्तास्रेपित्तरक्तघ्नोविधिःकफेचक-
फत्वत्
पिटिकानांलेखनम्

सन्निपातेमुखपाकेयथादोषोदयंचि-
कित्सतम्
नवेऽर्बुदेप्रतिसारणादि
पूतिमुखेवमितेतीक्ष्णधूमादि
६१० गुटिकाःकंठादिरोगघ्नाः
पक्वंतैलंपानादिभिःसर्वरोगजित्
मुखस्यप्रपुन्नाटादिभिरुद्वर्तनम्
६११ विपक्वंतैलंसर्वमुखरोगत्वत्
सर्वमुखरोगहरागुटिकाः
६१२ पक्वंतैलंसर्वमुखरोगघ्नम्
गुटिकादिर्द्विजदार्ढ्यकृत्
कषायकवलग्रहोमुखरोगघ्नः
दंतमांसात्यादीनांचूर्णोघर्षणेनना-
शनः
मुखविकारेकालकाख्यश्चूर्णः
दंतायामयेपीतकाख्यश्चूर्णः
६१३ गलरोगघ्नोगुटिका
पथ्याविशेषभक्षणंरोगघ्नम्
मुखपाकहरःक्वाथः
कषायेमुखगदघ्नः
क्वथितोरसोवक्रपाकादिघ्नः
पटोलादीनांपृथगेवंकल्पना
६१४ द्विजदार्ढ्यकृद्गंडूषः
मुखादिगदेषुपुनःपुनारक्तस्रावः
कायशिरसोर्विरेकादिकंनेषांशस्तम्
मुखदंतरोगाणांभोजनादि
मुखरोगेषुद्वागुपक्रमः
६१५ अथशिरोरोगविज्ञानाध्यायः २३
धूमादिभिःशिरोरोगजननम्
वातकोपोत्थेशंखनिस्तोदादायः
शिरसोर्धेत्वर्धावभेदकः
६१६ कफजेशिरोभितापेऽरुच्यादयः
रक्तोद्भवेपित्ताधिकरुजः
सन्निपातजेसर्वलक्षणः
संकीर्णैराहारैर्मूर्ध्निकृमयः
६१७ वाताधिकादोषाःशिरःकंपाख्यजन-
काः

Indira Gandhi National
Centre for the Arts

वाताद्यैःशंखशोफोतिदाहादयश्च
पित्तानुरुधःसस्यंदनरुकूकरः
६१८ दशैतेमूर्धगताः
कपालेनवरोगाः
कपालेपवनेदुष्टेउपशीर्षकाख्यः
कपालेपिटिकाः
कफवाताभ्यांदारुणकम्
इंद्रलुप्तसंज्ञं
६१९ खलतिः
वातादिभिःखलतेर्नानावर्णाः
शिरसिपलितस्यकारणम्
पलितस्यापिनानागुणवर्णाः
शिरोरुजोत्थंपलितंविवर्णं
६२० सन्निपातोत्थाःखलत्यादयोऽसाध्याः
पलितानिरसायनपेक्षाणि
अथशिरोरोगप्रतिषेधाध्यायः २४
पवनजेशिरोभितापेवातव्याधिचिकित्सितम्
अभ्यक्तशिरसोरात्रौघृतपानादि
६२१ पक्वंघृतंनस्यम्
सशर्करघृतंपानम्
सर्वमूर्धरुजाघ्नंनस्यम्
पित्तासृगुत्थेसर्पिरादि
अर्धावभेदकेप्येषाक्रिया
६२२ तत्रनस्यादि
सूर्यावर्तेप्येषउपक्रमः
पित्तोत्थेशिरोभितापेशिरामोक्षादि
रक्तजेप्येतत्
श्लेष्मणःशिरोभितापेवमनादि
कृमिजेशोणितनस्यादि
६२३ साधितसर्षपतैलादिनस्यम्
नस्येकृमिजियोजना
नस्यद्रव्यैर्धूमः
अत्ररक्तनिर्हरणंन
कंपेदाहंविनावाताभितापोक्तोविधिः
उपशीर्षकेनवेव्रातव्याधिचिकित्सितम्
पक्वेविद्रधिवत्कर्म
आमादौयथास्वम्
६२४ अरुंषिकायांरक्तनिस्रावादि
रुंषिकालेपनंकट्वादिहितम्
मालत्यादिप्रसाधिततैलाभ्यंगः
अशांतौवमनादि
दारुणकेशिराव्यधादि
६२५ इंद्रलुप्तेशिराव्यधादि
तैलाक्ताहस्तिदंतमषीऔषधम्
सितरोमोद्गमेमेषविषाणजामषी
खलत्यादिषुशोधितस्यनस्यादि
तैलंनस्यम्
६२६ पलितांतकरंनस्यम्
तैलकुडवोनस्यम्
दुग्धिकाकरवीरकौपलितघ्नौ
इंद्रलुप्तवलीषुवक्रस्यलेपः
केशरंजनंशिरःप्रलेपनम्
६२७ केशसंवर्धनानिमांस्यादीनि
पलितेचूर्णादिकम्
यवागूःपलितघ्नी
शिरोरोगघ्नंसिद्धतैलम्
नस्यंसर्वजत्रूर्ध्वरोगजित्
मायूराख्यंघृतंसर्वजत्रूर्ध्वरोगजित्
६२८ महामायूरंवंध्यासुतप्रदम्
मूषिकादिभिरेवंकल्पना
६२९ रोगाणांशीघ्रतरंजयःकार्यः
उत्तमांगस्ययत्नेनरक्षणम्
अथव्रणविज्ञानीयप्रतिषेधाध्यायः २५
व्रणस्यद्वैविध्यम्
६३० दुष्टव्रणाकृतिवेदनम्
सपंचदशधा
मारुताच्छ्यावादिगुणाः
६३१ पित्तेनपीतादिगुणः
कफेनकंडूयुतादिगुणः

Indira Gandhi National Centre for the Arts

रक्तेनविद्रुमलोहितादिगुणः
संसर्गात्संसर्गरूपोगुणः
शुद्धव्रणलक्षणम्
त्वगादिषुव्रणाश्रयेषूत्तरोत्तरंदुःसा-
ध्यत्वम्
सुसाध्यलक्षणम्
६३२ अक्ष्यादिषुकृच्छ्रसाध्यः
फेनादिवहाव्रणादुःसाध्याः
असाध्याः
साध्यस्याप्यसाध्यत्वम्
६३३ रोहत्यलक्षणम्
व्रणेशोधनादि
शोफावस्थस्यशीतोपचारः
शोफव्रणयोरस्रहरणम्
पुनःपुनःस्राविते लेपादि
६३४ शोफनिर्वापणःप्रदेहः
दाहरुजाघ्नाश्शिलाः
मंदरुक्शोफस्यस्वेदादि
एवंविलयाभावेउपनाहादि
६३५ उपनाहेसक्तुपिंडिका
सुपक्वेग्रथितेचशोफेदारणम्
गुग्गुल्वालीनिपक्वशोफविदारणम्
पूयगर्भादीनांपीडनम्
लेपविशेषस्यसमुपेक्षादि
कलायादयःप्रपीडनम्
६३६ मेहकुष्ठव्रणेषुसुरसाराग्वधादिको
व्रणक्षालनेक्वाथः
व्रणशोधनोलेपः
वर्त्याव्रणविशोधनम्
वाताभिभूतानांयवादिभिर्धूपनम्
पित्तादिकानांनिर्वापणम्
गंभीरव्रणेउत्सादनादि
६३७ व्रणानांजातीमुकुलादिभिरुत्साद-
नादि
उत्सन्नमांसादिव्रणानांविशोधनम्
व्रणविशेषाअग्निकर्मणाशोध्याः
अश्वगंधादिकंव्रणरोपणम्
६३८ व्रणानांतिलकल्कंसंरोहणम्
तिलकल्कःसर्वरोगजित्
तिलकल्कवद्यवकल्कः
सास्रपित्तादिव्रणानांघृतेनरोपणादि
तैलंरोपणम्
व्रणानांचूर्णमिष्टम्
त्वग्ग्राहकाश्चूर्णाः
६३९ त्वग्विशुद्धिकरोलेपः
सवर्णकरोलेपः
रोमोद्भवकरोलेपः
व्रणिनःशस्त्रकर्मोक्तपथ्यादि
वाताधिकादौवातघ्नादि
एवंव्रणेयथास्वंयोजना
६४० साध्यसर्पिषाव्रणविशोधनादि
अथसद्योव्रणप्रतिषेधाध्यायः २६
व्रणैर्जुष्टमंगमष्टधा
तेषांलक्षणानि
६४१ सद्योव्रणस्यसेचनादि
क्षतोष्मणःशांतयेलेपादयः
सद्योव्रणेष्वायतेषुसघृतमाक्षिकादि
ससंरंभेषुशोधनम्
६४२ घृष्टेविदलितेचपूर्वोक्तचिकित्सा
विक्षतेस्नेहपानादिकंवातघ्नौषधसा-
धितम्
सप्ताहादूर्ध्वंव्रणप्रतिषेधोक्तम्
घृष्टेव्रणेपीडोपशमादि
अवकृत्तेकल्कादीनि
विच्छिन्नप्रविलंबिनोःसीवनादि
६४३ स्फुटितंलंचनमसाध्यमस्फुटेचिकि-
त्सा
पक्वंतैलंसर्वनेत्राभिघातजित्
गलपीडावसन्नेनेत्रेवमनादयः
कर्णेस्थानाद्भ्रष्टेसीवनादि
कृकाटिकायांछिन्नायांसीवनादि
६४४ अत्राजेनघृतेनपरिषेकादि
शाखासुहृतस्यसीवनादि
विलंबिमुष्कस्यसीवनादि

Indira Gandhi National Centre for the Arts

वृषणयोरोपणंपक्वंतैलम्
निःशेषेणछिन्नशाखादहनादि
६४५ शिरसःशल्येनिपतितेबालवार्तप्रवेशादि
अंगाच्छल्येल्दृतेव्रणेस्नेहवार्ति
दूरावगाढादिगुणानांतैलेनसेचनम्
भिन्नेकोष्ठेरक्तेनपूर्णेमूर्छायाः
आमाशयस्थेरुधिरेशूलेनविश्वसनम्
६४६ पक्वाशयस्थेसशूलगौरवादि
अभिन्नाशयस्यापिलोहितेनपूरणम्
अंतर्लोहितादेर्वर्जनम्
आमाशयस्थेरक्तेवमनादि
अन्नभक्षणप्रकारः
भिन्नकोष्ठस्यरुधिरपानम्
६४७ कोष्ठभेदस्यद्वैविध्यादि
कोष्ठेभिन्नेपिजीवनार्हस्यलक्षणम्
अंत्रप्रवेशेमतम्
अंत्रप्रवेशनप्रकारः
६४८ यथास्थानस्थितेंत्रेव्रणसीवनादि
जठरान्मेदसोवर्तिर्निर्गमनेकर्तव्यप्रकारः
६४९ सद्योव्रणेघृततैलंरोपणम्
गूढप्रहारेणाभिहतादौवातरक्तहरणादिकम्
विश्लिष्टदेहादिकस्यतैलद्रोण्यांवासः
६५० अथभंगप्रतिषेधाध्यायः २७
भंगस्यद्विप्रकारकत्वादि
दुःसाध्यास्थीनि
६५१ कटिसंधिभिन्नकपालादिवर्जनम्
असंश्लिष्टकपाललाटादिवर्ज्यं
दुर्न्यासादिनाविक्रियागतविवर्जनादि
तथादुःसाध्यानि
६५२ भंगक्रियाप्रकारः
मध्यमप्रकारेणबंधनम्
ऋतुविशेषेमोचनकालः
६५३ भंगसंधितस्यसेचनम्
अवस्थाविशेषेणचक्रतैलाद्यवचारः
सुशीतलसेकादि
भग्ननरस्यगृष्टिक्षीरादिपानम्
सव्रणस्यभग्नस्यव्रणप्रतिसारणम्
व्रणसंधानम्
६५४ तत्रावचूर्णनम्
साध्योसाध्योव्रणः
संधेःस्थैर्यकालः
कट्यादिभग्नानांकपाटेस्थित्यादि
६५५ भग्नसंधीनांविमोक्षेएवंविधिः
चिरविमुक्तसंधीनांस्नेहादि
असंधिभग्नेरूढेचप्रकारः
भग्नस्यपाकोनजायतेतथायतनीयम्
भग्नस्यवातव्याधिकृतस्नेहयोजना
६५६ भग्नस्यमात्रादिभिरुपक्रमः
भग्नस्यरूक्षलवणादिकाहारनिषेधः
गंधतैलंपवनपित्तोत्थदोषजित्
६५७ अथभगंदरप्रतिषेधाध्यायः २८
भगंदरलक्षणम्
६५८ तस्यक्रिया
सअष्टधा
अपक्वशोफस्यपिटिकासंज्ञापक्वशोफस्यभगंदरइति
भगंदरकरपिटिकालक्षणम्
पवनाच्छ्यावादिगुणापिटिका
पित्तादुष्ट्रग्रीवेवोच्छ्रितारागादिगुणान्विताच
६५९ कफात्स्थिरादिगुणा
वातपित्तोत्थाश्यावादिगुणा
श्लेष्मपवनात्पांडुरादिगुणा
सर्वदोषैःपादांगुष्ठतुल्या
ताःप्रमादात्पक्वाव्रणः
वातजपिटिकाशतपोनकसंज्ञोभगंदरः
पित्तजोभगंदरउष्ट्रग्रीवाख्यः
६६० कफोत्थःपरिस्रावी
वातपित्तोत्थःपरिक्षेपी
वातकफाद्ऋजुसंज्ञः

Indira Gandhi National Centre for the Arts

अर्शोभगंदरः
सन्निपातोत्थोशंबुकावर्तसंज्ञः
उन्मार्गी
६६१ तेषुव्रणनिषेधतोरुगादिवेदनम्
तत्रसाध्यासाध्यप्रकारः
यथापिटिकापाकंनयातितथायत्नः
पाकेतुतस्याअवाङ्मुखत्वाद्यवलोकनम्
६६२ अंतर्मुखस्यशस्त्रेणपाटनादि
शतपोनकस्यपाटनप्रकारः
परिक्षेपिणिक्षारसूत्रकैःसाधनम्
अर्शोभगंदरेऽर्शःप्रतिसाधनादि
क्षतजेचिकित्सा
बहुच्छिद्रेभगंदरेगोतीर्थकादिकरणम्
६६३ गोतीर्थकादीनांलक्षणानि
सर्वव्रणानामग्निनादाहः
भगंदरिणःकोष्ठशुद्धौयत्नः
व्रणेलेपः
तत्राभ्यंगार्थंतैलम्
भगंदरादिघ्नंतैलम्
६६४ कृम्यादिव्रण
पिटिकादिजिदौषधम्
स्वायंभुवाख्योगुग्गुलुःकुष्ठादिघ्नः
वातरोगजिदौषधम्
तुल्यमाहिषाख्यमाक्षिकंकुष्ठादिघ्नं
६६५ अन्येषुयथायोगमुपक्रमः
भगंदरेरूढेपिवर्षंवर्षाधिकंवातुरगादिपृष्ठगमनादिकवर्जनम्
अथग्रंथ्यर्बुदश्लीपदापचीनाडीविज्ञानाध्यायः २९
ग्रंथिलक्षणम्
नवग्रंथयः
६६६ वातादायामादिगुणःश्वयथुः
पित्तेनदाहयुतः
कफेननीरुजादिगुणः
दोषैर्दुष्टेलोहितेग्रंथिः
दूषितमांसेनस्निग्धादिगुणयुतोग्रंथिः
मेदोग्रंथिःस्निधादिगुणः
६६७ अस्थिभंगेनाभिघातेनास्थिग्रंथिः
शिरासंज्ञोनीरुजोग्रंथिः
कंडूमान्व्रणग्रंथिः
६६८ ग्रंथयःसाध्यासाध्याः
अर्बुदस्यषट्प्रकारंलक्षणम्
शोणितार्बुदलक्षणम्
तेषुसाध्यासाध्यविचारः
६६९ श्लीपदलक्षणम्
वातात्परिपोटयुतंश्लीपदम्
पित्तात्पीतंदाहज्वरयुतंच
वर्षातिक्रांतादिःश्लीपदस्यत्यागः
पाण्यादिष्वपिश्लीपदमित्यपिमतम्
गंडमालोत्पत्तिः
६७० ज्वरादियुतगंडमालात्यागः
अथनाडीविज्ञानम्
सानाडीत्रिसंख्याचतुर्थीपंचमीच
वातात्सरुजादिगुणा
पित्तात्तृडादिकृत्
६७१ कफाद्घनपिच्छिलसंस्रावादियुता
सर्वैःसर्वाकृतेस्त्यागः
नाडीकारकंशल्यम्
अथग्रंथ्यर्बुदश्लीपदापचीनाडीप्रतिषेधाध्यायः ३०
अपक्वग्रंथिषुशोफवच्चिकित्सितम्
६७२ शुद्धिकामस्यस्नेहादि
ग्रंथेःस्वेदादि
एवमप्यपक्वस्यछेदादि
ग्रंथेःपाटनम्
मेदोजेपिग्रंथावेतत्
६७३ शिराग्रंथौचिकित्सितम्
अर्बुदेयथास्वंग्रंथिवत्क्रिया
पैत्तेपित्तजिच्चिकित्सितम्
कफजेशिराव्यधादि
६७४ अपच्यांचिकित्सितम्

Indira Gandhi National Centre for the Arts

आमग्रंथीनांलेपनादि
लेपप्रकारः
पाकोन्मुखग्रंथीनांजयप्रकारः
६७५ गंडमालाचिकित्सितम्
अपचीनाशकंतैलम्
सर्षपतैलंपक्वंकुष्ठादिनाशकम्
तैलविशेषोपचीनाशकः
६७६ दुष्टारुःप्रभृतिनाशकंनस्यादि
नस्यादौहितंतैलम्
लेपनेहिततैलप्रकारः
एवमप्यशांतौदाहप्रकारः
ग्रंथिहरणेनिमिमुनिमतम्
एतद्विषयेसुश्रुतमतम्
६७७ अपरमतम्
वातनाडीपाटनादि
पित्तनाडीपाटनादि
श्लैष्मिकीचिकित्सितम्
शल्यजालेपनम्
छेदनार्हायादारणम्
६७८ व्रणेषुयत्साधनादितत्सर्वंनाडीष्वपि
नाडीव्रणत्तुलेपः
नाडीघ्नःकल्कः
कल्काभ्यंगचूर्णवर्तीभिर्गतिनाशः
६७९ अथक्षुद्ररोगविज्ञानाध्यायः ३१
बालानामजगल्लिकापिटिका
वातकफाभ्यांयवप्रख्या
ग्रथयःपंचवाषड्वा
कर्णसंबंधिपनसिकाख्या
पाषाणगर्दभःशोफः
मुखदूषिकाःपिटिकाः
६८० पद्मकंटकाः
पित्तेनपिटिकाविवृताख्या
मसूरिकाःपिटिकाः
विस्फोटसंज्ञाःस्फोटाः
वातपित्ताभ्यांविद्धापिटिका
ताभ्यामेवचगर्दभीसंज्ञा
६८१ कक्षासन्नदेशेष्वनिलाद्गर्दभीसंज्ञा
कक्षा
पित्तात्कक्षासंज्ञा
गंधनामापिटिका
राजिकासंज्ञाः
जालगर्दभः
अग्निरोहिणी
जत्रुणऊर्ध्वंत्रिदोषजाइरिवेल्लिका
६८२ विदारीसंज्ञापिटिका
शर्करार्बुदसंज्ञकोग्रंथिः
वल्मीकाख्यस्त्रिदोषजः
कदरंनामग्रंथिः
६८३ रुद्धगुदोरोगः
अक्षतरोगः
कुनकाख्यः
अलसंनामरोगः
तिलकाख्याः
तेउन्नतामाषाख्याः
माषेभ्यउन्नताःचर्मकीलाः
तथाविधोजतुमणिः
६८४ लांछनम्
मुखेश्यामवर्णमंडलाकारंव्यंगम्
वक्त्रादन्यत्रनीलिका
व्यंगंवातादिभिर्भिन्नलक्षणम्
प्रसुप्तिः
उत्कोठकोठौ
६८५ क्षुद्ररोगाःषट्त्रिंशत्
अथक्षुद्ररोगप्रतिषेधाध्यायः ३२
अजगल्लिकायाजलौकोभिर्विस्राव
यवप्रख्यायाःस्वेदनादि
पाषाणगर्दभंयावदेषविधिः
मुखदूषिकेरोध्रादिप्रलेपादि
६८६ पद्मकंटकेनिंबांबुनावमनादि
विवृतादीनांपित्तवीसर्पवच्चिकित्सा
जालकगर्दभस्यलंघनादि
विदारिकायारक्तेस्रुतेकफग्रंथिव-
चिकित्सा
शर्करार्बुदेमेदोर्बुदक्रिया

Indira Gandhi National Centre for the Arts

हस्तपादेचजातेवल्मीकवर्जनं
इतरस्यलेपः
६८७ पक्केतुदुष्टमांसादिशोधनं
कदरस्योत्कर्तनादि
चिप्पस्यविरेकादिपूर्वकंशस्त्रकर्म
दुष्टस्यापिनखस्यैवमेव
अलसेतुचरणयोर्लेपः
तिलकालकमषाणांदहनम्
चर्मकीलजतूमण्योरुत्कृत्यदहनम्
६८८ लांछनादिषुशिराव्यधादि
व्यंगादिषुलेपादि
व्यंगहरोलेपः
जीरकादयोलेपेप्रयुक्ताव्यंगघ्नाः
तत्रलेपाः
६८९ सवर्णकरोलेपः
पद्मसदृशमुखकरमुद्वर्तनम्
एभिरेवाभ्यंगः
नीलिकादिघ्नोभ्यंगः
नीलिकादिघ्नंनस्यं
६९० व्यंगादिनाशकरमौषधम्
नावनेमार्कवस्वरसादीनि
प्रमुनौवातकुष्ठविहितादि
उत्कोठकोठयोःकफपित्तोक्तंकौष्ठिकम्
६९१ अथगुह्यरोगविज्ञानाध्यायः ३३
उपदंशाद्यामयाख्ययोर्विंशतिः
६९२ उपदंशःपंचधा
वातेनोपदंशेमेढ्रशोफः
पित्तेनपक्कोदुंबरसंकाशःश्वयथुर्ज्व-
रश्च
श्लेष्मणाश्वयथुःकठिनादिगुणः
लोहितेनकृष्णस्फोटसंभवादयः
सर्वदोषजेसर्वलिंगंमुष्कयोःश्वयथुश्च
रक्तोद्भवसन्निपातजौक्रमेणयाप्यमृ-
त्युहेतू
मांसकीलकानामनुपेक्षणीयत्वम्
६९३ गुह्यस्यसर्षपिकासंज्ञाःपिटिकाः
अवमंथः

रक्तपित्तोद्भवाकुंभिका
मेहवदत्रालजी
पित्तरक्तजाउत्तमाख्यामेढ्रपिटिका
६९४ पुष्करिकापिटिका
संव्यूढपिटिका
अष्ठीलिका
सकफंचर्मनिवृत्तसंज्ञम्
अवपाटिकाचर्म
निरुद्धमणिसंज्ञोरोगः
६९५ स्पर्शहानिसंज्ञा
शतपोनकः
त्वक्पाकाख्यः
मांसपाकाख्यः
रक्तार्बुद
मांसार्बुदंविद्रधिश्च
तिलकालकाः
६९६ मांसादिचतुर्णांत्यागःशेषाणामुपक्रमः
दुष्टाहाराद्योनेर्विंशतिर्व्यापदः
योनेर्वातिकीव्यापत्
सैवश्वयथुयुताऽतिचरणा
प्राक्चारणा
६९७ उदावृत्ताख्यापत्
जातघ्नीव्यापत्
अंतर्मुखी
सूचीमुखी
शुष्कसंज्ञा
वामिनी
६९८ षंढसंज्ञा
महायोनिः
पैत्तिकीव्यापत्
रक्तयोन्याख्या
श्लैष्मिकीव्यापत्
६९९ लोहिताक्षयाख्या
परिप्लुताख्या
उपप्लुताव्यापत्
विप्लुताख्या

Indira Gandhi National Centre for the Arts

कार्णिनी
७०० सान्निपातिकीव्यापत्
गर्भाऽनादानेकारणम्
अथगुह्यरोगप्रतिषेधाध्यायः ३४
नवेउपदंशेलिंगमध्येशिराव्यधादि
७०१ क्षालनेक्वाथः
उपदंशव्रणहरोलेपः
तत्ररोपणम्
प्रतिदोषंशोफवच्चिकित्सितम्
पाकाभावेत्वितियत्नः
छिन्नदग्धानामर्शसामुपदंशवत्क्रिया
७०२ सर्षपिकानांलेखनादि
अवमंथेप्येतच्चिकित्सितादि
कुंभीकायांलोहितमोक्षणादि
अलज्यामेषएवोपक्रमः
उत्तमाख्यपिटिकायाश्छेदनादि
मुष्करव्यूढयोःपित्तविसर्पोक्तंचि-
कित्सितम्
त्वक्पाकस्पर्शहान्योःसेचनं
मृदितस्यबलातैलेनसेचनादि
७०३ अष्ठीलिकायारक्तेद्भूतेश्लेष्मग्रंथिव-
दुपक्रमः
निवृत्तसंज्ञस्याभ्यंजनादि
अवपाट्यामयमेवक्रमः
निरुद्धाख्येनाडीलेपनादि
७०४ ग्रथितसंज्ञस्यस्वेदादि
शतपोनकस्यलेखनादि
शोणितार्बुदेरक्तविद्रधिवच्चिकित्सा
सर्वेषुयथावस्थंव्रणोपचारः
योनिव्यापत्सुप्रायेणपवनविजयि-
चिकित्सितम
तत्रहेतुः
तस्याःस्त्रियोबलातैलपानादि
७०५ वमनादीनिकर्माणि
पक्वघृतंयोनिवातविकारहरम्
योनिपार्श्वार्तिशमकमौषधं
वृषकादिपानम्
७०६ रास्नादिभिःशृतंपयःशूलघ्नम्
योनौपरिषेचनम्
रुजाघ्नःपिचुः
पित्तलानांयोनीनांशीतलक्रियादि
लेह्योयोन्यादिदोषघ्नः
७०७ पित्तजानांरोगाणांक्षीरंसर्पिर्वाहितम्
सिद्धंघृतंवातरोगघ्नंगर्भधारकंच
रक्तयोन्यांरक्तस्थापकंभेषजं
पुष्यानुगसंज्ञंचूर्णयोनिदोषघ्नम्
७०८ बलासदुष्टयोन्यांरूक्षोष्णंसर्वहितम्
योन्याःशूलादिगुणकरंतैलं
यवान्नादिकशीलनादि
७०९ पैच्छील्येविशदत्वकृच्चूर्णः
चूर्णोदुर्गंधादिषुस्तंभनम्
क्वाथोदुर्गंधादौपरिषेकः
योनीनांमृदुत्वकरंवेसवारादिधारणं
दुर्गंधयोनीनांक्वाथादि
श्लेष्मलानांयोनीनांवस्तयः
सन्निपातोत्थायाःसाधारणंकर्म
७१० एवंशुद्धयोनिषुगर्भधारणम्
पुरुषस्यदुष्टशुक्रंपरीक्ष्योपक्रमः
घृतंयोनिशुक्रप्रदोषेषुशस्तम्
७११ अथविषप्रतिषेधाध्यायः ३५
विषस्यप्रागुत्पत्तिदर्शनम्
स्थिरंविषंकंदेषुवीर्यातिकृत्फलेतु-
किंचिन्न्यूनम्
सर्पलूतादिदंसुदारुणंजंगमम्
७१२ स्थावरंजंगमंचाकृत्रिमं। गरसंज्ञंकृ-
त्रिमम्
विषगुणनिर्देशः
जीवितहरंविषम्
७१३ तत्रहेतुः
उपयुक्तस्थावरविषस्यप्रथमवेगेर-
सनाश्यावत्वादि
द्वितीयेवेगेवेपथ्वादयः
तृतीयेवेगेतालुशोषादयः
७१४ चतुर्थेवेगेमूर्भ्रांतिगुरुत्वादि

Indira Gandhi National
Centre for the Arts

पंचमवेगेकफप्रसेकादि
षष्ठवेगेचेतनायाःप्रणाशादि
सप्तमवेगेस्कंधादिभंगोमृत्युश्च
प्रथमविषवेगेवमनादिक्रिया
द्वितीयवेगेशीतांबुसेचनादि
तृतीयवेगेऽगदपानादि
चतुर्थवेगेस्नेहयुक्तागदयोजनम्
७१५ पंचमवेगेक्काथादि
षष्ठवेगेतीसारवच्चिकित्सा
सप्तमवेगेऽवपीडादि
सिद्धयवागूःसर्वविषघ्नी
तद्वत्काथैःपेया
विषादिषुपानादिषुचंद्रोदयोनामा-
ऽगदः
७१६ दूषीविषेणपीडितलक्षणम्
७१७ रसादिषुस्थितंविकारकरम्
दूषीविषमितिसंज्ञायाहेत्वंतरम्
दूषीविषार्तस्यलेहः
दूषीविषारिसंज्ञकोलेहः
७१८ विषलिप्तशस्त्रेणविद्धस्यलक्षणम्
अमर्मविद्धस्यद्रुतंतद्हृदयावरणविधा-
नम्
शल्याकर्षणादि
७१९ दिग्धफलविद्धस्यकीटदष्टचिकित्सि-
तम्
व्रणेचपूतिमांसेपित्तविसर्पवच्चिकि-
त्सितम्
विषदायकाः
गरस्यलक्षणम्
गरेणपीडितस्यलक्षणम्
७२० गरपीडितस्यचिकित्सिताभावेनाशः
गरातुरस्यकृत्यम्
दारुणगरयोगजविषघ्नोलेहः
गरोपहताभेःपानम्
७२१ पारावतामिषादिभिःशृतंशीतंजलं-
गरतृष्णादिघ्नम्
शतमध्येविषार्तस्यैकस्यजीवनम्
क्षुधादिभिर्विषस्यवर्धनम्
शरदिविषस्यमंदवीर्यत्वेहेतुः
एवमालोच्यकर्मकरणम्
७२२ श्लैष्मिकविषस्यवमनादिभिःशांतिः
पैत्तिकविषस्यविरेचनादिभिः
वातिकस्यमधुराद्याहारादिभिः
सर्पविषेषुसाध्यत्वासाध्यत्वे
७२३ अथसर्पविषप्रतिषेधाध्यायः३६
संक्षेपेणभुजंगास्त्रिविधाः
दर्वीकरादीनांविषंरूक्षादिगुणम्
एषांविषोल्बणत्वप्रकारः
दर्वीकरलक्षणम्
७२४ मंडलिलक्षणम्
राजीमल्लक्षणम्
गौधेरोविषेणदर्वीकरैस्तुल्यः
एतेषामेवसंकरेणव्यंतराज्ञेयाः
भुजंगदशनेकारणादि
७२५ हेतुंविदित्वायथास्वंचिकित्सा
व्यंतरभुजंगस्यवर्त्माश्रितत्वं
दष्टस्यसाध्यत्वादिविचारः
सर्पजविषस्यरक्तप्राप्त्यैववर्धनम्
भीरोःसर्पांगाभिहतम्
७२६ शंकाविषम्
सविषनिर्विषरूपम्
दर्वीकराणांप्रथमविषवेगेश्यावबर्ण-
त्वादि
द्वितीयादौग्रंथ्यादयः
७२७ मंडलिदष्टस्यप्रथमवेगादिलक्षणम्
पंचसुवेगेषुचिकित्सितम्
जलाप्लुतादयःसर्पाअल्पविषाः
७२८ स्मशानादिषुमर्मसुचदष्टस्यत्यागः
एककालमेवहिध्मादयोयस्यतस्य-
जीवनंन
विषपीतादिर्जीवितक्षयेसंप्राप्तेरूपाणि
७२९ यमसमीपंगमिष्यतोलक्षणम्
साध्यत्वेत्वरयाविषस्यशांतिःकार्या
दशनोत्तरंविषस्यदेहव्यापनकालः

Indira Gandhi National
Centre for the Arts

एतदवसरेदंशस्योत्कीर्तनादिशीघ्रं-
कार्यं
७३० दष्टपुरुषस्यकर्तव्यं
बंधनेनविषस्तंभनादि
पश्चान्निष्पीड्यदंशोद्धरणम्
दंशदहनादि
७३१ अगदेनपुनःपुनर्लेपनादि
विषेप्रविसृतेशिराव्यधादि
सविषशोणितलक्षणम्
शिरास्वदृश्यमानासुशृंगादियोजना
स्रुतशेषलोहितस्यस्तंभनम्
७३२ अस्कन्नादौरक्तेमूर्छादीनांजयः
स्कन्नेतुविषशांतिः
तदाघृतादिपानम्
विषार्तस्यवमनम्
भुजंगदोषादिकावलोकनपूर्वंविशि-
ष्टक्रिया
दर्वीकरैर्दष्टेपानादि
७३३ कृष्णसर्पेणदष्टस्यलेपनादि
फणिनांराजीमतांचविषेऽगदः
मंडलिनांविषेऽगदः
हिमवन्नामागदोमंडलिविषघ्नः
७३४ मंडलिदष्टस्यपानम्
गोनसविषघ्नोऽगदः
कुटादयोराजीमतांविषघ्नाः
सर्पविशेषस्यकांडचित्रायादंशचिकि-
त्सितम्
व्यंतरदष्टानांहितोगदः
७३५ भुजंगदष्टानांपानादि
तक्षकेणापिदष्टानांपानम्
दर्वीकृतांचप्रथमवेगेपानम्
द्वितीयेवमनादि
तृतीयेविषघ्नमंजनादि
चतुर्थवेगेकृतवमनस्ययवागूपानम्
७३६ षष्ठपंचमयोर्लेपनादि
सप्तमेअंजनादि
मंडलिनांतृतीयेवमनादि
षष्ठेऽगदादियोजना
राजीमतामाद्यवेगेरक्तहरणादि
षष्ठेंजनयोजनादि
अनुक्तेषुदर्वीकरक्रिया
७३७ गर्भिण्यादिषुमृदुक्रिया
सर्वविषघ्नंपानम्
आर्तादीनामंजनम्
प्रलेपाद्यानिःशेषविषोद्धारकाः
विषापगमेकुपितवाय्वादीनांस्नेहाद्यु-
पक्रमः
७३८ सर्पांगाभिहतशंकाविषार्दितयोःपा-
नादि
विषशांत्यर्थंकर्केतनादिधारणम्
रात्रौसंचारेछत्रजर्जरधारणम्
७३९ अथकीटलतादिविषप्रतिषेधाध्यायः
३७
सर्पाणांविण्मूत्रादिजाःकीटाश्चतुः-
प्रकाराः
तत्रवायव्यकीटदष्टस्यदंशलक्षणम्
आग्नेयकीटदष्टस्यदंशलक्षणम्
कफाधिककीटदष्टस्यदंशलक्षणम्
त्रिदोषाधिककीटस्यदंशलक्षणम्
कीटेषुसर्पवद्वेगाः
७४० सर्वेषांदंशानांकर्णिकाद्याः
वृश्चिकदंशलक्षणम्
वृश्चिकास्त्रिप्रकाराः
मंदविषाःकीटाःपीतादिगुणाः
मध्यविषाःकपिलादिगुणाः
महाविषादर्भदूर्वासदृशाः
महाविषदष्टलक्षणम्
७४१ उग्रधूमकोवृश्चिकः
कीटावृश्चिकाश्चप्रायोवातपित्ता-
धिकाः
तेषुभेषजप्रकारः
वातिकेविषेहृत्पीडादयः
७४२ पित्तोल्बणेसंज्ञानाशादयः
कफाधिकविषस्यछर्द्यादिभिर्ज्ञानम्

Indira Gandhi National Centre for the Arts

श्लैष्मिकस्यलेपनाद्यैर्जयः
त्रिविधानांकीटानांयथास्वंचिकित्सा
सर्वस्यविषदंशस्यनरकचाद्योधूपनम्
७४३ तथाविषघ्नविध्यादि
विषोग्रकीटवृश्चिकदष्टानांसर्पवत्साधनम्
कीटविषेपानम्
कीटविषघ्नोलेपः
सर्वकीटविषघ्नमगदपानम्
वृश्चिकोत्थदंशस्यचक्रतैलेनसेचनम्
सैंधवान्विताज्यादिनावासेचनम्
७४४ तत्रोपनाहः
चूर्णैर्दंशस्यघर्षणम्
तत्रलेपादि
वृश्चिकविषघ्नमौषधम्
वृश्चिकविषघ्नगुटिका
७४५ दंशलेपः
दारुणपीडस्यप्रलेपनम्
सुदारुणेवृश्चिकविषेसर्पिष्पानादि
वृश्चिकविषघ्नोलेपः
७४६ कीटादिविषघ्नोऽगदः
विषसंक्रांतिरुदगदः
लूतानांसंख्याविषयेमतानि
तत्रहेतुः
लूतानांकृच्छ्रसाध्यासाध्यत्वे
७४७ तस्याःपैत्तिकदंशलक्षणम्
श्लैष्मिकदंशलक्षणम्
वातिकदंशलक्षणम्
दोषलक्षणैर्विभागलक्षणम्
असाध्यायालक्षणम्
७४८ तस्यास्त्रिप्रकारत्वम्
लूतादंशलक्षणम्
लूतायाःश्वासादिभिर्विषोद्गमनम्
लूतायाःकीटानांचदंशस्थानम्
प्रथमेऽन्हिलूतादंशानुभवप्रकारः
७४९ द्वितीयेऽन्हिप्रकारः
तृतीयेऽन्हिप्रकारः
चतुर्थपंचमषष्ठेषुप्रकारः
एवंतीक्ष्णादिलक्षणम्
एकविंशतिरात्रेणसर्वथाविषशमः
७५० लूतायादंशोद्धरणादि
कर्कशादिगुणस्यछेदनादिनिषेधः
दुग्धदंशस्यलेपनादि
रक्तविस्रावादि
लूताकीटानांपद्मकसंज्ञोऽगदः
चंपकनामागदःपूर्वाधिकः
७५१ तद्वदपरोऽगदःपूर्वगुणः
मंदरगंधमादनाख्यावगदौ
बहुदोषनरेषुविषघ्नविशोधनयोजना
कर्कविषवमनम्
अथवापानादि
निवृत्तेदाहादौकर्णिकापातनम्
७५२ सैंधवादिकंपूर्वगुणम्
कर्णिकापातनसमयेविषघ्नैर्बृंहणम्
लूतायांघृतेनैवस्नेहकार्यं
त्रयोऽगदाःपित्तादिलूतावारकाः
७५३ लूताघ्नानिपानादीनि
अथमूषिकालर्कविषप्रतिषेधाध्यायः ३८
अष्टादशमूषिकाः
एषांविषप्राप्तिप्रकारः
७५४ आखुविषंसर्वदेहव्यापनशीलम्
असाध्यलक्षणंमूर्छादयः
आखुदूषितस्यवर्ज्यस्यलक्षणम्
विषयुक्तस्यशुनोलक्षणम्
तेनविदष्टस्यकृष्णरक्तस्रावः
७५५ एवंशृगालादयोविषाः
सर्वत्रैवसविषदंशेकंड्वादयोलिंगम्
निर्विषेऽतोविपरीतम्
दंशकर्तृचेष्टांकुर्वतोमरणम्
त्राससंज्ञदष्टस्यवर्जनम्
आखुनादष्टमात्रस्यदंशदाहः
दग्धदंशस्यविस्रावः

Indira Gandhi National Centre for the Arts

७५६ मूषिकाविषघ्नोलेपः
अम्लैःक्षालनादि
नीलिनीक्वाथेनछर्दनादि
चूर्णपानंविषवमनकरम्
सर्वोंदुरुविषघ्नंचूर्णं
त्रिवृतादिकल्कोविरेचनम्
तत्रांजनम्
७५७ अवलेहः
पानेपक्वंसर्पिर्हितम्
क्काथपानादि
चूर्णपानम्
सर्वाखुविषनाशनःकल्कः
कपित्थबीजादिकपानम्
सैर्यकमूलादिपानंवा
७५८ मूषिकविषनाशनंपानम्
अगदोनस्याद्यैर्मूषिकाविषघ्नः
मूषिकविषस्यजलदौन्नत्यादौकोपः
अवस्थावशात्सर्वेउपक्रमाः
दूषीविषघ्नाअपिप्रयोज्याः
अलर्कदष्टस्यदंशस्यलेपनादि
अस्यविरेचनम्
अंकोलोत्तरमूलजलपानम्
७५९ विषमालर्कभेदकंपानम्
मंत्रान्वितौषधीयुतस्नपनादि
चतुष्पदांद्विपदांचनखदंतपरिक्षत-
पाकः
खदिरादिभिर्लेपोनखदंतविषघ्नः
७६० अथरसायनाध्यायः ३९
रसायनाद्दीर्घायुःप्रभृतिप्राप्तिः
आद्येमध्यमेवावयसिरसायनप्रयोगः
अविशुद्धशरीरेरसायनंनिष्फलम्
रसायनानांद्विप्रकारःप्रयोगः
रसायनकरणेस्थानम्
७६१ रसायनारंभकर्तुर्लक्षणम्
७६२ रसायनेपूर्वंकरणीयम्
शुद्धदेहायसर्पिर्युतंयावकंदेयम्
एवंसंस्कृतकोष्ठस्यभिषजारसायनं-
देयम्
रसायनंतंद्रादिनाशकरममितायुष्क-
रंमेधादिकरंच
७६४ रसायनेउपयुक्तेसंवत्सरशतंनीरोगो-
जरारहितश्च
एतस्मिन्नुपयुक्तेसुरूपादिरूपोदीर्घ-
जीवीच
७६५ च्यवनप्राशोलेहः
७६६ सर्वरोगघ्नीत्रिफलारसायनम्
७६७ रसायनानिमेधादिप्रदानिरोगघ्ना-
निच
रसायनप्राशकस्यवाग्मित्वादिगुणः
नष्टशुक्रादिभिर्निषेवितव्यंसर्पिःपं-
चारविंदमितिसंज्ञम्
७६८ जडानामपिमेध्यंघृतम्
जरादिरहितकरंभेषजम्
७६९ वर्षशतजीवित्वादिकरोलेहः
शक्त्यादिगुणकरंपानम्
जराजित्पानम्
पूर्वगुणंपक्वघृतपानम्
७७० विदार्यादयोवयःस्थैर्यादिप्रदाः
विधिनाप्रयुक्तश्चित्रकोरसायनम्
सुखकरोलेहादिः
लीढश्चित्रकोवातादिजित्
भल्लातकप्रयोगोऽभिलषितादिकरः
७७१ पूर्वोक्तगुणकरःस्वरसः
७७२ अमृतरसतुल्यपाकःस्मृत्यादिकरः
७७३ पक्वंतैलंकुष्ठनिषूदनम्
आयुःप्रदोभल्लातकोपयोगः
भल्लातकानियथाविधिप्रयुक्तान्यमृ-
तकल्पानि
भल्लातकप्रशंसा
भल्लातकस्यकुलत्थादीनिवर्ज्यानि
७७४ सर्वकुष्ठनाशकंतैलपानम्
७७५ कुष्ठवज्रःप्रयोगः
द्विशतायुष्करंतैलपानम्

Indira Gandhi National Centre for the Arts

तदेवनस्ययोजितंत्रिवर्षशतायुष्क-
रम्
रसायनगुणकःपिप्पलीप्रयोगः
अन्यप्रकारोपिरसायनगुणकः
७७६ अन्यविधः
एतेप्रयोगाःकासादिनाशकाः
पूर्वगुणंरसायनम्
७७७ शुंठ्यादिप्रयोगोवर्षशतंरोगजरारहि-
तकरः
रसायनादीनांद्विगुणप्रकर्षकरत्वम्
बाकूचीलेहःपरिणतविकारादिजित्
कुष्ठिनश्चंद्रकांतिकरंशशांकलेखाभ-
क्षणम्
७७८ कुष्ठवतांलेहादि
अथलशुनविधिः
रसोनःश्रेष्ठंरसायनम्
लशुनशीलनकालः
७७९ लशुनगंडूषमात्रपानंगलनाडीविशु-
द्धये
वेदनायांस्वेदनादि
क्लांतिरपगमेशेषरसपानम्
७८० विदाहोपशांतयेऽतिशीतानुलेपनादि
अस्योत्तममात्रादिपरिमाणम्
पुराणशालिभक्तभोजनम्
तृषिजातायांमद्यादिपानम्
अथवालशुनस्यकल्कादिभक्षणादि
अन्योलशुनभक्षणप्रकारः
७८१ शुद्धवातेलशुनात्परंद्रव्यंन
प्रियजलादेर्नरस्यलशुनोव्यापत्तये
लशुनप्रयोगातिविरेचनम्
अधुनाशिलाजतुकल्पः
शिलाजतुलक्षणम्
लौहंशिलाजंप्रशस्तम्
७८२ श्रेष्ठशिलाजतुलक्षणम्
लोहपात्रेगिरिजस्यभावनाप्रकारः
ततःस्त्रग्धनरस्यदिवसत्रयमुपयो-
ज्यम्
७८३ तस्योत्तमादिभेदेनत्रिविधःप्रयोगः
रसायनफलःशिलाजतुप्रयोगः
७८४ सर्वरोगनाशनेशिलाजतुसामर्थ्यं
७८८ कुटीप्रवेशसूर्यमारुतिकौविधी
वातातपसहयोगकथनम्
भोजनात्प्राक्शिशिरजलादिकपान-
प्रकारः
७८९ हरीतकीभक्षणवर्षशतंसुखजीवन-
करम्
जराविकारनाशकरोलेहादिः
धात्र्यादिकंसेवमानस्यपुनर्यौवनकरं
बलकरोलोहचूर्णादिकलेहः
७९० विडंगादीनिनिरामयकराणि
भावितत्रिफलाभक्षणंनिरामयकरम्
बीजसाररसोजराऽभावकरः
प्रत्यग्रपुनर्नवपानंजरापहम्
मूर्वादीनांकल्पनापुनर्नवासदृशी
७९१ सिद्धंसार्पिर्विकारनाशकम्
अश्वगंधापानंकृशवपुषःपुष्टिकरम्
कृष्णतिलपलभक्षणमनुदिनंपुष्टिक-
रम्
कृष्णकचकरोलेहः
कृष्णतिलादिभक्षणंरमणीयवयःप-
रिणामकरम्
७९२ शिलाजत्वादिभक्षोदुर्बलशरीरधातु-
पूरकः
मार्कवस्वरसपानंबलवीर्यादिगुणक-
रम्
वचासेवनंराक्षसानुपद्रुतत्वादिकरम्
मंडूकपर्णीभक्षणंबहुकालंजीवनक-
रम्
गुटिकोपयोगोनीरोगत्वादिकरः
७९३ नारसिंहाख्योयोगोऽतीवगुणकरः
७९४ मार्कवपल्लवभक्षणादिनानीरोगत्वा-
दि
अनेनविधानेनतैलोपयोगेपूर्वोक्तगु-
णादिः

Indira Gandhi National
Centre for the Arts

७९५ रसायनभ्रंशादपाये औषधम्
पुरुषविशेषेरसायनरूपः
रसायनसेविनोदीर्घायुष्ट्वादि
शास्त्रानुसारित्वादिरसायनम्
७९६ अथवाजीकरणाध्यायः ४०
वाजीकणौषधग्रहणेफलम्
७९७ वाजीकरणशब्दावयवार्थः
ब्रह्मचर्यंनैःश्रेयसिकम्
वाजीकरणमाभ्युदयिकम्
कल्पपुरुषस्यऋतुष्वर्हरर्हव्यवायः
७९८ स्निग्धस्यसानुवासननिरूहादि
निरपत्यनिंदा
अपत्यलाभमहत्वम्
शुद्धशरीरेपुरुषेवृष्ययोगयोजना
७९९ वृष्ययोगकथनम्
८०० कांताशतस्यचूर्णभक्षणम्
साधितगोधूमादिभक्षणंसर्वरात्रौर्-
तिकारकम्
कांताशतगामिकर्तृऔषधम्
प्रमदाशतेच्छाकर्तृचूर्णं
८०१ कृष्णामलकचूर्णलेहोवृद्धस्यापितरु-
णइवहर्षकरः
अप्रनष्टवेगकरोलेहः
कल्कपानादीरामासुवृषवत्करः
क्षीरकाकोलीभक्षणंशुक्रवृद्धिकरम्
चूर्णपानंशुक्रंवृद्धिकरम्
उच्चटायाःशतावर्याश्चचूर्णपूर्वगुणम्
८०२ दधिसरादिवृद्धस्यापितरुणकरम्
श्वदंष्ट्रादिपानंवृद्धस्यापिरामाशतगं-
तृत्वकरम्
वृष्यलक्षणम्
शब्दस्पर्शादयःसेव्याः
एकैकस्यापिसेव्यत्वंकिंपुनःस्त्रीशरी-
रेप्रतिष्ठितानां
८०३ योग्यस्त्रीलक्षणम्
कामशास्त्रविहितरतिचर्याचरणम्
वाजीकरणानि
८०४ कामोत्पादकानि
अध्यसंग्रहः
८०६ अग्निवेशप्रश्नः
८०७ प्रश्नस्योत्तरम्
आतंकपंकमग्नानांभिषग्जितंहस्ता-
लंबः
उपायसाध्यानांसिद्धत्वम्
८०८ दैववैगुण्यात्क्वचित्सिद्धत्वंन
एतस्यैवप्रतिपादनं
८०९ चिकित्सातंत्रस्यसफलत्वेहेतुः
ज्वरेलंघनबृंहणंशास्त्रसिद्धम्
चिकित्सितेसंशयोनैवकर्तव्यः
एतच्छास्त्रमकांडेमृत्युपाशानांछे-
दनम्
८१० चिकित्साशास्त्रंमृत्युजयेऽमृतम्
भिषक्पाशानांत्यागः
सुवैद्यानांभद्रं
मंत्रवदेतस्यप्रयोगः
८२५ पाठबोधानुष्ठानैर्दीर्घजीवितादिप्राप्तिः
८२६ चरकाद्यैकैकाकरग्रंथाभ्यासेसम्यग्ज्ञा-
नंन
८२७ आधुनिककविकृतग्रंथाभ्यासेयु-
क्तिःतस्मात्सुमतिभिरेतद्ग्राह्यम्

शुद्धिपत्रम्

उत्तरार्धम्

पत्रे	पंक्तौ	शुद्धम्	अशुद्धम्
४	६	पित्तानिल	पीतानिल
	१५	जीविता	जीषिता
५	२५	तीव्र	तिव्र
६	२४	द्रव्योपयोगः	द्रव्योपायोगः
७	३	लिंगे	लिंगै
८	२२	दीपिकाः	दीपकाः
९	२	अन्हादेशेन	अन्हादेशः
	१९	अम्लार्थी	आम्लार्थी
	२१	सभावोवैकल्पिकः	सभावः
१०	३	पृश्निपर्णी	पृष्टीपर्णी
	५	पृश्निपर्ण्यादि	पृष्टीपर्ण्यादि
	५	ज्वरातिसारीअम्लां	ज्वरातिसारानम्लां
	१८	शृतां	सृतां
१४	१०	जलं	जल
१६	६	शृतादि	सृतादि
	११	स्यपरनिपातः	स्यापरनिपातः
	१८	परीतस्य	परितस्य
	१९	नोत्क्लेशा	नोक्लेशा
	२४	शृतादि	सृतादि
१७	६	तीतज्वरितस्य	ततिज्वरितस्य
२०	२१	त्यूह्योर्वेतिवाच्य	त्युहेवाच्य
२३	१९	दिभीरसा	दिभिरसा
२६	१८	गृहस्य	ग्रहस्य
२७	११	त्रिवृतया	त्तवृतया
	१३	त्रिवृतया	तृवृतया
३०	७	च्यवमानं	चव्यमानं
३३	१	स्राव	श्राव

Indira Gandhi National Centre for the Arts

पत्रे	पंक्तौ	शुद्धम्	अशुद्धम्
३७	५	शुक्त	सूक्त
३८	२	तेनाभ्यंजात्	तेनभ्यंजात्
	२३	अग्निरुताननग्नि	अग्निरुतन्नग्नि
४३	२	मध्योष्ण	मेध्योष्ण
४४	१०	त्यूह्योर्वैतिवाचस्मितितङभावः	त्यूह्योर्वचनमितितङाभवः
	१९	सर्प	सर्पे
४६	१२	सात्म्य	सात्म
४७	९	ज्वरं	ज्वर
४८	१५	इणःशतरिइणोयणितियादेशे	इणःशंतुडिइणश्चेतियादेशे
५४	१०	पारावतस्यशकृत्	पारावच्छकृत्
	१९	शोणितातित	शोणितादि
५५	१२	पृथक्शृतं	पृथच्छृतं
	१७	पृथक्शृतं	पृथच्छृतं
	२१	पृश्निपर्णी	पृष्टिपर्णी
५७	१	रससदृशी	रससदृशि
	१४	प्लुतान्	प्लुतान्
	१५	स्तोयं	स्तोय
५८	११	त्वौर्ध्व	तूर्ध्व
५९	१	अध्यात्मादित्वाट्ठञ्	आध्यात्मादित्वादिकण्
६२	४	कौक्कुट	कौकुट
	१२	पदंयच्छ्रूयते	परंयत्श्रूयते
६३	२	त्रिवृतां	तृवृतां
	२०	शाकैश्च	शोकैश्च
६५	१	काष्ठात्	काष्टात्
	६	कास	काश
	७	बैलरसैः	बैल्वरसैः
	८	काष्ठात्	काष्टात्
	१३	बैलाः	बैला
६७	१	त्रिवृद्धिशाला	त्रिवृद्धिशाला
	२३	सयलाश्च	सचलाश्च
६८	४	वृश्चीष	गृश्ची
	१२	दर्वी	दर्वी
६९	९	टुयुः	तनई
	२३	माक्षिक	माक्षीक
७०	४	समुस्ता	सुमुस्ता

Indira Gandhi National Centre for the Arts

पत्रे	पंक्तौ	शुद्धम्	अशुद्धम्
७३	१६	क्षीण	क्षीणो
७६	२०	मासं	मांसं
	२४	मासं	मांसं
७७	१९	द्रवेतु	द्रव्येतु
	२०	शठीं	षठीं
७९	१	गुडात्तुलां	गुडातुलां
	१२	गुडात्तुलां	गुडातुलां
८०	२०	षोडशिकां	षोडशीकां
८१	१८	त्रिवृतया	तृवृतया
	२१	त्रिवृतया	तृवृतया
८२	५	वैवर्ण्ये	वैवर्ण्यैः
	१४	कासमर्दादिभिः	काशमर्दादिभिः
८८	४	तमकः	तमक
	१८	वहृत्	वहु
८९	१५	र्धर्चादि	द्र्चादि
९३	३	मध्वेकैकशो	मध्वैकैकशो
९४	५	तुल्यां	तुल्यं
	१७	कार्ये	कार्य
	२०	च्छ्याकुष्ठं	कुष्टं
	१४	त्रिवृच्छा	तृवृच्छा
९७	१७	त्रिवृता	तृवृता
	१८	त्रिवृता	तृवृता
	१८	त्रिवृतादीन्	तृवृतादीन्
९९	१५	अनुकूलादिग्रहणमात्रादि	अनुकूलादिग्रहणमत्रति
	२३	शठीं	षठीं
१००	६	शृतात्	सृतात्
	१२	शृतात्	सृतात्
	१४	यक्ष्मिणः	यक्ष्मिणं
	१८	स्रोतसां	श्रोतसां
१०१	४	शृतात्	सृतात्
१०२	५	शृतात्	सृतात्
	६	आश्वेव	आश्वैव
	१६	पिबेदौत्तर	पिबेदुत्तर
	२२	ठञ्	ठक्
१०३	५	नसूनासिकायायत्तरूक्षुद्रे	नासिकायायत्तरक्षुद्रे

Indira Gandhi National Centre for the Arts

पत्रे	पंक्तौ	शुद्धम्	अशुद्धम्
१०४	८	कणाधात्रीकृतां	कणाधात्रिकृतां
	१९	प्राणसंधारणा	प्राणामसंधारणा
१०५	२०	तीक्ष्णाः	तिक्ष्णाः
१०६	२	र्षि	र्शि
१०८	५	श्चौत्तर	श्चोत्तर
	७	तथाऔत्तर	तयाउत्तर
११०	१४	मलक्ष्मीघ्नां	मलक्ष्मिघ्नां
	१६	सर्पीषि	सर्पिषि
११२	१९	दधि	दधी
११५	२	अप्यामयाः	अप्यामयः
११६	१०	शठी	षठी
	१४	शठि	षठि
	२०	शठी	षठी
११७	४	तृषि	तृषिः
	९	शिखि	शिखी
११९	२	क्षीरं	क्षार
	१४	निंब	नींब
	१९	शठी	षठी
१२३	१२	त्सितायुक्तः	च्छीतायुक्तः
	२३	यूषं	युषं
१२४	५	त्र्यूषणा	त्र्युषणा
	२१	जश्त्वेऽनुनासिके	मयडितिणत्वे
१२५	१९	माक्षिकं	माक्षीक
१२६	१३	पथ्ये	पश्ये
१२८	१२	अम्लेषु	आम्लेषु
	१७	अत्रहेतौटः	त्वात्रहेतौतृच्
१३१	१	स्वस्थानाच्च्युता	स्वस्थानाच्युता
	१४	तित्तिरिप्रति	तित्तिरिंप्रति
	१४	मात्रार्थ	मात्रार्थ
१३२	३	हिममिति	हिममितिं
	२०	क्वथयेद्	क्वथयद्
१३३	२०	यथाग्नि	यथाग्नि
	२५	भृष्टो	भ्रष्टो
१३४	३	स्पष्टं	स्पृष्टं
१३५	१८	हर्षोत्पादिका	हर्षोत्पादिका

Indira Gandhi National Centre for the Arts

पत्रं	पंक्तौ	शुद्धम्	अशुद्धम्
	१९	ल्यबादेशस्यात्र	अल्पबादेशस्यात्र
१३६	२	क्षीणौज	क्षीणोज
	३	वृषेः	वृषे
	२४	वक्ष्यते	वक्षते
१३७	८	सर्वौषधि	सर्वोंषधि
	२२	द्यानं	द्यान
	७	रिंदम्भि	रिंदमिं
१३८	१२	संपूर्णाद्वेष	संपूर्णादेब
	१३	त्यजंती	त्यजंति
	२५	सती	सर्ति
१४२	९	तेनावृत	तेनावृत्त
१४३	४	न्यक्कृतं	न्यत्कृतं
१४४	५	न्सौम्रौम्लौगोरसोदधिसप्तभिः	त्सौम्रौल्मौगोरसोदधिसत्पतैः
	१३	गाश्च	गौच
१४५	२	त्तापेंधनं	त्तापेधनं
१४५	९	वस्तुये	वस्तुयो
१४६	२४	शिलाद्रुं	शीलोद्रुं
१४७	१२	शीराह्किकेसरं	शीरादिकेसरं
१४८	१३	लध्वन्नंप्रति	लध्वन्नंकटु
	१४	मंजनं	मजनं
	१७	लब्धचेतनश्च	लध्वचेनतश्च
	१९	लघ्वन्नंप्रतोति	लध्वन्नंप्रतीति
१४९	२	तस्मिङ्गोणिचिनित्यंस्मयते-रित्यात्त्वेपुकिल्पु	तस्मिन्ङ्गाणिचिनित्यंस्मयतेरि-त्यात्त्वेनूकिल्कटि
	१३	अर्शआदित्त्वा	अर्शादित्त्वा
१५०	२०	करणा	कर्णा
१५१	५	वैद्योयथोक्तविधिना	वैद्योक्तविधिना
	५	बृहद्बुर्नाम	बृहदुर्नाम
	५	छित्त्वा	स्थित्त्वा
	६	इतरदशुष्कं	इतरदुष्कं
	१३	पृष्ठाग्रजं	पृष्ठाग्रजं
	२१	नाभेर्लेपयेत्	नाभिपयेत्
१५२	३	युंजीतान्नं	युजितान्नं
	१३	सक्तूनां	सक्तुना
	१६	कीलकानर्शो	कीलकार्शो

Indira Gandhi National Centre for the Arts

पत्रे	पंक्तौ	शुद्धम्	अशुद्धम्
	२५	ठञ्	ठक्
१५४	४	स्नुही	स्नुहि
	९	ठञ्	ठक्
१५७	११	यद्बृहति	यद्बृहति
१५९	११	वर्च्चोनुलोमनान्	वर्चानुलोमन्नान्
	१३	तामया	तान्मया
१६०	५	त्रिवृद्दंती	त्रिवृद्दंतीं
१६२	६	विबंधनुत्	विबधर्नुत्
१६४	४	व्यंजनंशाक	व्यंजनान्शाक
१६५	१८	स्रावं	श्रावं
	२४	पवनाना	पावनाना
१६६	१६	च्छ्यावं	च्छावं
——	११	मारुतानुबंधं	मांरुतानुबधः
	२१	च्छ्यावादि	च्छावादि
	२१	तत्रानुबंधो	तत्रानुबंधे
	२४	अस्रस्य	अस्रस्य
१६८	३	दाडिमर्जा	दाडिमज्जा
	१३	श्छागं	च्छागं
	१५	स्रवदूर्ध्वं	श्रवदूर्ध्वं
	१६	कुटजस्त्वच	कुटजत्वचा
१७०	१	हिमके	हामके
	१६	छागानि	छागाति
१७२	११	माक्षिक	माक्षीक
	१७	समंगा	समंगां
	२३	स्रावे	श्रावे
१७३	१	शीतोष्णानि	शीतोष्णानिं
	८	त्रिवृद्दंती	तृवृद्दंती
१७४	१९	शुक्तं	सुक्तं
	२३	शुक्तं	शुक्लं
१७५	१४	चुक्रं	शुक्र
१७६	७	योजितान्	योजितानि
१७७	१	मंदिध	मशिव
१७८	११	विबंधान्	विबंर्धान
१७९	८	शयोन्वयो	शयात्वयो
१८०	८	पश्चादीष	पश्चादिष

पत्रे	पंक्तौ	शुद्धम्	अशुद्धम्
१८१	४	दोषोतिसारी	दोषोसारी
	७	धनिकादीनि	धातक्यादीनि
	१०	अल्प	अल्पं
	१८	नपादम्येत्यादिना	नापादस्यायेत्यादिना
१८२	१६	पृश्निपर्ण्या	पृष्टिपर्ण्या
	१८	स्रुते	श्रुते
१८४	१०	बिल्वशलाटूनां	बिल्वःशलाटूनां
१८६	१५	विंशतित्रि	विंशतिखि
१८७	५	निरामरूपं	निरामरूप
१८८	१६	एकवारे	एक्कीरणे
	२४	रसादिकं	रसादिक
१९१	२७	समाक्षिका	समाक्षिका
१९२	१३	पलाशफल	पलाशपल
	१६	विशोधनी	विशोधनि
१९३	१०	जांगलेन	जागलेन
	१२	शीघ्रमति	शीघ्रमती
	१९	प्रवृत्तिं	प्रवृत्ति
१९४	५	पिंडाद्	पिंड
	१३	सलिलोष्मणो	सलिलोष्मणा
१९५	३	सारिवा	सारीवा
	१०	पृश्निपर्णी	पृष्टीपर्णी
	१४	मार्गे	मार्ग्ये
	१७	मार्गे	मार्ग्ये
	१८	एवकारा	एवंकारा
१९६	१६	रक्तस्रावाच्च	रक्तश्रावाच्च
१९७	१९	माक्षिक	माक्षीक
	१९	माक्षिकस्य	माक्षीकयस्त
१९८	२	माक्षिक	माक्षीक
	४	वातोक्तं	वातोक्ते
	५	पिबेत्पकृत्वा	पिबेत्स्यक्ता
	१२	कृत्वा	स्वा
	१६	पाठादयः	पाठादयाः
१९९	६	त्युहोवाचनमितिबातङ्ग	त्युहोवाचनमितिरङ्ग
	११	यवानी	यवानि
२००	१९	सलः	सल

Indira Gandhi National Centre for the Arts

पत्रे	पंक्तौ	शुद्धम्	अशुद्धम्
२०२	२	पुरुषस्योच्चारात्तत्	पुरुषस्योच्चारातत्
	१०	हितकारी	दितकारी
२०९	४	चित्रकात्	चित्रका
२११	१५	यथैव	यथेव
२१४	८	कार्श्यस्य	काश्यस्य
	१०	द्रव्यं	द्रव्य
२१५	६	नरो	नरा
	१६	शुद्धे	शुद्धे
२१६	५	पिशिताशिनां	पिशिताशिनः
२१८	६	निरिंधनोंतरं	निरिंधनांतरं
२१९	१	त्रिवृद्धिपक्वं	त्रिवृद्धिपक्वं
२२२	१७	सारसास्थ्यादीनि	सारस्थ्यादीनि
	२२	भद्रं	भद्रा
२२३	२	त्वगेलोषक	त्वगलोषक
	११	व्याधिरंतक	व्याधिरंतकः
२२४	२१	कृतावाप	कृतावापं
२२५	१४	ङ्यापो	ण्यापो
	१५	शिग्रुमूलोत्थः	शिग्रूमूलोत्थः
२३२	१४	बलवतो	बलवता
२३३	५	ततो	तथो
२३४	५	भावना	भावनां
	६	एभी	एभि
	१९	हिता	हिताः
२३८	४	शिलाव्हाया	शिलाव्हया
२४३	३	निठनाबितिठन्	तिपर्गाबितिठक्
२४४	२०	देविकी	देहिकी
२४७	४	स्रावयेच्च	श्रावयेच्च
२५२	५	तुषां	तूषां
	२४	पंचपलदघ्नं	पंचपनदघ्नं
२५७	६	क्वाथः	काथः
२५८	१९	भोजनं	भोजन
२५९	१९	पित्त	पित्
२६२	४	मूलशृतं	मूलसृतं
२६३	६	तामप्यपसारयेत्	तामप्यसारयेत्
	७	प्रमाणविद्भिर्मार्गा	प्रमाणविद्रिमार्गा

Indira Gandhi National
Centre for the Arts

पत्रे	पंक्तौ	शुद्धम्	अशुद्धम्
२६९	१९	पुना	पुन
२७०	१३	तैलमैरंडं	तैलमैरंड
२७१	२१	शृतं	सृतं
२७२	१	विरिक्तः	विरक्तः
	१८	रुष्णांबु	रूष्णांबु
	२४	एषचूर्णा	एषश्चूर्णा
२७३	२	रेषतक्रेण	रेषस्तक्रेण
	१७	शुद्धोंतरांतराः	शुद्धोंतरांतरः
२७८	१३	रिंधितानलं	रंधितानलं
	२१	शृतेन	सृतेन
२८५	८	तैलंपक्कं	तैलपक्कं
२८८	१	बंद्धोदरे	बिद्धोदरे
२९०	१६	आयासा	अयासा
२९२	५	शृतं	सृतं
२९७	२	इत्युक्तः	स्मक्तः
	७	सान्निपातिके	सांन्निपातिके
३००	२३	विंशतिर्विजया	विंशतिविजया
३०३	१	कुक्कुट्यादीना	कुक्कुटयादीनां
	८	च्छोफ	च्छोप
	१०	दध्न	दघ्न
	१२	द्ध्न	द्घ्न
३०४	१३	श्वयथो	श्वपथो
३०६	४	न्समीरघ्नान्	त्समीरघ्नान्
	१०	शृतं	सृतं
	१२	शृतं	सृतं
३०८	२	षड्विषमेष्टौसमेकलास्ताश्चस-मेस्युर्नोनिरंतरानस-मात्रपराश्रिताकला-वैतालीयेंतरेलौगुरुः	क्यादोष्टौसमश्चलनसमोत्रपरेणयु-ज्यतेनेताःषड्वनिरंतरायुतः
३१०	३	पित्तोत्तरे	पित्तेत्तरे
	४	शृतं	सृतं
३१५	११	पित्तस्य	पित्तस्यं
३१७	१२	शृतं	सृतं
	१५	शृतं	सृतं

Indira Gandhi National
Centre for the Arts

पत्रे	पंक्तौ	शुद्धम्	अशुद्धम्
३१९	६	सुसंस्कृत	सस्कृतं
	२१	चेक्षुराजिमत्	चेंदुरा जिमत्
३२०	३	त्रिभागा	त्रिभागाः
	११	श्रृद्दम्म	श्रंद्दम्म
	१३	त्रीणि	त्रीणिं
३२१	३	जतौजगौगः	जगौजगौगः
३२२	९	द्रुलयति	द्रुलयति
	१७	बेदैरंध्रैम्लौयसगा	बेदैरंध्रैम्लौयसगौ
३२३	१	जलधिषडगैर्म्मौनतोताद्रुरूचेत्	मभयनतरुगागःसमुद्रर्तुलोकैः
३२५	१४	कठिने	कठिनः
—	१३	वृत्तिसर्गे	रुत्युत्साहे
३२८	१५	दार्वी	दार्वि
३३०	३	दारूणि	दारुणी
	८	दारूणी	दारुणी
३३१	१८	एकवेलयैव	एकहेलयैव
३३२	१२	भ्यासो	भासो
३३३	१६	तानूस्फोटकान्	तास्फोटकान्
३३४	७	शृतं	सृतं
३३६	१८	पामादित्त्वानूनप्रत्ययः	पामादित्त्वादनूप्रत्ययः
३३७	६	तन्मूर्द्धगेषु	तन्मूर्ध्वगेषु
३३८	२२	इंद्रलुप्त	इंद्रलप्त
३४४	१५	शृतं	सृतं
३४५	१२	शृतेन	सृतेन
३५३	१	शठ्यादिभिः	पठ्यादिभिः
३५७	६	शृतं	सृतं
	१४	शृतं	सृतं
३५९	१८	फलानि	पलानि
३६०	११	शुक्तादिभिः	सूक्तादिभिः
३६३	९	सिध्येयुः	सिद्धेयुः
	१८	शृतं	सृतं
	२१	शृतं	सृतं
३६५	१४	मृदुकाय	मृदुकार्ये
३६६	५	अपाने	अपानेन
	१८	संपद्येततथा	संपद्येत्तथा

Indira Gandhi National Centre for the Arts

पत्रे	पंक्तौ	शुद्धम्	अशुद्धम्
३७०	५	मध्विष्ट	मध्येष्ट
३७०	२३	शर्वरीं	शर्वरी
	७	फलपिप्पलीः	फलपिप्पलीं
३७१	१	साधुतेन	साधूकेन
	१८	शृतं	सृतं
३७४	४	प्रस्नुतं	प्रस्तुतं
	६	शातकीष्वपि	शातकेष्वपि
	१७	वर्गादायों	वर्गायायो
३७५	१४	इक्ष्वाकोः	जीमूते
३७७	१४	क्ष्वेडोति	क्ष्वड्डाति
३७८	६	सहिष्णुपपित्त	सहिष्णुपित्त
३७९	२०	यद्व्यरुणं	यध्यारुणं
३८०	३	क्लेश	रुश
३८२	१८	समा	समाः
३८६	५	लिङ्ग	लिट्
३८७	८	ग्राह्यं	ग्राह्य
३९३	१८	योगे	योग
३९५	२४	शृतं	सृतं
३९८	३	फलंपलाशात्	पलंपलाशात्
	१५	जयति	जयते
४०१	१३	मधुतैलेसमे	मधुतैलसमे
	१६	कर्षोमिसिः	कर्षमिसिः
	२०	चक्षुष्यो	श्वक्षुष्यो
४०५	१२	रोहिषं	रोहिषां
४०८	१३	शीतोल्प	शीताल्प
	१६	दाहोत्दृलेपः	दाहत्दृलेप
४०९	१३	दोषाढ्ये	दोषाढ्यो
	१५	मार्गोनिलः	मार्गानिलं
४१०	१०	पीडितोऽस्निग्ध	पीडितःस्निग्ध
	११	तथाभूतो	तथाभृतो
	१२	मुखं	सुखं
	१४	मृज्यात्	मृद्यात्
	१९	बास्तिभा	बस्तिस्तमा
	२१	सोऽस्या	सौम्या
४११	३	सिंधूत्थोविरेकोषध	सिंधूत्थविरेकोषध

Indira Gandhi National Centre for the Arts

पत्रे	पंक्तौ	शुद्धम्	अशुद्धम्
	५	धूमःप्रच्छायं	धूमप्रच्छायं
	९	उत्क्षिप्यो	उत्क्षेप्यो
	१३	ऊर्ध्वादधः	ऊर्ध्वादधो
	२४	प्रयुक्तत्वादतियोगत्त्वं	प्रयुक्तत्वातियोगत्त्वं
	२५	तथाविधोबस्तिर्विरेचन	तथाविधेबस्तिविरेचन
४१२	८	विशुद्धश्च	विशुद्धस्य
	२२	गुरुर्वर्चः	गुरुवर्चः
		बलस्तथा	बलेर्ष्वथ
४१३	१५	चःसमुच्चये	चसमुच्चये
४१४	२३	छर्दिघ्नीभिः	छर्दीघ्नीभिः
४१५	११	तुबद्धे	नुबद्धे
	१४	अनुच्छ्वास्य	अनुच्छ्वस्य
•—	२४	फल	फलैः
४१७	१५	जंत्वदग्धं	जतुदग्धं
४१८	२१	बष्कयिण्याः	बष्कयिण्या
४१९	१	बलाधिका	बलाधिकाः
	५	द्रवेण	द्रव्येण
	६	क्काथयित्वा	क्कथयित्वा
	२३	क्षुण्णाद्यः	क्षुणाद्यः
	२५	मुत्स्वातं	मुत्का
४२१	२	श्रवणेन	श्रयणेन
	१८	सिध्यति	शुध्यति
	१९	मष्टमं	षृकम्
४२२	१	द्रवाणि	द्रव्याणि
	८	अवतरणेइत्यर्थः	अवतरणेत्यर्थः
४२३	७	मुष्टिः	मुष्टि
	१४	योगे	योग
४२४	१	तिंदुकः	तिंदुकं
४२५	३	व्याधिं	व्याधि
	३	भैषज्य	भेषज्य
४२९	३	त्र्यंगत्त्वरहिते	त्र्यंगरहिते
	२१	पृश्निपर्णी	पृष्णिपर्णी
४३१	१७	रश्म्यवभासिते	रश्मीवभासिते
	२०	शृतं	सृतं
४४८	२१	सस्वेदो	स्वस्वेदो

Indira Gandhi National Centre for the Arts

पत्रे	पंक्तौ	शुद्धम्	अशुद्धम्
४४९	६	स्रवण	श्रवण
४५४	२	कृत्वोर्थप्रयोगेकालेधिकरण	कृत्वःसःप्रायेणयेण
४४७	१५	श्मशानादिषु	स्मशानादिषु
४६१	३	श्मशान	स्मशान
४७८	१२	स्वापयेच्च	स्वापयच्च
४८२	१५	श्यावा	श्यावा
४९०	४	स्राव	श्राव
	११	रुक्क्लेद	रुत्क्लेद
४९३	५	वृद्धिपत्रादिना	वृद्धपत्रादिना
४९६	२१	कुकूणे	कुक्कूणे
	२३	कुकूणे	कुक्कूणे
५०३	४	प्रस्तार्यमं	प्रस्तार्यम
५०५	१५	आकृतिर्यस्य	आकृतियस्य
५०७	३	अश्रुगतिः	अस्रुगतिः
५१३	६	शिरोविरेकादीन्	शिराविरेकादीन्
५१७	६	श्यावेत्यादि	शावेत्यादि
५२१	१	धूमदर्शी	धूमदर्शा
५२३	१३	अर्द्धपलिकैर्घृतं	अर्द्धपलिर्घृतं
५२६	६	स्रोतो	श्रोतो
५२७	१६	सममंजनंस्रोतोजं	समंजनंश्रोतोजं
	२३	कथंचिद्	कथचिद्
५३२	१८	शृतं	सृतं
	१२	शृतं	सृतं
५३३	१	ह्रीवेर	हीवेर
५३७	१७	शब्दोऽत्राचतुर	शब्दोत्रचतुर
	१८	स्रुति	श्रुति
५४०	१५	स्रुत्तिः	च्छुतिः
	१९	उत्सिचनाच्च	उच्छिचनाच्च
	२२	बध्वाक्षि	बध्वाक्षं
५४१	२	उत्सिचनाच्च	उच्छिचनाच्च
	५	बध्वाक्षि	बध्वाक्षं
५४२	१४	शृत	सृत
	१५	शृत	सृत
	१९	शृत	सृत
५४३	१२	स्रोतो	श्रोतो

Indira Gandhi National
Centre for the Arts

पत्रे	पंक्तौ	शुद्धम्	अशुद्धम्
	१३	स्रोतो	श्रोतो
५४९	१२	शृत	सृत
५५१	१८	भ्रुवोरुपरि	भृवोरुपरि
५५८	४	एवंविधं	एवंविध
५५९	१९	सर्वांगीण	सर्वांगिण
५६७	८	सुसूक्ष्मैश्च	ससूक्ष्मैश्च
५६९	१	स्रुतेर्वमन	श्रुतेर्वमन
	३	बाधिर्यं	बाधीर्यं
	४	बाधिर्यं	बाधीर्यं
५७२	१७	सुषामादिषु	सुषमादिषु
५७४	९	स्नेहविष्युक्त	स्नेहंविष्युक्त
५७६	७	कुप्यत्यकस्माद्	कुपत्यकस्माद्
५७७	११	च्छ्वास	श्वास
	१३	च्छ्वाससंरोधात्स्रोतसी	श्वाससंरोधाच्छ्रोतसी
५७९	२०	शृभ्रः	शृद्धः
५८०	२४	परिषेकान्	परिषेकां
	२३	शृतं	सृतं
५८५	३	सकृदुदीर्यते	सकृदीर्यते
	१५	भक्ष्यस्यासह्या	भक्ष्यस्यासह्याद्
५८६	९	श्यावत्व	शावत्व
५९०	१७	श्रोत्ररुक्करी	श्रोत्ररुष्करी
	२३	चत्वारि	चवारि
५९२	१३	मांसाकुरावृत्ता	मांसांकुरवृता
५९५	११	श्यावं	शावं
६०१	३	विस्राविते	विश्राविते
६०९	२९	धूमस्तीक्ष्णः	धूमतीक्ष्णः
६१०	१६	गार्ध्री	गांर्ध्री
६१४	३	शृतैर्धार्यो	सृतैर्धांर्यो
	१९	द्रुतं	दृतं
	२१	द्राग्	प्राग्
६१८	१६	विद्याद्	विंद्याद्
	१७	विद्याद्	विंद्याद्
६१९	१८	श्यावं	शावं
	२०	विद्याद्	विंद्याद्
६३१	७	जालस्ततो	जालततो

Indira Gandhi National Centre for the Arts

पत्रे	पंक्तौ	शुद्धम्	अशुद्धम्
६३४	९	पिष्टादाह्	पिष्टाद्दाह्
६३५	७	शोफे	शोफो
६३८	१४	शृतेनाज्येन	सृतेनाज्येन
६४२	१६	निर्वृत्तइतितेननिर्वृत्तमितिठञ्	निवृत्तइतिप्राग्वहतेष्घितिठक.
६४३	१८	स्रोतस्तैलेन	श्रोतिस्तैलेन
	१९	स्रोतः	श्रोतः
६४५	३	मस्तुलुंगस्रुवे	मस्तुलुंगस्तुते
६४८	२३	शृतं	सृतं
६५३	६	शृतेन	सृतेन
६५८	१९	श्यावारुणा	शावारुणा
	२१	मध्याच्छ्यावादि	मध्याच्छावादि
६६१	२१	अवाचीनं	अर्वाचीनं
६६१	२३	अवाचीनं	अर्वाचीनं
६६५	१८	वृत्तोन्नतं	वृतोन्नतं
	१९	वृत्तोन्नतं	वृतोन्नतं
८७२	९	एषक्रमो	एषःक्रमो
६७४	२३	दग्ध्वा	दुग्ध्वा
६७९	१७	पनसिकासंज्ञा	पनसिकासंजा
	२१	कंटकाकाराः	कंटकीकाराः
६८०	२	स्ताश्च	स्तेच
६८१	४	कक्षेत्युच्यते	कक्ष्येत्युच्यते
	१७	पित्तोल्बणैः	पितोल्बणैः
६८२	४	ङ्यापोरित्यादिना	पाण्योरित्यादिना
६८२	२१	दुत्सन्नो	दुच्छनो
६८२	१३	अंगुल्यो	आंगुल्यो
	१७	स्त्ववस्थां	स्वस्थां
	१४	अंगुल्यो	आंगुल्यो
६८४	१२	पित्तेनाताम्रातं	पित्तेनाताम्रातं
६८७	१०	विरेकादिकया	विरेकादिकयो
६९४	२१	स्रोतोमूत्रं	श्रोतोमूत्रं
६९६	१७	सैवं	सेवं
७०८	३	पुष्ये	पुष्पे
७१२	८	यस्मात्तत्	यमात्तत्
७१३	१०	तद्युक्तिमद्दिव	तद्युक्तमदिव
७१६	३	पुष्ये	पुष्पैः

Indira Gandhi National
Centre for the Arts

पत्रे	पंक्तौ	शुद्धम्	अशुद्धम्
७१७	५	मलक्ष्यं	मालक्ष्यं
	५	कफेनावृतं	कफेनावृंतं
७१८	२४	शुकनासा	शूकनासा
७२२	१८	वातेतिरिक्ते	वांतेतिरिक्ते
७२३	७	विस्तरतोनेकधा	विस्तरतोनैकधा
७२४	१२	गोधायाङ्गः	गोधायाःफग्
७२५	४	आश्रित्यास्ते	आश्रित्यास्त
७२७	१२	दुष्टं	दुष्ट
७२९	५	आहिताग्न्यादिषूक्त	आदिनाग्निषूक्त
	११	प्रदीप्तागार	प्रदीप्तांगार
७३३	१७	अर्धभागेन	आर्धभागेन
	२३	मंडलिविषं	मंडलीविषं
७३५	१४	पूर्वे	पूर्वो
७४१	११	जलेनेव	जलेनैव
७४४	२०	शेवालयुता	सेवालयुता
७४६	९	वृश्चिकानां	वृश्चिकाणां
	१	श्लेष्मातक्	श्लेष्मांतक
७५०	१४	श्लेष्मातकाक्षैः	श्लेष्मांतकाक्षैः
७५३	१५	यत्रैषां	यत्रेषां
७६३	१७	सहस्रमामलक	सहस्रयामलक
७६४	८	अवादीत्तत्रकृत्	अवादीतंत्रकृत्
७६५	४	शृतं	सृतं
७६६	८	शृता	सृता
७८२	१३	तत्काथे	तत्काथो
७९२	११	इत्यस्मायेति	इत्यस्मयेति
८०७	११	ऽपरामर्शेन	परामर्शेण
८१०	१७	ईदृशा	इदृशा
८१३	२६	नतूनषोडश	नतुनषोडश
८१४	१	वाक्यं	वाक्य
	७	नह्यनुमतं	नाह्यनुमतं
	११	संशयं	संशय
	२१	यस्मिन्	यमिन्
८२८	८	वाङ्मयपयोधेः	वाङ्मनपयोधेः

Indira Gandhi National Centre for the Arts

॥ श्री ॥

श्रीगणेशाय नमः । श्रीसरस्वत्यै नमः । श्रीगुरुभ्यो नमः । अथेदानीं चिकित्सितस्थानमारभ्यते ।

तस्य चायं संबंधः । रोगपरीक्षा निदानस्थाने गदिता । सांप्रतं चिकित्सा वक्तुं युक्ता । तथा च मुनिः । रोगमादौ परीक्षेत ततो नंतरमौषधमिति । तस्माच्चिकित्सितस्थानारंभो न्याय्यः । तत्र यथोद्देशो व्याधीनां निदानस्थाने तेनैव क्रमेणास्य स्थानस्य विरचना युक्तेति ज्वरचिकित्सितमेव विवक्षुराह ।

अथातो ज्वरचिकित्सितं व्याख्यास्यामः ।
इति ह स्माहुरात्रेयादयो महर्षयः ॥

इति ह स्माहुरात्रेयादयो महर्षय इत्यनेनागमशरणत्वमात्मनः प्रतिपादयति ।

आमाशयस्थो हत्वाग्निं सामो मार्गान् पिधाय यत् ।
विदधाति ज्वरं दोषस्तस्मात्कुर्वीत लंघनम् ॥ १ ॥
प्राग्रूपेषु ज्वरादौ वा बलं यत्नेन पालयन् ।

आमाशयस्थो दोषो वह्निं हत्वा । सहामेन वर्तत इति सामः । तथा मार्गान् पिधाय स्रोतांसि स्थगयित्वा यद्यस्माद्धेतोर्ज्वरं विदधाति तस्मात्कारणाल्लंघनं कुर्वीत । लंघनमत्रोपवासः । तथा चोक्तं । लंघनस्याविशेषोक्तावुपवासं प्रकल्पयेदिति । अत एवायमपि वक्षति । तस्मादादोषपचनाज्ज्वरितानुपवासयेदिति । कदा लंघनं कुर्वीतेत्याह । प्राग्रूपेषु पूर्वलक्षणेषूत्पन्नमात्रेष्वेव ज्वरादौ वा । उत्पन्नमात्रे ज्वरे सति । किं कुर्वन् लंघनं कुर्वीतेत्याह । बलं यत्नेन पालयन् प्राणांस्तात्पर्येण रक्षन् तदविरोधेनेत्यर्थः ।

ननु कुत एवं विधीयत इत्याह ।

बलाधिष्ठानमारोग्यमारोग्यार्थः क्रियाक्रमः ॥ २ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

यस्मादारोग्यं स्वास्थ्यं बलाधिष्ठानं बलमधिष्ठानमाश्रयो यस्य तदेवं। तथा क्रियाक्रम आरोग्यार्थः स्वास्थ्यप्रयोजनः ॥

लंघन उपवासे विहिते सति यत्स्यात्तदाह।

लंघनैः क्षपिते दोषे दीप्तेऽग्नौ लाघवे सति।
स्वास्थ्यं क्षुत्तृड् रुचिः पक्तिर्बलमोजश्च जायते ॥ ३ ॥

लंघनैरुपवासैर्दोषे पूर्वोक्ते क्षपिते क्षयं नीते। तथाग्नौ दीप्ते सति समिद्धे सति। तथा लाघवेंगानां सति स्वास्थ्यादि जायते। स्वास्थ्यं यथाप्रकृतित्वं। रुचिरन्नाभिलाषः। पक्तिः पाक आमस्य। बलमुत्साहः। ओजः परं धातुतेजः। क्षपिधातुरनुक्तोपि धातुगणे शिष्टप्रयोगवशादंगीकृतः। लंघनैरिति जातौ बहुवचनं तेन कदाचिदेकेनैव लंघनेन। कदाचिदनेकैर्दोषक्षयो जायत इति ज्ञेयम्।

तत्रोत्कृष्टे समुत्क्लिष्टे कफप्राये चले मले।
सहृल्लासप्रसेकान्नद्वेषकासविषूचिके ॥ ४ ॥
सद्यो भुक्तस्य संजाते ज्वरे सामे विशेषतः।
वमनं वमनार्हस्य शस्तं कुर्यात्तदन्यथा ॥ ५ ॥
श्वासातीसारसम्मोहहृद्रोगविषमज्वरान्।

तत्र तस्मिन्मल उत्कृष्टे स्वजन्मगुणकर्मलक्षणतोधिके। तथा कफप्राये कफबहुले वाताख्ये पित्ताख्ये वेति सामर्थ्याद्गम्यते। समुत्क्लिष्टे स्वस्थानाच्चलिते बहिर्निर्याते। तथा चले शिथिल उत्क्लिष्टेपि हि कदाचित् स्थानावष्टंभादचलः स्यात्। एतदेव कफोत्क्लिष्टादिकं दर्शयति। सहृल्लासेत्यादि। हृल्लासादीनां द्वंद्वः। सह तैर्वर्तते यस्मिन्। हृल्लास उद्वमनमिवानुभवः। उद्वमनं हृदस्य प्रसेकः पानीयस्यैव निष्ठीवनं। सद्यो भुक्तस्येत्यादि। ईदृशे मले सति सद्यः कृताहारस्य ज्वरे संजाते विशेषेण सामे ज्वरे वमनार्हस्य वमनं शस्तं। वमनार्हा वमनविरेचनविधौ प्रोक्ताः। अन्यथा उक्तविधिविपर्ययेण तद्वमनं कृतं श्वासादीन् कुर्यात्। तथानुत्क्लिष्टः कफप्रधानः स्थिरो हृल्लासादिरहितो विपरीतः।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

वमनद्रव्याण्याह ।

पिप्पलीभिर्युतान् गालान् कलिंगैर्मधुकेन वा ॥ ६ ॥
उष्णांभसा समधुना पिबेत्सलवणेन वा ।
पटोलनिंबकर्कोटवेत्रपत्रोदकेन वा ॥ ७ ॥
तर्पणेन रसेनेक्षोर्मद्यैः कल्पोदितानि वा ।
वमनानि प्रयुंजीत बलकालविभागवित् ॥ ८ ॥

गालान्मदनान् । अस्य निरपायत्वाच्छ्रेष्ठत्वाच्च पिप्पल्यादिद्रव्येभ्योनेन सहोपयोगिभ्यो बहूपयोगितया प्रधानविभक्त्या प्रागुपन्यासः । अन्यथा । कल्पयेत्सदृशान् भागान् प्रमाणं यत्र नोदितमिति मदनफलेन पिप्पल्यादीनां च तुल्यं प्रमाणं प्राप्नुयात् । पिप्पलीभिर्युतान् गालानथवा शक्रयवैर्युतानथवा मधुयष्टिकया वा युतानथवोष्णांबुना माक्षिकयुतेन वा सह पिबेत् । अथवा पटोलादीनां पत्रोदकेन वा सह पिबेत् । अथवा तर्पणादिभिः पिबेत्। अथवा कल्पोदितानि वमनकल्पोक्तानि वमनयोग्यानि प्रयुंजीत । बलकालविभागविदिति । अस्यां देहबलाबलावस्थायां तथा व्याधिबलावस्थायां चेदं वमनं दातुं योग्यमिति यो विभागं वेत्ति स बलकालविभागवित् ।

कृतेऽकृते वा वमने ज्वरी कुर्याद्विशोषणम् ।
दोषाणां समुदीर्णानां पाचनाय शमाय च ॥ ९ ॥

वमने योग्यो यो ज्वरी स कृते वमनेऽपरस्तु वमनेऽयोग्यः सोऽकृते वमने विशोषणमुपवासलक्षणं कुर्यात् । एवं कृतवमनोऽकृतवमनो वा ज्वरी सर्वथा लंघनं कुर्यात् । किमर्थमित्याह । दोषाणां वातादीनां समुदीर्णानां समंतात्समुत्थानामुत्पन्नानां पाचनाय पक्त्यर्थं शमाय शांत्यर्थं च। निरामाणां पुनःसमुदीर्णानां शांत्यर्थमेव ।

आमेन भस्मनेवाग्नौ छन्नेऽन्नं न विपच्यते ।
तस्मादादोषपचनाज् ज्वरितानुपवासयेत् ॥ १० ॥

दोषेणामाख्येन वातादिना वा सहैकलोलीभूतेनाग्नौ छन्न आच्छादितेऽन्नमामाशयस्थं न विपच्यते भस्मनेव यथा बाह्येऽग्नौ स्थगिते तोयतंडुल-

Indira Gandhi National Centre for the Arts

दिकं स्थालीस्थं न विपच्यते । यतश्चैवं । तस्माद्धेतोरामदोषस्य पूर्वोक्तस्य पचनं पाककर्मविधिं कृत्वा ज्वरितान्नरानुपवासयेत् ॥

तृष्णगल्पाल्पमुष्णांबु पिबेद्वातकफज्वरे ।
तत्कफं विलयं नीत्वा तृष्णामाशु निवर्तयेत् ॥ ११ ॥
उदीर्य चाग्निं स्रोतांसि मृदूकृत्य विशोधयेत् ।
लीनपित्तानिलस्वेदशकृन्मूत्रानुलोमनम् ॥ १२ ॥
निद्राजाड्यारुचिहरं प्राणानामवलंबनम् ।
विपरीतमतः शीतं दोषसंघातवर्द्धनम् ॥ १३ ॥

तृष्णावान्नरोल्पाल्पं स्तोकं वातकफज्वर उष्णांबु पिबेत् । उष्णगितिस्वपितृषोर्नजिङिङतिनजिङ् । अल्पाल्पमिति प्रकारे गुणवचनस्येति द्वित्वं । तदुष्णांबु पित्तं कफं वातस्त्यानं विलयं नीत्वा विलीनविग्रहतामापाद्य तृष्णामाशु निवर्तयेत् । तर्पणस्वभावत्वात् । तथाग्निमुदीर्य समिद्धं कृत्वा स्रोतांसि विशोधयेत् । किं कृत्वा मृदूकृत्य तेषां स्रोतसां मार्दवमुत्पाद्य । तथा लीनान्यप्रवृत्तस्वरूपाणि च तानि पित्तानिलस्वेदशकृन्मूत्राणि च । तेषामनुलोमनं प्रवर्त्तनं । तथा प्राणानां जीविताख्यानामवलंबनं । तदुष्णं जलमाश्रित्य तथा प्राणाः प्रवर्तंत इत्यर्थः । अनेन चोष्णांबुकर्मकथनव्याजेन वातकफज्वरस्वरूपमपि किंचित् प्रकाशयति । तथा वातशोषितेन कफेन स्त्यानीभूतेनात्र तृष्णा जायते । तथाधिकमग्निमांद्यं । स्रोतसामशुद्धत्वं । तथा लीनानि पित्तादीन्यत्रस्युरिति ।

उष्णमेवंगुणत्वेपि युंज्यान्नैकांतपित्तले ।
उद्रिक्तपित्ते दवथुदाहमोहातिसारिणि ॥ १४ ॥
विषमद्योत्थिते ग्रीष्मे क्षतक्षीणेऽस्रपित्तिनि ।

एवंगुणमुष्णांबु । एकांतपित्ते पित्तले केवलपित्ते ज्वरिणि वा न युंज्यादिति । तथोद्रिक्तमधिकं पित्तं यस्मिंश्च न युंज्यात् । तथा तदुष्णांबु दवथ्वादिमति नरे न युंज्यात् । चक्षुरादिभ्यो यस्तीव्र ऊष्मा प्रवर्त्तते स दवथुः । सर्वांगीणस्तीव्र ऊष्मा दाहः । मोहो भ्रमः । तथा विषमद्याभ्यामु-

Indira Gandhi National Centre for the Arts

स्थिते जाते ज्वरे । तथा ग्रीष्मकाले तथा क्षतश्च क्षीणश्च क्षतक्षीणः। क्षतउरः क्षतः । क्षीणोधात्वपचयवान् । तस्मिंस्तथाभूते नरे न युंज्यात् । तथाऽस्रपित्तिनि रक्तपित्तवति नेति ।

घनचंदनशुंठ्यंबु पर्पटोशीरसाधितम् ॥ १५ ॥
शीतं तेभ्यो हितं तोयं पाचनं तृड्ज्वरापहम् ।

तेभ्य उद्रिक्तपित्तादिभ्यः पिपासितेभ्यो घनादिसाधितं शीतं तोयं हितं । पानीयसाधने च तंत्रांतरे विधिरुक्तः । यथा । कर्षं गृहीत्वा द्रव्यस्य तोयस्य प्रस्थमावपेत् । अर्धावशेषं तद् ग्राह्यं तोयपाने त्वयं विधिरिति ।

उष्मा पित्तादृते नास्ति ज्वरो नास्त्यूष्मणा विना ॥ १६ ॥
तस्मात्पित्तविरुद्धानि त्यजेत् पित्ताधिकेऽधिकम् ।

पित्तं विना ऊष्मा न विद्यते । ज्वरश्चोष्मणा विना नास्ति संतापलक्षणत्वाज् ज्वरस्य । यतश्चैवं तस्माद्यानि पित्तस्य विरुद्धान्याहारविहारादीनि तानि सर्वस्मिन् ज्वरे त्यजेत् । पित्ताधिके पुनरधिकं कृत्वाऽतिशयेन त्यजेत् । पित्ताधिक इत्यत्राधिकग्रहणेनेदं प्रतिपादयति । सर्वो ज्वरस्त्रिदोषजो भूयसा व्यपदेश इति ॥

स्नानाभ्यंगप्रदेहांश्च परिशेषं च लंघनम् ॥ १७ ॥

न केवलं ज्वरे पित्तविरुद्धानि त्यजेत् । यावत् स्नानादींश्च त्यजेत् । स्नानादीनां पित्तहरत्वशंकया सेव्यत्वे प्राप्तेऽचिंत्यप्रभावत्वाज् ज्वरे विरुद्धानीति तत्सेवनं निषेधयति । प्रदेहश्चंदनाद्यनुलेपः । परिशेषं च लंघनं त्यजेत् । यल्लंघनमुपयुक्तमुपवासलक्षणं । ततो यदन्यत्तत्परिशेषं । शुद्ध्याद्येकादशप्रकारं च तत्त्यजेत् । उपवासलक्षणं तु लंघनं नवज्वरे कर्तव्यमेव ।

अजीर्ण इव शूलघ्नं सामे तीव्ररुजि ज्वरे ।
न पिबेदौषधं तद्धि भूय एवाममावहेत् ॥ १८ ॥
आमाभिभूतकोष्टस्य क्षीरं विषमहेरिव ।

यथा अजीर्णे सामे तिव्ररुज्यपि शूलघ्नमौषधं न पिबेत्प्रत्यवायभयात् । तथैव सामे ज्वरे दारुणपीडावति तदानीमामपक्त्यर्थं मुस्तापर्पटकाद्यौषधं

Indira Gandhi National Centre for the Arts

क्काथ्यादिकल्पनाकल्पितं न पिबेत् । हि यस्मात्तदौषधं पीतमस्यामवस्थया मामाभिभूतकोष्टस्य प्रयुक्तं भूय एवाममावहेत् । अत्र च साम इत्युक्ते बन्हाम इति गम्यते । अल्पे ह्यजीर्णे भेषजमनुज्ञातमेव । तथाचोवाच तंत्रकारः । जीर्णेऽशने तु भैषज्यं युंज्यात्स्तब्धगुरूदरे । दोषशेषस्य पाकार्थमग्नेः संधुक्षणाय चेति । तस्माद् बन्हाम इति बोध्यं । अथात्र दृष्टांतमाह । क्षीरं विषमहेरिव । यथा क्षीरं विषघ्नमप्यभिहितमहीनां तदेव विषं कुर्यात् ।

सोदर्दपीनसश्वासे जंघापर्वास्थिशूलिनि ॥ १९ ॥
वातश्लेष्मात्मके स्वेदः प्रशस्तः संप्रवर्तयेत् ।
स्वेदमूत्रशकृद्वातान् कुर्यादग्नेश्च पाटवम् ॥ २० ॥

उदर्दादयः प्रागुक्ताः । उदर्दश्च पीनसश्च श्वासश्च तैः सह वर्तते यो ज्वरस्तस्मिन् । तथा जंघा च पर्वाणि च अस्थीनि च तत्र शूलं तद्वियते यस्य । तस्मिंश्च । तथा वातश्लेष्मात्मके वातकफोद्भवे स्वेदः शस्तो हितः स आचरितः स्वेदादीन् प्रवर्त्तयेत् । अग्नेश्च पाटवं दीप्ततरत्वं विदध्यात् ।

स्नेहोक्तमाचारविधिं सर्वशश्चानुपालयेत् ।

तथा स्नेहोक्तं स्नेहविध्यध्याये कथितमाचारविधिं वा सर्वशश्चानुपालयेत् कुर्यादित्यर्थः ।

लंघनं स्वेदनं कालो यवागूस्तिक्तको रसः ॥ २१ ॥
मलानां पाचनानि स्युर्यथावस्थं क्रमेण वा ।

मलानां सामानां वातादीनां पृथक्स्थितानां संसर्गस्थितानां सन्निपातस्थितानां च सामर्थ्याल्लंघनादयस्तिक्तरसावसानाः पाचनानि स्युः । यथावस्थमवस्थानतिक्रमेण कस्यांचिज् ज्वरावस्थायां लंघनमुपवासलक्षणं मलानां पाचनं स्यात् । कस्यांचित् स्वेदनं स्यात् । कालः षडहाख्यः । कस्यांचिद् यवाग्वः पेयाः कस्यांचित्तिक्तको रसः । तिक्तरसाढ्यस्तद्द्रव्योपायोगः । एवमवस्थावशाल्लंघनादयस्तिक्तरसांता मलानामेकैकशः पाचनानि स्युः । अथवा क्रमेणैव पाचनानि स्युः । यथा लंघनं च स्वेदनं च कृत्वा षडहादूर्ध्वं यवाग्वस्तिक्तको रसः पाचनान्यविपक्वानां मलानां तरुणे ज्वरे स्युः ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

तत्रामाशयस्थमित्यादिना ग्रंथेन निर्दिष्टा लंघनयोग्यावस्था। सोदर्दपीनस इत्यादिना च स्वेदनयोग्याऽवस्था। इत्ययं षडहं नेय इत्यादिना च निर्दिष्टाकालयोग्यावस्था। युक्तं लंघित लिंगैस्तुतमित्यादिना पेयायोग्यावस्था। उद्रिक्तपित्तादिना च तिक्तरसोपयोगयोग्यावस्थेति यथावस्थं द्रव्यं। क्रमस्तु यथा वातश्लेष्मके सामे ज्वरे प्रथमं लंघनं कुर्वन्नेव स्वेदनं द्वित्रादिदिनलक्षणं च कालं लंघितलक्षणयुक्तस्य यवान्नादिपेयाद्यन्नं भुक्तस्यानंतरं मुस्तापर्पटकादितिक्तरसोपयोग इति क्रमार्थः ज्वरे लंघनं कुर्वीतेत्युक्तं।

अस्य विशिष्टविषयेऽपवादमाह।

शुद्धवातक्षयागंतुजीर्णज्वरिषु लंघनम्॥ २२॥
नेष्यते।

शुद्धेन वातेनामदोषाद्यदुष्टेन यो ज्वरः स शुद्धवातज्वरः। क्षयेण धात्वपचयादिलक्षणेन यो ज्वरः सक्षयज्वरः। यश्च भूतविषवाय्वग्निसंप्रहारादिसमुद्भवः स आगंतुज्वरः। यथाऽतरुणो ज्वरः स जीर्णः। ते विद्यंते येषां ते एवं भूताः। तेषु लंघनं नेष्यते।

तेषु तर्हि किं कार्यमित्याह॥

तेषु हि हितं शमनं यन्न कर्शनम्।

हि यस्मात्तेषु शुद्धवातादिज्वरेषु शमनं हितं। शमनस्य संतर्पणापतर्पणरूपेण द्वैविध्यात्। किं तच्छमनं तेभ्यो हितमित्याह। यन्नकर्षणं बृंहणमित्यर्थः। यद्येवं स्पष्टमेव बृंहणमित्येतदेव कस्मान्न कृतं। किं शमनं यन्नकर्षणमितिपदद्वयोपादानेन ब्रूमः। अर्थांतरद्योतनार्थमेतदुक्तं। तथा चायमर्थो विशिष्ट उभययोरुपादानेन प्रकाश्यते। तथा न सर्वसर्वक्रिया यद्बृंहणं शमनं तत्तेभ्यो हितं। किं तर्हि किंचिद्बृंहणं शमनं तत्तेभ्यो हितमिति।

तत्र सामज्वराकृत्या जानीयादविशोषितम्॥ २३॥
द्विविधोपक्रमज्ञानमवेक्षेत च लंघने।

तत्रेत्यादि तेषु ज्वरेषु मध्ये सामज्वरस्याकृत्या लक्षणेन ज्वरोपद्रवती-

Indira Gandhi National Centre for the Arts

क्षणत्वमित्यादिनाविशोषितमलंघितं विद्यात् । लंघने लंघनं लक्षणापेक्षया द्विविधोपक्रमज्ञानं द्विविधोपक्रमणीयाध्यायोक्तलक्षणं चावेक्षेत तल्लक्षणं च विमलेंद्रियता सर्गो मलानामित्याद्यतिकार्श्यादिभिरतिलंघितं च ॥

युक्तं लंघितलिंगैस्तु तं पेयाभिरुपाचरेत् ॥ २४ ॥
यथा स्वौषधसिद्धाभिर्मंडपूर्वाभिरादितः ।
तस्याग्निर्दीप्यते ताभिः समिद्भिरिव पावकः ॥ २५ ॥
षडहं वा मृदुत्वं वा ज्वरो यावदवाप्नुयात् ।

लंघितलिंगैर्विशोषितलक्षणैर्युक्तं ज्वरितं नरं ज्ञात्वा तं पेयाभिरुपाचरेत् । किंभूताभिः । यथास्वौषधसिद्धाभिः यद्यत्स्वं यथास्वमिति वीप्सायामव्ययीभावः । यथा स्वंच तदौषधं च यथास्वौषधं । वातादेः पृथग्रूपसंस्पृष्टस्य सन्निपातितस्य यद्यस्य योग्यमौषधं । तेन सिद्धाभिर्वक्ष्यमाणैः पेयादिद्रव्यैर्यथायथं योग्यैः कृताभिरित्यर्थः । किं भूताभिः मंडःपूर्वं प्रधानोत्थतया याभ्यस्ताभिरिति समासः । एवं मंडात् किंचिद् घनाः पेयाः कार्या इत्यर्थोवतिष्ठते । ननु मंडः पूर्वः प्रथमोऽभ्यवहारे यासां तामंडपूर्वा इति व्याख्येयं। एवं हि व्याख्यायमाने सर्वासां पेयानां मंडपूर्वाणां ज्वरेऽभ्यवहारः प्राप्नोति ततश्च सृष्टविड्बहुपित्तो वा सशुंठीमाक्षिकां हिमां पेयां पिबेत् । तामपि मंडपूर्वां पिबेन्नकेवलामिति । एतच्च क्रियमाणं विरुद्धं स्यात् । यथाक्वथितामलकेऽस्यर्थापित्तशमने क मंडः । तथा क बहुपित्तो ज्वरी वा मंडः शृतः पिप्पलीशुंठीभ्यां युक्तो लाजांबुदाडिमैरित्येवं स्वरूपः । पेयायाश्च ज्वरघ्नत्वमुक्तं । तथा क्षुधिते सम्यग् लंघितं ज्ञात्वा मंडात् किंचिद्घनाभिः पेयाभिरसावुपचरणीयाः। तस्य ज्वरिणस्ताभिः पेयाभिरग्निर्दीप्यते समिध्यते । समिद्भिरेधैर्यथा बाह्यः पावकः । मुनिना चोक्तं । ताश्च भेषजसंयोगाल्लघुत्वादग्निदीपकाः । स्वेदनादय द्रवोष्णत्वान्मृदुत्वात्तृट्प्रशांतये । आहारभावात् प्राणाय सरत्वाल्लाघवाय च । ज्वरघ्नो ज्वरसात्म्यत्वात्तस्मात् पेयाभिरादितः । ज्वराबुपाचरेद्धीमानिति। खरनादेप्युक्तं। पिबेदच्छां ससिद्धां वा स्वां स्वां पेयां नवज्वरेइति । कियंतं कालं ज्वरिणं पेयाभिरुपाचरेदित्याह । षडहमित्यादि। पेयाभिर्ज्वरिणं षडहं यावदुपाचरेत् । षण्णामह्नां समाहारस्तद्धितार्थोत्तरपदे-

Indira Gandhi National Centre for the Arts

त्यादिना समासः । राजाहःसखिभ्यष्टजिति टच् । न संख्यादेः समाहारइत्यन्हादेशः । अन्हष्टखोरेवेतिटिलोपः । तथा षडहादर्वागपि यदि शांतो ज्वरस्तदा दोषदूष्याद्यपेक्षया भक्तयूषादिभिरुपाचरेदिति वा शब्देन गमयति । मृदुत्वं चेति । अथवा षडहेतीतेपि यावज्ज्वरो मार्दवं गच्छति तावत् पेयाभिरुपाचरेत् । ननु तर्हि किं षडहंवेत्यनेन । अत्र केचिदेवमाहुः । षडहादर्वाक् प्रायेण मृदुतायामपि ज्ञातायां षडहं यावज् ज्वरिणं पेयाभिरुपाचरेदिति द्योतनार्थं षडहंचेति कृतं । अपरे तु काल एव बाहुल्येन ज्वरमार्दवस्येति ज्ञापनार्थमिदं कृतमिति मन्यंते । ज्वरमार्दवे तु ज्ञाते पाचनादियोगः कार्यः तथा च वक्ष्यति । ततः पक्वेषु दोषेषु लंघनाद्यैः प्रशस्यते कषाय इति ।

अथ ता पेया वक्तुमुपक्रमते ।

प्राग्लाजपेयां सुजरां सशुंठीधान्यपिप्पलीम् ॥ २६ ॥
ससैंधवां तथाम्लार्थी तां पिबेत्सह दाडिमाम् ।

प्राक् पूर्वं सर्वाभ्यः पेयाभ्यो लाजपेयां पिबेत् । न तु यवादिप्रकृतिजां पेयां । कीदृशीं । सुजरामल्पलाजत्वाद् यस्य शीघ्रं जरा याति तां । तथा सशुंठीधान्यपिप्पलीं शुंठयादिभिः सृतामिति बोध्यं । अत एव ससैंधवामिति पृथग् निर्दिष्टं । अन्यथा सशुंठीं धान्यपिप्पलीं सैंधवामिति निर्देशं कुर्यात् । मुनिरप्याह । लाजपेयां च सुजरां पिप्पलीं नागरैः सृतामित्यादि । ससैंधवामित्यत्र सशब्दस्य ईषत् पर्यायत्वादल्पसैंधवामिति बोध्यं । तथा आम्लार्थी यो ज्वर्याम्लं प्रार्थयते स तां पूर्वोक्तां पेयां सहदाडिमां पिबेत् । पूर्वस्याः पेयायाः सदाडिमत्वमेवास्या विशेषः । वोपसर्जनस्येति सह शब्दस्य स भावः ।

सृष्टविड्बहुपित्तो वा सशुंठीमाक्षिकां हिमां ॥ २७ ॥

पिबेदिति वर्तते सृष्टविड्भिन्नवर्चा ज्वरी बहुपित्तो वा सशुंठीमाक्षिकां हिमां पेयां पिबेन्नोष्णां नान्यथा यो ज्वरी धान्यपिप्पल्यावत्रान्याथ्यौ शुंठीग्रहणात् । अत्र च शुंठ्या द्रव्येभ्योऽसंयोगान्मधुरपाकत्वादग्निमांद्योत्सारणोपक्षीणशक्तित्वाद् युक्तः पित्ते प्रयोगः । एवमन्यत्रापि शुंठ्याः प्रयोगे चिंत्यम् । सैंधवं तु तावन्मात्रं सर्वत्राविरुद्धमेव ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

बस्तिपार्श्वशिरःशूली व्याघ्रीगोक्षुरसाधिताम् ।

बस्त्यादिशूली व्याघ्रीगोक्षुरसाधितां पेयां पिबेत् ।

पृष्टीपर्णीबलाबिल्वनागरोत्पलधान्यकैः ॥ २८ ॥
सिद्धां ज्वरातिसार्यम्लां पेयां दीपनपाचनीम् ।

पृष्टीपर्ण्यादिसाधितां पेयां दीपनपाचनीं ज्वरातिसारानम्लां पिबेत् । दीपनी चासौ पाचनीचेति पुंवत्कर्मधारयेति पुंवद्भावः । अत्राम्लग्रहणं न कर्तव्यं । यतः सर्वत्र पेयाप्रसंगेऽम्लार्थी यो ज्वरी स दाडिमां पेयां पिबेदित्युक्तं । तस्मात्किमनेन ब्रूमः । अम्लाभिलाषी भवतु वा मा भवतु । तथाप्यम्लामेव ज्वरातिसारी पिबेदित्यस्यार्थस्य द्योतनार्थमम्लामित्युक्तम् ।

ऱ्हस्वेन पंचमूलेन हिक्कारुक्श्वासकासवान् ॥ २९ ॥
पंचमूलेन महता कफार्तोयवसाधिताम् ।
विबद्धवर्चाः सयवां पिप्पल्यामलकैः कृताम् ॥ ३० ॥
यवागूं सर्पिषा भृष्टां मलदोषानुलोमनीम् ।

पिबेत्सिद्धामित्यत्र वर्तते । ऱ्हस्वेन बृहत्यादिना पंचमूलेन सिद्धां पेयां हिध्मादिवान् पिबेत् । कफार्तो नरो बिल्वादिना महता पंचमूलेन सहयवसाधितां पिबेत् तंडुला एवात्र प्रकृतित्वेन योज्याः । यवास्तु क्वाथ एव । विबद्धं विष्टब्धं वर्चः पुरीषं यस्य स नरः सयवां यवप्रधानां पिबेत् । किंभूतां पिप्पल्यामलकैः सृतां । तथा सर्पिषा भृष्टां सम्यगाज्येन संस्कृतां । तथा मलः पुरीषादिदोषो वातादिस्तेषामनुलोमनीम् स्वमार्गप्रवृत्तिनीं ।

चविकापिप्पलीमूलद्राक्षामलकनागरैः ॥ ३१ ॥
कोष्टे विबद्धे सरुजि

कोष्टे विबद्धे विबद्धदोषाधिष्ठाने । तथा सरुजे चविकादिभिः साधितां पेयां पिबेत् ।

पिबेत्तुषरिकर्त्तनि ।
कोलवृक्षाम्लकलशीधावनीश्रीफलैः कृताम् ॥ ३२ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

अस्वेदनिद्रस्तृष्णार्तः सितामलकनागरैः ।
सिताबदरमृद्वीकासारिवामुस्तचंदनैः ॥ ३३ ॥
तृष्णाच्छर्दिपरोदाहज्वरघ्नीं क्षौद्रसंयुताम् ।

तु पुनरर्थे । परिकर्तनं परिकर्तिकाछेदनमिवानुभवः स यस्यास्ति स परिकर्तिकोष्टस्तस्मिन्परिकर्तनि तु कोष्टे कोलादिभिः साधितां पेयां पिबेत् । श्रीफलं बिल्वफलं ।

कुर्यात्पेयौषधैरेव रसयूषादिकानपि ॥ ३४ ॥

पेयोद्दिष्टैरेवौषधैर्मांसरसादयोपि यथोपयोगं कर्तव्याः। तथाच संग्रहेऽभ्यधायि । कुर्यात् पेयौषधैरेव रसयूषादिकानपि। रसोत्र मांसरसः। यूषा मुद्गादिसंबंधिनः क्वाथाः । आदिग्रहणात् पानीयमस्तुतक्रव्यंजनादयो गृह्यंते । पेयादिषु च द्रव्यपरिमाणादिकं पूर्वोक्तं सूदशास्त्रादिभ्यो वावगंतव्यं । तथा च तंत्रांतरे । पेयायूषरसाद्येषु रसाला पानकादिषु । द्रव्यमात्रां प्रयुंजीत लोकसिद्धां यथार्हत इति । यस्य पुंसो यत्परिमाणैर्द्रव्यैर्मात्रा योग्या तस्य तत्परिमाणैरेव पेयादयः कार्या इत्यर्थः। अन्ये त्वेवं मन्यंते । पेयायूषरसाद्येषु द्रव्यपरिमाणमल्पमेव कल्पयितव्यं । पानार्थे च यद् द्रव्यैः साधितं तोयमुक्तं तदल्पपरिमाणद्रव्यैरेव साधनीयं। अल्पपरिमाणेनैव द्रव्येण तत्तोयं सम्यक् पाच्यते। तथा च खारणादिरपठीत् । बहुद्रव्यो घनः क्वाथः स्वच्छमल्पौषधं जलमिति। श्रपणक्रियासामान्येप्यस्योभयस्य पृथक्संज्ञाविनिर्देशो द्रव्यपरिमाणभेदादयं क्वाथ इदं जलमिति । ज्वरिणां च प्रथमं यथाच्छाः पेया देयाः। तथा यूषरसा अप्यच्छा एव देया अग्निमांद्यभयात्। क्वाथोप्यत एव बहुपरिमाणद्रव्यसाध्यत्वाद्घनतया तिक्तरसद्रव्यकृतोपि प्रथमं ज्वरे निषिद्धः । अस्वेदनिद्रो नरस्तृष्णार्तश्च सितादिभिः साधितां पेयां पिबेत्। किं सर्वत्र ज्वरे सर्वाः सर्वदा सर्वस्मिन्देशे पेया देया। नेत्याशंक्याह ।

मद्योद्भवे मद्यनित्ये पित्तस्थानगते कफे ।
ग्रीष्मे तयोर्वाधिकयोस्तृट्छर्दिदाहपीडिते ॥ ३५ ॥
ऊर्ध्वं प्रवृत्ते रक्ते च पेयां नेच्छंति

Indira Gandhi National Centre for the Arts

मद्योद्भव इत्यादिष्वर्थेषु पेयां नेच्छंति मुनय इति शेषः । मद्येनोद्भवति यस्तस्मिन् मद्योद्भवे ज्वरे । तथा मद्यनित्ये पुरुषे । तथा कफे पित्तस्थानगते सति । तथा ग्रीष्मकाले तथा तयोर्वाधिकयोः । तथा तयोरिति पित्तकफौ परामृश्येते । पित्तकफयोश्चाधिक्ये पित्तस्थाने गते कफ इत्यतस्तयोरेव प्रकृतत्वात् । तथा तृट्छर्दिदाहैः समुदितैः पीडिते पुरुषे यो ज्वरस्तस्मिंश्च प्रत्येकं तु तृडार्तेऽनुज्ञातैव । अस्वेदनिद्रस्तृष्णार्तइत्युक्तेः । दाहार्तेपि सृष्टविड्बहुपित्ते चेत्याह । तथा यस्योर्ध्वंप्रवृत्ते रक्ते ज्वरस्तस्मिंश्च पेयां नेच्छंति । तेषु तर्हि किं कार्यमित्याह ।

तेषु तु ।
ज्वरापहैः फलरसैरद्भिर्वा लाजतर्पणम् ॥ ३६ ॥
पिबेत्सशर्कराक्षौद्रं

तेषु पुनर्विषयभूतेषु लाजतर्पणान् लाजसक्तून् पिबेत् । पेयावसरे । नतु यवसक्तून् पिबेत् । ज्वरापहैः । फलरसैः द्राक्षामलकादीनां ज्वरघ्नानां फलानां रसैः स्वरसैः । अथवा तद्रसैः क्वाथैः । अथवाद्भिर्जलैः क्वथितशीतलैरित्यर्थाद्गम्यते । किंभूतान् लाजतर्पणान् । सशर्कराक्षौद्रान् ।

ततो जीर्णे च तर्पणे ।
यवाग्वामोदनं क्षुद्वानश्नीयाद्भ्रष्टतंडुलम् ॥ ३७ ॥
दकलावणिकैर्यूषै रसैर्वा मुद्गलावजैः ।

ततस्तर्पणपानादनंतरं जीर्णे तर्पणे । यवाग्वां वेति । यवागूपानार्हे नरे यवाग्वां जीर्णायां क्षुद्वान् पुरुषो जातबुभुक्षः सन् द्वितीयेन्नकाल ओदनमश्नीयात् । किंभूतं भृष्टास्तंडुला यस्मिन् । किं केवलमोदनं भुंजीत नेत्याह । दकेत्यादि । दकलावणिकैर्मुद्गकुलित्थादीनां संबंधिभिर्यूषैः क्वाथैरोदनमद्यात् । अथवाऽवस्थावशान्मुद्गलावजैरोदनमद्यात् । मुद्गलावजैरितिवक्तव्ये रसैरिति पृथङ्निर्देशो लावजरसानां प्राधान्यज्ञापनार्थं । तथा लावरसाः संस्कार्याः । संस्कारकाश्च मुद्गाः । अतएव । बहुमात्राणां लावानामल्पानां च मुद्गानामत्रोपयोगः कार्य इत्यवतिष्ठते । नातिमांसास्तनुरसा

Indira Gandhi National
Centre for the Arts

दकलावणिकाः स्मृता इति केचिदाहुः । अन्ये त्वाचक्षते । अल्पमांसपटुस्नेहा दकलावणिकाः स्मृता इति ।

इत्ययं षडहो नेयो बलं दोषं च रक्षता ॥ ३८ ॥

इति पूर्वोक्तेन प्रकारेण प्रथमो ज्वरस्य षडहो नेयोऽतिवाह्यो नान्यो ज्वरस्य संबंधीत्ययमिति निर्देशाल्लभ्यते । किं कुर्वता भिषजा षडहो नेयः । बलं रक्षता । तथा दोषं तत्काले सामं वाताद्यन्यतमं पृथक् संसृष्टं सन्निपतितं वा तज् ज्वरकारणं रक्षता तत्र तद्रक्षां कुर्वता । तथा असौ दोषः कृच्छ्रसाध्यतामसाध्यतां वा न याति । अत्र च यदि किल बलरक्षार्थं संतर्प्पणं क्रियेत । तदा संतर्पणस्यामवृद्धिहेतुत्वात्सामो दोषो वर्द्धेत । अथामदोषक्षपणार्थमपतर्पणं कुर्वीत । तदा बलहानिः स्यात् । तस्मान्मध्यमया वृत्त्यावहितेन वैद्येनोभयं रक्षतोपक्रमः कार्यो नात्रावहेला कार्येत्यर्थः ।

ततः पक्वेषु दोषेषु लंघनाद्यैः प्रशस्यते ।
कषायो दोषशेषस्य पाचनः शमनो यथा ॥ ३९ ॥

लंघनाद्यैस्तिक्तरसावसानैस्तत्कालोचितैर्ज्वरकारीसाममलपाकहेतुभिः । पक्वेषु दोषेषु ततः षडहादूर्ध्वं कषायः प्रशस्यते । मुस्तापर्पटकादिः पाचनः प्राधान्येन पाचनसंज्ञया विहितत्वात् । तथा वक्ष्यमाणः कलिंगकादिरर्धश्लोकसमापनः पाचनः पंचप्रकारः शमनः प्रशस्यते । प्राधान्येन शमनसंज्ञया विहितत्वात् । तथा चाध्येष्यते तंत्रकृत् । पंचैते संततादीनां पंचानां शमना मता इति । तदेदुभयं पाचनशब्दश्रुत्याक्षिप्तो मुस्तापर्पटकादिः शमनश्रुत्याक्षिप्तः कलिंगकादिः कषायः क्वाथः प्रशस्यते । कस्य पाचन इत्याह । दोषशेषस्य । अत एव पक्वेषु दोषेषु लंघनाद्यैरित्यल्पपक्वेषु पक्वप्रायेष्वीषदामेषु दोषेष्विति बोध्यं। अन्यथा पक्वस्य पाचनमयुक्तमिव स्यात्। पिष्टपेषणन्यायेनानर्थकत्वात् । तथा चापक्वं यद्वस्तुजातं । तदाग्निः पचति पचतमाग्निं पाचनः पाचयति । एवं च पाचक्याभावात् किमग्निः पचतु किंवा कषायः पाचयत्वित्यनुपपन्नमेवैतत् स्यात् । यदा पुनर्मुस्तापर्पटकादिः कलिं-

Indira Gandhi National Centre for the Arts

गादिरन्यो वा कश्चित्कषायस्तिक्ताद्यन्यतमो वातादिदोषज्वरशांत्यर्थं प्रयुज्यते। तदा पाचनोभवन्नपि शमनसंज्ञो न पाचनसंज्ञः। ननु प्रथम एव दिने तिक्तरसकषायमनुजज्ञौ तंत्रकृत्। तथा चोवाच। घनचंदनशुंठ्यंबुपर्पटोशीरसाधितं। शीतं तेभ्यो हितं तोयं पाचनं तृड्ज्वरापहमिति। तत्कथमेतदत्रोच्यते ज्वरिणः प्रसक्ततृषोवश्यं पानं किंचिद्वितरणीयं। न च मद्येक्षुरसदधिमस्त्वारनालक्षीरादीनामत्र योग्यत्वेपि ज्वरे ह्येवंविधानि निषिद्धानि तंत्रकृद्भिः शिशिरजलमथामदोषस्रोतःसंरोधाभिसादादीनावहेत् ज्वरं गाढतरं कुर्यात्। तस्मात्पानार्थे तिक्तसाधितमुष्णमंब्वनुमेने। द्रव्याणि चात्र स्वल्पैमात्रयैव योज्यानीत्यनंतरमेव प्रत्यपादि। किंच ज्वरितस्तृषितो जलवन्हौषधं पातुमपि न क्षमेत। किं च कतिपयान्येव घनादीनि जलसंस्कारेण पातुमनुमतानि न सकलान्यपीति कान्यनुक्तानि किं तर्हि विशिष्टप्रभावं दर्शयति। घनादीन्येव विशिष्टप्रभावत्वं चान्यत्रापि द्रव्याणां दृष्टं। यथा शमीफलं मधुरमपि केशघ्नं। तथाम्लमामलकं पित्तकफघ्नं। सैंधवं लवणमपि चक्षुष्यमित्याद्यन्यद्रप्यूह्यं। तस्माद् घनादीनां पानीयसंस्कारोपयोगो नवज्वरेपि हितः।

तिक्तः पित्ते विशेषेण प्रयोज्यः कटुकः कफे।

कषाय इति वर्तते। ज्वरस्य प्रकृतत्वात् पित्ते पित्तज्वरे तिक्तकषायकल्पनाप्रकारः प्रयोज्यः। तिक्तः पित्तविशेषेणेत्यतो विशेषनिर्देशेऽन्यदोषोत्थेपि ज्वरे तिक्तरसाधिष्ठितो द्रव्यकषायो यथावस्थं प्रयोज्यो न केवलं पित्तज्वराख्ये व्याधिदोषघ्नत्वात्। तथा तिक्तो रसो निसर्गत एव ज्वरघ्न शास्त्रेऽस्मिन्पठितः। यथा। तिक्तः स्वयमरोचिष्णुररुचिं कृमितृड्विषं। कुष्टमूर्छाज्वरोत्क्लेददाहपित्तकफान् जयेदिति। मुनिरप्यवोचत्। तिक्तो रसःस्वयमरोचिष्णुररोचकघ्नो विषघ्नः कृमिघ्नो मूर्छादाहप्रशमनस्तृष्णाप्रशमनस्त्वङ्मांसयोः स्थिरीकरणो ज्वरघ्न-इत्यादि। तस्माद्रसेषु यथा तिक्तरसस्य ज्वरघ्नत्वं तथा नान्येषां रसानामित्यवेहि गुडूच्यादेश्च द्रव्यस्य तिक्तरसत्वादेव ज्वरघ्नत्वस्य प्रतिपादितत्वात् पुनर्यज् ज्वरघ्नत्वमुक्तं तच्छक्त्युत्कर्षायेति बोध्यं। गुडूच्यादेश्च मुनिर्गुणमाह। यथा। तिक्ता मृता त्रिदोषघ्नी ग्रा-

Indira Gandhi National Centre for the Arts

हिण्युष्णा रसायनी। दीपनी ज्वरतृड्दाहकामलावातरक्तनुदिति। एवमन्येषामपि द्रव्याणामाधेयसामर्थ्याद्युत्कर्षसिद्धमपि पुनरुच्यते। तत्तेषां तस्य कर्मणा शक्त्युत्कर्षार्थं बोध्यं। कटुक इत्यादि। कटुरसाधिष्ठितो ज्वरघ्नद्रव्यविशेषजः क्वाथः। कफे ज्वरे प्रयोज्यो नतु यः कश्चित्कटुकद्रव्यकषायः। सर्वस्य ज्वरघ्नत्वानुपपत्तेः। यस्माद् द्रव्यप्रभावाद्विशिष्टमेव कटुरसाधिष्ठितं। किमपि यद् द्रव्यं तत्र् ज्वरघ्नमिति मंतव्यं। एतदेव च तस्माच्चार्यं ग्रंथकृत् कफे कटुको यौज्य इति जगाद।

पित्तश्लेष्महरत्वेऽपि कषायस्तु न शस्यते ॥ ४० ॥
नवज्वरे मलस्तंभात्कषायो विषमज्वरम्।
कुरुते रुचिहृल्लासहिध्माध्मानादिकानपि ॥ ४१ ॥

कषायः कषायरसाधिष्ठितद्रव्यजः कषायः स पित्तश्लेष्महरत्वेपि नवज्वरे तरुणज्वरे न शस्यते। कुत इत्याह। मलेत्यादि। कषायो ह्यत्र योजितो मलस्तंभात् कारणाद्विषमज्वरं सततकादिकं कुरुते। कषायस्तंभिता हि मलाः। कोष्ठमप्रतिपन्नत्वात् सम्यक्पाकमयांतःसंधिस्रोतोलीनाः कषायपानविहितवेगा असक्तत्वाद्विषममेव ज्वरं कुर्वंति। यदि हि तेषां कषायदानेन शक्तिहानिर्न कृता स्यात्। तदा संततमेवज्वरं कुर्युः। तस्मात् स्वल्पत्वात् सततादिकं विषमज्वरं कर्त्तुमेषां युक्तं। ननु पित्तश्लेष्महरत्वेपीत्यनर्थं। यतः कषायःपित्तकफहेतिपूर्वमुक्तं। अस्त्येवैतत्। अर्थविशेषज्ञापनार्थं तु पुनरुक्तं नवज्वर एकदोषजे सन्निपातजे वातकफजे वातपित्तजे केवलं कषायो न शस्तोपि तु पित्तश्लेष्मज्वरेपि न शस्तः। तस्मात् पित्तकफजेपि ज्वरे नायं योज्य इत्यर्थः। तथा कषायोयं योजितो न केवलं विषमज्वरं करोति। यावदरुच्यादींश्च करोति। अत्रापि मलस्तंभादिति संबध्यते। तेन यद्यथादिशब्देनानियतरूपाणामनेकानां व्याधीनां ग्रहणं प्राप्तं। तथापि मलस्तंभाद्ये व्याधय उत्पद्यंत अरुच्यादिरूपास्तेषामेवेह ग्रहणार्थमेवं संबंधः कृतः। तथा। विषमज्वरारुचिहृल्लासहिध्माध्मानादिकानपीत्येकविभक्त्यैव निर्देशः कर्त्तुं व्यवच्छिद्य पृथङ् निर्देशो यःकृतस्तेनेदं द्योत्यते। कषायः प्रयोजितोवश्यमेव विषमज्वरं कुरुते। अरु-

Indira Gandhi National Centre for the Arts

च्यादीन्पुनर्नावश्यं कुरुत इति। तदेवं कषायो रसविशेषो मलस्तंभादेव नवज्वरे निषिध्यते। नतु कल्पनावशात्। तथा च मुनिः। यः कषायकषायस्तु स वर्ज्यस्तरुणे ज्वरे। न तु कल्पनमुद्दिश्य कषायः प्रतिषिध्यत इति।

सप्ताहादौषधं केचिदाहुरन्ये दशाहतः।
केचिल्लघ्वन्नभुक्तस्य योज्यमामोल्बणे न तु॥ ४२॥

सप्ताहादनंतरमष्टमेहन्यौषधं ज्वरघ्नं यथायोग्यं सृतादिकल्पनया कल्पितं योज्यमिति केचिदेवाचार्या आहुः। अन्ये तु दशाहादूर्ध्वमौषधं मुस्तापर्पटकादिकं योज्यमाहुः। केचिदाचार्या लघ्वन्नभुक्तस्य नरस्यौषधं योज्यमित्याहुः। लघ्वन्नशब्देन मंडपेयादिकं भण्यते। ओदनतस्तस्य लघुत्वोक्तेः। लघ्वन्नं भुक्तं येनासौ लघ्वन्नभुक्तः। आहिताग्न्यादित्वान्निष्ठांतस्यापरनिपातः। परमतमप्रतिषिद्धमनुमतमेवेति सर्वमेतत् प्रमाणमवस्थावशेन प्रयोगार्हत्वात्। आमोल्बणे तु नामाधिकज्वरिणि पुरुषे पुनरौषधं ज्वरघ्नं मुस्तापर्पटकादिकं षडहादूर्ध्वं सप्ताहाद्दशाहाद्वा न योज्यं। किमिति चेत्याह।

तीव्रज्वरपरीतस्य दोषवेगोदये यतः॥
दोषेथवातिनिचिते तंद्रास्तैमित्यकारिणि॥ ४३॥
अपच्यमानं भैषज्यं भूयो ज्वलयति ज्वरम्।

तीव्रज्वरेण परितस्य ज्वरिणः पुंसो दोषवेगोदये दोषस्यामाद्याख्यस्योल्बणस्य वेगो मुस्ता च पर्पटकादिनोक्तेशाद्दोषवेगस्तस्योदयः प्रादुर्भावः दोषवेगोदयः। अथ चोल्बणामस्य वातादेर्दोषस्य वेगोदयस्तस्मिन्दोषवेगोदये सति। अथवा तथैव दोष आमाख्येऽतिनिचितेऽतिशयेन संचयं प्राप्ते वातादौ वा दोष उल्बणे। अत एव तंद्रास्तैमित्येऽवश्यं करोति। तस्मिंस्तंद्रास्तैमित्यकारिणि यतो यस्मात्तदानीमामच्छन्नतया पावकेनापच्यमानं भैषज्यमौषधं मुस्तापर्पटकादिसृतादिकल्पनाकल्पितंतदौषधं प्रयुक्तं भूयः पुनरपि ज्वरं ज्वलयन्युत्तेजयति। न शमयति। तस्मादामोल्बणे ज्वरे न षडहादूर्ध्वं नापि सप्ताहान्नच दशाहादूर्ध्वं भैषज्यं योज्यं। कदा तर्हि योज्यमित्याह।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

मृदुज्वरो लघुर्देहश्चलिताश्च मला यदा ॥ ४४ ॥
अचिरज्वरितस्यापि भेषजं कारयेत्तदा ॥

मृदुज्वर उपद्रवमृदुतया । लघुः पटुर्देहः । चलिता मला मूत्रपुरीषादयः । मृदुज्वर इत्यादिलक्षणावस्था यदा भवति तदाऽस्यामवस्थायामचिरज्वरितस्याप्यनतिक्रांतषडहस्यापि भैषज्यं योज्यं । अपिशब्दात् किं पुनः षडहातीतज्वरितस्यैवंलक्षणायामवस्थायामुत्पन्नायां तदौषधं च योज्यमित्येवं व्याध्यवस्था कालतो गरीयसीत्युक्तं भवति ।

अथ तदौषधमाह ।

मुस्तया पर्पटं युक्तं शुंठ्या दुस्पर्शयापि वा ॥ ४५ ॥
पाक्यं शीतकषायं वा पाठोशीरं सवालकम् ।
पिबेत्तद्वच्च भूनिंबगुडूचीमुस्तनागरम् ॥ ४६ ॥

मुस्तया सह पर्पटं युक्तमथवा शुंठ्या धन्वयासेन युक्तं पाक्यं शृतं शीतकषायं शीतकल्पनाकल्पितं वा कृत्वा पिबेदिति वक्ष्यमाणेन संबंधः । पाठा चोशीरं वालकेन सह शृतं शीतं वा पिबेत् । स्वरसकल्कफांटाख्य कल्पनाभ्यः शृतः शीतस्य कल्पनाद्वयकल्पितस्यास्य तथा सामर्थ्यस्य दृष्टत्वादेतत्कल्पनायुगलमुपन्यस्तवान् । वा समुच्चये भिन्नक्रमः । तद्वदित्यादि न केवलं मुस्तापर्पटकं पिबेत् । तथा पाठोशीरं सवालकं पिबेयावद्भूनिंबं गुडूचीमुस्तानागरमपि पिबेदिति ।

यथायोगमिमे योज्याः कषाया दोषपाचनाः ।
ज्वरारोचकतृष्णास्यवैरस्यापक्तिनाशनाः ॥ ४७ ॥

इमे पूर्वोक्ता मुस्तापर्पटकादयः कषाया यथायोगं योगानतिक्रमेण योज्याः । कषायो यस्मिन् ज्वरे दातुं युक्तः स तत्र योज्य इति यथायोगं योज्याः । किंक्रिया एते स्युरित्याह । दोषपाचनाः दोषस्यामाख्यस्य पक्वमायस्य पाचनाः । तंत्रांतरे चोक्तं । मयुक्तं पाचयेदामं यत्तत्पाचनमुच्यते । पित्तादिजिन्निरामक्षं यत्स्यात्तच्छमनं मतमिति । अत्र मुस्तापर्पटस्य

Indira Gandhi National Centre for the Arts

पूर्वमुपन्यासो ज्वरनाशनेभ्योऽन्येभ्योऽस्य मुस्तापर्पटस्य प्राधान्यप्रदर्शनार्थः। तथा चाचार्योग्र्याणां मध्ये मुस्तापर्पटकं ज्वर इति निर्देक्षते तस्मान्मुस्तापर्पटस्यैव ज्वरनाशने ज्यायस्त्वमित्यवेहि व्याधिप्रतिपक्षत्वात्।

कलिंगकाः पटोलस्य पत्रं कटुकरोहिणी ॥ ४८ ॥
पटोलं सारिवा मुस्ताः पाठाः कटुकरोहिणी ।
पटोलं निंबत्रिफलामृद्वीकामुस्तवत्सकाः ॥ ४९ ॥
किराततिक्तममृता चंदनं विश्वभेषजम् ।
धात्रीमुस्तामृताक्षौद्रमर्धश्लोकसमापनाः ॥ ५० ॥
पंचैते संततादीनां पंचानां शमना मताः ।

कलिंगकादयोरर्धश्लोके समापनं येषां तेऽर्धश्लोकसमापनाः पंचैते पंचानां संततादीनां यथासंख्यं शमना मताः। मुनीनामिति शेषः।

दुरालभाऽमृता मुस्ता नागरं वातजे ज्वरे ॥ ५१ ॥
अथवा पिप्पलीमूलगुडूची विश्वभेषजम् ।
कनीयः पंचमूलं च

दुरालभादि पाचनं वातजे ज्वरे। अथवा पिप्पल्यादिकं वातजे ज्वरे। कनीयो बृहत्यादिकं पंचमूलं च वातजे ज्वर इति योज्यं।

पित्ते शक्रयवा वनम् ॥ ५२ ॥
कटुका चेति सक्षौद्रं मुस्तापर्पटकं तथा ।
सधन्वयासभूनिंबं

पित्ते पित्तजे ज्वरे शक्रयवादयः समाक्षीका मताः पित्तजेऽपि मुस्तापर्पटकं धन्वयासकिराततिक्तकाभ्यां सहितं हितं।

वत्सकाद्यो गणः कफे ॥ ५३ ॥
अथवा वृषगांगेयीशृंगबेरदुरालभाः ।

वत्सकमूर्वाभार्गीत्यादिः कफे मतः। अथवा वृषादिर्गांगेयी मुस्ता।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

रुग्विबंधानिलश्लेष्मयुक्ते दीपनपाचनम् ॥ ५४ ॥
अभया पिप्पलीमूलशम्याककटुकाघनम् ।

रुग्विबंधादियुक्ते ज्वरेऽभयादिघनावसानं दीपनपाचनं ।

द्राक्षामधूकमधुकं रोध्रकाश्मर्यसारिवाः ॥ ५५ ॥
मुस्तामलकह्रीबेरपद्मकेसरपद्मकम् ।
मृणालचंदनोशीरनीलोत्पलप्ररूषकम् ॥ ५६ ॥
फांटो हिमो वा द्राक्षादिर्जातीकुसुमवासितः ।
युक्तो मधुसितालाजैर्जयत्यनिलपित्तजम् ॥ ५७ ॥
ज्वरं मदात्ययं छर्दिर्मूर्छादाहं श्रमं भ्रमम् ।
ऊर्ध्वगं रक्तपित्तं च पिपासां कामलामपि ॥ ५८ ॥

द्राक्षादिरयं गणः फांटः सद्योभिषुतपूत इत्येवंलक्षणस्तथा हिमः शीतो वा रात्रि द्रवे स्थित इत्येवं लक्षणस्तथा जातिकुसुमैः सुगंधिकृतो मधुसितालाजैर्युक्तो वातपित्तज्वरं जयति । मदात्ययादींश्च ।

पाचयेत्कटुकां पिष्ट्वा कर्परेऽभिनवे शुचौ ।
निष्पीडितो घृतयुतस्तद्रसो ज्वरदाहजित् ॥ ५९ ॥

कटुकां पानीयेन पिष्ट्वा कर्परे मृद्घटखंडेऽभिनवे तथा शुचौ पाचयेत् । तस्या रसो निष्पीडितः सर्पिर्युक्तो ज्वरदाहौ जयति ।

कफवाते वचा तिक्ता पाठारग्वधवत्सकाः ।
पिप्पलीचूर्णयुक्तो वा क्वाथश्छिन्नोद्भवोद्भवः ॥ ६० ॥

वातश्लेष्मणि कषायकल्पनया कल्पिता वचादयो मताः । अथवा गुडूचीसंभवः क्वाथः पिप्पलीचूर्णयुतो मतः ।

व्याघ्रीशुंठ्यमृताक्वाथः पिप्पलीचूर्णसंयुतः ।
वातश्लेष्मज्वरश्वासकासपीनसशूलजित् ॥ ६१ ॥

व्याघ्र्यादिक्वाथः कणाचूर्णसंयुक्तो वातश्लेष्मज्वरादिजित् ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

पथ्या कुस्तुंबरी मुस्ता शुंठी कट्टृणपर्पटम् ।
सकट्फलवचाभार्ङ्गीदेवाह्वं मधुहिंगुमत् ॥ ६२ ॥
कफवातज्वरेष्वेव कुक्षिहृत्पार्श्ववेदनाः ।
कंठामयास्यश्वयथुकासश्वासान्नियच्छति ॥ ६३ ॥

पथ्यादिपाचनं सिद्धचूर्णं मधुहिंगुभ्यां द्विशाणमात्राभ्यां संयुतं कफवातज्वरेष्वेवादीन् पराकरोति ।

आरग्वधादिः सक्षौद्रः कफपित्तज्वरं जयेत् ।
तथा तिक्तोषोशीरत्रायंतीत्रिफलामृताः ॥ ६४ ॥

आरग्वधेंद्रयवादिभिर्माक्षिकसहितः कफपित्तज्वरं जयति । तथा तिक्तादयः कफपित्तज्वरं घ्नंति ।

संनिपातज्वरे व्याघ्री देवदारुनिशावनम् ।
पटोलपत्रनिंबत्वक्त्रिफलाकटुकायुतम् ॥ ६५ ॥

संनिपातज्वरे व्याघ्र्यादिकटुकांतं पाचनं ।

नागरं पौष्करं मूलं गुडूचीकंटकारिका ।
सकाशश्वासपार्श्वार्तौ वातश्लेष्मोत्तरे ज्वरे ॥ ६६ ॥

नागरादिपाचनं वातश्लेष्माधिके ज्वरे कासादीन्निहंति ।

मधूकपुष्पं मृद्वीका त्रायमाणा परूषकम् ।
सोशीरतिक्ता त्रिफला काश्मर्यं कल्पयेद्धिमम् ॥ ६७ ॥
कषायं तं पिबन् काले ज्वरान्सर्वान्व्यपोहति ।

मधूकपुष्पादिकं काले शास्त्रोक्ते शीतकषायं पिबन् ज्वरान्सर्वानेकदोषद्विदोषत्रिदोषजानपोहति । उपसर्गादस्यत्यूहेवाच्यमिति परस्मैपदं ।

जात्यामलकमुस्तानि तद्वद्धन्वयवासकम् ॥ ६८ ॥
बद्धविट् कटुकाद्राक्षा त्रायंती त्रिफलागुडान् ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

जाती पल्लवा। आमलकानि मुस्तं धन्वयासकं। तद्वत्पूर्ववच्छीतकषायं कल्पयित्वा पिबेत्सर्वान् ज्वरान्हंति। धन्वयवासकं चेति। चशब्दोत्र लुप्तो द्रष्टव्यः। तदेतैश्चतुर्भिर्द्रव्यैरेतत् पाचनं। केचित्तु धन्वयवासकं पृथगेवेच्छंति तस्मादेतत्कृतोपि कषायः पूर्ववद्बोध्यः। तथाच बद्धविट्पुरुषः कटुकादिकं कषायं पिबेदिति वर्त्तते नतु हिममिति। शीतस्य मलस्तंभहेतुत्वादस्य चौषधस्य शोधनरूपत्वाद्गुडा सुधा गुड इत्यन्ये।

जीर्णौषधोन्नं पेयाद्यमाचरेच्छ्लेष्मवान्नतु ॥ ६९ ॥
पेया कफं वर्धयति पंकपांसुषु वृष्टिवत्।

जीर्णं परिणतमौषधं यस्य स जीर्णौषधः सन् पेयाद्यमेव पूर्वोक्तमन्नं भुंजीत। अद्यत इत्यन्नमिति कृत्वा पेयादेरप्यन्नत्वं। आदिशब्देन यूषादिग्रहः। नच सर्वः कश्चित्पेयादिकमाचरेदित्याह श्लेष्मवान्नतु। जीर्णौषधोपि श्लेष्मवान्नरः पेयादिकं नाश्नीयात्। किमित्याह। पेयेत्यादि। यतः पेया कफं वर्धयति। विलीनरूपस्य कफस्य स्त्यानभावतामुत्पादयति। स्थानविशेषमुपर्युपरि भावयतो यदा यमुत्पादयति न तु सा कफं साक्षाद्वर्धयति वर्धयतेरर्थोऽनेकार्थत्वाद्धातूनामिति। एष एवार्थोनुरूपतंत्रकारदृष्टांतदर्शनादव गम्यते तथाचाह। पंकं पांसुषु वृष्टिवदिति। यथा पांसुषु वृष्टिः पतति नतु पंकं वर्धयतीति शिथिलरूपतां पांसूनामपास्य निबिडरूपतामिव तेषामुत्पादयति। न पांसुनवृष्टिर्वर्धयत्याधिक्यं नयाति। न वर्धयतेरत्रार्थस्तंत्रकारस्यार्थ एवं विवक्षतो भविष्यतः। तदानीमत्रैवं स्पष्टमेव दृष्टांतमदर्शयिष्यत। यथा पेया कफं वर्धयति यथा वृष्टिर्नदीजलमिति।

तच्च तंत्रकारोऽमुनैवानुसारेणाह।

श्लेष्माभिष्पन्नदेहानां मतः प्रागपि योजयेत् ॥ ७० ॥
यूषान् कुलत्थचणकदाडिमादिकृतान् लघून्।
रूक्षांस्तिक्तरसोपेतान् हृद्यान् रुचिकरान् पटून् ॥ ७१ ॥

अभिष्पन्न इति। अभिपूर्वात्स्पंदः स्रवणार्थो व्युत्पादितः। श्लेष्मणांस्तु निरूपेणैवाभिष्पन्नः क्लिन्न इव देहो येषां ते श्लेष्माभिष्पन्नदेहास्तेषाम

तो ज्वरिणां प्रागपि प्रथमपथ्यावसरेऽपि यूषान् योजयेदित्यपि शब्दस्यार्थः। किंभूतान् यूषान् । कुलत्थादिकृतान् । तथा लघून् । न कुलत्थादीनां लघुत्वात्तत्कृता यूषा लघव एव भविष्यंति । तत्किं लघूनित्यनेनात्रोच्यते। शिंबिधान्यानां मध्ये गुरवोपि राजमाषादयः संति तन्निवृत्त्यर्थमेतत्। अपि च। लघूनित्यनेन यूषप्रकृतिद्रव्यैरल्पपरिमाणैः कृतानि द्योतयति। यतोऽल्पपरिमाणैः कुलत्थादिभिः कृता लघुतराः स्युस्तस्माल्लघूनिति युक्तं। तथा रूक्षान् घृतभर्जनकादिरहितान् तथा तिक्तरसयुक्तान् तथा हृद्यानिष्टरसगंधवर्णस्पर्शयुक्तत्वाच्चेतस आह्लादकरान् । तथा रुचिकरान् । ज्वरिणोऽन्यस्य वा रोचिष्णून् तथा पटून् सलवणान्।

रक्ताद्याः शालयो जीर्णाः षष्टिकाश्च ज्वरे हिताः ।

रक्ताद्या रक्तो महान् सकलम इत्यादयः । तथा षष्टिका व्रीह्यादयोऽपि जीर्णाः पुराणा हिताः पथ्याः ।

श्लेष्मोत्तरे वीततुषास्तथा वाट्यकृता यवाः ॥ ७२ ॥

श्लेष्मोत्तरे प्रभूते श्लेष्मणि ज्वरे वीततुषा अपनीतत्वचो यवाश्च पथ्याः। कीदृशा वाट्यकृता भृष्टविदलीकृता इत्यर्थः ।

ओदनस्तैः शृतो द्वित्रिःप्रयोक्तव्यो यथायथम् ।
दोषदूष्यादिबलतो ज्वरघ्नक्राथसाधितः ॥ ७३ ॥

ओदनस्तैरक्तशाल्यादिभिः पूर्वोक्तैश्च कृतो ज्वरिणो यथायथं यो यस्योदानयोग्यः स तस्य प्रयोक्तव्यः । किंभूतः द्वित्रिःशृतो द्वौ वारौ त्रीन् वारान् जलं दत्त्वा धौतशृतः। कथं प्रयोज्यः । दोषदूष्यादिबलेन ज्वरघ्नैर्ज्वरापहैर्द्रव्यैः क्वाथं कृत्वा तेन क्वाथेन साधितो दोषस्य वातादेर्बलं तथा दूष्यस्य रसादेर्बलमपेक्ष्यादिग्रहणाद्देशकालवयःसत्वसात्म्यशरीराहारबलं गृह्यते । एकाहादिकानां ज्वरिणामकृतपेयानामेव कुलत्थमुद्गचणकादियूषा उक्ताः। संप्रति सामान्येन ज्वरिणां कृतपेयानां यूषादीनाह ॥

मुद्गाद्यैर्लघुभिर्यूषाः कुलत्थैश्च ज्वरापहाः ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

मुद्गाद्यैः शिंबिधान्यैर्लघुभिः कृता यूषास्तथा कुलत्थैः कृता यूषा ज्वरघ्नाः । मुद्गाद्यैरित्यादिः प्रकारे । तेन सुजरामुद्गमाषचणककुलत्थमकुष्टमसुरादयो गृह्यंते । मुद्गशब्दस्यादौ निर्देश इदं बोधयति । यूषसाध्ये व्याधौ बाहुल्येन मुद्गयूषः कार्यो मुद्गानां पथ्यतमत्वात् । तथाचोवाच मुनिः । मुद्गः शिंबिधान्यानां पथ्यत्वे श्रेष्ठतम इति।ननु मुद्गाद्यैरित्यादिशब्देनैव कुलत्था गृहीता एव किं पृथग्निर्देशेन ब्रूमहे ।कुलत्थयूषस्य ज्वरविषये विरलः प्रयोगः कार्य इति सूचयितुं पृथक्कृतो निर्देश इति । तथा च कुलत्था एवंगुणाः । उष्णाः कुलत्थाः पाकेऽम्लाः शुक्राश्मश्वासपीनसान् । कासार्शःकफवातांश्च घ्नंति पितास्रदाः परं । इत्येवमुष्णत्वादम्लविपाकित्वादतिपित्तास्रकारित्वात्कुलत्थानां यूषो बहुद्रव्यपरिमाणो बहुमात्रो युक्तो ज्वरस्य न शांतये संपद्यते । प्रत्युत वृद्धये स्यादिति संभाव्यते पित्तविरुद्धत्वात् । तस्मादल्पपरिमाणद्रव्यसाधितोऽल्पमात्रया कुलत्थयूषः श्लेष्माद्युपशमकृद्यावन्मात्रः स्यात्तावानेव प्रयोज्यत इति स्थितं ।

कारवेल्लककर्कोटबालमूलकपर्पटैः ॥ ७४ ॥
वार्ताकनिंबकुसुमपटोलफलपल्लवैः ।
अत्यंतलघुभिर्मांसैर्जांगलैश्च हिता रसाः ॥ ७५ ॥
व्याघ्रीपरूषतर्कारीद्राक्षामलकदाडिमैः ।
संस्कृतापिप्पलीशुंठीधान्यजीरकसैंधवैः ॥ ७६ ॥

कारवेल्लकादिभि रसा ज्वरे हिताः । मुनिस्तु कारवेल्लकादीनां शाकत्वमेवेच्छति । खारणादेरप्युक्तं । पटोलं सफलं निंबं कर्कोटककटिल्लकं । शाकं पर्पटकं च स्यादिति । तथा जांगलैर्जांगलदेशप्राणिजैस्तदभावात्तत्तुल्यैरन्यदेशप्राणिजैरपि मांसैर्हिता रसा व्याघ्र्यादिभिः संस्कृतास्तथा पिप्पल्यादिभिः संयुता इति वक्ष्यमाणेन संबंधः संस्कारमात्रयोगभाजाः पिप्पल्यादयोऽत्र योज्या इत्यर्थः ।

सितामधुभ्यां प्रायेण संयुता वा कृताकृताः ।

प्रायेण केचिदेव सितामधुभ्यां युक्ता अवस्थावशात्तु सर्व एव । कि-

Indira Gandhi National Centre for the Arts

भूता रसा यूषाश्चैवंविधाः कार्याः । कृताकृताः । दाडिमाजाजिशुंठ्याद्यैरपि संस्कृता यूषा रसाश्च कृताः । विपरीतास्त्वतोऽकृताः ।

अनम्लतक्रसिद्धानि रुच्यानि व्यंजनानि च ॥ ७७ ॥
अच्छान्यनलसंपन्नानि ।

अनम्लेन तक्रेण सिद्धानि । तथा रुच्यान्यभ्यवहर्तुमभिलषितानि । तथाऽच्छानि तनूनि न घनानि । तथाऽनलसंपन्नानि वन्हिपक्वानि । केचिद्वितक्रमपक्वमेवाच्छीकृत्य च संस्कृत्य शुंठीजीरकादिनाभ्यवहरंति । तन्निषेधायैतदुक्तं । एवंविधानि व्यंजनानि तेमनानि रसकषायाण्योदनेन सहाभ्यवहर्तव्यानि ।

अनुपानेपि योजयेत् ।
तानि क्वथितशीतं च वारि मद्यं च सात्म्यतः ॥ ७८ ॥

अनुपानेप्यातुरस्य पश्चात्पानेपि तानि योजयेत् । तथा क्वथितशीतं च वारि । मद्यं च सात्म्यतः सात्म्यवशादनुपानेपि योजयेत् ।

सज्वरं ज्वरमुक्तं वा दिनांते भोजयेल्लघु ।
श्लेष्मक्षयविवृद्धोष्मा बलवाननलस्तदा ॥ ७९ ॥

सज्वरं नरं दिनांते भोजयेदथवा ज्वरमुक्तमचिरकालज्वरत्यक्तं । किंभूतं भोजनं भोजयत् । लघुमात्रया स्वभावादुभयथा यल्लघु किमित्यस्मिन् काले भोजयेत्याह । श्लेष्मेत्यादि । तदा तस्मिन्दिनांताख्ये काले यस्तेन विवृद्ध ऊष्मा स्वभावो यस्यानलस्य जठराग्नेरसौ श्लेष्मक्षयविवृद्धोष्माऽनलः । अत एव बलवान् तदा पक्तुं शक्तः ।

यथोचितेऽथवा काले देशसात्म्यानुरोधतः ।
प्रागल्पवन्हिर्भुंजानो न ह्यजीर्णेन पीड्यते ॥ ८० ॥

अथवा यथोचिते काले सज्वरं ज्वरमुक्तमातुरं भोजयेत् । यस्य यस्य य उचितः सात्म्य आहारकालस्तस्मिन् भोजयेत् । यथोचिते हि काले प्रायः क्षुदुपगमो जायते । कथं भोजयेदित्याह । देशेत्यादि । देशसात्म्यव-

Indira Gandhi National Centre for the Arts

शान्तं भोजयेदेव । नन्वेवं सति यस्य पूर्वाण्हे काले भोजनमुचितं तदा तस्य भोजने दीयमाने को गुणः स्यादित्याह । प्रागित्यादि । यस्मादल्पवह्निर्मंदाग्निः पूर्वाण्हे भुंजानोऽजीर्णेन न पीडयते न बाध्यते । अधुना सर्पिःपानकालं निरूपयति ।

कषायपानपथ्यान्नैर्दशाह इति लंघिते ।
सर्पिर्दद्यात्कफे मंदे वातपित्तोत्तरे ज्वरे ॥ ८१ ॥
पक्केषु दोषेष्वमृतं तद्विषोपममन्यथा ।
दशाहे स्यादतीतेपि ज्वरोपद्रववृद्धिकृत् ॥ ८२ ॥
लंघनादिक्रमं तत्र कुर्यादाकफसंक्षयात् ।

कषायस्य मुस्तापर्पटकादेः पानं कषायपानं तेन । तथा पथ्यान्नैः पेयायूषादिभिर्दशाह इत्यनेन प्रकारेण लंघितेऽतिक्रांते । तथेति प्रायेण क्षीणः कफः संभाव्यतेऽतो दशाहे लंघित इत्युक्तं । आमज्वरसंज्ञानिवृत्तिस्तु षडहादूर्ध्वं सप्तमे ह्यष्टमे वाऽहनि ज्वरस्य जायते। तथा च मुनिः। सप्ताहेन हि पच्यंते सप्तधातुगता मलाः । निरामश्चाप्यतः प्रोक्तो ज्वरः प्रायोष्टमेऽहनीति । तस्मात्कषायपानपथ्यान्नैरित्यादितो दशाहे लंघिते कफे मंदे क्षीणप्राये सर्पिर्दद्यात् । किंभूते ज्वरे । वातपित्तोत्तरे वातपित्ताधिके । अस्यामवस्थायां पक्केषु निरामेषु वातादिदोषेषु सर्पिर्दद्यात् । पक्केषु सर्पिर्दत्तममृतं महागुणमित्यर्थः । अन्यथा पुनरपक्केषु दोषेषु कफोत्तरे तत्सर्पिर्दत्तं विषोपमं विषतुल्यं दशाहेतिक्रांतेपि स्यादतोस्यामवस्थायां सर्पिर्दत्तं ज्वरस्य तदुपद्रवाणां च वृद्धिं करोति । तस्मादस्यामवस्थायां सर्पिःपानमयुक्तं । तत्र कफोत्तरे ज्वरे सति लंघनादिक्रमं कुर्यात् । कियंतं कालमाकफसंक्षयाद्यावत्कफस्य ज्वरकारिणोऽधिकस्य संक्षयः सम्यक् क्षयः । न धातुक्षयोपि यावद्यतः कफज्वरेपि विडंगादिसर्पिर्वक्ष्यति ।

अथ जीर्णज्वरचिकित्सामाह ।

देहधात्वबलत्वाच्च ज्वरो जीर्णोनुवर्त्तते ॥ ८३ ॥

जीर्णः पुराणो ज्वरो दीर्घकालमनुवर्त्ततेऽनुबध्नाति । कुतः । देहधात्व-

Indira Gandhi National Centre for the Arts

बलत्वात् । देहधातवस्तदारंभका रसरुधिरादयः । देहग्रहणाद्वातपित्तश्लेष्माणोपि धारणाद्धातव उच्यंते । देहधातूनामबलत्वं स्वल्पत्वं । तस्माच्च जीर्णो ज्वरोनुबध्नाति । तत्स्वभावमात्रादेवेति चशब्दस्यार्थः । जीर्णज्वरस्य शांत्यर्थं देहबलाधानार्थं च सर्पिःपानं हितमिति प्रतिपादयन्नाह ।

रूक्षं हि तेजो ज्वरकृत्तेजसा रूक्षितस्य च ।
वमनस्वेदकालांबुकषायलघुभोजनैः ॥ ८४ ॥
यः स्यादतिबलो धातुः सहचारी सदागतिः ।
तस्य संशमनं सर्पिर्दीप्तस्यैवांबुवेश्मनः ॥ ८५ ॥

रूक्षं यत्तेजस्तज्ज्वरकृत् । रूक्षमिति वचनाद्देहोष्मा जाठरोनलो गृह्यते । तस्यैव ज्वरकृतत्वात्तथोक्तं । मलास्तत्रस्वैःस्वैर्दुष्टा इत्यादिं यावज्ज्वरं निवर्त्तयंति । तेजसेत्यादि । जाठरानलस्यैव ज्वरकृतत्वेन ज्वरकृता रूक्षेण तेजसा रूक्षितस्य च पुंसः सर्पिः संशमनं । च शब्दाच्चान्यस्यापि । अत एवाह । वमनेत्यादि । वमनादिभी रौक्ष्यकृद्भिः कृतैस्तदानीं यः स्याद्भवेदतिबलः प्रवृद्धत्वादतिसमर्थो धातुः । को धातुः । सहचारी यः सहचरति तच्छीलो वाताख्यो धातुरग्निना सह चरति । नन्वेवं परस्परसहचरभावत्वेऽग्निरपि वायुना सह चरति ततोऽग्निस्वभावत्वात्पित्ताख्योपि धातुरिह सहचारी प्राप्तस्तन्निवृत्त्यर्थं सदागतिरित्याह । सदागतित्वं वायोरेवान्वर्थत्वेनोपपद्यतइति पित्तस्याग्रहणं । किं कस्य । यथा संशमनमंबुवेश्मनो ग्रहस्य दीप्तस्य ज्वलितस्य जलं यथा ।

वातपित्तजितामग्र्यं संस्कारमनुरुध्यते ।
सुतरां तत्ध्यतो दद्याद्यथा स्वौषधसाधितम् ॥ ८६ ॥

यस्माद्धृतं सर्वेषां वातपित्तजितामग्र्यं यथा न तथाऽन्यान्यौषधानि वातपित्तजितीत्यत एव प्रागभ्यधात् । सर्पिर्दद्यात्कफे मंदे वातपित्तोत्तरे ज्वर इत्यादि । यस्माच्च घृतं संस्कारमनुरुध्यतेऽनुवर्तते । गुणांतराधानं संस्कारं । ननु यथा घृतं स्वशैत्यमजहदेव संस्कारमनुवर्त्तत इत्येतच्च स्नेहविधौ प्रतिपादितमेव । अमुमेव च न्यायमंगीकृत्य मुनिरप्यवोचत् । ना-

Indira Gandhi National Centre for the Arts

न्यस्नेहस्तथा कश्चित् संस्कारमनुवर्त्तते । यथा सर्पिरतः सर्पिःसर्वस्नेहोत्तमं मतमिति । हि यस्मात् सुतरां संस्कारमनुरुध्यते घृतं तस्माद् घृतं जीर्णे वातपित्तोत्तरे निर्विकल्पं दद्यात् । कीदृशं । यथा स्वौषधसाधितं । यथायथं व्याधिप्रतिपक्षैरौषधैः पक्वं ।

विपरीतं ज्वरोष्माणं जयेत्पित्तं च शैत्यतः ।
स्नेहाद्वातं घृतं तुल्यं योगसंस्कारतः कफम् ॥ ८७ ॥

घृतं विपरीतं ज्वरोष्माणं जयेत् । ज्वरनिवर्तक ऊष्मा जाठरोनलो रूक्षतीक्ष्णादिगुणः स पक्तिस्थानान्निरस्तो ज्वरनिवर्तको घृतस्य स्निग्धशीतत्वादिगुणयोगाद्विपरीतः । एवं विपरीतं ज्वरोष्माणं घृतं जयेत्पित्तं च । शैत्यतः शैत्याद् घृतं जयेत्स्नेहात् । पित्तं सस्नेहमिति वचनात् । स्नेहात्स्निग्धत्वाद् घृतं वातं जयेन्नतु शैत्यात् । शीतोऽनिल इति वचनात् । कफं स्निग्धशीतत्वादिना तुल्ययोगसंस्काराभ्यां जयेत् । योगो युक्तिः । कफज्वरहरैर्द्रव्यैः सह योजनात्संस्कारो गुणाद्विधानं । योगश्च संस्कारश्च योगसंस्कारौ ताभ्यां घृतं कफं जयेत् । ननु विपरीतं ज्वरोष्माणं घृतं जयेदिति न घटते । घृतस्याग्निवृद्धिहेतुत्वात् । तथा च वक्ष्यति । स्नेहमेव परं विद्याद्दुर्बलानलदीपनं । नालं स्नेहसमिद्धस्य शमायान्नं सुगुर्वपीति । अत्राचक्ष्महे । घृतं स्नेहनत्वदीपनत्वाभ्यां वातशमनं कुर्वज्ज्वरोष्माक्षेपत्वं वातस्य विनिवार्य ज्वरोष्मणोपि रौक्ष्यतैक्ष्ण्यादियुतस्य घृतं विपरीतगुणत्वाच्छमं करोति न वृद्धिं । ननु यथा स्नेहाद्वातं शमयति तथा तत एवं स्नेहात्किमिति घृतं समानगुणत्वान्न पित्तं शमयति । ब्रूमः । जीर्णज्वरे लंघनादिभिरतिरूक्षेण ज्वरोष्मणा पित्तं रूक्षमेव संपन्नं स्नेहभागपरिक्षयान्न स्नेहमतः कथं कृत्वा त्वरयेत्तच्च घृतं पित्तमेव शमयति न वातं कोपयति । द्रव्यप्रभावत्वात्संस्नेहनत्वाच्च ।

पूर्वे कषायाः सघृताः सर्वे योज्या यथामलम् ।

पूर्वे कषायाः । प्रागुक्तानि पाचनानि सहघृतेन यथादोषं प्रयुंज्यात् । कथं । यथामलं दोषानतिक्रमेण ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

त्रिफलापिचुमंदलङ्मधुकं बृहतीद्वयम् ॥ ८८ ॥
समसूरदलं क्वाथः सघृतो ज्वरकासहा ।

त्रिफलादीनि मसूरदलानि चैषः क्वाथो घृतेन सहोपयोजितो ज्वरकासहा स्यात् ।

पिप्पलींद्रयवृषावनितिक्तासारिवामलकतामलकीभिः ॥ ८९ ॥
बिल्वमुस्तहिमपालनिसेव्यैर्द्राक्षयातिविषया स्थिरया च ।
घृतमाशु निहंति साधितं ज्वरमग्निं विषमं हलीमकम् ॥ ९० ॥
अरुचिं भृशतापमंसयोर्वमथुं पार्श्वशिरोरुजं क्षयम् ।

पिप्पलीत्यादिभिर्द्रव्यैः कल्कीकृतैर्घृतचतुर्थांशैस्तोयेन चतुर्गुणेन घृतापेक्षया साधितं घृतमाशु ज्वरं हंति विषमाग्न्यादींश्च ।

तैल्वकं पवनजन्मनि ज्वरे योजयेत्तृवृतया वियोजितम् ॥९१॥
तिक्तकं वृषघृतं च पैत्तिकेऽयच्च पालनिकया सृतं हविः ।

तैल्वकं घृतं वातव्याधिचिकित्सितोक्तं तृवृतया रहितं पिबेत् । पैत्तिके ज्वरे तिक्तकं कुष्टचिकित्सितोक्तं तथा वृषघृतं रक्तपित्तचिकित्सितोक्तमत्रैव वा वक्ष्यमाणं योजयेत् । पालनिकया त्रायंत्या यद्घृतं पक्कं तच्च पित्तज्वरे योजयेत् ।

विडंगसौवर्चलचव्यपाठाव्योषाग्निसिंधूत्थवयावशूकैः ॥ ९२ ॥
पलांशकैः क्षीरसमं घृतस्य प्रस्थं पचेज्जीर्णकफज्वरघ्नम् ।

विडंगादिभिः पलप्रमाणैर्घृतप्रस्थं क्षीरतुल्यं चतुर्गुणजलं पचेत् । तच्चोपयुक्तं जीर्णकफज्वरं हंति ।

गुडूच्या रसकल्काभ्यां त्रिफलाया वृषस्य च ॥ ९३ ॥
मृद्वीकाया बलायाश्च स्नेहाः सिद्धा ज्वरच्छिदः ।

गुडूच्यादीनां पंचानां पृथक् पृथग्रसकल्काभ्यां सिद्धाः पंचस्नेहा ज्वरच्छिदो जीर्णज्वरघ्नाः स्युरित्यर्थः ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

जीर्णे घृते च भुंजीत मृदुमांसरसौदनम् ॥ ९४ ॥
बलं ह्यलं दोषहरं परं तच्च बलप्रदम् ।

घृते च परिणते सति मृद्वतीक्ष्णमांसरसाशनं भुंजीत । हि यस्मादलं बलं जातं दोषहरं भवति । तच्च रसाशनमतिशयेन बलकरं स्यात् ।

कफपित्तहरा मुद्गकारवेल्लादिजा रसाः ॥ ९५ ॥
प्रायेण तस्मान्न हिता जीर्णे वातोत्तरे ज्वरे ।
शूलोदावर्तविष्टंभजनना ज्वरवर्द्धनाः ॥ ९६ ॥

अत एव तस्मात्कारणान्मुद्गकारवेल्लादिरसाः कफपित्तहरा जीर्णज्वरे वातोत्तरे प्रायेण न हितास्तेह्युपयुक्ताः शूलादिकृतो ज्वरवर्द्धनाश्च स्युः ।

न शाम्यत्येवमपि चेज्ज्वरः कुर्वीत शोधनम् ।
शोधनार्हस्य वमनं प्रागुक्तं तस्य योजयेत् ॥ ९७ ॥
आमाशयगते दोषे बलिनः पालयन् बलम् ।

एवमपि कृते सति यदि ज्वरो न शाम्यति तदा शोधनार्हस्य नरस्य प्रागुक्तं पिप्पलीभिर्युतान्गालानित्यादिकं वमनं योजयेत् । कदा दोषेऽऽमाशयगते सति बलवतः पुंसो वमनं योजयेद्बलं पालयन् रक्षयन् ।

पक्वे तु शिथिले दोषे ज्वरे वा विषमद्यजे ॥ ९८ ॥
मोदकं त्रिफलाश्यामात्रिवृत्पिप्पलिकेसरैः ।
ससितामधुभिर्दद्याद्व्योषाद्यं वा विरेचनम् ॥ ९९ ॥
आरग्वधं वा पयसा मृद्वीकानां रसेन वा ।

पक्वे पुनर्दोषे तथा शिथिलेऽविष्टब्धेऽथवा विषजे मद्योत्थे वा वातज्वरे मोदकं त्रिफलादिभिर्विरेचनं दद्यात् । व्योषाद्यं वा व्योषत्रिजातकांभोदकृमिघ्नामलकैस्त्रिवृत्सर्वैः समा समसितांक्षौद्रेण गुटिकाः कृता इति दद्यादथवा पयसा क्षीरेण मृद्वीकानां रसेन वाऽऽरग्वधं विरेचनं दद्यात् ।

त्रिफलां त्रायमाणं वा पयसा ज्वरितः पिबेत् ॥ १०० ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

त्रिफलां त्रायंतीं वा पयसा ज्वरी पिबेत्।

विरिक्तानां च संसर्गी मंडपूर्वा यथाक्रमम् ।

विरिक्तानां ज्वरिणां चशब्दाद्वमितानां च यथाक्रमं क्रमानतिक्रमेण संसर्गी कर्त्तव्येत्यध्याहार्यं । मंडः पूर्वः प्रथमो यस्यां सैवं । मंडं प्रथमं दत्त्वाऽनंतरं पेयाविलेह्याद्यो यथाक्रमं देयाः । कृतवमनविरेचनानंतरं यः पेयाद्यवचारणाक्रमः स संसर्गीत्युच्यते ।

च्यवमानं ज्वरोत्क्लिष्टमुपेक्षेत मलं सदा ॥ १०१ ॥
पक्वोऽपि हि विकुर्वीत दोषः कोष्ठे कृतास्पदः ।
अतिप्रवर्त्तमानं वा पाचयन्संग्रहं नयेत् ॥ १०२ ॥

ज्वरेणोत्क्लिष्टमुत्क्लेशितं ज्वरोत्क्लिष्टं मलं पुरीषाख्यं च्यवमानं पतंतमुपेक्षेत । तद्विधारणे प्रयत्नमौषधैः कुर्यान्न त्वौषधनिमित्तं । किमित्यसौ न विधीयतइत्याह । दोषः पुरीषः पुरीषाख्यो यतः पक्वः । अशब्दात्किमुतापक्वः कोष्ठ आमपक्वाशयाश्रयाख्ये कृतं गृहीतमास्पदमवस्थितिर्येन स एवंभूतो विकुर्वीत विकारं कुर्यात् । अतिप्रवर्त्तमानं वा तं मलमपक्वं पाचयन् संग्रहं नयेत् ।

नत्वाम एवं संग्रहीतव्य इत्याह ।

आमसंग्रहणे दोषा दोषोपक्रम ईरिताः ।

आमशब्दः पुरीषाख्यदोषस्यापच्यमानावस्थोपलक्षणार्थः । आमस्यापक्वस्य दोषस्य संग्रहणमामसंग्रहणं तस्मिन्नामसंग्रहे ये दोषा भवंति ते दोषोपक्रमणीयाध्याय ईरिता उक्ताः। तथा च तत्रोक्तं। उत्क्लिष्टानध ऊर्ध्वं वा न चामान्वहतः स्वयं। धारयेदौषधैर्दोषान् विधृतास्तेहि दोषदा इति । तस्मादामसंग्रहार्थमौषधं न देयं । तथामज्वरेप्यामनिर्हरणार्थमौषधं न देयमिति प्रतिपादयन्नाह ।

पाययेद्दोषहरणं मोहादामज्वरे तु यः ॥ १०३ ॥
प्रसुप्तं कृष्णसर्पं स कराग्रेण परामृशेत् ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

तुर्व्यतिरेके भिन्नक्रमः। यस्तु मोहादज्ञानाद्भिषक् पापो दोषहरणमामज्वरे पाययेत्स स्वयमनर्थकारी सुप्तं कृष्णसर्पं करस्याग्रेण परामृशेत् स्पृशेत्। अतिप्रत्यवायं पश्यतैवमुक्तं तंत्रकृता। तत्रच वाक्ये रूपकाख्योलंकारस्तस्य ह्येतल्लक्षणं। तदपरमौपम्ये सति यस्मिन् स्याद्वाक्ययोर्योगः। अस्योदाहरणं। यः सेवते कुनृपतिं कुरुते बधिरस्य कर्णजापं स इति।

ज्वरक्षीणस्य न हितं वमनं च विरेचनम् ॥ १०४ ॥
कामं तु पयसा तस्य निरूहैर्वा हरेन्मलान्।

ज्वरेण क्षीणस्य पुंसो न हितं वमनं विरेचनं च। तर्हि कथं दोषनिर्हरणं तस्येत्याह। कामभित्यादि। तस्य कामं यथेष्टं कृत्वा पयसा निरूहैर्वा मलान् हरेत्।

क्षीरोचितस्य प्रक्षीणश्लेष्मणो दाहतृड्वतः ॥ १०५ ॥
क्षीरं पित्तानिलार्त्तस्य पथ्यमप्यतिसारिणः।

क्षीरमुचितं सात्म्यं यस्य तस्य क्षीरोचितस्य तथा प्रकर्षेण क्षीणः श्लेष्मा यस्य तस्य प्रक्षीणश्लेष्मणस्तथा दाहश्च तृट् च ते विद्येते यस्य तस्य दाहतृड्वतः। एवं पित्तानिलाभ्यामार्तस्य पीडितस्य क्षीरं पथ्यमप्यतिसारिणोपि पथ्यं किं पुनः प्रक्षीणश्लेष्मा यस्य। तस्य क्षीरोचितस्य पूर्वोक्तविशेषणविशिष्टस्य क्षीरं पथ्यमित्यपि शब्दार्थः।

तद्वपुर्लंघनोत्तप्तं प्लुष्टं वनमिवाग्निना ॥ १०६ ॥
दिव्यांबु जीवयेत्तस्य ज्वरं चाशु नियच्छति।

तच्च क्षीरं लंघनोत्तप्तं वपुर्जीवयेत्कायस्य सप्राणतामुत्पादयेत्। किं किमिव। अग्निना दावेन प्लुष्टं वनं यथांबु जीवयेत्प्ररोहयेत्तथा वपुः क्षीरमिति। लंघनशब्देनात्र सामान्यं लंघनं वाच्यवस्तु भण्यते। शरीरलाघवकरं यत्तद्द्रव्यं कर्म वा पुनः।तल्लंघनमिति ज्ञेयमित्येवं लक्षणं नतु विशिष्टमुपवासलक्षणं योग्यतावशात्। तस्य ज्वरिणः पुंसस्तत्क्षीरमाशु ज्वरं च नियच्छति। न केवलं वपुर्जीवयेदिति चार्थः।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

यत एवं महागुणं क्षीरं तस्माद्धेतोः

संस्कृतं शीतमुष्णं वा तस्माद्धारोष्णमेव वा ॥ १०७ ॥
विभज्य काले युंजीत ज्वरिणं हंत्यतोन्यथा ।

यत एवं महागुणं क्षीरं तस्माद्धेतोः संस्कृतं द्रव्यांतरेण तथा शीतमुष्णं चेति कृत्वाऽथवा धारोष्णमेव । काले विभज्य युंजीत यथाविषयं काले प्रयोजयेत् । अतोन्यथा निरूपितात्क्षीरोपयोगविषयादन्यथाऽन्येन प्रकारेण प्रयुक्तं क्षीरं ज्वरिणं हंति ।

पयः सशुंठीखर्जूरमृद्वीकाशर्कराघृतम् ॥ १०८ ॥
शृतशीतं मधुयुतं तृड्दाहज्वरनाशनम् ।

क्षीरं शुंठ्यादियुतं शृतमनंतरं शीतं मधुयुतं तृड्दाहजिदित्यर्थः ।

तद्वद् द्राक्षाबलायष्टीसारिवाकणचंदनैः ।
चतुर्गुणेनांभसा वा पिप्पल्या वा शृतं पिबेत् ॥ १०९ ॥

तद्वदिति तेनैव पूर्वोक्तेन पयसा तुल्यं तद्वद्यथा पूर्वोक्तं शृतशीतं तृड्दाहज्वरहृत्तथा द्राक्षादिभिः शृतमनंतरं शीतं मधुयुतं तृड्जिदित्यर्थः । अथवा क्षीरं चतुर्गुणेन जलेन शृतं पिबेदथवा पिप्पल्या शृतं पिबेत् ।

कासाच्छ्वासाच्छिरःशूलात्पार्श्वशूलाच्चिरज्वरात् ।
मुच्यते ज्वरितः पीत्वा पंचमूलीशृतं पयः ॥ ११० ॥

पंचमूलेन शृतं क्षीरं पीत्वा कासादिभ्यो मुच्यते । मुच्यत इति कर्मकर्तरि तङ् । चिरज्वरो दीर्घकालानुबंधी ज्वरः ।

शृतमेरंडमूलेन बालबिल्वेन वा ज्वरात् ।
धारोष्णं वा पयः पीत्वा विबद्धानिलवर्चसः ॥ १११ ॥
सरक्तपिच्छातिसृतेः सतृट्शूलप्रवाहिकात् ।

एरंडमूलेनाथवा बिल्वेन शृतमथवा धारोष्णं क्षीरं पीत्वा पुरुषो ज्वराद्विमुच्यते । किंभूताज्ज्वरात् । विबद्धानिलवर्चसः । विबद्धे विशेषेण बद्धेऽसम्यक्प्रवर्तनादनिलवर्चसी यस्मिन्ज्वरे स बद्धानिलवर्चास्तस्माज्ज्वरा-

Indira Gandhi National Centre for the Arts

द्विमुच्यते। तथा रक्तं च पिच्छा च यो रक्तपिच्छाश्रावस्ताभ्यामुपलक्षिता। अतिसृतीरतीसारः सह तया वर्तते यो यस्मात्तस्मात्तथाविधाज्ज्वरात्तथा सह तृषा सहशूलेन तथा प्रवाहिकया निश्चारिकापरसंज्ञया वर्तते यस्तस्मात्तथाविधाज्ज्वरात्प्रमुच्यते।

सिद्धं शुंठीबलाव्याघ्रीगोकंटकगुडैः पयः ॥ ११२ ॥
शोफमूत्रशकृद्वातविबंधज्वरकासजित्।

शुंठ्यादिभिः साधितं पयः शोफादिजित्।

वृश्चीवबिल्ववर्षाभूसाधितं ज्वरशोफनुत् ॥ ११३ ॥

वृश्चीवादिभिः साधितं पयो ज्वरशोफनुदिति। वृश्चीवः सूक्ष्मपुनर्नवः। स्थूलपुनर्नवस्तु वर्षाभूः। पुनर्नवद्वयं बिल्वं चात्र योज्यं।

शिंशिपासारसिद्धं वा क्षीरमाशु ज्वरापहम्।

शिंशिपासारेण सिद्धं शृतं क्षीरमुपयुक्तमाशु न तु चिरेणज्वरहृत्। क्षीरस्य श्रपणे विधिरतीसारचिकित्सितोक्तः। पयस्युत्क्वाथ्यमुस्ताविंशतिमित्यनुसारेणानुकल्प्यः। तंत्रांतरे त्वेवमुक्तं। द्रव्यादष्टगुणं क्षीरं क्षीरात्तोयं चतुर्गुणम्। क्षीरावशेषः कर्तव्यः क्षीरक्वाथे त्वयं विधिरिति। ननु किं वातपित्तोत्तरे ज्वरे घृतं प्रधानमाश्रीयतां पूर्ववचनप्रामाण्यादथवा क्षीरं प्रधानमेतद्वचनप्रामाण्यादित्यत्र संशयः। अत्रोच्यते। उभयमपीदं घृतं क्षीरं च वात्तपित्तोत्तरे ज्वरे प्रधानमवस्थावशात्सात्म्यवशाच्च क्वचित्किंचिदुपयुज्यते।

निरूहस्तु बलं वन्हि विज्वरत्वं मुदं रुचिम् ॥ ११४ ॥
दोषे युक्तः करोत्याशु पक्के पक्काशयं गते।

निरूहो युक्तो दोषेपक्के तथा पक्काशयं गते सति बलादीन् द्रागेव करोति।

पित्तं वा कफपित्तं वा पक्काशयगतं हरेत् ॥ ११५ ॥
स्रंसनं त्रीनपि मलान् बस्तिःपक्काशयाश्रयान्।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

पित्तं केवलं कफपित्तं वा पक्काशयाश्रितं स्रंसनं विरेचनं हरेत्। बस्तिः प्रयोजितस्त्रीनपि मलान्वातादयान् हरेत्। कीदृशान्। पक्काशयमाश्रितान्।

प्रक्षीणकफपित्तस्य त्रिकपृष्ठकटिग्रहे ॥ ११६ ॥
दीप्ताग्नेर्बद्धशकृतः प्रयुंजीतानुवासनम्।

प्रक्षीणे कफपित्ते यस्य पुंसस्तथा दीप्ताग्नेर्बद्धवर्चसस्त्रिकपृष्ठकटिग्रहे सत्यनुवासनं प्रयुंजीत।

पटोलनिंबच्छदनकटुकाचतुरंगुलैः ॥ ११७ ॥
स्थिराबलागोक्षुरकमदनोशीरवालकैः।
पयस्यर्धोदके क्वाथं क्षीरशेषं विमिश्रितम्॥ ११८ ॥
कल्कितैर्मुस्तमदनकृष्णामधुकवत्सकैः।
बस्तिं मृदुघृताभ्यां च पीडयेज्ज्वरनाशनम् ॥ ११९ ॥

पटोलादिभिः क्वाथं क्षीरार्धोदके क्षीरशेषं तथा मिश्रितं। कल्कीकृतैर्द्रव्यैर्मुस्तादिभिर्मधुघृताभ्यां वा योजितं बस्तिं ज्वरनाशनं दद्यात्।

चतस्रः पर्णिनीर्यष्टीफलोशीरनृपद्रुमान्।
क्वाथयेत्कल्कयेद्यष्टीशताव्हाफलिनीफलम्॥ १२० ॥
मुस्तं च बस्तिः सगुडक्षौद्रसर्पिर्ज्वरापहः।

चतस्र इति मुद्गपर्णी माषपर्णी शालिपर्णी पृश्निपर्णीत्यादि चतस्रः पर्णिनीः फलादींश्च क्वाथयेत्। फलं मदनफलं। तथा यष्ट्यादीन् कल्कयेदित्येष सगुडादिर्बस्तिर्ज्वरहृत्।

जीवंती मदनं मेदां पिप्पलीं मधुकं वचाम् ॥ १२१ ॥
ऋद्धिं रास्नां बलां बिल्वं शतपुष्पां शतावरीम्।
पिष्ट्वा क्षीरं जलं सर्पिस्तैलं चैकत्र साधितम् ॥ १२२ ॥
ज्वरेऽनुवासनं दद्याद्यथा स्नेहं यथामलम्।

जीवंत्यादीनि द्रव्याणि स्नेहस्य चतुर्भागमात्राणि जलेन पिष्ट्वा क्षीरं

Indira Gandhi National Centre for the Arts

स्नेहसमं च तैलात्सर्पिषश्चतुर्गुणं जलं तैलसर्पिर्द्भ्याश्चतुर्गुणमित्येकत्र साधितं पक्वमेतज्ज्वरेऽनुवासनं दद्यात्। यथा स्नेहं यथामलं यो यस्मिन् ज्वरे दोषे वातादौ यः स्नेहो योग्यस्तत्र तं दद्यात्।

ये च सिद्धिषु वक्ष्यंते बस्तयो ज्वरनाशनाः ॥ १२३ ॥

ये च बस्तयः सिद्धिषु बस्तिकल्पनाध्याये वक्ष्यंते ज्वरनाशनास्ते च देया इति शेषः।

शिरोरुग्गौरवश्लेष्महरमिंद्रियबोधनम् ।
जीर्णज्वरे रुचिकरं दद्यान्नस्यं विरेचनम् ॥ १२४ ॥
स्नैहिकं शून्यशिरसो दाहार्त्ते पित्तनाशनम् ।

जीर्णज्वरे विरेचनाख्यं नस्यं दद्यात्। कीदृशं तन्नस्यं स्यात्। शिरसो रुजं गौरवं च श्लेष्माणं च हरति तच्छीलं तत्। तथेंद्रियाणां चक्षुरादीनां च बोधनं। तथा रुचिकृत्। शून्यशिरसः पुंसः स्नैहिकं स्नेहेन मिश्रं स्निग्धं नस्यं दद्यात्। दाहार्त्ते शिरसि पित्तहरं नस्यं दद्यात्।

धूमगंडूषकवलान् यथादोषं च कल्पयेत् ॥ १२५ ॥
प्रतिश्यायास्यवैरस्याशिरःकंठामयापहान् ।

धूमादींश्च यथायोगं कल्पयेत्। किंभूतान्। प्रतिश्यायादिघ्नान्।

अरुचौ मातुलुंगस्य केसरं साज्यसैंधवम् ॥ १२६ ॥
धात्रीद्राक्षासितानां वा कल्कमास्येन धारयेत् ।

अरुचौ सत्यां बीजपूरकस्य केसरं सघृतसैंधवमास्येन धारयेदितिसंबंधः। अथवा धात्र्यादीनां कल्कं धारयेत्।

यथोपशयसंस्पर्शान् शीतोष्णद्रव्यकल्पितान् ॥ १२७ ॥
अभ्यंगालेपसेकादीन् ज्वरे जीर्णे त्वगाश्रिते ।
कुर्यादंजनधूमांश्च तथैवागंतुजेपि तान् ॥ १२८ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

त्वगाश्रितेजीर्णज्वरेऽभ्यंगादीन्कुर्याद्यथोपशयं यथासुखावहं संस्पर्शो येषां तांस्तथा शीतवीर्यैरुष्णवीर्यैश्च द्रव्यैः कल्पितांस्तथांजनधूमांश्च कुर्यात्। अंजनधूमानागंतुजेपि ज्वरे तथैव कुर्यात्। सद्योगत्वादागंतुजेप्येते अनिषिद्धा एव। तानिति पुनः कृतमतिशयार्थं। विशेषेणागंतुजेपि ज्वरे भूतविषाद्युद्भवे तान्कुर्यादित्यर्थः।

दाहे सहस्रधौतेन सर्पिषाभ्यंगमाचरेत्।

दाहे सति सर्पिषा सहस्रधौतेनाभ्यंगमाचरेत्।

सूत्रोक्तैश्च गणैस्तैस्तैर्मधुराम्लकषायकैः ॥ १२९ ॥
दूर्वादिभिर्वा पित्तघ्नैः शोधनादिगणोदितैः।
शीतवीर्यैर्हिमस्पर्शैः क्वाथकल्कीकृतैः पचेत् ॥ १३० ॥
तैलं सक्षीरमभ्यंगात्सद्यो दाहज्वरापहम्।

सूत्रोक्तैः सूत्रस्थानोदितैर्मधुराम्लकषायकैर्गणैस्तत्र मधुरो गणो घृतहेमेत्यादिः। अम्लो गणो धात्रीफलाम्लिकेत्यादिः। कषायो गणः पथ्याक्षमित्यादिः। तत्र चैतैर्मधुराम्लकषायैर्वर्गैस्तत्र दूर्वादिभिर्गणैर्दूर्वानंतेति निर्दिष्ट एकः। न्यग्रोधादिर्द्वितीयः। तृतीयस्तु पद्मकपुंड्रेत्यादिः। चतुर्थः सारिवोशीरेत्यादिः। एतैः पूर्वोक्तैर्गणैः पित्तघ्नैः शोधनादिग्रहणं संग्रहोक्तैः शीतवीर्यैर्हिमस्पर्शैर्भेषजैस्तथा स्पर्शतो वीर्यतश्च शीतैर्गणैरक्वाथाः क्वाथाः कृता अकल्कक्रुतास्तैः क्वाथकल्कीकृतैरेतैर्गणैस्तैलं क्षीरेण सह पचेत्। तच्च पक्वमभ्यंगान्म्रक्षणात्सद्यो न चिरेण कालेन दाहज्वरं जयेत्।

शिरो गात्रं च तैरेव नातिपिष्टैः प्रलेपयेत् ॥ १३१ ॥

न केवलमेतैर्गणैस्तैलं पचेद्दाहज्वरशांत्यै यावत्तैरेव शिरो मूर्धानं गात्रं च नातिपिष्टैः किंचित्पिष्टैः प्रलेपयेत्। सुपिष्टैर्ह्येतैः प्रत्युत दाह उत्पद्यते। तथाचोक्तं। शुष्कपिष्टघनो लेपश्चंदनस्यापि दाहकृत्। त्वग्यातस्योष्मणो रोधाच्छीतकृत्त्वन्यथा गुरोः। इत्यनेनैवाभिप्रायेण शीतज्वरे वक्ष्यति तैः सुपिष्टैर्लेपयेदिति। गात्रग्रहणेनैव शिरोग्रहणे लब्धे पुनः शिरोग्रहणं विशेषार्थं। विशेषेण

Indira Gandhi National Centre for the Arts

शिरो लेपयेत्तस्य विशेषेण ज्वराश्रयत्वात् । तथाचोक्तं । विमुक्तस्यापि हि शिरोज्वरो यस्य न मुंचति । अविमुक्तः स विज्ञेयो ज्वरः पुनरुपैति तमिति । तस्माच्छिरसो विशेषेण लेपनार्थं पृथगुपादानं ।

तत्काथेन परीषेकमवगाहं च योजयेत् ।
तथारनालसलिलक्षीरसूक्तघृतादिभिः ॥ १३२ ॥

तेषां गणानां काथस्तत्काथस्तेन परिषेकमवगाहं च काथपूर्णायां द्रोण्यां योजयेत्तथारनालादिभिः परिषेकादि योजयेत् ।

कपित्थमातुलिंगाम्लविदारीरोध्रदाडिमैः ।
बदरीपल्लवोत्थेन फेनेनारिष्टजेन वा ॥ १३३ ॥
लिप्तेंगे दाहरुग्मोहच्छर्दिस्तृष्णा च शाम्यति ।

कपित्थादिभिर्बदरीपल्लवोद्भवेन वा फेनेन लिप्तेंगे सति दाहादयः शाम्यंति ।

यो वर्णितः पित्तहरो दोषोपक्रमणे क्रमः ॥ १३४ ॥
तं च शीलयतः शीघ्रं सदाहो नश्यति ज्वरः ॥

यश्च दोषोपक्रमणीयाध्याये पित्तहरः क्रमो वर्णित उक्तस्तं च क्रमं शीलयतोभ्यसतो ज्वरो दाहेन सह नश्यति ।

वीर्योष्णैरुष्णसंस्पर्शैस्तगरागुरुकुंकुमैः ॥ १३५ ॥
कुष्टस्थौणेयशैलेयसरलामरदारुभिः ।
नखरास्नामुरवचाचंडेलाद्वयचोरकैः ॥ १३६ ॥
पृथ्वीकाशिग्रुसुरसाहिंस्राध्यामकसर्षपैः ।
दशमूलामृतैरंडद्वयपन्नूररोहिषैः ॥ १३७ ॥
तमालपत्रभूतिकशल्लकीधान्यदीप्यकैः ।
मिशिमाषकुलत्थाग्निप्रकीर्यानाकुलीद्वयैः ॥ १३८ ॥
अन्यैश्च तद्विधैर्द्रव्यैः शीते तैलं ज्वरे पचेत् ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

क्वथितैः कल्कितैर्युक्तैः सुरासौवीरकादिभिः ॥ १३९ ॥
तेनाभ्यंजात्सुखोष्णेन

वीर्योष्णैरुष्णसंस्पर्शैरुभयथा । वीर्यतः स्पर्शतश्चोष्णैस्तगरादिभिर्द्रव्यैरपरैरपि तद्विविधैरुष्णसंस्पर्शैश्च क्राथीकृतैः कल्कीकृतैश्च सुरादिभिरम्लपाकरसैः शीतज्वर एतद्विषये तैलं पचेत् । तेन तैलेन सुखोष्णेनाभ्यंज्यान्म्रक्षयेत् ।

तैः सुपिष्टैश्च लेपयेत् ।
कवोष्णैस्तैः परीषेकमवगाहं च कल्पयेत् ॥ १४० ॥
केवलैरपि तद्वच्च सुक्तगोमूत्रमस्तुभिः ।
आरग्वधादिवर्गं च पानाभ्यंजनलेपनैः ॥ १४१ ॥
धूपानगुरुजास्तांश्च वक्ष्यंते विषमज्वरे ।

तैश्च पूर्वोक्तैर्द्रव्यैः सुपिष्टैरतिश्लक्ष्णैर्लेपयेत्तैश्च किंचिदुष्णैः परिषेकमवगाहं कल्पयेद्योजयेत् । तद्वच्च तथैव सुक्तादिभिः केवलैश्च परिषेकादि कल्पयेत् । आरग्वधेंद्रयवेत्यादिश्च पानाभ्यंजनलेपने कल्पयेत् । अगरुजान् धूपान् यांश्च धूपान् विषमज्वरे वक्ष्यंते तांश्च कल्पयेत् ।

अग्न्यनग्निकृतान्स्वेदान् स्वेदिभेषजभोजनम् ॥ १४२ ॥
गर्भभूवेश्मशयनं कुथाकंबलरल्लकान् ।
निर्धूमदीप्तैरंगारैर्हसंतीश्च हसंतिकाः ॥ १४३ ॥
मद्यं सत्र्यूषणं तर्कं कुलत्थव्रीहिकोद्रवान् ।
संशीलयेद्वेपथुमान् यच्चान्यदपि पित्तलम् ॥ १४४ ॥
दयिताः स्तनशालिन्यः पीना विभ्रमभूषणाः ।
यौवनासवमत्ताश्च तमालिंगेयुरंगनाः ॥ १४५ ॥
वीतशीतं च विज्ञाय तास्ततोपनयेत्पुनः ।

तथा स्वेदान् शीलयेत् । किंभूतान् । अग्निकृतानग्निकृतांश्च स्वेदविध्युक्तांस्तथा स्वेदयति साधुस्वेदि यद्भेषजं भोजनं तच्च शीलयेत् । गर्भे गर्भगृहाभ्यंतरे यद्भूवेश्म भूमिगृहं तत्र शयनं शय्यां । तथा कुथादी-

Indira Gandhi National Centre for the Arts

नावरणविशेषांस्तथा हसंतिका वन्हिशकटिकाः शीलयेत्। किंभूताः। निर्धूमदीप्तैरंगारैर्हसंतीरिव। तथा मद्यादींश्च शीलयेत्। वेपथुमंतमंगना आलिंगयेयुर्दयितादिगुणयुक्ताः। गतशीतं च विदित्वा ततस्ता योषाः पुनरपनयेदेतच्चानुब्रुवंस्ताभिः संभोगाभिलाषं निवारयति। अधुना सन्निपातचिकित्सितं ब्रूते।

वर्धनेनैकदोषस्य क्षपणेनोच्छ्रितस्य च ॥ १४६ ॥
कफस्थानानुपूर्व्या वा तुल्यकक्षान्जयेन्मलान्।

हीनाधिकभावत्वेन विषमदोषजे सन्निपाते वर्धनेनैकदोषस्यार्थात् क्षीणस्य क्षीणयोर्वोच्छ्रितस्योच्छ्रितयोर्वा देशकालबलान्मलान् जयेत्। कथं विषमदोषजे सन्निपाते वर्धनमेकदोषस्य सन्निपातज्वरस्योपशांतिस्तस्माद्वर्धनमयुक्तं। अत्राचक्ष्महे। सन्निपातस्थेन दोषेण सतावक्षीणौ दोषौ ज्वरकारिणौ न तौ सुखेन जेतुं शक्येते विषमाश्रयत्वात्। क्षीणस्य दोषस्य वर्धनेन दोषसाम्यमुत्पाद्यैकरूपया क्रियया सन्निपातः सुखेन जेतुं शक्यते। तस्माद्वर्धनेनैकदोषस्येति वक्तुं युक्तं तथा च। वाताख्ये यतो दोषे शीतलघुरूक्षादिरूपैर्द्रव्यैर्वृद्धिर्भवति। वर्धमानेन च तत्रस्थौ पित्तकफावप्येवं प्रायेण किंचित् क्षयं यातस्तत्क्षयाच्चासौ ज्वरोपि मृदुतां गतः सुखेन शक्यते जेतुं। तथैव पित्ताख्यस्य सन्निपातस्थस्य ज्वरघ्नया तीक्ष्णोष्णकटुरूपया क्रियया वर्धनेन वातकफावपि किंचित्क्षयं यातस्तत्क्षयाज्ज्वरोप्यसौ मृदुतां गतः सुखेन जेतुं शक्यते। एवं कफाख्यस्य दोषस्य संनिपातस्थस्य ज्वरघ्नस्निग्धमधुरशीतादिकया क्रियया वर्धनेन तत्रस्थौ वातपित्ताख्यौ दोषौ किंचित् प्रायः क्षयं यातस्तत्क्षयाच्च ज्वरोप्यसौ मार्दवं गतः सुखेन जेतव्यः। इत्येवं दोषत्रयस्यापि ज्वरकारणे तथा युक्त्या प्रतीकारः कृतो भवति। एवमुच्छ्रितस्यापि क्षपणैकरूपया क्रियया सुखेन संनिपातो जीयते। तदेवं द्व्युल्बणैकोल्बणैर्दोषैर्जनिते संनिपाते चिकित्साक्रम उक्तः। संप्रति समदोषजे संनिपाते चिकित्साक्रमं दर्शयितुमाह। कफेत्यादि। स्थितिः स्थानं कफश्च स्थानं च कफस्थाने तयोरानुपूर्वीक्रमस्तया च तुल्यकक्षान् समान् संनिपातान्ज्वरे मलान् जयेत्। तत्र

कफः प्राग्जेतव्यस्ततः पित्तं ततो वायुरिति कफानुपूर्वीत्युच्यते । उक्तं च । स्थानतः केचिदिच्छंति प्राक् तावच्छ्लेष्मणो वधं । शिरस्युरसि कंठे च प्रलिप्तेन्नरुचिः कुतः । तदभावे कथं भोज्यपानद्रव्यावचारणा । असत्यभ्यवहारे च कुतो दोषविनिग्रहः । तस्मादादौ कफो घात्यः कायद्वारार्गलो हि सः । मध्यस्थायि यतः पित्तमाशुकारि च चिंत्यते । अतो वातसखस्यास्य कुर्यात्तदनुनिग्रहं । अधःस्थायी च तदनु निग्राह्यः स्यात्समीरण इति । सुश्रुतस्त्वाह । जयेज्ज्वरेतिसारे च क्रमात्पित्तकफानिलान् । प्राणेण तापात्मतया ज्वरे तेजो विशिष्यते । विशश्च स्रतापित्तात्तथा च मृदुकोष्ठता । तस्य चानुगतः श्लेष्मा गौरवापक्तिजाड्यकृत् । वायुश्च वर्धतेऽवश्यं येष्वहःसु तयोः क्षये । ज्वरातिसारयोस्तस्मादेष दोषजये क्रमः । कफपित्तानिलानन्ये क्रमादाहुस्तयोरपि । यस्मादामाशयोद्रेकाद्भूयिष्ठं तत्समुद्भवः । क्रमेणाध्येन तत्रापि प्रवृद्धाः स्वाशये स्थिताः । स्वाश्रयेषु प्रदुष्टानां स्थितैर्बह्वयाशुकारिता । विज्ञाय कर्मभिः स्वैः स्वैर्दोषोद्रेकं यथामलं । भेषजं योजयेत्तत्तु स्वीकुर्यात्र क्रमं भिषगिति । अन्येत्वाहुः । क्रमान्मरुत्पित्तकफाः सर्वत्र सदृशे बले । वातादीनां यथापूर्वं यतः स्वाभाविकं बलं । ऊचे पराशरोप्यर्थममुमेव प्रमाणयन् । यथोपन्यासतः प्राप्तमादौ दोषभिषग्जितं । नेतृभंगेन दृष्टो हि समं सैन्यपराजय इति । स्थानानुपूर्व्या वा दोषांस्तुल्यकक्षान्मलान् जयेत् । स्थानं च यद्यप्यविशेषेणैव संभवति तथापीह ज्वरकारिदोषप्रस्तावादामाशयो गृह्यते । तेनामाशयस्थो दोषः प्राग्जेतव्यस्ततः पक्वाशयस्थः । इति स्थानानुपूर्वी स्थानमाहात्म्यस्य चिकित्साक्रमः कार्यः । तथा च प्रागध्यगीष्ट । आमाशयगते वायौ कफे पक्वाशयाश्रिते । रूक्षपूर्वं तथा स्नेहपूर्वंस्थानानुरोधत इति । तदेवं कफस्थानानुपूर्व्या वा तुल्यकक्षान् मलान् जयेत् । अन्येत्वेवं व्याख्यानयंति । कफस्य स्थानं कफस्थानं । कफस्थानलक्षणा चासावानुपूर्वी च तया कफस्थानानुपूर्व्या वा तुल्यकक्षान् मलान् जयेद्यद्यपि कफस्थानानि कंठादीन्यपि तथापीह ज्वरकारिदोषप्रस्तावादामाशयो गृह्यते । तथा चोक्तं । आमाशयस्थो हत्वाग्निं सामो मार्गान् पिधाय यत् । विदधाति ज्वरं दोषस्तस्मात्कुर्वीत लंघनमिति । तदेवं रूक्षोष्णपाचनादिक्रमोत्र कार्य इत्यवतिष्ठते । ननु कफस्थानानुपूर्व्या वेत्य-

Indira Gandhi National Centre for the Arts

तत्र वाच्यं यतस्तुल्यकालं त्रिदोषहरैर्द्रव्यैः संनिपातस्य क्रिया कार्या। द्रव्याणि दोषघ्नान्यत्रोच्यते। ज्वरनाशनानि द्रव्याणि त्रिदोषघ्नानि विरलानि। एकदोषघ्नानि पुनर्ज्वरहंतॄणि त्रिदोषघ्नेभ्यः समधिकतराणि बहुतराणीति। कफस्थानानुपूर्व्या चेत्युक्तमपि च दोषकालादिवशाच्चिकित्साप्रकारांतरोयमुपयुज्यत इति संनिपातचिकित्साप्रस्तावादिदमप्याह।

संनिपातज्वरस्यांते कर्णमूले सुदारुणः ॥ १४७ ॥
शोफः संजायते तेन कश्चिदेव प्रमुच्यते ।

संनिपातज्वरस्यावसाने कर्णमूलप्रदेशे सुष्ठु दारुणः शोफः संजायते। येन शोफेनोत्पन्नेन कश्चिदेव विमुच्यते । कश्चिदेवेत्यनेनास्य रोगस्य नावश्यमसाध्यनेति ब्रूते। अत एव चिकित्सामत्राह।

रक्तावसेचनैः शीघ्रं सर्पिःपानैश्च तं जयेत् ॥ १४८ ॥
प्रदेहैः कफपित्तघ्नैर्नावनैः कवलग्रहैः ॥

रक्तावसेचनादिभिः कवलग्रहांतैराशु तं जयेत्। प्रदेहः प्रलेपः।

शीतोष्णस्निग्धरूक्षाद्यैर्ज्वरो यस्य न शाम्यति ॥ १४९ ॥
शाखानुसारी तस्याशु मुंचेद्बाह्वोः क्रमाच्छिराम् ।

आदिशब्देन स्तंभस्वेदनादयो गृह्यंते। शीतोष्णादिभिरुपक्रमैर्यथायथं पृथग्वातपित्तश्लेष्मसंसर्गसन्निपातज्वरप्रशमनैः सम्यक्प्रयोजितैर्ज्वरो यस्य शमं न गच्छति तस्य शाखानुसारित्वाद्धेतोर्बाह्वोः क्रमादेकैकस्मिन्न युगपद् द्वयोर्भुजयोः शिरां मुंचेत्। शाखाशब्देनात्र केवलं रक्तं विवक्षितं न मांसादयः। अत एव रक्तस्यैव चिकित्सामुवाच मुंचेच्छिरामिति। मांसजानां हि शस्त्रक्षाराग्निकर्मादिचिकित्सा तस्माच्छाखाशब्देन रक्तस्यैव ग्रहणं युक्तं।

अयमेव विधिः कार्यो विषमेपि यथायथम् ॥ १५० ॥
ज्वरे विभज्य वातादीन् यश्चानंतरमुच्यते ।

अयमेव पूर्वोक्तो विधिर्विषमज्वरे सततकादौ यथास्वं वातादीन् विभज्य

Indira Gandhi National Centre for the Arts

कार्यः । अनंतरमधुनैव च यो विधिरुच्यते पटोलकटुकादिभिः सोपि विषमज्वरे कार्यः ।

पटोलकटुकामुस्ताप्राणदामधुकैः कृताः ॥ १५१ ॥
त्रिचतुः पंचशः क्वाथा विषमज्वरनाशनाः ।

पटोलादिभिस्त्रिभिश्चतुर्भिः पंचभिर्वा कृताः क्वाथा विषमज्वरघ्नाः ।

योजयेत्रिफलां पथ्यां गुडूचीं पिप्पलीं पृथक् ॥ १५२ ॥

त्रिफलां वा पथ्यां वा गुडूचीं पिप्पलीं वा पृथक् पृथग् योजयेत्सततकादिके विषमज्वरे ।

तैस्तैर्विधानैः सगुडैर्भल्लातकमथापि वा ।
लंघनं बृंहणं चापि ज्वरागमनवासरे ॥ १५३ ॥

अथवा तैस्तैरसायनाद्युक्तैर्विधिभिर्गुडसहितं भल्लातकं वा योजयेत् । यदि वा ज्वरागमनदिवसे ह्यादौ प्रथमं लंघनं बृंहणं वा योजयेत् ।

प्रातः सतैलं लशुनं प्राग्भक्तं वा तथा घृतम् ।
जीर्णं तद्वद्दधिपयस्तक्रं सर्पिश्च षट्पलम् ॥ १५४ ॥
कल्याणकं पंचगव्यं तिक्ताख्यं वृषसाधितम् ।

विषमज्वरे प्रागेव सहतैलेन लशुनं योजयेत् । प्राग्भक्तमित्यादि । भक्तात्प्रथमं प्रातर्वा घृतं च जीर्णं पुराणं योजयेत्तथैव दधिसर्पिस्तथा पयस्तथा तक्रं षट्पलं च सर्पिःक्षयचिकित्सितोक्तं प्रातः प्राग्भक्तं वा योजयेदित्यर्थः । कल्याणकमुन्मादप्रतिषेधोक्तं पंचगव्यमपस्मारप्रतिषेधोक्तं तिक्ताख्यं कुष्टचिकित्सितोक्तं तथा वृषसाधितं रक्तपित्तचिकित्सितोक्तं प्रातः प्राग्भक्तं वा योजयेत् ।

त्रिफलाकोलतर्कारीक्वाथदध्ना शृतं घृतम् ॥ १५५ ॥
तिल्वकत्वक्कृतावापं विषमज्वरजित्परम् ।

त्रिफलादिक्वाथे चतुर्गुणे सर्पिर्दधिसमं शाबररोध्रत्वक्कृतावापमतिशयेन विषमज्वरजित् ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

सुरां तीक्ष्णं च यन्मद्यं शिखितित्तिरिकुक्कुटान् ॥ १५६ ॥
मांसं मेध्योष्णवीर्यं च सहान्नेन प्रकामतः ।
सेवित्वा तदहः स्वप्यादथवा पुनरुल्लिखेत् ॥ १५७ ॥

सुरां च तीक्ष्णं च यन्मद्यं शिखितित्तिरिदक्षजं च मांसं मेध्योष्णवीर्यमन्नेन सह बहु सेवित्वा तदहः स्वप्यात् । यस्मिन् दिने तद्भुक्तं तं दिवसं शयीत तदहः स्वप्यादिति कालाध्वनोरत्यंतसंयोग इति द्वितीया । अथवा पूर्वोक्तपीतभुक्तभक्तो नरः पुनरुल्लिखदुद्वमेत् ।

सर्पिषो महतीं मात्रां पीत्वा तच्छर्दयेत्पुनः ।

सर्पिषो वा महतीमुत्तमां मात्रां पीत्वा पुनश्छर्दयेदुद्वमेत् ।

नीलिनीमजगंधां च त्रिवृतां कटुरोहिणीम् ॥ १५८ ॥
पिबेज्ज्वरस्यागमने स्नेहस्वेदोपपादितः ।

नीलिन्यादीन् पृथग्ज्वरगमनवासरे कृतैः स्नेहः स्वेदः पिबेत् ।

मनोह्वा सैंधवं कृष्णा तैलेन नयनांजनम् ॥ १५९ ॥
योज्यं

मनोह्वादिकं तैलं तैलेन नयनांजनं योज्यं । अंजनशब्दो म्रक्षणेपि दृश्यत इति नयनशब्दे प्रयुक्तः ।

हिंगुसमा व्याघ्री वसानस्यं ससैंधवम् ।
पुराणसर्पिः सिंहस्य वसा तद्वत्ससैंधवा ॥ १६० ॥

हिंगुतुल्या व्याघ्रीवसा नस्यं ससैंधवं योज्यं । व्याघ्रीति स्त्रीलिंगनिर्देशः स्त्रियाग्रहणार्थोऽचिंत्यत्वात्प्रभावस्यान्यथा पुल्लिंगेनैव निर्देशं कुर्यात् । यथा वक्ति । पुराणं सर्पिः सिंहस्य वसा तद्वत्ससैंधवेति ।

पलंकषा निंबपत्रं वचाकुष्टहरीतकी ।
सर्षपाः सयवाः सर्पिर्धूपोविड्वा विडालजा ॥ १६१ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

पुरध्यामवचासर्जनिंबार्कागरुदारुभिः ।
धूपो ज्वरेषु सर्वेषु प्रयोक्तव्योपराजितः ॥ १६२ ॥

पलंकषादिधूमः सर्वेषु ज्वरेषु कार्यः । अथवा विडालजाता विडालजा विट् । पुरीषादिभिः सहापराजिताख्योयं धूमो ज्वरेषु कार्यः ।

धूपनस्यांजनत्रासा ये चोक्ताश्चित्तवैकृते ।

ये च चित्तवैकृत उन्मादापस्मारे धूपादय उक्तास्ते च विषमज्वरे योज्याः। विकृतमेव वैकृतं । प्रज्ञादित्वात्स्वार्थेऽण् ।

दैवाश्रयं च भैषज्यं ज्वरान्सर्वान्व्यपोहति ॥ १६३ ॥
विशेषाद्विषमान्प्रायस्ते ह्यागंत्वनुबंधजाः ।

न केवलं धूपादयो ज्वरं नाशयंति । दैवाश्रयं चौषधं मणिमंगलबल्युपहारमायश्चित्तजपदानस्वस्त्ययनादिकं सर्वान्ज्वरान्नागंतूत्रिजांश्च व्यपोहति । उपसर्गादस्यत्यूह्योर्वचनमितितद्भावः । विशेषेण विषमान् व्यपोहति । यस्मात्ते विषमज्वरा आगंतूनां भूतादीनामनुबंधाज्जाताः ।

यथास्वं च सिरां विध्येदशांतौ विषमज्वरे ॥ १६४ ॥

विषमज्वरशांतौ सत्यां यथास्वं दोषाद्यपेक्षया सिरां विध्येत् । संग्रहे च रसादिधातुस्थज्वरे चिकित्सितोक्ता । यथा । रसस्थे तु सर्वस्मिन् कुर्याद्वमनलंघने । सेकसंशमनालेपरक्तमोक्षमसृक्स्थिते । तीक्ष्णं विरेकं मांसस्थे मेदोघ्नं मेदसि स्थिते । अस्थिस्थे वातशमनमभ्यंगस्वेदमर्दनं । ज्वरे वातार्तिशमनं विशेषाद्बस्तिकर्म च । मज्जस्थशुक्रस्थयोर्ज्वरयोरसाध्यत्वात्तत्र चिकित्सा नोक्ता ।

केवलानिलवीसर्पे विस्फोटाभिहतज्वरे ।
सर्पिः पानहिमालेपसेकमांसरसाशनम् ॥ १६५ ॥
कुर्याद्यथास्वमुक्तं च रक्तमोक्षादिसाधनम् ।

केवलानिलादिभिर्ज्वरे सर्पिःपानादिकं कुर्यात् । यच्च रक्तमोक्षादिसाधनं यथास्वमुक्तं तच्च कुर्यात् ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

ग्रहोत्थे भूतविद्योक्तं बलिमंत्रादिसाधनम् ॥ १६६ ॥

ग्रहोत्थे ज्वरे भूतविद्योक्तं बलिमंत्रादिसाधनं चिकित्सितं ।

ओषधीगंधजे पित्तशमनं विषजिद्विषे ।

ओषधीगंधजे पित्तशमनं चिकित्सितं विषे विषजे ज्वरे विषजिच्चिकित्सितं ।

इष्टैरर्थैर्मनोज्ञैश्च यथादोषशमेन च ॥ १६७ ॥
हिताहितविवेकैश्च ज्वरं क्रोधादिजं जयेत् ।

क्रोधादिजे ज्वरे इष्टैरभिमतैरर्थैर्विषयैस्तथा मनोज्ञैरम्यैस्तथा यथा दोषं यः शमः शमनं तेन तथा हिताहितविवेकैश्च जयेत् । आदिशब्दोत्र भीशोकादिपरिग्रहार्थः । अधुना क्रोधजादीनां पृथगप्युपक्रममाह ।

क्रोधजो याति कामेन शांतिं क्रोधेन कामजः ॥ १६८ ॥
भयशोकोद्भवौ ताभ्यां भीशोकाभ्यां तथेतरौ ।

क्रोधजो ज्वरः कामोपभोगेन शांतिं याति । कामजश्च ज्वरः क्रोधेन शाम्यति । भयशोकजौ ज्वरौ कामक्रोधाभ्यां शांतिं यातः । तथेतरौ कामक्रोधजौ भीशोकाभ्यां शाम्यतः ।

शापाथर्वणमंत्रोत्थे विधिर्दैवव्यपाश्रयः ॥ १६९ ॥

शापाद्युत्थे ज्वरे दैवव्यपाश्रयो विधिः कार्यः । शापो मुनिपित्रादिभिः सक्रोधैर्दत्तः ।

ते ज्वराः केवलाः पूर्वं व्याप्यंतेऽनंतरं मलैः ।
तस्माद्दोषानुसारेण तेष्वाहारादि कल्पयेत् ॥ १७० ॥

ओषधाद्युत्थज्वराः पूर्वं केवला भवंति । अनंतरं मलैर्वातादिभिर्व्याप्यंते । तस्माद्धेतोस्तेषु ज्वरेषु दोषानुसारेणाहारादिकल्पयेत् । ननु शापाद्युत्थेषु वातादिकोपो नास्त्येव तत्किमिति । तेष्वाहारादिकं दोषानुसारेण कल्प्यत इत्याह ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

न हि ज्वरोनुबध्नाति मारुताद्यैर्विनाकृतः ।

यस्माद्वातादीनंतरेण विना कृतो ज्वरो नानुबध्नाति तस्मादवश्यं तेष्वपि वातादिकोपः संभाव्यत अत एव च तदनुसारेणाहारादिककल्पनं ।

ज्वरकालं स्मृतिं चास्य हारिभिर्विषयैर्हरेत् ॥ १७१ ॥

ज्वरकालं स्मृतिं चास्य हारिभिर्विषयैर्हरेत् । ज्वरकालं च वेगं च यश्च चिंतयन् ज्वर्यतेऽस्य च ज्वरिणो ज्वरकालस्मरणं हारिभिर्मनोहरैर्विषयैः शब्दादिभिर्हरेद्विस्मारयेत् ।

करुणार्द्रं मनः शुद्धं सर्वज्वरविनाशनम् ।

शुद्धं रागद्वेषाद्यनुपहतं तथा करुणयाऽऽर्द्रं कृपापरं चेतः सर्वज्वरविनाशनं स्यात् ।

त्यजेदाबललाभाच्च व्यायामस्नानमैथुनम् ॥ १७२ ॥
गुर्वसात्मविदाह्यन्नं यच्चान्यज्ज्वरकारणम् ।

बललाभादाबललाभमवधीकृत्य व्यायामादि त्यजेन्नाचरेत् । स्नानं च यद्यपि दीपनादिगुणयुक्तं मागधीतं तथापि प्रभावाज्ज्वरं करोतीति तद्वर्जनं । एवं व्यायामादिष्वपि चिंत्यं । अपरमनुक्तमपीह यज्ज्वरकारणं तदपि त्यजेत् । खरणादेप्युक्तं । पिष्टान्नं हरितं शाकं मांसं शुष्कं तिलान्दधि । ग्राम्यनूपोदकाजाविगव्यसूकरमाहिषं । मांसं शुष्काणि शाकानि सर्वमेव त्यजेज्ज्वरी । तथोक्तं । ज्वरितैस्तित्तिरिक्रौंचशिखिवर्तककुक्कुटाः । गुरूष्णत्वाद्विवर्ज्याः स्युरत्रसोपद्रवे ज्वर इति ।

न विज्वरोपि सहसा सर्वान्नीनो भवेत्तथा ॥ १७३ ॥
निवृत्तोपि ज्वरः शीघ्रं व्यापादयति दुर्बलम् ।

तथा विज्वरोपि पूर्वानुभूतज्वरः सहसाऽक्रमेणैव सर्वान्नभक्षो न स्यात् । सर्वान्नीनइत्युपपदसर्वान्नेत्यादिना खः । यतो निवृत्तोप्यपगतो ज्वरः शीघ्रमेव दुर्बलं व्यापादयति ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

सद्यः प्राणहरो यस्मात्तस्मात्तस्य विशेषतः ॥ १७४ ॥
तस्यां तस्यामवस्थायां तत्तत्कुर्याद्भिषग्जितम् ।

यस्माच्च ज्वरः सद्य एव प्राणहृद्भवति तस्मात्कारणात्तस्य ज्वरिणो विशेषणान्यरोगेभ्यः सकाशात्तस्यां सामपच्यमानपक्वजीर्णविषमचिरनिवृत्तज्वराद्यवस्थायां च तल्लंघनस्वेदनाद्युपाचनक्षीरसर्पिःपानादिकं भिषग्जितमौषधं कुर्यात् ।

ओषधयो मणयश्च सुमंत्राः साधुगुरुद्विजदैवतपूजाः ॥ १७५ ॥
प्रीतिकरा मनसो विषयाश्च घ्नन्त्यपि विष्णुकृतं ज्वरमुग्रम् ।

ओषध्यादयो विष्णुकृतमप्युग्रं ज्वरं घ्नंति । किं पुनरपचारादिकृतं ज्वरं न घ्नंतीत्यपिशब्दार्थः । भौतुभामोगिति दोधकमेतत् ।

इति श्रीमृगांकदत्तपुत्रश्रीमदरुणदत्तविरचितायामष्टांगहृदयटीकायां ज्वरचिकित्सिते प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

द्वितीयोऽध्यायः

ज्वरचिकित्सितानंतरं रक्तपित्तचिकित्सितमुच्यते । यतो महेश्वरस्य ललाटाज्ज्वरो बभूव तत्संतापाद्रक्तपित्तमित्युक्तमतो रक्तपित्तचिकित्सितस्यैवारंभो युक्तः । तथा निदाने यद्विशेषेण नोक्तं तदिह विशेषेण स्पष्टं कृत्वा निदानप्रायमपि भण्यते रक्तपित्तस्य क्षिप्रकारित्वात् ।

अथातो रक्तपित्तचिकित्सितं व्याख्यास्यामः ।
ऊर्ध्वगं बलिनोऽवेगमेकदोषानुगं नवम् ।
रक्तपित्तं सुखे काले साधयेन्निरुपद्रवम् ॥ १ ॥

बलिनो बलवतः पुंसो न स्त्रिया यदुत्पन्नमूर्ध्वगं रक्तपित्तं तत्साधयेदुपक्रमेत्तथा यदेवोर्ध्वगमवेगवत्तथैको दोषः कफाख्योऽनुगोऽनुबलो यस्य तदेकदोषानुगं । निदानेप्युक्तं । ऊर्ध्वं साध्यं कफाद्यस्मादिति । तथा नवमचिरो-

Indira Gandhi National Centre for the Arts

त्पन्नं तथा यत्सुखे काले तद्व्याधिप्रतिपक्षभूते हेमंते शिशिरे वा जातं तथा यन्निरुपद्रवं विकृतविज्ञानीयाध्यायोक्ते रक्तपित्तं भृशं रक्तमित्यादिग्रंथनिर्दिष्टैरुपद्रवै रहितमनो लक्षणाद्यद्विपर्ययलक्षणमूर्ध्वगमपि रक्तपित्तं तदर्थादसाध्यं साध्यं वा स्यादिति गम्यते ।

अधोगं यापयेद्रक्तं यच्च दोषद्वयानुगम् ।

अधोगं रक्तपित्तमूर्ध्वगरक्तपित्तोक्तैकदोषानुगाद्विशेषणविशिष्टमपि यापयेत् । यच्च दोषद्वयानुगं वातकफाभ्यां हीनबलाभ्यामनुगतमूर्ध्वगमपि तच्च यापयेत् ।

शांतं शांतं पुनः कुप्यन्मार्गान्मार्गांतरं च यत् ॥ २ ॥
अतिप्रवृत्तं मंदाग्नेस्त्रिदोषं द्विपथं त्यजेत् ॥

शांतं शांतमतिशयेन शांतं पुनः कुप्यत्कोपं गच्छदूर्ध्वगमेकदोषानुगमधोगं वा त्यजेत् । अथ मार्गादूर्ध्वं नासाक्षिकर्णस्य लक्षणान्मार्गांतरं गुदमेंढ्रलक्षणं यद्गच्छदेवं यत्प्रवृत्तं तच्च त्यजेत् । तस्मादपि चाधोमार्गात्पुनर्मार्गांतरमूर्ध्वं याति तदुभयं यापयेदिति चंद्रिकाव्याख्या । यदिति इणः शंतृडिइणश्चेति यादेशे यदिति रूपं । तथाऽतिप्रवृत्तमूर्ध्वमार्गादधोमार्गाद्वा यद्रक्तपित्तं तत्यजेद्रक्तस्य प्राणायतनत्वात् । उक्तं च । जीवितं प्राणिनां तत्र रक्ते तिष्ठति तिष्ठतीति । तथा मंदाग्नेर्यत्प्रवृत्तमधोगमूर्ध्वगं वा तदपि विरुद्धोपक्रमत्वात्त्यजेत् । तथा हि मंदाग्नेः कटुकाम्लोष्णरूक्षतीक्ष्णाद्यौषधमग्निसंधुक्षणं यत्तद्धितं रक्तपित्ते वाऽतोविपरीतप्रायं यत्तत्पथ्यं । तथा त्रिदोषमूर्ध्वगमधोगं वा तदपि त्यजेद्विषमत्वात् । यतो न तद्वमनविषयं भवितुमर्हति नापि विरेचनविषयं तथा यद्विपथगं तुल्यकालं द्विमार्गप्रवृत्तं युगपद्रक्तपित्तं तदपि त्याज्यं प्रतिलोमौषधाभावात्। तथा चोक्तं। असाध्यमुभयायनमशक्यप्रतिलोम्यत्वादिति । ज्ञात्वा निदानप्रयनं मलावनुबलौ बलं । देशकालाद्यवस्थां च रक्तपित्ते प्रयोजयेत् । लंघनं बृंहणं चादौ शोधनं शमनं तथा । निदानादि ज्ञात्वाऽनंतरं रक्तपित्त ऊर्ध्वगेऽधोगे वाऽऽदौ प्रथमत एव लंघनं प्रयोजयेदथवा बृंहणमथवा शोधनं शमनं वा । तत्र निदानं तीक्ष्णोष्ण-

Indira Gandhi National Centre for the Arts

कटुमम्लादिसेवनमेतज्ज्ञानं हि तन्निदानवर्जन उपयुज्यते । तथा च वक्ष्यति । यत्किंचिद्रक्तपित्तस्य निदानं तच्च वर्जयेदिति । अयनमूर्ध्वाधोलक्षणं ज्ञात्वा । तथा च वक्ष्यति । ऊर्ध्वगे तर्पणं योज्यं प्रागपि तथा । रक्तपित्ते तु सकफे ग्रथिते कंठमार्गगे । लिह्यान्माक्षिकसर्पिर्भ्यां क्षारमुत्पलनालजमिति । तथा । गुदागमे विशेषेण शोणिते बस्तिरिष्यत इत्यादि । तथा पित्ताख्यस्य मलस्यात्रमूलभूतत्वात्सामर्थ्यान्मलौ वातकफाख्यावनुबलौ ज्ञात्वा चिकित्साविशेषं प्रयोजयेत् । तथा च वक्ष्यति । रक्तपित्तं न चेच्छाम्येत्तत्र वातोल्बणे पयः युंज्याच्छागमित्यादि । तथा त्रिविधं बलं ज्ञात्वा । यतो वक्ष्यति । तथा स्वं मंथपेयादिः प्रयोज्यो रक्षता बलमिति । देशो द्विविधः । शारीरो भूमिदेशश्च । तत्र शारीरो मुखनासाद्यवयवरूपः । ऊर्ध्वगे हि रक्तपित्ते सत्यपि नासाप्रवृत्ते विशेषेणान्यदौषधामन्यप्रवृत्तेऽन्यत् । तथाऽधोगे रक्तपित्ते सत्यपि गुदप्रवृत्तेऽन्यदौषधं मेंढ्रप्रवृत्ते चान्यत् । भूमिदेशश्च त्रिविधो व्याख्यातो जांगलानूपसाधारणभेदेन । तत्र जांगलेऽन्यदौषधमनूपेऽन्यत्साधारणे चान्यत् । कालो मुहूर्त्तादिः शीतोष्ण वर्षलक्षणआवस्थिकश्च तथा च शीते कालेऽन्यदेशमन्यस्मिन् कालेऽन्यदेशमौषधं रक्तपित्ते । आदिग्रहणेनानलाहार सत्वसात्म्यवयःप्रकृतिप्रभृतयो गृह्यंते । अवस्थां च ज्ञात्वाऽवस्थावशाद्रक्तपित्तस्य ह्यवस्थाविशेषेणान्यदौषधं स्यात् ।

> संतर्पणोत्थं बलिनो बहुदोषस्य साधयेत् ॥ ३ ॥
> ऊर्ध्वभागं विरेकेण वमनेन त्वधोगतम् ।
> शमनैर्बृंहणैश्चान्यल्लंघ्यबृंह्यानवेक्ष्य च ॥ ४ ॥

संतर्पणोत्थं बलिनो बहुदोषस्य नरस्य रक्तपित्तमूर्ध्वगं विरेकेण साधयेदधोगतं तु वमनेन साधयेदन्यदपतर्पणोत्थं रक्तपित्तं दुर्बलस्याल्पदोषस्योर्ध्वगं शमनैरधोगं बृंहणैरुपचरेत् । बृंहणैर्वा शमनैः । न चेदं चिकित्सितं निरपेक्षं युंजीतेत्याह लंघ्यबृंह्यानवेक्ष्य चेति । लंघनादुत्पन्नमधोगमपि शमनैरुपाचरेत् । बृंहणादुत्पन्नमूर्ध्वगमपि लंघनैरुपाचरेदित्यर्थः ।

> ऊर्ध्वं प्रवृत्ते शमनौ रसौ तिक्तकषायकौ ।
> उपवासश्च निःशुंठीषडंगोदकपायिनः ॥ ५ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

ऊर्ध्वं प्रवृत्ते रक्तपित्ते शुंठीरहितं षडंगोदकं पिबतः पुंसस्तिक्तकषायौ रसौ शमनं तथोपवासः ।

अधोगे रक्तपित्ते तु बृंहणो मधुरो रसः ।

अधोगे तु रक्तपित्ते बृंहणो मधुरो रसो हितः ।

ऊर्ध्वगे तर्पणं योज्यं पेयापूर्वमधोगते ॥ ६ ॥

ऊर्ध्वगे रक्तपित्ते प्राक् पूर्वं तर्पणं योज्यं तथा सात्म्यत्वात् । एवमधोगे रक्तपित्ते प्राक् पूर्वं पेया योज्याः ।

अश्नतो बलिनोऽशुद्धं न धार्यं तद्धि रोगकृत् ।
धारयेदन्यथा शीघ्रमग्निवच्छीघ्रकारि तत् ॥ ७ ॥

बलिनो नरस्याश्नतो रक्तमशुद्धं दुष्टं न धार्यं न स्तंभनीयं । तद्धि धृतं सिराव्यधविध्युक्तान्विसर्पविद्रधिप्लीहादीन् रोगान् करोति । अन्यथा विधि विपर्यये सति दुर्बलस्याभोजनस्य च शीघ्रं धारयेद्यस्मादग्निवच्छीघ्रं मरण-कारि तद्रक्तमस्तंभितं स्यात् ।

तृवृच्छ्यामाकषायेण कल्केन च सशर्करम् ।
साधयेद्विधिवल्लेहं लिह्यात्पाणितलं ततः ॥ ८ ॥

तृवृता शुक्लगोपीत्युच्यते । श्यामा मालविका तृवृदुच्यते । तयोः कषा-येण तथा तयोरेव मात्रामाश्रित्यैतदुक्तमत्र च कंटकारिकालेहवत्क्वाथकल्क-शर्कराणां परिमाणं वेद्यमिति वृद्धवैद्यव्यवहारः ।

तृवृता त्रिफला श्यामा पिप्पली शर्करा मधु ।
मोदकः संनिपातोर्ध्वरक्तशोफज्वरापहः ॥ ९ ॥
तृवृत्समसिता तद्वत् पिप्पली पादसंयुता ।

तथा त्रिवृतादिभिर्मोदको वटकः शर्करापरिमाणं च प्रमकाद्यचूर्णवदव-बोध्यं । स च मोदकः सन्निपातोत्थरक्तशोफज्वरहृद्भवति । पूर्वोक्तस्य लेहस्य विषयनिर्देशादेव विषयोवेद्यस्त्रिवृत्समसिता पिप्पली पादसंयुता

Indira Gandhi National Centre for the Arts

तद्वत्सन्निपातादिष्विदित्यर्थः। एवमूर्ध्वगरक्तपित्तचिकित्सामुक्त्वाऽधोगरक्तपित्तचिकित्सितमाह ।

वमनं फलसंयुक्तं तर्पणंससितामधु ॥ १० ॥
ससितं वा जलं क्षौद्रयुक्तं वा मधुकोदकम् ।
क्षीरं वा रसमिक्षोर्वा

मदनफलेन संयुक्तं तर्पणं सितामधुभ्यां सह वमने देयं वातकोपभयादित्यभिप्रायः। अथवा सुशर्करं जलं फलसंयुक्तं मधुकोदकमथवा क्षौद्रसंयुक्तमथवा क्षीरमथवेक्षुरसांतं सर्वमेतन्मदनफलसंयुक्तं पृथक् प्रत्येकं देयं।

शुद्धस्यानंतरो विधिः ॥ ११ ॥
यथा स्वं मंथपेयादिः प्रयोज्यो रक्षता बलम् ।

ऊर्ध्वरक्तपित्तिनोऽधोरक्तपित्तिनो वा यथाक्रमं विरेकवमनाभ्यां शुध्यनंतरं यथायोगं यथाविधि मंथपेयादिराहारार्थं प्रयोक्तव्यः। ऊर्ध्वगे मंथादिरधोगे पेयादिरिति यथार्थः।

मंथो ज्वरोक्तो द्राक्षादिःपित्तघ्नैर्वा फलैः कृतः ॥ १२ ॥
मधुखर्जूरमृद्वीकापरूषकसितांभसा ।

मंथो ज्वरोक्तो द्राक्षादिर्द्राक्षामधूकमधुकेत्यादिपित्तघ्नैर्वा द्राक्षामलककाश्मर्यमधुकादिभिः फलैः कृतः प्रयोक्तव्यः।

मंथो वा पंचसारेण सघृतैर्लाजसक्तुभिः ॥ १३ ॥
दाडिमामलकाम्लो वा मंदाग्न्यम्लाभिलाषिणाम् ।

अथवा मध्वादिना द्रव्यपंचकेन कृतेन पंचसाराख्येन लाजासक्तुभिः ससर्पिष्कैर्मंथो हितः । मंदाग्नीनामम्लाभिलाषिणां च दाडिमामलकाभ्यामम्लश्च मंथः प्रयोज्यः। अधोगे प्राक्पेया प्रयोज्या इत्युक्तं। अतस्ता एव पेया ब्रूते।

कमलोत्पलकिंजल्कपृष्टीपर्णीप्रियंगुकाः ॥ १४ ॥
उशीरं शाबरं रोध्रं शृंगवेरं कुचंदनम् ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

ह्रीबेरं धातकीपुष्पं बिल्वमध्यं दुरालभा ॥ १५ ॥
अर्धार्धैर्विहिता पेया वक्ष्यंते पादयौगिकाः ।
भूनिंबसेव्यजलदा मसूरः पृष्टिपर्ण्यपि ॥ १६ ॥
विदारिगंधा मुद्गश्च बला सर्पिर्हरेणुका ।

कमलोत्पलेत्यादिभिर्वर्गैरर्धश्लोकैः पेया विहिताः। पादयौगिका वक्ष्यंते । भूतनिंबसेव्येत्यादयः ।

जांगलानि च मांसानि शीतवीर्याणि साधयेत् ॥ १७ ॥
पृथक्पृथग्जले तेषां यवागूः कल्पयेद्रसे ।
शीताः सशर्कराक्षौद्रास्तद्वन्मांसरसानपि ॥ १८ ॥
ईषदम्लाननम्लान्वा घृतभृष्टान्सशर्करान् ।

मांसानि जांगलानि शीतवीर्याणि शशादिसंबंधीनि पूर्वोक्तपेयोपयोगिनां पृथक्पृथग्जले साधयेत् । अनंतरं तस्मिन् रसे यवागूः कल्पयेत् । कीदृशीः । शीतास्तथा सशर्कराक्षौद्राः तद्वदित्यनेन शीतत्वं मांसरसानामतिदिशति न तु सशर्कराक्षौद्रत्वमप्ययोगार्हत्वात् । अत एवाह । तान्मांसरसानीषदम्लानाम्लाभिलाषिणोऽनम्लाभिलाषिणोऽनम्लानेव तथा घृतभृष्टान् सशर्करान् शर्करायुक्तान् ।

शूकशंबिभवं धान्यं रक्ते शाकं च शस्यते ॥ १९ ॥
अन्नस्वरूपविज्ञाने यदुक्तं लघु शीतलम् ।

तथा शूकशंबिजं धान्यं शाकं च रक्तपित्ते शस्यते । अन्नस्वरूपविज्ञानीयेऽध्याये यदुक्तं लघु च शीतलं च ।

पूर्वोक्तमंबुपानीयं पंचमूलेन वाशृतम् ॥ २० ॥
लघुना शृतशीतं वा मध्वंभो वा फलांबु वा ।

पूर्वोक्तमंबु षडंगं शुंठीरहितं पानीयं पातव्यमथवा लघुना पंचमूलेन शृतं । पानीयस्य श्रपणे तंत्रकारैर्विधिरुक्तः । यथा । कर्षं गृहीत्वा द्रव्यस्य

Indira Gandhi National Centre for the Arts

क्वाथयेत्मास्थिकेंऽभसि । अर्धशृतं मयोक्तव्यं जलपाकेत्वयं विधिरिति। केवलं वा जलं शृतशीतं हितं । मध्वंभो माक्षिकयुक्तं पानीयं । फलांबु वा द्राक्षादिभिर्वा पित्तघ्नैः फलैः कृतं ।

शशः सवास्तुकः शस्तो विबंधे तित्तिरिः पुनः ॥ २१ ॥
उदुंबरस्य निर्यूहे साधितो मारुतेऽधिके ।
प्लक्षस्य बर्हिणस्तद्वन्न्यग्रोधस्य च कुक्कुटः ॥ २२ ॥

शशः शशस्य मांसं सहवास्तुकेन विड्बंधे सति रक्तपित्तिनः शस्तः । तित्तिरस्तु मारुतेऽधिके उदुंबरस्य क्वाथे साधितः शस्तः । प्लक्षस्य क्वाथे साधितो बर्हिणो मयूरस्तद्वन्मारुतेऽधिके शस्तः । बर्हिण इति फलबर्हाभ्यामिनच् । तथैव । न्यग्रोधस्य निर्यूहे कुक्कुटः शस्तः । उदुंबरादिक्वाथसाधनं तित्तिर्यादीनामौष्ण्यं प्रतिहंतुं ।

यत्किंचिद्रक्तपित्तस्य निदानं तच्च वर्जयेत् ॥ २३ ॥

यत्किंचिद्रक्तपित्तस्य कारणं येन सेवितेन तज्जातं तच्च वर्जयेत्परिहरेत्।

वासारसेन फलिनी मृद्रोध्रांजनमाक्षिकम् ।
पित्तासृक् शमयेत्पीतं निर्यासो वाऽटरूषकात् ॥ २४ ॥
शर्करामधुसंयुक्तः केवलो वा शृतोपि वा ।
वृषः सद्यो जयत्यस्रं स ह्यस्य परमौषधम् ॥ २५ ॥

वासकस्य रसेन फलिन्यादिकं पीतं रक्तपित्तं शमयति । अथवाऽटरूषकस्य रसः शर्करामधुयुक्तः पीतो रक्तपित्तं जयेत् । अथवा केवलो वासारसः । अथवा क्वथितो वृषः शीघ्रं रक्तं जयेत् । सवृषो यस्मादस्य रक्तस्य परमौषधं ।

पटोलमालतीनिंबचंदनद्वयपद्मकम् ।
रौध्रो वृषः स्तंदुलियः कृष्णमृन्मदयंतिका ॥ २६ ॥
शतावरी गोपकन्याकाकोल्यौ मधुयाष्टिका ।
रक्तपित्तहराः क्वाथास्त्रयः समधुशर्कराः ॥ २७ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

पटोलादयोऽर्धश्लोकास्त्रयः क्वाथा मधुशर्करायुता रक्तपित्तं जयंतीति योज्यं। अत्र च वासक आर्द्रोपि द्विगुणो न योज्यः। एवं ह्युक्तं तंत्रांतरे। वासाकुटजकूष्मांडशतपुष्पासहाचराः। नित्यमार्द्राः प्रयोक्तव्यास्तथा हि द्विगुणा न त इति।

पलाशवल्कक्काथो वा सुशीतः शर्करान्वितः।
पिबेद्वा मधुसर्पिर्भ्यां गवाश्वशकृतो रसम् ॥ २७ ॥

अथवा पलाशत्वक्काथः शीतः शर्करायुतः पूर्वोक्तगुणोऽथवा मधुसर्पिर्भ्यां गवाश्वशकृतो रसं पिबेत्। गवाश्वेत्यवङ्स्फोटायनस्येत्यवङादेशः।

सक्षौद्रं ग्रथिते रक्ते लिह्यात्पारावतं शकृत्।

ग्रंथिते ग्रथितमति रक्तपित्ते पारावच्छकृत् क्षौद्रेण सह लिह्यात्।

अतिनिसृतरक्तश्च क्षौद्रेण रुधिरं पिबेत् ॥ २८ ॥
जांगलं भक्षयेद्वाजमामंपित्तयुतं यकृत्।

अतिस्रुतरक्तश्च जांगलं रक्तं क्षौद्रेण सहपिबेत्। आजं यकृदपक्वं पित्तयुतं भक्षयेत्।

चंदनोशीरजलदलाजामुद्गकणायवैः ॥ २९ ॥
बलाजले पर्युषितैः कषायो रक्तपित्तहा।

चंदनादिभिर्बलाजले पर्युषितैः कषायो रक्तपित्तजित्।

प्रसादश्चंदनांभोजसेव्य मृद्भृष्टलोष्टजः ॥ ३० ॥
सुशीतः ससिताक्षौद्रः शोणितातिप्रवृत्तिजित्।

चंदनादिजः प्रसादः सुशीतः शर्करामाक्षिकाभ्यां सहरक्तस्यातिप्रवृत्तिंजयेत्।

आपोथ्य वा नवे कुंभे प्लावयेदिक्षुगंडिकाः ॥ ३१ ॥
स्थितं तद्गतमाकाशे रात्रिं प्रातः शृतं जलम्।
मधुमृद्वीकाभांभोजकृतोत्तंसं च तद्गुणम् ॥ ३२ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

इक्षुगंडिका आपोथ्य भृशमादौ संकुट्य जले प्लावयेत्। नवे कुंभे रात्रिमाकाशे गुप्तं कीटाद्युपहतं यथा न स्यात्तथा स्थितं तदिक्षुगंडिकाजलं प्रातः शृतं समाक्षिकं विकसितपद्मेन कृतशेखरं तद्गुणं पूर्ववद्गुणमित्यर्थः।

ये च पित्ते ज्वरे चोक्ताः कषायास्तांश्च योजयेत्॥

पित्तज्वरे च ये कषाया उक्ताः शक्रयवाद्यनंताकटुकाचेति सक्षौद्रा इत्यादयस्तांश्च कषायानत्र योजयेत्।

कषायैर्विविधैरेभिर्दीप्तेऽग्नौ विजिते कफे।
रक्तपित्तं न चेच्छाम्येत्तत्र वातोल्बणे पयः॥ ३३॥
युंज्याच्छागं शृतं तद्वद्गव्यं पंचगुणेऽभसि।
पंचमूलेन लघुना शृतं वा ससितामधु॥ ३४॥
जीवकर्षभकद्राक्षाबलागोक्षुरनागरैः।
पृथक्पृथच्छृतं क्षीरं सघृतं सितयाऽथवा॥ ३५॥

एभिर्विविधैर्नानाप्रकारैः कषायैरग्नौ दीप्ते च कफे च विजिते सति यदि रक्तपित्तं न शाम्यति तत्र वातोल्बणे रक्तपित्ते सति पंचगुणेऽभसि शृतं छागं पयो युंज्यात्। पंचगुणेऽभसि गव्यं क्षीरं कथितं तद्वत्तेन छागेन समानगुणं तच्च युंज्यात्। अथवा लघुना पंचमूलेन शृतं गव्यं सशर्करमधु तद्गुणं। तथा जीवकर्षभकादिभिः पृथच्छृतं घृतेनाथवा शर्करया सह तद्गुणं।

गोकंटकाभीरुसृतं पर्णिनीभिस्तथा पयः।
हंत्याशु रक्तं सरुजं विशेषान्मूत्रमार्गगम्॥ ३६॥

गोकंटकादिभिस्तथा शालिपर्णीपृष्टिपर्णीमुद्गपर्णीमाषपर्णीभिः शृतं शीघ्रमेव रक्तं सवेदनं हंति। विशेषमूत्रमार्गगतं। विशेषग्रहणादन्यमार्गगमपि रक्तं हंतीति द्योतयति।

विण्मार्गगे विशेषेण हितं मोचरसेन तु।
वटप्ररोहैः शुंगैर्वा शुंठ्युदीच्योत्पलैरपि॥ ३७॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

विण्मार्गगे गुदगते रक्तपित्ते तु विशेषेण मोचरसेन शृतं क्षीरं हितं । वटप्ररोहैर्वा शृतं क्षीरमथवा वटशृंगैः प्रथमोद्भूतमुकुलितैः पल्लवभागैः शुंठयुदीच्योत्पलैर्वा शृतं पयो हितं ।

रक्तातिसारदुर्नामचिकित्सां चात्र कल्पयेत् ।

रक्तशब्दस्यातिसारदुर्नाम्नोः संबंधः । रक्तातिसारस्य रक्तार्शसश्च या चिकित्सा तामत्र रक्ते योजयेत् ।

पीत्वा कषायान् पयसा भुंजीत पयसैव च ॥ ३८ ॥
कषाययोगैरेभिर्वा विपक्कं पाययेद् घृतम् ।

कषायान्पूर्वोक्तान्पयसा पीत्वा पयसैवाश्नीयात् । एतैर्वा कषायाख्यैर्योगैर्विपक्कं घृतं रक्तपित्तिनं पाययेत् ।

समूलमस्तकं क्षुण्णं वृषमष्टगुणेंऽभसि ॥ ३९ ॥
पक्त्वाष्टांशावशेषेण घृतं तेन विपाचयेत् ।
पुष्पगर्भं च तच्छीतं सक्षौद्रं पित्तशोणितम् ॥ ४० ॥
पित्तगुल्मज्वरश्वासकासहृद्रोगकामलाः ।
तिमिरभ्रमवीसर्पस्वरसादांश्च नाशयेत् ॥ ४१ ॥

मूलपल्लवादियुक्तं क्षुण्णं चूर्णितं वृषमष्टगुणे जले पक्त्वा तेनाष्टांशावशेषेण क्वाथेन घृतं विपाचयेत् । किंभूतं । तत्पुष्पगर्भं तस्य वृषस्य पुष्पाणि गर्भः कल्को यस्य तदेवं । तच्च शीतीभूतं क्षौद्रेण सह पित्तशोणितादीन्नाशयेत् ।

पालाशवृंतस्वरसे तद्गर्भं च घृतं पचेत् ।
सक्षौद्रं तच्च रक्तघ्नं तथैव त्रायमाणया ॥ ४२ ॥

पालाशवृंतानां स्वरसे तद्गर्भं पलाशवृंतकल्कं घृतं पचेत् । तच्च क्षौद्रेण सह रक्तघ्नं भवति । तदेव त्रायमाणाया शृतं रक्तपित्तघ्नं ।

रक्ते सपिच्छे सकफे ग्रथिते कंठमार्गगे ।
लिह्यान्माक्षिकसर्पिर्भ्यां क्षारमुत्पलनालजम् ॥ ४३ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

रक्ते पिच्छवति पिच्छाशाल्मल्या रससदृशि तथा सकफे तथा ग्रथिते ग्रंथिसदृशे तथा कंठमार्गगे सति क्षारमुत्पलनालजं माक्षिकसर्पिर्भ्यां लिह्यात्। ननु क्षारस्य तैक्ष्ण्यादिगुणयोगाद्रक्तपित्ते न युक्त उपयोगस्तत्कथमिह तमनुमेने तंत्रकृत्। ब्रूमः। उत्पलादीनि शीतस्वभावानि तत्समुत्थश्च क्षारः स्वयोनिमनुकरोति तथा चोक्तं। कारणानुविधायित्वात्कार्याणां तत्स्वभावतेति। क्षारस्वरूपं न विष्यंदनात्मकं धत्ते तदेवं कंठमार्गगस्य कफानुबंधस्य ग्रथितस्य रक्तस्य क्षारो घृतमाक्षिकाभ्यां संयुक्तो विष्यंदनपूर्वं शोधयत्येव नतु तस्य कोपाय स्यादिति युक्तोऽत्र क्षारोपयोगः।

पृथक् पृथक् तथांभोजरेणुश्यामामधूकजम्।

अंभोजरेण्वादिकं पृथक् तथा माक्षिकघृताभ्यां लिह्यात्।

गुदागमे विशेषेण शोणिते बस्तिरिष्यते॥ ४४॥

गुदागमे रक्ते विशेषेण बस्तिरिष्यते।

घ्राणगे रुधिरे शुद्धे नावनं चानुषेचयेत्।
कषाययोगान् पूर्वोक्तान् क्षीरेक्ष्वादिरसप्लुतान्॥ ४५॥
क्षीरादीन्ससितांस्तोयंकेवलं वा जलं हितम्।
रसो दाडिमपुष्पाणामाम्रोत्थः शाड्वलस्य वा॥ ४६॥

घ्राणगे रुधिरे शुद्धे सति नावनमनुषेचयेन्नस्यं दद्यात्। कषाययोगान्पूर्वोक्तान्वासकादीन् घ्राणगेऽनुषेचयेत्। किंभूतान्क्षिरेक्ष्वादिरसेनाप्लुतान् सद्रवान्। आदिशब्देन मांसरसघृतादि गृह्यते क्षीरादीन् वा सशर्करादीन् दद्यात्। तथा तोयमर्थात्ससितं वा केवलं जलं हितमिति हि वक्ष्यति। तथा दाडिमपुष्पाणां रसस्तथा चूतफलोत्थस्तथा दूर्वारसो नस्यं पृथक् पृथग्घतं।

कल्पयेच्छीतवर्गं च प्रदेहाभ्यंजनादिषु।

यच्चपित्तज्वरे प्रोक्तं बहिरंतश्च भेषजम्

शीतवीर्यवर्गं च प्रलेपाभ्यंजनादिषु कल्पयेत्। यच्च पित्तज्वरे प्रोक्तं बहिरंतश्च भेषजम्। रक्तपित्ते हितं तच्च क्षतक्षीणे हितं च यत्। पित्तज्वरेऽ

८ रक्तपित्ते हितं तच्च क्षतक्षीणे हितं च यत्॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

भिहितमौषधं बहिरंतरे तच्च रक्तपित्ते हितं । तथा यच्च क्षते क्षीणे च हितं तदपि रक्तपित्ते हितमिति ।

इति श्रीमृगांकदत्तपुत्र श्रीमदरुणदत्तविरचितायामष्टांगहृदयटीकायां सर्वांगसुदराख्यायां रक्तपित्तचिकित्साध्यायो द्वितीयः ॥ २ ॥

अथ तृतीयोऽध्यायः

रक्तपित्तचिकित्सानंतरं कासचिकित्सितस्यारंभः । तस्य च संबंधो निदाने स्वयं ग्रंथकृतैवोक्तः ।

॥ अथातः कासचिकित्सितं व्याख्यास्यामः ॥

केवलानिलजं कासं स्नेहैरादावुपाचरेत् ।
वातघ्नसिद्धैः स्निग्धैश्च पेयायूषरसादिभिः ॥ १ ॥
लेहैर्धूमैस्तथाभ्यंगैः स्वेदसेकावगाहनैः ।
बस्तिभिर्बद्धविड्वातं सपित्तं तूर्ध्वभक्तिकैः ॥ २ ॥
घृतैः क्षीरैश्च सकफं जयेत्स्नेहविरेचनैः ।

केवलानिलजं कासं दोषांतरासंसृष्टं स्नेहैर्वातघ्नसिद्धैरादावुपाचरेत् नतु शुद्धस्य वातस्य स्नेहैरेव प्रधानोपक्रम आदिमध्यावसानेषु न पुनरन्य उपक्रमस्तस्मादादावित्यनेनार्थोऽत्रोच्यते । वातः केवलो दोषांतरावृतमार्गः कासस्य कारणं न त्वनावृतमार्गः । तथा च कासंसप्राप्तावुक्तं । तत्राधो विहितोनिल ऊर्ध्वं प्रवृत्त इत्यादि । एवं वातस्य विहितो यो दोषः कारणं कफादिस्तस्य रूक्षाद्युपक्रमेणैव शमं कृत्वा । अनंतरं कासेन सहोपक्रममस्य भिषजः कुर्युरिति । तेषां भ्रांतिनिरासार्थमादावित्युक्तं । तथा पेयादिभिरुपाचरेत् । तथा बद्धौ विड्वातौ यस्मिन्कासे तं बस्तिभिरुपाचरेत् । सपित्तं च ज्ञातकासमूर्ध्वभक्तिकैर्भक्तसमनंतरं पीयमानैर्घृतैर्भोजयेत् क्षीरैश्च । ऊर्ध्वभक्तिकैरिति । ऊर्ध्वभक्तादिभिः पेयादिभिर्मयूरव्यंसकादित्वात्समासः ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

आध्यात्मादित्वादिकण्। तथा वातघ्नसिद्धैरित्येतदेष्वपि योज्यं। तथा सकफं वातकासं स्नेहविरेचनैरुपाचरेत्। अथ स्नेहानाह।

गुडूचीकंटकारीभ्यां पृथक्त्रिंशत्पलाद्रसे ॥ ३ ॥
प्रस्थः सिद्धो घृताद्वातकासनुद्वह्निदीपनः।

गुडूच्याः कंटकार्याश्च पृथक् प्रत्येकं त्रिंशत्पलं तस्माद्यो रसस्तस्मिन् घृतात् प्रस्थः सिद्धो वातकासादिजित्। तिस्रोऽपि पंचम्य एता अपेक्षितक्रिये ऽपादाने बोध्याः।

क्षाररास्नावचाहिंगुपाठायष्टयाव्हधान्यकैः ॥ ४ ॥
द्विशाणैः सर्पिषः प्रस्थं पंचकोलयुतैः पचेत्।
दशमूलस्य निर्यूहे पीतो मंडानुपायिना ॥ ५ ॥
सकासश्वासहृत्पार्श्वग्रहणीरोगगुल्मनुत्।

क्षारादिभिः पंचकोलयुतैर्द्विशाणमात्रैः कल्कैर्दशमूलक्वाथे सर्पिषः प्रस्थं पचेत्। स च सर्पिःप्रस्थो मंडानुपायिना पीतः कासादिजित्।

द्रोणेऽपां साधयेद्रास्नादशमूलशतावरीः ॥ ६ ॥
पलोन्मिताद्विकुडवं कुलत्थं बदरं यवम्।
तुलार्धं चाजमांसस्य तेन साध्यं घृताढकम् ॥ ७ ॥
समक्षीरं पलांशैश्च जीवनीयैः समीक्ष्य तत्।
प्रयुक्तं वातरोगेषु पाननावनबस्तिभिः ॥ ८ ॥
पंचकासान् शिरःकंपं योनिवंक्षणवेदनाम्।
सर्वांगैकांगरोगांश्च सप्लीहोर्ध्वानिलान् जयेत् ॥ ९ ॥

रास्नादीनि पलोन्मितानि कुलत्थबदरयवान् द्विकुडवोन्मितानाजमांसस्य पंचाशत्पलानि जलद्रोणे पाचयेत्। तेन क्वाथेन घृताढकं साध्यं तुल्यक्षीरं पालिकैर्जीवनीयैर्जीवंतीकाकोल्यादिभिस्तद्घृतं समीक्ष्य देशकालादीनालोच्य पानादिभिः प्रयुक्तं पंचकासादीन् जयति।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

विदार्यादिगणक्राथकल्कसिद्धं च कासजित् ।

विदार्यादिगणस्य क्राथकल्काभ्यां च सिद्धं सर्पिः कासजित् ।

अशोकबीजक्षवकजंतुघ्नांजनपद्मकैः ॥ १० ॥
सविडैश्च घृतं सिद्धं तच्चूर्णं वा घृतप्लुतम् ।
लिह्यात्पयश्चानुपिबेदाजं कासादिपीडितः ॥ ११ ॥

अशोकबीजादिभिर्विडसहितैर्घृतं सिद्धं कासजित् तेषां वाऽशोकबीजादीनां चूर्णं घृतप्लुतं लिह्यात् । अनु पश्चाच्च छागं- क्षीरं कासेनाभिपीडितः पिबेत् ।

विडंगं नागरं रास्नापिप्पलीहिंगुसैंधवम् ।
भार्गीं क्षारश्च तच्चूर्णं पिबेद्वा घृतमात्रया ॥ १२ ॥
सकफेऽनिलजे कासे श्वासहिध्माहताग्निषु ।

अथवा विडंगादिचूर्णं घृतस्य मात्रया यथायोगं ह्रस्वमध्योत्तमया पिबेद्वातजे सकफे कासे श्वासादिषु च ।

दुरालभां शृंगवेरं शठीं द्राक्षां सितोपलाम् ॥ १३ ॥
लिह्यात्कर्कटशृंगीं च कासे तैलेन वातजे ।

दुरालभादीन् कर्कटशृंगीं च वातजे कासे तैलेन लिह्यात् ।

दुस्पर्शां पिप्पलीं मुस्तां भार्गीं कर्कटकीं शठीम् ॥ १४ ॥
पुराणगुडतैलाभ्यां चूर्णितान्यवलेहयेत् ।
तद्वत्सकृष्णां शुंठीं च सभार्गीं तद्वदेव च ॥ १५ ॥

दुस्पर्शादीनि चूर्णितानि वातजे कासे पुराणगुडतैलाभ्यामवलेहयेत् । तथैव पिप्पलीसहितां शुंठीं पुराणगुडतैलाभ्यां लेहयेत् । तद्वच्च पुराणगुडतैलाभ्यां भार्गीसहितां शुंठीं लेहयेत् ।

पिबेच्च कृष्णां कोष्णेन सलिलेन ससैंधवाम् ।
मस्तुना ससितां शुंठीं दध्ना वा कणरेणुकाम् ॥ १६ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

पिप्पलीं कदुष्णेन जलेन सैंधवसहितां पिबेत्। मस्तुना सशर्करां शुंठीं वा पिबेत्। अथवा दध्ना युक्तां पिप्पलीं रेणुकां पिबेत्।

पिबेद्बदरमज्जो वा मदिरादधिमस्तुभिः।
अथवा पिप्पलीकल्कं घृतभ्रष्टं ससैंधवम्॥ १७॥

अथवा बदरस्य मज्जो मदिरादिभिः पिबेत्। बहुवचनोपादानाच्च मदिरया अथवा दध्ना मस्तुना वेत्येवं द्रष्टव्यं न तु दध्नो मस्त्विति। पिप्पलीकल्कं वा घृतभ्रष्टं सैंधवयुक्तं पिबेन्मदिरादिभिः।

कासी सपीनसो धूमं स्नैहिकं विधिना पिबेत्।
हिध्माश्वासोक्तधूमांश्च क्षीरमांसरसाशनः॥ १८॥

कासी पीनसी च स्नैहिकं धूमं विधिना पिबेत्। क्षीरमांसरसाशनेहिध्मोक्तान् श्वासोक्तांश्च धूमान् पिबेत्।

ग्राम्यानूपोदकैः शालियवगोधूमषष्टिकान्।
रसैर्माषात्मगुप्तानां यूषैर्वा भोजयेद्धि तान्॥ १९॥

ग्राम्यादिजैर्मांसरसैरथवा माषात्मगुप्तानां यूषैः शाल्यादीन् हितानाशयेत्। हितानिति देशकालादिसात्म्यवशाद्यवाद्यन्यतमं यत् पथ्यं तद्भुंजीतेति प्रतिपादयति।

यवानीपिप्पलीबिल्वमध्यनागरचित्रकैः।
रास्नाजाजीपृथक्पर्णीपलाशशठीपौष्करैः॥ २०॥
सिद्धां स्निग्धाम्ललवणां पेयामनिलजे पिबेत्।
कटिहृत्पार्श्वकोष्ठार्तिश्वासहिध्माप्रणाशनीम्॥ २१॥

यवान्यादिभिः सिद्धां। स्निग्धामम्ललवणां पेयां वातजे कासे पिबेत्। किंभूतां। कट्याद्यार्तिश्वासहिध्माप्रणाशनीं।

दशमूलरसे तद्वत् पंचकोलगुडान्विताम्।
पिबेत्पेयां समतिलां क्षैरेयीं वा ससैंधवाम्॥ २२॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

तद्वत्पूर्वोक्तगुणे दशमूलक्वाथेतिसिद्धां पंचकोलगुडयुतां पेयां पिबेत्। क्षैरेयीं क्षीरसंकृतां वा पेयां वातजे कासे पिबेत्। किंभूतां। समतिलां तिलसहितां तथा ससैंधवां।

मात्स्यकौकुटवाराहैर्मांसैर्वा साज्यसैंधवाम्।

अथवा मात्स्याद्यैर्मांसैः साधितां सघृतसैंधवां पेयां पिबेत्।

वास्तुको वायसीशाकं कासघ्नः सुनिषण्णकः॥ २३॥
कंटकार्याः फलं पत्रं बालं शुष्कं च मूलकम्।
स्नेहास्तैलादयो भक्ष्याः क्षीरेक्षुरसगौडिकाः॥ २४॥
दधिमस्त्वारनालाम्लफलांबुमदिराः पिबेत्।

वास्तुकादयः शाकविशेषास्तैलादयः स्नेहा भक्ष्याः क्षीरादिसंबंधिनो हिताः। क्षीरं चेक्षुरसश्च गुडश्च तेषामिमे क्षीरेक्षुरसगौडिकाः। द्वंद्वांते परं यच्छ्रूयते तत्सर्वैः संबध्यत इति भाष्यकारवचनात्सर्वैरप्यत्र संबंधः। तेन क्षीरसंबंधिनश्चेक्षुरससंबंधिनश्च भक्ष्या हिता इत्यवतिष्ठते। तथा दधिमस्त्वादीनि पिबेत्। इति वातजे कासे प्रायेणोपयोग्यन्नपानमुद्दिष्टं।

पित्तकासे तु सकफे वमनं सर्पिषा हितम्॥ २५॥
तथा मदनकाश्मर्यमधुकक्वथितैर्जलैः।
फलयष्ट्याह्वकल्कैर्वा विदारीक्षुरसाप्लुतैः॥ २६॥

पित्तजे कासे किं भूते कफयुक्ते तु सर्पिषा वमनं हितं। अत एव वक्ष्यति। पित्तकासे तनुकफे विरेकाय त्रिवृतामिति। तस्मादत्रार्थाद्बहुकफत्वं बोध्यं। न केवलं सर्पिषा वमनं हितं। यावन्मदनादिभिः क्वथितैर्जलैर्वमनमवस्थावशाद्धितं। अथवा मदनफलमधुककल्कैर्विदार्यादिरसप्लुतैर्वमनं हितं।

पित्तकासे तनुकफे त्रिवृतां मधुरैर्युताम्।
युंज्याद्विरेकाययुतां घनश्लेष्मणितिक्तकैः॥ २७॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

पित्तजे कासे तनुकफे घनश्लेष्मणि त्रिवृतामधुरैर्युतां विरेकाय युंज्यात्। घनकफे तिक्तकैः सह तृवृतां युंज्यात्।

हृतदोषो हिमं स्वादु स्निग्धं संसर्जनं भजेत्।
घने कफे तु शिशिरं रूक्षं तिक्तोपसंहितम्॥ २८॥

हृतदोषो नरो हिमं मधुरं स्निग्धं संसर्जनं विरेकादनंतरं पेयादिक्रमं भजेत्। घने तु कफे शीतं तथा रूक्षं तिक्तयुतं संसर्जनं भजेत्।

लेहः पैत्ते सिताधात्रीक्षौद्रद्राक्षाहिमोत्पलैः।
सकफे साब्दमरिचः सघृतः सानिलेहितः॥ २९॥
मृद्वीकार्धशतं त्रिंशत्पिप्पलीःशर्करापलम्।
लेहयेन्मधुना गोर्वाक्षीरपस्यशकृद्रसम्॥ ३०॥

पित्तकासे सितादिभिर्लेहो हितः। सकफे पित्ते साब्दमरिचो लेहो हितः। सानिले पित्ते सघृतो लेहो हितः। तथा मृद्वीकागुलीकीपंचाशत् त्रिंशत्पिप्पलीः शर्करापलं च मधुना लेहयेत्। गोर्वा वत्सस्य क्षीरपस्य क्षीरवृत्तेः शकृद्रसं मधुना लेहयेत्।

त्वगेलाव्योषमृद्वीकापिप्पलीमूलपौष्करैः।
लाजमुस्ताशठीरास्नाधात्रीफलविभीतकैः॥ ३१॥
शर्कराक्षौद्रसर्पिर्भिर्लेहो हृद्रोगकासहा।

त्वगेलादिभिर्लेहो हृद्रोगकासहा भवति।

मधुरैर्जांगलरसैर्यवश्यामाककोद्रवाः॥ ३२॥
मुद्गादियूषैः शाकैश्च तिक्तकैर्मात्रया हिताः।
घनश्लेष्मणि लेहाश्च तिक्तका मधुसंयुताः॥ ३३॥

घनश्लेष्मणि पित्तकासे जांगलै रसैर्मधुरैस्तथा मुद्गकुलत्थादियूषैस्तथा तिक्तैः शाकैश्च सह यवादयो मात्रया परिमिता हिताः। घनश्लेष्मणि लेहाश्च तिक्तद्रव्ययुक्ताः।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

शालयःस्युस्तनुकफे षष्टिकाश्च रसादिभिः ।
शर्करांभोनुपानार्थं द्राक्षेक्षुस्वरसाः पयः ॥ ३४ ॥

तनुकफे पित्ते शालयः षष्टिकाश्च रसादिभिर्हिताः स्युर्भवेयुः । अनुपानार्थं शर्करांभो हितं द्राक्षेक्षुरसौ पयश्च ।

काकोलीबृहतीमेदाद्वयैः सवृषनागरैः ।
पित्तकासे रसक्षीरपेयायूषान् प्रकल्पयेत् ॥ ३५ ॥

काकोल्यादिभिर्मांसरसादीन् पित्तकासे प्रकल्पयेत् ।

द्राक्षां कणां पंचमूलं तृणाख्यं च पचेज्जले ।
तेन क्षीरं शृतं शीतं पिबेत्समधुशर्करम् ॥ ३६ ॥
साधितां तेन पेयां वा सुशीतां मधुनान्विताम् ।

पित्तकासे तथा द्राक्षादीन् चतुर्गुणे जले पचेत् । तेन पादावशिष्टेन द्राक्षादीनां क्वाथेन समं जलेन क्षीरं क्वथितं मधुशर्करायुतं पिबेत् । तेन वा जलेन साधितां पेयां सुशीतां माक्षिकयुतां पिबेत् ।

शठीह्रीबेरबृहतीशर्कराविश्वभेषजम् ॥ ३७ ॥
पिष्ट्वा रसं पिबेत्पूतं वस्त्रेण घृतमूर्छितम् ।

शठ्यादीन् जले पिष्ट्वा वस्त्रेण पूतं रसं घृतमिश्रितं पिबेत् ।

शर्करां जीवकं मुद्गमाषपर्ण्यौ दुरालभाम् ॥ ३८ ॥
कल्कीकृत्य पचेत्सर्पिः क्षीरेणाष्टगुणेन तत् ।
पानभोजनलेहेषु प्रयुक्तं पित्तकासजित् ॥ ३९ ॥
लिह्याद्वा चूर्णमेतेषां कषायमथवा पिबेत् ।

शर्करादीन् कल्कीकृत्याष्टगुणेन क्षीरेण सर्पिः पचेत् । तच्च सर्पिः पानादिषु युक्तं पित्तकासजित् । एतेषां च शर्करादीनां चूर्णं लिह्यात् । अथवैषामेव कषायं पिबेत् ।

Indira Gandhi National
Centre for the Arts

कफकासीपिबेदादौ सुरकाष्टात्प्रदीपितात् ॥ ४० ॥
स्नेहं परिस्रुतं व्योषयवक्षारावचूर्णितम् ।
स्निग्धं विरेचयेदूर्ध्वमधोमूर्ध्नि च युक्तितः ॥ ४१ ॥
तीक्ष्णैर्विरेकैर्बलिनं संसर्गी चास्य योजयेत् ।
यवमुद्गकुलत्थान्नैरुष्णरूक्षैः कटूत्कटैः ॥ ४२ ॥
काशमर्दकवार्त्ताकव्याघ्रीक्षारकणान्वितैः ।
धान्वबैल्वरसैः स्नेहैस्तिलसर्षपनिंबजैः ॥ ४३ ॥

कफकासी पूर्वं सुरकाष्टात्प्रदीपितायः श्रुतः स्नेहस्तंव्योषयवक्षारावचूर्णितं पिबेत्। स्निग्धं चसंतमनंतरं विरेचयेत्। ऊर्ध्वमधोमूर्ध्निच युक्तितो यथाबलह्यनिर्नि स्योदिति भावः। कैर्विरेचयेत्। तीक्ष्णैर्विरेकैः। किंभूतमातुरं बलवंतं। संसर्गींचपेयादिपरिपाटीं चास्य योजयेत्। यवादिभिर्यथायोगमुष्णरूक्षैस्तथा कटूत्कटैः प्रभूतकटूकैः कासमर्दकादियुक्तैः। धन्वनिभवा धान्वा जांगलाः। बिलेषु भवा बैल्वा। बिलेशयास्तेषां रसास्तैर्मांसरसैः सहेत्यर्थः। तथा स्नेहैस्तिलादिजैः सह।

दशमूलांबु घर्मांबु मद्यं मध्वंबु वा पिबेत् ।
मूलैः पौष्करशम्याकपटोलैः संस्थितं निशाम् ॥ ४४ ॥
पिबेद्वारिसहक्षौद्रं कालेष्वन्नस्य वा त्रिषु ।

दशमूलांब्वादीन् पिबेत्। अथवा मूलैः पौष्करादिभिर्निशां संस्थितं रात्रिस्थितं वारि क्षौद्रेण सह प्रातः पिबेत्। अथवाऽन्नस्य त्रिषु कालेष्वादिमध्यावसानलक्षणेषु पिबेत्।

पिप्पलीपिप्पलीमूलं शृंगबेरं बिभीतकम् ॥ ४५ ॥
शिखिकुक्कुटपिच्छानां मषीक्षारो यवोद्भवः ।
विशालापिप्पलीमूलं तृवृता च मधुद्रवाः ॥ ४६ ॥
कफकासहरा लेहास्त्रयः श्लोकार्धयोजिताः ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

पिप्पल्यादयस्त्रयो लेहाः श्लोकार्धैर्योजिता मधुना सह कफकासहरा भवंति ।

मधुना मरिचं लिह्यान्मधुनैव च जोंगकम् ॥ ४७ ॥
पृथग्रसांश्च मधुना व्याघ्रीवार्ताकभृंगजान् ।
कासघ्नस्याश्वशकृतः सुरसस्यासितस्य च ॥ ४८ ॥

तथा कफकासे मधुना मरिचं लिह्यात् । माक्षिकेनैवागुरुं लिह्यात् । व्याघ्र्यादिजान् रसान् पृथक् पृथङ्मधुना लिह्यात् ।

देवदारुशठीरास्नाकर्कटाख्यादुरालभाः ।
पिप्पली नागरं मुस्तं पथ्या धात्री सितोपला ॥ ४९ ॥
लाजासितोपलासर्पिः शृंगी धात्रीफलोद्भवा ।
मधुतैलयुता लेहास्त्रयो वातानुगे कफे ॥ ५० ॥

देवदार्वादयो मधुतैलयुता लेहास्त्रयः श्लोकार्धगदिता वातानुगे कफे स्युः । अत्र शृंगीधात्रीफलोद्भवेति केचिद्विशिष्टमामलकमाहुः । अन्ये तु शृंगी कर्कटशृंगीति व्याचक्षते ।

द्वे पले दाडिमादष्टौ गुडाद्व्योषात्पलत्रयम् ।
रोचनं दीपनं स्वर्यं पीनसश्वासकासजित् ॥ ५१ ॥

दाडिमस्य पले द्वे तु गुडादष्टौत्रिकटुकात् पलत्रयमित्येतद्दाडिमाद्यं चूर्णं रोचनादिगुणं पीनसादिजित् ।

गुडक्षारोषणकणादाडिमं श्वासकासजित् ।
क्रमात्पलद्वयार्द्धाक्षकर्षाक्षार्द्धपलोन्मितम् ॥ ५२ ॥

गुडादिकं क्रमेण पलद्वयमर्धकर्षं कर्षं पलप्रमाणं पूर्वोक्तगुणं ।

पिबेज्ज्वरोक्तं पथ्यादि सशृंगीकं च पाचनम् ।

तथा ज्वरचिकित्सितोक्तं पथ्याकुस्तुंबरीत्यादिकं पाचनं कर्कटशृंगीसहितं पिबेत् पूर्वगुणं ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

अथवा दीप्यकत्रिवृद्विशालाघनपौष्करम् ॥ ९३ ॥
सकणं क्वथितं मूत्रे कफकासी जलेऽपि वा ।

दीप्यकादिकं गोमूत्रे क्वथितं जलेऽथवा क्वथितं पिप्पलीसहितं कफकासी पिबेत् ।

तैलभृष्टं च वैदेहीकल्काक्षं ससितोपलम् ॥ ९४ ॥
पाययेत्कफकासघ्नं कुलित्थसलिलाप्लुतम् ।

पिप्पलीकल्ककर्षं सशर्करं तैलेन पक्वं कुलत्थसलिलाप्लुतं कफकासघ्नं पाययेत् ।

दशमूलाढके प्रस्थं घृतस्याक्षसमैः पचेत् ॥ ९५ ॥
पुष्कराह्वशठीबिल्वसुरसाव्योषहिंगुभिः ।
पेयानुपानं तत्सर्पिर्वातश्लेष्मामयापहम् ॥ ९६ ॥

दशमूलक्वाथाढके घृतस्य प्रस्थं पुष्करमूलादिभिः प्रत्येकं कर्षप्रमाणैः कल्कीकृतैः पचेत् । तच्च पेयानुपानं सर्ववातकफामयघ्नं ।

निर्गुंडीपत्रनिर्याससाधितं कासजिद् घृतम् ।

निर्गुंडीपत्रस्वरससाधितं घृतं कासजित्स्यात् ।

घृतं रसे विडंगानां व्योषगर्भं च साधितम् ॥ ९७ ॥

विडंगानां रसे व्योषगर्भे च साधितं घृतं पूर्वोक्तगुणं ।

पुनर्नवाशिवाटिकासरलकासमर्दामृता ।
पटोलबृहतीफणिज्जकरसैः पयःसंयुतैः ॥ ९८ ॥
घृतं त्रिकटुना च सिद्धमुपयुज्य संजायते ।
न कासविषमज्वरक्षयगुदांकुरेभ्योभयम् ॥ ९९ ॥

पुनर्नवादिरसैः पयसायुतैस्त्रिकटुना कल्केन च सिद्धं घृतमुपयुज्य पीत्वा कासादिभ्यो भयं न जायते । वसुग्रहयुताजसौजसपलाश्वपृथ्वीगुरुः । अत्र पुनर्नवादिरसो घृताच्चतुर्गुणः क्षीरं घृतसमं घृतं व्योषाच्चतुर्गुणामिति पाकक्रमः ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

समूलफलपत्राया: कंटकार्यारसाढके ।
घृतप्रस्थं बलाव्योषविडंगशठीदाडिमैः ॥ १० ॥
सौवर्चलयवक्षारमूलामलकपौष्करैः ।
वृश्चीवृहतीपथ्यायवानीचित्रकर्धिभिः ॥ ११ ॥
मृद्वीका चव्यवर्षाभूदुरालंभाम्लवेतसैः ।
शृंगीतामलकीभार्गीरास्नागोक्षुरकैः पचेत् ॥ १२ ॥
कल्कैस्तत्सर्वकासेषु श्वासहिध्मासु चेष्यते ।

कंटकार्याः समूलफलपत्राया रसाढके बलादिभिः कल्कैर्घृताच्चतुर्थांशप्रमाणैर्घृतप्रस्थं पचेत् । तच्च सर्पिः सर्वकासादिष्विष्यतेऽभिहितं । इदं च कंटकारीघृतं कफव्याधिविनाशनं ।

पचेद्व्याघ्रीतुलां क्षुण्णां वहेपामाढकस्थिते ॥ १३ ॥
क्षिपेत् पूते तु संचूर्ण्य व्योषरास्नामृताग्निकान् ।
शृंगीभार्ङ्गीघनग्रंथिधन्वयासान् पलार्धकान् ॥ १४ ॥
सर्पिषः षोडशपलं चत्वारिंशत्पलानि च ।
मत्स्यंडिकायाः शुद्धायाः पुनश्च तदधिश्रयेत् ॥ १५ ॥
दर्वीलेपिनि शीते च पृथग् द्विकुडवं क्षिपेत् ।
पिप्पलीनां तवक्षीर्या माक्षिकस्यानवस्य च ॥ १६ ॥
लेऽह्योयं गुल्महृद्रोगदुर्नामश्वासकासजित् ।

व्याघ्र्यास्तुलां क्षुण्णां मर्दितां जलस्य वहे चतुर्द्रोणे पचेत् । आढकस्थिते जले संचूर्ण्य व्योषादीनि पलप्रमाणानि प्रत्येकं क्षिपेत् । अग्निरेवाग्निकश्चित्रकः । घृतस्य च षोडशपलानि । मत्स्यंडिकायाः विमलायाश्चत्वारिंशत्पलानि । भूयश्च तत्सर्वं पचेत् । दर्वी लिंपतीति दर्वीलेपी । तस्मिन् दर्वीलेपिनि शीतेऽवलेहे सति प्रत्येकं द्विकुडवप्रमाणं पिप्पल्यादिः क्षिपेत् । अयं लेहो दुर्नामादिजित् ।

शमनं च पिबेद्धूमं शोधनं बहुले कफे ॥ १७ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

तथा कफकासे शमनं धूमं पिबेत्। घनश्लेष्मणि शोधनं धूमं पिबेत्। अथ तमेव धूममाह।

मनःशिलालमधुकमांसीमुस्तेंगुदित्वचः।
धूमं कासघ्नविधिना पीत्वा क्षीरं पिबेदनु ॥ ६८ ॥
निष्ठ्यूतांते गुडयुतं कोष्णं धूमो निहंति सः।
वातश्लेष्मोत्तरान् कासानचिरेण चिरंतनान् ॥ ६९ ॥

एतेषां संबंधिनं धूमं कासघ्नविधिना सूत्रोदितेन पीत्वानु पश्चान्निष्ठ्यूतांते कोष्णं क्षीरं गुडान्वितं पिबेत्। सधूमः पीतो वातश्लेष्मोत्तरान् कासांश्चिरंतनानाश्वेव हंति। चिरंतनानिति सायंचिरमित्यादिना तनड्।

तमकः कफकासे तु स्याच्चेत्पित्तानुबंधजः।
पित्तकासक्रियां तत्र यथावस्थं प्रयोजयेत् ॥ ७० ॥

कफकासे यदि तमकः पित्तानुबंधजः स्यात्। तत्र तमके पित्तकासक्रियामवस्थावशात्प्रयोजयेत्।

कफानुबंधे पवने कुर्यात्कफहरां क्रियाम्।
पित्तानुबंधयोर्वातकफयोः पित्तनाशनीम् ॥ ७१ ॥

पवने कफानुबंधे सति कफकासहरां क्रियां कुर्यात्। पित्तानुबंधयोर्वातकफयोः पित्तकासनाशनीं क्रियां विदध्यात्।

वातश्लेष्मात्मके शुष्के स्निग्धं चार्द्रे विरूक्षणम्।
कासे कर्मसपित्ते तु कफजे तिक्तसंयुतम् ॥ ७२ ॥

वातश्लेष्मात्मके शुष्के कासे स्निग्धं कर्म। आर्द्रे तु कासे विरूक्षणं कर्म

उरस्यंतः क्षते सद्यो लाक्षां क्षौद्रयुतां पिबेत्।
क्षीरेण शालीन् जीर्णेऽद्यात् क्षीरेणैव सशर्करान् ॥७३॥

अंतः क्षत उरसि सति सद्यः शीघ्रमेव लाक्षां माक्षीकयुक्तां क्षीरेण पिबेत्। उरःसंधानजनने लाक्षायाः प्राधान्यात्। तथा चाष्टसंग्रहे। ला

Indira Gandhi National Centre for the Arts

क्षा सद्यः क्षतभ्नानां जीर्णे परिणते तस्मिन्नौषधं क्षीरेणैव सहशालिमद्यात् सशर्करं।

पार्श्ववस्तिसरुक्चाल्पपित्ताग्निस्तां सुरायुताम् ॥
भिन्नविट्कः सुमुस्तातिविषापाठां सवत्सकाम् ॥७४॥

पार्श्वबस्त्यादिरुगल्पोऽग्निश्च तां लाक्षायुतां सुरां पिबेत्। भिन्नपुरीषः पुरुषो नरो मुस्तातिविषापाठावत्सकान्वितां लाक्षां पिबेत्।

लाक्षां सर्पिर्मधूच्छिष्टं जीवनीयं गणं सिताम् ।
त्वक्षीरींसंमितं क्षीरे पक्त्वा दीप्तानलः पिबेत् ॥७५॥
इक्ष्वारिकाबिसग्रंथिपद्मकेसरचंदनैः ।
शृतं पयो मधुयुतं संधानार्थं क्षती पिबेत् ॥ ७६ ॥

लाक्षादीनि हि क्षीरेण पक्त्वा तत् क्षीरं दीप्ताग्निः पिबेत्। इक्ष्वारिकादिभिः शृतं क्षीरं मधुयुतं संधानार्थमुरसिक्षतः पुमान् पिबेत्।

यवानां चूर्णमामानां क्षीरे सिद्धं घृतान्वितम् ।
ज्वरदाहे सिताक्षौद्रसक्तून्वा पयसा पिबेत् ॥ ७७ ॥

यवानामामानां चूर्णं क्षीरे सिद्धं घृतयुतं ज्वरदाहे पिबेत्। अथवा शर्करामाक्षिकयुतान् सक्तून् पयसा पिबेत्।

कासवांश्च पिबेत्सर्पिर्मधुरौषधसाधितम् ।
गुडोदकं वा क्थितं सक्षौद्रमरिचं हिमम् ॥ ७८ ॥
चूर्णमामलकानां वा क्षीरपक्वं घृतान्वितम् ।
रसायनविधानेन पिप्पलीर्वा प्रयोजयेत् ॥ ७९ ॥

कासवांश्च मधुरौषधैः साधितं सर्पिः पिबेत्। अथवा गुडोदकं क्थितं सक्षौद्रमरिचं शीतं पिबेत्। आमलकानां वा चूर्णं क्षीरसिद्धं सर्पिर्युक्तं पिबेत्। रसायनोक्तविधिना वा पिप्पलीः प्रयोजयेत्।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

कासी पर्वास्थिशूली च लिह्यात्सघृतमाक्षिकान् ।
मधूकमधुकद्राक्षात्वक्क्षीरीपिप्पलीबलान् ॥ ८० ॥

कासी पर्वास्थिशूलवांश्च सघृतमाक्षिकान् मधूकादीन् लिह्यात् ।

त्रिजातमर्धकर्षांशं पिप्पल्यर्धपलं सिता ।
द्राक्षामधूकं खर्जूरं पलांशं श्लक्ष्णचूर्णितम् ॥ ८१ ॥
मधुना गुटिका घ्नंति ता वृष्याः पित्तशोणितम् ।
कासश्वासारुचिच्छर्दिमूर्च्छाहिध्मावमिभ्रमान् ॥ ८२ ॥
क्षतक्षयस्वरभ्रंशप्लीहशोफाढ्यमारुतान् ।
रक्तनिष्ठीवहृत्पार्श्वरुक्पिपासाज्वरानपि ॥ ८३ ॥

त्रिजातकमर्द्धकर्षप्रमाणं कणाकर्षद्वयमात्रा सितादिकं प्रत्येकं पलांशं श्लक्ष्णचूर्णितं मधुना कृता गुटिका वृष्याः पित्तशोणितादीन् घ्नंति ।

वर्षाभूशर्करारक्तशालितंडुलजं रजः ।
रक्तष्ठीवी पिबेत्सिद्धं द्राक्षारसपयोघृतैः ॥ ८४ ॥
मधूकमधुकक्षीरसिद्धं वा तंडुलीयकम् ।

पुनर्नवादिचूर्णं सपयोघृतैः सिद्धं रक्तष्ठीवी पिबेत् । अथवा मधूकादिभिः सिद्धं तंडुलीयकं पिबेत् ।

यथा स्वमार्गविसृते रक्ते कुर्याच्च भेषजम् ॥ ८५ ॥

मार्गेण च मुखादिना विसृते रक्ते यथायथं रक्तपित्तचिकित्सितोक्तमौषधं कुर्यात् ।

मूढवातस्त्वजामेदः सुराभृष्टं ससैंधवम् ।

मूढवातस्तु पुरुषोऽजाया मेदः सुरया भृष्टमीषत्सैंधवमद्यात्

क्षामः क्षीणक्षतोरस्को मंदनिद्रोऽग्निदीप्तिमान् ॥ ८६ ॥
शृतक्षीरसरेणाद्यात्सघृतक्षौद्रशर्करम् ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

क्षामः क्षीणः क्षतोरस्को मंदनिद्रो दीप्ताग्निः शृतक्षीरस्य संबंधिना सरेण सघृतक्षौद्रशर्करमजामेदमद्यात् ।

शर्करां यवगोधूमं जीवकर्षभकौ मधु ॥ ८७ ॥
शृतक्षीरानुपानं वा लिह्यात् क्षीणः क्षतः कृशः ।

अथवा क्षीणोऽक्षतः कृशो वा शर्करादिकं लिह्यात् । क्षीरकाथं शृतक्षीरानुपानं ।

क्रव्यात्पिशितनिर्यूहं घृतभृष्टं पिबेच्च सः ॥ ८८ ॥
पिप्पलीक्षौद्रसंयुक्तं मांसशोणितवर्धनम् ।

सच क्षामः क्षीणादिः क्रव्यात्पिशितस्य निर्यूहं घृतेन भृष्टं पिबेत् । किं भूतं । पिप्पलीक्षौद्रान्वितं तच्च मांसशोणितवर्धनं स्यात् ।

न्यग्रोधोदुंबराश्वत्थप्लक्षशालप्रियंगुभिः ॥ ८९ ॥
तालमस्तकजंबूत्वक्प्रियालैश्च सपद्मकैः ।
साश्वकर्णैः शृतात्क्षीराद्द्याज्जातेन सर्पिषा ॥ ९० ॥
शाल्योदनं क्षतोरस्कः क्षीणशुक्रबलेंद्रियः ।

न्यग्रोधादिभिः शृतात्क्षीरात्समुद्भूतेन सर्पिषा शाल्योदनं क्षतोरस्कः क्षीणशुक्रादिश्च नरोऽद्यात् ।

वातपित्तार्दितेऽभ्यंगो गात्रभेदे घृतैर्मतः ॥ ९१ ॥
तैलैश्चानिलरोगघ्नैः पीडिते मातरिश्वना ।

वातपित्तपीडिते गात्रभेदे वाभ्यंगो घृतैर्मतः । मातरिश्वना वातेन पीडिते सति तैलैर्वातरोगघ्नैरभ्यंगो मतः । चशब्दाद्घृतैरपीति द्योतयति ।

हृत्पार्श्वार्तिषु पानं स्याज्जीवनीयस्य सर्पिषः ॥ ९२॥
कुर्याद्वा वातरोगघ्नं पित्तरक्ताविरोधि यत् ।

हृत्पार्श्वपीडासु जीवनीयस्य सर्पिषः पानं स्यात् । इति संभावनायां लिङ् । अथवा वातरोगघ्नं यत् पित्तरक्ताविरोधि तत् कुर्यात् ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

यष्टयाह्वनागबलयोः क्वाथे क्षीरे समे घृतम् ॥ ९३ ॥
पयस्यापिप्पलीवांसीकल्कैः सिद्धं क्षते हितम् ।

यष्टयाव्हयस्य नागबलायाश्च क्वाथे क्षीरे तुल्ये पयस्यादिकल्कैः सिद्धं घृतं क्षतकासे हितं ।

जीवनीयो गणः शुंठी वरीवीरा पुनर्नवा ॥ ९४ ॥
बला भार्ङ्गीस्वगुप्तर्द्धिशठी तामलकी कणा ।
शृंगाटकं पयस्या च पंचमूलं च यल्लघु ॥ ९५ ॥
द्राक्षाक्षौडादि च फलं मधुरस्निग्धबृंहणम् ।
तैः पचेत्सर्पिषः प्रस्थं कर्षांशैः श्लक्ष्णकल्कितैः ॥ ९६ ॥
क्षीरधात्रीविदारीक्षुछागमांसरसान्वितम् ।
प्रस्थार्धं मधुनः शीते शर्करार्धं तुलारजः ॥ ९७ ॥
पलार्धकं च मरिचं त्वगेलापत्रकेसरम् ।
विनीय चूर्णितं तस्माल्लिह्यान्मात्रां यथाबलम् ॥ ९८ ॥
अमृतप्राशमित्येतन्नराणाममृतं घृतम् ।
सुधामृतरसं प्राश्यं क्षीरमांसरसाशिना ॥ ९९ ॥
नष्टशुक्रक्षतक्षीणो दुर्बलव्याधिकर्शितान् ।
स्त्रीप्रसक्तान् कृशान् वर्णस्वरहीनांश्च बृंहयेत् ॥ १०० ॥
कासहिध्माज्वरश्वासदाहतृष्णास्रपित्तनुत् ।
पुत्रदं छर्दिमूर्च्छाहृद्योनिमूत्रामयापहम् ॥ १०१ ॥

जीवनीयो गणस्तथा शुंठयादयस्तैर्जीवनीयादिगणादिभिः कर्षांशैः सूक्ष्मचूर्णितैः क्षीरधात्र्यादिरसयुक्तं घृतस्य प्रस्थं द्वात्रिंशत्पलानि पचेत् । द्राक्षाक्षोडादीन्यत्रादिशब्देन नालिकेरनिकोचादिपरिग्रहः । शीते घृते माक्षिकस्य षोडशपलानि शर्कराचूर्णपलानि पंचाशन्मरिचादीनि द्विकार्षिकाणि चूर्णितानि प्रक्षिप्य तस्मान्मात्रां यथा बलं लिह्यात् । अमृतप्राशमेतत्संज्ञं घृतं नराणाममृततुल्यं महागुणत्वात् । यथा नागानां सुधा देवानां

Indira Gandhi National Centre for the Arts

ममृतं। अतएवैतत्सुधाममृतरसं माज्यं भोज्यं क्षीरमांसरसाशिना। एतच्चामृतं नष्टशुक्रादीन् बृंहयेत्। कासादिनुत्। पुत्रदं छर्द्यादिघ्नं। अत्र च मधुरस्निग्धबृंहणानां द्राक्षादीनामपि यथालाभं कर्षप्रमाणमधिकं वा योज्यं। यथासामान्यपरिभाषोक्ता कर्षमात्रा परिपूर्णा स्यादिति।

श्वदंष्ट्रोशीरमंजिष्ठाबलाकाश्मर्यकट्तृणम्।
दर्भमूलं पृथक्पर्णीपलाशर्षभकौस्थिरा॥ १०२॥
पालिकानिपचेत्तेषां रसे क्षीरचतुर्गुणे।
कल्कैः स्वगुप्ताजीवंतीमेदकर्षभजीवकैः॥ १०३॥
शतावर्यर्धिमृद्वीकाशर्कराश्रावणीबिसैः।
प्रस्थः सिद्धो घृताद्वातपित्तहृद्रोगशूलनुत्॥ १०४॥
मूत्रकृच्छ्रप्रमेहार्शःकासशोषक्षयापहः।
धनुस्त्रीमद्यभाराध्वखिन्नानां बलमांसदः॥ १०५॥

श्वदंष्ट्रादीनि पालिकानि तेषां रसे क्षीरचतुर्गुणे स्वगुप्तादिभिः कल्कैर्घृतात् प्रस्थः सिद्धो वातपित्तहृद्रोगशूलनुत्। मूत्रकृच्छ्रादिघ्नः। तथा धनुरादिखिन्नानां बलमांसदः।

मधुकाष्टपलद्राक्षाप्रस्थक्काथे पचेद्घृतम्।
पिप्पल्यष्टपले कल्के प्रस्थं सिद्धे च शीतले॥ १०६॥
पृथगष्टपलं क्षौद्रशर्कराभ्यां विमिश्रयेत्।
समसक्तुक्षतक्षीणरक्तगुल्मेषु तद्धितम्॥ १०७॥

मधुयष्ट्या अष्टौपलानि द्राक्षायाः षोडश एतत्क्काथे पिप्पल्यष्टपले पृथग् घृतप्रस्थं पचेत्। घृते च सिद्धे सुशीते सति क्षौद्रशर्करयोः पृथगष्टपलं विमिश्रयेत्। एतच्च घृतं समसक्तु क्षतक्षीणे रक्तगुल्मे च हितं।

धात्रीफलविदारीक्षुजीवनीयरसाद्घृतात्।
गव्याजयोश्च पयसोः प्रस्थं प्रस्थं विपाचयेत्॥ १०८॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

सिद्धपूते सिताक्षौद्रं द्विप्रस्थं विनयेत्ततः ।
यक्ष्मापस्मारपित्तासृक्कासमेहक्षयापहम् ॥ १०९ ॥
वयःस्थापनमायुष्यं मांसशुक्रबलप्रदम् ।

धात्र्यादिरसस्य प्रस्थं गव्याजयोः क्षीरयोः प्रस्थौ च विपाचयेत् । सिद्धपूते च ततस्तस्मिन् घृते शर्कराक्षौद्रयोः प्रस्थौ द्वौ विनयेत् क्षिपेत् । एतच्च घृतं यक्ष्मादिहरं तथा वयःस्थापनादिगुणं ।

घृतं तु पित्तेऽभ्यधिके लिह्याद्वाताधिके पिबेत् ॥ ११० ॥
लीढं निर्वापयेत्पित्तमल्पत्वाद्धंति नानलम् ।
आक्रामत्यनिलं पीतमूष्माणं निरुणद्धि च ॥ १११ ॥

पित्तेऽभ्यधिके घृतं लिह्यात् । वातेऽधिके घृतं पिबेत् । लीढं तु घृतं पित्तं निर्वापयेत्संशमयेत् । अनलं च न हंति लीढं घृतं । कुतोऽल्पत्वात् । अत्रायं सद्भावार्थः किल पीतेनाधिकेनार्द्रवत्तया वन्हेर्मांद्येनावश्यं भवितव्यं । तथा च वक्ष्यति । अग्नेर्निर्वापके पित्तं रेकेन वमनेन वा तच्चाभ्यधिकं पित्तं लीढं घृतं संशमयति । अल्पत्वाच्च हेतोरग्निं न हंति । मंदस्याग्नेरधिकं मांद्यं जनयति । पीतं सद् घृतमनिलमाक्रामति प्रसह्य जयति । ऊष्माणं जाठरं वन्हिं जाज्वल्यमानं रुणद्धि । आश्वेव स्थगयति शमं किंचिन्नयति ।

क्षामक्षीणकृशांगानामेतान्येव घृतानि तु ।
त्वक्क्षीरीपिप्पलीलाजचूर्णैः पानानि योजयेत् ॥ ११२ ॥
सर्पिर्गुडान्समध्वंशान् कृत्वा दद्यात्पयो नु च ।
रेतो वीर्यं बलं पुष्टिं तैराशुतरमाप्नुयात् ॥ ११३ ॥

क्षामाणां क्षीणानां कृशांगानां च नृणामेतान्येव पूर्वोक्तानि पानानि त्वक्क्षीरीशर्करालाजाचूर्णैः सह नियोजयेत् । सर्पिर्मिश्रान् गुडान्समध्वंशान् कृत्वा च दद्यात् । शर्करायाः पलानि पंचाशन्मधुनः पलानि षोडशात्र देयानि । मुनिना ह्येवमुक्तं । विदारीक्षुरसः प्रस्थैः प्रस्थं द्रव्याद्घृतात्पचेत् । शर्करार्धतुलां शीते क्षौद्रार्धप्रस्थमेव च । क्षिप्त्वा सर्पिर्गुडान् कुर्याद्विकाश्वा-

Indira Gandhi National Centre for the Arts

सज्वरापहानिति । पय इत्यादि । अनंतरं पयः पिबेत् । तैः सर्पिर्गुडैरेतेवीर्यादीन् शीघ्रतरं प्राप्नोति ।

वीतत्वगस्थिकूष्मांडतुलां स्विन्नां पुनः पचेत् ।
घट्टयन् सर्पिषः प्रस्थे क्षौद्रवर्णेऽत्र च क्षिपेत् ॥ ११४ ॥
खंडाच्छतं कण्पशुंठ्योर्द्विपलं जीरकादपि ।
त्रिजातधान्यमरिचं-पृथगर्धं पलांशकम् ॥ ११५ ॥
अवतारितशीते च दत्वा क्षौद्रं घृतार्धकम् ।
खजेनामथ्य च स्थाप्य तन्निहंत्युपयोजितम् ॥ ११६ ॥
कासहिध्माज्वरश्वासरक्तपित्तक्षतक्षयान् ।
उरःसंधानजननं मेधास्मृतिबलप्रदम् ॥ ११७ ॥
अश्विभ्यां विहितं हृद्यं कूष्मांडकरसायनम् ।

वीतान्यपासितानि त्वगस्थीनि यस्मात्कूष्मांडात्तस्य तुलां स्विन्नां सतीं पुनः सर्पिषः प्रस्थे चालयन् पचेत् । अत्र च कूष्मांडे माक्षिकवर्णे जाते सति खंडाच्छतं कणाशुंठ्योर्द्विपलं जीरकाच्च पलद्वयं त्रिजातकादि प्रत्येकमर्धपलांशकं क्षिपेत् । अवतारिते शीते चास्मिन् क्षौद्रस्य षोडश पलानि दत्वा खजेन दर्व्या आमथ्य विलोडय पश्चाद् भांडे स्थाप्यं । एवं ह्यस्य सम्यग् घृतादिसमयोगः स्यात् । उपयोजितं च तत्कासादीन् हंति । उरःसंधानं करोति । मेधादिप्रदं । अश्विभ्यां दस्राभ्यां निर्दिष्टं कूष्मांडकाख्यं रसायनं ।

पिबेन्नागबलामूलस्यार्धकर्षाभिवर्द्धितम् ॥ ११८ ॥
पलं क्षीरयुतं मासं क्षीरवृत्तिरनन्नभुक् ।
एष प्रयोगः पुष्ट्यायुर्बलवर्णकरः परम् ॥ ११९ ॥
मंडूकपर्ण्याः कल्पोयं यष्ट्या विश्वौषधस्य च ।

नागबलामूलस्य पलं क्षीरयुतं पिबेत् । किं भूतं । अर्धकर्षादिवर्धितं मासं यावत् । किं भूतो नरः क्षीरवर्त्तनोऽनन्नदः सन् । अयं प्रयोगः सुष्ठुपुष्ट्यादिकरः । एवमेव कल्पो मंडूकपर्ण्याः यष्ट्याः शुंठ्याश्च कार्यः ।

Indira Gandhi National
Centre for the Arts

पादशेषं जलद्रोणे पचेन्नागबलातुलाम् ॥ १२० ॥
तेन क्वाथेन तुल्यांशं घृतं क्षीरेण पाचयेत् ।
पलार्धिकैश्चातिबलाबलायष्टीपुनर्नवैः ॥ १२१ ॥
प्रपौंडरीककाश्मर्यप्रियालकपिकच्छुभिः ।
अश्वगंधासिताभीरुमेदायुग्मत्रिकंटकैः ॥ १२२ ॥
काकोलीक्षीरकाकोलीक्षीरशुक्लाद्विजीरकैः ।
एतन्नागबलासर्पिः पित्तरक्तक्षतक्षयान् ॥ १२३ ॥
जयेत्तृड्भ्रमदाहांश्च बलपुष्टिकरं परम् ।
वर्ण्यमायुष्यमोजस्यं वलीपलितनाशनम् ॥ १२४ ॥
उपयुज्य च षण्मासान् वृद्धोपि तरुणायते ।

नागबलायास्तुला वारिद्रोणे पादशेषं यथा भवति तथा पचेत् । तेन नागबलाक्वाथेन तुल्यांशं घृतं तथा क्षीरं तथा पलार्द्धप्रमाणैरतिबलादिभिः कल्कैश्च साधयेत् । एतन्नागबलासर्पिः पित्तरक्तादिकं जयेत् । तथा सुष्टुबलादिकरं । तच्चवर्णाय हितमायुष्यमोजस्यं वलीपलितघ्नं च । तथा षण्मासानुपयुज्येदं घृतं वृद्धोपि तरुण इवाचरति ।

दीप्तेऽग्नौ विधिरेषः स्यान्मंदे दीपनपाचनः ॥ १२५ ॥
यक्ष्मोक्तः क्षतिनां शस्तो ग्राही शकृति तु द्रवे ।

दीप्ते समिद्धेऽग्नौ सत्येष विधिः स्यात् । मंदेग्नौ दीपनपाचनः यक्ष्मोक्तो राजयक्ष्मण्युक्तः क्षतिनां शस्त उपक्रमः । द्रव्ये तु शकृति ग्राही उपक्रमः ।

दशमूलं स्वयं गुप्तां शंखपुष्पीं षठीं बलाम् ॥ १२६ ॥
हस्तिपिप्पल्यपामार्गपिप्पलीमूलचित्रकान् ।
भार्ङ्गीं पुष्करमूलं च द्विपलांशान् यवाढकम् ॥ १२७ ॥
हरीतकीशतं चैकं जले पंचाढके पचेत् ।
यवस्विन्ने कषायं तं पूतं तच्चाभयाशतम् ॥ १२८ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

पचेद्गुडतुलां दत्वा कुडवं च पृथग्घृतात् ।
तैलात्सपिप्पलीचूर्णात्सिद्धशीते च माक्षिकात् ॥ १२९ ॥
लेहे द्वे चाभये नित्यमतः खादेद्रसायनात् ।
तद्वलीपलितं हन्याद्वर्णायुर्बलवर्धनम् ॥ १३० ॥
पंचकासान् क्षयं श्वासं सहिध्मं विषमज्वरम् ।
मेहगुल्मग्रहण्यर्शोहृद्रोगारुचिपीनसान् ॥ १३१ ॥
अगस्तिविहितं धन्यमिदं श्रेष्ठं रसायनम् ।

दशमूलादिपुष्करांतं पृथग्द्विपलप्रमाणं। यवानामाढकं चतुःषष्टिपलानि। हरीतकीफलानामेकं शतं। एतत्सर्वं जलस्य पंचाढके पचेत्। यवस्वेदे सति तं कषायं पूतं गालितं तच्च स्विन्नमभयाशतं गुडतुलां दत्वा तथा घृततैलपिप्पलीचूर्णानां प्रत्येकं कुडवं दत्वा पचेत्। सिद्धे शीते च लेहे माक्षिककुडवं दत्वा अतो लेह्याख्याद्द्रव्याद्रसायनात्सत्रिभागपलद्वयमात्रं द्वे च हरीतक्यौ नित्यं खादेत्। तच्च भुक्तं बलीपलितं हन्यात्। वर्णादिवर्धनं तथा पंचकासादीन् हंति। अगस्त्येन महर्षिणा निर्मितमेतद्रसायनं धन्यं श्रेष्ठं। अत्र च तैलघृतमधूनां समांशानामप्यविरोधः। पाकाच्छक्त्यंतरोत्पत्तेः।

दशमूलं बलां मूर्वां हरिद्रे पिप्पलीद्वयम् ॥ १३२ ॥
पाठाश्वगंधापामार्गस्वगुप्तातिविषामृतम् ।
बालबिल्वं त्रिवृद्दंतीमूलं पत्रं च चित्रकात् ॥ १३३ ॥
पयस्यां कुटजं हिंस्रां पुष्पं सारं च बीजकात् ।
बोटस्थविरभल्लातविकंकतशतावरी ॥ १३४ ॥
पूतीकरंजशम्याकचंद्रलेखासहाचरम् ।
सौभांजनकनिंबत्वगिक्षुरं च पलांशकम् ॥ १३५ ॥
पथ्यासहस्रं सशतं यवानां चाढकद्वयम् ।
पचेदष्टगुणे तोये यवस्वेदेऽवतारयेत् ॥ १३६ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

पूते क्षिपेत्सपथ्ये च तत्र जीर्णगुडात्तुलाम् ।
तैलाज्यधात्रीरसतः प्रस्थं प्रस्थं ततः पुनः ॥ १३७ ॥
अधिश्रयेन्मृदावग्नौ दर्वीलेपेऽवतार्य च ।
शीते प्रस्थद्वयं क्षौद्रात्पिप्पलीकुडवं क्षिपेत् ॥ १३८ ॥
चूर्णीकृतं त्रिजाताच्च त्रिपलं निखनेत्ततः ।
धान्ये पुराणकुंभस्थं मासं खादेच्च पूर्ववत् ॥ १३९ ॥
रसायनं वसिष्ठोक्तमेतत्पूर्वगुणाधिकम् ।
स्वस्थानां निःपरीहारं सर्वर्तुषु च शस्यते ॥ १४० ॥

दशमूलादि इक्षुरकांतं पलप्रमाणं । बोटोऽलंबुसा । स्थविरं शैलीयं । चंद्ररेखा बाकुची । हरीतकीनामेकादशशतानि । यवानामाढकौ द्वौ । अष्टगुणे जले पचेत् । यवस्वेदे सति चावतारयेत् । तस्मिन् क्वाथे पूते पथ्यासहितां पुराणगुडातुलां । तैलादीनां पृथक् पृथक् प्रस्थं क्षिपेत् । ततोनंतरं पुनः पचेन्मृदौ वन्हौ दर्वीलेपे सत्यवतार्य शीते सति प्रस्थद्वयं क्षौद्रात्पिप्पलीनां चतुष्पलं चूर्णितं त्रिजाताच्च त्रिपलं क्षिपेत् । ततोनंतरं पुराणकुंभस्थं घृतरूढस्थं धान्यमध्ये मासं निखनेत् । मासादूर्ध्वं पूर्ववत् खादेत् । एतद्रसायनं वसिष्ठेन कथितं । अगस्त्यलेहाद्गुणैरधिकं स्वस्थानां निःपरीहारं सर्वर्तुष्विष्यते तंत्रकृद्भिरिति शेषः ।

पालिकं सैंधवं शुंठी द्वे च सौवर्चलात्पले ।
कुडवांशानि वृक्षाम्लं दाडिमं पत्रमार्जकं ॥ १४१ ॥
एकैकां मरिचाजाज्योर्धान्यकाद्द्वे चतुर्थिके ।
शर्करायाः पलान्यत्र दश द्वे च प्रदापयेत् ॥ १४२ ॥
कृत्वा चूर्णमतोमात्रामन्नपानेषु दापयेत् ।
रुच्यं तद्दीपनं बल्यं पार्श्वार्तिश्वासकासजित् ॥ १४३ ॥

सैंधवं लवणं पलप्रमाणं । शुंठीपलप्रमाणा । पालिकामिति पलं परिमाणमस्येतिठक् । पालीकं पालिकीचेति नपुंसकमनपुंसकेनेत्येकशेषः । सौवर्च-

Indira Gandhi National Centre for the Arts

ललवणाच्च द्वे पले कुडवप्रमाणानि वृक्षाम्लादीनि। आर्जकंकुबेरकं तस्मात्पत्रं। एकामेकां मरिचाजाज्योश्चतुर्थिकां पलसंज्ञकां धान्यकाद् द्वे चतुर्थिके शर्करापलानि च द्वादशात्र देयानि। तथा च मुनिः। पालिकं सैंधवं शुंठीमित्यारभ्य यावच्छर्करायाः पलान्यत्र दशद्वे च प्रदापयेत् कृत्वा चूर्णमतोमात्रामित्यादि। तस्मादत्राप्ययं ग्रंथो निर्दिष्टो बोध्यः। प्रमादाच्च केचिन्न पठंति। अयं चात्रैवं व्यक्तिरुच्यते। दीपनमित्यादि। शर्करामंतरेण तु रुच्यत्वमस्य कथमिवोपपद्यते। तस्माद्युक्तोत्र शर्कराप्रयोग इति। एतच्चूर्णं कृत्वा अतोस्माच्चूर्णान्मात्रां यथोचितामन्नपानेषु दापयेद्देय इति शेषः। एतच्चूर्णं रुच्यं दीपनं बल्यं पार्श्वार्त्यर्तिजित्।

एकां षोडशिकां धान्याद् द्वे द्वे चाऽजाजिदीप्यकात्।
ताभ्यां दाडिमवृक्षाम्लैर्द्विर्द्विः सौवर्चलात्पलम् ॥ १४४ ॥
शुंठ्याः कर्षं दधित्थस्य मध्यात्पंच पलानि च।
तच्चूर्णं षोडशपलैः शर्कराया विमिश्रयेत् ॥ १४५ ॥
खांडवोयं प्रदेयः स्यादन्नपानेषु पूर्ववत्।

धान्यकादेकां षोडशिकां कर्षसंज्ञां। अजाजीदीप्यकाद् द्वे द्वे षोडशिके ताभ्यामजाजीदीप्यकाभ्यां मिश्रिताभ्यां सकाशाद् दाडिमवृक्षाम्लैर्द्विद्विः प्रत्येकं चतस्रः षोडशिका इत्यर्थः। एवमष्टौ कर्षा दाडिमस्य अष्टौ वृक्षाम्लस्य। तथा सौवर्चलात् पलं शुंठ्याः कर्षं कपित्थस्य मज्जतः। पंचपलानि। तदेव चूर्णं शर्करायाः षोडशपलैः सम्मेलयेत्। अयं खांडवोन्नपानेषु पूर्ववत् प्रदेयः स्यात्। अर्हार्थैकत्यः केचित् षोडशीकां पलमित्याहुः।

विधिश्च यक्ष्मविहितो यथावस्थं क्षते हितः ॥ १४६ ॥

क्षते चावस्थाद्दशायक्ष्मणि यो विहितो विधिः स हितः।

निवृत्ते क्षतदोषे तु कफे वृद्धे उरः शिरः।
दाल्यते कासिनो यस्य स धूमानापिबेदिमान् ॥ १४७ ॥

क्षतदोषे च निवृत्ते शांते सति कफे वृद्धे यस्य कासवतः पुंस उरःशिरश्च दाल्यते पाट्यत इव सकासी धूमानिमान्द्विमेदादीनां पिबेत्।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

द्विमेदाद्विबलायष्टीकल्कैः क्षौमे सुभाविते ।
वर्त्तिं कृत्वा पिबेद्धूमं जीवनीयघृतानुपः ॥ १४६ ॥

द्विमेदादिभिः कल्कैः क्षौमे सुभाविते वर्त्तिं कृत्वा धूमं पिबेत् । जीवनीयाख्यं घृतमनु पश्चात् पिबेत् ।

मनःशिलापलाशाजगंधात्वक्क्षीरीनागरैः ।
तद्वदेवाऽनुपानं तु शर्करेक्षुगुडोदकम् ॥ १४७ ॥

मनःशिलादिभिस्तद्वदेव द्विमेदादिभिर्यथा धूमं पिबेत् । अनु शर्करोदकमिक्षुरसं गुडोदकं वा पिबेत् । उदकसादृश्यादिक्षुरसोपीक्षूदकशब्देन गृह्यते ।

पिष्ट्वा मनःशिलां तुल्यामार्द्रया वटशृंगया ।
ससर्पिष्कं पिबेद्धूमं तित्तिरिप्रतिभोजनम् ॥ १४८ ॥

मनःशिलामार्द्रया वटशृंगया तुल्यां पिष्ट्वा सह सर्पिषा धूमं सतित्तिरिप्रतिभोजितं पिबेत् ।

क्षयजे बृंहणं पूर्वं कुर्यादग्नेश्च वर्धनम् ।
बहुदोषाय सस्नेहं मृदु दद्याद्विरेचनम् ॥ १४९ ॥

क्षयजे कासे पूर्वोक्तं बृंहणं कुर्यादग्निसंदीपनं च । बहुदोषाय प्रभूतदोषाय क्षयकासिने स्नेहेन सह मृदुविरेचनं दद्यात् । तदेवाह ।

शम्याकेन त्रिवृतया मृद्वीकारसयुक्तया ।
तिल्वकस्य कषायेण विदारीस्वरसेन च ॥ १५० ॥
सर्पिः सिद्धं पिबेद्युक्त्या क्षीणदेहो विशोधनम् ।

शम्याकेनाथवा त्रिवृतया द्राक्षारसयुक्तया तिल्वकस्य कषायेण विदारीस्वरसेन च सर्पिः सिद्धं युक्त्या देशकालादिबलेन क्षीणदेहो विशोधनं पिबेत् ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

पित्ते कफे धातुषु च क्षीणेषु क्षयकासवान् ॥ १५१ ॥
घृतं कर्कटकीक्षीरद्विबलासाधितं पिबेत् ।

पित्ते क्षीणे कफादिषु च क्षीणेषु क्षयकासी कर्कटक्यादि पक्कं घृतं पिबेत्।

विदारीभिः कदंबैर्वा तालसस्यैश्च साधितम् ॥ १५२ ॥
घृतं पयश्च मूत्रस्य वैवर्ण्ये। कृच्छ्रनिर्गमे ।

विदारीभिरिति बहुवचनं क्षीरविदार्यादिव्यक्तिविशेषाणां ग्रहणार्थं। एवं कदंबैरित्यत्रापि धाराकदंबादिग्रहणार्थं। जातौ बहुवचनमित्यन्ये। तालसस्यैस्तालफलैर्वा साधितं घृतं पयो वा पिबेत्। मूत्रस्य वैवर्ण्ये कृच्छ्रनिर्गमे सति ।

शूने सवेदने मेढ्रे पायौ सश्रोणिवंक्षणे ॥ १५३ ॥
घृतमंडेन लघुनाऽनुवास्यो मिश्रकेण वा ।

तथा मेढ्रे शूने सवेदने पायौ श्रोण्यां वंक्षणे चैवंविधे सति नरो लघुना घृतमंडेनानुवास्यः। मिश्रकेण वा घृततैलेनानुवास्यः।

जांगलैः प्रतिभुक्तस्य वर्तकाद्याबिलेशयाः ॥ १५४ ॥
क्रमशः प्रसहास्तद्वत्प्रयोज्याः पिशिताशिनः ।
औष्ण्यात्प्रमाथिभावाच्च स्रोतोभ्यश्च्यावयंति ते ॥ १५५ ॥
कफं शुद्धैश्च तैः पुष्टिं कुर्यात्सम्यग् वहन् रसः ।

अनुवासनानंतरं जांगलैर्मांसैर्हरिणैणाजादिभिः। तदभावात्तत्सदृशैरपि। प्रतिभुक्तस्यानंतरं तथैव पिशिताशिनः प्रसहा द्वीपिव्याघ्रादयः प्रयोज्याः। नानुवासितमात्रस्य जांगलमांसप्रतिभुक्तस्यैव प्रसहाः पिशिताशिनश्च योज्याः, अग्निमांद्यभयात्।ते प्रसहाः प्रमाथिभावात्तथौष्ण्यात्कफोपलिप्तेभ्यः स्रोतोभ्यः कफं च्यावयंति।.प्रमाथिद्रव्यलक्षणं च खारणादे गदितं। तथा। स्रोतांसि दोषलिप्तानि प्रमथ्य विवृणोति यत्। प्रविश्य सौक्ष्म्यात्तैक्ष्ण्याच्च तत्प्रमाथीति संज्ञितं। तैश्च स्रोतोभिः शुद्धैः सम्यग्वहन् रसः पुष्टिं कुर्यात्।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

चविकात्रिफलाभार्ङ्गीदशमूलैः सचित्रकैः ॥ १५६ ॥
कुलत्थपिप्पलीमूलपाठाकोलयवैर्जले ।
शृतैर्नागरदुस्पर्शापिप्पलीशठिपौष्करैः ॥ १५७ ॥
पिष्टैः कर्कटशृंग्या च समैः सर्पिर्विपाचयेत् ।
सिद्धेऽस्मिश्चूर्णितौ क्षारौ द्वौ पंचलवणानि च ॥ १५८ ॥
दत्त्वा युक्त्या पिबेन्मात्रां क्षयकासनिपीडितः ।

चविकादिभिर्जले सृतैर्नागरादिभिः पिष्टैः समैः सर्पिर्विपाचयेत् । सिद्धेऽस्मिन् घृते क्षारौ द्वौ पंचसैंधवादीनि लवणानि च दत्त्वा मात्रां भक्तत्वात् घृतस्य पिबेत्कफकासार्त्तः पुरुषः ।

कासमर्दाभयामुस्तापाठाकट्फलनागरैः ॥ १५९ ॥
पिप्पल्या कटुरोहिण्या काश्मर्या सुरसेन च ।
अक्षमात्रैर्घृतप्रस्थं क्षीरद्राक्षारसाढके ॥ १६० ॥
पचेच्छोषज्वरप्लीहसर्वकासहरं शिवम् ।

काशमर्दादिभिरक्षप्रमाणैः क्षीरद्राक्षारसयोर्मिश्रितयोराढकयोरसाढके घृतप्रस्थं पचेत् । शोषादिहरं शिवं चारोग्यकरं ।

वृषव्याघ्रीगुडूचीनां पत्रमूलफलांकुरान् ॥ १६१ ॥
रसकल्कैर्घृतं पक्वं हंति कासज्वरारुचीः ।

वृषादीनां प्रत्येकं पत्रमूलफलांकुरान् रसकल्कैः पक्वं घृतं कासादीन्हरति।

द्विगुणे दाडिमरसे सिद्धं वा व्योषसंयुतम् ॥ १६२ ॥
पिबेदुपरिभुक्तस्य यवक्षारघृतं नरः । युतं
पिप्पलीगुडसिद्धं वा छागक्षीरयुतं घृतम् ॥ १६३ ॥

अथवा दाडिमस्वरसे द्विगुणे व्योषकल्कसंयुतं सिद्धं घृतं भुक्तस्याहारस्योपरि यवक्षारयुतं पिबेत् । पिप्पलीगुडाभ्यां वा चतुर्गुणे घृते घृताच्चतुर्गुणे जले घृतसमे छागक्षीर इति पक्वं पिबेत् ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

एतान्यग्निविवृद्ध्यर्थं सर्पींषि क्षयकासिनाम् ।
स्युर्दोषबद्धकंठोरःस्रोतसां च विशुद्धये ॥ १६४ ॥

एतानि पूर्वोक्तानि चव्यादिभिर्विपक्वानि घृतान्यग्निवर्धनानि क्षयकासिनां स्युः । दोषोपलिप्तकंठोरस्रोतसां च विशुद्धये स्युः ।

प्रस्थोन्मिते यवक्राथे विंशतिर्विजयाः पचेत् ।
स्विन्ना मृदित्वा तास्तस्मिन्पुराणात्षट्पलं गुडात् ॥१६५॥
पिप्पल्या द्विपलं कर्षं मनोह्वाया रसांजनात् ।
दत्त्वार्द्धाक्षं पचेद्भूयः स लेहः श्वासकासनुत् ॥ १६६ ॥

यवक्राथे प्रस्थप्रमाणे हरीतकीर्विंशतिं पचेत् । स्विन्नास्ता हरीतकीस्तस्मिन् यवक्राथे मृदित्वा पुराणाद् गुडात् षट्पलं पिप्पल्या द्विपलं कर्षं मनःशिलाया रसांजनादर्धकर्षं दत्त्वा अस्मिन्क्राथे पुनः पचेत् । स लेहः श्वासकासजित् ।

श्वाविधां सूचयो दग्धाः सघृतक्षौद्रशर्कराः ।
श्वासकासहरा बर्हिपादौ वा मधुसर्पिषा ॥ १६७ ॥
एरंडपत्रक्षारं वा व्योषतैलगुडान्वितम् ।
लेहयेत् क्षारमेवं वा सुरसैरंडपत्रजम् ॥ १६८ ॥
लिह्यात् त्र्यूषणचूर्णं वा पुराणगुडसर्पिषा ।
पद्मकं त्रिफलाव्योषं विडंगं देवदारु च ॥ १६९ ॥
बलारास्ना च तच्चूर्णं समस्तं समशर्करम् ।
खादेन्मधुघृताभ्यां च लिह्यात्कासहरम् परम् ॥ १७० ॥
तद्वन्मरिचचूर्णं वा सघृतक्षौद्रशर्करम् ।

श्वाविधां संबंधिभ्यः सूचयो दग्धा घृतक्षौद्रशर्करान्विताः श्वासकासहराः । बर्हिणो मयूरस्य वा पादौ दग्धौ मधुसर्पिषा सह श्वासकासहरौ । अथवा एरंडपत्रस्य क्षारं व्योषतैलगुडयुतं लेहयेत् । एवं पूर्वोक्तेन प्रकारेण

Indira Gandhi National Centre for the Arts

सुरसैरंडपत्रजं क्षारं व्योषतैलगुडान्वितं लेहयेत्। अथवा त्र्यूषणचूर्णं पुराणगुडसर्पिषा लिह्यात्। पद्मकादीनां समस्तं चूर्णं समशर्करं। पद्मकादीनां चूर्णमेकतः। एकतः शर्कराचूर्णं। तदुभयं संयोज्य खादेद्भक्षयेत्। अथवा समशर्करमेव मधुघृताभ्यां मिश्रयित्वा लिह्यात्। तथैव मरिचचूर्णं घृतक्षौद्रशर्करायुतं खादेद्वा लिह्यात्।

पथ्याशुंठीघनगुडैर्गुटिकां धारयेन्मुखे ॥ १७१ ॥
सर्वेषु श्वासकासेषु केवलं वा बिभीतकम्।

पथ्याशुंठीघनगुडैर्गुटिकां मुखे धारयेत्सर्वेष्वेव श्वासकासेषु केवलं वा बिभीतकं मुखे धारयेदिति योज्यं।

पत्रकल्कं घृतभृष्टं तिल्वकस्य सशर्करम् ॥ १७२ ॥
पेया वोत्कारिका च्छर्दितृट्कासामातिसारनुत्।

पत्रकल्कं तिल्वकस्य घृते भृष्टं सशर्करं छर्दितृडादिजित्। पेया वा पत्रस्य कल्के सिद्धा तद्वत्। अथवोत्कारिका पत्रकल्ककृता छर्द्यादिजित्।

कंटकारीरसे सिद्धो मुद्गयूषः सुसंस्कृतः।
सगौरामलकः साम्लः सर्वकासभिषग्जितम् ॥ १७३ ॥

कंटकार्याः क्वाथे मुद्गयूषः संस्कृतो हिंगुसैंधवादिना सह गौरामलकैर्वर्त्तत इति सगौरामलकान्वितः। तथा सहाम्लैर्दाडिमादिभिर्वर्त्तत इति साम्लः। सुसंस्कृत आर्द्रकनागरघृतादिभिः शोभनं कृत्वा संस्कृत इत्युक्तं। सर्वकासेषु भिषग्जितमौषधं।

वातघ्नौषधनिःक्वाथे क्षीरं यूषान् रसानपि।
वैष्किरान् प्रातुदान् बैलान् दापयेत्क्षयकासिने ॥ १७४ ॥

वातघ्नौषधानां निःक्वाथे सिद्धं क्षीरमथवा यूषान् रसांश्च विष्किरमांसजान्। प्रतुदजान् वा। तथा बिलेषु भवा बैलाः प्राणिनस्तेषां रसान् क्षयकासिने वैद्यो दापयेत्।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

क्षतकासे च ये धूमाः सानुपाना निदर्शिताः ।
क्षयकासेऽपि ते योज्या वक्ष्यंते यच्च यक्ष्मणि ॥ १७५ ॥
बृंहणं दीपनं चाग्नेः स्रोतसां च विशोधनम् ।
व्यत्यासात्क्षयकासिभ्यो बल्यं सर्वं प्रशस्यते ॥ १७६ ॥

क्षतकासे च ये धूमा द्विमेदेत्यादयः सानुपाना उक्ताः । ते च क्षयकासेपि योज्या यच्च यक्ष्मणि वक्ष्यते बृंहणमग्निदीपनं स्रोतोविशोधनं तच्च क्षयकासेषु योज्यम् । तथा क्षयकासिभ्यो व्यत्यासेन सर्वं चिकित्सितं बल्यं प्रशस्यते ।

सन्निपातोद्भवो घोरः क्षयकासो यतस्ततः ।
यथा दोषबलं तस्य संनिपातहितं हितम् ॥ १७७ ॥

सन्निपातोद्भवः क्षयकासो घोरो दारुणो यतो भवति तस्माद् यथा दोषबलं तस्य यत्सन्निपाते हितं तदत्र हितमिति ॥

इति श्रीमृगांकदत्तपुत्रश्रीमदरुणदत्तविरचितायामष्टांगहृदयटीकायां कासचिकित्सितं नाम तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

चतुर्थोऽध्यायः ।

कासचिकित्सितानंतरं श्वासहिध्माचिकित्सितं व्याख्यास्यामः । संबंधोत्र निदान एवोक्तः ।

अथातः श्वासहिध्माचिकित्सितं व्याख्यास्यामः ।
श्वासहिध्मा यतस्तुल्यहेत्वाद्याः साधनं ततः ॥ १ ॥
तुल्यमेव

यस्मात् श्वासहिध्मस्तुल्यहेत्वाद्या आदिग्रहणात्प्राग्रूपादयो गृह्यंते । निदानेप्युक्तं । श्वासैकहेतुप्राग्रूपसंख्याप्रकृतिसंश्रया इति । ततस्तस्माद्धेतोः साधनं चिकित्सितं श्वासहिध्मायास्तुल्यमेव विहितं ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

तदार्त्तं च पूर्वं स्वेदैरुपाचरेत् ।
स्निग्धैर्लवणतैलाक्तं तैः खेषु ग्रथितः कफः ॥ २ ॥
सुलीनोऽपि विलीनोस्य कोष्ठं प्राप्तः सुनिर्हरः ।
स्रोतसां स्यान्मृदुत्वं च मारुतस्यानुलोमता ॥ ३ ॥

तदार्त्तं श्वासहिध्मातुरं पूर्वमुपक्रमेभ्यः सर्वेभ्योपि प्राक् स्वेदैरुपाचरेत् । किंभूतैः। स्निग्धैर्न रूक्षैर्वातकोपभयात् । किंभूतं । लवणान्वितेन तैलेनाभ्यक्तं । किमेवं सति स्यादित्याह । तैस्तैः स्वेदैः खेषु स्रोतःसु योऽस्य श्वासहिध्मावतो ग्रथितः पिंडितः कफः सुलीनोप्यतिशयेन श्लिष्टोंतर्भूतो नीयते कर्त्तव्यतया विलीनोस्य कोष्ठं प्राप्तः सुनिर्हरः स्यात् । सुखेन निर्हर्तुं शक्यते । तथा स्रोतसां वायुस्तब्धानां मृदुत्वं च स्यात् । मारुतश्चानुलोमता स्वमार्गगामित्वं स्यात् ।

स्विन्नं च भोजयेदन्नं स्निग्धमानूपजै रसैः ।
दध्युत्तरेण वा दद्यात् ततोस्मै वमनं मृदु ॥ ४ ॥
विशेषात्कासवमथुहृद्ग्रहस्वरसादिने ।
पिप्पलीसैंधवक्षौद्रयुक्तं वाताविरोधि यत् ॥ ५ ॥

स्विन्नं च संतमातुरं स्निग्धं शाल्यादिकं न रूक्षं यवादिजमनूपजैः सूकरादिमांसजै रसैः सह भोजयेत् । अथवा स्वेदानंतरमस्मै श्वासहिध्मावते दध्युत्तरेण दधिसारेण वमनं मृदु दद्यात् । विशेषेण कासादिवते वमनं दद्यात् । तच्च वमनं पिप्पलीसैंधवक्षौद्रयुक्तं वातादिविरोधि वातं न करोति यत्तद्दद्यात् ।

निर्हृते सुखमाप्नोति सकफे दुष्टविग्रहे ।
स्रोतःसु च विशुद्धेषु चरत्यविहतोऽनिलः ॥ ६ ॥

निर्हृते कफेऽसौ श्वासहिध्मावान् सुखमश्नुते । रुग्निवृत्तेः। किंभूते कफे । दुष्टो विग्रहः शरीरं येन तस्मिन् । तथा स्रोतःसु विशुद्धेषूपलेपादिरहितेषु वायुरविहतो न केनचिद्रुद्धगतिः स्रोतःसु चरति ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

ध्मानोदावर्त्ततमके मातुलिंगाम्लवेतसैः ।
हिंगुपीलुबिडैर्युक्तमन्नं स्यादनुलोमनम् ॥ ७ ॥
ससैंधवं फलाम्लं वा कोष्णं दद्याद्विरेचनम् ।

ध्मानमानाहः । उदावर्तः शकृदादीनामप्रवृत्तिः । तमकश्वासविशेषः । ध्मानं चोदावर्त्तश्च तमकश्च ध्मानोदावर्त्ततमकं तस्मिन्प्रकृतत्वात् तथाविधे हिध्माश्वासवति मातुलुंगाद्यैस्तथा हिंगुपीलुबिडैर्युक्तमन्नमनुलोमकारि स्यात् । अथवा अस्यामवस्थायां सैंधवेन सह फलाम्लं फलेन वातानुलोमनेन बीजपूरादिनाम्लमम्लीकृतं यथा कोष्णमीषदुष्णं विरेचनं दद्यात् स्रोतःशुध्यर्थं । किमेवं क्रियत इत्याह ।

एते हि कफसंरुद्धगतिप्राणप्रकोपजाः ॥ ८ ॥
तस्मात्तन्मार्गशुद्ध्यर्थमूर्ध्वाधःशोधनं हितम् ।

यस्मादेते हिध्माश्वासाः । कफेन संरुद्धा गतिर्यस्य स एवं कफसंरुद्धगतिः प्राणः श्वासस्तस्य प्रकोपस्ततो जाताः । यत एवं तस्माद्धेतोस्तन्मार्गशुध्यर्थं तस्य प्राणस्य वायोर्मार्गविशुद्धिनिमित्तमूर्ध्वमधश्च शोधनं हितं। एतच्च दृष्टांतद्वारेण स्पष्टयति ।

उदीर्यते भृशतरं मार्गरोधाद्वहज्जलम् ॥ ९ ॥
यथानिलस्तथा तस्य मार्गमस्माद्विशोधयेत् ।

यथा मार्गस्य रोधाज्जलं बहु भृशतरं सुतरामुदीर्यते वृद्धिं याति । तथा अनिलः स्वभावतो वहन्मार्गरोधान्मार्गस्यावरणाद्भृशतरमुदीर्यते वृद्धिं याति तस्य वायोर्मार्गमस्मात् यथोक्तात्कारणाद्विशोधयेत् ।

अशांतौ कृतसंशुद्धेर्धूमैर्लीनं मलं हरेत् ॥ १० ॥

पूर्वस्यां क्रियायां कृतायामप्यशमे सति । कृतसंशुद्धेः श्वासहिध्मार्तस्य लीनं सूक्ष्मस्रोतः श्लिष्टं मलं कफाख्यं धूमैर्वक्ष्यमाणैर्हरेत् ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

हरिद्रापत्रमेरंडमूलं द्राक्षां मनःशिलाम् ।
सदेवदार्वलं मांसीं पिष्ट्वा वर्तिं प्रकल्पयेत् ॥ ११ ॥
तां घृताक्तां पिबेद्धूमं यवान्वा घृतसंयुतान् ।
मधूच्छिष्टं सर्जरसं घृतं वा गुरु वागुरु ॥ १२ ॥
चंदनं वा तथा शृंगं बालान्वा स्नाववा गवां ।
ऋक्षगोधाकुरंगैणचर्मशृंगखुराणि वा ॥ १३ ॥
गुग्गुलुं वा मनोह्वां वा शालनिर्यासमेव वा ।
शल्लकीं गुग्गुलुं लोहं पद्मकं वा घृतप्लुतम् ॥ १४ ॥

हरिद्रादीनि पिष्ट्वा जलेन वर्तिं प्रकल्पयेत् । तां वर्तिं घृताक्तां कृत्वा धूमं पिबेत्सामर्थ्यादग्निप्लुष्टां । अथवा यवान् घृताक्तान् धूमं पिबेत् । मधूच्छिष्टं सिक्थकं सर्जरसं घृतं वा एकीकृत्य धूमं पिबेत् । अथवा गुरु श्रेष्ठं अगरु कृष्णागरुधूमं पिबेत् । अथवा चंदनं । अथवा गवां शृंगं धूमं पिबेत् । अथवा स्नावजान् गलकंबलजातान् बालान् रोमाणां धूमं पिबेत् । ऋक्षादीनां चर्मादीनां वा धूमं पिबेत् । स्नाववा स्नायुर्वा गवाम् धूमं पिबेत् । सामर्थ्यादग्निप्लुष्टं । खुरशब्दस्यार्द्धर्चादित्वान्नपुंसकत्वं । गुग्गुलुं वा । अथवा मनःशिलां शालनिर्यासं धूमं वा पिबेत् । शल्लक्यादिघृतप्लुतं वा ।

अवश्यं स्वेदनीयानामस्वेद्यानामपि क्षणम् ।
स्वेदयेत्ससिताक्षीरसुखोष्णस्नेहसेचनैः ॥ १५ ॥
उत्कारिकोपनाहैश्च स्वेदाध्यायोक्तभेषजैः ।
उरःकंठं च मृदुभिः सामे त्वामविधिं चरेत् ॥ १६ ॥

अवश्यं स्वेदनीयानां तथा स्वेदार्हाणामपि क्षणमुरः कंठं च मृदुभिः स्वेदैः स्वेदयेत् । कैः सशर्कराक्षीरैः सुखोष्णैः स्नेहसेचनैः । तथा स्वेदाध्याये यान्युक्तानि द्रव्याणि तत्कृतैरुत्कारिकोपनाहैश्च स्वेदयेत् । सामे च श्वासे हिध्मावति आमविधिं लंघनपाचनादिकं चरेन्निरामीकरणाय ।

अतियोगोद्धतं वातं दृष्ट्वा पवननाशनैः ।
स्निग्धै रसाद्यैर्नात्युष्णैरभ्यंगैश्च शमं नयेत् ॥ १७ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

अतियोगाद्वमनविरेचयोर्नराणामुद्धतं वातं दृष्ट्वा पवननाशनैः स्निग्धै-रसाख्यैर्मांसरसघृतक्षीरादिभिराहारैस्तथा किंचिदुष्णैरभ्यंगैर्वा शमं नयेत् ।

अनुत्क्लिष्टकफास्विन्नदुर्बलानां हि शोधनात् ।
वायुर्लब्धास्पदो मर्मसंशोष्याशु हरेदसून् ॥ १८ ॥

अनुत्क्लिष्टकफानामस्विन्नानां दुर्बलानां च हि शोधनाद्धेतोः पवनो लब्धास्पदः सन् व्यवस्थानाश्रयवशाद्दासादितसामर्थ्योऽतएव लब्धास्पदः । शोषणस्वभावत्वाद् मर्महृदयाख्यं संशोष्य शीघ्रमसून् हरेत् । तस्मादेवंविधान् हिध्माश्वासवतो न शोधयेत् । अतोन्यथाभूतांश्च शोधयेदित्यर्थादुक्तं भवति । तथा च तेषां संशोधनादारोग्यं संपद्यते । अनुत्क्लिष्टकफादीनां शोधनायोग्यानां तर्हि किं कार्यमित्याह ।

कषायलेहस्नेहाद्यैस्तेषां संशमयेदतः ।

यतो यस्मात्ते संशोधनायोग्यास्तस्मात्तेषां कषायादिभिः संशमयेच्छ्वासहिध्मा इति शेषः ।

क्षीणक्षतातिसारासृक् पित्तदाहानुबंधजान् ॥ १९ ॥
मधुरस्निग्धशीताद्यैर्हिध्माश्वासानुपाचरेत् ।

क्षीणक्षतातिसारासृक् पित्तदाहानुबंधजान् मधुरस्निग्धशीताद्यैर्हिध्माश्वासानुपाचरेत् ।

कुलत्थदशमूलानां क्वाथे स्युर्जांगला रसाः ॥ २० ॥
यूषाश्च

कुलत्थदशमूलानां क्वाथे जांगलरसा यूषाश्च स्युः ।

शिग्रुवार्ताककासघ्नवृषमूलकैः ।
पल्लवैर्निंबकुलकबृहतीमातुलिंगजैः ॥ २१ ॥
व्याघ्रीदुरालभाशृंगीबिल्वमध्यत्रिकंटकैः ।
पेया च चित्रकाजाजीशृंगीसौवर्चलैः कृता ॥ २२ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

दशमूलेन वा कासश्वासहिध्मारुजापहा ।

पेया च चित्रकादिभिः कृता अथवा दशमूलेन कृता सा च कासादिहरा ।

दशमूलशठीरास्नाभार्ङ्गीबिल्वर्द्धिपुष्करैः । २३ ॥
कुलीरशृंगीचपलातामलक्यमृतौषधैः ।
पिबेत्कषाये जीर्णेस्मिन्पेयां तैरेव साधिताम् ॥ २४ ॥

दशमूलादिभिः कषायं पिबेत्। अस्मिन्कषाये परिणते तैरेव दशमूलादिभिः साधितां पेयां हिध्माश्वासी पिबेत् ।

शालीषष्टिकगोधूमयवमुद्गकुलत्थभुक् ।
कासहृद्ग्रहपार्श्वार्तिहिध्माश्वासप्रशांतये ॥ २५ ॥

तथा शाल्यादिभुक् स्यात्कासादिशांत्यर्थं ।

सक्तून् वार्कांकुरक्षीरभावितानां समाक्षिकान् ।
यवानां दशमूलादि निक्राथलुलितान् पिबेत् ॥ २६ ॥

अथवा अर्कांकुरक्षीरभावितानां यवानां संबंधिनः सक्तून् समाक्षिकान् दशमूलशठीरास्नादीनामनन्तरोक्तानां क्राथेनालोडितान्निर्यूहान्वितान्पिबेत् ।

अन्ने च योजयेत् क्षारं हिंग्वाज्यबिडदाडिमान् ।
सपौष्करशठीव्योषमातुलिंगाम्लवेतसान् ॥ २७ ॥

अन्न आहारे च क्षारादीन् योजयेत् ।

दशमूलस्य वा क्राथमथवा देवदारुणः ।
पिबेद्वा वारुणीमंडं हिध्माश्वासी पिपासितः ॥ २८ ॥

हिध्माश्वासवान् पिपासितो दशमूलस्य क्राथं देवदारुणो वाऽथवा वारुणीमंडं पिबेत् ।

पिप्पलीपिप्पलीमूलपथ्याजंतुघ्नचित्रकैः ।
कल्कितैर्लेपिते रूढे निक्षिपेद् घृतभाजने ॥ २९ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

तक्रं मासस्थितं तद्धि दीपनं श्वासकासजित् ।

पिप्पल्यादिभिः कल्कैर्लेपिते घृतभाजने रूढे शुष्के तक्रं निक्षिपेत् । तच्च तक्रं मासस्थितं दीपनं श्वासकासजित् ।

पाठां मधुरसां दारुसरलं निशि संस्थितम् ॥ ३० ॥
सुरामंडेल्पलवणं पिबेत्प्रसृतिसंमितम् ।
भार्ङ्गीशुंठ्यौ सुखांभोभिः क्षारं वा मरिचान्वितम् ॥ ३१ ॥
स्वक्काथपिष्टां लुलितां बाष्पिकां पाययेत् वा ।

पाठादिकं सुरामंडे निशि स्थितं किंचिल्लवणं प्रसृतिसंमितं पलद्वयमात्रं पिबेत् । अथवा भार्ङ्गीशुंठ्यावुष्णांबुना पिबेत् । यवक्षारं मरिचयुक्तं वा । बाष्पिकां हिंगुपत्रिकां हिंगुपत्रकाथेन पिष्टां तेनैवालोडितां वा पाययेत् ।

स्वरसः सप्तपर्णस्य पुष्पाणां वा शिरीषतः ॥ ३२ ॥
हिध्माश्वासे मधुकणायुक्तः पित्तकफानुगे ।

सप्तपर्णस्यायुग्मच्छदस्य स्वरसः शिरीषात् पुष्पाणां वा स्वरस एतौ मधुकणायुतौ पित्तकफानुगे हिध्माश्वासे सति पाययेत् ।

उत्कारिकातुगाकृष्णामधूलीघृतनागरैः ॥ ३३ ॥
पित्तानुबंधे योक्तव्या पवने त्वनुबन्धिनि ।
श्वाविच्छशामिषकणाघृतशल्यकशोणितैः ॥ ३४ ॥

पित्तानुबंधिनि हिध्माश्वासे तुगादिभिरुत्कारिका योज्या । मधूली जलजा मधुयष्टी गोधूमविशेषो वा । पवने पुनरनुबंधिनि चतुर्गुणांबुसिद्धं वा पयच्छागं सगुडनागरं हिध्माश्वासे वातपित्तानुबंधिनि सति सुवर्चलारसादिभिः सिद्धं पयोनुशाल्योदनं भुक्त्वा पश्चात् क्षीरं पेयं । गव्यं छागं वा देशसात्म्यादिवशात् । अथवा चतुर्गुणांबुसिद्धं छागं क्षीरं सहगुडनागरं पिबेत् ।

पिप्पलीमूलमधुकगुडगोश्वशकृद्रसान् ।
हिध्माभिस्यंदकासघ्नान् लिह्यान् मधुघृतान्वितान् ॥ ३५ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

पिप्पलीमूलादीन्मधुघृतान्वितान् संमिश्र्य हिध्माभिष्यंदकासघ्नान् लिह्यात्।

गोगजाश्ववराहोष्ट्रखरमेषाजविड्रसम् ।
समध्वेकैकशो लिह्याद्वहुश्लेष्माथवा पिबेत् ॥ ३६ ॥
चतुष्पाच्चर्मरोमास्थिखुरशृंगोद्भवां मषीम् ।
तथैव वाजिगंधाया लिह्यात् श्वासी कफोल्बणः ॥ ३७ ॥
शठी पुष्करधात्रीर्वा पौष्करं वा कणान्वितम् ।
गैरीकांजनकृष्णां वा स्वरसं वा कपित्थजम् ॥ ३८ ॥
रसेन वा कपित्थस्य धात्रीसैंधवपिप्पलीः ।
घृतक्षौद्रेण वा पथ्याविडंगोषणपिप्पलीः ॥ ३९ ॥
कोललाजामलद्राक्षापिप्पलीनागराणि वा ।
गुडतैलनिशाद्राक्षाकणारास्नोषणानि वा ॥ ४० ॥
पिबेद्रसांबुमद्याम्लैर्लेह्यौषधरजांसि वा ।

गोगजादीनां शकृद्रसं बहुकफः समाक्षिकमेकैकशो लिह्यात् । अथवा पिबेत् । अथवा चतुष्पदां चर्मादिजां मषीं पिबेत् । श्वासी कफाधिकेऽश्वगंधायाश्च मषीं तद्वन्मधुना लिह्यात् । शठीपौष्करादीन्वा मधुना लिह्यात् । पौष्करं सकणं वा लिह्यात् । गैरिकादीन्वा लिह्यात् कपित्थजं स्वरसं वा । कपित्थस्वरसेन धात्र्यादीन् लिह्यात् । पथ्याविडंगादीन् घृतक्षौद्रेण वा लिह्यात् । कोलादीन्वा पूर्ववल्लिह्यात् । गुडादीन्वा । अथवा लेह्यस्यागस्त्यादेरौषधानां चूर्णानि मांसरसादिभिः पिबेत् ।

जीवंतीमुस्तसुरसत्वगेलाद्वयपौष्करम् ॥ ४१ ॥
चंडातामलकीलोहभार्ङ्गीनागरवालकम् ।
कर्कटाख्या शठी कृष्णा नागकेसरचोरकम् ॥ ४२ ॥
उपयुक्तं यथाकामं चूर्णं द्विगुणशर्करम् ।
पार्श्वरुग्ज्वरकासघ्नं हिध्माश्वासहरं परम् ॥ ४३ ॥

जीवंत्यादिकं चूर्णं भुक्तं पार्श्वरुगादिघ्नं सुष्टु हिध्मादिहरं । लोहमगुरु ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

शठी तामलकी भाङ्गीं चंडावालकपौष्करम् ।
शर्कराष्टगुणं चूर्णं हिध्माश्वासहरं परम् ॥ ४४ ॥

शठ्यादिकं चूर्णं पूर्वगुणं ।

तुल्यं गुडं नागरं च भक्षयेन्नावयेत वा ।

तुल्यं सगुडशुंठीं च भक्षयेन्नस्यं वा दद्यात् ।

लशुनस्य पलांडोर्वा मूलं गृंजनकस्य वा ॥ ४५ ॥
चंदनाद्वीरसं दद्यान्नारीक्षीरेण नावनम् ।
स्तन्येन मक्षिकाविष्टामलक्तकरसेन वा ॥ ४६ ॥

लशुनादीनां मूलं पिष्ट्वा नारीक्षीरेण पृथङ्नावनं च स्यात् । हिध्माश्वासार्त्तीय चंदनाद्वारसं नारीक्षीरेण सह नस्यं दद्यात् । मक्षिकाविष्टां स्तन्येन सह नस्यं दद्यात् । अलक्तकरसेन वा ।

कणासौवर्चलक्षारवयस्याहिंगुचोरकैः ।
सकायस्थैर्घृतं मस्तु दशमूलरसे पचेत् ॥ ४७ ॥
तत्पिबेज्जीवनीयैर्वा लिह्यात्समधु साधितम् ।

कणादिभिः कल्कैर्मस्तु दशमूलरसे स्नेहपानविध्युक्तपरिभाषामाश्रित्य घृतं पक्त्वा हिध्माश्वासार्तः पिबेत् । जीवनीयैर्वा द्रव्यैः कल्कैर्घृतं पक्त्वा समाक्षिकं लिह्यान्न पिबेत् । विषयभेदादेवं कार्यं । अथवा वस्तुस्वभावादेकस्मिन्नपि विषये कणादिभिः पक्वं घृतं पीतं हिध्माश्वासार्तानामरोग्याय । जीवनीयैः पुनः कल्कैः पक्वं घृतं लीढं तेषामारोग्यायेति ।

तेजोवत्यभया कुष्टं पिप्पली कटुरोहिणी ॥ ४८ ॥
भूतिकं पौष्करं मूलं पलाशश्चित्रकः शठी ।
पटुद्वयं तामलकी जीवंती बिल्वपेशिका ॥ ४९ ॥
वचापत्रं च तालीसं कर्षांशैस्तैर्विपाचयेत् ।
हिंगुपादैर्घृतप्रस्थं पीतमाशु निहंति तत् ॥ ५० ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

शाखानिलार्शो ग्रहणी हिध्मा हृत्पार्श्ववेदनाः ।

तेजोवत्यादिभिः कल्कैः कर्षांशैर्हिंगुपादैर्हिंगुतः पादश्चतुर्थांशो येषां तैरेवंविधैर्घृतं पचेत् । तत्पीतं दुष्टकफावृतस्रोतसां प्रमाथितया तेषां विवृतत्वमुत्पादयन् शाखानिलादीन्हंति ।

अर्धांशेन पिबेत्सर्पिः क्षारेण पटुनाऽथवा ॥ ९१ ॥
धान्वंतरं वृषघृतं दाधिकं हपुषादि वा ।

धान्वंतरादिघृतस्यार्धांशेन क्षारेण । अथवा पटुना लवणेन वार्धांशेन सर्पिः पिबेत् । धान्वंतरं प्रमेहोक्तं । वृषघृतं रक्तपित्तोक्तं । दाधिकं गुल्मोक्तं । हपुषादिकमुदरोक्तं ।

शीतांबुसेकः सहसा त्रासविक्षेपभीशुचः ॥ ९२ ॥
हर्षेर्ष्योच्छ्वाससंरोधा हितं कीटैश्च दंशनम् ।

सहसा झटित्येवाज्ञातसेकस्यैव हिध्माश्वासार्तस्य शीतांबुना सेको हितः। त्रासश्चित्तस्योद्वेगकृत् कर्म । विक्षेपोऽवधूननं । भीर्भयं । शुक्शोकश्चेतसः संतापः । त्रासादयश्चतस्रस्तामसगुणोद्भवाः । ईर्ष्या असूयापरगुणासहिष्णुता रजोगुणादयः । तथा श्वासस्य रोधः । एते च सर्वे हिध्माश्वासार्ताय हिताः । तथा कीटैः पिपीलिकादिभिस्तस्मिन् दंशनं हितं । वातवेगविघाताय । एवं हिध्माश्वासानां विशेषेण चिकित्सामुक्त्वा सामान्येनाह ।

यत्किचित्कफवातघ्नमुष्णं वातानुलोमनम् ।
तत्सेव्यं प्रायशो यच्च सुतरां मारुतापहम् ॥ ९३ ॥

यत्किंचिदाहारविहारौषधादिकं कफवातौ पृथक् सहितौ वा निहंति तत्कफवातघ्नं । तथोष्णं न शीतं कफवातघ्नं हि प्रायेणोष्णं भवति । उष्णमिति यदिह कृतं तदतिशयेनोष्णं नत्वीषदुष्णमिति प्रतिपादनार्थं । तथा वातानुलोमनं कफवातघ्नत्वेनैव वातानुलोमकारित्वे लब्धे प्राधान्येन वातप्रतिपक्षेण स्निग्धेन यद्युक्तं तद्धिध्माश्वासार्तैः सेव्यं । किमित्येवं क्रियत इत्याह ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

सर्वेषां बृंहणे ह्यल्पः शक्यश्च प्रायशो भवेत् ।
नात्यर्थं शमनेऽपायो भृशोऽशक्यश्च कर्षणे ॥ ५४ ॥
शमनैर्बृंहणैश्चातो भूयिष्ठं तानुपाचरेत् ।

सर्वेषां हिध्माश्वासार्त्तानां हि यस्माद् बृंहणे विधीयमाने कदाचिद्दैववशाद् यो यो रोगाधिक्यमन्यरोगप्रादुर्भावो वा भवेत् स प्रायशोल्पस्तथा शक्यः साधयितुं सुखसाध्यः । तथा तेषां शमने भेषजादौ क्रियमाणेऽपायो यदि दैवात्स्यात् स नात्यर्थं नातिशयेन किं तर्हि मध्यमया वृत्त्या हिध्माश्वासशांत्यर्थं । कर्षणे भिषजा क्रियमाणे यो रोगो जायते स भृशो दुःसहोऽत एवाशक्यः साधयितुं न शक्यते । यत एवं कर्षणे भृशोऽशक्यश्चापायो भवति । अतोऽस्मात्कारणाद् हिध्माश्वासान् भूयिष्ठं बाहुल्येन शमनैर्भेषजाद्यैस्तथा बृंहणैरुपाचरेत् । अधुना श्वासादीनां पंचानामप्येषां सामान्येन चिकित्सितं वक्तुमाह ।

कासश्वासक्षयच्छर्दिहिध्माश्चान्योन्यभेषजैः ॥ ५५ ॥

कासोक्तैर्भेषजैः श्वासादीनुपाचरेत् । श्वासाद्युक्तैः कासानुपाचरेत् । एवं परस्परं सर्वैर्यथोक्तैर्भेषजैः सर्वानेतानुपाचरेदिति ।

इति श्रीमदरुणदत्तविरचितायामष्टांगहृदयटीकायां सर्वांगसुंदराख्यायां श्वासहिध्माचिकित्सितं नाम चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

पञ्चमोऽध्यायः

श्वासहिध्माचिकित्सितादनंतरं राजयक्ष्मचिकित्सितारंभः । यतः कासश्वासक्षयादीनन्योन्यभेषजैरुपाचरेदित्युक्तं । क्षयश्च राजयक्ष्मास्तमादेतदारभ्यते ।

अथातो राजयक्ष्मादिचिकित्सितं व्याख्यास्यामः ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

बलिनो बहुदोषस्य स्निग्धस्विन्नस्य शोधनम् ।
ऊर्ध्वाधो यक्ष्मिणः कुर्यात्सस्नेहं यन्नकर्शनम् ॥ १ ॥

बहुदोषस्य बलिनो राजयक्ष्मिण ऊर्ध्वाधः शोधनं वमनं विरेचनं च कुर्यात् । अस्निग्धस्विन्नस्य शोधनानर्हत्वात् स्निग्धस्विन्नग्रहणं त्वतिशयार्थं । किंभूतं शोधनम् ।

सस्नेहमीषत्स्निग्धं तथा यन्न कर्शनं देहस्य न क्षपणं । यक्ष्मिण इति द्वंद्वोपतापेत्यादिना इनिर्मत्वर्थीयः । तत्र वमनमाह ।

पयसा फलयुक्तेन मधुरेण रसेन वा ।
सर्पिष्मत्या यवाग्वा वा वमनद्रव्यसिद्धया ॥ २ ॥
वमेत्

पयसा क्षीरेण मदनफलान्वितेन राजयक्ष्मी वमेत् । एवं तेन वमनं कार्यं मधुरेण वा मांसरसेन मदनफलयुक्तेन वमेत् । अथवा यवाग्वा घृतवत्या तथा वमनद्रव्येण मदनफलादिना सिद्धया वमेत् ।

विरेचनं दद्यात्त्रिवृच्छ्यामानृपद्रुमान् ।
शर्करामधुसर्पिर्भिः पयसा तर्पणेन वा ॥ ३ ॥
द्राक्षाविदारीकाश्मर्यमांसानां वा रसैर्युतान् ।

त्रिवृतादीनेकैकशः शर्करामधुसर्पिर्युतान् विरेचनं दद्यात् । अथवा पयसा त्रिवृतादीन् दद्यात् । तर्पणेन वा सह त्रिवृतादीन् विरेचनं दद्यात् । रसैरिति बहुवचननिर्देशाद् द्राक्षादीनां पृथग्रसैरिति बोध्यम् ।

शुद्धकोष्ठस्य युंजीत विधिं बृंहणदीपनम् ॥ ४ ॥
हृद्यानि चान्नपानानि वातघ्नानि लघूनि च ।
शालिषष्टिकगोधूमयवमुद्गं समोषितम् ॥ ५ ॥

शुद्धकोष्ठस्य सतो यक्ष्मिणे बृंहणं दीपनं च विधिं प्रयुंजीत । तथा अन्नपानानि हृद्यानि हृदयाय प्रियाणि तथा वातघ्नानि लघूनि च युंजीत ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

बाहुल्येनैतदुक्तं। तथा चाह। शालिषष्टिकगोधूमयवमुद्गामिति। तथा शाल्यादिकं वर्षोषितं युंजीत।

आजं क्षीरं घृतं मांसं क्रव्यान्मांसं च शोषजित्।

आजं क्षीरं घृतं मांसं तथा क्रव्यान्मांसं च क्षयजित्।

काकोलूकवृकद्वीपिगवाश्वनकुलोरगम्॥ ६॥
गृध्रभासखरोष्ट्रं च हितं छद्मोपसंहितम्।
ज्ञातं जुगुप्सितं तद्धि छर्दिषे न बलौजसे॥ ७॥

काकोलूकादिकमेतन्मांसं हितम्। किं भूतं छद्मना उपसंहितम्। काकादयस्तित्तिर्यादि शब्देन देया इत्यर्थः। किमित्येवं क्रियत इत्याह। यस्मात्तज्जुगुप्सितं ज्ञातं सच्छर्दिषे संपद्यते। न बलाय नचौजसे।

मृगाद्याः पित्तकफयोः पवने प्रसहादयः।
वेसवारीकृताः पथ्या रसादिषु च कल्पिताः॥ ८॥
भृष्टाःसर्षपतैलेन सर्पिषा वा यथायथम्।
रसिका मृदवः स्निग्धाः मृदुद्रव्याभिसंस्कृताः॥ ९॥
हितामौलककौलत्थास्तद्वद्यूषाश्च साधिताः।

मृगाद्या मृगविष्किरप्रतुदाः पित्तकफयोर्हिताः। वाते प्रसहा महामृगश्वरादयो हिताः। किंभूताः वेसवारीकृताः पिष्टाः पथ्याः। तथा रसादयो मांसरसादयः कल्पिताः। तथा सर्षपतैलेन भृष्टाः। सर्पिषा वा देशकालाद्यपेक्षया यथायथं भृष्टाः। तथा रसिकाः प्रशस्तरसवंतः। प्रशंसायां ह्येष मत्वर्थीयः। मृदवो तीक्ष्णाः। तथा स्निग्धाः सैंधवादिभिः कृतसंस्कारा हिताः। तद्वत्तथैव मूलकादिकृता युषाः।

सपिप्पलीकं सयवं सकुलत्थं सनागरम्॥ १०॥
सदाडिमं सामलकं स्निग्धमाजं रसं पिबेत्।
तेन षड्विनिवर्त्तंते विकाराः पीनसादयः॥ ११॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

पिप्पल्यादिभिः संकृतमानं मांसरसं घृतादिस्नेहेन स्निग्धं पिबेदित्यत्र मांसानामवश्यं स्निग्धत्वेपि स्निग्धग्रहणमेषां घृतादिस्नेहेन स्निग्धत्वं कार्यमिति प्रतिपादयति । तेन रसेन पीतेन सप्तविकाराः पीनसादयः पीनसश्वासकासकाशांसमूर्ध्वस्वररुजोरुचिरिति शाम्यंति ।

पिबेच्च सुतरां मद्यं जीर्णं स्रोतोविशोधनम् ।
पित्तादिषु विशेषेण मध्वरिष्टासुरावारुणीः ॥ १२ ॥
सिद्धं वा पंचमूलेन तामलक्याथवा जलम् ।
पर्णिनीभिश्चतसृभिर्धान्यनागरकेण वा ॥ १३ ॥
कल्पयेच्चानुकूलोस्य तेनान्नं शुचियत्नवान् ।

अतितरां पुराणं च मद्यं जीर्णं स्रोतोविशुद्धिकरं पिबेत् । पित्तादिषु पित्तकफवातेषु यथायुक्त्या मध्वादीन् विशेषेण पिबेत् । अथवा पंचमूलेन ह्रस्वेन सिद्धं जलं पिबेत् । तामलक्या वा जलं पर्णिनीभिश्चतसृभिर्वा जलं पक्वं पिबेत् । धान्यकनागराभ्यां वा शृतं पिबेत् । अस्य च यक्ष्मिणोऽनुकूलो यत्नवान् परिचारकोऽन्नं शुचि तेन पंचमूलादिजलेन कल्पयेत् । अनुकूलादिग्रहणमत्रातिशयार्थम् ।

दशमूलेन पयसा सिद्धं मांसरसेन वा । १४ ॥
बलागर्भं घृतं योज्यं क्रव्यान्मांसरसेन वा ।
सक्षौद्रं पयसा सिद्धं सर्पिर्दशगुणेन वा ॥ १५ ॥

दशमूलक्वाथेन तथा पयसा अथवा मांसरसेन बलाकल्केन घृतं साधितं योज्यम् । क्रव्यान्मांसरसेन वा बलागर्भं पक्वं घृतं योज्यम् । क्षीरेण वा दशगुणे जलं बलागर्भं सिद्धं घृतं सक्षौद्रं योज्यम् ।

जीवंतीमधुकं द्राक्षां फलानि कुटजस्य च ।
पुष्कराह्वं षठीं कृष्णां व्याघ्रीं गोक्षुरकं बलाम् ॥ १६ ॥
नीलोत्पलं तामलकीं त्रायमाणां दुरालभाम् ।
कल्कीकृत्य घृतं पक्वं रोगराजहरं परम् ॥ १७ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

जीवंत्यादीन् कल्कीकृत्य घृतं चतुर्गुणे जले पक्वं रोगराजहरं परं ।

घृतं खर्जूरमृद्वीकामधुकैः सपरूषकैः ।
सपिप्पलीकं वैस्वर्यकासश्वासज्वरापहम् ॥ १८ ॥

कल्कीकृत्य पक्वमित्यनुवर्त्तते । खर्जूरादिभिः कल्कीकृत्य घृतं पक्वं पिप्पलीचूर्णेन युक्तं वैस्वर्यादिहरम् ।

दशमूलसृतात्क्षीरात्सर्पिर्यदुदियान्नवम् ।
सपिप्पलीकं सक्षौद्रं तत्परं स्वरबोधनम् ॥ १९ ॥
शिरः पार्श्वांसशूलघ्नं कासश्वासज्वरापहम् ।
पंचभिः पंचमूलैर्वा शृताद्यदुदियाद् घृतं ॥ २० ॥

दशमूलक्वथितात्क्षीराद्यत्सर्पिरुदियादुद्गच्छेत्तत्प्रत्यग्रम् पिप्पलीक्षौद्रान्वितमतिशयेन स्वरबोधनं शिरः पार्श्वांसशूलघ्नं कासादिहरम् । अथवा पंचभिः पंचमूलैः सृतात्क्षीरात्तु यदुद्भवेद् घृतं तत्पूर्वगुणम् ।

पंचानां पंचमूलानां रसे क्षीरचतुर्गुणे ।
सिद्धं सर्पिर्जयत्येतद्यक्ष्मिणः सप्तकं बलम् ॥ २१ ॥

पंचानां पंचमूलानां रसे क्षीरचतुर्गुणे पक्वमेतद्यक्ष्मिणः सप्तकं बलम् । पीनसादिकमेतद्घृतं जयेत् ।

पंचकोलयवक्षारषट्पलेन पचेद् घृतम् ।
प्रस्थोन्मितं तुल्यपयः स्रोतसां तद्विशोधनम् ॥ २२ ॥
गुल्मज्वरोदरप्लीहग्रहणीपांडुपीनसान् ॥
श्वासकासाग्निसदनश्वयथूर्ध्वानिलान् जयेत् ॥ २३ ॥

पंचकोलादिना षट्पलेन कल्केन घृतप्रस्थं तुल्यक्षीरं पचेत् । तत्स्रोतसां विशोधनं स्यात् । अत्र चानुक्तमपि जलं स्नेहाच्चतुर्गुणं त्रिगुणं वा देयं पूर्वोक्तन्यायात् । तथा गुल्मादीन् जयेत् ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

रास्नाबलागोक्षुरकस्थिरावर्षाभुवारिणि ।
जीवंती पिप्पलीगर्भं सक्षीरं शोषजिद् घृतम् ॥ २४ ॥

रास्नादिक्वाथे जीवंती पिप्पलीकल्कं क्षीरपक्वं सहितं घृतं शोषजित् ।

अश्वगंधाशृतात्क्षीराद्घृतं चससितापयः ।

अश्वगंधया सृतात्क्षीरादुद्धृतं घृतं शर्कराक्षीरयुतं पूर्वोक्तगुणं ।

साधारणामिषतुलां तोयद्रोणद्वये पचेत् ॥ २५ ॥
तेनाष्टभागशेषेण जीवनीयैः पलोन्मितैः ।
साधयेत्सर्पिषः प्रस्थं वातपित्तामयापहम् ॥ २६ ॥
मांससर्पिरिदं पीतं युक्तं मांसरसेन वा ।
कासश्वासस्वरभ्रंशशोषहृत्पार्श्वशूलजित् ॥ २७ ॥

साधारणस्य बिलेशयप्रसहानां मांसस्य तुलां पलशतं जलद्रोणद्वये पचेत् । तेनाष्टभागशेषेण क्वाथेन जीवनीयैः पालिकैः सर्पिषः प्रस्थं पचेत् । मांससर्पिः संज्ञमेतत् केवलं पीतं मांसरसेन वा युक्तं पीतं वातपित्तघ्नं कासादिजित् ।

एलाजमोदात्रिफलासौराष्ट्रीव्योषचित्रकान् ।
सारानरिष्टगायत्रीशालबीजकसंभवान् ॥ २८ ॥
भल्लातकं विडंगं च पृथगष्टपलोन्मितम् ।
सलिले षोडशगुणे षोडशांशस्थिते पचेत् ॥ २९ ॥
पुनस्तेन घृतप्रस्थं सिद्धे चास्मिन्पलानि षट् ।
तवक्षीर्याः क्षिपेत्त्रिंशत्सिताया द्विगुणं मधु ॥ ३० ॥
घृतात्रिजातात्त्रिपलं ततो लीढं खजाहतम् ।
पयोनुपानं तत्प्राह्णे रसायनमयंत्रणम् ॥ ३१ ॥
मेध्यं चक्षुष्यमायुष्यं दीपनं हंति चाचिरात् ।
मेहगुल्मक्षयव्याधिपांडुरोगभगंदरान् ॥ ३२ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

एलादिप्रत्येकमष्टपलप्रमाणं षोडशगुणे जले षोडशांशस्थितं षोडशावशेषितं यथा स्यात्तथा पचेत्। तेन क्वाथेन पुनर्घृतप्रस्थं पचेत्। सिद्धे चास्मिन्घृते तुगाक्षीर्याः पलानि षट् सितायास्त्रिंशत्पलानि माक्षिकं घृताद् द्विगुणं प्रस्थौ द्वावित्यर्थः। त्रिजातकात् पलत्रयं तदेतस्मिन् क्षिपेत्। खजाहतं समीकरणाय दर्व्यालोडितं पूर्वाह्णे लीढं पयोनुपानं रसायनमयंत्रणं मेध्यादिगुणं च स्यात्। आश्वेव च गुल्मादीन् हंति।

ये च सर्पिर्गुडाः प्रोक्ताः क्षते योज्याः क्षयेपि ते।

ये च क्षते सर्पिर्गुडा गदितास्ते च क्षयेपि योज्याः।

त्वगेलापिप्पलीक्षीरीशर्कराद्विगुणाः क्रमात् ॥ ३३ ॥
चूर्णिता भक्षिताः क्षौद्रसर्पिषा च बले हिताः।
स्वर्याः कासक्षयश्वासपार्श्वरुक्कफनाशनाः ॥ ३४ ॥

त्वगेलादयः क्रमेण द्विगुणाश्चूर्णिता भुक्ता माक्षिकसर्पिभ्यां वावलेहिताः स्वर्याः स्वराय हिताः स्युः। कासादिघ्नाश्च।

विशेषात्स्वरसादेऽस्य नस्यधूमादि योजयेत्।

अस्य क्षयिणः स्वरसादे विशेषेण नस्यधूमादि योज्यं।

तत्रापि वातजे कोष्णं पिबेदुत्तरभक्तिकम् ॥ ३५ ॥
कासमर्दकवार्ताकीमार्कवस्वरसैर्घृतम्।
साधितं कासजित्स्वर्यं सिद्धमार्तगलेन वा ॥ ३६ ॥

तेषु च स्वरसादेषु मध्ये वातजे स्वरसादे कासमर्दादि स्वरसैः साधितमौत्तरभक्तिकं भक्तादूर्ध्वं घृतं पिबेत्। मार्कवो भृंगराजः। तच्च सर्पिः कासजित् स्वर्यं च स्यात्। उत्तर भक्तादिति मयूरव्यंसकादित्वात्समासः। ततश्चाध्यात्मादित्वात् ठक्। अथवा आर्तगलेन नीलपुष्पसहचरेण सिद्धं घृतमेवं पिबेत्।

बदरीपत्रकल्कं वा घृतभृष्टं ससैंधवम्।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

अथवा बदर्याः पत्रकल्कं घृतभृष्टं ससैंधवमुत्तरभक्तिकं योजयेत् ।

तैलं वा मधुकं द्राक्षापिप्पलीकृमिनुत्फलैः ॥ ३७ ॥
हंसपद्याश्च मूलेन पक्कं नस्तो निषेचयेत् ।

अथवा तैलं मधुकादिभिः पक्कं नस्तोऽवसेचयेत् । कृमिघ्नं विडंगम् । फलं मदनफलम् । हंसपादी कीटमारीका । नस्त इति नासिकायां यत्तत्क्षुद्रेष्वित्यनेन नसिनसादिशः ।

सुखोदकानुपानं च सर्पिष्कं च गुडौदनम् ॥ ३८ ॥
अश्नीयात्पायसं चैवं स्निग्धं स्वेदं नियोजयेत् ।

तथा गुडोदनं सर्पिषा सह सुखोदकमनुपानमश्नीयात् । पायसं चैवं ससर्पिष्कं सुखोदकानुपानमद्यात् । स्वेदं च स्निग्धं योजयेत् ।

पित्तोद्भवे पिबेत्सर्पिः शृतशीतपयोनुपः ॥ ३९ ॥
क्षीरीवृक्षांकुरक्वाथकल्कसिद्धं समाक्षिकं ।
अश्नीयाच्च ससर्पिष्कं यष्टीमधुकपायसम् ॥ ४० ॥

पित्तोद्भवे पित्तसर्पिः समाक्षिकं क्षीरीवृक्षांकुरादिक्वाथकल्कसिद्धं शृतशीतक्षीरानुपः पिबेत् । मधुयष्टिकान्वितं पायसं ससर्पिष्कं भुंजीत ।

बलाविदारिगंधाभ्यां विदार्या मधुकेन च ।
सिद्धं सलवणं सर्पिर्नस्यं स्वर्यमनुत्तमम् ॥ ४१ ॥

बलादिभिः सिद्धं सर्पिः ससैंधवं परं स्वर्यं स्यान्नस्यम् । विदारीगंधा शालीपर्णी ।

प्रपौंडरीकं मधुकं पिप्पली बृहती बला ।
साधितं क्षीरसर्पिश्च तत्स्वर्यं नावनं परम् ॥ ४२ ॥
लिह्यान्मधुरकाणां च चूर्णं मधुघृताप्लुतम् ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

पित्तजे स्वरसादे मपौंडरीकादिसाधितं क्षीरोद्भवं सर्पिः श्रेष्टं नस्यं मधुरकाणां च मधुररसद्रव्याणां चूर्णं मधुघृतान्वितं लिह्यात् ।

पिबेत्कटूनि मूत्रेण कफजे रूक्षभोजनः ॥ ४३ ॥
कट्फलामलकव्योषं लिह्यात्तैलमधुप्लुतम् ।
व्योषक्षाराग्निचविकाभार्ङ्गी पथ्यामधूनि वा ॥ ४४ ॥

कफोद्भवे कटूनि कटुकरसानि द्रव्याणि मूत्रेण पिबेत् । रूक्षभोजनश्च स्यात् । तथा कट्फलादिकं तैलमधुप्लुतं लिह्यात् । व्योषादीनि वा एवं लिह्यात् ।

यवैर्यवागूं यमके कणाधात्रिकृतां पिबेत् ।
भुक्त्वाद्यात्पिप्पलीं शुंठीं तीक्ष्णं वा वमनं भजेत् ॥ ४५ ॥

यवैरुपादानैर्यमके स्नेहद्वये कणाधात्रीकृतामेतत् क्वाथे सिद्धां यवागूं पिबेत् । तथा भुक्त्वा पिप्पलीं शुंठीं वाद्यात् । अथवा तीक्ष्णं वमनं भजेत् ।

शर्कराक्षौद्रमिश्राणि शृतानि मधुरैः सह ।
पिबेत्पयांसि यस्योच्चैर्वदतोऽभिहतः स्वरः ॥ ४६ ॥

यस्योच्चैर्भाषमाणस्य स्वरोऽभिहतः स मधुरैः सह शृतानि शर्करामाक्षिकमिश्राणि पयांसि पिबेत् ।

विचित्रमन्नमरुचौ हितैरुपहितं हितम् ।

अरोचके विचित्रं नानाविधमन्नं हितं पथ्यम् । किं भूतम् । हितैः पथ्यैरुपहितं मिश्रितम् । एवमरुच्याख्योऽव्याधिविशेषः सर्वव्याधिभ्यो गरीयान् । येनापथ्यमपि यदन्नं तस्मै तदपि देय। प्राणमूलधारणार्थमन्नमेव प्राणिनां हि प्राणा इत्याह । सा च सर्वव्याधिष्वरुचिरेव पूर्वं जेतव्या । ततो ज्वरादय इत्यर्थादुक्तं भवति ।

बहिरंतर्मृजाचित्तनिर्वाणं हृद्यमौषधम् ॥ ४७ ॥
द्वौ कालौ दंतधवनं भक्षयेन्मुखधावनैः ।
कषायैः क्षालयेदास्यं धूमं प्रायोगिकं पिबेत् ॥ ४८ ॥

Indira Gandhi National
Centre for the Arts

बहिर्मृजा बहिः शुद्धिः स्नानादिना बहिः परिमार्जनं । अंतर्मृजा अंतःशुद्धिः । तथा चित्तनिर्वाणमरुचौ हितं हृद्यमौषधं च । तथा द्वौ कालौ सायंप्रातराख्यौ दंतधावनं भक्षयेत् । तथा मुखधावनैः कषायैरास्यं क्षालयेत् । प्रायोगिकं स्नैहिकं धूमं पिबेत् ।

तालीसचूर्णवटकाः सकर्पूरसितोपलाः ।
शशांककिरणाख्याश्च भक्ष्या रुचिकराः भृशम् ॥ ४९ ॥

तथा तालीसचूर्णवटकाश्च तथा सकर्पूरसितोपलाः शशांककिरणाख्याश्च भक्ष्या भृशमतिशयेन रुचिकराः। सामान्येनारुचौ चिकित्सितान्युक्त्वा विशेषमाह ।

वातादरोचके तत्र पिबेच्चूर्णं प्रसन्नया ।
हरेणुकृष्णाकृमिजिद्द्राक्षासैंधवनागरात् ॥ ५० ॥
एलाभार्ङ्गीयवक्षारहिंगुयुक्ताघृतेन वा ।
छर्दयेद्वा वचांभोभिः

वातेनारुचौ सत्यां हरेण्वादिभ्यश्चूर्णम् प्रसन्नया पिबेत्। एलाभार्ङ्ग्यादियुक्तघृतेन वा पेयम् । वचाजलैर्वा वमेत् ।

पित्ताच्च गुडवारिभिः ॥ ५१ ॥
लिह्याद्वा शर्करासर्पिर्लवणोत्तममाक्षिकम् ।

पित्तादरुचौ गुडवारिणा वमेत्। शर्करादिकं लिह्यात् ।

कफाद्वमेन्निंबजलैर्दीप्यकारग्वधोदकम् ॥ ५२ ॥
पानं समध्वरिष्टाश्च तिक्ष्णाः समधुमाधवाः ।
पिबेच्चूर्णं च पूर्वोक्तं हरेण्वाद्युष्णवारिणा ॥ ५३ ॥

कफादारोचके निंबजलैर्वमेत् । दीप्यककर्णिकारयोरुदकं पानं समाक्षिकमरिष्ठाश्च तीक्ष्णाः समार्द्रीकमाधवाः पानं च । हरेण्वादिचूर्णं च पूर्वोक्तमुष्णांबुना पिबेत्।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

एलात्वङ्नागकुसुमतीक्ष्णकृष्णामहौषधम् ।
भागवृद्धं क्रमाच्चूर्णं निहंति समशर्करम् ॥ ५३ ॥
प्रसेकारुचिहृत्पार्श्वकासश्वासगलामयान् ।

एलादिकं चूर्णं क्रमेण भागवृद्धं सम शर्करं प्रसेकादीन् हंति ।

यवानीतिंत्तिडीकाम्लवेतसौषधदाडिमम् ॥ ५५ ॥
कृत्वा कोलं च कर्षांशं सितायाश्च चतुष्पलं ।
धान्यसौवर्चलाजाजीवरांगं चार्धकार्षिकम् ॥ ५६ ॥
पिप्पलीनां शतं चैकं द्वे शते मरिचस्य च ।
चूर्णमेतत्परं रुच्यं ग्राहि हृद्यं हिनस्ति च ॥ ५७ ॥
विबंधकासहृत्पार्श्वप्लीहार्शोग्रहणीगदान् ।

यवानीत्यादि कोलांतादिप्रत्येकं कार्षिकाणि शर्करायाः पलानि चत्वारि धान्यकादिकमर्धकार्शिकं शतमेकं पिप्पली द्वे शते मरिचस्य चूर्णमिदं परं रुच्यं तथा हृदयाय हितं । ग्राहि विबंधादीन् हंति।

तालीसपत्रं मरिचं नागरं पिप्पली कणा ॥५८ ॥
यथोत्तरं भागवृध्या त्वगेले चार्धभागिके ।
तद्वद्रुच्यं दीपनं चूर्णं कणाष्टगुणशर्करम् ॥ ५९ ॥
कासश्वासारुचिच्छर्दिप्लीहहृत्पार्श्वशूलनुत् ।
पांडुज्वरातिसारघ्नं मूढवातानुलोमनम् ॥ ६० ॥

तालीसपत्रादयो यथोत्तरमुत्तरोत्तरभागवृद्धाः कार्याः । त्वक् च एला च एतेऽर्धभागप्रमाण एतच्चूर्णं पिप्पल्यष्टगुणशर्करं दीपनं कासादिजिच्च पांड्वादिघ्नं मूढवातानुलोमनं च ।

अर्कामृताक्षीरजले शर्वरीमुषितैर्यवैः ।
प्रसेके कल्पितान्सक्तून् भक्ष्यांश्चाद्याद्बली वमेत् ॥ ६१ ॥
कटुतिक्तैस्तथा शूल्यं भक्षयेज्जांगलं पलम् ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

शुष्कांश्च भक्ष्यान् सुलघुँश्चणकादिरसानु पः ॥ ६२ ॥

अर्कादिजले रात्रिस्थितैर्यवैः सक्तून् कल्पितान् भक्ष्याँश्च प्रसेके भक्षयेत्। बलवान् कटुतिक्तकैर्वमेत्। तथा शूल्यं जांगलं मांसं भक्षयेत्। शुष्कांश्च भक्षान् भोजयेत्। भोज्यविशेषान् लघुतरान् भक्षयेत्। चणकादिरसमनु पश्चात् पिबेत्।

श्लेष्मणोतिप्रसेकेन वायुः श्लेष्माणमस्यति ।
कफप्रसेकं तं विद्वान्स्निग्धोष्णैरेव निर्जयेत् ॥ ६३ ॥

वायुः श्लेष्माणं क्षिपति श्लेष्मणोऽतिप्रसेकेन हेतुभूतेन तं कफप्रसेकं विद्वान् स्निग्धोष्णैरेव निर्जयेत्।

पीनसेऽपि क्रममिमं वमथौ च प्रयोजयेत् ।

इमं कफप्रसेकोक्तं क्रियाक्रमं पिनसे वमथौ च प्रयोजयेत्।

विशेषात्पीनसे ऽभ्यंगान्स्नेहस्वेदाँश्च शीलयेत् ॥ ६४ ॥
स्निग्धानुत्कारिकापिंडैः शिरःपार्श्वगलादिषु ।
लवणाम्लकटूष्णांश्च रसान् स्नेहोपसंहितान् ॥ ६५ ॥

विशेषेण पीनसेऽभ्यंगान् स्नेहान्स्वेदांश्च स्निग्धान् शीलयेत्। कैः। उत्कारिकापिंडैः। केषु। शिरःपार्श्वगलादिषु। लवणादींश्च रसान् स्नेहोपसंहितान् शीलयेत्।

शिरोंसपार्श्वशूलेषु यथा दोषविधिं चरेत् ।
औदकानूपपिशितैरुपनाहाः सुसंस्कृताः ॥ ६६ ॥
तत्रेष्टाः सचतुःस्नेहा

शिरोंसपार्श्वशूलेषु दोषानुसारेणोपक्रमः कार्यस्तेष्वौदकानूपमांसैश्चतुःस्नेहयुताः सुसंस्कृता उपनाहा इष्टाः।

दोषसंसर्ग इष्यते ।
प्रलेपो नतयष्ट्याह्वशताह्वाकुष्टचंदनैः ॥ ६७ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

बलारास्नातिलैस्तद्वत्ससर्पिर्मधुकोत्पलैः ।

दोषसंसर्गे च द्वंद्वे तगरादिभिः प्रलेप इष्यते । तथैव बलादिभिः सघृतमधुकोत्पलयुतैः ।

पुनर्नवाकृष्णगंधाबलावीराविदारिभिः ॥ ६८ ॥
नावनं धूमपानानि स्नेहाश्चोत्तरभक्तिकाः ।
तैलान्यभ्यंगयोगीनि बस्तिकर्म तथा परम् ॥ ६९ ॥

पुनर्नवादिभिर्नस्यं तथा धूमपानानीष्यंते । तथा उत्तरभक्तिकाश्च स्नेहाः । तैलान्यभ्यंगयोगीत्यभ्यंगयोगित्यभ्यंगयोगप्रशस्तानि तथा बस्तिकर्म प्राक् स्नेह इत्यादिकं परं चेष्टं ।

शृंगाद्यैर्वा यथादोषं दुष्टमेषां हरेदसृक् ।

शृंगाद्यैः शृंगतुंबप्रच्छन्नजलौकालांबुभिर्यथायोगं वातपित्तकफदुष्टं रक्तमेषां यक्ष्मिणां हरेत् ।

प्रदेहः सघृतैः श्रेष्टः पद्मकोशीरचंदनैः ॥ ७० ॥
दूर्वामधुकमंजिष्ठाकेसरैर्वा घृतप्लुतैः ।

प्रलेपः पद्मकादिभिः सघृतैः श्रेष्टदूर्वादिभिर्वा घृताप्लुतैः ।

वटादिसिद्धतैलेन शतधौतेन सर्पिषा ॥ ७१ ॥
अभ्यंगः पयसासेकः शस्तश्च मधुकांबुना ।

वटादिना न्यग्रोधादिना सिद्धेन तैलेनाभ्यंगः प्रशस्तः । शतधौतेन वा घृतेन तथा क्षीरेणासेकः शस्तः । मधुयष्टिकाजलेन वा ।

प्रायेणोपहताग्नित्वात्सपिच्छमतिसार्यते ॥ ७२ ॥
तस्यातिसारग्रहणीविहितं हितमौषधम् ।

बाहुल्येनोपहताग्नित्वात्कारणात् पिच्छया सहातिसार्यते यक्ष्मी तस्यातिसारे ग्रहण्यां च यदुक्तमौषधं तद्धितं ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

पुरीषं यत्नतो रक्षेच्छुष्यतो राजयक्ष्मिणः ॥ ७३ ॥
सर्वधातुक्षयार्त्तस्य बलं तस्य हि विड्बलम् ।

तथा राजयक्ष्मिणः शुष्यतः सतः पुरीषं यत्नतो रक्षेत् । किमित्याह । यस्मात्तस्य शोषिणः सर्वधातुक्षयार्त्तस्य सतो विड्बलमेव बलं न धात्वादिजं बलं ।

मांसमेवाश्नतो युक्त्या मार्द्वीकं पिबतो नु च ॥ ७४ ॥
अविधारितवेगस्य यक्ष्मा न लभतेऽतरम् ।

मांसमेव युक्त्या देशकालसात्म्यादिलक्षणया भक्षयतो मार्द्वीकं च पश्चात् पिबतो वेगमधारयतो यक्ष्मा अंतरमवकाशं न लभते ।

सुरां समंडां मार्द्वीकमरिष्टान् सीधुमाधवान् ॥ ७५ ॥
यथार्हमनुपानार्थं पिबेन्मांसानि भक्षयन् ।
स्रोतोविबंधमोक्षार्थं बलौजः पुष्टये च तत् ॥ ७६ ॥

तथा सुरादीननुपानार्थं पिबेत् । मांसानि भक्षयेत् । तत्सुराद्यनुपानं मांसभक्षणं च स्रोतोविबंधमोक्षार्थं बलायौजसश्च पुष्ट्यै ।

स्नेहक्षीरांबुकोष्टेषु स्वभ्यक्तमवगाहयेत् ।
उत्तीर्णमिश्रकैः स्नेहैर्भूयोभ्यक्तं सुखैः करैः ॥ ७७ ॥
मृद्नीयात्सुखमासीनं सुखं चोद्वर्तयेत्परम् ।

स्नेहादिकोष्टेषु स्वभ्यक्तं संतमवगाहयेत् निमग्नं स्थापयेत् । ततः कोष्टादुत्तीर्णं भूयः पुनर्मिश्रकैः स्नेहैर्गुल्मोक्तैरभ्यक्तं सुखैः सुखावहैर्न दुष्करैः सुखेन तिष्ठंतं मृद्नीयात् परमतिशयेन सुखं यथा भवति तथोद्वर्त्तयेत् ।

जीवंतीं शतवीर्यां च विकसां सपुनर्नवाम् ॥ ७८ ॥
अश्वगंधामपामार्गं तर्कारीं मधुकं बलाम् ।
विदारीं सर्षपान् कुष्टं तंडुलानतसीफलम् ॥ ७९ ॥
माषांस्तिलांश्च किण्वं च सर्वमेकत्र चूर्णयेत् ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

यवचूर्णं त्रिगुणितं दध्ना युक्तं समाक्षिकम् ॥ ८० ॥
एतदुद्वर्त्तनं कार्यं पुष्टिवर्णबलप्रदं ।

जीवंत्यादिकं किण्वपर्यंतं सर्वमेकत्र चूर्णयेत् । विकसा मंजिष्टा । यवचूर्णं सर्वेभ्यस्त्रिगुणं दध्ना युक्तं समाक्षिकमेतदुद्वर्त्तनं कार्यं पुष्ट्यादिप्रदं ।

गौरसर्षपकल्केन स्नानीयौषधिभिश्च सः ॥ ८१ ॥
स्नायादृतुसुखैस्तोयैर्जीवनीयोपसाधितैः ।
गंधमाल्यादिकं भूषामलक्ष्मीनाशनीं भजेत् ॥ ८२ ॥
सुहृदां दर्शनं गीतवादित्रोत्सवसंश्रुतिः ।
बस्तयः क्षीरसर्पींषि मद्यमांससुशीलता ॥ ८३ ॥
दैवव्यपाश्रयं तत्तदथर्वोक्तं च पूजितम् ।

गौरसर्षपाणां कल्केन स्नानीयैः स्नानार्हैर्गंधद्रव्यविशेषैरौषधिभिश्च सहदेवादिभिर्ऋतौ हेमंतादिके सुखावहैरुष्णादिभिस्तोयैर्जीवनीयद्रव्यसृतैः स्नायात् । तथा गंधैश्चंदनकुंकुमादिभिर्माल्यैः कुसुमैरादिशब्देनालंकारादिग्रहणं तैर्भूषामलक्ष्मिघ्नां सेवेत । तथा सुहृदां बंधूनां दर्शनं । गीतस्य वादीत्राणां तथोत्सवस्य पुत्रजन्मविवाहादेः संश्रवणं । तथा बस्तयः क्षीराणां घृतानि क्षीरसर्पिंषि मद्यमांसानां सुशीलता । तथा दैवव्यपाश्रयं बलिमंगलहोमप्रायश्चित्तादिकं । तथा अथर्वोक्तमथर्ववेदविहितं यागादिकं च पूजितं प्रशस्तमेतदत्रेत्यर्थः ।

इति श्रीमदरुणविरचितायामष्टांगहृदयटीकायां राजयक्ष्मस्वरभेदारोचकचिकित्साख्यः पंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

षष्ठोऽध्यायः

राजयक्ष्मचिकित्सितादनंतरं छर्यादिचिकित्सितमारभ्यते ।

यतो यक्ष्मिण एव प्रायेणैत उपद्रवभूता जायंते । अतएतदारंभो युक्त इत्याह ।

अथातश्छर्दिहृद्रोगतृष्णाचिकित्सितं व्याख्यास्यामः ।

आमाशयोत्क्लेशभवाः प्रायश्छर्द्यो हितं ततः ।
लंघनं प्रागृते वायोर्वमनम् तत्र योजयेत् ॥ १ ॥
बलिनो बहुदोषस्य वमतः प्रततं बहु ।

उत्क्लेशनमुत्क्लेशो दोषाणामुच्छूनावस्थैव । अमाशयोत्क्लेशात्संभवो जन्म यासां ता आमाशयोत्क्लेशभवाः प्रायश्छर्द्यो यतस्तस्मात् प्राक् प्रथमं लंघनं हितं । प्रायो ग्रहणं वातजायां छर्यामामाशयोत्क्लेशात्संभवार्थं वायोर्ऋते योजयेत् । छर्यामामाशयोत्क्लेशाभावार्थं वायोर्ऋते तत्तयोजयेत् । कार्यैकारणोपचारादेवं निर्दिष्टं । वातजां हि छर्दिं मुक्त्वान्यासु छर्दिषु लंघनं कार्यं । लंघने कृतेप्यनुपशांतवेगासु तत्र तासु छर्दिषु वमनं कार्यं । बलिनः पुंसो न दुर्बलस्य । अथवा बहुदोषस्य तथा प्रततमनारतं बहु वमतो वमनं योजयेत् ।

ततो विरेकं क्रमशो हृद्यं मद्यैः फलांबुभिः ॥ २ ॥
क्षीरैर्वा सह सह्युर्ध्वं गतं दोषं नयत्यधः ।
शमनं चौषधं रूक्षदुर्बलस्य तदेव तु ॥ ३ ॥

ततो वमनादनंतरं विरेकौषधं क्रमशो न सहसा योजयेत् । किं भूतं विरेकद्रव्यं । हृद्यं हृदयायहितं । कैः सह । मद्यैर्माद्वीकादिभिः । तथा फलांबुभिः । शोभनद्राक्षादिफलनिष्पादितवारिभिः । अथवा क्षीरैर्गोक्षीरादिभिः सह किमेवं स्यादित्याह । सह्यूर्ध्वमित्यादि । यस्मात्सविरेक ऊर्ध्वं गतं दोषं छर्द्यनुगमधो नयति । न केवलं शोधनं वमनं विरेचनं वा तत्र योजयेत् ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

यावच्छमनमपि यदौषधं तदपि तत्र योजयेत्। रूक्षदुर्बलस्य पुनः पुंसस्तदेव शमनमेव योजयेच्छोधनासहत्वात्।

परिशुष्कं प्रियं सात्म्यमन्नं लघु च शस्यते।
उपवासस्तथा यूषा रसाः कांबलिकाः खलाः॥ ४॥
शाकानि लेहभोज्यानि रागखांडवपानकाः।
भक्ष्याः शुष्का विचित्राश्च फलानि स्नानघर्षणम्॥ ५॥
गंधाः सुगंधयो गंधफलपुष्पान्नपानजाः।
भुक्तमात्रस्य सहसा मुखे शीतांबुसेचनं॥ ६॥

तत्र सर्वास्वपि छर्दिषु परिशुष्कादिगुणयुक्तमन्नं शस्यते। कांबलिकादि लक्षणं कृतान्नवर्गे कथितं। तथा फलानि स्नानमुद्वर्त्तनादिरूपेण घर्षः। सुगंधयो शोभना गंधाः। गंधद्रव्यपुष्पफलान्नपानजाः शस्यंते। अत्र गंधशब्देन गंधद्रव्याणि भुक्तमात्रस्य सहसा झटित्येवाज्ञातसेकस्य मुखे शीतांबुसेचनमिति सामान्येन छर्दीनामुपक्रमाः। अधुना विशेषेणाह।

हंति मारुतजां छर्दिं सर्पिः पीतं ससैंधवम्।
किंचिदुष्णं विशेषेण सकासहृदयद्रवाम्॥ ७॥
व्योषत्रिलवणाढ्यं वा सिद्धं वा दाडिमांबुना।
सशुंठीदधिधान्येन शृतं तुल्यांबु वा पयः॥ ८॥
व्यक्तसैंधवसर्पिर्वा फलाम्लो वैष्किरो रसः।
स्निग्धं च भोजनं शुंठीदधीदाडिमसाधितम्॥ ९॥
कोष्णं सलवणं चात्र हितं स्नेहविरेचनम्।

वातजां छर्दिषं सर्पिः पीतं सैंधवान्वितं किंचिदुष्णं विशेषेण हंति। पीतं ननु लीढमशक्तत्वात्। तथा चोक्तं। आक्रामत्यनिलं पीतमिति। तस्मात् पीतं घृतं छर्दिं हंतीति युक्तं। अथवा त्रिकटुत्रिलवणोत्कटं सर्पिः पीतं पूर्वोक्तगुणं। दाडिमांबुना वा शुंठीदधिधान्येन सह सामान्येन कल्पनया सिद्धं घृतं पीतं पूर्वोक्तगुणं। जलतुल्यं वा पयःसृतं पूर्ववत्। अथवा

Indira Gandhi National Centre for the Arts

वैष्किर: कौकुटादिजो रसो बहुसर्पि: ससैंधवो मारुतजां छर्दिं हंति। किंभूत:। फलेन दाडिममातुलुंगादिना अम्लोऽम्लतां भावित:। स्निग्धं च भोजनमशनं दधिदाडिमेन संस्कृतं तु हितं छर्दिं हंति। अत्र च मारुतछर्दिषि स्नेहनैर तैलादिना विरेचनं स्नेहविरेचनं कोष्णं सलवणं च हितम्।

पित्तजायां विरेकार्थं द्राक्षेक्षुस्वरसैस्त्रिवृत् ॥ १० ॥
सर्पिर्वा तैल्वकं योज्यं वृद्धं च श्लेष्मधामगम्।
ऊर्ध्वमेव हरेत् पित्तं स्वादुतिक्तैर्विशुद्धिमान् ॥ ११ ॥
पिबेन्मंथं यवागूं वा लाजैः समधुशर्कराम्।
मुद्गजांगलजैरद्याद्व्यंजनैः शालिषष्टिकम् ॥ १२ ॥
मृद्भृष्टलोष्टप्रभवं सुशीतं सलिलं पिबेत्।
मुद्गोशीरकणाधान्यैः सह वा संस्थितं निशाम् ॥ १३ ॥
द्राक्षारसं रसं वेक्षोर्गुडूच्यंबुपयोपि वा।

पित्तजायां छर्द्यां विरेकार्थं विरेकप्रयोजनाय द्राक्षेक्षुस्वरसैस्त्रिवृद्देया। तैल्वकं वा सर्पिर्योज्यम्। पित्तजे छर्दिषि वृद्धे श्लेष्मधामगे पित्तमूर्ध्वमेव हरेद्वमनं तत्र देयमित्यर्थ:।कैर्द्रव्यै:। स्वादुतिक्तै:। आतुरो विशुद्धिमान् कृतवमनविरेको लाजैर्मंथं पिबेत्।किंभूतम्। समधुशर्करमथवा यवागूं लाजैः समधुशर्करां पिबेत्। सह मधुशर्करश्च समधुशर्करा चेति। पुमान् स्त्रियेत्येकशेष:। तथा मुद्गजैर्व्यंजनैर्जांगलमांसैश्च व्यंजनैः शालिषष्टिकमद्यात्। मृद्भृष्टलोष्टजं सुशीतलं जलं पिबेत्। मुद्गादिभिर्वा सह निशास्थितं जलं पिबेत्। द्राक्षारसादि वा यथायोगं पिबेत्।

जम्ब्वाम्रपल्लवोशीरवटशुंगावरोहजः ॥ १४ ॥
क्वाथः क्षौद्रयुतः पीतः शीतो वा विनियच्छति।
छर्दिं ज्वरमतीसारं मूर्च्छां तृष्णां च दुर्जयाम् ॥ १५ ॥

जम्ब्वाम्रादिज: क्वाथ: क्षौद्रान्वित: शीतो वा शीतकषाय: पीत: क्षौद्रयुतश्छर्द्यादीन्हन्ति।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

धात्रीरसेन वा शीतं पिबेन्मुद्गदलांबु वा ।
कोलमज्जसितालाजामक्षिकाविट्कणांजनम् ॥ १६ ॥
लिह्यात्क्षौद्रेण पथ्यां वा द्राक्षां वा बदराणि वा ।

मुद्गदलैः शृतमंबु मुद्गदलांबु तद्धात्रीरसेन सह पिबेत्। अथवा मुद्गदलानांमंबु मुद्गदलांबु शीतं शीतकषायं पिबेत्। कोलादिकं क्षौद्रेण लिह्यात्। पथ्यां वा क्षौद्रेण लिह्यात्। द्राक्षां वा बदराणि वा लिह्यात्।

कफजायां वमेन्निंबकृष्णापिंडितसर्षपैः ॥ १७ ॥
युक्तेन कोष्णतोयेन दुर्बलं चोपवासयेत् ।
आरग्वधादिनिर्यूहं शीतं क्षौद्रयुतं पिबेत् ॥ १८ ॥
मंथान्यवैर्वा बहुशः छर्दिघ्नौषधभावितैः ।
कफघ्नमन्नं हृद्यं च रागाः सार्जकभूस्तृणाः ॥ १९ ॥
लीढं मनःशीलाकृष्णामरिचं बीजपूरकात् ।
स्वरसेन कपित्थाच्च सक्षौद्रेण वमिं जयेत् ॥ २० ॥
खादेत्कपित्थं सव्योषं मधुना वा दुरालभां ।

कफजायां छर्द्यां निंबादिभिर्युक्तेन कोष्णजलेन वमेत्। दुर्बलं च नरमुपवासयेत्। आरग्वधादिनिर्यूहं शीतं क्षौद्रान्वितं पिबेत्। बहून्वारांश्छर्दिघ्नौषधभावितैर्यवैर्मन्थान्पिबेत्। कफघ्नमन्नं हृद्यं च भुक्तं सद्वमिं जयेत्। रागाः सकुठेरकभूस्तृणा वमिं जयंति पीताः। मनःशिलादिकं बीजपूररसेन सक्षौद्रेण वमिं जयेत्। कपित्थस्य वा रसेन माक्षीकान्वितेन मनःशिलादिकं लीढं वमिं जयेत्। कपित्थं वा सत्रिकटुकं मधुना खादेत्। धन्वयवासं वा मधुना लिह्यात्।

अनुकूलोपचारेण यातिद्विष्टार्थजा शमम् ॥ २१ ॥

द्विष्टार्थजा च्छर्दिर्मनसोनुकूलोपचारेण शाम्यति ।

कृमिजाकृमित्हृद्रोगगदितैश्च भिषग्जितैः ।
यथास्वं परिशेषाश्च तत्कृताश्च तथामयाः ॥ २२ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

कृमिभ्यो जाता छर्दिः कृमिहृद्रोगगदितैरौषधैः शमं याति । न केवलं कृमिजा छर्दिरेवं शमं याति । यथास्वं परिशेषा अप्यामयः कृमिहृद्रोगकृता येऽपि कृमिहृद्रोगगदितैर्भेषजैः शमं यांति ।

छर्दिप्रसंगेन हि मातरिश्वा धातुक्षयात्कोपमुपैत्यवश्यम् ।
कुर्यादतोस्मिन् वमनातियोगप्रोक्तं विधिं स्तंभनबृंहणीयम् ॥२३॥
सर्पिर्गुडामांसरसाघृतानि कल्याणकत्र्यूषणजीवनानि ।
पयांसि पथ्योपहितानि लेहाश्छर्दिं प्रसक्तां प्रशमं नयंति ॥२४॥

हि यस्माच्छर्दिप्रसंगेनानुबंधेन यो धातुक्षयः । तस्माद्धेतोर्मातरिश्वा अवश्यं कोपमायाति । अतो हेतोर्वमनातियोगप्रोक्तं विधिं स्तंभनं बृंहणं च कुर्यान्न पुनस्तदुक्तमन्यं विधिं । इंद्रवज्रावृत्तं । तथा सर्पिर्गुडादयो दोषदुष्यानुरोधतो यथाकालमुपयुक्ताश्छर्दिं प्रसक्तां शमयंति । उपजातिवृत्तं । तत्रांतरे चोक्तं । अंजनं चंदनोशीरमज्जासृक्शर्करोदकं । लाजाचूर्णैः पिबेन्मंथमतियोगहरं परमिति ।

छर्दिचिकित्सितादनंतरं हृद्रोगसाधनमुच्यते हृद्रोगशब्दश्रवणसंबंधात् ।

हृद्रोगे वातजे तैलं मस्तुसौवीरतक्रवत् ।
पिबेत्सुखोष्णं सबिडं गुल्मानाहार्त्तिजिच्च तत् ॥ २५ ॥

वातजे हृद्रोगे तैलं सुखोष्णं किंचिदुष्णं पिबेत् । किंभूतं मस्तुसौवीरतक्राणि विद्यंते यस्मिंस्तदेवं । तथा सहबीडलवणेन सबिडं गुल्मादिजित् ।

तैलं च लवणैः सिद्धं समूत्राम्लं तथा गुणम् ।

लवणैः पंचभिः सैंधवादिभिर्गोमूत्रेण कांजिकेन वा तैलं सामान्यपरिभाषया पक्कं तथा गुणं गुल्मादिजित् ।

बिल्वं रास्नां यवान्कोलं देवदारुं पुनर्नवाम् ॥ २६ ॥
कुलत्थान्पंचमूलं च पक्त्वा तस्मिन्पचेज्जले ।
तैलं तन्नावने पाने बस्तौ च विनियोजयेत् ॥ २७ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

बिल्वादिजले पक्त्वा तस्मिन् जले क्वाथीभूते तैलं पचेत्। तत्तैलं नस्ये पानेऽनुवासने च विनियोजयेत्। तच्च पूर्वसमं।

शुंठीवयस्थालवणकायस्थाहिंगुपौष्करैः।
पथ्यया च शृतं पार्श्वहृद्रुजागुल्मजिद्धृतम्॥ २८॥

शुंठ्यादिभिः पक्वं च घृतं पार्श्वहृद्रुजादिजित्। वयस्था आमलकी। कायस्था काकोली।

सौवर्चलस्य द्विपले पथ्यापंचाशदन्विते।
घृतस्य साधितः प्रस्थो हृद्रोगश्वासगुल्मजित्॥ २९॥

सौवर्चलस्य पलद्वयं पथ्यापंचाशद्युक्तो घृतप्रस्थो हृद्रोगादिजित्।

पुष्कराह्वशठीशुंठीबीजपूरजटाभयाः।
पीताः कल्कीकृताः क्षारघृताम्ललवणैर्युताः॥ ३०॥
विकर्तिकाशूलहराः क्वाथः कोष्णश्च तद्गुणः।
यवानीलवणक्षीरवचाजाज्यौषधैः कृतः॥ ३१॥
सप्ततिर्दारुबीजाह्वविजयाशठिपौष्करैः।

पुष्कराह्वादयः कल्कीकृताः पिष्टास्तथा घृतादियुक्ताः पीता विकर्त्तिकाशूलहराः। विकर्तिकाहृदयस्यावर्ताच्छेदनिका इव रुग्विशेषः। हृद्रोगप्रसंगादेतच्चिकित्साप्युक्ता। क्वाथश्च कोष्णो यवान्यादिभिर्देवदारुसंयुतैस्तद्गुणो विकर्तिकाशूलहरः। औषधं शुंठी। बीजाह्वः बीजसारं बीजपूरकमित्यन्ये।

पंचकोलशठीपथ्यागुडबीजाह्वपौष्करम्॥ ३२॥
वारुणीकल्कितं भृष्टं यमके लवणान्वितम्।
हृत्पार्श्वयोनिशूलेषु खादेद्गुल्मोदरेषु च॥ ३३॥

पंचकोलादिकं वारुण्या प्रसन्नया सुरया कल्कितं पिष्टं यमके भृष्टं सैंधवयुतं हृदादिशूलेषु गुल्मादिषु च खादेत्।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

स्निग्धाश्चेह हिताः स्वेदाः संस्कृतानि घृतानि च ।

इह वातजे हृद्रोगे स्वेदाश्च स्निग्धा हिताः । घृतानि पक्कानि वा ।

लघुना पंचमूलेन शुंठ्या वा साधितं जलम् ॥ ३४ ॥
वारुणीदधिमंडं वा धान्याम्लं वा पिबेत्तृषि ।

तृषि सत्यां ह्रस्वेन पंचमूलेन शुंठ्या वा साधितं जलं पिबेत् । वारुणीमंडं वा दधिमंडं वा पिबेत् ।

सायामस्तंभशूलामे हृदि मारुतदूषिते ॥ ३५ ॥
क्रियैषा सद्रवायामप्रमोहे तु हिता रसाः ।
स्नेहाढ्यास्तित्तिरिक्रौंचशिखीवर्त्तकऋक्षजाः ॥ ३६ ॥

आयाम आक्षेपः सह आयामादिभिर्वर्त्तते यद् हृदयं तस्मिंस्तथाविधे हृदि तथा मारुतदूषिते सति क्रियैषा चिकित्सेयं पूर्वोक्ता । सद्रवायामप्रमोहे पुनः हृदि मारुतदूषिते रसा तितिर्यादिजाः । स्नेहाढ्या बहुस्नेहा हिताः ।

बलातैलं सहृद्रोगः पिबेद्वा सुकुमारकम् ।
यष्ट्याव्हाशतपाकं वा महास्नेहं तथोत्तमम् ॥ ३७ ॥

सहृद्रोगो नरो बलातैलं पिबेत् । सुकुमारकं वा प्रमेहोक्तं घृतं यष्ट्याव्हं च तच्छतपाकं यष्ट्याव्हशतपाकं शतकृत्वः पक्वं तत्तैलं वातशोणितोक्तं पिबेत् । महास्नेहं तथोत्तमं पिबेत् । तदेव चाह !

रास्नाजीवकजीवंतीबलाव्याघ्रीपुनर्नवैः ।
शाङ्र्गीस्थिरावचाव्योषैर्महास्नेहं विपाचयेत् ॥ ३८ ॥
दधिपादं तथाम्लैश्च लाभतः स निषेवितः ।
तर्पणो बृंहणो बल्यो वातहृद्रोगनाशनः ॥ ३९ ॥

रास्नादिभिः कल्कीकृतैर्महास्नेहं दधिपादं विपाचयेत् । दधिपादश्च तु दध्नः पादश्चतुर्थभागप्रमाणो यस्मिंस्तत्तथाभूतम् । तथाम्लैः कांजिकादिभि

Indira Gandhi National Centre for the Arts

भितो यथालाभं। अनयैव कल्पनया स महास्नेहो निषेवितस्तर्पणो बृंहणो-बल्यो वातहृद्रोगघ्नश्च स्यात्।

दीप्तेऽग्नौ सद्रवायामे हृद्रोगे वातिके हितम्॥ ४० ॥
क्षीरं दधिगुडः सर्पिरौदकानूपमामिषम्।

दीप्तेऽग्नौ सति वातहृद्रोगे सद्रवायामे सह द्रवेण आयामेन च वर्तते यस्तस्मिंस्तथाभूते क्षीरादिहितं। औदकामिषं मत्स्यादिमांसमानूपामिषवराहादिजं मांसं।

एतान्येव च वर्ज्यानि हृद्रोगेषु चतुर्ष्वपि।
शेषेषु स्तंभजाड्यामसंयुक्तेऽपि च वातिके॥ ४१ ॥

वातहृद्रोगं मुक्त्वा अन्येषु चतुर्षु हृद्रोगेष्वेतानि क्षारादीनि वर्ज्यानि न प्रयोज्यानि। न केवलमेष्वेतानि वर्ज्यानि यावत्स्तंभजाड्यामसंयुक्ते वातिकेऽपि हृद्रोगे एतानि वर्ज्यानि।

कफानुबंधे तस्मिंस्तु रूक्षोष्णामाचरेत्क्रियां।

तस्मिन्वातिके हृद्रोगे कफानुबंधे तु सति रूक्षोष्णां क्रियां सेवेत।

पैत्ते द्राक्षेक्षुनिर्यासिताक्षौद्रपरूषकैः॥ ४२ ॥
युक्तो विरेको हृद्यः स्यात्क्रमः शुद्धे च पित्तहा।
क्षतपित्तज्वरोक्तं च बाह्यांतः परिमार्जनम्॥ ४३ ॥
कट्वीमधुककल्कं च पिबेत्ससितमंभसा।

पैत्ते हृद्रोगे द्राक्षेक्षुनिर्यासादियुक्तो विरेको हृद्यः स्यात्। शुद्धे सत्यनंतरं क्रमः पित्तहा स्यात्। स तु पेयादिकः कार्यः। क्षते पित्तज्वरे च या बहिरंतश्च शुद्धिरुक्ता सा चात्र कार्या। कटुकीमधुकल्कं शर्करान्वितमंभसा पिबेत्।

श्रेयसीशर्कराद्राक्षाजीवकर्षभकोत्पलैः॥ ४४ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

बलाखर्जूरकाकोलीमेदायुग्मैश्च साधितम् ।
सक्षीरमाहिषं सर्पिः पित्तहृद्रोगनाशनम् ॥ ४५ ॥

श्रेयस्यादिभिः साधितं क्षीरान्वितं माहिषं सर्पिः पित्तहृद्रोगघ्नं । श्रेयसी हस्तिपिप्पली । महिषघृतस्यात्र निर्देशो शीततमत्वात् ।

प्रपौंडरीकमधुकबिसग्रंथिकसेरुकाः ।
सशुंठीशैवलास्ताभिः सक्षीरं विपचेद्घृतम् ॥ ४६ ॥
शीतं समधु तच्चेष्टं स्वादुवर्गकृतं च यत् ।
बस्तिं च दद्यात्सक्षौद्रं तैलं मधुकसाधितम् ॥ ४७ ॥

प्रपौंडरीकादिभिः क्षारयुतं पक्वं घृतं शीतीभूतं सन्माक्षिकोपेतं तच्चेष्टमात्रेरोगस्वादुवर्गेण द्राक्षादिना यच्च कृतं तथा बस्तिं मधुकसाधितं मधुकेन पक्वं तैलं माक्षिकान्वितं दद्यात् ।

कफोद्भवे वमेत्स्विन्नः पिचुमंदवचांबुना ।
कुलत्थधन्वोत्थरसतीक्ष्णमद्ययवाशनः ॥ ४८ ॥

कफोद्भवे हृद्रोगे स्विन्नो नींबवचाभ्यां क्वथितेन जलेन वमेत् कुलत्थजांगलादिरसभुक् ।

पिबेच्चूर्णं वचाहिंगुलवणद्वयनागरात् ।
सैलायवानीककणायवक्षारात् सुखांबुना ॥ ४९ ॥
फल धान्याम्लकौलस्थयुषमूत्रासवैस्तथा ।
पुष्कराह्वाभयाशुंठीषठीरास्नावचाकणात् ॥ ५० ॥
क्वाथं तथा भयाशुंठीमाद्रीपीतद्रुकट्फलोत्‌ ।

चूर्णं वचादिभ्य उष्णोदकेन पिबेत् । यवानीको यवानीभेदः । तथा फलधान्याम्लादिभिर्वा एकतरेण पिबेत् । तथा पुष्करादेश्चूर्णं पूर्वोक्तैरुष्णाम्लादिभिः पिबेत् । तथा हरीतक्यादेः क्वाथं पिबेत् ।

क्वाथे रौहीतकाश्वत्थखदिरोदुंबरार्जुने ॥ ५१ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

सपलाशवटे व्योषतृवृच्चूर्णान्विते कृतः ।
सुखोदकानुपानस्य लेहः कफविकारहा ॥ ९२ ॥

रौहीतकादीनां क्वाथे त्रिकटुत्रिवृच्चूर्णयुते कृतो लेह उष्णोदकानुपानः कफविकारहा । अर्शश्चिकित्सितोक्तां तुलां दिव्यांभसि पचेदिति । प्रमाणानुसारेण परिमाणमत्र निरूपितं ।

श्लेष्मगुल्मोदिताज्यानि क्षारांश्च विविधान् पिबेत् ।

कफहृद्रोगश्लेष्मगुल्मे यानि गदितान्याज्यानि सर्पिषि तत्रैवोक्तान् क्षारांश्च नानाविधांस्तान्पिबेत् ।

प्रयोजयेच्छिलाह्वं वा ब्राह्मं चात्र रसायनम् ॥ ९३ ॥
तथामलकलेहं वा प्राश्यं वागस्तिनिर्मितं ।

शिलाजतुं प्रयोजयेत् । वा ब्राह्मं रसायनम् रसायनाध्यायोक्तं तथामलकलेहं च रसायनोक्तं । अथवा प्राश्यं लेहमगस्त्यनिर्मितं कासचिकित्सितोक्तं प्रयोजयेत् ।

स्याच्छूलं यस्य भुक्तेऽन्ने जीर्यत्यल्पं जरां गते ॥ ९४ ॥
शाम्येत्सकुष्ठकृमिजिल्लवणद्वयतिल्वकैः ।
सदेवदार्वतिविषैश्चूर्णमुष्णांबुना पिबेत् ॥ ९५ ॥

यस्य पुंसो भुक्तेऽन्नकाल एवातिशूलं स्यात् । जीर्यत्यन्ने मध्यमायां पाकावस्थायामल्पं शूलं स्यात् । जरां गते किट्टसारतया परिणतेऽन्ने तु शाम्येत् । स नरः कुष्टादिभिश्चूर्णमुष्णांबुना पिबेत् ।

यस्य जीर्णेऽधिकं स्नेहैः स विरेच्यः फलैः पुनः ।
जीर्यत्यन्ने तथा मूलैस्तीक्ष्णैः शूले सदाधिके ॥ ९६ ॥

यस्य पुंसो जीर्णे सत्यभ्यधिकं शूलं भवेत् स स्नेहैर्विरेचनद्रव्यसिद्धैर्विरेचनीयैर्जीर्यत्यन्ने पच्यमानावस्थायामधिकशूले सति फलैर्विरेच्यः । तथा च मुनिः । मृद्वीकाथविडंगानि खर्जूराणि परूषकं । आरग्वधोथामलकं हरीतक्यो विभीतकं । कंपिल्लकोपचित्रे च त्रपुसं च मुकूलकं । नीलिकाकुवलं पीलु

Indira Gandhi National Centre for the Arts

भवेत्फलविरेचनमिति । यस्य पुनः सदाधिकमेव शूलं केवलं न भुक्तमात्रे जीर्णे जीर्यति वा स पुरुषो मूलैस्तीक्ष्णैर्मूलविरेचनैर्दंतीत्रिवृच्छ्यामासप्तलादिद्रव्यैः समन्वितैर्विरेच्यः । तथा चोक्तं । सप्तलाशंखिनीदंतीद्रवंतीगिरिकर्णिकाः । त्रिवृच्छ्यामोदकीर्या च प्रकीर्याक्षीरिणी तथा । छगलाडी गवाक्षी च कुचाक्षीगिरिकर्णिका । मसूरविदला चैव भवेन्मूलविरेचनमिति ।

प्रायोऽनिलो रुद्धगतिः कुप्यत्यामाशये गतः ।
तस्यानुलोमनं कार्यं शुद्धिलंघनपाचनैः ॥ ५७ ॥

बाहुल्येन मारुतो रुद्धमार्ग आमाशयं गतः कुप्यति । तस्य मरुतः शुद्धयादिभिरेवावस्थावशाद्द्वयस्तैः समस्तैर्वा अनुलोमनं कार्यम् ।

कृमिघ्नमौषधं सर्वं कृमिजे हृदयामये ।

कृमिजे हृद्रोगे सर्वमेव च कृमिघ्नमौषधं ।

तृष्णासु वातपित्तघ्नो विधिः प्रायेण युज्यते ॥ ५८ ॥
सर्वासु शीतो बाह्यांतस्तथा शमनशोधनम् ।

तृष्णासु सर्वासु वातपित्तहरः सर्वोपि विधिरिष्यते । तथा बाह्यतोभ्यंतरे च शीतो विधिः । तथा शमनशोधनं च शस्यते ।

दिव्यांबुशीतं सक्षौद्रं तद्वद्भौमं च तद्गुणम् ॥ ५९ ॥
निर्वापितं तप्तलोष्टकपालसिकतादिभिः ।
सशर्करं वा कथितं पंचमूलेन वा जलम् ॥ ६० ॥
दर्भपूर्वेण मंथश्च प्रशस्तो लाजसक्तुभिः ।
वाट्यश्चामयवैः शीतः शर्करामाक्षिकान्वितः ॥ ६१ ॥
यवागूः शालिभिस्तद्वत्कोद्रवैश्च चिरंतनैः ।
शीतेन शीतवीर्यैश्च द्रव्यैः सिद्धेन भोजनम् ॥ ६२ ॥
हिमांबुपरिषिक्तस्य पयसा ससिता मधु ।
रसैश्चानम्ललवणैर्जांगलैर्घृतभर्जितैः ॥ ६३ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

मुद्गादीनां तथा यूषैर्जीवनीयरसान्वितैः ।
नस्यं क्षीरघृतं सिद्धं शीतैरिक्षोस्तथा रसैः ॥ ६४ ॥
निर्वापणाश्च गंडूषाः सूत्रस्थानोदिता हिताः ।
दाहज्वरोक्ता लेपाद्या निरीहत्वं मनोरतिः ॥ ६५ ॥
महासरिद्ध्रदादीनां दर्शनस्मरणादि च ।

दिव्यांबु आंतरिक्षं जलं शीतं माक्षिकेण सह शस्यते । भौमं च जलं तद्गुणं दिव्यांबुसमानगुणं शुचिपृथ्वसितश्वेतेदेश इत्यादि लक्षणलक्षितम् । तच्च शस्यते। तस्य दिव्यजलस्येव गुणा यस्य तत्तद्गुणं तप्तलोष्टकमुपलसिकतादिभिस्तप्तं तन्निर्वापितं शीतीकृतं शस्यते । अथवा तदेव समशर्करं शस्यते । अथवा दर्भपूर्वेण तृणाख्येन पंचमूलेन क्वथितं शस्यते । तथा लाजासक्तुभिः कृतो मंथः प्रशस्यः।तथा आमैरभृष्टैर्यवैर्वाटयः प्रशस्तः। शीतीभूतः शर्करामाक्षिकयुक्तः । यवागूः शालिभिस्तथैव शर्करामाक्षिकान्विताः शस्ताः । तथा चिरंतनैः कोद्रवैः शर्करामधुयुक्ता यवागूः शस्ताः । तथा शीतेन शीतीकृतेन द्रव्येण शीतवीर्यैर्द्रव्यैः सिद्धेन भोजनं हितम्। अथवा शीघ्रशीतजलैः परिषिक्तस्य पुंसः पयसा सशर्करामार्द्वीकं भोजनं हितं । अथवा न केवलं पयसा सात्म्यादिवशान्मांसरसैर्जांगलैः किंचिदम्ललवणैर्घृतभर्जितैर्भोजनं हितम् । तथा मुद्गमसूरादिकानां यूषैर्जीवनीयरसयुतैर्भोजनं हितम् । तथा शीतैः शीतवीर्यैश्चंदनादिभिस्तथेक्षुरसे सिद्धं क्षीरघृतं नस्यं हितम्। क्षीरोद्भवं घृतं क्षीरघृतं तथा सूत्रस्थानोदिता निर्वापणा रोपणा गंडूषा हिताः। तथा दाहज्वरे य उक्ता लेपाद्या दूर्वादिभिर्वातपित्तघ्नैरित्यादिग्रंथनिर्दिष्टास्ते च हिताः । तथा निरीहत्वं निर्व्यापारत्वं हितं तथा मनसो रतिर्निर्वृत्तत्वात् । या महासरितां महाह्रदानां महातडागानां च दर्शनस्मरणानि हितानि ।

इति तृष्णासु सामान्येन चिकित्सितमुक्तं विशेषेणाह ।

तृष्णायां पवनोत्थायां सगुडं दधि शस्यते ॥ ६६ ॥
रसाश्च बृंहणा शीता विदार्यादिगणांबु वा ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

पवनोत्थायां तृष्णायां दधि गुडेन सह शस्यते । मांसरसाश्च बृंहणाः शस्ताः । तथा विदार्यादिगणांबु विदारिपंचागुलेत्यादिभिः सृतं तोयं पानीयं शस्तम् ।

पित्तजायां सितायुक्तः पक्वोदुंबरजो रसः ॥ ६७ ॥
तत्क्वाथो वा हिमस्तद्वत्सारिवादिगणांबु वा ।
तद्विधैश्च गणैः शीतकषायान् ससितामधून् ॥ ६८ ॥
मधुरैरौषधैस्तद्वत् क्षीरीवृक्षैश्च कल्पितान् ।
बीजपूरकमृद्वीका वटवेतसपल्लवान् ॥ ६९ ॥
मूलानि कुशकाशानां यष्ट्याह्वं च जले शृतम् ।
ज्वरोदितं वा द्राक्षादिपंचसारांबु वा पिबेत् ॥ ७० ॥

पित्तोत्थायां शर्करान्वितः पक्वोदुंबरफलजो रसस्तेषामुदुंबराणां वा क्वाथो हिमस्तद्वच्छीता युक्तः शस्यते । तथैव सारिवादिगणांबु सारिवोशीरेत्यादि प्रशस्यते । तद्विधैः शीतवीर्यैश्च गणैः कृतान् शीतकषायान् ससितामाक्षिकान् पिबेत् । तथैव मधुररसैर्द्राक्षादिभिर्द्रव्यैः कल्पितान् । क्षीरीवृक्षैश्चाश्वत्थन्यग्रोधादिभिः कल्पितान् शीतकषायान् सशर्करामधून् पिबेत् । बीजपूरकादिपल्लवान् कुशकाशानां मूलानि मधुकं चैतज्जले शृतं पिबेत् । शीतमिति प्रकृतत्वाद्योग्यत्वाच्चात्र योज्यं । अथवा ज्वरचिकित्सितोक्तं द्राक्षामधूकेत्यादिकं फांटं शीतकषायं पिबेत् ।

पंचसारांबु वा मधुरखर्जुरमृद्वीकेत्यादि रक्तपित्तचिकित्सिते पठितं पिबेत् ।

कफोद्भवायां वमनं निंबप्रसववारिणा ।
बिल्वाढकी पंचकोलदर्भपंचकसाधितम् ॥ ७१ ॥
जलं पिबेद्रजन्या वा सिद्धं सक्षौद्रशर्करम् ।
मूद्रयुषं च सव्योषपटोलीनिंबपल्लवम् ॥ ७२ ॥
यवान्नं तीक्ष्णकवलनस्यलेहांश्च शीलयेत् ।

श्लेश्मजायां तृष्णायां निंबपत्रपानीयेन वमनं शस्तम् । बिल्वादिभिर्जलं

Indira Gandhi National Centre for the Arts

साधितं कफतृष्णायां पिबेत् । रजन्या हरिद्रया जलं सिद्धं पिबेत् सक्षौद्रशर्करं कफतृष्णायां मुद्गयूषं च त्रिकटुपटोलं निंबपल्लवान्वितं पिबेत् । यवान्नं तीक्ष्णकवलं तीक्ष्णनस्यं तीक्ष्णलेहं च शीलयेत् ।

सर्वैरामाच्च तद्धंत्री क्रियेष्टा वमनं तथा ॥ ७३ ॥
त्र्युषणारुष्करवचाफलाम्लोष्णांबुमस्तुभिः ।

सर्वैरामाच्च तृष्णायां सत्यां तद्वत्संनिपातघ्नी आमघ्नी च क्रिया इष्टा तथा च वमनमिष्टं त्र्यूषणारुष्करवचादियुक्तेन फलाम्लेनोष्णजलेन वा मस्तुना वा इष्टं ।

अन्नात्ययान्मंडमुष्णं हिमं मंथं च कालवित् ॥ ७४ ॥

अन्नात्ययादन्नविरहात्तृष्णायां सत्यां मंडमुष्णशीतं मंथं च कालप्रकृतिसात्म्यादिवत् पिबेत् । वातकफप्रकृतिना पित्तश्लेष्मप्रकृतिना पित्तप्रकृतिना च हिमो मंथः पेयः । एवं कालसात्म्यादिषु निरूप्यं । सक्तवः सर्पिषाभ्यक्ताः शीतोदकपरिप्लुताः । नातिद्रवो नातिसांद्रो मंथ इत्यभिधीयते ।

तृषि श्रमान्मांसरसं मद्यं वा ससितं पिबेत् ।

श्रमात्तृषि जातायां मांसरसं मद्यं सशर्करं पिबेत् ।

आतपात्ससितं मंथं यवकोलांबुसक्तुभिः ॥ ७५ ॥
सर्वाण्यंगानि लिंपेच्च तिलपिण्याककांजिकैः ।

आतपात्तृषि यवकोलोद्भवैः सक्तुभिः सशर्करं मंथं पिबेत् । सर्वाणि चांगानि तिलपिण्याककांजिकैर्लिंपेत् ।

शीतस्नानात्तुमद्यांबु पिबेत्तृण्मान् गुडांबु वा ॥ ७६ ॥

शीतस्नानाच्च तृण्मान्मद्यांबु पिबेत् । तृण्मानिति मतुपि मयड्इति णत्वे रूपम् । गुडजलं वा पिबेत् ।

मद्यादर्धजलं मद्यं स्नातोम्ललवणैर्युतम् ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

मद्यात्तृष्मानर्धजलं मद्यं स्नातश्चाम्ललवणाभ्यां युतं पिबेत् ।

स्नेहतीक्ष्णतराग्निस्तु स्वभावशिशिरं जलम् ॥ ७७ ॥

स्नेहेन तीक्ष्णतरोऽग्निर्यस्य स नरस्तृष्मान्निसर्गशीतलं जलं पिबेत् ।

स्नेहादुष्णांबु जीर्णात्तु जीर्णन्मंडं पिपासितः ।

स्नेहात् पुनरजीर्णात् पिपासित उष्णांबु वा पिबेत् । जीर्णात्तु स्नेहात्तृषि मंडं पिबेत् ।

पिबेत्स्निग्धान्नतृषितो हिमस्पर्द्धि गुडोदकम् ॥ ७८ ॥

स्निग्धान्नेन भुक्तेन तृषितो हिमस्पर्द्धि तु हिमशीतलं गुडोदकं पिबेत् ।

गुर्वाद्यन्नेन तृषितः पीत्वोष्णांबु तदुल्लिखेत् ।

गुर्वाद्यन्नेन भुक्तेन तृषितः पीत्वोष्णांबु तद्गुर्वाद्यन्नमुद्वमेत् ।

क्षयजायां क्षयहितं सर्वं बृंहणमौषधम् ॥ ७९ ॥

क्षयजायां तृषि क्षये हितं यद् बृंहणमौषधं तत्सर्वं हितं शस्तम् ।

कृशदुर्बलरूक्षाणां क्षीरं छागो रसोऽथवा ।

कृशादीनां तृषिजातायां क्षीरं हितमथवा छागो रसो हितः ।

क्षीरं च सोर्ध्ववातायां क्षयकासहरैः शृतम् ॥ ८० ॥

सोर्ध्ववातायां तृषि क्षयकासहरैः शृतं क्षीरं हितं। च शब्दान्मांसरसश्च।

रोगोपसर्गजातायां धान्यांबु ससितामधु ।
पाने प्रशस्तं सर्वाश्च क्रियारोगाद्यपेक्षया ॥ ८१ ॥

रोगोपसर्गजातायां तृषि धान्यांबु ससितामाक्षीकपाने प्रशस्तं। सर्वा च क्रियारोगाद्यपेक्षया शस्ता ।

तृष्यन् पूर्वामयक्षीणो न लभेत जलं यदि ।
मरणं दीर्घरोगं वा प्राप्नुयात्त्वरितं ततः ॥ ८२ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

सात्म्यान्नपानभैषज्यैस्तृष्णां तस्य जयेत्पुरः ।
तस्यां जितायामन्योऽपि शक्यो व्याधिश्चिकित्सितुम् ॥८३

पूर्वामयेन क्षीणः सन् तृष्णक् पिपासितो यदि जलं न लभेत तदा मरणं दीर्घरोगं वा प्राप्नुयात् । ततश्च हेतोस्त्वरितं शीघ्रतरं तस्य नरस्य पूर्वमन्येभ्यो रोगेभ्यः सात्म्यान्नपानभेषजैस्तृषं जयेत् । ततोपरं रोगं किमेवं क्रियत इत्याह । तस्यां तृषि जितायां सत्यामन्योपि रोग उपक्रमितुं शक्यः ।

इति श्रीमदरुणदत्तविरचितायामष्टांगहृदयटीकायां चिकित्सास्थाने छर्दिचिकित्सितं नाम षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

सप्तमोऽध्यायः

छर्द्यादिचिकित्सितादनंतरं मदात्ययचिकित्सितारंभश्चिकित्सासामान्यहेतुर्यतस्तृष्णाया यथा रक्तपित्ते कारणं तथा मदात्ययस्यापि ।

अथातो मदात्ययचिकित्सितं व्याख्यास्यामः ।

यं दोषमधिकं पश्येत्तस्यादौ प्रतिकारयेत् ।
कफस्थानानुपूर्व्या वा तुल्यदोषे मदात्यये ॥ १ ॥

यं दोषं तत्र मदात्यये वातादिकमुल्बणं पश्येल्लक्षयेज्जानीयात्तस्य दोषस्यादौ प्रथमत एव प्रतिकारयेत् प्रतिकारं कुर्यात् । एवं समविषमदोषो मदात्ययश्चिकित्स्यः । तुल्यदोषे पुनर्मदात्यये कफस्थानानुपूर्व्या दोषान् प्रतिकारयेत् । किमित्येवं क्रियत इत्याह ।

पित्तमारुतपर्यंतः प्रायेण हि मदात्ययः ।

हि यस्मात्कालक्रमेण पित्तमारुतावसानो बाहुल्येन मदात्ययः स्यात् । प्रथमं कफस्याधिक्यं । ततः पित्तमारुतावधिकौ भवतः । कफस्थानानुपूर्वी व्याख्यानं ज्वरचिकित्सिते व्याख्यातम् ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

हीनमिथ्याति पीतेन यो व्याधिरुपजायते ॥ २ ॥
समपीतेन तेनैव स मद्येनोपशाम्यति ।
मद्यस्य विषसादृश्यात्

हीनमिथ्यातिपीतेन मद्येन यो व्याधिरुत्पद्यते स व्याधिस्तेनैव मद्येन समपीतेन सम्यग्मात्रया पीतेन शाम्यति। यावद् दृष्टेर्न संभ्रान्तिर्यावन्न क्षोभ्यते मनः। तावदेव विरंतव्यं मद्यादात्मवता सदेत्येवं लक्षणं पानं सममेव पीतम्। येनैव मार्द्वीकेनाथवा माधवेन गौडादिना वा यो जातो व्याधिः स तेनैव मार्द्वीकादिना शाम्यति। कुत एवं स्यादित्याह। मद्यस्य विषसादृश्यात्। यथा तीक्ष्णादिभिर्दशभिर्गुणैर्विषं युक्तं तथैव तत्संख्यातैरेव गुणैर्मद्यमपि युक्तं। ततश्च मद्यस्य मद्येनैव शांतिर्युक्ता। ननु यदि विषसादृश्यं मद्यस्य ततो यथा विषस्य विषांतरेण शांतिस्तथा मद्यस्यापि मद्यांतरेण शांतिः प्राप्तेत्याशंक्याह।

विषं तूत्कर्षवृत्तिभिः ॥ ३ ॥
तीक्ष्णादिभिर्गुणैर्योगाद्विषांतरमपेक्षते ।

सत्यमेतत्। एवं प्राप्तम्। किंतु गुणैर्दशभिरुत्कर्षवृत्तिभिरधिकशक्तिस्वरूपैर्योगात्संबंधाद्विषं विषांतरमपेक्षते। न तु तद्विना तदेव स्वोत्थे रोगप्रशमायालम्। मद्यं तु हीनवृत्तिभिर्दशभिर्गुणैर्योगान्न मद्यांतरमपेक्षते। एवं तीक्ष्णादीनां गुणानां हीनोत्कर्षभेदाद्विषान्मद्यस्य वैलक्षण्यम्।

तीक्ष्णोष्णेनातिमात्रेण पीतेनाम्लविदाहिना ॥ ४ ॥
मद्येनान्नरसक्लेदो विदग्धः क्षारतां गतः ।
यान्कुर्यान्मदतृण्मोहज्वरांतर्दाहविभ्रमान् ॥ ५ ॥
मद्योत्क्लिष्टेन दोषेण रुद्धः स्रोतस्सु मारुतः ।
सुतीव्रा वेदना याश्च शिरस्यस्थिषु संधिषु ॥ ६ ॥
जीर्णाममद्यदोषस्य प्रकांक्षालाघवे सति ।
यौगिकं विधिवद्युक्तं मद्यमेव निहंति तान् ॥ ७ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

स्वभावत एव तीक्ष्णोष्णेन तथा अतिमात्रेण तथा अम्लविदाहिना मद्येन पीतेनान्नरसक्लेदो विदग्धः क्षारतां च गतो यान्मदादीन् कुर्यात्। तथा भोजनतो मद्योत्क्लिष्टेन दोषेण स्रोतस्सु रुद्धो या दारुणा मूर्धादिषु वेदनाः कुर्यात् तान्मदादीन् ताश्च वेदनाः मद्यमेव यौगिकं विधिना युक्तं निहंति। किंभूतस्य पुरुषस्य। जीर्णमद्यदोषस्य तथा मद्कांक्षायां लाघवे सति ते च ताश्च तान् पुमान् स्त्रिया इत्येकशेषः। ननु यदि मद्यमेव तान्नि-हंति ततश्चिकित्सांतरारंभो न युक्तः। नैवं। बह्व्यो हि चिकित्साः प्रतिरोगं प्रोक्ताः। तस्माच्चिकित्सांतरोपन्यासो युक्त एव। ननु कथं तान्मद्यमेव निहंतीत्याह।

क्षारो हि याति माधुर्यं शीघ्रमम्लोपसंहितः।
मद्यमम्लेषु च श्रेष्ठं दोषविष्यंदनादलम् ॥ ८ ॥

यस्मात् क्षारोम्लोपसंहितो द्रागेव माधुर्यं याति। आम्लेषु मध्ये-मद्यं श्रेष्ठं दोषविष्यंदनात् पर्याप्तम्।

तीक्ष्णोष्णाद्यैः पुरा प्रोक्तैर्दीपनाद्यैस्तथा गुणैः।
सात्म्यत्वाच्च तदेवास्य धातुसांम्यकरं परम् ॥ ९ ॥

पुरा मदात्ययनिदानोक्तैस्तीक्ष्णोष्णाद्यैर्गुणैस्तथा मद्यवर्गोक्तैर्दीपनाद्यैर्गु-णैः करणभूतैस्तदेव मद्यं सुष्टु धातुसांम्यकरम्। धातुसांम्यकरमिति त्वात्र हेतौ तृच्।

सप्ताहमष्टरात्रं वा कुर्यात्पानात्ययौषधम्।
जीर्यत्येतावता पानं कालेन विपथाश्रृतम् ॥ १० ॥

सप्ताहमथवाष्टरात्रं पानात्ययौषधं कुर्यान्नाधिकं कालम्। यत एतावता कालेन विमार्गस्थं पानं परिणमति।

परं ततोनुबध्नाति यो रोगस्तस्य भेषजम्।
यथायथं प्रयुंजीत कृतपानात्ययौषधः ॥ ११ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

तत एतस्मात्कालादनंतरमूर्ध्वं यो रोगोनुबध्नाति तस्य रोगस्य कृतपानात्ययौषधश्च यथास्वं भेषजं प्रयुंजीत ।

इति सामान्येन चिकित्सितमुक्त्वा विशेषेणाह ।

तत्र वातोल्बणे मद्यं दद्यात्पिष्टकृतं युतम् ।
बीजपूरकवृक्षाम्लकोलदाडिमदीप्यकैः ॥ १२ ॥
यवानीहपुषाजाजीव्योषत्रिलवणार्द्रकैः ।
शूल्यैर्मांसैर्हरीतकैः स्नेहवद्भिश्च सक्तुभिः ॥ १३ ॥
उष्णस्निग्धाम्ललवणा मद्यमांसरसा हिताः ।
आम्राम्रातकपेशीभिः संस्कृतारागखांडवाः ॥ १४ ॥
गोधूममाषविकृतीर्मृदुश्चित्रामुखप्रियाः ।
आर्द्रिकार्द्रककुल्माषसूक्तमांसादिगर्भिणी ॥ १५ ॥
सुरभिर्लवणा शीता निगदा वाच्छवारुणी ।
स्वरसो दाडिमात्क्वाथः पंचमूलात्कनीयसः ॥ १६ ॥
शुंठी धान्यात्तथा मस्तुसूक्तांभोत्थाम्लकांजिकम् । मच्छा
अभ्यंगोद्वर्तनस्नानमुष्णं प्रावरणं घनम् ॥ १७ ॥
घनश्चागुरुजो धूपः पंकश्चागुरुकुंकुमः ।
कुचोरुश्रोणिशालिन्यो यौवनोष्णांगयष्टयः ॥ १८ ॥
हर्षेणालिंगनैर्युक्ताः प्रियाः संवहनेषु च ।

तेषु मदात्ययेषु मध्ये वाताधिके मदात्यये पिष्टकृतं मद्यं दद्यात् । बीजपूरकादिभिर्देशसात्म्यादिवशात् समस्तैर्व्यस्तैर्यथा योगयुक्तं तथा मेध्यस्य मेदुरस्य मांसस्य रसाः हिताः। किंभूताः। उष्णाः स्निग्धाम्ललवणाश्च तथा रागाः खांडवाश्चाम्रातकपेशीभिः संस्कृता हिताः । लक्षणमेषामृतुचर्यायामुक्तं । तथा गोधूममाषाणां विकृतीर्हिताः । किंभूताः। मृदवोऽतीक्ष्णाः चित्रा नानाप्रकारा मुखप्रिया वदनरुचिकृतः । तथा आर्द्रिकादिगर्भिणी अच्छवारुणी च हिता । किंभूता । सुरभिर्लवणा शीता च । तथा निगदा

Indira Gandhi National Centre for the Arts

पुराणा तथा दाडिमात्स्वरसोहितः । पंचमूलात् कनीयसो ह्रस्वात् क्काथः शुंठीधान्यांब्वक्काथो हितः । तथा मस्त्वादि हितं । तथाभ्यंजनादि उष्णं हितं । प्रावरणमाच्छादनं घनं हितं । अगरुजश्च धूपो घनो बहुलो हितः । अगरुः कुंकुमपंकोनुपानं हितं । तथा प्रिया हर्षेण प्रीत्या आलिंगनं परिष्वंगस्तत्र युक्ताः । संवाहनेषु शरीरमर्दनेषु च युक्ता हिताः। कुचाश्चोरवश्च श्रोणयश्चैतैः शालंते यास्ता एवम् । तथा यौवनेनोष्णांगयष्टिः शरीरलता यासां ता एवम् ॥

पित्तोल्बणे बहुजलं शार्करं मधुना युतम् ॥ १९ ॥
रसैर्दाडिमखर्जूरभव्यद्राक्षापरूषकैः ।
सुशीतं ससितीसक्तुयोज्यं तादृक् च पानकम् ॥ २० ॥
स्वादुवर्गकषायैर्वा युक्तं मद्यं समाक्षिकम् ।

पित्ताधिके मदात्यये बहुजलं शार्करं मद्यविशेषं योज्यं । मधुमक्षिकं वा रसैर्दाडिमादिजैर्युक्तैः । तच्च सुष्ठु शीतं कृत्वा योज्यं । परूषकाण्यत्र मधुराणि योज्यानि नाम्लानि तेषां कफपित्तकरत्वात् । तथा च मुनिः । अम्लं परूषकं द्राक्षाबदराण्यारुकानि च । पित्तश्लेष्मप्रकोपीनीति । तादृक् च सुशीतं पानकं योज्यं। किंभूतम्। सह सितासक्तुभिर्वर्तते यत्तदेवम्। सक्तवश्च लाजा नियोज्या योग्यतरत्वान्नतु यवानाम्। तथा स्वादुवर्गस्य क्काथेन संयुक्तं मद्यं समाक्षिकं योज्यम् ॥

शालिषष्टिकमश्नीयाच्छशाजैणकपिंजलैः ॥ २१ ॥
सतीनमुद्गामलकपटोलीदाडिमैरपि ।

शालिषष्टिकं भुंजीत । कैः सह । शशादिजै रसैर्देशादिसात्म्यवशात् सतीनादिजैश्च रसैः ।

कफपित्तं समुत्क्लिष्टमुल्लिखेत्तृड्विदाहवान् ॥ २२ ॥
पीत्वांबु शीतं मद्यं वा भूरीक्षुरससंयुतम् ।
द्राक्षारसं वा संसर्गी तर्पणादिपरं हितः ॥ २३ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

तथाग्निर्दीप्यते तस्य दोषशेषान्नपाचनः ।

तृड्विदाहवान्मदात्ययी कफपित्तं समुत्क्लिष्टं समुत्थितं स्वस्थानाच्युताभासं सम्यग्वमेत् । किं कृत्वा । अंबु शीतं पीत्वा मद्यं वा भूरिणा इक्षुरसेन संयुतं पीत्वा । अथवा द्राक्षारसं पीत्वा । परमनंतरं संसर्गी तर्पणादिभिः सुष्टु हितः । कृतवमनादिकस्यानंतरं पेयादिक्रमः संसर्गीत्युच्यते । एवं कृते सति तस्य मदात्ययिनोऽग्निर्दीप्यते । किंभूतः । दोषशेषस्यान्नस्याहारस्य पाचनः ।

कासे सरक्तनिष्ठीवे पार्श्वस्तनरुजासु च ॥ २४ ॥
तृष्णायां सविदाहायां सोत्क्लेशे हृदयोरसि ।
गुडूचिभद्रमुस्तानां पटोलस्याथवा रसम् ॥ २५ ॥
सशृंगवेरं युंजीत तित्तिरिप्रतिभोजनम् ।

पित्तमदात्यये कासे रक्तनिष्ठीवसहिते पार्श्वादिरुजासु च तृष्णायां विदाहसहितायां हृदये उरसि च सोत्क्लेशे सति गुडूच्यादीनां रसमथवा पटोलस्य रसं सनागरं युंजीत । अल्पस्तित्तिरिस्तित्तिरिं प्रति सुप्रतिनामात्रार्थ इत्यव्ययीभावः ।

तृष्यते चातिबलवद्वातपित्ते समुद्धते ॥ २६ ॥
दद्याद्द्राक्षारसं पानं शीतं दोषानुलोमनम् ।
जीर्णेद्यान्मधुराम्लेन च्छागमांसरसेन वा ॥ २७ ॥

अतितृष्यते च पुरुषाय वातपित्तेधिके सति द्राक्षारसपानं दद्यात् । किंभूतम् । शीतलं तथा दोषानुलोमनम् । जीर्णे च तस्मिन् छागमांसरसेन मधुराम्लेनाश्नीयात् ।

तृष्यल्पशः पिबेन्मद्यं मंदं रक्षन् बहूदकम् ।
मुस्तदाडिमलाजांबु जलं वा पर्णिनीशृतम् ॥ २८ ॥
पटोल्युत्पलकंदैर्वा स्वभावादेव वा हिमम् ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

तृषितस्त्वामल्पं मंदं मंदं रक्षन् बहूदकं मद्यं पिबेत् । पर्णिनीभिः क्वथितं वा पटोल्यादिशृतं वा सर्वमेतच्छीतं पातव्यम्। यत्तोयं स्वभावादेव वा हिममिति।

मद्यातिपानादब्धातौ क्षीणे तेजसि चोद्धते ॥ २९ ॥
यः शुष्कगलताल्वोष्ठो जिह्वां निःकृष्य चेष्टते ।
पाययेत्कामतोंभस्तं निशीथपवनाहतम् ॥ ३० ॥

मद्यातिपानाद्धेतोरब्धातौ क्षीणेल्पीभूते तेजसि चोद्धते क्षोभिते सति यः पुरुषः शुष्कगलताल्वोष्ठः सन् जिह्वां निःकृष्य निःसार्य चेष्टत इतश्चेतश्च लुठति तं नरं कामत इच्छया अंभो निशीथे यः पवनस्तेनाहतं पाययेत्।

कोलदाडिमवृक्षाम्लचुक्रिकाचुक्रीकारसः ।
पंचाम्लको मुखालेपः सद्यस्तृष्णां नियच्छति ॥ ३१ ॥

कोलादिभिः पंचाम्लको मुखालेपो द्राक् तृष्णां शमयति।

त्वचं प्राप्तश्च पानोष्मा पित्तरक्ताभिमूर्च्छितः ॥ ३२ ॥
दाहं प्रकुरुते घोरं तत्रातिशिशिरो विधिः ।
अशाम्यति रसैस्तृप्ते रोहिणीं व्यधयेच्छिराम् ॥ ३३ ॥

पानस्य मद्यस्योष्मा त्वचं प्राप्तः पित्तरक्ताभ्यामभिमूर्च्छितो मिश्रितो दाहं दारुणं प्रकर्षेण कुरुते। तत्र दाहे शीतो विधिः कार्यः शीतोपचारेणाप्यशाम्यति सति दाहे मांसरसैस्तृप्ते नरे रोहिणीसंज्ञां शिरां व्यधयद् वैद्य इति शेषः। व्यधयेदिति घटादित्वान्मित्वे ह्रस्वः।

उल्लेखनोपवासाभ्यां जयेत् श्लेष्मोल्बणं पिबेत् ॥ ३४ ॥
शीतं शुंठीस्थिरोदीच्यदुःस्पर्शान्यतमोदकम् ।

श्लेष्माधिकं मदात्ययं वमनोपवासाभ्यां जयेत् । शुंठयाद्यन्यतमोदकं शीतकषायं पिबेत्।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

निरामं क्षुधितं काले पाययेद्बहुमाक्षिकम् ॥ ३५ ॥
शार्करं मधु वा जीर्णमरिष्टं सीधुमेव च ।
रूक्षतर्पणसंयुक्तं यवानीनागरान्वितम् ॥ ३६ ॥

ततो निरामं जातक्षुधं संतं काले यथोचिते शार्करं बहुमाक्षिकं बहुक्षौद्रं पाययेत् । मधुमार्द्वीकं वा बहुक्षौद्रं । द्वयमप्येतत् पुराणम् । तथारिष्टमभयादिकृतं पाययेत् सीधुं वा पाययेत् । किंभूतम् ? रूक्षा ये तर्पणास्तैः संयुक्तं यवानीशुंठीभ्यां संयुक्तम् ।

यूषेण यवगोधूमं तनुनाल्पेन भोजयेत् ।
उष्णाम्लकटुतिक्तेन कौलत्थेनाल्पसर्पिषा ॥ ३७ ॥
शुष्कमूलकजैश्छागै रसैर्वा धन्वचारिणाम् ।
साम्लवेतसवृक्षाम्लपटोलीव्योषदाडिमैः ॥ ३८ ॥

तथा कौलत्थेन यूषेण यवगोधूमं भोजयेत् । किंभूतेन तनुना स्वच्छेन । तथाल्पेन उष्णेनाम्लकटुतिक्तेनाम्लघृतेन । अथवा शुष्कमूलकजैं रसैश्छागैर्वा रसैर्धन्वचारिणां वा रसैर्भोजयेत् । किं भूतैः ? सहाम्लवेतससैंधवपटोलपत्रत्रिकटुकदाडिमैः ।

प्रभूतशुंठीमरिचहरितार्द्रकपेशिकम् ।
बीजपूररसाद्यम्लभृष्टनीरसवर्तितम् ॥ ३९ ॥
करीरकरमर्दादिरोचिष्णुबहुशालनम् ।
प्रव्यक्ताष्टांगलवणं विकल्पितनिमर्दकम् ॥ ४० ॥
यथाग्नि भक्षयन्मांसं माधवं निगदं पिबेत् ।

मांसं यथाग्नि अग्न्यनतिक्रमेण भक्षयन्माधवं निगदं पुराणं पिबेत् । किंभूतम् मांसं।विविधैः प्रकारैः कल्पितो निष्पादितो निमर्दको येन मांसेन तद्धि कल्पितनिमर्दकम् । तदेवं विविधप्रकारत्वं निमर्दकस्याह । प्रभूता उत्कटाः शुंठीमरीचहरीतार्द्रकपेशयो यस्मिंस्तदेवम् । हरितार्द्रकस्य शस्त्रकृतांत्रादीर्घाकारा अवयवाः पेशय उच्यंते । बीजपूररसादिभिरम्लस्तथा भ्रष्टो

Indira Gandhi National Centre for the Arts

यथायथं स्नेहादिना नीरसः शुष्कप्रायो वर्तितो व्यंजनप्रकारो यत्तत्तदेवम्। करीरादिरोचिष्णुरोचनशीलं बहुप्रभूतं शालनं हरितकं यस्मिन् तथा प्रकर्षेण व्यक्तं स्पृष्टं वक्ष्यमाणमष्टांगलवणं यत्र तदेवं विविधं कल्पनं कृतम्। क्रियाविशेषणान्येतानि।

सितासौवर्चलाजाजीतित्तिडीकाम्लवेतसम् ॥ ४१ ॥
त्वगेलामरिचार्धांशमष्टांगलवणं हितम्।
स्रोतोविशुद्ध्यग्निकरं कफप्राये मदात्यये ॥ ४२ ॥

सिताद्यैरष्टांगलवणमन्वर्थसंज्ञं कफाधिके मदात्यये हितम्। स्रोतः शुद्धिकृदग्निदीपनं च।

रूक्षोष्णोद्वर्तनोद्घर्षस्नानभोजनलंघनैः।
सकामाभिः सह स्त्रीभिर्युक्त्या जागरणेन च ॥ ४३ ॥
मदात्ययः कफप्रायः शीघ्रं समुपशाम्यति।

रूक्षोष्णैरुद्वर्तनादिभिर्लंघनेन तथा युक्त्या देशकालाद्यपेक्षिण्या सकामाभिर्दयिताभिः सह यज्जागरणं तेन तेन च कफाधिको मदात्ययो द्रागेव शमं याति।

यदिदं कर्म निर्दिष्टं पृथग्दोषबलं प्रति ॥ ४४ ॥
संनिपाते दशविधे तच्छेषेऽपि विकल्पयेत्।

तत्र वातोल्बणे मद्यमित्यादि। पित्तोल्बणे बहुजलमित्यादि। तथा उल्लेखनोपवासाभ्यां जयेत्। श्लेष्मोल्बणमित्यादि च त्रिविधं संनिपातं पृथग्दोषबलं प्रतिलक्षणीकृत्य कर्म निर्दिष्टं कर्मेदमुक्तं न केवलमत्र त्रिविधे संनिपाते शेषेऽपि दशविधे संनिपाते विकल्पयेद् द्विविधं कृत्वा कल्पयेत् कुर्यादित्य इति शेषः। एतदुक्तं भवति। वातोल्बणे मदात्ययजे संनिपाते यत्कर्म निर्दिष्टं तथा पित्तोल्बणे मदात्ययजे संनिपाते यत्कर्म निर्दिष्टं तदेव वातपित्तोल्बणे कुर्यात्। एवं दोषबलमपेक्ष्य सर्वस्मिन् मदात्यये चिकित्सितं कुर्यात्। स दशविधः संनिपातः शिष्यहितायाद्येह मद-

Indira Gandhi National Centre for the Arts

श्यैते। उत्कर्षेण यदा त्वेको मध्येन द्वौ तदा हिमः। उत्कर्षेणे यदा द्वौ तु मध्येनैको द्वितीयकः। एको मध्येन दोषः स्याद् द्वावल्पेन तृतीयकः। उत्कर्षेणैक एवस्यादल्पेन द्वौ चतुर्थकः। उत्कर्षेण यदा द्वौ तु अल्पेनैकश्च पंचमः। एकोऽल्पेन तु मध्येन द्वौ दोषाविति षष्ठकः। उत्कर्षिणः समस्ताः स्युरेवं भवति सप्तमः। मध्येन सर्वेपि यदा तदा भवति चाष्टमः। अल्पेन सर्वेपि यदा तदा तु नवमः स्मृतः। अल्पेनैको मध्येनैकस्तरामन्य इति स्फुटाः। संनिपातस्य मुनिना दशभेदाः प्रकीर्तिताः।

त्वङ्नागपुष्पमगधामरीचाजाजिधान्यकैः ॥ ४५ ॥
परूषकमधूकैलासुराह्वैश्च सितान्वितैः।
सकपित्थरसं हृद्यं पानकं शशिबोधितं ॥ ४६ ॥
मदात्ययेषु सर्वेषु पेयं रुच्यग्निदीपनम्।

त्वगादिभिः शर्करान्वितैः कपित्थरसयुक्तं कर्पूरकृताधिपानकं सर्वेषु मदात्ययेषु पातव्यं रुच्यग्निवृद्धिकरम्।

नाविक्षोभ्य मनोमद्यं शरीरमविहन्य वा ॥ ४७ ॥
कुर्यान्मदात्ययं तस्माद्विष्यते हर्षणी क्रिया।

मद्यं यस्मान्मानसं न अविक्षोभ्य अपि तु मनसः प्रक्षोभणं कृत्वा न च शरीरस्य विहननमकृत्वा एव यथा कथंचिन्मदात्ययं कुर्यात्। यतश्चैतस्माद्धेतोर्हर्षोत्पादका क्रिया एष्टव्या नाक्षोभ्येत्ययं पाठो न श्रेयान्। अल्प वादेशस्यात्र दुर्लभत्वात्।

संशुद्धिशमनाद्येषु मददोषः कृतेष्वपि ॥ ४८ ॥
न चेच्छाम्येत्कफे क्षीणे जाते दौर्बल्यलाघवे।
तस्य मद्यविदग्धस्य वातपित्ताधिकस्य च ॥ ४९ ॥
ग्रीष्मोपतप्तस्य तरोर्यथा वर्षं तथा पयः।

संशुद्धिशमनाद्येषूपक्रमेषु कृतेष्वपि यदि मददोषान्मद्योत्थो व्याधिर्न शाम्येत् तस्य मद्येन विदग्धस्यात एव च कफे सौम्ये धातौ क्षीणेऽत एव

Indira Gandhi National Centre for the Arts

जाते दौर्बल्यलाघवे अल्पप्रमाणत्वे कार्श्ये च सति तदानीं सामर्थ्याद्वातपित्तयोरतिरिक्तता वातपित्ताधिकस्य च क्षीणोजस्त्वात्तथा पयः पथ्यम्। यथा ग्रीष्मोपतप्तस्य तरोर्यथावर्षम्। वर्षमिति वृषे कृद्विधौ भयादीनामुपसंख्यानमित्यच्।

मद्यक्षीणस्य हि क्षीणं क्षीरमाश्वेव पुष्यति ॥ ९० ॥
ओजस्तुल्यं गुणैः सर्वैर्विपरीतं च मद्यतः।

हि यस्मात्तस्य तुल्यगुणैः सर्वैर्गुर्वादिभिरोजसः क्षीरं मद्याच्च विपरीतं गुणैः। तथा च मुनिः स्वादुशीतं मृदुस्निग्धं बहलं श्लक्ष्णपिच्छिलम्। गुरुमंदं प्रसन्नं च गव्यं दशगुणं पयः। तदेवं गुणमेवोजः सामान्यादभिवर्धयेदिति। यतश्चैवं। तस्मान् मद्यक्षीणस्य क्षीणमोजः क्षीरमाश्वेव पुष्यति वृद्धिं प्रापयति। नत्वपरं द्रव्यं यथोक्तहेत्वभावात्।

पयसा विजिते रोगे बले जाते निवर्तयेत् ॥ ९१ ॥
क्षीरप्रयोगं मद्यं च क्रमेणाल्पाल्पमाचरेत्।
न विट्क्षयध्वंसकोत्थैः स्पृशेन्नोपद्रवैर्यथा ॥ ९२ ॥ श्येनो

पयसा रोगे मदात्ययाख्ये निवर्त्तिते बले जाते सति मद्योचितः पुमान् क्षीरप्रयोगं निवर्त्तयेत्। मद्यं चाल्पाल्पं क्रमेणोपयुंजीत। यथा विट्क्षयध्वंसकोद्भवैरुपद्रवै रसौ न स्पृश्येत्। विट्क्षयोद्भवा विकाराः कायशिरोरोगाद्या ध्वंसकोपद्रवाः श्लेष्मनिष्ठीवादयः।

तयोस्तुस्याद्घृतं क्षीरं बस्तयो बृंहणाः शिवाः।
अभ्यंगोद्वर्तनस्नानमन्नपानं च वातजित् ॥ ९३ ॥

तयोर्विट्क्षयध्वंसकयोर्घृतं क्षीरं च चिकित्सितं स्यात्। तथा बस्तयो बृंहणाः शिवा निरपायाः। तथाभ्यंगादीनि यच्च वातपित्तजिदनुपानं तच्च स्यात्।

युक्तमद्यस्य मद्योत्थो न व्याधिरुपजायते।
अतोस्य वक्ष्यते योगो यः सुखायैव केवलम् ॥ ९४ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

युक्तमद्यस्य पुंसो मद्योत्थो व्याधिर्नोपजायते । युक्तमद्यत्वाद्यतोऽतोस्माद्धेतोरस्य मद्यस्य संयोगो वक्ष्यते । यः केवलं सुखायैव स्यात् । अधुना सुरां संपन्नामाह । तथा चोक्तं संग्रहेऽश्विनग्रहे ।

आश्विनं या महत्तेजो बलं सारस्वतं च या ।
दधात्यैंद्रं च या वीर्यं प्रभावं वैष्णवं च या ॥ ५५ ॥
अस्त्रं मकरकेतोर्या पुरुषार्थो बलस्य या ।
सौत्रामण्यां द्विजमुखे या हुताशे च हूयते ॥ ५६ ॥
या सर्वौषधिसंपूर्णान्मथ्यमानात्सुरासुरैः ।
महोदधेः समुद्भूता श्रीशशांकामृतैः सह ॥ ५७ ॥
मधुमाधवमैरेयसीधुगौडासवादिभिः ।
मदशक्तिमनुघ्नंती या रूपैर्बहुभिः स्थिता ॥ ५८ ॥
यामासाद्य विलासिन्यो यथार्थं नाम बिभ्रति ।
कुलांगनापि यां पीत्वा नयत्युद्धतमानसा ॥ ५९ ॥
अनंगालिंगितैरंगैः क्वापि चेतो मुनेरपि ।
तरंगभंगभ्रूकुटीतर्जनैर्मानिनी मनः ॥ ६० ॥
एकं प्रसाद्य कुरुते या द्वयोरपि निर्वृतिम् ।
यथाकाम् भटावाप्तिपरिहृष्टाप्सरोगणे ॥ ६१ ॥
तृणवत्पुरुषा युद्धे यामासाद्य त्यजंत्यसून् ।
यां शीलयित्वापि चिरं बहुधा बहुविग्रहाम् ॥ ६२ ॥
नित्यं हर्षातिवेगेन तत्पूर्वमिव सेवते ।
शोकोद्वेगारतिभयैर्यां दृष्ट्वा नाभिभूयते ॥ ६३ ॥
गोष्ठीमहोत्सवोद्यानं न यस्याः शोभते विना ।
स्मृत्वा स्मृत्वा च बहुशो वियुक्तः शोचते यया ॥ ६४ ॥
अप्रसन्नापि या प्रीत्यै प्रसन्ना स्वर्ग एव या ।
अपींद्रं मन्यते दुःस्थं हृदयस्थितया यया ॥ ६५ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

अनिर्देश्यसुखास्वादा स्वयंवेद्यैव यापरम् ।
इति चित्रास्ववस्थासु प्रियामनुकरोति या ॥ ६६ ॥
प्रियातिप्रियतां याति यत्प्रियस्य विशेषतः ।
या प्रीतिर्या रतिर्या वाग् या पुष्टिरिति च स्तुता ॥ ६७ ॥
देवदानवगंधर्वयक्षराक्षसमानुषैः ।
पानप्रवृत्तौ सत्यां तां सुरां तु विधिना पिबेत् ॥ ६८ ॥

या सुरा आश्विनं महत्तेजो दीप्तं दधाति । अश्विनमित्यश्विनोरिदमित्यण् । नस्तद्धित इति टिलोपे प्राप्ते इनण्यनपत्य इति प्रकृतिभावः । या च सुरा सारस्वतं बलमुत्साहमैंद्रं च वीर्यं शक्तिं वैष्णवं च प्रभावं माहात्म्यं दधाति । या च मदनस्यास्त्रं प्रहरणं बलभद्रस्य या पुरुषार्थः परं प्रयोजनम्। या च सौत्रामण्यां यज्ञे द्विजास्ये हुताशे च या हूयते । या च महोदधेः सर्वौषधिसंपूर्णा देवदानवैर्विलोड्यमानाल्लक्ष्म्यादिभिः सहोत्पन्ना । या च सुरा मदशक्तिमत्यजंति बहुभिर्मध्वादिभिराकारैः स्थिता । यां सुरां पीत्वा विलासिन्यो मृगलोचना यथार्थमन्वर्थं नाम बिभ्रति विलासो विद्यते यासामिति । यां पीत्वा कुलवामलोचनाप्युद्धतमानसा सती अनंगालिंगितैरंगैर्मुनेरपि चेतः क्वापि नयति । तरंगभंगा कुटिला भृकुटिस्तरंगभंगाभृकुटिस्तया तर्जनानि प्रणयकलहविशेषास्तैर्मानिन्यो मानसमेकं प्रसाद्य द्वयोरपि स्त्रीपुंसोर्या निर्वृत्तिं सौख्यं या सुरा करोति । यां सुरामास्वाद्य नराः समरे तृणमिव प्राणांस्त्यजंति । कीदृशि युद्धे । यथेच्छं भटस्य शूरपुरुषस्य या अवाप्तिरिष्टिस्तया परितुष्टो मुदितोप्सरःसंघो यस्मिन्नाहवे तस्मिन् । यां सुरां बहुभिः प्रकारैराहारादिमध्यावसानलक्षणैस्तथा यां बहुविग्रहां मधुमाधवादिभिरनेकशरीरां शीलयित्वापि नित्यं हर्षस्यातिवेगेन तत्पूर्वमिव तत्प्रथममिव सेवंते । यां दृष्ट्वा उपलभ्यास्वादादिना शोकादिभिर्नाभिभूयते । यस्याः सुराया ऋते गोष्ठ्यादिर्न शोभते यया च वियुक्तः शोचते । शोचत इति नङ्भ्यस्तङ् । या चाप्रसन्ना कलुषापि प्रीत्यै प्रसन्ना स्वस्था सतिं स्वर्ग एव स्यात् । यया चांतःस्थितया इंद्रमपि दुःस्थितं मन्यते । अनिर्देश्यमप्यवर्णनीयं सुखं यस्मिन्नास्वादे स तथाविध आस्वादो यस्याः सैवं । या के-

Indira Gandhi National Centre for the Arts

बलमात्मनैव वेद्या इति पूर्वोक्तेन प्रकारेण चित्रासु नानाविधास्ववस्थासु प्रियां वल्लभामनुकरोत्यनुहरति। प्रियापक्षे नर्मार्थः। प्रणयकलहार्थः। अप्रसन्ना कुपिता। प्रसन्ना त्यक्तकोपा। अनिर्देश्यः सुखास्वादः सुखोपलंभो यस्या इति योज्यम्। एवं यां शीलयित्वेत्यादिः सर्वोपि ग्रंथः प्रियायामपि योज्यः। तथा यद्यस्मात्सुरा प्रिया इष्टा अतिप्रियतां सुष्टुवल्लभत्वं याति। यत्प्रियस्य प्रकृतत्वात्सुरा प्रियस्य विशेषेण प्रियतां याति। या सुरा प्रीतिरिति या वागिति या पुष्टिरिति या देवादिभिः स्तुता। पानप्रवृत्तौ सत्यां येषां पानाधिकारोस्ति धर्मशास्त्रेष्वनिषिद्धत्वात् तां पूर्वोक्तगुणां सुरां विधिना वक्ष्यमाणेन पिबेत्।

संभवंति च ये रोगा मेदोनिलकफोद्भवाः।
विधियुक्तादृते मद्यात्तेन सिध्यंति दारुणाः॥ ६९॥

ते मेदोनिलकफोद्भवा रोगा न संभवंति। दारुणा दुःसहा ये विधियुक्तान्मद्यादृते न सिध्यंति। विधियुक्तेन मद्येन सर्वे मेदोनिलकफजा रोगाः सिध्यंतीति भावः।

अस्ति देहस्य सावस्था यस्यां पानं निवार्यते।
अन्यत्र मद्यान्निगदाद्विविधौषधसंभृतात्॥ ७०॥

देहस्य सा अवस्था प्रक्लिन्नदेहमेहादिका अस्ति यस्यां पानं निवार्यते। मद्यादन्यथा किंभूतात् निगदात्। तथा विविधौषधसंस्कृतात्। मद्यमेवंविधं वर्जयित्वा पानं निषिध्यत इत्यर्थः।

अनूपं जांगलं मांसं विधिनाप्युपकल्पितम्।
मद्यं सहायमप्राप्य सम्यक् परिणमेत्कथम्॥ ७१॥

अनूपं जांगलं मांसं विधानेनाप्युपकल्पितं मद्यं विनोपयुक्तं कथं संपरिणमति। पुनरपि मद्यमेव श्लेषयन्नाह।

सुतीव्रमारुतव्याधिघातिनो लशुनस्य च।
मद्यमांसवियुक्तस्य प्रयोगःस्यात्कियान् गुणः॥ ७२॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

लशुनस्य च दारुणतरवातव्याधिविनाशिनः मद्यमांसरहितस्य कियान् गुणः स्यात्। अल्प एवेत्यर्थः।

निगूढशल्याहरणे शस्त्रक्षाराग्निकर्मणि।
पीतमद्यो विषहते सुखं वैद्यविकत्थनाम् ॥ ७३ ॥

तथा निगूढस्यात्यर्थं प्रणष्टस्य शल्यस्याहरणे तथा शस्त्रादिकर्मणि पीतमद्यो नरः सुखमक्लेशेन वैद्यविकत्थनां कदर्थनां सहते।

अनलोत्तेजनं रुच्यं शोकश्रमविनोदकम्।
न चातः परमस्त्यन्यदारोग्यबलपुष्टिकृत् ॥ ७४ ॥

तथा अनलस्याग्नेरुत्तेजनं रुच्यं शोकादिघ्नम् न च कदाचित् तस्मान्मद्यात् परमन्यत् श्रेष्ठमस्त्यारोग्यादिकृत्।

रक्षता जीवितं तस्मात्पेयमात्मवता सदा।
आश्रितोपाश्रितहितं परमं धर्मसाधनम् ॥ ७५ ॥

यत एवं महागुणं मद्यम्। तस्माज्जीवितं रक्षता नरेण तथा आत्मवता सुधीमतासदापेयमाश्रितानामुपाश्रितानां च हितम्। परमं धर्मसाधनमुपायः। अथास्य पाने विधिमाह।

स्नातः प्रणम्य सुरविप्रगुरून्यथास्वं
वृत्तिं विधाय च समस्तपरिग्रहस्य।
आपानभूमिमथ गंधजलाभिषिक्ताम्-
आहारमंडपसमीपगतां श्रयेत ॥ ७६ ॥
स्वास्तृतेऽथ शयने कमनीये मित्रभृत्यरमणीसमवेतः।
स्वं यशः कथकचारणसंघैरुद्धतं निशमयन्नतिलोकम् ॥ ७७ ॥
विलासिनीनां च विलासशोभि गीतं सनृत्यं कलतूर्यघोषैः।
कांचीकलापैश्चलकिंकिणीकैः क्रीडाविहंगैश्च कृतानुनादम् ॥ ७८

Indira Gandhi National Centre for the Arts

मणिकनकसमुत्थैरावनेयैर्विचित्रैः
सजलविविधलेखक्षौमवस्त्रावृतांगैः ।
अपि मुनिजनचित्तक्षोभसंपादिनीभि-
श्चकितहरिणलोलप्रेक्षणीभिः प्रियाभिः ॥ ७९ ॥
स्तननितंबकृतादतिगौरवादलसमाकुलमीश्वरसंभ्रमात् ।
इति गतं दधतीभिरसंस्थितं तरुणचित्तविलोभनकर्मिणम्॥८०
यौवनासवमत्ताभिर्विलासाधिष्ठितात्मभिः ।
संचार्यमाणं युगपत्तन्वंगीभिरितस्ततः ॥ ८१ ॥
तालवृंतनलिनीदलानिलैः शीतलीकृतमतीवशीतलैः ।
दर्शनेपि विदधद्दशानुगं स्वादितं किमुत चित्तजन्मनः॥८२॥
चूतरसेंदुमृगैः कृतवासं मल्लिकयोज्ज्वलया च सनाथम् ।
स्फाटिकशुक्तिगतं सतरंगं कांतमनंगमिवोद्वहदंगं ॥ ८३ ॥
तालीसाद्यं चूर्णमेलादिकं वा हृद्यं प्राश्य प्राग्वयःस्थापनं वा ।
तत्प्रार्थिभ्यो भूमिभागे सुमृष्टे तोयोन्मिश्रं दापयित्वा ततश्च८४
धृतिमान् स्मृतिमानित्यमनूनाधिकमाचरन् ।
उचितेनोपचारेण सर्वमेवोपपादयन् ॥ ८५ ॥
नित्यविकसितासितसरोजनयनसंक्रांतिवर्धितश्रीकम् ।
कांतामुखमिव सौरभहृतमधुपगणं पिबेन्मद्यम् ॥ ८६ ॥

स्नातो नरः सुरादीन् प्रणम्य यथास्वं यथायोग्यं समस्तस्य परिकरस्य वृत्तिं कृत्वा अथ पानभूमिं गंधजलेन कर्पूरोशीरादिना वा शीतांबुना अभिषिक्तामाश्रयेत् । कीदृशीं । आहारमंडपस्य निकटस्थिताम् । पीतमद्यस्य दूरे व्रजत आयासादि स्यात् । वसंततिलकं वृत्तं। अथ भूमिश्रयणादनंतरं शयनीये स्थितो मद्यं पिबेदिति वक्ष्यमाणेन संबंधः । किं भूते । सुष्ठु आस्तृते प्रदत्तप्रच्छदपटे । तथा कमनीये रम्ये । मित्रादिसहितः। स्वे यश इत्यादि । किं कुर्वन् स्वमात्मीयं यशःकथकादिसंघैर्निशामयन् श्रावयन् ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

कीदृशमुद्धतं तथा अतिलोकमुद्भूतरूपम् । स्वागतावृत्तम् । तथा विलासिनीनां संबंधि गीतं निशमयन् । किं भूतं । सहनृत्तेन सनृत्तम् । द्वयमपि विलासशोभि विलासलक्षणं प्रोक्तम् । स्थानासनगमनानां हर्षभ्रूनेत्रकर्मणां चैव उत्पद्यते विशेषो यः श्लिष्टः स तु विलासः स्यात् । तथा तद्गीतं मधुरतूर्यशब्दैस्तथा कांचीकलापैः स्फुटास्तथा स्फुरंत्यः किंकिण्यः सूक्ष्मघंटिका येषां तैस्तथाक्ष्वितैस्तथाक्रीडाविहंगैः सारसादिभिश्च कृतानुनादम् । उपजातिवृत्तं । रोचनीयैर्डोलगकैस्तन्वंगीभिर्युगपदितस्ततः संचार्यमाणम् । एवं ह्यनुभूयमानं रामणीयकं धत्ते । किं भूतैरावनेयैः । मणिकनकसमुत्थैः । तथा विचित्रैर्नानाविधैः । तथा सजलं नानाप्रकारलेखं यत् क्षौमवस्त्रं तेनावृत्तमंगं येषां तैः । किंभूताभिस्तन्वंगीभिः । मुनिजनचित्तक्षोभसंपादिनीभिः । तथा चकितस्त्रस्तो यो हरिणस्तद्वन्नेत्रैः साधु प्रेक्षंते यास्ताभिः । बाहुलकात् कर्त्तरि ल्युट्तथा वल्लभाभिः मालिनीवृत्तम् । तथा गतमिति असंस्थितमनवस्थितं स्वरूपं दधतीभिः यतः स्तनाभ्यां नितंबेन च कृतादधिकं गौरवादलसमुत्क्षेश्वरस्य प्रभोर्यः संभ्रमो भयं तस्माद्व्याकुलगमनम् । अत एव च तरुणचित्तानां विलोभने कार्मणं वशीकरणम् । द्रुतविलंबितमाह नभौ भरौ । तथा तन्वंगीभिरितस्ततो युगपत्संचार्यमाणं । किंभूताभिः । यौवनासवाभ्यां मत्ताभिः तथा विलासेनाधिष्ठित आत्मा चित्तं यासां ताभिः । तथा च कीदृशं मद्यं । तालवृन्तादिभिरतिशीतैः शीतलीकृतम् । दर्शनेप्येवं रूपं मद्यं कामस्य वशानुगं जनं विदधत्कंदर्पोद्दीपनत्वात् किमुत किं पुनः पीतं सत्कामवशं जनं कुर्यात् । नौरलौगुकयुता रथोद्धता । तथा चूतरसादिभिः कृताधिवासं सुगंधीकृतं । तथा मल्लिकया पुष्पविशेषेणोज्ज्वलया विकसितया सनाथं युक्तम् । यथा स्फटिकस्य विकारः स्फाटिकी । स्फाटिकी चासौ शुक्तिश्च तस्यां गतं स्थितं स्फटिकस्येयं स्फाटिकीत्युच्यते । पुंवद्भावो दुर्निवारः स्यात् । तथा सतरंगम् । एवं च कांतं रम्यमंगमुद्वहन् उत्प्रेक्षते । अनंगं पंचशरमिव चारुतरत्वेन कामोत्पादकत्वात् । दोधकवृत्तं । प्राक्पूर्वं तालीसाद्यं चूर्णामलादिकं वा द्वयमथवा वयःस्थापनं रसायनोक्तं प्राश्य भक्षयित्वा तथा सुमृष्ट उपलिप्ते भूमिभागे तत्प्रार्थिभ्यो मद्यपानाधिकृतेभ्यो देवदानवकूष्मांडादिभ्यस्तोयोन्मिश्रं मद्यं दापयित्वा पश्चाज्जलं दापयितव्यमित्यर्थः । ततश्चा

Indira Gandhi National Centre for the Arts

नंतरं पिबेत् । शालिनीवृत्तं । किं कुर्वन् । अनूनाधिकं पूर्वोक्तं नियमाचरेत् । धृतिमान् स्मृतिमांश्च सन् । उचितेन योग्येनोपचारेण सर्वमेवोपपादयेत् । किं भूतं मद्यम् । विकसितं च तत् सितासितं सरोजं च विकसितासितसरोजं । जितं न्यक्कृतं विकसितसरोजं याभ्यां नयनाभ्यां ते तथाविधे तयोः संक्रांतः प्रतिबिंबत्वेन । तथा संवर्धिता श्रीर्यस्य सरकस्य तदेवं तथा सौरभेण हृतौ रम्यगतित्वाद्भ्रमरसार्थौ येन तदेवं । सुरभेर्भावः सौरभम् । कांताच्च लघुपूर्वादित्यण् । तच्च कांतामुखमिव । ततो जितविकसितासितसरोजनयनयोर्या संक्रांतिः संचारः स कटाक्षेक्षितादिना । तया संविवर्धिता श्रीः शोभा यस्य तदेवम् । सकटाक्षे क्षितं हि मुखं नितरां राजते । तथोत्तमस्त्रीणां मुखं सुगंधिर्भवतीति । सौरभहृतमधुपगणा विपुलतयान्यथा पादभाक् ।

पीत्वैवं चषकद्वयं परिजनं सन्मान्य सर्वं ततो
गत्वा हारभुवं पुरः सुभिषजो भुंजीत भूयोत्र च ॥
मांसापूपघृतार्द्रकादिहरितैर्युक्तं ससौवर्चलै
र्द्विस्त्रिर्वा निशि वाल्पमेव वनिता संचालनार्थं पिबेत्॥८७॥

एवमनेन प्रकारेण चषकद्वयं पीत्वा ततोनंतरं परिजनं सर्वं वेश्यादिकमपि सन्मान्य तथा आहारभुवं गत्वा सुभिषजः शोभनवैद्यस्य पुरोग्रे भुंजीत । अत्र चाहारं तु विमांसापूपादिभिर्युक्तं द्विस्त्रिर्वासरकं पिबेत् । मांसापूरिति केचित् पेठुः । निशि तु कांतायाः संचालनार्थं रंजनार्थमल्पमेव पिबेन्न तु बहु । शार्दूलविक्रीडितम् । कांतारंजनपानं श्लाघयन्नाह ।

रहसि दयितामंके कृत्वा भुजांतरपीडनात्
पुलकिततनुं जातस्वेदां सकंपपयोधराम् ॥
यदि सरभसं सीधूद्गारं न पाययते कृती
किमनुभवति क्लेशप्रायं ततो गृहतंत्रताम् ॥ ८८ ॥

कृती प्रवीणो यदि प्रियां मद्यः सरकं न पाययते । ततः किं कस्माद्गृही तंत्रतां गृहोपकरणसंपादनक्लेशमनुभवति । किं कृत्वा । रहसि अंके

Indira Gandhi National Centre for the Arts

उत्संगे दयितां कृत्वा। किं भूतां। भुजांतरपीडनात् पुलकितशरीराम्। तथा जातस्वेदाम्। तथासवेपथुकुचाम्। रोमांचस्वेदकंपाः सात्विकाभावाः शृंगारस्याविर्भाविकाः। दयितायामिति गतिबुद्धीत्यादिना कर्मत्वम्। पाययेत् इति निगरणचलनार्थेभ्यश्चेति परस्मैपदे प्राप्ते न पादम्येत्यादिना निषिद्धे च स्वेत्याद्यात्मनेपदं। भवति हरिणी त्सौम्नौल्मौगौरसोदधिसत्पतैः।

वरतनुवक्त्रसंगतिसुगंधितरं सरक्तं
द्रुतमिव पद्मरागमणिमासवरूपधरम्॥
भवति रतिश्रमेण च मदः पिबतोल्पमपि
क्षयमतओजसः परिहरन् स शयीत परम्॥ ८९॥

किं भूतं मद्यम्। वरतनुवदनसंगत्या सुरभितरम्। तथा पद्मरागमणीद्रुतमिव द्रवत्वमिव प्राप्तमासवरूपधरम्। यतश्च रतिश्रमेणाल्पमपि मद्यं पिबतो मदो भवति ततो मद्यमोजसश्च क्षयहेतुः। अतओजः क्षयं परिहरन् स मद्यपायी पानानंतरं शयीत स्वप्यात्। नजभजजलगौ वयदिःनर्कुटकं तु तदा।

इत्थं युक्त्या पिबन्मद्यं न त्रिवर्गाद्विहीयते।
असारसंसारसुखं परमेवाधिगच्छति॥ ९०॥
ऐश्वर्यस्योपभोगोऽयं स्पृहणीयः सुरैरपि।

इत्थमेवंप्रकारया उक्त्या मद्यं पिबन् पुरुषस्त्रिवर्गाद्धर्मार्थकामलक्षणाद्यस्मान्न हीयत इति कर्मकर्त्तरि तङ्। असारसंसारस्य परमं सुखं चाधिगच्छति प्राप्नोति। अयं मद्यपानलक्षण ऐश्वर्यस्योपभोगः। सुरैरपि स्पृहणीयः।

अन्यथा हि विपत्सु स्यात्पश्चात्तापेंधनं धनं॥ ९१॥
उपभोगेन रहितो भोगवानिति निंद्यते।
निर्मितोऽतिकदर्योऽयं विधिना निधिपालकः॥ ९२॥
तस्माद्व्यवस्थया पानं पानस्य सततं हितं।
जित्वा विषयलुब्धानामिंद्रियाणां स्वतंत्रतां॥ ९३॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

अन्यथा एवमपि भोगमकुर्वतो हि विपत्सु सतीषु धनं द्रव्यं पश्चात्तापेधनं स्यात्। स ह्येवं विपदि चिंतयति । किं मया धनमाप्योपभोगोस्मिन्नकृत इति । उपभोगं विना भोगवानिति सोलुंठमुच्यमानो गर्ह्यते । निंदितत्वमेवास्य प्रकटयति। निर्मित इत्यादि अयमतिकदर्यः कुस्वामी विधिना निधिपालको निर्मितः कृतः । यत एवं । तस्मात् पानस्य मध्यावस्थाया नियमेन पानं हितं । ननु कथं निसर्गतो विषयलुब्धेंद्रियेषु व्यवस्था पालयितुं शक्यत इत्याह। जित्वेत्यादि । विषयाभिलाषिणामिंद्रियाणां स्वातंत्र्यं जित्वा नियमेन व्यवस्थया पानं कर्तुं शक्यत इत्यर्थः ।

विधिर्वसुमतामेष भविष्यद्वसवस्तु ये ।
यथोपपत्ति तैर्मद्यं पातव्यं मात्रया हितम् ॥ ९४ ॥

वसुमतां धनिनामेष विधिः । ये तु भविष्यद्वसवस्तेषां च तैर्यथोपपत्तियथायुक्ति हितं मद्यं मात्रया पातव्यं ।

यावद्दृष्टेर्न संभ्रांतिर्यावन्न क्षोभते मनः ।
तावदेव विरंतव्यं मद्यादात्मवता सदा ॥ ९५ ॥

यावदेव दृष्टेर्न संभ्रांतिर्यावदेव मनो न क्षोभं याति तावदेव मद्याद्धीमता सर्वदा विरंतव्यं निवृत्तिः कार्या । एष एव समयोगः । एतदतिक्रमोतियोगः। यथोक्ता समयोगाद्धीनस्य लक्षणो हीनयोगः दोषदेशप्रकृत्यादीन् परीक्ष्य मिथ्यायोगः ।

अभ्यंगोद्वर्तनस्नानवासधूपानुलेपनैः ।
स्निग्धोष्णैर्भावितश्चान्नैः पानं वातोत्तरः पिबेत् ॥ ९६ ॥

वाताधिको नरोभ्यंगोद्वर्तनादिभिः स्निग्धोष्णैर्भावितो मद्यं पिबेत् ।

शीतोपचारैर्विविधैर्मधुरस्निग्धशीतलैः ।
पैत्तिको भावितश्चान्नैः पिबेन्मद्यं न सीदति ॥ ९७ ॥

पैत्तिको विविधैः शीतोपचारैश्चंदनानुलेपनादिभिर्मधुरस्निग्धशीतलैश्चान्नैः सह मद्यं पिबन्न सीदति ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

उपचारैरशिशिरैर्यवगोधूमभुक् पिबेत् ।
श्लेष्मिको जांगलैर्मांसैर्मद्यं मरिचकैः सह ॥ ९८ ॥

श्लेष्मिको यवगोधूमभुक् सन्मद्यमशिशिरैरुपचारैस्तथा मांसैर्द्धन्वोद्भवैर्मरिचसंकृतैः सह पिबेत् ।

तत्र वाते हितं मद्यं प्रायः पैष्टिकगौडिकम् ।
पित्ते सांभो मधुकफे मार्द्वीकारिष्टमाधवम् ॥ ९९ ॥

तत्र तेषु मद्येषु मध्ये वाताधिके नरे प्रायो बाहुल्येन मद्यं पैष्टिकं गौडिकं च हितं । पित्ते सजलं समाक्षिकं च मद्यं हितं । कफे मार्द्वीकारिष्टमाधवं हितम् ।

प्राक् पिबेच्छ्लैष्मिको मद्यं भुक्तस्योपरि पैत्तिकः ।
वातिकस्तु पिबेन्मध्ये समदोषो यथेच्छया ॥ १०० ॥

श्लेष्मिकः प्राग्भक्तं मद्यं पिबेत् । पैत्तिको भक्तं भुक्त्वा पिबेत् । वातोत्तरः पुनर्मध्ये भक्तस्य पिबेत् । समदोषो यथेच्छया भक्तस्य पूर्वं मध्येऽन्ते वा पिबेत् ।

मदेषु वातपित्तघ्नं प्रायो मूर्छासु चेष्टते ।
सर्वत्रापि विशेषेण पित्तमेवोपलक्षयेत् ॥ १०१ ॥

मदेषु प्रायेण वातपित्तघ्नं चिकित्सितं । मूर्छासु मूर्छायेषु चेष्यते । सर्वत्रैव मदे मूर्छाये च पित्तमेवाधिकं जानीयात् । एवं तेषामुपक्रमः ।

शीताः प्रदेहाम्रणयः सेका व्यजनमारुताः ।
सिताद्राक्षेक्षुखर्जूरकाश्मर्यः स्वरसाः पयः ॥ १०२ ॥
स्निग्धं मधुरवर्गेण रसा यूषाः सदाडिमाः ।
षष्टिकाः शालयो रक्ता यवाः सर्पिश्च जीवनम् ॥१०३॥
कल्याणकं महातिक्तं षट्पलं पयसाग्निकः ।
पिप्पल्यो वा शिलाह्वं वा रसायनविधानतः ॥ १०४ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

त्रिफला वा प्रयोक्तव्या सघृतक्षौद्रशर्करा ।

शीताः प्रदेहाः । पयो मधुरवर्गेण द्राक्षादिना सिद्धं । तथा रसा मांसरसादयः । यूषाश्च दाडिमान्विताः । तथा शालयो रक्तशालय इत्यर्थः । षष्टिकादयश्च तथा घृतं कल्याणकादिकमुन्मादप्रतिषेधोक्तं । महातिक्तं । कुष्टचिकित्सितोक्तं । षट्पलं राजयक्ष्मचिकित्सितोक्तं । तथा क्षीरेण चित्रकं। तथा पिप्पल्यो रसायनविधानेन । अथवा शिलाजतुरसायनेन विधिना । अथवा त्रिफला सघृतक्षौद्रशर्करा प्रयोक्तव्या ।

प्रसक्तवेगेषु हितं मुखनासावरोधनम् ॥ १०५ ॥
पिबेद्वा मानुषीक्षीरं तेन दद्याच्च नावनम् ।
मृणालबिसकृष्णा वा लिह्यात्क्षौद्रेण साभया ॥ १०६ ॥
दुरालभां वा मुस्तां वा शीतेन सलिलेन वा ।
पिबेन्मरिचकोलास्थिमज्जोशीराहिकेसरम् ॥ १०७ ॥
धात्रीफलरसे सिद्धं पथ्याक्वाथेन वा घृतम् ।

प्रसक्तवेगेषु मदादिषु मुखस्य नासायाश्च पाण्यादिना विरोधनं हितम्। मानुष्या वा क्षीरं पिबेत्। अनेन च मानुषीक्षीरेण नस्यं दद्यात्। मृणालादीन्सहरितकीन्माक्षिकेण वा लिह्यात् । अथवा धन्वयवासं मुस्तं वा मधुना लिह्यात्। अथवा शीतेन जलेन मरिचादीन् पिबेत्। अहिकेसरं नागकेसरम् । अथवामलकरसे सिद्धं घृतं हरीतकीक्वाथेन वा सिद्धं पिबेत् ।

कुर्यात्क्रियां यथोक्तां च यथादोषबलोदयम् ॥ १०८ ॥

यथोक्तां च क्रियां दोषबलोदयानुसारेण कुर्यात् ।

पंचकर्माणि चेष्टानि सेचनं शोणितस्य च ।
सत्त्वस्यालंबनं ज्ञानमगृद्धिर्विषयेषु च ॥ १०९ ॥

पंचकर्माणि वमनविरेकास्थापनान्वासननस्याख्यानि चेष्टानि रक्तमोक्षश्च

Indira Gandhi National Centre for the Arts

सत्वस्यालंबनमाश्रयणं तथा ज्ञानं महाभूतेंद्रियतन्मात्रमनोबुद्ध्यहंकारपुरुषादीनां विषयेष्वगृद्धिरनभिलाषः।

मदेष्वतिप्रवृद्धेषु मूर्छायेषु च योजयेत्।
तीक्ष्णं संन्यासविहितं विषघ्नं विषजेषु च॥ ११० ॥

मदेषु मूर्छायेषु च अतिप्रवृद्धेषु तीक्ष्णं नस्यादिसंन्यासोक्तं योजयेत्। तथा विषजेषु मदेषु विषघ्नं चिकित्सितं योजयेत्।

आशु प्रयोज्यं संन्यासे सुतीक्ष्णं नस्यमंजनम्।
धूमप्रधमनं तोदः सूचिभिश्च नखांतरे ॥ १११ ॥
केशानां लुंचनं दाहो दंशोदशनवृश्चिकैः।
कट्वम्लगालनं वक्रे कपिकच्छ्ववघर्षणम् ॥ ११२ ॥
उत्थितो लब्धसंज्ञश्च लशुनस्वरसं पिबेत्।
खादेत्सव्योषलवणं बीजपूरककेसरम् ॥ ११३ ॥
लघ्वन्नं कटुतीक्ष्णोष्णमद्यात्स्रोतोषि शुद्धये।

सन्यासे शीघ्रं सुष्टु तीक्ष्णं नस्यमर्जनं धूमप्रधमनं च प्रयोज्यं। सूचितोदादिकं च। नखमध्ये तथा वक्रे कटूनां मरिचादीनां मुस्तानां मातुलिंगादीनां च गालनं प्रयोज्यम्। तथा कपिकच्छ्ववघर्षणम्। एवमुपक्रांतःसमुत्थितो लब्धचेतनश्च संल्लशुनस्वरसं पिबेत्। तथा बीजपूरककेसरं सव्योषलवणं भक्षयेत्। स्रोतोविशोधनार्थं लघ्वन्नं प्रतिभुंजीत। कीदृशं तीक्ष्णोष्णं। लब्धन्नंप्रतीति अल्पलघ्वन्नम्। सुप्रतिनामात्रार्थ इति समासः।

विस्मापनैः संस्मरणैः प्रियश्रवणदर्शनैः ॥ ११४ ॥
पटुभिर्गीतवादित्रशब्दैर्व्यायामशीलनैः।
स्रंसनोल्लेखनैर्धूमैःशोणितस्यावसेचनैः ॥ ११५ ॥
उपाचरेत्तं प्रततमनुबंधभयात्पुनः।
तस्य संरक्षितव्यं च मनः प्रलयहेतुतः ॥ ११६ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

तं मदादिमंतमुपाचरेत् । कैः स्मरणैः । विस्मापनैर्विस्मयकारिभिः विपूर्वा त्स्मिङोणि चिनित्यं स्मयतेरित्यात्वेषु किङ्कटि च विस्मापनैरिति रूपम् । तथा प्रियस्य श्रवणेन दर्शनेन च गीतवादित्रशब्दैः पटुभिर्मनोहरैः । तथा व्यायामशीलनैः । तथा वमनविरेचनाभ्यां धूमेन शोणितस्रावेण च अनुबंधभयाच्च कारणात्तस्यातुरस्य प्रलयहेतुतो मनः सम्यग्रक्ष्यं यतस्तत इदं कार्यमिति ।

इति श्रीमदरुणदत्तविरचितायामष्टांगहृदयटीकायां सर्वांगसुंदराख्यायां मदात्ययचिकित्सितो नामाध्यायः सप्तमः ॥ ७ ॥

अष्टमोऽध्यायः ।

अस्मादनंतरमर्शश्चिकित्सितमारभ्यते । संबंधश्चास्य निदान एवोक्तः ।

अथातोऽर्शसां चिकित्सितं व्याख्यास्यामः ।

काले साधारणे व्यभ्रे नातिदुर्बलमर्शसम् ।
विशुद्धकोष्ठं लघ्वल्पमनुलोमनमाशितम् ॥ १ ॥
शुचिः कृतस्वस्त्ययनं भुक्तविण्मूत्रमव्यथम् ।
शयने फलके वान्यनरोत्संगे व्यपाश्रितम् ॥ २ ॥
पूर्वेण कायेनोत्तानं प्रत्यादित्यगुदं समम् ।
समुन्नतकटीदेशमथ यंत्रणवाससा ॥ ३ ॥
सक्थ्नोः शिरोधरायां च परिक्षिप्तमृजुस्थितम् ।
आलंबितं परिचरैः सर्पिषाभ्यक्तपायवे ॥ ४ ॥
ततोऽस्मै सर्पिषाभ्यक्तं निदध्यादृजुयंत्रकम् ।
शनैरनुसुखं पायौ ततो दृष्ट्वा प्रवाहणात् ॥ ५ ॥
यंत्रे प्रविष्टं दुर्नामक्षोतगुंठितयाऽनु च ।
शलाकयोत्पीड्याभिषक् यथोक्तविधिना दहेत् ॥ ६ ॥
क्षारेणैवार्द्रमितरत् क्षारेण ज्वलनेन वा ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

महद्वाबलिनश्छित्वा वीतयंत्रमथातुरम् ॥ ७ ॥
स्वभ्यक्तपायुजघनमवगाहे निधापयेत् ।
निर्वातमंदिरस्थस्य ततोऽस्याचारमादिशेत् ॥ ८ ॥
एकैकमिति सप्ताहात्सप्ताहात्समुपाचरेत् ।

साधारणे शरद्वसंतिके काले तथा व्यभ्रे विगताब्दे । तथा नातिदुर्बलमर्शसमपि तु किंचित्सप्रमाणमत्र योग्यपरं दत्वा तत्क्लेत्यध्याहृत्यसंबंधः कार्यः । तथा विशुद्धकोष्टादिकं कृत्वा ततोऽस्मै अर्शसाय यंत्रं निदध्यादिति। संग्रहे चोक्तम् । अथ खलु बलवंतमर्शोभिरुपद्रुतं यथार्हस्नेहोपस्निग्धस्विन्नमाभुक्तवंतं समे शुचौ विविक्ते देशे साधारणे व्यभ्रे काले समे फलके शय्यायां वा प्रत्यादित्यगुदमन्यस्योत्संगे निषण्णपूर्वकायमुन्नतकटिकं यंत्रणशाटकेन परिक्षिप्तग्रीवासक्थिसंधिदेशमलज्याहैराप्तपरिचारकैः सुपरिगृहीतं कृत्वा ततोऽस्मै घृताभ्यक्तं यंत्रकं निदध्यादिति । अर्शसमिति । अर्शांसि विद्यंते यस्येत्यर्थः । अर्शादित्वादच् । किं भूतम् । विशुद्धो वमनविरेचनादिना कोष्टो यस्य तम् । तथान्नमाशितं कृत्वा । किं भूतम् । लघुस्वभावादल्पं च मात्रया तथानुलोमनं वातवर्चसां प्रायेण प्रवर्तकम् । तथा शुचिमृज्जलाभ्यां कृत्वा । तथा कृतं स्वस्त्ययनं यस्य तम् । तथा मुक्ते विसृष्टे विण्मूत्रे येन तम् । तथा अव्यथं व्यथारहितमन्येन व्याधिना अपीडितम् । तथा शयने व्यपाश्रितशय्यामाश्रित्य स्थितम् । अथवा फलके आसनविशेषे व्यपाश्रितम् । अथवा अन्यनरोत्संगे व्यपाश्रितम् । उच्छिन्नविशेषान्नस्थानकविशेषः । नरोत्संगे व्यपाश्रितमित्येवं सिद्धे अन्यग्रहणं वैद्यस्य निरासार्थं । अन्योत्संगे व्यपाश्रितमिति । कथं कृत्वा पूर्वेण कायेनोत्तानं कर्णानाधारेण । तथा प्रत्यादित्यगुदम् । प्रतिअभिमुखेन आदित्यं प्रत्यादित्यं गुदं यस्य तम् । यस्यां दिशयादित्योगतः तस्यां दिशयर्शसेन संमुखगुदं कृत्वा स्थातव्यमित्यर्थः । समं च तथा सम्यगुन्नतः कटिदेशो यस्य तम् । अथ समुन्नतकटीदेशकर्णादनंतरमर्शसं सक्थ्नोस्तथाशिरोधरायां परिक्षिप्तमाक्रांतं कृत्वा । केन केन । यंत्रणवाससा यंत्रणार्थं वासः कार्पासादिमयं यंत्रणवासस्तेन ऋजु स्पष्टं कृत्वा स्थितम् । तमातुरं

Indira Gandhi National Centre for the Arts

तथा परिचारकैरालंबितं निश्चलं कृत्वा । अवष्टभ्य सम्यक् स्थापितं । ततो नंतरमस्मै दुर्नामवते सर्पिषाभ्यक्तपायवे घृताभ्यक्तं यंत्रकमृजुअनुसुखं कृत्वा शनैर्निदध्यात्प्रणयेत् । ततोनंतरं गुदं प्रणिहितं यंत्रांतिप्रवाहणात्प्रवाहणेन हेतुना यंत्रे प्रविष्टदुर्नामदृष्ट्वा।अथ पश्चाच्च शलाकया चेलखंडप्रावृतदेहया उत्पीडयप्रकृतत्वादुर्नामदूर्ध्वं पीडयित्वा वैद्योक्तविधिना सूत्रस्थानोदितेन क्षारेणार्द्रमर्शो दहेत्। एवेत्यवधारणे।क्षारेणैव नाग्निना।इतरत्शुष्कंदुर्नामक्षारेण ज्वलनेन वा दहेत् ।.यथोक्तविधिनेत्यत्रापि योज्यं । महद्वेति । बृहदुर्नाम-तुबलवतः पुंसः स्थित्वा वा शस्त्रेण क्षाराग्निभ्यां यथायोगं दहेत् । अथानंतर मातुरम् वीतयंत्रं विधाय स्वभ्यक्तपायुजघनमवगाहे क्षिपयेत्।तत्र निहितं निदध्यादित्यर्थः। ततोनंतरमस्याचारमुष्णोदकोपचारीस्यादित्यादिकमादिशे-त् । एकैकं दुर्नाम इत्यनेन पूर्वोक्तेन प्रकारेण सप्ताहात्सप्ताहात्समुपाचरेन्न तुल्य-कालं सर्वाणि । अथैषां कर्मादिक्रमं दर्शयितुमाह ।

प्राग्दक्षिणं ततो वाममर्शःपृष्ठाग्रजं ततः ॥ ९ ॥
बह्वर्शसः

बह्वर्शसः प्राक् पूर्वं दक्षिणदेशस्थमर्शः उपाचरेत् । अनंतरं वामं । ततः पृष्ठाग्रेजातमुपाचरेत् ।

सुदग्धस्य स्याद्वायोरनुलोमता ।
रुचिरन्नेऽग्निपटुता स्वास्थ्यं वर्णबलोदयः ॥ १० ॥

सुदग्धार्शसो वातस्यानुलोमनं स्यात् । तथा अन्नेऽभिलाषः । अग्नेः पाटवं स्वास्थ्यं बलवर्णयोरुद्भूतिश्च ।

बस्तिशूले त्वधोनाभे लेपयेच्छ्लक्ष्णकल्कितैः ।
वर्षाभूकुष्टसुरभिमिशिलोहामराह्वयैः ॥ ११ ॥

बस्तिशूले सति पुनर्नाभेरधः वर्षाभ्वादिभिः सुपिष्टैर्लेपयेत् ।

शकृन्मूत्रप्रतीघाते परिषेकावगाहयोः ।
वरणालंबुषैरंडगोकंटकपुनर्नवैः ॥ १२ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

सुखवीसुरभीभ्यां च क्वाथमुष्णं प्रयोजयेत् ।
सस्नेहमथवा क्षीरं तैलं वा वातनाशनम् ॥ १३ ॥
युंजितान्नं शकृद्भेदि स्नेहान् वातघ्नदीपनान् ।

शकृतो मूत्रस्य प्रतिघाते विबंधे सति वरणादिभिः क्वाथं परिषेकावगाहयोरुष्णं सस्नेहं प्रयोजयेत् । अथवा क्षीरं वातनाशनम् । बलतिलादिकं तैलं परिषेकावगाहयोः प्रयोजयेत् । अन्नं च पेद्यादिकं शकृद्विबंधघ्नं तथा स्नेहान् वातघ्नान् दीपनांश्च प्रयोजयेत् ।

अथाप्रयोज्यदाहस्य निर्गतान् कफवातजान् ॥ १४ ॥
संस्तंभकंडूरुक्छोफानभज्य गुदकीलकान् ।
बिल्वमूलाग्निकक्षारकुष्टैः सिद्धेन सेचयेत् ॥ १५ ॥
तैलेनाहिबिडालोष्ट्रवराहवसयाथवा ।
स्वेदयेदनुपिंडेन द्रवस्वेदेन वा पुनः ॥ १६ ॥
सक्तुनां पिंडिकाभिर्वा स्निग्धानां तैलसर्पिषा ।
रास्नाया हपुषाया वा पिंडैर्वा कार्ष्ण्यगंधिकैः ॥ १७ ॥

न प्रयोज्यो निषिद्धो दाहो यस्य स चाप्रयोज्यदाहो दाहानर्हस्तस्य निर्गतान्बहिर्भूतांस्तथा कफवातजान् गुदकीलकार्शांस्यभ्यज्य बिल्वादिसिद्धेन तैलेन सेचयेत् । किं भूतान् । संस्तंभकंडूरुक्छोफान् । एवं भूतानन्यलक्षणान् । अथवा भुजंगादिवसया सेचयेत् । अनुसेकाभ्यंगाभ्यां पश्चात्पिंडेन पिंडस्वेदान् प्रयोजयेत् । पिंडस्वेदो मुनिनोक्तः । यथा । तिलामाषकुलत्थाम्लघृततैलामिषौदनैः पायसैः कृशरैर्मांसैः पिंडस्वेदान् प्रयोजयेदिति योज्यं । अथवा द्रवस्वेदेन स्वेदविध्युक्तेन स्वेदयेत् । पुनः शब्दोत्र लौकिक्या उक्त्या प्रयुक्तः । यथेदं सारमिदं पुनरसारमिति पिंडस्वेदेनाथवा सक्तूनां तैलसर्पिषा स्निग्धानां पिंडिकादिभिः स्वेदयेत् । अथवा रास्नाया हपुषाया श्च पिंडैः कार्ष्ण्यगंधिकैर्वा स्वेदयेत् । तैलसर्पिषास्निग्धैरित्यत्रानुवर्तनीयं कृष्णगंधाया इमे कार्ष्ण्यगंधिकास्ते । अध्यात्मादित्वात् ठक् ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

अर्कमूलं शमीपत्रं नृकेशाः सर्पकंचुकम् ।
मार्जारचर्मसर्पिश्च धूपनं हितमर्शसाम् ॥ १८ ॥
तथा श्वगंधा सुरसा बृहती पिप्पली घृतम् ।

अर्कमूलादिचर्मसर्पिरंतं धूपनं हितं । तथा अश्वगंधादिकं पृथगेव धूपनं हितं ।

धान्याम्लपिष्टैर्जीमूतबीजैस्तज्जालकं मृदु ॥ १९ ॥
लेपितं छायया शुष्कं वर्तिर्गुदजशातनी ।

कांजिकेन पिष्टैर्जीमूतस्य बीजैस्तथा तस्य जीमूतफलस्य जालकं तज्जालकं जालकाकारं फलबहिर्भागो मृदुकर्कशं लेपितं छायाशुष्कमित्येषा वर्तिर्गुदजशातनी ।

सजालमूलजीमूतस्नेहे वा क्षारसंयुते ॥ २० ॥
गुंजासूरणकूष्मांडबीजैर्वर्तिस्तथागुणा ।

सजालमूलजीमूतेन कृतो यो स्नेहस्तस्मिन्स्नेहे क्षारसंयुते कृते सति गुंजादिबीजैः कृता वर्त्तिस्तथागुणा गुदजशातनी ।

स्नुक्क्षीरार्द्रनिशालेपस्तथा गोमूत्रकल्कितैः ॥ २१ ॥
कृकवाकुशकृत्कृष्णानिशागुंजाफलैस्तथा ।

स्नुक्क्षीरेणार्द्रीकृता निशा हरिद्रा तया लेपः स्नुक्क्षीरार्द्रनिशालेपस्तथा पूर्वगुणः । गोमूत्रेण कल्कितैः पिष्टैः कुकुटशकृदादिभिर्लेपः पूर्वगुणः ।

स्नुक्क्षीरपिष्टैः षड्ग्रंथाहलिनीवारणास्थिभिः ॥२२॥
कुलीरशृंगीविजयाकुष्टारुष्करतुत्थकैः ।
शिग्रुमूलकजैर्बीजैः पत्रैरश्वघ्ननिंबजैः ॥ २३ ॥
पीलुमूलेन बिल्वेन हिंगुना च समन्वितैः ।

स्नुक्क्षीरपिष्टैः षड्ग्रंथादिभिर्लेपो हितः । पीलुमूलेन बिल्वेन हिंगुना च युक्तैर्लेपो हितः ।

२०

Indira Gandhi National Centre for the Arts

कुष्टं शिरीषबीजानि पिप्पल्यः सैंधवं गुडः ॥ २४ ॥
अर्कक्षीरं सुधाक्षीरं त्रिफला च प्रलेपनम् ।

कुष्टादिभिः कल्पितं प्रलेपनं पूर्वगुणम् ॥

आर्कं पयःस्नुहिकांडं कटुकालांबुपल्लवाः ॥ २५ ॥
करंजो बस्तमूत्रं च लेपनं श्रेष्ठमर्शसाम् ।

अर्कक्षीरादिबस्तमूत्रांतं प्रलेपनमर्शसां श्रेष्ठं स्यात् ॥

आनुवासनिकैर्लेपः पिप्पल्याद्यैश्च पूजितः ॥ २६ ॥

आनुवासनिकैरिति । अनुवासने भवान्यानुवासनिकानि । आध्यात्मादित्वात् ठक् । तैर्द्रव्यैः पिप्पलीमदनमित्यादिभिर्वक्ष्यमाणैर्लेपोऽर्शःसु पूजितः ।

एभिरेवौषधैः कुर्यात्तैलान्यभ्यंजनानि च ।

एभिरेव पूर्वोक्तैर्लेपनद्रव्यैरभ्यंजनानि तैलानि च कुर्यात् ।

धूपनालेपनाभ्यंगैः प्रस्रवंति गुदांकुराः ॥ २७ ॥
संचितं दुष्टरुधिरं ततः संपद्यते सुखी ।

धूपनादिभिर्गुदांकुराः संचितं दुष्टं रुधिरं प्रस्रवंति । ततस्तेन स्रुतेन सुखी रुजाविरहितः संपद्यते ।

अवर्तमानमुच्छूनकठिनेभ्यो हरेदसृक् ॥ २८ ॥
अर्शोभ्यो जलजाशस्त्रसूचीकूर्चैः पुनः पुनः ।

अर्शोभ्य उच्छूनकठिनेभ्यो रुधिरमवर्तमानं जलौकःशस्त्रादिभिरसकृद्धरेत् । शीतोष्णादिरुपक्रमः कस्मादत्र न क्रियत इत्याह ।

शीतोष्णस्निग्धरूक्षाद्यैर्नव्याधिरुपशाम्यति ॥ २९ ॥
रक्ते दुष्टे भिषक् तस्माद्रक्तमेवावसेचयेत् ।

यस्माच्छीतादिभिरुपक्रमैरुपक्रांतोऽर्शोव्याधिर्न शाम्यति । रक्ते दुष्टे सति तस्माद्धेतोरक्तमेवावसेचयेन्नतुशीतादिर्योज्यः ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

यो जातो गोरसः क्षीराद्वह्निचूर्णावचूर्णितात् ॥ ३० ॥
पिबंस्तमेव तेनैव भुंजानो गुदजान् जयेत् ।

यो गोरसः क्षीराज्जात उत्पन्नः । किंभूतात् । वह्निचूर्णावचूर्णिताच्चित्रकचूर्णावकीर्णात् । तमेवगोरसं पिबन्नरस्तेनैव च गोरसेन भुंजानो गुदजान् जयेत् । बहुमूलावचूर्णितादिति क्वचित् पठंति । बहुमूला शतावरी ।

कोविदारस्य मूलानां मथितेन रजः पिबेत् ॥ ३१ ॥
अश्नन् जीर्णे च पथ्यानि मुच्यते हतनामभिः ।

कोविदारमूलचूर्णमथितेन पिबन् जीर्णे च तस्मिन् पथ्यान्यश्नन्दुर्नामभिर्मुच्यते । नश्यति तान्यस्येत्यर्थः ।

गुदश्वयथुशूलार्तो मंदाग्निर्गौल्मिकान् पिबेत् ॥ ३२ ॥
हिंग्वादीननुतक्रां वा खादेद्गुडहरीतकीम् ।
तक्रेण वा पिबेत्पथ्यावेल्लाग्निकुटजत्वचः ॥ ३३ ॥
कलिंगमगधाज्योतिः सूरणान्वांशवर्धितान् ।
कोष्णांबुना वा त्रिपटुव्योषहिंग्वाम्लवेतसम् ॥ ३४ ॥

गुदे श्वयथुशूलार्तो मंदाग्निर्नरो गौल्मिकान् गुल्मचिकित्साभवान् हिंग्वादीन् चूर्णान् पिबेत् । इहद्रवनिर्देशादनंतरं च मथितशब्दश्रवणादर्शोविकारे च हिंग्वादीन् चूर्णान् तक्रेण वा पिबेदिति योज्यं । अनुतक्रां वा तक्रानुपानात्क्षुद्रहरीतकीं भक्षयेत् । अथवा पथ्यादींस्तक्रेण पिबेत् । अथवा कलिंगादीन्वांशवर्धितान्मूलद्रव्यापेक्षया भागेन यथोत्तरं वर्धितांस्तक्रेण पिबेत् । ज्योतिश्चित्रकः । अथवोष्णजलेन त्रिपट्वादि पिबेत् ।

युक्तं बिल्वकपित्थाभ्यां महौषधबिडेन वा ।
आरुष्करैर्यवान्या वा प्रदद्यात्तक्रतर्पणम् ॥ ३५ ॥
दद्याद्वाहपुषा हिंगुचित्रकं तक्रसंयुतम् ।
मासं तक्रानुपानानि खादेत्पीलुफलानि वा ॥ ३६ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

पिबेदहरहस्तक्रं निरन्नो वा प्रकामतः ।

तक्रेण तर्पणं यवसक्तून् दद्यात् । किंभूतम् । बिल्वकपित्थाभ्यां युक्तमथवा महौषधबिडेन युक्तं भल्लातकैर्वायुक्तमथवा यवान्यावायुक्तं प्रदद्यात् । तक्रतर्पणमेव बिल्वादिभिर्यथोक्तैः सह भुंजीत । नान्यत्किंचिदिति सूचयितुं प्रशब्दोत्र न्यस्तः । अथवा हपुषादि तक्रान्वितं दद्यात् । मासं पीलुफलानि तक्रानुपानानि खादेत् । अथवा इच्छयाहरहरनन्नाशी तक्रं पिबेत् ।

अत्यर्थं मंद कायाग्नेस्तक्रमेवावचारयेत् ॥ ३७ ॥

अत्यर्थं मंदकायाग्नेर्नरस्य सायं प्रातर्वा तक्रमेवावचारयेद्दैयो भक्तन्नम् । अत एवैतत्कालोत्र निर्दिष्टः ।

सप्ताहं वा दशाहं वा मासार्धं मासमेव वा ।
बलकालविकारज्ञो भिषक् तक्रं प्रयोजयेत् ॥ ३८ ॥
सायं वा लाजसक्तूनां दद्यात्तक्रावलेहिकाम् ।
जीर्णे तक्रे प्रदद्याद्वा तक्रपेयां ससैंधवाम् ॥ ३९ ॥
तक्रानुपानं सस्नेहं तक्रौदनमतः परम् ।
यूषै रसैर्वा तक्राढ्यैः शालीन् भुंजीत मात्रया ॥ ४० ॥

सप्ताहं दशाहं मासार्धं मासं वा यावद्बलादिविद्वैद्यो मथितं योजयेत् । अथवा केवलेन तक्रेणाशितुमशक्तस्तदा सायं दिनांते लाजसक्तूनां संबंधिनीं तक्रावलेहिकां दद्यात् । अथवा तक्रे जीर्णे तक्रसिद्धां पेयां सैंधवान्वितां दद्यात् । सैंधवशब्दस्यांते श्रुतत्वादुभयोरप्यवलेहिकापेययोः सैंधवेन योगो वेद्यः । अतः परमवलेहिकापेयांतो नंतरं तक्रेण सहोदनमीषत्स्नेहं तक्रानुपानं दद्यात् । अथवा यूषै रसैर्वा तक्रभूयिष्ठैः शालीन्मात्रया भुंजीत । कार्यभक्तादौकारणत्वेनोपचाराच्छालीनभक्तत्वेन परिणता न दद्यादिति वेद्यं । सर्वत्र तक्रप्रयोगः प्रायेण पूजित इत्यत एवाह ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

रूक्षमर्धोद्धृतस्नेहं यतश्चानुद्धृत घृतम् ।
तक्रं दोषाग्निबलवित्त्रिविधं तत्प्रयोजयेत् ॥ ४१ ॥

यथायोगं कदाचिद्रूक्षं निःशेषमुद्धृतस्नेहमथवार्धोद्धृतस्नेहं कदाचिदनुद्धृतं यस्माद्धृतं कारणे नवनीते कार्योपचारादेवमुक्तम् । तदेतत्त्रिविधं तक्रं दोषादिवित्प्रयोजयेत् । एवं तक्रप्रयोगे कृते को गुण इत्याह ।

न विरोहंति गुदजाः पुनस्तक्रसमाहताः ।
निषिक्तं तद्विषं हंति भूमावपि तृणोलुपम् ॥ ४२ ॥

तक्रेण समाहता उन्मीलिता गुदजाः पुनर्न प्ररोहंति समूला नश्यंतीत्यर्थः । कथमेतदवगम्यत इत्याशंक्याह । हि यस्मात्तत्तक्रं भूमावपि निषिक्तं तृणोलुपं विशेषेण दहत्यपुनरुत्पादनात् । भूमावपीत्यपि शब्दो न केवलं शरीरबाह्यामयानपि भुवीति संदर्शनार्थः।तृणोलुपं कठिनं यद्दहति तदवश्यमर्शांसि मृदूनि मांसप्रायाणि दहत्येव ।

स्रोतस्सु तक्रशुद्धेषु रसोधातूनुपैति यः ।
तेन पुष्टिर्बलं वर्णः परं तुष्टिश्च जायते ॥ ४३ ॥
वातश्लेष्मविकाराणां शतं च विनिवर्त्तते ।

वातश्लेष्मणा आवृतेषु स्रोतस्सु तक्रेण विशुद्धेषु सत्सु यो रस आहाररसो धातून् व्युपैति संप्राप्नोति तेन रसेन प्राप्तेन पुष्ट्यादयो जायंते । तथा वातश्लेष्मविकाराणां शतं विनिवर्त्तते शाम्यति ।

मथितं भाजने क्षुद्रबृहतीफललेपिते ॥ ४४ ॥
निशां पर्युषितं पेयमिच्छद्भिर्गुदजक्षयम् ।

कंटकारिकाफललेपिते भाजने मथितं निशां स्थितं गुदजक्षयमिच्छुभिः पेयम् ।

धान्योपकुंचिकाजाजीहपुषापिप्पलीद्वयैः ॥ ४५ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

कारवीग्रंथिकशठीयवान्यग्नियवानकैः ।
चूर्णितैर्घृतपात्रस्थं नात्यम्लं तक्रमासुतम् ॥ ४६ ॥
तक्रारिष्टं पिबेज्जातं व्यक्ताम्लकटुकामतः ।
दीपनं रोचनं वर्ण्यं कफवातानुलोमनम् ॥ ४७ ॥
गुदश्वयथुकंडूर्त्तिनाशनं बलवर्धनम् ।

धान्योपकुंचिकादिभिश्चूर्णितैर्घृतपात्रस्थं नात्यम्लं तक्रमासृतं कृत्वा अनंतरं व्यक्ताम्लकटु यस्य तद्व्यक्ताम्लकटुजातं सत्तक्रारिष्टं कामतः पिबेत् । तच्च पीतं दीपनादिगुणं स्यात् । अत्र च तक्रे पलशतमात्रे धान्यकादीनि पालिकानि देयानीति वृद्धवैद्यव्यवहारः ।

त्वचं चित्रकमूलस्य पिष्ट्वा कुंभं प्रलेपयेत् ॥ ४८ ॥
तक्रं वा दधि वा तत्र जातमर्शोहरं पिबेत् ।

चित्रकमूलस्य त्वचं जलेन पिष्ट्वा कुंभं प्रलेपयेत् । तक्रं तत्र जातमथवा दधिजातमर्शोहरं पिबेत् ।

भार्ङ्ग्यास्फोतामृतापंचकोलेष्वप्येष संविधिः ॥ ४९ ॥

भार्ङ्ग्यादिष्वप्येषसंविधिरेतत्वगादिभाजनलेपनादिकं कार्यमित्यर्थः ।

पिष्टैर्गजकणापाठाकारवीपंचकोलकैः ।
तुंबर्वजाजीधनिकाबिल्वमध्यैश्च कल्पयेत् ॥ ५० ॥
फलाम्लान्यमकस्नेहान् पेयायूषरसादिकान् ।
एभिरेवौषधैः साध्यं वारिसर्पिश्च दीपनम् ॥ ५१ ॥

हस्तिपिप्पल्यादिभिः पिष्टैः कल्कितैस्तथाफलैर्बीजपूरादिभिरम्लान्यमकस्नेहांस्तथपेयादिकान् कुर्यात् । एभिरेव हि हस्तिपिप्पल्यादिभिर्वारि साध्यं श्रपणीयं सर्पिश्च साध्यं तच्च द्वयं वन्हेर्दीपनं स्यात् ।

क्रमोयं भिन्नशकृतां वक्ष्यते गाढवर्चसाम् ।

अयं पूर्वोक्तः क्रमो भिन्नशकृतां । कठिनपुरीषाणां तु वक्ष्यते भणिष्यते । तमेवाह ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

स्नेहाद्यैः सक्तुभिर्युक्तां लवणां वारुणीं पिबेत् ॥ ९२ ॥
लवणा एववा तक्रसीधुधान्याम्लवारुणीः ।

स्नेहाद्यैर्बहुस्नेहसंपृक्तैः सक्तुभिर्युक्तां लवणां वारुणीं पिबेत् । तक्रादीन्वा लवणांतं पृथक् योगं पिबेत् । एवशब्दोत्र केवलानेवैतान् सक्तुरहितान् पिबेदिति द्योतयति ।

प्राग्भक्तं यमके भृष्टान् सक्तुभिश्चावचूर्णितान् ॥ ९३ ॥
करंजपल्लवान् खादेद्वातवर्चोनुलोमनान् ।

तथा करंजपल्लवान् भक्षयेत् । किंभूतान् । प्राग्भक्तान् । मयूरव्यंसकादित्वात्समासः । करंजपल्लवान् भुक्त्वा अन्नं भोक्तव्यमित्यर्थः । किंभूतान् । यमके स्नेहद्वये भृष्टान् पक्वान् तथा सक्तुभिः [illegible]चूर्णितान् तांश्च भुक्तान् वातवर्चानुलोमनान् ।

सगुडं नागरं पाठां गुडक्षारघृतानि वा ॥ ९४ ॥
गोमूत्राध्युषिता मद्यात्सगुडां वा हरीतकीम् ।

तथा गुडेन सह शुंठीं पाठां वा अश्नीयात् । अथवा गुडयवक्षारसर्पींष्यद्यात् । गुडेन वा सहहरीतकीमद्यात् । किंभूताम् । गोमूत्र अध्युषिताम् ।

पथ्याशतद्वयान्मूत्रद्रोणेनामूत्रसंक्षयात् ॥ ९५ ॥
पक्वात् खादेत्समधुनी द्वे द्वे हंति कफोद्भवान् ।
दुर्नामकुष्टश्वयथुगुल्ममेहोदरक्रमीन् ॥ ९६ ॥
ग्रंथ्यर्बुदापचीस्थौल्यपांडुरोगाढ्यमारुतान् ।

पथ्या[illegible]नां शतद्वयं पथ्याशतद्वयम् । तस्माद्गोमूत्रद्रोणेन मूत्रसंक्षयंयावन्मूत्रक्षयावधिपक्वात् । द्वे द्वे पथ्याख्ये फले खादेत् । किंभूते । समधुनी माक्षिकयुक्ते । पथ्याशतद्वयं चोपयुक्तं कफोद्भवानामयान् दुर्नामादीन् हंति ।

अजशृंगीजटाकल्कमजामूत्रेण यः पिबेत् ॥ ९७ ॥
गुडवार्ताकभुक्तस्य नश्यंत्याशु गुदांकुराः ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

अजशृंगीमूलकल्कं यः पुरुषोऽजामूत्रेण पिबेत्। किंभूतः। गुडवार्ताकभुगेतदाहारस्तस्य पुरुषस्य द्राग्दुर्नामानि नश्यंति।

श्रेष्ठारसेन त्रिवृतां पथ्यां तक्रेण वा सह ॥ ५८ ॥
पथ्यां वा पिप्पलीयुक्तां घृतभृष्टां गुडान्विताम्।
अथवा सतृवृद्दंतीं भक्षयेदनुलोमनीम् ॥ ५९ ॥
हते गुदाश्रये दोषे गुदजा यांति संक्षयम्।

श्रेष्ठारसेन त्रिफलाक्काथेन त्रिवृतां दद्यात्। अभयां वा तक्रेण सहाद्यात्। पथ्यां वा पिप्पलीयुक्तां घृतभृष्टां गुडयुक्तां भुंजीत। अथवा पथ्यां त्रिवृद्दंतीभ्यां सहानुलोमकृतां भक्षयेत्। गुदाश्रये दोषे हते सति गुदजाः संक्षयं यांति। आश्रयाभाव आश्रितानुपपत्तेः। तस्मादनुलोमनमर्शःसु हितमित्यर्थः।

दाडिमस्वरसाजाजीयवानीगुडनागरैः ॥ ६० ॥
पाठया वा युतं तक्रं वातवर्चोनुलोमनम्।
सीधुं वा गौडमथवा सचित्रकमहौषधम् ॥ ६१ ॥
पिबेत्सुरां वा हपुषापाठासौवर्चलान्विताम्।

दाडिमादिभिर्युक्तं तक्रं पाठया वा वातवर्चोनुलोमनं स्यात्। अथवा सीधुं चित्रकशुंठीयुतं पिबेत्। गौडं वा चित्रकशुंठीयुतं पिबेत्। अथवा सुरां हपुषादियुक्तां पिबेत्।

दशादिदशकैर्वृद्धाः पिप्पलीर्द्विपिचुं तिलान् ॥ ६२ ॥
पीत्वा क्षीरेण लभते बलं देहहुताशयोः।

दशादिदशकैर्वृद्धापिप्पलीभिस्तथा तिलान् द्विपिचुं पीत्वा देहस्य वन्हेश्च बलं प्राप्नोति। दशपिप्पल्य आदिः प्रथमं दिनं येषां दशकानां त एवम्। दशादयश्च ते दशकाश्च दशादिदशकः। ते वृद्धाः प्रथमे दिने दशपिप्पलीस्तिलकर्षद्वयं च क्षीरेण पेयाः। अनंतरं प्रतिदिनं दशदशपिप्पलीः पिप्पलीवर्धमानन्यायेन वृद्धातिलकर्षद्वयेन सहक्षारेण पीत्वा देहस्या-

Indira Gandhi National Centre for the Arts

ग्नेश्च बलं लभते। अत्र कालस्यानिर्दिष्टत्वाद्देहाग्न्योर्बलमिच्छता यथेष्टकालः प्रयोगः कार्यः। क्षीरस्य चात्र प्रमाणेऽनुक्ते सामान्यपरिभाषया पेष्यस्य कर्षमालोड्यं तत्तद्द्रवस्य पलत्रयमिति परिमाणं कल्प्यम्।

दुस्पर्शकेन बिल्वेन यवान्या नागरेण वा ॥ ६३ ॥
एकैकेनापि संयुक्ता पाठा हंत्यर्शसां रुजम्।

धन्वयवासकेन बिल्वेन यवान्या शुंठ्या वा एकैकेनाप्येवं पाठायुक्ता दुर्नाम्नां रुजं हंति। एकैकेनापीत्यपिशब्दात् द्वाभ्यां त्रिभिश्चतुर्भिश्च। एकैकेनत्येकशब्दस्यैकं बहुव्रीहिवदितिद्वित्वे बहुव्रीहिवद्भावात्सुपोलुक्।

सलिलस्य वहे पक्त्वा प्रस्थार्धमभयात्वचम् ॥ ६४ ॥
प्रस्थं धात्र्या दशपलं कपित्थानां ततोर्धतः।
विशालारोध्रमरिचकृष्णाविडङ्गैलवालुकम् ॥ ६५ ॥
द्विपलांशं पृथक्पादशेषे पूते गुडात्तुले।
दत्त्वा प्रस्थं च धातक्याः स्थापयेद्घृतभाजने ॥ ६६ ॥
पक्षात्सशीलितोरिष्टः करोत्यग्निं निहंति च।
गुदजग्रहणीपांडुकुष्ठोदरगरज्वरान् ॥ ६७ ॥
श्वयथुप्लीहहृद्रोगगुल्मयक्ष्मवमीकृमीन्।

सलिलस्य वहे द्रोणचतुष्टये पक्त्वा हरीतकीत्वचं प्रस्थार्धमष्टपलान्यामलकदलानां प्रस्थं कपित्थस्य पलानि दश ततः कपित्थादर्धेन विशालां पंचपलां रोध्रादिकं द्विपलांशं पृथक् पृथगेतत्सर्वं पक्त्वा तस्मिन् पादशेषे द्रोणशेषे पूते गालिते पादशेषे पूते चास्मिन् गुडात्तुले द्वे दत्त्वा धातक्याः प्रस्थं च ततो घृतरूढे भाजने स्थापयेत्। पक्षादूर्ध्वं शीलितः सोभयारिष्टसंज्ञोऽग्निं करोति दीपयति। गुदजादींश्च हंति।

जलद्रोणे पचेद्दंती दशमूलैस्त्वराग्निकान् ॥ ६८ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

पालिकान्पादशेषे तु क्षिपेद्गुडतुलां परम् ।
पूर्ववत्सर्वमस्य स्यादानुलोमितरस्त्वयम् ॥ ६९ ॥

जलस्य द्रोणे दंत्यादीन् प्रत्येकं पालिकान् पचेत् । पादशेषे चास्मिन् गुडात्तुलां क्षिपेत् । परमन्यत्सर्वमस्य दंत्यरिष्टस्य पूर्ववदभयारिष्टतुल्यं धातकीपरिमाणं घृतभाजने स्थापनं पक्षोत्तरकालपानादि स्यात् । आनुलोमित्यादि । आनुलोमिंवातविबधनुत् अभयारिष्टः । अयं पुनस्ततोप्यानुलोमितरः ।

पचेद्दुरालभाप्रस्थं द्रोणेपां प्रासृतैः सह ।
दंतीपाठाग्निविजयावासामलकनागरैः ॥ ७० ॥
तस्मिन् सिताशतं दद्यात्पादस्थेऽन्यच्च पूर्ववत् ।
लिंपेत्कुंभं तु फलिनीकृष्णाचव्याज्यमाक्षिकैः ॥ ७१ ॥

अपां द्रोणे धन्वयासप्रस्थं दंत्यादिभिः द्विपलिकैः सह पचेत् । तस्मिन् पादस्थे क्वाथे सितायाः शतं पचेत् । अन्यद् धातकीपरिमाणादिकं पूर्ववदभयारिष्टवत्कार्यं । लिंपेदित्यादि तुविंशेषे । विशेषस्तु फलिन्यादिभिः कुंभं लिंपेद्यत्रायं निक्षिप्यते दुरालभारिष्ट इति ।

प्राग्भक्तमानुलोम्याय फलाम्लं वा पिबेद्घृतम् ।
चव्यचित्रकसिद्धं वा यवक्षारगुडान्वितम् ॥ ७२ ॥
पिप्पलीमूलसिद्धं वा सगुडक्षारनागरम् ।

प्राग्भक्तं भक्तात् पूर्वं घृतं फलैर्मातुलुंगादिभिरनुलोमनप्रायैरम्लं तैः पक्वं पिबेत् । चव्यचित्रकाभ्यां सिद्धं पक्वं यवक्षारगुडाभ्यां युक्तं घृतं पिबेत् । अथवा पिप्पलीमूलसिद्धं गुडयवक्षारनागरसहितं पिबेत् ।

पिप्पलीपिप्पलीमूलधानकादाडिमैर्घृतम् ॥ ७३ ॥
दध्ना च साधितं वातशकृन्मूत्रविबंधहृत् ।

पिप्पल्यादिभिर्दधिसहितैः साधितं घृतं वातशकृन्मूत्रविबंधजित् ।

पलाशक्षारतोयेन त्रिगुणेन पचेद्घृतम् ॥ ७४ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

वत्सकादिप्रतीवापमर्शोघ्नं दीपनं परम् ।

पलाशक्षारस्य जलेन त्रिगुणेन वत्सकादिप्रतीवापं घृतं पचेत् । तच्चाशोंघ्नं परं दीपनं च ।

पंचकोलाभयाक्षारयवानीबिडसैंधवैः ॥ ७५ ॥
सपाठाधान्यमरिचैः सबिल्वैर्दधिमुद्धृतम् ।
साधयेत् तज्जयत्याशु गुदवंक्षणवेदनाम् ॥ ७६ ॥
प्रवाहिकां गुदभ्रंशं मूत्रकृच्छ्रं परिस्रवम् ।

पंचकोलादिभिर्दधिसहितं घृतं पचेत् । तच्च गुदादिवेदनादीन् जयति ।

पाठाजमोदधनिकाश्वदंष्ट्रापंचकोलकैः ॥ ७७ ॥
सबिल्वैर्दधिचांगेरीस्वरसे च चतुर्गुणे ।
हंत्याज्यं सिद्धमानाहं मूत्रकृच्छ्रं प्रवाहिकाम् ॥ ७८ ॥
गुदभ्रंशार्तिगुदजग्रहणीगदमारुतान् ।

पाठादिभिश्चांगेरीस्वरसे दधि च चतुर्गुणे घृतं पक्वं चांगेरीघृतमेतदानाहादीन् हंति ।

शिखितित्तिरिलावानां रसानम्लान् सुसंस्कृतान् ॥ ७९ ॥
दक्षाणां वर्तकानां वा दद्याद्विड्वातसंग्रहे ।

मयूरतित्तिर्यादीनां सुसंस्कृतानम्लान् मांसरसान् विड्वातसंग्रहनिवृत्त्यर्थं दद्यात् ।

वास्तुकाग्नित्रिवृद्दंतीपाठाम्लीकादिपल्लवान् ॥ ८० ॥
अन्यच्च कफवातघ्नं शाकं च लघुभेदि च ।
सहिंगुयमके भृष्टं सिद्धं दधिरसैः सह ॥ ८१ ॥
धनिकापंचलोकोभ्यां पिष्टाभ्यां दाडिमांबुना ।
आर्द्रिकायाः किसलयैः शकलैरार्द्रकस्य च ॥ ८२ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

युक्तमंगारधूपेन हृद्येन सुरभीकृतम् ।
सजीरकं समरिचं बिडसौवर्चलोत्कटम् ॥ ८३ ॥
वातोत्तरस्य रूक्षस्य मंदाग्नेर्बद्धवर्चसः ।
कल्पयेद्रक्तशाल्यन्नव्यंजनं शाकवद्रसान् ॥ ८४ ॥
गोगोधाछगलोष्ट्राणां विशेषात्क्रव्यभोजिनाम् ।

वास्तुकादीनां शाकं तथापरमपि शाकं यत्कफवातघ्नं कोशातकादिकं लघुभेदि तच्च सहिंगु च । तथा यमके भृष्टं संतलितं । तथा दधिसरेण धनिकापंचकोलाभ्यां पिष्टाभ्यां दाडिमांबुना च सिद्धं । तथार्द्रिकाया धनिकायाः किसलयैःपल्लवैर्युक्तं तथार्द्रकस्य शकलैर्युक्तं । तथा हृद्येन मनःप्रियेणांगारधूपेनांगारैर्यो धूपो यो हिंग्वादिना प्रसिद्धस्तेन सुरभीकृतं । तथा सजीरकं समरिचं बिडसौवर्चललवणाभ्यामुत्कटमधिकं वातोत्तरस्य पवनाधिकस्य पुरुषस्य । तथा रूक्षस्य । तथा मंदाग्नेस्तथा बद्धवर्चसः कल्पयेत् । रक्तशालिः भक्तस्य व्यंजनं तेमनाख्यं शाकवत्कल्पयेच्छाकसंस्कारेण कुर्यादित्यर्थः । व्यंजनानिति पाठे पुंस्त्वं चिंत्यम् । तथा रसान् । केषां रसान् । गोगोधादीनां विशेषेण क्रव्यभोजिनां मांसभक्षिणां । तदेवमहारं निरूप्यमानं निरूपयन्नाह ।

मदिरां शार्करं गौडं सीधुं तक्रं तुषोदकम् ॥ ८५ ॥
अरिष्टं मस्तु पानीयं पानीयं चाल्पकं शृतम् ।
धान्येन धान्यशुंठीभ्यां कंटकारिकयाऽथवा ॥ ८६ ॥
अंते भक्तस्य मध्ये वा वातवर्चोनुलोमनम् ।

मदिरादिपानीयं पातव्यं । अथवा पानीयं जलमतिशयेनाल्पकं सृतं यथायोगं कदाचिद्धान्येन कदाचिद्धान्यशुंठीभ्यां कदाचित्कंटकारिकायाः शृतं कदाचिद्भक्तस्यांते कदाचिन्मध्ये योग्यतावशाद्येषां मारुतावस्थादि रूपत्वं तेषां भक्तस्य मध्येन्येषामंते मदिरादिपानं वातवर्चोनुलोमनं । तयोरप्रवर्तनोपारूढयोर्यथामार्गप्रवर्तनमित्यर्थः । वातस्यानुलोमनं च यत्तत्कफपित्तयोरप्यनुलोमनं । पवनो हि क्रियावानक्रियावतां देहगतानां भावाना-

Indira Gandhi National Centre for the Arts

मनुलोमनः संभाव्यते । तथा च प्रागभ्यधायि । विट्श्लेष्मपित्तादिमलायनानां विक्षेपसंहारकर इत्यादि । अर्शःसु चानुलोमनं कार्यमिति दर्शयितुमाह ।

विड्वातकफपित्तानामानुलोम्येहि निर्मले ॥ ८७ ॥
गुदे शाम्यंति गुदजाः पावकश्चाभिवर्धते ।

यस्माद्विड्वातादीनामनुलोम्ये सति गुदं निर्मलं भवति । गुदे च निर्मले गुदजाः शाम्यंति । पावकः कायाग्निश्चाभिवर्धते यतस्तस्मादर्शसां विड्वातकफपित्तानुलोमनं भेषजान्नपानादियत्तद्देयमिति भावः ।

उदावर्त्तपरीता ये ये चात्यर्थं विरूक्षिताः ॥ ८८ ॥
विलोमवाताः शूलार्तास्तेष्विष्टमनुवासनम् ।

ये पुरुषा उदावर्त्तयुक्ता ये चातिशयेन विरूक्षितास्तथा विगुणपवनाः शूलपीडिताश्च तेष्वनुवासनमिष्टं तंत्रकृतामिति शेषः । तदेवानुवासनमाह ।

पिप्पलीं मदनं बिल्वं शताह्वां मधुकं वचाम् ॥ ८९ ॥
कुष्टं शुंठीं पुष्कराख्यं चित्रकं देवदारु च ।
पिष्ट्वा तैलं विपक्तव्यं द्विगुणक्षीरसंयुतम् ॥ ९० ॥
अर्शसां मूढवातानां तच्छ्रेष्ठमनुवासनम् ।
गुदनिःसरणं शूलं मूत्रकृच्छ्रं प्रवाहिकाम् ॥ ९१ ॥
कट्यूरुपृष्ठदौर्बल्यमानाहं वंक्षणाश्रयम् ।
पिच्छास्रावं गुदे शोफं वातवर्चोविनिग्रहम् ॥ ९२ ॥
उत्थानं बहुशो यच्च जयेत्तच्चानुवासनात् ।

पिप्पल्यादीनि पिष्ट्वा जलेन तैलं द्विगुणक्षीरेण युतं पक्तव्यं । जलस्यात्रानुक्तस्यापि चतुर्गुणांशः प्रकल्प्यः । एवं हि द्रव्याणि सम्यग्गुक्तरसानि स्युः । तंत्रांतरे चोक्तं । स्नेहस्क्षीरमांसाद्यैः पाको यत्रेरितः क्वचित् । जलं चतुर्गुणं तत्र वीजादानार्थमावपेत् । न मुंचति रसं द्रव्यं क्षीरादिभिरुपस्कृतं । सम्यक्पाको न जायेत तस्मात्तोयं विनिक्षिपेदिति । तच्च तैलं विगुणपावनानामर्शसां श्रेष्ठं हितं । अनुवासनाच्च तत्तैलं गुदनिःसारणादीन् जयेत् ।

Indira Gandhi National
Centre for the Arts

निरूहं वा प्रयुंजीत सक्षीरं पांचमूलिकम् ॥ ९३ ॥
समूत्रस्नेहलवणं कल्कैर्युक्तं फलादिभिः ।

अथवा निरूहं पांचमूलिकं समानक्षीरं मूत्रस्नेहलवणान्वितं फलादिभिः पूर्वोक्तैः कल्कैर्युक्तं प्रयुंजीत । स च पूर्वोक्तगुणः । समानं क्षीरं यस्मिन् तत्सक्षीरं। समानस्य छंदस्येवेतियोगविभागात्सभावः। सहमूत्रस्नेहलवणैर्वर्तते समूत्रस्नेहलवणस्तं । फलादिभिः पूर्वोक्तैर्वोपसर्जनस्येति सभावः। सहशब्दश्च ईषच्छब्दार्थः। अर्शसां शुष्कार्द्रत्वे न द्वैविध्यं। तत्र शुष्कार्शसां चिकित्सितमुक्त्वाऽधुनाऽऽर्द्राणां रक्तार्शसामाह ।

अथ रक्तार्शसां वीक्ष्य मारुतस्य कफस्य वा ॥ ९४ ॥
अनुबंधं ततः स्निग्धं रूक्षं वा योजयेद्विमम् ।

रक्तार्शोऽधिकारे पित्तस्य सर्वदाव्यभिचारित्वात्कदाचिन्मारुतानुबंधः कदाचित्कफानुबंधं स्वलिंगतो वीक्ष्योपलभ्य स्निग्धं रूक्षं वा पानाद्यौषधं योजयेत् । एतच्चोभयमपि शीतं नतूष्णं पित्तस्यात्र नित्यं सन्निहितत्वात् । वातानुबंधं वीक्ष्य स्निग्धं कफानुबंधं वीक्ष्य रूक्षचिकित्सितं योज्यं। वातानुबंधकफानुबंधयोर्लक्षणमाह ।

शकृच्छावं खरं रूक्षमधो निर्याति नानिलः ॥ ९५ ॥
कट्युरुगुदशूलं च हेतुर्यदि च रूक्षणम् ।
तत्रानुबंधो वातस्य श्लेष्मणो यदि विट् श्लथा ॥ ९६ ॥
श्वेता पीता गुरुः स्निग्धा सपिच्छस्तिमितो गुदः ।
हेतुस्निग्धगुरुर्विद्याद्यथास्वं चास्रलक्षणात् ॥ ९७ ॥

शकृच्छावादिशूलपर्यंतं लक्षणं यदि स्यात् तत्रानुबंधे वातस्येत्येवं बोध्यम्। हेतुर्यदि रूक्षणं रूक्षणं च हेतुरासेवितः। शकृच्छयावादिलक्षणं चोत्पन्नं तदा वातानुबंधत्वं ज्ञेयम् । तथैव विट्श्लथादिलक्षणं स्निग्धगुरुणा सेवितेन हेतुना सहितं श्लेष्मणोनुबंधस्यानुमापकम्। अस्रस्य लक्षणाच्च सिराव्यधविध्युक्ताद्वाताच्छ्यावारुणमित्यादिकाच्च लक्षणाद्वातस्यानुबंधं विद्यात्। कफात् स्निग्धमित्यादिकाल्लक्षणात्कफस्यानुबंधं विद्यात् ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

दुष्टेऽस्रे शोधनं कार्यं लंघनं च यथा बलम् ।

दुष्टे वातादिदूषितेऽस्रे यथाबलं बलानतिक्रमेण कदाचिल्लंघनं शोधनं च कार्यं । बहुदोषस्य शोधनमितरस्य लंघनमुपवासलक्षणं कार्यं ।

यावच्च दोषैः कालुष्यं स्रुतेस्तावदुपेक्षणम् ॥ ९८ ॥

यावच्चदोषेणास्रस्य कालुष्यमनैर्मल्यं सामदोषदुष्टत्वात् तावत्स्रुतेऽकलुषत्वादस्रस्योपेक्षणं कार्यम् । तथाभूताया रक्तस्रुतेः संग्रहणाय यत्नो न कार्य इत्यर्थः ।

दोषाणां पाचनार्थं च वन्हिसंधुक्षणाय च ।
संग्रहाय च रक्तस्य परं तिक्तैरुपाचरेत् ॥ ९९ ॥

कालुष्यरहिताया रक्तस्रुतेः परमनंतरं दोषाणां सामानां पक्त्यर्थं तथा वन्हेः संधुक्षणाय तथा रक्तसंग्रहार्थं तिक्तैस्तिक्तरसाद्यैर्द्रव्यैस्तमर्शसमुपाचरेदिति सामान्योपक्रमः । अन्योपक्रमो रक्तार्शोविकारशांत्यर्थमुपदिष्टः ।

यत्तु प्रक्षीणदोषस्य रक्तं वातोल्बणस्य वा ।
स्नेहैस्तच्छोधयेद्युक्तैः पानाभ्यांजनबस्तिषु ॥ १०० ॥

यत्पुनः प्रक्षीणदोषस्य निरामयस्य रक्तं स्रवेत वाताधिकस्य वा पुरुषस्य यद्रक्तं स्रवेत तत्स्नेहैः पानादियुक्तैर्घृतैश्चिकित्सेत् ॥

यत्तु पित्तोल्बणं रक्तं घर्मकाले प्रवर्त्तते ।
स्तंभनीयं तदेकांतान्नचेद्वातकफानुगम् ॥ १०१ ॥

यत्पुनः पित्तोल्बणं रक्तं ग्रीष्मर्तौ प्रवर्तते तदेकांतेनावश्यं स्तंभनीयं नोपेक्षणीयं शीघ्रकारित्वात् । सर्वदैव घर्मर्तौ रक्तं स्तंभनीयं नेत्याह । नचेद्वातकफानुगं वातकफानुबद्धं तु लंघनादिभिरेव चिकित्सेत ।

सकफेऽस्रे पिबेत्पाक्यं शुंठीं कुटजवल्कलम् ।
किराततिक्तकं शुंठीधन्वयासं कुचंदनम् ॥ १०२ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

दार्वीत्वग्बिल्वसेव्यानि त्वचं वा दाडिमोद्भवाम् ।

कफानुगते रक्ते शुंठीकुटजवल्कलं क्वथितं पिबेत् । किराततिक्तकादिना क्वथितं पिबेत् । अथवा दाडिमत्वजां त्वचं पिबेत् ।

कुटजत्वक्फलं तार्क्ष्यं माक्षिकं घुणवल्लभाम् ॥ १०३ ॥
पिबेत्तंडुलतोयेन कल्कितं वा मयूरकम् ।

कुटजत्वचमिंद्रयवान् रसांजनादींश्च तंडुलजलेन् पिबेत् । घुणप्रिया अतिविषा । अथवा तेनैव तंडुलजलेन पिष्टमपामार्गं पिबेत् ।

तुलां दिव्यांभसि पचेदार्द्रायाः कुटजत्वचः ॥ १०४ ॥
नीरसस्त्यां त्वचि क्वाथे दद्यात्सूक्ष्मरजीकृतान् ।
समंगाफलिनीमोचरसान्मुष्टचंशकान्समान् ॥ १०५ ॥
तैश्च शक्रयवान्पूते ततो दर्वीप्रलेपनम् ।
पक्वावलेहं लीढ्वा च तं यथाग्निबलं पिबेत् ॥ १०६ ॥
पेयां मंडं पयश्छागं गव्यं वा छागदुग्धभुक् ।
लेहोयं शमयत्याशु रक्तातीसारपायुजान् ॥ १०७ ॥
बलवद्रक्तपित्तं च स्रवदूर्ध्वमधोपि वा ।

कुटजत्वचाआर्द्रायास्तुलां दिव्य आंतरिक्षे जले पचेत् । दिवि भवं दिव्यं । दिगादित्वाद्यत् । एतच्च द्रव्यं सामान्यपरिभाषापरिमाणकल्पनयैव क्वाथ्यसामान्यपरिमाणेन च क्वथितमेकत्वं प्राप्तमिति तदपवादार्थमाह । नीरसामित्यादि । तावत्पचेद्यावदेषा कुटजस्य त्वक् नीरसा स्यात् । नीरसत्वं च प्रायेणाष्टांशशेषे क्वाथे भवति । तस्यां च नीरसायां सत्यां यत्परिमाणक्वाथोवशिष्यते तस्मिन् क्वाथे श्लक्ष्णचूर्णीकृतान् समंगादीन् मुष्ट्यंशकान् पलपरिमाणान् दद्यात् । तैश्च समंगादिभिः सर्वैः समानि द्रव्याणि दद्यात् । ततोनंतरं पूतं दर्वीप्रलेपनं पक्वा लीढ्वा च तमवलेहमनंतरं यथाग्निबलं बलानुसारेण पेयादिकं पिबेत् । किंभूतः सन्

Indira Gandhi National Centre for the Arts

दुग्धभुक् दुग्धेन भोजनः। अयं लेहो रक्तातीसारं रक्तार्शांसि च शमयति रक्तपित्तं च प्रवृद्धमूर्ध्वमधो वास्रं च जयेत्।

कुटजत्वक्तुलां द्रोणे पचेदष्टांशशेषिताम् ॥ १०८ ॥
कल्कीकृत्य क्षिपेत्तत्र तार्क्ष्यशैलं कटुत्रयम्।
रोध्रद्वयं मोचरसं बलां दाडिमजां त्वचम् ॥ १०९ ॥
बिल्वकर्कटिकां मुस्तं समंगां धातकीफलम्।
पलोन्मितं दशपलं कुटजस्यैव च त्वचः ॥ ११० ॥
त्रिंशत्पलानि गुडतो घृतात्पूते च विंशतिः।
तत्पक्कं लेहतां यातं धान्ये पक्षस्थितं लिहन् ॥ १११ ॥
सर्वार्शोग्रहणीदोषश्वासकासान्नियच्छति।

वत्सकत्वक्तुलां जलद्रोणे पचेदष्टांशशेषितां यावच्च। तत्राष्टांशशेषिते क्वाथे पूते सति कल्कयित्वा तार्क्ष्यशैलादीन् पलप्रमाणान् क्षिपेत्। एवं बिल्वकर्कटिका लघूनि बिल्वफलानि। कुटजत्वचश्च दशपलानि घृतस्य पलानि विंशतिः। गुडपलानि त्रिंशत्। एतत्सर्वं लेहतां यातं पक्कं सद्धान्यराशिमध्ये मासार्धस्थितं लिहन् सर्वानर्शःप्रभृतीन् जयेत्।

रोध्रं तिलान्मोचरसं समंगां चंदनोत्पलम् ॥ ११२ ॥
पायमित्वाजदुग्धेन शालींस्तेनैव भोजयेत्।

रोध्रादीनजादुग्धेन पाययित्वाऽऽतुरं शालींस्तेनाजक्षीरेण भोजयेत्। एतच्चोपयुक्तं पूर्वगुणम्।

यष्ट्याह्वपद्मकानंतापयस्याक्षीरमोरटम् ॥ ११३ ॥
ससितामधु पातव्यं शीततोयेन तेन वा।

यष्ट्याह्वादि सशर्करामाक्षिकं शीतजलेन तेनाजपयसा वा पातव्यं। क्षीरमोरटा मधुरस्रवा।

रोध्रकट्वंगकुटजसमंगाशाल्मलीत्वचम् ॥ ११४ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

हीमकेसरयष्ट्याह्वं सेव्यं वा तंडुलांबुना ।

लोध्रादिकं तंडुलांबुना रक्तार्शस्सु पातव्यं । अथवा चंदननागकेसरमधुकोशीरं तंडुलांभसा पातव्यं । पूर्वोक्तगुणं ।

यवानींद्रयवाः पाठा बिल्वं शुंठीरसांजनम् ॥ ११५ ॥
चूर्णश्च लेहितः शूले प्रवृत्ते चातिशोणिते ।

यवान्यादीनां चूर्णो जलेन पीतो वाते शूले प्रवृत्ते चातिशयेन रक्ते हितः।

दुग्धिकाकंटकारीभ्यां सिद्धं सर्पिः प्रशस्यते ॥ ११६ ॥
अथवा धातकीलोध्रकुटजत्वक्फलोत्पलैः ।
सकेसरैर्यवक्षारदाडिमस्वरसेन वा ॥ ११७ ॥

दुग्धिकाकंटकारीभ्यां पक्वं सर्पिरस्मिन्विषये प्रशस्यतेऽथवाधातक्यादिभिःसिद्धं घृतं हितम् । यवक्षारदाडिमस्वरसेन वा सिद्धं घृतं हितम् ।

शर्करांभोजकिंजल्कसहितं सह वा तिलैः ।
अभ्यस्तं रक्तगुदजान् नवनीतं नियच्छति ॥ ११८ ॥

शर्करापद्मकेसरसहितमभ्यस्तं बहून्यहानि भुक्तं नवनीतं रक्तार्शांसि शमयति । तिलैर्वा सहाभ्यस्तं नवनीतं रक्तार्शांसि शमयति ।

छागानिनवनीताज्यक्षीरमांसानि जांगलः ।
अनम्लो वा कदम्लो वा सवास्तुकरसो रसः ॥ ११९ ॥
रक्तशालिः सरो दध्नः षष्टिकस्तरुणी सुरा ।
तरुणश्च सुरामंडः शोणितस्यौषधं परम् ॥ १२० ॥

छागसंबंधीनि नवनीतादीनि तथा जांगलरसादीनि रक्तस्य परमौषधम् । जांगलो वा रसः सहवास्तुकरसेन वर्तत इति सवास्तुकरसोऽनम्लोऽम्लरहितः कदम्ल ईषदम्लो वा । अभ्यस्तो रक्तगुदजान्नियच्छति । रक्तशालिस्तज्जो भक्त इत्यर्थः । दध्नः सरो दध्युत्तरः । षष्टिको व्रीहिः ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

तरुणसिंजातमधुरमाया सुरा मंडश्च । एतद्रक्तशाल्यादिशोणितस्य परमौषधम् ।

पेयायूषरसाद्येषु पलांडुः केवलोपि वा ।
स जयत्युल्बणं रक्तं मारुतं च प्रयोजितः ॥ १२१ ॥

पेयादिषु प्रयोजितः पलांडुः केवलो वा रक्तमत्युल्बणं वातं च जयति ।

वातोल्बणानि प्रायेण भवंत्यस्रेऽतिनिसृते ।
अर्शांसि तस्मादधिकं तज्जये यत्नमाचरेत् ॥ १२२ ॥

प्रायेण रक्तेऽतिस्रुते वाताधिकानि दुर्नामानि यतो भवंति तस्माद्धेतोस्तज्जये पवनजये यत्नं कुर्यात् ।

दृष्ट्वास्रपित्तं प्रबलमबलौ च कफानिलौ ।
शीतोपचारः कर्तव्यः सर्वथा तत्प्रशांतये ॥ १२३ ॥

रक्तपित्तं प्रवृद्धं दृष्ट्वा कफानिलावबलावुपलभ्य तत्प्रशांत्यर्थं शीतोपचारः कर्तव्यः ।

नश्येदेवं श्रमस्तस्य स्निग्धोष्णैस्तर्पयेत्ततः ।
रसैः कोष्णैश्च सर्पिर्भिरवपीडकयोजितैः ॥ १२४ ॥
सेचयेत्तं कवोष्णैश्च कामं तैलपयोघृतैः ।

यद्येवं शमो न स्यात्तदा रसैस्तर्पयेत् । रसइत्यविशेषोक्ते योज्यो मांसभवो रसः । किंभूतैः स्निग्धोष्णैः । तथा कोष्णैर्घृतैश्च पुनस्तर्पयेत् । किंभूतैः । अवपीडकैर्नरोगानुत्पादनीयोक्तेन प्रयोजितैः । तं च कवोष्णैर्यथायोगं तैलपयोघृतैः सेचयेत् ।

यवासकुशकाशानां मूलं पुष्पं च शाल्मलेः ॥ १२५ ॥
न्यग्रोधोदुंबराश्वत्थशुंगाश्च द्विपलोन्मिताः ।
त्रिप्रस्थे सलिलस्यैतत्क्षीरप्रस्थे च साधयेत् ॥ १२६ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

क्षीरशेषे कषाये च तस्मिन्पूते विमिश्रयेत् ।
कल्कीकृतं मोचरसं समंगां चंदनोत्पलम् ॥ १२७ ॥
प्रियंगुं कौटजं बीजं कमलस्य च केसरम् ।
पिच्छाबस्तिरयं सिद्धः सघृतक्षौद्रशर्करः ॥ १२८ ॥
प्रावाहिकागुदभ्रंशरक्तस्रावज्वरापहः ।

यवासादीनां मूलं शाल्मलेः पुष्पं तथा न्यग्रोधादीनां च शुंगा एतद् द्रव्यकदंबकं प्रत्येकं द्विपलप्रमाणं जलप्रस्थत्रये क्षीरप्रस्थे च पाचयेत् । क्षीरे शेषे च कषाये तस्मिन्पूते सति कल्कीकृतं मोचरसादि मिश्रयेत् । मोचरसादयोऽत्र सत्रिभागसत्रशाणकर्षमात्रा ग्राह्याः । बस्तिकल्पे कोशातकादौ निरूहे विंशतिपलप्रमाणे कार्षिकाणामेव द्रव्याणामभ्यनुज्ञानात् । अयं पिच्छाबस्तिः सिद्धो घृतमाक्षीकशर्करान्वितः प्रवाहिकादिहरः । अल्पया मात्रया निरूहो बस्तिरेव पिच्छाबस्तिरुच्यते ।

यष्ट्याव्हपुंडरीकेण तथा मोचरसादिभिः ॥ १२९ ॥
क्षीरद्विगुणितः पक्वो देयः स्नेहोऽनुवासनम् ।

मधुयष्टिकया प्रपौंडरीकेण तथा मोचरसादिभिः पूर्वोक्तैः कल्कीकृतैः क्षीरद्विगुणितः सन् स्नेहोऽनुवासनं देयः ।

मधुकोत्पलरोध्रांबुसमंगां बिल्वचंदनम् ॥ १३० ॥
चविकातिविषामुस्तं पाठा क्षारो यवाग्रजः ।
दार्वित्वग्नागरं मांसी चित्रको देवदारु च ॥ १३१ ॥
चांगेरिस्वरसे सर्पिः साधितं तैस्त्रिदोषजित् ।
अर्शोतिसारग्रहणीपांडुरोगज्वरारुचौ ॥ १३२ ॥
मूत्रकृच्छ्रे गुदभ्रंशे बस्त्यानाहे प्रवाहणे ।
पिच्छास्रावेऽर्शसां शूले देयं तत्परमौषधम् ॥ १३३ ॥

मधुकादिद्रव्यैः स्नेहचतुर्थभागप्रमाणैश्चांगेरीस्वरसे घृताच्चतुर्गुणे घृतं साधितं त्रिदोषजित् । अर्शःप्रभृतिष्वेतद् घृतं देयं यतः परमौषधम् ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

व्यत्यासान्मधुराम्लानि शीतोष्णानि च योजयेत् ।
नित्यमग्निबलापेक्षी जयत्यर्शःकृतान् गदान् ॥ १३४ ॥

व्यत्यासेन विपर्ययेण मधुराण्यम्लानि च शीतोष्णानि च नित्यमग्निबलापेक्षी योजयेत् । एवं चार्शःकृतामतिशयिनीं रुजं जयति ।

उदावर्तार्तमभ्यज्य तैलैः शीतज्वरापहैः ।
सुस्निग्धैः स्वेदयेत्पिंडैर्वर्तिमस्मै गुदे ततः ॥ १३५ ॥
अभ्यक्तां तत्करांगुष्ठसन्निभामनुलोमनीम् ।
दद्याच्छ्यामातृवृद्दंतीपिप्पलीनीलिनीफलैः ॥ १३६ ॥
विचूर्णितैर्द्विलवणैर्गुडगोमूत्रसंयुतैः ।
तद्वन्मागधिकाराठग्रहधूमैः ससर्षपैः ॥ १३७ ॥

उदावर्तेनार्तं नरं तैलैः शीतज्वरापहैस्तगरागुरुकुंकुमादिद्रव्यसाधितैरभ्यज्य सुस्निग्धैः पिंडैः स्वेदयेत् । ततः स्वेदादनंतरमस्मै उदावर्तवते गुदेऽभ्यक्तेऽभ्यक्तां वर्तिं दद्यात् । तत्करांगुष्ठसन्निभामातुरहस्तांगुष्ठसदृशीं । तथा आनुलोमकरीं दद्यात् क्षिपेत् । कैः कृतां वर्तिमित्याह । श्यामेत्यादि । श्यामादिभिः सैंधवाख्यलवणयुक्तैः सूक्ष्मरजीकृतैर्गुडगोमूत्रसंयुक्तैः कृतां वर्तिं क्षिपेत् । तथैव मागधिकामदनफलगृहधूमसर्षपैर्गुडगोमूत्रान्वितैर्वर्तिं क्षिपेत् ।

एतेषामेव वा चूर्णं गुदे नाडया विनिर्धमेत् ।

अथवैतेषां च पूर्वोक्तानां चूर्णं नाडया गुदे विनिर्धमेत् ।

तद्विघाते सुतीक्ष्णं तु बस्तिं स्निग्धं प्रपीडयेत् ॥ १३८ ॥
ऋजू कुर्याद्गुदशिरो विण्मूत्रमरुतोस्य सः ।
भूयोनुबंधे वातघ्नैर्विरेच्यः स्नेहरेचनैः ॥ १३९ ॥
अनुवास्यश्च रौक्ष्याद्धि संगो मारुतवर्चसोः ।

तद्विघाते कार्यं कर्तुमशक्ते तस्मिश्चूर्णे बस्तिं स्निग्धं स्नेहबस्तिसुतीक्ष्णं

Indira Gandhi National Centre for the Arts

दद्यात् । सोऽबस्तिरस्यातुरस्य गुदशिरोविण्मूत्रवातानुलोमयेत् । पुनरनुबंधे सति स्नेहरेचनैर्विरेचनीयश्चानुवासनीयश्च । हि यस्माद्रौक्ष्याद्धेतोर्मारुतस्य पुरीषस्य च संगो भवति ।

त्रिकटुत्रिपटुश्रेष्ठादंत्यरुष्करचित्रकम् ॥ १४० ॥
जर्जरं स्नेहमूत्राक्तमंतर्धूमं विपाचयेत् ।
शरावसंधौ मृल्लिप्ते क्षारः कल्याणकाह्वयः ॥१४१॥
स पीतः सर्पिषा युक्तो भक्ते वा स्निग्धभोजिना ।
उदावर्त्तविबंधार्शोगुल्मपांडूदरक्रमीन् ॥ १४२ ॥
मूत्रसंगाश्मरीशोफहृद्रोगग्रहणीगदान् ।
मेहप्लीहरुजानाहश्वासकासांश्च नाशयेत् ।

त्रिपट्वादिजर्जरीकृतं स्नेहमूत्राभ्यामक्तमंतर्धूमं कृत्वा विपाचयेच्छरावसंपुटे। अत एवाह । शरावसंधौ मृल्लिप्त इति । अयं च कल्याणको नाम क्षारः सर्पिषा पीतः स्नेहभोजिना वा भक्तयुक्तः सन्नुदावर्त्तादीन् नाशयेत् ।

सर्वं च कुर्याद्यत्प्रोक्तमर्शसां गाढवर्चसाम् ॥ १४३ ॥

यच्च गाढवर्चसामर्शसां प्रोक्तं तच्च सर्वं कुर्यात् ।

द्रोणेऽपां पूतिवल्कद्वितुलमथपचेत्पादशेषे च तस्मिन्
देयाशीतिर्गुडस्य प्रतनुकरजसो व्योषतोष्टौ पलानि।
एतन्मासेन जातं जनयति परमामूष्मणः पक्तिशक्तिम्
सूक्तं कृत्वानुलोम्यं प्रजयति गुदजप्लीहगुल्मोदराणि ॥१४४॥

द्वयोस्तुलयोःसमाहारो द्वितुलम्।पूतिकरंजस्य त्वचस्तुलाद्वयं पलशतद्वयं जलद्रोणे पचेत् । तस्मिंश्च पादशेषे सति गुडस्याशीतिः पलानि क्षेप्तव्यानि । त्रिकटुकस्य सूक्ष्मचूर्णस्याष्टौ पलानि देयानि । एतत्सर्वं मासेन शुक्तं जातं प्रबलमग्निं कुरुते । आनुलोम्यकृतत्वात् । गुदजादीन् जयति । स्रग्धरावृत्तम् ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

पचेत्तुलां पूतिकरंजवल्काद्द्वे मूलतश्चित्रककंटकार्योः ।
द्रोणत्रयेऽपां चरणावशेषे पूते शतं तत्र गुडस्य दद्यात् ॥१४५॥
पलिकं च सुचूर्णितं त्रिजातत्रिकटुग्रंथिकदाडिमाश्मभेदम् ।
पुरपुष्करमूलधान्यचव्यंहपुषामार्द्रकमम्लवेतसं च ॥ १४६ ॥
शीतीभूतं क्षौद्रविंशत्युपेतमार्द्रद्राक्षाबीजपूरार्धकैश्च ।
युक्तंकामंगंडिकाभिस्तथेक्षोः सर्पिःपात्रेमासमात्रेणजातम् ॥१४७
चुक्रं क्रकचमिवेद्रं दुर्नाम्नां वन्हिदीपनं परमम् ।
पांडुगरोदरगुल्मप्लीहानाहाश्मकृच्छ्रघ्नम् ॥ १४८ ॥

पूतीकरंजत्वचस्तुलां द्वे तुले चित्रककंटकारीमूलयोर्जलद्रोणत्रये पचेत् । पादशेषे च तस्मिन् पूते गुडस्य पलशतं दद्यात् । उपजातिवृत्तं । त्रिजातकादि सूक्ष्मरजीकृतं प्रत्येकं पलप्रमाणं निक्षिपेत् । एतत्सर्वं चूर्णितं श्लक्ष्णपिष्टं दद्यात् । उपछंदसिकं । एतच्च शीतीभूतं सक्षौद्रविंशत्योपेतमार्द्रद्राक्षादिभिश्चोपेतमिक्षुगंडिकाभिश्च यथेच्छं युक्तं सर्पिः पात्रे मासमात्रेण जातं चुक्रमिति वक्ष्यमाणेन संबंधः । शुक्रमिदमर्शसां क्रकचमिव करपत्रतुल्यं कर्त्तनशक्तिसामर्थ्यात् । तथापरं वन्हिदीपनं पाड्वादिघ्नं च । शालिनी वृत्तं । आर्या च ।

द्रोणं पीलुरसस्य वस्त्रगलितं न्यस्तं हविर्भाजने
युंजीत द्विपलैर्मदामधुफलाखर्जूरधात्रीफलैः ।
पाठामाद्रिदुरालभाम्लविदुलव्योषत्वगेलोल्लकैः
स्पृक्काकोललवंगवेल्लचपलामूलाग्निकैः पालिकैः ॥ १४९ ॥
गुडपलशतयोजितं निवाते निहितमिदं प्रपिबंश्च पक्षमात्रात् ।
निशमयति गुदांकुरान् सगुल्माननलबलं प्रबलं करोति चाशु ॥१५०॥

पीलुफलानां रसस्य द्रोणं वस्त्रपूतसर्पिर्भांडे न्यस्तं मदादिभिर्द्विपलमानैः पाठादिभिश्च पालिकैर्युंजीत । मदा धातकी । मधुफला द्राक्षा । माद्री रेणुका । विदुलो वेतसः । शार्दूलविक्रीडितम् । तथा गुडपलशतेन योजितं

Indira Gandhi National Centre for the Arts

निवाते धृतं पक्षमात्रादनंतरं प्रपिबन्नर इदमर्शांसि गुल्मं च शमयति । द्रागग्निबलं च प्रकृष्टं विधत्ते । पुष्पिताग्रा ।

एकैकशो दशपले दशमूलकुंभपाठाद्वयार्कघुणवल्लभकट्फलानाम् ।
दग्धे शृतेनु कलशेन जलेन पक्के पादस्थिते गुडतुलां पलपंचकं च १५१
दद्यात्प्रत्येकं व्योषचव्याभयानाम् वन्हेर्मुष्टी द्वे यवक्षारतश्च । द्वे
दर्वीमालेपन् हंति लीढो गुडोयम् गुल्मप्लीहार्शःकुष्टमेहाग्निसादान्॥

दशमूलादीनां प्रत्येकं दशपले दग्धे जलद्रोणेन शृते जले पक्के पादशेषे चास्मिन् गुडतुलां व्योषादीनां च प्रत्येकं पलपंचकं दद्यात् । चित्रकस्य पलद्वयं । यवक्षारस्य च पलद्वयं दद्यात् । दर्वीमालिप्तन्-दर्वीलेपी सन्नयंगुडो लीढो भक्षितो गुल्मादीन् पराकरोति । वसंततिलकं वैश्वदेवीयवृत्तम् ।

तोयद्रोणे चित्रकमूलतुलार्धम् साध्यं यावत्पादजलस्थमथेदम् ।
अष्टौ दत्त्वा जीर्णगुडस्य पलानि क्वाथ्यं भूयः सांद्रतया समवेतम् १५३

त्रिकटुकमिसिपथ्याकुष्टमुस्तावरांग
कृमिरिपुदहनैलाचूर्णकीर्णोवलेहः ।
जयति गुदजकुष्टप्लीहगुल्मोदराणि
प्रबलयति हुताशं शश्वदभ्यस्यमानः ॥ १५४ ॥

तोयस्य द्रोणे चित्रकमूलस्य तुलार्धं साध्यं यावदष्टांशशेषमिदं स्यात् । ततः पुराणगुडपलान्यष्टौ दत्त्वा पुनरपि क्वाथ्यं यावत्सांद्रत्वं गतं मौडयौभद्राम्लौवेदवसुचविरामः । त्रिकटुकादिचूर्णयुक्तोयं लेहो नित्यमभ्यस्यमानो दारुणकुष्ठादीनि जयति । अग्निं च प्रकृष्टं कुरुते । मालिनीवृत्तम् ।

गुडव्योषवरावेल्लतिलारुष्करचित्रकैः ।
अर्शांसि हंति गुटिका त्वग्विकारं च शीलिता ॥१५५॥

गुडादिभिर्गुलिका कृता अभ्यस्ता दुर्नामानि हंति त्वग्विकारं वा ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

मृल्लिप्तं सौरणं कंदं पक्त्वाग्नौ पुटपाकवत् ।
अद्यात्सतैललवणं दुर्नामविनिवृत्तये ॥ १५६ ॥

सौरणं कंदं मृदा लिप्तमग्नौ पुटपाकवत् पक्वं तैललवणान्वितमश्नीयाद् दुर्नामोपशमाय ।

मरिचपिप्पलिनागरचित्रकान् क्रमविवर्धितभागसमाहृतान् ।
शिखिचतुर्गुणसूरणयोजितान् कुरु गुडेन गुडान् गुदजच्छिदः ॥१५७

मरिचादीनि क्रमवर्धितभागानि . चित्रकचतुर्गुणसूरणयोजितानि गुडेन गुदांकुरच्छिदः । द्रुतविलंबितं ।

चूर्णीकृताः षोडशसूरणस्य भागास्ततोर्धेन च चित्रकस्य ।
महौषधाद्द्वौ मरिचस्य चैको गुडेन दुर्नामजयाय पिंडी १५८

सूक्ष्मरजीकृताः सूरणभागाः षोडश. चित्रकभागा अष्टौ नागरस्य द्वौ मरिचस्य चैको गुडेनैषां पिंडी कृता दुर्नामजयाय स्यात् । उपजातिवृत्तं ।

पथ्यानागरकृष्णांकरंजवेल्लाग्निभिः सितातुल्यैः ।
वडवामुखइव जरयति बहुगुर्वपि भोजनं चूर्णम् ॥१५९॥

पथ्यादिभिः सितातुल्यैश्चूर्णैर्बहुगुरु च भोजनं वडवामुख इव जरयति । आर्यायाः पूर्वार्धे यथोक्तमात्रादतो मया लक्ष्मीगीतिं विधिविदो वदंति संवीक्ष्य तदितरत्रापि ।

कलिंगलांगलीकृष्णावन्ह्यपामार्गतंडुलैः ।
भूनिंबसैंधवगुडैर्गुडा गुदजनाशनाः ॥ १६० ॥

कलिंगकादिभिर्गुडा वटिका अर्शोघ्ना ।

लवणोत्तमवन्हिकलिंगयवांश्चिरबिल्वमहापिचुमंदयुतान् ।
पिब सप्तदिनं मथितालुडितान् यदि मर्दितुमिच्छसि पायुरुहान् १६१

Indira Gandhi National
Centre for the Arts

सैंधवादीनि तक्रलोडितानि पिबयथर्शांसि जिघांससि। अथत्रोटकमश्विसकारचितं।

शुष्केषु भल्लातकमग्र्यमुक्तं भैषज्यमार्द्रेषु तु वत्सकत्वक्।
सर्वेषु सर्वर्तुषु कालशेयमर्शःसु बल्यं च मलापहं च॥१६२॥

शुष्केष्वप्यर्शःसु भल्लातकं भैषज्यं समग्र्यं प्रधानमुदितम्। आर्द्रेषु पुनरर्शःसु कुटजत्वग्भैषज्यमग्र्यं कथितम्। सर्वेष्वर्शःसु शुष्केष्वार्द्रेषु च सर्वकालं सर्वर्तुषु कालशेयं मथितमग्र्यं बल्यं बलावहं मलापहं दोषापहं च। इंद्रवज्रावृत्तम्।

भित्त्वाविबंधाननुलोमनाय यन्मारुतस्याग्निबलाय यच्च।
तदन्नपानौषधमर्शसेन सेव्यं विवर्ज्यं विपरीतमस्मात्॥१६३

विबंधानस्त्यानकफादिरूपान् भित्त्वा यदन्नपानौषधमासेवितं मारुतस्यानुलोमनाय स्ववर्त्मप्रवर्त्तनाय तथा यच्चाग्निबलायाग्निवर्धनाय संपद्यते तदेवान्नपानौषधं दुर्नाम्नवता सेव्यं। अस्माद्यथोक्ताद्विपरीतं यदन्नपानौषधं मारुतस्य विबंधकरमग्निसाधनं च तत्तेन विवर्ज्यं न सेव्यं। उपजातिवृत्तम्।

अर्शोतिसारग्रहणीविकाराः प्रायेण चान्योन्यनिदानभूताः।
सन्नेऽनले संति न संति दीप्ते रक्षेदतस्तेषु विशेषतोऽग्निम्॥१६४

अर्शोतिसारग्रहण्योऽन्योन्यनिदानभूताः परस्परं हेतुभूता बाहुल्येनानले च सन्न एते रोगा भवंति। दीप्ते त्वमी न संति। यतस्ततोऽस्मात्कारणात्तेषु विशेषेणाग्निं रक्षेदिति। इंद्रवज्रावृत्तं।

इति श्रीमदरुणदत्तविरचितायामष्टांगहृदयटीकायां सर्वांगसुंदराख्यायामर्शश्चिकित्सितं नामाष्टमोऽध्यायः॥ ८॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

नवमोऽध्यायः ।

अस्मादनंतरमतिसारचिकित्सितं प्रारभ्यते । अर्शोतिसारयोः परस्परं निदानभूतत्वेन चिकित्सासामान्यात् । अत आह ।

अथातोऽतीसारचिकित्सितं व्याख्यास्यामः ॥

अतीसारो हि भूयिष्ठं भवत्यामशयान्वयः ।
हत्वाग्निं वातजेप्यस्मात्प्राक् तस्मिंल्लंघनं हितम् ॥ १ ॥

हि यस्माद्बाहुल्येनाग्निं हत्वा मंदीकृत्यामाशयान्वयो भवत्यतीसारः । अस्मात्कारणादस्मिन्नतीसाराख्ये व्याधौ वातजेऽपि पूर्वं लंघनं हितम् । आमाशयान्वयो जन्मभूरुत्पत्तिर्यस्य स आमाशयान्वयः । अपि शब्दात्कदाचित्कफादिजे सुतरां लंघनं हितमिति द्योतयति । लंघनशब्देन चोपवास एवेह गृह्यते । शोधनादीनां लंघनानामवस्थावशादुच्यमानत्वाद्भूयिष्ठग्रहणेन क्वचिद्भयजादावतीरे व्यभिचारे नासावामाशयान्वयः । प्राग्ग्रहणेन नोत्तरकाले लंघनं हितम् । तदा हि रोगस्वभावाद्धात्वपचयोऽवश्यं भावि लंघनमपि धात्वपचयहेतुः । अतस्तत्र युक्तम् ।

शूलानाहप्रसेकार्त्तं वामयेदतिसारिणम् ।

शूलादिभिरार्त्तमतिसारिणं वामयेत्तत्र प्राग् लंघनं हितम् । वमनं चैतत्सामान्यं पित्तजातिष्वप्येवं रूपेषु चिकित्सितं बोध्यं न केवलं वातजे ।

दोषाः संनिचिता ये च विदग्धाहारमूर्छिताः ॥ २ ॥
अतिसाराय कल्प्यंते तेषूपेक्षैव भेषजम् ।
भृशोत्क्लेशप्रवृत्तेषु स्वयमेव चलात्मसु ॥ ३ ॥

ये च दोषाः सन्निचिता अतिशयेन वृद्धिं गतास्तथाविदग्धेन पक्वापक्वरूपेणाहारेण मूर्छिता एकतां प्राप्ता, अतीसाराय कल्प्यंते संपद्यंते । तेषु तथोत्क्लेशनमुत्क्लेशाख्यविकारकरणं मत्युन्मुखताबीजस्यांकुरोत्पत्तावुच्छूनावस्थैवातिशयेनोत्क्लेशो भृशोत्क्लेशस्तेन प्रवृत्तातिसारकरणं प्रतिसमुद्यता-

Indira Gandhi National Centre for the Arts

स्तेषु तथा स्वयमेव यत्नं विना चलात्मसु चलस्वभावेषु तेषु तथाभूतेषु दोषेषूपेक्षापथ्याशित्वं सम्यक् प्रवर्त्तनमेव भेषजं। नतुपाचनादिकमित्यर्थः। संग्रहणौषधं कुटजत्वगादिकं व्याधिप्रतिपक्षभूतं कस्मादत्र न प्रयुज्यते। अपि चाग्र्यसंग्रहे पठिष्यति। कुटजोतिसार इति। तस्मादत्र संग्राह्यौषधं दातुमुचितमिति यो मन्यते तं प्रत्याह।

प्रयोज्यं नतु संग्राहिपूर्वमामातिसारिणि।

संग्रहणं भेषजं पूर्वमामातिसारिणि पुरुषे न प्रयोज्यं। तु शब्दोवधारणार्थः। अत्रपूर्वग्रहणं पश्चादिषदामातिसारिणि दीयमानं युज्यत एवेति द्योतयति। सामे दोषेतिसारकारिणि प्रथममपि भेदनं चौषधं दातुं विशिष्टायामवस्थायां समानकार्यमपि कदाचिदतिसारिणो गुणाय संपद्यते नातिसारप्रतिपक्षभूतमपि च संग्रहणमौषधमितिकृत्वा।

अपि चाध्मानगुरुता शूलस्तैमित्यकारिणि॥ ४॥
प्राणदा प्राणदा दोषे विबद्धे संप्रवर्तिनी॥

विबद्धेऽल्पाल्पं कृत्वा प्रवर्तमाने दोषेऽत एव विबंधत्वादाध्मानादिकारिणि तथा भूतेस्मिन्दोषे संग्रहणमपथ्यमपि प्राणदा हरीतकी। प्राणान् ददातीति प्राणदा भवतीति। एवं बहुदोषाणामातिसारिणां प्रायेणैष उपक्रमो बोध्यः। मध्यदोषाल्पदोषयोस्त्वाह।

पिबेत्प्रक्वथितास्तोये मध्यदोषो विशोषयन्॥ ५॥
भूतीकपिप्पलीशुंठीवचाधान्यहरीतकीः।
अथवा बिल्वधनिकामुस्तानागरवालकम्॥ ६॥
बिडपाठावचापथ्याकृमिजिन्नागराणि वा।
शुंठीघनवचामाद्रीबिल्ववत्सकहिंगु वा॥ ७॥

मध्यदोषोऽतिसारी भूतिकादीन् पिबेत्। किंभूतांस्तांस्तोये प्रक्वथितान्। ननु क्वथिता इत्येतावदेवास्तु किं प्रशब्देन। ब्रूमः। प्रकर्षेण क्वथिताः प्रमथ्यारूपेण शृताः प्रक्वथिता इत्यस्यार्थस्य प्रतिपादनार्थं प्रशब्दोऽकारि। प्रम-

Indira Gandhi National Centre for the Arts

थ्यायाश्च तंत्रांतरे लक्षणमुक्तं । यथा । शृतः कषायो निर्यूहः क्वाथो यूषो कृतश्च सः । कृतयूषः प्रमथ्या च द्रव्यात्कल्कीकृताच्छृत इति । तदेवं द्रव्यं कल्कीकृत्य पिष्ट्वा यत्क्रियते स कृतयूषो भण्यते । स एव च प्रमथ्या शब्दवाच्यः । तस्मान्मध्यदोषोसारी भूतिकादीनि पिष्ट्वा प्रकर्षेण क्वाथयित्वा प्रमथ्यारूपेण पिबेदित्यवतिष्ठते । मुनिनाप्युक्तं । प्रमथ्यामध्यदोषेभ्यो दद्याद्दीपनपाचनमिति । किं कुर्वन् पिबेत् । विशोषस्न् लंघयन् । प्रकृतत्वादात्मानमेव । अथवा बिल्वधातक्यादीनि पिबेत् । अथवा बिडादीनि शुंठ्यादीनि वा पिबेत् ।

शस्यते त्वल्पदोषाणामुपवासोतिसारिणाम् ।

अल्पं दोषाणामतिसारिणामुपवासः शस्यते । तु शब्दोवधारणार्थः । अत्रोपवास एवाल्पदोषाणां शस्यते न बहुदोषमध्यदोषाणां ऽपर उपक्रमः सन् तथा तेषां शस्यत इति । सर्वमतिसारिणं दोषदेशाद्यनुरोधेन कदाचिल्लंघयेत् ।

वचाप्रतिविषाभ्यां वा मुस्तापर्पटकेन वा ॥ ८ ॥
ह्रीबेरनागराभ्यां वा विपक्कं पाययेज्जलम् ।

तृषि संजातायां दोषदेशाद्यनुरोधेन कदाचिद्वचाप्रतिविषाभ्यां विपक्कं जलं पाययेत्कदाचिन्मुस्तापर्पटकेन कदाचिद्वालकनागराभ्यां पाययेदिति । अत्र कर्त्रभिप्रायेक्रियेतिपरस्मैपदमन्यथानापादस्याद्येत्यादिना परस्मैपदनिषेधः स्यात् ।

युक्तेन्नकाले क्षुत्क्षामं लब्वन्नं प्रतिभोजयेत् ॥ ९ ॥
तथा स शीघ्रं प्राप्नोति रुचिमग्निबलं बलम् ।

युक्तेऽन्नकाले क्षुत्क्षाममतिसारिणं लघ्वन्नं प्रतिभोजयेत् । तथा शीघ्रं प्राप्नोति रुचिमग्निबलं बलं । नापरङ्गाध्यात्तमिव लंघनोचितं सम्यग्लंघनादनंतरमेव भोजयेत् । अपि तु सम्यग्लंघितलक्षणोत्पन्नमप्यतिसारिणं किंचित्कालप्रतीक्षणं कृत्वा भोजयेदिति क्षामशब्देन द्योतयति । अल्प

Indira Gandhi National Centre for the Arts

लध्वन्नं लध्वन्नं प्रतिसुप्रतिनामात्रार्थे इतिसमासोऽव्ययीभावः । एवं क्रियमाणः सोतिसारी द्रागेव रुचिं प्राप्नोति तथा वन्हिबलं देहबलं । एवं च भुंजानस्य पानमुपदिश्यते ।

तक्रेणावंतिसोमेन यवाग्वा तर्पणेन वा ॥ १० ॥
सुरया मधुना चाथ यथा सात्म्यमुपाचरेत् ।

कदाचित्तक्रेण कदाचित्कांजिकेन कदाचिद्येयया कदाचित्तर्पणेन कदाचित्सुरया कदाचिन्माद्वींकेणेति यथा सात्म्यमुपाचरेत् ।

भोज्यानि कल्पयेदूर्ध्वं ग्राहिदीपनपाचनैः ॥ ११ ॥
बालबिल्वशठीधान्याहिंगुवृक्षाम्लदाडिमैः ।
पलाशहपुषाजाजीयवानिविडसैंधवैः ॥ १२ ॥
लशुना पंचमूलेन पंचकोलेन पाठया ।

अस्मात्क्रमादूर्ध्वमनंतरं भोज्यानि भोक्तव्यानि कल्पयेदतिसारिणे । ग्राहिदीपनपाचनैरेव संग्रहणानि दीपनानि पाचनानि च यानि द्रव्याणि तानि सर्वाण्यतिसारिणे पथ्यानीति ।एवं संक्षेपेण सामान्येन चिकित्सितमुक्तं। तदेव दिङ्मात्रं दर्शयति । बालेत्यादि बालबिल्वादिभिर्भोज्यानि कल्पयेत्।

शालिपर्णीबलाबिल्वैः पृष्टिपर्ण्या च साधिता ॥ १३ ॥
दाडिमाम्ला हिता पेया कफपित्ते समुल्बणे ।
अभयापिप्पलीमूलबिल्वैर्वातानुलोमनी ॥ १४ ॥

शालिपर्ण्यादिभिः साधिता दाडिमाम्ला पेया कफपित्ताधिके हिता । अभयादिभिः पेया वातानुलोमनी ।

विबद्धं दोषबहुलो दीप्ताग्निर्योऽतिसार्यते ।
कृष्णाविडंगात्रिफलाकषायैस्तं विरेचयेत् ॥ १५ ॥
पेयां युंज्याद्विरिक्तस्य वातघ्नैर्दीपनैः कृताम् ।

यो बहुदोषो विबद्धमल्पाल्पं कृत्वा अतिसार्यते । स कृष्णादिकषाये-

Indira Gandhi National Centre for the Arts

विरेचयेत्। विरक्तस्य च तस्य सतः पेयां वातघ्नैर्दीपनैश्च द्रव्यैः कृतां युंज्यात्।

आमे परिणते यस्तु दीप्तेऽग्नावुपवेश्यते ॥ १६ ॥
सफेनपिच्छं सरुजं सविबंधं पुनः पुनः।
अल्पाल्पमल्पं शमलं निर्विड्वा सप्रवाहिकम् ॥ १७ ॥
दधितैलघृतक्षीरैः सशुंठीं सगुडां पिबेत्।
स्विन्नानि गुडतैलेन भक्षयेद्बदराणि वा ॥ १८ ॥
गाढविड्विहितैः शाकैर्बहुस्नेहैस्तथा रसैः।
क्षुधितं भोजयेदेनं दधिदाडिमसाधितैः ॥ १९ ॥
शाल्योदनं तिलैर्माषैर्मुद्गैर्वा साधु साधितम्।
शठ्यामूलकपोतायाः पाठायाः स्वास्तिकस्य वा॥२०॥
सुषायवानीकर्कारुक्षीरिणीचिर्भटस्य वा।
उपोदकाया जीवंत्या वाकुच्या वास्तुकस्य वा ॥२१॥
सुवर्चलायाश्चुंचोर्वा लोणिकाया रसैरपि।
कूर्मवर्तकलोपाकशिखितित्तिरिकौकुटैः ॥ २२ ॥

योतिसार्यामे परिणते दीप्तेऽग्नौ सत्युपवेश्यते स फेन पिच्छं तथा सरुजं तथा सविबंधं पुनः पुनस्तथा अल्पमल्पं तथाल्पपुरीषं निर्विड्वापुरीषरहितम्। तथा सप्रवाहिकं निस्तारिकासहितं श्रुते रक्ते पुरीषे च वायुना विड्वर्जितं प्राहिकेति विख्यातं यत् फेनाभं प्रवर्त्तत इति प्रवाहिकालक्षणम्। य एवंविधोतिसारी स दधितैलघृतक्षीरैः समुदितैः शुंठीं सगुडां पिबेत्। अथवा स्विन्नानि बदराणि गुडतैलेनाश्नीयात्। एवं दोषाद्विवशाच्छुंठीं पाययित्वा कदाचित् पूर्वोक्तानि बदराणि भक्षयित्वानंतरं क्षुधितमतिसंजातबुभुक्षमेनमतिसारिणं गाढविड्विहितैर्वास्तुकादिभिः शाकैस्तथामांसरसैर्बहुस्नेहैर्दधिदाडिमसंस्कृतैः शाल्योदनं भोजयेत्। अथवा तिलैर्माषैर्मुद्गैर्वा साधु शोभनं कृत्वा साधितं शाल्योदनं भोजयेत्। मूलकपोता लघुमूलं

तोतिकासंज्ञं देशांतरे प्रसिद्धं कुरुक्षेत्रादौ देशे। अत्र भाव्यं कियदित्युक्तम्।

बिल्वमुस्ताक्षिभैषज्यधातकीपुष्पनागरैः ।
पक्वातिसारजित्तक्रे यवागूर्दाधिकी तथा ॥ २३ ॥
कपित्थकच्छुराफंजीयूथिकावटशैलुजैः ।
दाडिमीशणकार्पासीशाल्मलीमोचपल्लवैः ॥ २४ ॥

बिल्वादिभिस्तक्रे सिद्धा यवागूः पक्वातिसारजित् । दाधिकी कपित्थादिजैः पल्लवैर्दाडिमादीनां पल्लवैर्दाधिकी यवागूस्तथा पक्वातिसारजित् ।

कल्को बिल्वशलाटूनां तिलकल्कश्च तत्समः ।
दध्नः सरोम्लः सस्नेहः खलो हंति प्रवाहिकाम् ॥ २५ ॥

तथा बिल्वः शलाटूनां स्तोककालजातानां लघुनां बिल्वानां कल्कस्तथा तिलकल्कस्तत्समो बिल्वशलाटुसमस्तथा दध्नः सरोम्लो न मधुरः सस्नेहो देशाद्यनुरोधाद् घृतादिना स्नेहेन यथायथं युक्तोयं खलः सिद्धः प्रवाहिकां हंति ।

मरिचं धनिकाजाजीतित्तिडीकशटीबिडम् ।
दाडिमं धातकीपाठात्रिफलापंचकोलकम् ॥ २६ ॥
यावशूकं कपित्थाम्रजंबुमध्यं सदीप्यकम् ।
पिष्टैः षड्गुणबिल्वैस्तैर्दध्निमुद्गरसे गुडे ॥ २७ ॥
स्नेहे च यमके सिद्धः खलोयमपराजितः ।
दीपनः पाचनो ग्राही रुच्यो बिंबिशिनाशनः ॥ २८ ॥

मरिचादिभिः पिष्टैः षड्गुणं बिल्वं बिल्वमज्जा येषां मरिचादीनां तैः सिद्धः।तैथा रसपक्वैश्च दध्नि तथा मुद्गरसे गुडे तथा यमके च स्नेहे खलोयमपराजितो नामदीपनादिगुणः। बिंबिशिनाशनः प्रवाहिकाघ्नः ।

कोलानां बालबिल्वानां कल्कैः शालियवस्य च ।
मुद्गमाषतिलानां च धान्ययूषं प्रकल्पयेत् ॥ २९ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

ऐकध्यं यमके भृष्टं दधिदाडिमसारिकम् ।
वर्चःक्षये शुष्कमुखं शाल्यन्नं तेन भोजयेत् ॥ ३० ॥
दध्नः सरं वा यमके भृष्टं सगुडनागरम् ।
सुरां वा यमके भृष्टां व्यंजनार्थं प्रयोजयेत् ॥ ३१ ॥
फलाम्लं यमके भृष्टं यूषं गृंजनकस्य वा ।
भृष्टान्वा यमके सक्तून् खादेद्व्योषावचूर्णितान् ॥ ३२ ॥
माषान् सुस्विन्नांस्तद्वद्वा घृतमंडोपसेवनान् ।
रसं सुसिद्धं पूतं वा छागमेषांतराधिजम् ॥ ३३ ॥
पचेद्दाडिमसाराम्लं सधान्यस्नेहनागरम् ।
रक्तशाल्योदनं तेन भुंजानः प्रपिबंश्च तम् ॥ ३४ ॥
वर्चःक्षयकृतैराशु विकारैः परिमुच्यते ।

कोलादीनां कल्कैः शालेर्यवस्य च कल्कैर्मुद्गादीनां च कल्कैरैकध्यं व्यतिमिश्रं धान्ययूषं प्रकल्पयेत् । किं भूतं । यमके भृष्टं तथा दधिदाडिमसारिकं । अम्लं दाडिमसारं दाडिमसारो विद्यते यस्मिन्निति दधिदाडिमसारकम् । वर्चःक्षये पुरीषक्षये सति शुष्कमुखं मुखशोषोपद्रवान्वितमतिसारिणं तेन यूषेण शाल्यन्नं भोजयेत् । शालिग्रहणेन रक्तशाल्यादीनां ग्रहणम् । अथवा दध्नः सरं यमके पक्कं गुडनागरसहितं व्यंजनार्थं प्रकल्पयेत् । अथवा यमके भृष्टां सुरां व्यंजनार्थं प्रकल्पयेत् । अथवा गृंजनकस्य हरीतकविशेषस्य यूषं फलैर्दाडिमादिभिरम्लैरम्लमम्लीकृतं व्यंजनार्थं प्रकल्पयेत् । यमके स्नेहद्वये वा सक्तून् भृष्टान् व्योषावचूर्णितान् भक्षयेत् । तथैव माषान् सुस्विन्नान् घृतमंडोपसेवनान् खादेत् । अथवा छागमेषयोरंतराधिजं रसं सुसिद्धपूतं शोभनं कृत्वा पूर्वं सिद्धं पश्चात्पूतं निर्मलीकृतं तथा दाडिमसारेणाम्लं धान्यकस्नेहं शुंठीयुतं व्यंजनार्थं पचेत् । तेन रसेन रक्तशाल्यन्नं भुंजानस्तमेव मांसरसं पिबन् वर्चःक्षयकृतैर्विकारैः पुरीषे वायुरंत्राणीत्यादिभिः सूत्रस्थानोदितैर्मुच्यते । प्रवाहिका वर्चःक्षये सति स्यात् । तस्मात्तयापि मुच्यते ।

बालबिल्वं गुडं तैलं पिप्पलीविश्वभेषजम् ॥ ३५ ॥
लिह्याद्वाते प्रतिहते सशूलः सप्रवाहिकः ।

वाते प्रतिहते प्रवाहिकाशूलवान् बालबिल्वादिकं लिह्यात् ।

वल्कलं शाबरं पुष्पं धातुक्या बदरीदलम् ॥ ३६ ॥
पिबेद्दधिसरक्षौद्रकपित्थस्वरसाप्लुतम् ।

रोध्रत्वक्धातुकीपुष्पं बदरीपत्रमेतद्दधिसरादिभिराप्लुतमालोडितं पिबेत्।

विबद्धवातवर्चास्तु बहुशूलप्रवाहिकः ॥ ३७ ॥
सरक्तपिच्छस्तृष्णार्तः क्षीरसौहित्यमर्हति ।
यमकस्योपरि क्षीरं धारोष्णं वा प्रयोजयेत् ॥ ३८ ॥
शृतमेरंडमूलेन बालबिल्वेन वा पुनः ।

विबद्धे वातवर्चसी यस्य तथा प्रभूते शूलप्रवाहिके यस्य तथा सहरक्तेन पिच्छया च यो वर्तते तथा तृष्णाया आर्त एवंविधो नरः क्षीरसौहित्यं दुग्धतृप्तिमर्हति । अथवा यमकं पीत्वाऽनु धारोष्णं क्षीरं प्रयोजयेत् । एरंडमूलेन वा बालबिल्वेन वा शृतं क्षीरं प्रयोजयेत् ।

पयस्युत्क्वाथ्य मुस्तानां विंशतिस्त्रिगुणेंभसि ॥ ३९ ॥
क्षीरावशिष्टं तत्पीतं हन्यादामं सवेदनम् ।

क्षीरे त्रिगुणेंभसि मुस्ताविंशतिं प्रक्वाथ्य क्षीरावशिष्टं पीतमामं सरुजं हन्यात् । अत्र च विंशतिभिर्मुस्तैः प्रायेण पलं भवति । सामान्यकल्पनया च मुस्तापलं षोडशभिर्द्रवपलैरुत्क्वाथ्य चत्वारिपलानि चतुर्भागावशेषितया कार्याणि । तदेवं क्षीरपलानि चत्वारि पानीयपलानि द्वादश । मुस्ताविंशति दत्त्वा क्षीरावशिष्टपेयमित्ययमत्र क्रमो वेद्यः ।

पिप्पल्या पिबतः सूक्ष्मं रजोमरिचजन्म वा ॥ ४० ॥
चिरकालानुषक्तापि नश्यत्याशु प्रवाहिका ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

पिप्पल्याः सूक्ष्मं चूर्णं जलेन पिबतो मरिचस्य वा सूक्ष्मं चूर्णं जलेन पिबतो बहुकालानुषक्तापि प्रवाहिका नश्यति।

निरामरूपं शूलार्त्तं लंघनाद्यैश्च कर्षितम् ॥ ४१ ॥
रूक्षकोष्ठमपेक्ष्याग्निं सक्षारं पाययेद् घृतम्।

निरामरूप तथा शूलेन पीडितं लंघनाद्यैः कर्षितं तथा रूक्षकोष्ठं व-न्हिमपेक्ष्य क्षारसहितं घृतं पाययेत्।

सिद्धं दधिसुरामंडे दशमूलस्य चांभसि ॥ ४२ ॥
सिंधूत्थं पंचकोलाभ्यां तैलं सद्योर्त्तिनाशनम्।

दधिसुरामंडे दशमूलक्वाथे वा सैंधव पंचकोलकल्केन तैलं सिद्धं स-द्योरुजापहं।

षड्भिः शुंठ्याः पलैर्द्वाभ्यां द्वाभ्यां ग्रंथ्यग्निसैंधवात्॥४३
तैलप्रस्थं पचेद्दध्ना निःसारकरुजापहम्।

शुंठ्याः पलैः षड्भिः पिप्पलीमूलपलद्वयेन चित्रकपलद्वयेन सैंधवपल-द्वयेन च तैलप्रस्थं दध्ना पचेन्निःसारकरुजापहम्।

एकतो मांसदुग्धाज्यं पुरीषग्रहशूलजित् ॥ ४४ ॥
पानानुवासनाभ्यंगप्रयुक्तं तैलमेकतः।
तद्धि वातजितामग्र्यं शूलं च विगुणोनिलः ॥ ४५ ॥

एकत एकस्मिन् पुरीषग्रहशूलजित्वपक्षे मांसदुग्धाज्यं त्रयमेतत्प्रयुक्तम्। पुरीषग्रहशूलजित्। एकत एकस्मिन् शूलजित्वपक्षे पानानुवासनाभ्यंगैः प्रयुक्तंतैलं पुरीषग्रहशूलजित् संपद्यत इति वाक्यशेषः। कथमेवमित्याह। तदित्यादि। तत्तैलं यस्मात्सर्वेषां वातजितामग्र्यं प्रधानं। शूलं च विगुणोनिलः प्रकुपितः पवनो नापरः कश्चित्। शूलानिलयोः कार्यकारणभावातिरेके सत्यपि शूलस्य वातकार्यस्य वातप्रकोपे सत्यविनाभावित्वं सूचयितुं

Indira Gandhi National Centre for the Arts

शूलं च विगुणोनिल इत्येवमुक्तम् । कुपितश्चेद्वायुरुत्पन्नमेव शूलमित्यर्थः । वायोर्वैगुण्ये कोपधातुक्षय एवात्र हेतुरत एवाह ।

धात्वंतरोपमर्दाद्धि चलो व्यापी स्वधामगः ।
तैलं मंदानलस्यापि युक्त्या शर्मकरं परम् ।
वाय्वाशये सुतैले हि विबिसी नावतिष्ठते ॥ ४६ ॥

वायुमपेक्ष्यान्ये पित्तश्लेष्मादयो धात्वंतरास्तेषामुपमर्दोन्यभावस्तेन उद्धतश्चलो वाय्वाख्यः सव्यापी सकलशरीरव्यापनशीलोपि स्वधामगः पक्वाशयस्थस्तत्राधिक्येन तस्य वृत्तेः । अस्यामवस्थायामस्यातिसारिणस्तैलं मंदानलस्यापि युक्त्या योगविशेषेण परमतिशयेन शर्मकरं रोगस्य दुःखहेतोः शमनात् । अपिशब्दात्किमुदीप्ताग्नेरतिसारिणो न सुखकरं भवति । तत्रैव हेतुमाह । वाय्वाशये पक्वाशयाख्ये सतैले विबिसी प्रवाहिका नावतिष्ठते न स्थितिं प्राप्नोति ।

क्षीणे मले स्वायतनच्युतेषु दोषांतरेष्वीरण एकवीरे ।
कोनिष्टनन्प्राणितिकोष्टशूली नांतर्बहिस्तैलपरो यदि स्यात्॥४७॥

मले पुरीषाख्ये क्षीणे तथा दोषांतरेषु वातविवर्जितेषु पित्तकफादिष्वायतनच्युतेषु स्वाधारभ्रष्टेषु । व्यक्त्यपेक्षया बहुवचनं । ईरणे वायावेकवीरणे एकनायके शेषाणां स्वस्थानभ्रष्टत्वात्कोतिसारी निष्टनन्प्रवाहिकां कुर्वन् प्राणिति न कश्चिज्जीवति । यदि नांतर्बहिरुभयत्र पानानुवासनाभ्यंगैस्तैलपरोतिशयेन तैलसेवी न स्यात् । आक्रंदनपूर्वं सशूलमुपवेशनं निष्टननमुच्यते । इंद्रवज्रा वृत्तं ।

गुदरुक्भ्रंशयोर्युंज्यात्सक्षीरं साधितं हविः ।
रसे कोलाम्लचांगेर्योर्दधि पिष्टे च नागरे ॥ ४८ ॥

गुदरुजि गुदभ्रंशे च घृतं सक्षीरं कोलादिरसे दधि नागरे च कल्कितैः पक्वं युंज्यात् । अत्र च क्षीरं सर्पिः प्रमाणं घृतात्कोलादि रसादिकचतुर्गुणं शुंठीतश्चतुर्गुणं घृतमिति पाकक्रमः ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

तैरेव चाम्लैः संयोज्य सिद्धं सुश्लक्ष्णकल्कितैः ।
धान्योषणबिडाजाजीपांचकोलकदाडिमैः ॥ ४९ ॥

तैरेव पूर्वोक्तैः कोलादिभिरम्लैः संयोज्य सूक्ष्मरजीकृतैश्च धान्यकादिभिः सिद्धं घृतं पूर्वगुणं ।

योजयेत्स्नेहबस्तिं वा दशमूलेन साधितम् ।
शठीशताव्हाकुष्ठैर्वा वचया चित्रकेण वा ॥ ५० ॥

गुदशूली च दशमूलेन साधितं हविर्घृतं स्नेहबस्तिं च योजयेत् । शठ्यादिभिर्वा मूलेन साधितं चित्रकेण वा साधितं स्नेहं योजयेत् तच्च पूर्वगुणं ।

प्रवाहणे गुदभ्रंशे मूत्राघाते कटिग्रहे ।
मधुराम्लैः शृतं तैलं घृतं वाप्यनुवासनम् ॥ ५१ ॥

प्रवाहणादिषु मधुराम्लैः शृतं तैलं घृतं वा अनुवासनं योजयेत् ।

प्रवेशयेद्गुदं ध्वस्तमभ्यक्तं स्वेदितं मृदु ।
कुर्याच्च गोःफणाबंधं मध्यच्छिद्रेण चर्मणा ॥ ५२ ॥

गुदं ध्वस्तं सदभ्यक्तं स्वेदितं च मृदुकृत्वांतः प्रवेशयेत् । गोःफणाबंधं चर्मण्य मध्यच्छिद्रवता कुर्यात् ।

पंचमूलस्य महतः क्वाथं क्षीरे विपाचयेत् ।
उंदुरुं चांत्ररहितं तेन वातघ्नकल्कवत् ॥ ५३ ॥
तैलं पचेद्गुदभ्रंशं पानाभ्यंगेन तज्जयेत् ।

महतः पंचमूलस्य बिल्वादेः क्वाथं तैलसमं कृत्वा क्षीरे विपाचयेत् । उंदुरुं चांत्ररहितं तस्मिन्नेव क्षीरे विपाचयेत् । तेनैव क्षीरेण तैलं पचेत् । किंभूतं वातघ्नकल्कवत् । वातघ्नानां रास्नैरंडादीनां कल्कः स यस्यास्ति वातघ्नकल्कवत् । उंदरोरत्र रास्नादिघृतानुसारेण प्रमाणं निरूप्य कार्यं । तत्रैव संपद्यते । तुल्यार्धमाजमांसस्येति । एवं मायूरादिष्वपि घृतेषु मयूरादीनां

Indira Gandhi National Centre for the Arts

प्रमाणं चिंत्यं तेन तैलं पचेदिति वचनाच्च क्षीरं तैलाच्चतुर्गुणं कार्यं । अत्र द्रवस्यापरस्याभावात्तैलाच्च द्रवं चतुर्गुणं कार्यमिति पाकक्रमः। तस्मान्नान्यस्नेहवदत्र क्षीरं ग्राह्यं। अन्यत्र ह्येवमधीतं । द्रव्याच्चतुर्गुणः स्नेहः स्नेहात्क्वाथश्चतुर्गुणः क्षीरं स्नेहसममिति । बहुक्षीरत्वेन वातकार्यस्य गुदभ्रंशाख्यस्य शीघ्रं शमं करोति । चतुर्गुणमेवात्र क्षीरं न्याय्यं।

पैत्ते तु सामे तीक्ष्णोष्णवर्जं प्रागिव लंघनम् ॥ ९४ ॥

पैत्ते त्वतीसारे सामे प्रागिव यथा वातातिसारे पूर्वं लंघनं शरीरलाघवं कर्तुं यत्कर्म द्रव्यं वा निर्दिष्टं तत्सर्वं तीक्ष्णोष्णवर्ज्यं यल्लंघनं शरीरलाघवकरं पेयादिकमस्मिन् कार्यमिति शेषः ।

तृड्वान् पिबेत् षडंगांबु सभूनिंबं ससारिवम् ।
पेयादि क्षुधितस्यान्नमग्निसंधुक्षणं हितम् ॥ ९५ ॥
बृहत्यादिगणाभीरुद्विबलाशूर्पपर्णिभिः ।

सपित्तातिसारी तृड्वान् षडंगांबु ज्वराचिकित्सितोक्तं भूनिंबसारिवाभ्यां सहितं पिबेदर्धमष्टांगजलं तेन पेयमित्येवं तिष्ठते । क्षुधितस्यातिशयेन बुभुक्षितस्य पेयाद्यन्नमग्निसंधुक्षणं हितम् । बृहत्यादिना गणेनाभीरुणा तथा बलाद्वयेन शूर्पपर्णीद्वयेन च साधितम् ।

पाययेदनुबंधे तु सक्षौद्रं तंडुलांभसा ॥ ९६ ॥
पाठा वत्सकबीजत्वग्दार्वी ग्रंथिकशुंठि वा ।
वत्सकस्य फलं पिष्टं सवल्कं सघुणप्रियम् ॥ ९७ ॥
क्वाथं चातिविषाबिल्ववत्सकोदीच्यमुस्तजम् ।
अथवातिविषामूर्वानिशेंद्रयवताक्ष्यर्जम् ॥ ९८ ॥
समध्वतिविषाशुंठीमुस्तेंद्रयवकट्फलम् ।

एवं लंघनपेयादिके कृतेप्यनुबंधेऽतिसारस्य सति तमतिसारिणं कुटजस्य फलं शक्रयवाख्यं पिष्टं सकल्कं मकृतत्वात्तस्यैव कटुजस्य त्वचायुक्तं तथा सघुणप्रियं तथा सक्षौद्रं तंडुलांभसा पाययेत् । अथवा पाठादिपिष्टं

Indira Gandhi National Centre for the Arts

तंडुलांभसा सक्षौद्रं तमतीसारिणं पाययेत् । अथवा काथमतिविषादिजं तं पाययेत् । अथवा अतिविषा मूर्वादिजं पाययेत् । तार्क्ष्यं रसांजनं । समङ्गेत्यादि । समाक्षिकमतिविषादिकं क्राथीकृतं वा पाययेत् ।

पलं वत्सकबीजस्य श्रपयित्वा रसं पिबेत् ॥ ५९ ॥
यो रसाशी जयेच्छीघ्रं सपैत्तं जठरामयम् ।
मुस्ताकषायमेवं वा पिबेन्मधुसमायुतम् ॥ ६० ॥
सक्षौद्रं शाल्मलीवृंतकषायं वा हिमाह्वयम् ।

वत्सकबीजस्य वा पलं जलेन क्राथयित्वा तद्रसं यो मांसरसाशी सन् पिबेत् स पित्तजमतिसारं जयेत् । एवं प्राग्वन्मुस्ताकषायं मुस्तानां पलं श्रपयित्वा मधुसमायुतं रसं शीतं काथं पिबेत् सपैत्तं जठरामयं जयेत् । शाल्मलीवृंतकषायं वा हिमाह्वयं शीतकषायं सक्षौद्रं वा पिबेत् ।

किराततिक्तकं मुस्तं वत्सकं सरसांजनम् ॥ ६१ ॥
कटंकटेरी ह्रीबेरं बिल्वमध्यं दुरालभाम् ।
तिलान् मोचरसं रोध्रं समंगां कमलोत्पलम् ॥ ६२ ॥
नागरं धातकीपुष्पं दाडिमस्य त्वगुत्पलम् ।
अर्धश्लोकैः स्मृता योगाः सक्षौद्रास्तंडुलांबुना ॥ ६३ ॥

किराततिक्तादयश्चत्वारो योगा अर्धश्लोकैः स्मृताः समाक्षीकास्तंडुलजलेन योज्याः ।

निशाद्वयवरोध्रैलाकाथः पक्कातिसारनुत् ।

निशादिक्काथः पक्कातिसारजित् ।

रोध्रांबष्ठाप्रियंग्वादिगणांस्तद्वत् पृथक् पिबेत् ॥ ६४ ॥

रोध्रादीन् गणान् पृथक् समाक्षिकांस्तथैव तंडुलांभसा पिबेत् ।

कट्वंगवल्कयष्ट्याह्वफलिनीदाडिमांकुरैः ।
पेया विलेपी खलकान् कुर्यात्सदधिदाडिमान् ॥ ६५ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

तद्वद्दधित्थबिल्वाम्र जंबुमध्यैः प्रकल्पयेत् ।

कट्वंगत्वगादिभिः पेयादीन् सदधिदाडिमान् कुर्यात् । तथैव सदधित्थादिभिः पेयादीन्सदधिदाडिमान् कल्पयेत् । दधित्थः कपित्थः ।

अजापयः प्रयोक्तव्यं निरामे तेन चेच्छमः ॥ ६६ ॥
दोषाधिक्यान्न जायेत बलिनं तं विरेचयेत् ।

अथाजापयः पथ्यं निरामये स्मृतं । तेनाजक्षीरेण यदि दोषाधिक्याद्धेतोः शमो न भवति तदा तं बलवंतं विरेचयेन्न दुर्बलं ।

व्यत्यासेन शकृद्रक्तमुपवेश्येत योपि वा ॥ ६७ ॥
पलाशफलनिर्यूहं युक्तं वा पयसा पिबेत् ।
ततोऽनु कोष्णं पातव्यं क्षीरमेव यथाबलम् ॥ ६८ ॥
प्रवाहिते तेन मले प्रशाम्यत्युदरामयः ।

व्यत्यासः परस्परक्षेपणं । शकृद्रक्तं क्षिपति रक्तं शकृत्क्षिपत्येवं व्यत्यासस्तेन य उपवेश्यते । स पलाशफलक्वाथं केवलं पिबेदथवा पयसा युक्तं । ततस्तत्कषायं पीत्वाऽनंतरं कोष्णं क्षीरमेव यथाबलं बलानतिक्रमेण पेयं । तेन क्षीरेण मले प्रवाहिते निःसारिते सत्यतीसारः शाम्यति ।

पलाशवत्प्रयोज्या वा त्रायमाणा विशोधनी ॥ ६९ ॥

पलाशं यथा तथा त्रायमाणा विशोधनाय प्रयोज्या ।

संसर्ग्यां क्रियमाणायां शूलं यद्यनुवर्तते ।
स्रुतदोषस्य तं शीघ्रं यथावन्ह्यनुवासयेत् ॥ ७० ॥

स्रुतदोषस्यापचितमलस्यातिसारिणः संसर्ग्यां क्रियमाणायां पेयादिके क्रमे विधीयमाने यदि शूलमनुवर्तते निर्वृतिं न याति । तमातुरमाशुयथावन्ह्यग्न्यनतिक्रमेणानुवासयेत् । तदेवानुवासनघृतमाह ।

शतपुष्पावरीभ्यां च बिल्वेन मधुकेन च ।
तैलपादं पयोयुक्तं पक्वमन्वासनं घृतम् ॥ ७१ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

शतपुष्पादिभिस्तैलपादं क्षीरयुतं घृतं पक्वमनुवासनं स्यात् ।

अशांतावित्यतीसारे पिच्छाबस्तिः परं हितः ।

इत्यनेन प्रकारेण कृतेनातिसारस्याशांतौ सत्यां परमनंतरं पिच्छाबस्तिर्वक्ष्यमाणोहितः । अल्पया मात्रया निरूहाख्यो बस्तिः पिच्छाबस्तिः ।

परिवेष्ट्य कुशैरार्द्रैरार्द्रवृंतानि शाल्मलेः ॥ ७२ ॥
कृष्णमृत्तिकया लिप्य स्वेदयेद्गोमयाग्निना ।
मृच्छोषे तानि संक्षुद्य तत्पिडं मुष्टिसंमितम् ॥ ७३ ॥
मर्दयेत्पयसः प्रस्थे पूतेनास्थापयेत्ततः ।
नतयष्टयाह्वकल्काज्यक्षौद्रतैलवतानु च ॥ ७४ ॥
स्नातो भुंजीत पयसा जांगलेन रसेन वा ।
पित्तातिसारज्वरशोफगुल्मसमीरणास्त्रग्रहणीविकारान् ॥ ७५
जयत्ययं शीघ्रमतिप्रवृत्तिं विरेचनास्थापनयोश्च बस्तिः ।

आर्द्रैरशुष्कैर्दर्भैः शाल्मलेरार्द्रवृंतानि कुसुमबंधनानि परिवेष्ट्य ततः कृष्णमृत्तिकयाऽऽलिप्य गोमयाग्निना स्वेदयेत् । मृच्छोषे सति तानि संक्षुद्य संचूर्ण्य तं पिंडं मुष्टिसंमितं पलप्रमाणं पयसः प्रस्थे मर्दयेत् । तेन पूतेनाऽनंतरं नतादिमताऽऽस्थापयेत् । नतं तगरं । पुटपाकानां च सर्वेषामयमेव विधिः । आस्थापितः पश्चात् स्नातः पयसा भुंजीत । सात्म्यादिवशाज्जांगलरसेन वा । अयं बस्तिः प्रयुक्तः पित्तातिसारादीन् विरेचनास्थापनयोश्चातिप्रवृत्तिंदोषाणामतियोगं जयति । एतदुक्तं भवति । बहुदोषस्य या प्रवृत्तिर्विरेचनविषये आस्थापनविषये वा तां च प्रयुक्तोयं जयति ।

फाणितं कुटजोत्थं च सर्वातीसारनाशनम् ॥ ७६ ॥
वत्सकादिसमायुक्तं सांबष्टादिसमाक्षिकम् ।

कुटजोत्थं च फाणितं च वत्सकादियुक्तमंबष्टादिसहितं माक्षिकयुक्तं सर्वातीसार आमातीसारः पक्वातीसारश्च तस्य नाशनं स्यात् ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

निरुग्निरामं दीप्ताग्नेरपि सास्त्रं चिरोत्थितम् ॥ ७७ ॥
नानावर्णमतीसारं पुटपाकैरुपाचरेत् ।

नीरुक् चासौ निरामश्च निरुग्निरामस्तमतीसारमपि सास्रमपि शब्दात्कि-मुत निरस्रं तथा चिरोत्थं तथा नानावर्णमनेकवर्णं दीप्ताग्नेः पुटपाकैरुपाचरेत् ।

त्वक्पिंडाद्दीर्घवृंतस्य श्रीपर्णीपत्रसंवृतात् ॥ ७८ ॥
मृल्लिप्तादग्निनास्विन्नाद्रसं निष्पीडितं हिमम् ।
अतीसारी पिबेद्युक्तं मधुना सितयाऽथवा ॥ ७९ ॥

त्वचः पिंडस्त्वक्पिंडः दीर्घवृंतस्यत्वक्पिंडात्काश्मर्यपत्रसंछादितान्मृल्लिप्ता-त्सामान्योक्तावपि कृष्णमृत्तिकया लिप्तादिति वेद्यं । प्रागुक्तं हि कृष्णमृत्ति-कया लिप्तेति । अनंतरमग्निना स्विन्नाद्रसं निष्पीडितं शीतं कृत्वाऽतिसारी मधुना ऽथवा सितायुक्तं पिबेत् । दीर्घवृंतः स्योनाकः ।

एवं क्षीरद्रुमत्वग्भिस्तत्प्ररोहैश्च कल्पयेत् ।
कट्वंगत्वग्घृतयुता स्वेदिता सलिलोष्मणा ॥ ८० ॥
सक्षौद्राहंत्यतीसारं बलवंतमपि द्रुतम् ।

एवमनेन प्रकारेण क्षीरद्रुमाणां त्वग्भिस्तत्प्ररोहैः कोमलैर्विगतमूलैश्च कल्पयेत् । प्ररोहा अंकुरा इत्यन्ये स्योनाकत्वग्घृतयुता तथोष्णसलिलोष्म-णास्वेदिता माक्षीकयुक्ताऽतीसारं बलवंतमपि शीघ्रं हंति ।

पित्तातिसारी सेवेत पित्तलान्येव वा पुनः ॥ ८१ ॥
रक्तातिसारं कुरुते तस्य पित्तं सतृड्ज्वरम् ।
दारुणं गुदपाकं च तत्र छागं पयो हितम् ॥ ८२ ॥
पद्मोत्पलसमंगाभिः शृतं मोचरसेन वा ।
सारिवायष्टिरोध्रैर्वा प्रसवैर्वा वटादिजैः ॥ ८३ ॥
सक्षौद्रशर्करं पाने भोजने गुदसेचने ।

पित्तातिसारी पित्तलान्येवान्नपानानि यः सेवते तस्य पित्तं कर्तृ

Indira Gandhi National Centre for the Arts

रक्तातिसारं कुरुते। किंभूतं तृष्णाज्वरयुतं। तथा दारुणं गुदपाकं करोति। तत्रैवंविधेऽतीसारे छागं क्षीरं पद्मादिभिर्मोचरसेन च शृतं हितं। अथवा सारीवादिभिः शृतं छागं क्षीरं हितं। अथवा वटादिजैः पल्लवैः शृतं क्षौद्रशर्करान्वितं पाने भोजने गुदसेके च छागं पयो हितं।

तद्वद्रसादयोनम्लाः साज्याः पानान्नयोर्हिताः॥ ८४॥
काश्मर्यफलयूषश्च किंचिदम्लः सशर्करः।

तथैव रसा यूषादयोऽनम्लाः सघृताः पानान्नयोर्हिताः। काश्मर्यफलयूषश्च किंचिदम्लः सशर्करो हितः।

पयस्यर्धोदके छागे ह्रीबेरोत्पलनागरैः॥ ८५॥
पेया रक्तातिसारघ्नी पृष्ठीपर्णी रसान्विता।
प्राग्भक्तं नवनीतं वा लिह्यान्मधुसितायुतम्॥ ८६॥

छागे पयस्यर्धोदके वालकोत्पलनागरैः पृष्टिपर्णीक्वाथेन च युक्ता पेया रक्तातिसारं हंति। अथवा नवनीतं प्राग्भक्तं मधुशर्करान्वितं लिह्यात्।

बलिन्यस्रेऽस्रमे वाजं मार्गं वा घृतभर्जितम्।
क्षीरानुपानं क्षीराशी त्र्यहं क्षीरोद्भवं घृतम्॥ ८७॥
कपिंजलरसाशी वा लिहन्नारोग्यमश्नुते।

प्रवृद्धरक्ते छागं रक्तमथवा मार्गं मृगसंबंधिरक्तं घृतभर्जितं भुंजीत। एवंकारान्नत्वपरं किंचिदजस्य मृगस्य चेति गम्यते। उभयमपि क्षीरानुपानं क्षीराशीव सन् भर्जितं भुंजीत। अथवा क्षीरोद्भवं घृतं त्र्यहं लिहन् कपिंजलरसाशनो नर आरोग्यं प्राप्नोति।

पीत्वा शतावरीकल्कं क्षीरेण क्षीरभोजनः॥ ८८॥
रक्तातिसारं हंत्याशु तया वा साधितं घृतम्।

शतावरीकल्कं क्षीरेण पीत्वा क्षीराशी सन् रक्तातीसारं द्रागेव पराकरोति। अथवा तया शतावर्या पक्वं घृतं पीत्वा क्षीरभोजन आशु रक्तातीसारं हंति।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

लाक्षानागरवैदेहीकटुकादार्विवल्कलैः ॥ ८९ ॥
सर्पिःसेंद्रयवैः सिद्धं पेयामंडावचारितम् ।
अतिसारं जयेच्छीघ्रं त्रिदोषमपि दारुणम् ॥ ९० ॥

लाक्षादिभिः सिद्धं घृतं पेयामंडेनावचारितं शीघ्रं त्रिदोषमप्यतिसारं घोरं जयति । अपिशब्दाद्रक्तातिसारमपि ।

कृष्णमृच्छंखयष्ट्याह्वक्षौद्रासृक्तंडुलोदकम् ।
जयत्यस्रं प्रियंगुश्च तंडुलांबु मधुप्लुता ॥ ९१ ॥

कृष्णमृदादिकं तंडुलजलालोडितं रक्तं जयति । तथा तंडुलांबु मधुयुक्ता प्रियंगु रक्तं जयति ।

कल्कस्तिलानां कृष्णानां शर्करापांचभागिकः ।
आजेन पयसा पीतः सद्यो रक्तं नियच्छति ॥ ९२ ॥

पंचमो भागः पंचभागः स यस्यास्ति स पांचभागिकः । कोऽसौ कृष्णतिलानां कल्कः । शर्करांशः पांचभागिकः कृष्णतिलानां कल्कः छगलीक्षीरेण पीतः सन् सद्यो रक्तं नियच्छति ।

पीत्वा सशर्कराक्षौद्रं चंदनं तंडुलांबुना ।
दाहतृष्णाप्रमेहेभ्यो रक्तस्रावाच्च मुच्यते ॥ ९३ ॥

तंडुलजलेन चंदनं शर्करामाक्षीकान्वितं पीत्वा दाहादिभ्यो मुच्यते मुच्यत इति कर्म कर्तरि तङ् ।

गुदस्य दाहे पाके वा सेकलेपा हिता हिमाः ।

गुदस्य दाहे पाके च सति सेकलेपा हिमा हिताः ।

अल्पाल्पं बहुशो रक्तं सशूलमुपवेश्यते ॥ ९४ ॥
यदा विबद्धो वायुश्च कृच्छ्राच्चरति वा न वा ।
पिच्छाबस्तिं तदा तस्य पूर्वोक्तमुपकल्पयेत् ॥ ९५ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

अल्पमल्पं पुनः पुनः शूलेन सह यश्च बहुशो रक्तमुपवेशयति वायुश्च यदा विबद्धो नानुलोमगोऽत एव कृच्छ्रेण चरति । न वा चरति । तदा तस्य पुरुषस्य पूर्वोक्तं त्वक्पिंडादिकं पिच्छाबस्तिमुपकल्पयेत् ।

पल्लवान् जर्जरीकृत्य शिंशिपाकोविदारयोः ।
पचेद्यवांश्च सक्राथो घृतक्षीरसमान्वितः ॥ ९६ ॥
पिच्छास्रुतौ गुदभ्रंशे प्रवाहणरुजासु च ।
पिच्छाबस्तिः प्रयोक्तव्यः क्षतक्षीणबलावहः ॥ ९७ ॥

शिंशिपाकर्बुदारयोः पल्लवान् जर्जरीकृत्य यवांश्च पचेत् । स क्राथो घृतक्षीरसंयुक्तः पिच्छास्रुत्यादिषु पिच्छाबस्तिः प्रयोक्तव्यः । स च क्षतक्षीणानां बलप्रदः ।

प्रपौंडरीकसिद्धेन सर्पिषा चानुवासनम् ।

प्रपौंडरीकपक्वेन घृतेनानुवासनं प्रयोक्तव्यं ।

रक्तं विट्सहितं पूर्वं पश्चाद्वायोऽति सार्यते ॥ ९८ ॥
शतावरीघृतं तस्य लेहार्थमुपकल्पयेत् ।

रक्तं विशासहितमथवा पूर्वं पश्चाद्वायोऽतिसार्यते । तस्य लेहार्थं शतावरीघृतमुपकल्पयेत् ।

शर्करार्धांशकं लीढं नवनीतं नवोद्धृतम् ॥ ९९ ॥
क्षौद्रपादं जयेच्छीघ्रं तं विकारं हिताशिनः ।

नवनीतं नवं शर्कराया अर्धभागेन युक्तं माक्षीकचतुर्थप्रमाणं माक्षीकस्य चतुर्थेन भागेनान्वितं लीढं पूर्वोक्तं विकारं हिताहारस्य जयेत् ।

न्यग्रोधोदुंबराश्वत्थशुंगानापोथ्य वासयेत् ॥ १०० ॥
अहोरात्रं जले तप्ते घृतं तेनांभसा पचेत् ।
तदर्धशर्करायुक्तं लेहयेत्क्षौद्रपादिकम् ॥ १०१ ॥
अधो वा यदि वाप्यूर्ध्वं यस्य रक्तं प्रवर्तते ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

न्यग्रोधादीनां शृंगान् जर्जरीकृत्य तप्ते जलेऽहोरात्रं वासयेत्। तेनांबुना घृतं पचेत्। तच्च घृतं शर्करया अर्धभागेन युक्तं माक्षीकचतुर्थांशकं लेहयेत्। पूर्वगुणं। अधो वा चोर्ध्वं वा यस्य रक्तं प्रवर्त्तते।

श्लेष्मातिसारे वातोक्तं विशेषादामपाचनम् ॥ १०२ ॥
कर्तव्यमनुबंधेस्य पिबेत्पक्त्वाग्निदीपनम्।
बिल्वंकर्कटिकामुस्तप्राणदाविश्वभेषजम् ॥ १०३ ॥
वचाविडंगभूतीकधानकामरदारु वा।
अथवा पिप्पलीमूल पिप्पलीद्वयचित्रकं ॥ १०४ ॥

श्लेष्मातीसारे वातातीसारोक्तं यदामपाचनं तद्विशेषात्तत्कर्त्तव्यं न तथा वातातीसारोक्तोऽन्यउपक्रमः कार्य इति विशेषशब्दस्यार्थः। अस्यातीसारस्यानुबंधे चिकित्सायां सम्यक्कृतायामप्यशमयति बिल्वकर्कटिकादिकं पक्त्वा पानमग्निदीपनं पिबेत्। अथवा वचादीनि पिबेत्। अथवा पिप्पलीमूलादिकं पक्त्वाऽग्निदीपनं पिबेत्।

पाठाग्निवत्सकग्रंथितिक्ताशुंठिवचाभयाः।
क्वथिता यदि वा पिष्टाः श्लेष्मातीसारभेषजम् ॥ १०५ ॥

एते पाठादयाः क्वथिताःपाचनन्यायेन चूर्णं पाचनन्यायेन वा श्लेष्मातीसारभेषजमिति। अत्रापि वक्ष्यमाणं सिंहावलोकितन्यायेन कोष्णवारिणेत्येतत्संबध्यते।

सौवर्चलवचाव्योषहिंगुप्रतिविषाभयाः।
पिबेत् श्लेष्मातिसारार्त्तश्चूर्णिताः कोष्णवारिणा ॥ १०६ ॥

सौवर्चलादींश्चूर्णितान्कोष्णजलेन श्लेष्मातिसारार्त्तः पिबेत्।

मध्यं लीढ्वा कपित्थस्य सव्योषक्षौद्रशर्करम्।
कट्फलं मधुयुक्तं वा मुच्यते जठरामयात् ॥ १०७ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

कपित्थस्य मध्यं सव्योषमाक्षीकशर्करं लीढ्वाऽथवा कट्फलं माक्षीकान्वितं लीढ्वा जठररोगान्मुच्यते।

कणां मधुयुतां लीढ्वा तक्रं पीत्वा सचित्रकम्।
भुक्त्वा वा बालबिल्वानि व्यपोहत्युदरामयम् ॥ १०८ ॥

कणां माक्षीकान्वितां लीढ्वा तक्रं च सचित्रकं पीत्वा बालबिल्वानि वा भुक्त्वा जठररोगं व्यपोहति। उपसर्गादस्यत्युहोर्वेत्वचनमितिरट्।

पाठामोचरसांभोदधातकीबिल्वनागरम्।
सुकृच्छ्रमप्यतीसारं गुडतक्रेण नाशयेत् ॥ १०९ ॥

पाठादिगुडतक्रेण पीत्वाऽतीसारं सुकृच्छ्रमपि नाशयेत्। श्लेष्मातीसारे प्रकृतेप्यतीसारग्रहणमन्यस्यापि निरामस्य च तन्नाशनमिति द्योतनार्थम्।

यवानीपिप्पलीमूलचातुर्जातकनागरैः।
मरिचाग्निजलाजाजीधान्यसौवर्चलैः समैः ॥ ११० ॥
वृक्षाम्लधातकीकृष्णाबिल्वदाडिमदीप्यकैः।
त्रिगुणैः षड्गुणसितैः कपित्थाष्टगुणैः कृतः ॥ १११ ॥
चूर्णोतीसारग्रहणीक्षयगुल्मोदरामयान्।
कासश्वासाग्निसादार्शः पीनसारोचकान् जयेत् ॥ ११२ ॥

यवान्यादिभिर्द्रव्यैः समैर्वृक्षाम्लादिभिस्त्रिगुणैर्मूलद्रव्यापेक्षया किंभूतैरतैः। षड्गुणा सिता येषां वृक्षाम्लादीनां त एवं तैः। षड्गुणसितैश्चूर्णीकृतइति योज्यं। एवं शर्कराभागानां शतमष्टाधिकं भवति। किंभूतश्चूर्णः। मूलद्रव्यापेक्षयाऽष्टगुणैः कपित्थैः। केचित्त्वेवं पठंति। षड्गुणसिते कपित्थेऽष्टगुणइति। तत्र चेदं व्याख्यानं। मूलद्रव्यापेक्षया कपित्थेष्टगुणे तथा किंभूते। षड्गुणसिता यस्मात्तथा तस्मिन्। एवं शर्कराभागा अष्टचत्वारिंशत्स्युरिति। अयं चूर्णोऽतिसारादीन् जयेत्।

कर्षोन्मिता तवक्षीरी चातुर्जातं द्विकार्षिकम्।
यवानीधान्यकाजाजीग्रंथीव्योषं पलांशकम् ॥ ११३ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

पलानि दाडिमादष्टौ सितायाश्चैकतःकृतः ।
गुणैः कपित्थाष्टकवच्चूर्णोयं दाडिमाष्टकः ॥ ११४ ॥
भोज्यो वातातिसारोक्तैर्यथावस्थं खलादिभिः ।

तुगाक्षीरी चतुर्जातं च कर्षोन्मितं कर्षप्रमाणं । यवानी च धान्यकं वाजाजी च यवानीधान्यकाजाजीद्विकार्षिकं ग्रंथिश्च व्योषं च तत्पलांशकं पलभागिकं पलानि दाडिमादष्टौ । च शब्दात्सितायाअप्यष्टौ पलानि । एवमयमेकतएकस्मिन् कृतश्चूर्णो दाडिमाष्टक एव संज्ञः । तेन चतुर्जातकमेकमेवास्य समुदायाद्यथोक्त एक एव भागः । व्योषमप्येकमेवास्यापि समुदायाद्यथोक्त एक एव भागः । एवं द्रव्यसमुदायस्यैकत्वे कल्पनाप्यत्राचार्यस्याभिमतैव । यथा । त्रिकटूत्तमातिलारुष्कराज्यामाक्षीकाग्नितेमलाविहिता गुलिकारसायनं कुष्टजिच्चवृष्याच सप्तसमेतिसाप्तचेति । तुगाक्षीर्येका । चतुर्जातं द्वितीयं यवानी तृतीया । धान्यकं चतुर्थं । अजाजी पंचमी । पिप्पलीमूलं षष्ठं । व्योषं सप्तमं दाडिममष्टमिति । अन्येत्वेवं व्याचक्षते । पलमिति प्रकृतम् । दाडिममष्टकमष्टपलप्रमाणं यस्मिन् चूर्णे सदाडिमाष्टक इति । यथा वाक्षीरोगेष्वसितमरिचभागमेकं चतुर्भनोह्वमित्यत्र तच्चूर्णं वातातिसारार्तैर्नरैरवस्थावशात् खलपेयादिभिः सह भोजनीयम् ।

सविडंगः समरिचः सकपित्थःसनागरः ॥ ११५ ॥
चांगेरीतक्रकोलाम्लः खलः श्लेष्मातिसारजित् ।

खलश्लेष्मातिसारजित् किंभूतः विडंगादियुक्तः चांगेरीतक्रकोलाम्लः ।

क्षीणे श्लेष्मणि पूर्वोक्तमम्लं लाक्षादिषट्पलम् ॥ ११६ ॥
पुराणं वा घृतं दद्याद्यवागूं मंडमिश्रिताम् ।

क्षीणश्लेष्मणि पूर्वोक्तमम्लं घृतं गुदरुग्भ्रंशयोर्युंज्यात् । सक्षीरं साधितं हविरित्यादि । तथा लाक्षादीः । लाक्षानागरवैदेहेत्यादि षट्पलं यक्ष्मोक्तं पुराणं वा घृतं यवागूमंडमिश्रितं दद्यात् ।

वातश्लेष्मविबंधे च स्रवत्यतिकफेऽपि वा ॥ ११७ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

शूले प्रवाहिकायां वा पिच्छाबस्तिः प्रशस्यते ।
वचाबिल्वकणाकुष्ठशताह्वालवणान्वितः ॥ ११८ ॥

वातकफविबंधे वाऽतिशयेन कफे स्रवति तथा शूले सति प्रवाहिकायां वा सत्यां पिच्छाबस्तिः पूर्वोक्त एव पल्लवान् जर्जरीकृत्येत्यादिको वचादि-भिर्युक्तः प्रशस्यते ।

बिल्वतैलेन तैलेन वचाद्यैः साधितेन वा ।
बहुशः कफवातार्ते कोष्णेनान्वासनं हितम् ॥ ११९ ॥

बिल्वमज्यभ्य उत्पन्नं तैलं बिल्वतैलं तेन वचाद्यैः पक्वेनाथवा तैलेन तिलतैलेन वचाद्यैः साधितेनोभयेनाप्युष्णेन बहुशोऽनुवासनं कफवातार्त्ते हितम् ।

क्षीणे कफे गुदे दीर्घकालातीसारदुर्बले ।
अनिलः प्रबलोऽवश्यं स्वस्थानस्थः प्रजायते ॥ १२० ॥
सबली सहसा हन्यात्तस्मात्तं त्वरया जयेत् ।
वायोरनंतरं पित्तं पित्तस्यानंतरं कफम् ॥ १२१ ॥
जयेत्पूर्वं त्रयाणां वा भवेद्यो बलवत्तमः ।

कफे क्षीणे गुदे च दीर्घकाले योऽतीसारस्तेन दुर्बले बलहीने सत्यनिलः स्वसास्थानस्थितः पायुस्थितोऽवश्यं प्रबलो जायते । स वायुर्बलवान्सहसा झटित्येतं व्यापादयेत् । तस्मात्तं वायुं शीघ्रं जयेत् । तं वायुं जित्वाऽनंतरं पित्तं जयेत् । पित्तस्यानंतरं कफं जयेत् । अथवा त्रयाणां मध्ये यो बलवत्तमो दोषस्तमेव पूर्वं जयेत् ।

भीशोकाभ्यामपि चलः शीघ्रं कुप्यत्यतस्तयोः ॥१२२॥
कार्या क्रिया वातहरा हर्षणाश्वासनानि च ।

भयशोकाभ्यामप्यनिलो यस्मात् कुप्यति । अतस्तयोर्भयशोकातिसारयोर्वातहरा क्रिया कार्या । न केवलं वातहरा । हर्षणाश्वासनानि च कार्याणि भयशोकनिवृत्तये ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

यस्योच्चाराद्विना मूत्रं पवनो वा प्रवर्त्तते ।
दीप्ताग्नेर्लघुकोष्ठस्य शांतस्तस्योदरामयः ॥ १२३ ॥

यस्यातिसारिणः पुरुषस्योच्चारातत्प्रवृत्तेर्विना मूत्रमथवा वातः प्रवर्त्तते दीप्ताग्नेर्लघुकोष्टस्य यतस्तस्य जठररोगः शांत इति ।

इति श्रीमदरुणदत्तविरचितायामष्टांगहृदयटीकायामतिसारचिकित्सितं नामनवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥

दशमोऽध्यायः ।

अतिसारचिकित्सितादनंतरं ग्रहणीदोषचिकित्सितमुच्यते । निदानसामान्यात् तथा च प्रागुक्तमर्शोतिसारग्रहणीविकाराइत्यादि । अत आह ।

अथातो ग्रहणीदोषचिकित्सितं व्याख्यास्यामः ।

ग्रहिण्यामाश्रितो दोषो ग्रहणीदोषस्तदाश्रितस्थानोदितकारी वाताद्यन्यतमस्तस्य चिकित्सितं ग्रहणीदोषचिकित्सितं । शेषं पूर्ववत् ।

ग्रहणीमाश्रितं दोषमजीर्णवदुपाचरेत् ।
अतीसारोक्तविधिना तस्यामं च विपाचयेत् ॥ १ ॥

ग्रहणीं दोषमाश्रितमजीर्णवदुपाचरेत् । तत्तुल्यसाधनेन लंघनोपचारादिनोपक्रमेत् । अतीसारोक्तविधिना तस्य ग्रहणीदोषवतः पुंसो यथादोषमामं विपाचयेत् ।

अन्नकाले यवाग्वादि पंचकोलादिभिर्युतम् ।
वितरेत्पटुलघ्वन्नं पुनर्योगांश्च दीपनान् ॥ २ ॥

अन्नकाले सम्यग् जातायां क्षुधि देहे च सुलघौ यवाग्वाद्यन्नं पेयाविलेप्योदनलक्षणं वितरेद्दयात् । किंभूतं । पंचकोलादिभिर्दीपनैर्द्रव्यैर्युतम् ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

आदिशब्देनान्यैरप्येवं प्रकारैर्द्रव्यैर्दीपनादिगुणयुक्तैर्युक्तं तथा पटुलवणं। लघूभयथामात्रया प्रकृत्या च। पुनर्भूयो दीपनान् खाडवादीन्योगान् वितरेत्॥

दद्यात्सातिविषां पेयामामे साम्लां सनागराम्।
पानेऽतिसारविहितं वारितक्रं सुरादि च॥ ३॥

तथा आमे सति पेयां दद्यात्। किंभूतां। नागरातिविषायुतां। तथा साम्लामीषदम्लां। पानेऽतिसारविहितं वारि तक्रं च सुरादि च सात्म्यादिवशाद् यथायोग्यं तस्मै दद्यात्।

ग्रहणीदोषिणां तक्रं दीपनग्राहिलाघवात्।
पथ्यं मधुरपाकित्वान्न च पित्तप्रदूषणम्॥ ४॥
कषायोष्णविकाशित्वाद्रूक्षत्वाच्च कफे हितम्।
वाते स्वाद्वम्लसांद्रत्वात्सद्यस्कमविदाहि तत्॥ ५॥

ग्रहणीदोषिणां तक्रं पथ्यं। कस्माद्दीपनग्राहिलाघवात्। दीपनग्राहिशब्दयोरत्र भावप्रधानयोर्निर्देशः। यथा द्व्येकयोर्द्विवचनैकवचनइत्यत्र। अतएवैतौ भावप्रत्ययांतेन लाघवशब्देन सह निर्दिष्टौ। भाष्यकारस्त्वाह। द्वंद्वात्परो यः श्रूयते स सर्वैः संबध्यतइति। तेन दीपनग्राहिशब्दयोरपि भावप्रत्ययार्थसंबंधो भवतीति। मधुरपाकित्वात् पित्तप्रदूषणं च न भवति। नपदेन प्रकर्षदूषणं पित्तस्य तक्रं निषिध्यते। तेनार्थात् किंचित् पित्तकरमित्युक्तं भवति। कषायोष्णविकाशित्वाद्रूक्षत्वाच्च कफे हितं। तक्रं रूक्षत्वाच्चेति पृथङ्निर्देशाद्रूक्षत्वस्य तक्रगतस्य यथा कफे हितत्वं द्रव्यस्वभावान्न तथा कषायादिनामितद्द्योतयति। वाते स्वाद्वम्लं सांद्रत्वात्तक्रं पथ्यं। किंभूतं सद्यस्कं सद्यो विलोडितं। अत एव न विदाहि। ननु ग्रहणीदोषिणां तक्रं पथ्यमित्येतावदस्तु। किंहेतुनिर्देशेन। अत्रोच्यते। लघ्व्यादिगुणेभ्यः प्राङ्निरूपितेभ्योधिकान् विकाशित्वमधुरपाकादीनभिधातुं दीपनादयोपि तत्प्रसंगान्निर्दिष्टाः। अपि च। ग्रहणीदोषिणां तक्रं पथ्यं दीपनादिगुणयोगात्तथान्यदपि यद्द्रव्यमेवंगुणं ग्रहणीदोषचिकित्सितेनोक्तं तदपि ग्रहणीदोषिणां पथ्यमितिहेतुनिर्देशेन द्योत्यते। द्रव्यस्वभावात्तु विशेषेण ग्रहणीदोषिणां

Indira Gandhi National Centre for the Arts

तक्रं पथ्यमिति । एष एव न्यायोऽन्यत्रापि सहेतुकद्रव्यकथने योज्यः । किंच यत्तदोर्नित्यमभिसंबंधादेवंनिर्देशाच्चायमर्थोऽवतिष्ठते । यदेवंविधं तक्रं तद्ग्रहणीदोषिणां पथ्यं नान्यादृशं यदनुद्धृतस्नेहमथवा वर्द्धितस्नेहं तथातिजातत्वादम्लं तथा सद्यस्कं विदाहि च । तत्सर्वं ग्रहणीदोषिणामपथ्यमेव । तक्रे च रूक्षत्वादम्लादयो गुणाः परस्परविरुद्धा अपि द्रव्यप्रभावात्कफविजयित्वं वातविजयित्वं च यथायोगं कुर्वंत्येव । स्वं स्वं कर्म यथा सत्वंरजस्तमःसंज्ञा गुणाः ।

चतुर्णां प्रस्थमम्लानां त्र्यूषणाच्च पलत्रयम् ।
लवणानां च चत्वारि शर्करायाः पलाष्टकम् ॥ ६ ॥
तच्चूर्णं शाकसूपान्नरागादिष्ववचारयेत् ।
कासाजीर्णारुचिश्वासहृत्पार्श्वामयशूलनुत् ॥ ७ ॥

अम्लानां चतुर्णां कोलदाडिमवृक्षाम्लचुक्रीकाणां प्रस्थं । केचित्तु वृक्षाम्लाम्लवेतसदाडिमबदराणामित्याहुः । त्रिकटुकात्पलत्रयं । लवणानां चत्वारि पलानि । शर्करायाः पलान्यष्टौ । तदेतच्चूर्णं शाकादिष्ववचारयेन्मिश्रयेत् । तच्च कासादिजित् ।

नागरातिविषामुस्तं पाक्यमामहरं पिबेत् ।
उष्णांबुना वा तत्कल्कं नागरं वाथवाभयाम् ॥ ८ ॥
ससैंधवं वचादिं वा तद्वन्मदिरयाऽथवा ।

नागरादि पाक्यं क्राथयित्वाऽऽमघ्नं पिबेत् । अथवा तेषां नागरादीनां कल्कमुष्णांबुना पिबेत् । अथवा शुंठीमुष्णांबुना पिबेत् । हरीतकीं वा वचादिं वा गणं सैंधवान्वितं तद्वदुष्णांबुना पिबेत् । वचादिमेव मदिरया वा पिबेत् ।

वर्चस्यामे सप्रवाहे पिबेद्वा दाडिमांबुना ॥ ९ ॥
बिडेन लवणं पिष्टं बिल्वचित्रकनागरम् ।
सामे कफानिले कोष्टरुक्शूरे कोष्णवारिणा ॥ १० ॥

पुरीष आमे तथा सप्रवाहे बिडेनोपलक्षितं लवणं बिडलवणं पिष्टं

Indira Gandhi National
Centre for the Arts

दाडिमांबुना वा पिबेत् । सामे वातकफे कोष्टरुजाकरे बिल्वादीनि कोष्णवारिणा पिबेत् ।

कलिंगहिंग्वतिविषावचासौवर्चलाभयम् ।
छर्दिहृद्रोगशूलेषु पेयमुष्णेन वारिणा ॥ ११ ॥
पथ्यासौवर्चलाजाजीचूर्णं मरिचसंयुतम् ।

छर्द्यादिषु कलिंगादिकं कोष्णेन वारिणा पेयं । पथ्यादिकं चूर्णं समरिचमुष्णजलेन पिबेत् । पूर्वगुणं ।

पिप्पलीं नागरं पाठां सारिवां बृहतीद्वयम् ॥ १२ ॥
चित्रकं कौटजं क्षारं तथा लवणपंचकम् ।
चूर्णीकृतं दधिसुरातन्मंडोष्णांबुकांजिकैः ॥ १३ ॥
पिबेदग्निविवृत्त्यर्थं कोष्टवातहरं परम् ।

पिप्पल्यादिकं सूक्ष्मरजीकृतं दध्यादिभिरग्निर्दीप्त्यर्थं पिबेत् । तस्याः सुराया मंडस्तन्मंडः । कोष्टवातहरं चैतच्चूर्णं स्यात् ।

पटूनि पंच द्वौ क्षारौ मरिचं पंचकोलकम् ॥ १४ ॥
दीप्यकं हिंगुगुलिका बीजपूररसे कृता ।
कोलदाडिमतोये वा परं पाचनदीपनी ॥ १५ ॥

लवणपंचकादिभिर्गुटिका बीजपूररसे कृता कोलदाडिमजले वा कृतातिशयेन पाचनी दीपनी च स्यात् ।

तालीसपत्रचविकामरिचानां पलं पलम् ।
कृष्णातन्मूलयोर्द्वे द्वे पले शुंठीपलत्रयम् ॥ १६ ॥
चतुर्जातमुशीरं च कर्षांशं श्लक्ष्णचूर्णितम् ।
गुडेन वटकान् कृत्वा त्रिगुणेन सदा भजेत् ॥ १७ ॥
मद्ययूषरसारिष्टमस्तुपेया पयोनुपः ।
वातश्लेष्मात्मनां छर्दिग्रहणीपार्श्वहृद्रुजाम् ॥ १८ ॥

Indira Gandhi National
Centre for the Arts

ज्वरश्वयथुपांडुत्वग्गुल्मपानात्ययार्शसाम् ।
प्रसेकपीनसश्वासकासानां च निवृत्तये ॥ १९ ॥
अभयां नागरस्थाने दद्यादत्रैव विड्ग्रहे ।
छर्द्यादिषु च पैत्तेषु चतुर्गुणसितान्विताः ॥ २० ॥
पक्केन वटकाः कार्या गुडेन सितयापि वा ।
परं हि वन्हिसंपर्काल्लघिमानं भजंति ते ॥ २१ ॥

तालीसपत्रादीनां प्रत्येकं पलं। पिप्पली पले द्वे। पिप्पलीमूलस्य द्वे। शुंठीपलत्रयं। चतुर्जातमुशीरं च पृथक् कर्षभागं गुडेन त्रिगुणेन वटकान् कृत्वा सदा मद्यादीन् पिबन् भजेत्। किमर्थमित्याह। वातकफात्मकच्छर्द्यादीनां शांत्यर्थं। तत्र चैतेष्वेव च वटकेषु विड्ग्रहे विड्विबंधे सत्यभयां नागरस्थाने दद्यात्। छर्द्यादिषु पूर्वोक्तेषु पित्तोद्भवेषु सत्सु गुडवर्जं चतुर्गुणसितया युक्ता वटकाः कार्याः। वटकानां विधानमाह। पक्केन गुडेन वटकाः कार्याः सितया वा पक्कया कार्याः। किमिति पक्केन क्रियंत इत्याह। यस्मात्कारणादग्निसंपर्कात्ते वटकाः परं लघुत्वं भजंति। लघोर्भावो लघिमा। पृथ्वादिभ्य इमनिच्। टेरितिटिलोपः। सामचिकित्सामुक्त्वा निरामचिकित्सां विशेषेणाह।

अथैनं परिपक्कामंमारुतग्रहणीगदम् ।
दीपनीययुतं सर्पिः पाययेदल्पशो भिषक् ॥ २२ ॥
किंचित्संधुक्षिते त्वग्नौ सक्तविण्मूत्रमारुतम् ।
द्व्यहं त्र्यहं वा संस्नेह्य स्विन्नाभ्यक्तं निरूहयेत् ॥२३॥
तत एरंडतैलेन सर्पिषा तैल्वकेन वा ।
सक्षारेणानिले शांते स्रस्तदोषं विरेचयेत् ॥ २४ ॥

मारुतग्रहणीगदो विद्यते यस्येत्यर्शआदित्वादच्। एनं मारुतग्रहणीगदवंतं दीपनीयौषधयुतं पंचकोलप्रायद्रव्यान्वितं वन्हिसंधुक्षणार्थमल्पमात्रया घृतं पाययेत्। किंचित्संधुक्षिते मनाक् संदीपिते त्वग्नौ सति सक्तविण्मूत्रपवनं नरं द्वे दिने त्रीणि वा संस्नेह्य स्नेहयित्वाऽनंतरं स्विन्नाभ्यक्तं

Indira Gandhi National Centre for the Arts

कृत्वा निरूहयेत्। ततो निरूहादनंतरं मारुते शांते सत्येरंडतैलेनाथवा तैल्वकेन घृतेन सक्षारेण स्रस्तदोषं प्रच्युतदोषं विरेचयेत्।

शुद्धरूक्षाशयं बद्धवर्चस्कं चानुवासयेत्।
दीपनीयाम्लवातघ्नसिद्धतैलेन तं ततः॥ २५॥
निरूढं च विरिक्तं च सम्यक्चाप्यनुवासितम्।
लघ्वन्नप्रतिसंयुक्तं सर्पिरभ्यासयेत्पुनः॥ २६॥

शुद्धो रूक्ष आशयो यस्य स एवं तथा बद्धं वर्चः पुरीषं यस्य तम्। शुद्धरूक्षाशयमिति हेतौ प्रथमा। शुद्धरूक्षाशयत्वेन बद्धवर्चस्कमित्यर्थः। तथाविधं नरमनुवासयेत्। केन। दीपनीयानि नागरादीन्यम्लानि वृक्षाम्लमातुलुंगदाडिमादीनि वातघ्नानि कुष्टरास्नैरंडादीनि तैर्दीपनीयाम्लवातघ्नैः सिद्धतैलेन निरूढं विरिक्तं च विधिना चानुवासितं मात्रयेत्यर्थः। सम्यग्वाप्यनुवासितं लघ्वन्नप्रतिसंयुक्तं पुनः सर्पिः शीलयेत्।

पंचमूलाभयाव्योषपिप्पलीमूलसैंधवैः।
रास्नाक्षारद्वयाजाजीविडंगशठिभिर्घृतम्॥ २७॥
शुक्तेन मातुलिंगस्य स्वरसेनार्द्रकस्य वा।
शुष्कमूलककोलाम्लचुक्रीकादाडिमस्य च॥ २८॥
तक्रमस्तुसुरामंडसौवीरकतुषोदकैः।
कांजिकेन च तत्पक्कमग्निदीप्तिकरं परम्॥ २९॥
शूलगुल्मोदरश्वासकासानिलकफापहम्।

पंचमूलादिभिः कल्कैर्द्रव्यैः शुक्तादिभिर्द्रवद्रव्यैः सामान्यपरिभाषया घृतं पचेत्। पंचमूलमिह महद्ग्राह्यं सुतरां वातघ्नत्वात्। एतच्च घृतं परमग्निदीप्तिकरं शूलादिघ्नम्।

सबीजपूरकरसे सिद्धं वा पाययेद्घृतम्॥ ३०॥

बीजपूरकरसेन सह सिद्धं वा घृतं पाययेत्।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

तैलमभ्यंजनार्थं च सिद्धमेभिश्चलापहम् ।

एभिः पंचमूलादिभिर्घृतौषधैः सिद्धं तैलं वाभ्यंजनार्थं हितम् ।

एतेषामौषधानां वा पिबेच्चूर्णं सुखांबुना ॥ ३१ ॥
वातेश्लेष्मावृते सामे कफे वा वायुनोद्धते ।

एतेषामौषधानां पंचमूलादीनां चूर्णमुष्णांबुना वा पिबेत् । कस्यामवस्थायामित्याह । वाते । किंभूते । श्लेष्मावृते । तथा सामे कफे वा वातेनोद्धते सामे वा । अधुना पित्तग्रहणीरोगचिकित्सामाह ।

अग्नेर्निर्वापकं पित्तं रेकेण वमनेन वा ॥ ३२ ॥
हत्वा तिक्तलघुग्राहिदीपनैरविदाहिभिः ।
अम्लैः संधुक्षयेदग्निं चूर्णैः स्नेहैश्च तिक्तकैः ॥ ३३ ॥

अग्निपित्तयोर्ग्रहण्याश्रयत्वाद् द्रवत्वाच्च यदग्नेः प्लावकं पित्तमूर्ध्वाधः प्रपन्नं तद्यथासन्नदोषं वमनेन विरेकेण च हत्वा । अनंतरं तमग्निमन्नैस्तिक्तलघुग्राहिदीपनैः संधुक्षयेत् । किंभूतैः । अविदाहिभिर्ऋतुसामान्येन दीपनैर्न केवलमेवंविधैरन्नैरग्निं संधुक्षयेत् अम्लैश्चूर्णैः स्नेहैश्च तं संधुक्षयेत् । किंभूतैः । तिक्तकैस्तिक्तद्रव्यभूयिष्ठैश्चूर्णैस्तिक्तद्रव्यसाधितैःस्नेहैश्च । चूर्णैरग्निं संधुक्षयेदित्युक्तं । अतश्चूर्णान्याह ।

पटोलनिंबत्रायंतीतिक्तातिक्तकपर्पटम् ।
कुटजत्वक्फलं मूर्वामधुशिग्रुफलं वचा ॥ ३४ ॥
दार्वित्वक्पद्मकोशीरयवानीमुस्तचंदनम् ।
सौराष्ट्र्यतिविषाव्योषत्वगेलापत्रदारु च ॥ ३५ ॥
चूर्णितं मधुना लेह्यं पेयं मद्यैर्जलेन वा ।
हृत्पांडुग्रहणीरोगगुल्मशूलारुचिज्वरान् ॥ ३६ ॥
कामलां संनिपातं च मुखरोगांश्च नाशयेत् ।

मधुशिग्रुः सोभांजनकविशेषः । तस्य फलं श्वेतमरीचाख्यम् । एतच्च-

Indira Gandhi National Centre for the Arts

टोलादिकं चूर्णितं मधुना लेह्यमथवा जलेन पेयं मद्यैर्वा । तच्च हृद्रोगादीन् नाशयेत् ।

> भूनिंबकटुकामुस्तात्र्यूषणेंद्रयवान् समान् ॥ ३७ ॥
> द्वौ चित्रकात्कुटजत्वग्भागान् षोडश चूर्णयेत् ।
> गुडशीतांबुना पीतं ग्रहणीदोषगुल्मनुत् ॥ ३८ ॥
> कामलाज्वरपांडुत्वमेहारुच्यतिसारजित् ।

भूनिंबाद्यान् समभागान् चित्रकाद् द्वौ कुटजत्वचां षोडशभागांश्चूर्णं गुडयुतेन शीतांबुना पीतं ग्रहणीरोगादिहरम् ।

> नागरातिविषामुस्तापाठाबिल्वं रसांजनम् ॥ ३९ ॥
> कुटजत्वक्फलं तिक्ता धातकी च कृतं रजः ।
> क्षौद्रतंडुलवारिभ्यां पैत्तिके ग्रहणीगदे ॥ ४० ॥
> प्रवाहिकार्शोगुदरुग्रक्तोत्थानेषु चेष्यते ।

नागरादिद्रव्यं चूर्णितं क्षौद्रतंडुलजलाभ्यां सह पैत्तिकग्रहणीगदइष्यते । प्रवाहिकादिषु च ।

> चंदनं पद्मकोशीरं पाठां मूर्वां कुटंनटम् ॥ ४१ ॥
> षड्ग्रंथा सारिवाऽऽस्फोतासप्तपर्णाटरूषकान् ।
> पटोलोदुंबराश्वत्थवटप्लक्षकपीतनम् ॥ ४२ ॥
> कटुकां रोहिणीं मुस्तां निंबं च द्विपलांशकान् ।
> द्रोणेऽपां साधयेत्तेन पचेत्सर्पिः पिचून्मितैः ॥ ४३ ॥
> किराततिक्तेंद्रयववीरामागधिकोत्पलैः ।
> पित्तग्रहण्यां तत्पेयं कुष्ठोक्तं तिक्तकं च यत् ॥ ४४ ॥

चंदनादिद्रव्यं प्रत्येकं द्विपलांशकमपां द्रोणे पचेत् । तेन क्वाथेन पिचुप्रमाणैश्च किराततिक्तकादिभिः कल्कैः सर्पिः पचेत् । कुटंनटः स्योनाकः । आस्फोता उत्पलसारिवा । कपीतनो वानीरः । अत्र च सर्पिःप्रमाणं ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

काथापेक्षया द्वात्रिंशत्पलानि कल्प्यानि नतु कल्कापेक्षया पंच पलानि। काथादिद्रवद्रव्यस्य स्नेहपाकप्राधान्यात्। यतः काथादिद्रवमंतरेण स्नेहपाकोऽपि नोपपद्यते नतु तथा कल्कं विना। तस्मात् काथस्य प्राधान्यात् काथापेक्षयैव सर्पिर्ग्राह्यं। तदेतद्घृतं पित्तग्रहण्यां पेयं यच्च कुष्टचिकित्सिते गदितं तिक्तकं घृतं तच्च पेयं। च शब्दो महातिक्तकस्यापि ग्रहणार्थः।

श्लेष्मग्रहणीचिकित्सार्थमाह।

ग्रहण्यां श्लेष्मदुष्टायां तीक्ष्णैः प्रच्छर्दने कृते।
कट्वम्ललवणक्षारैः क्रमादग्निं विवर्धयेत्॥ ४५॥

श्लेष्मदुष्टायां ग्रहण्यां तीक्ष्णैर्द्रव्यैः प्रच्छर्दने वमने कृते सति प्रथमं कट्वम्ललवणक्षारैरग्निं विवर्धयेत्।

पंचकोलाभयाधान्यपाठागंधपलाशकैः।
बीजपूरप्रवालैश्च सिद्धैः पेयादि कल्पयेत्॥ ४६॥

पंचकोलादिभिः सिद्धैः कथितैः पेयादिकं कल्पयेत्। गंधपलाशं गंधपत्रं।

द्रोणं मधूकपुष्पाणां विडंगं च ततोऽर्धतः।
चित्रकस्य ततोऽर्धं च तथा भल्लातकाढकम्॥ ४७॥
मंजिष्ठाऽष्टपलं चैतज्जलद्रोणत्रये पचेत्।
द्रोणशेषं शृतं शीतं मध्वर्धाढकसंयुतम्॥ ४८॥
एलामृणालागुरुभिश्चंदनेन च रूषिते।
कुंभे मासं स्थितं जातमासवं तं प्रयोजयेत्॥ ४९॥
ग्रहणीं दीपयत्येष बृंहणः पित्तरक्तनुत्।
शोषकुष्टकिलासानां प्रमेहाणां च नाशनः॥ ५०॥

मधूककुसुमानां द्रोणं ततो मधुकपुष्पेभ्योऽर्धेन विडंगं ततो विडंगाच्चित्रकस्यार्धं भल्लातकस्य चाढकं मंजिष्ठायाः पलान्यष्टौ। एतत्सर्वं पानीयद्रोणत्रये पचेत्। एतच्च द्रोणशेषं शृतं शीतं मधुनोऽर्धाढकेन संयुक्तमेला-

Indira Gandhi National Centre for the Arts

दिभिः कुंभे रूषिते लिप्ते मासं स्थितं तमेवं विधं जातमासवं प्रयोजयेत्। एष आसवो ग्रहणीं दीपयति बृंहणोऽस्त्रपित्तादिनाशनः।

मधूकपुष्पस्वरसं शृतमर्धक्षयीकृतम्।
क्षौद्रपादयुतं शीतं पूर्ववत्सन्निधापयेत् ॥ ९१ ॥
तत्पिबन् ग्रहणीदोषान् जयेत्सर्वान् हिताशनः।

मधूकपुष्पाणां कुडवं स्वरसं च क्वथितमर्धक्षयीकृतमर्धावशेषं शीतं माक्षीकचतुर्थभागयुतं पूर्ववत् पूर्वेण तुल्यमेलादिरूक्षिते भांडे मासं यावत्संन्निधापयेत्सम्यक् स्थापयेत्। मधूकपुष्पकुडवमित्यादियोऽयं परिमाणनिर्देशः स इह दिङ्मात्रप्रदर्शनपरः। अनया दिशाऽयं संधातव्यो बहुर्नत्वेतावान्यथा ह्यल्पसंभृतत्वादयमासवो न शोभनः स्यात्। अन्यत्र त्वासवारिष्टलेहादौ परिपूर्णत्वात्। यथानिर्दिष्ट एवमासवो यथोक्तगुणकलापं करोति। न न्यूनाधिकमिति वेद्यं तदेतत् पिबन्नातुरो हितभोजी सन् सर्वान् ग्रहणीदोषान् जयति।

तद्वद्द्राक्षेक्षुखर्जूरस्वरसानासुतान् पिबेत् ॥ ९२ ॥

यथैष मधूकपुष्पकाथ आसवस्तथैव द्राक्षादिस्वरसानासुतान् पिबेत्। यथा च मधूकपुष्पाणां क्वाथ आदिष्टो ग्रंथकृता तथैव द्राक्षादीनां स्वरसाभावे क्वाथो ग्राह्यस्तस्य दिक्प्रदर्शनपरत्वात्।

हिंगुतिक्तावचामाद्रिपाठेंद्रयवगोक्षुरम्।
पंचकोलं च कर्षांशं पलांशं पटु पंचकम् ॥ ९३ ॥
घृततैलद्विकुडवे दध्नः प्रस्थद्वये च तत्।
आपोथ्य क्वाथयेदग्नौ मृदावनुगते रसे ॥ ९४ ॥
अंतर्धूमं ततो दग्ध्वा चूर्णीकृत्य घृताप्लुतम्।
पिबेत्पाणितलं तस्मिन् जीर्णे स्यान्मधुराशनः ॥ ९५ ॥
वातश्लेष्मामयान् सर्वान् हन्याद्विषगरांश्च सः।

हिंग्वादिकर्षप्रमाणं लवणानि पंचपलप्रमाणानि तदेतद्घृततैलयोः कुड-

Indira Gandhi National Centre for the Arts

वहये दधिप्रस्थद्वये चापोथ्य संक्षुद्य मृदावाग्नौ क्राथयेत्। रसे चानुगते प्रविष्टे सत्यनंतरमंतर्धूमं कलशे दग्ध्वा ततश्चूर्णीकृत्य कर्षमात्रं घृतालोडितं पिबेत्। तस्मिन् जीर्णे मधुरभोजी स्यात्। स च क्षारो वातकफरोगादीन् हंति।

भूनिंबं रोहिणीं तिक्तां पटोलं निंबपर्पटम् ॥ ५६ ॥
दग्ध्वा माहिषमूत्रेण पिबेदग्निविवर्धनम्।

भूनिंबादीनि दग्ध्वा माहिषमूत्रेण पिबेत्। तच्च पीतं वन्हिं वर्धयति।

द्वे हरिद्रे वचा कुष्टं चित्रकः कटुरोहिणी ॥ ५७ ॥
मुस्ता च छागमूत्रेण सिद्धः क्षारोऽग्निवर्धनः।

कटुरोहिणी कटुका। हरिद्राद्वयादेश्छागमूत्रेण सिद्धः पूर्ववदग्निवृद्धिकृत् क्षारः।

चतुःपलं सुधाकांडात्रिपलं लवणत्रयात् ॥ ५८ ॥
वार्ताककुडवं चार्कादष्टौ द्वे चित्रकात्पले।
दग्ध्वा रसेन वार्ताकाद्गुटिका भोजनोत्तराः ॥ ५९ ॥
भुक्तमन्नं पचंत्याशु कासश्वासार्शसां हिताः।
विषूचिकाप्रतिश्यायहृद्रोगशमनाश्च ताः ॥ ६० ॥

सुधास्तंभाच्चत्वारि पलानि। लवणत्रयात्त्रीणि पलानि। पक्वशुष्कवार्ताककुडवं। अर्कादष्टौ पलानि। चित्रकपले द्वे। एतत्सर्वं दग्ध्वा। ततो वार्ताकानां रसेन कृता गुलिका भुक्तमनूपयुक्ता भोजनं पचंत्याशु। कासादिभ्यो हिता विषूचिकादिभ्यश्च स्मृताः।

मातुलुंगशठी रास्ना कटुत्रयहरीतकी।
स्वर्जिकायावशूकाख्यौ क्षारौ पंचपटूनि च ॥ ६१ ॥
सुखांबुपीतं तच्चूर्णं बलवर्णाग्निवर्धनम्।

मातुलुंगादिकं चूर्णमुष्णोदकेन पीतं बलादिवर्धनम्।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

श्लैष्मिके ग्रहणीदोषे सवाते तैर्घृतं पचेत् ॥ ६२ ॥
धान्वंतरं षट्पलं च भल्लातकघृताभयम् ।

श्लैष्मिके ग्रहणीदोषे वातान्विते तैर्मातुलुंगादिभिर्घृतं पचेत् । अथवा धान्वंतरं घृतं प्रमेहचिकित्सिते दशमूलशठीत्यादिकं षट्पलं राजयक्ष्मचिकित्सिते पंचकोलयवक्षारेत्यादिकं भल्लातकघृतं गुल्मोक्तं भल्लातकानां द्विपलमित्यादिकमभयाघृतमुदरचिकित्सिते हरीतकीसूक्ष्मरजइत्यादिकम् ।

बिडं कालोषलवणं स्वर्जिकायावशूकजान् ॥ ६३ ॥
सप्तलां कंटकारीं च चित्रकं चैकतो दहेत् ।
सप्तकृत्वः स्रुतस्यास्य क्षारस्यार्धाढके पचेत् ॥ ६४ ॥
आढकं सर्पिषः पेयं तदग्निबलवृद्धये ।

बिडं लवणं काचलवणं क्षारलवणं स्वर्जिकादींश्चैकस्मिन् कृत्वा दहेत् । सप्तवारानस्य क्षारस्य स्रुतस्य चार्धाढके सर्पिष आढकं पचेत् । तद्घृतमग्निबलादिवृद्धये पेयम् ।

निचये पंचकर्माणि युंज्याच्चैतद्यथाबलम् ॥ ६५ ॥

निचये संनिपातजे ग्रहणीदोषे पंचकर्माणि वमनविरेचनस्थापनानुवासननस्यानि यथाबलं युंज्यात् । यद्यपि शिरोविरेचनाख्यस्य कर्मणो बाहुल्येन ग्रहणीदोषे प्रयोजनं न तथा दृश्यते यथा वमनादीनां तथापि भूयस्त्वमुररीकृत्य पंचकर्माणीत्युक्तं । चशब्दाद्यदेतद्ग्रहणीत्रये प्रतिदोषमाश्रित्योक्तं कर्म तदपि निचयोत्थे ग्रहणीदोषे युंज्यात् । इति ग्रहणीदोषस्य चतुर्विधस्य चिकित्सामभिधायेदानीं प्रतिपुरुषं प्रतिदोषं मंदाग्नित्वमाश्रित्य यथावस्थं चिकित्सितं निर्दिशन्नाह ।

प्रसेके श्लैष्मिकेऽल्पाग्नेर्दीपनं रूक्षतिक्तकम् ।
योज्यं कृशस्य व्यत्यासात्स्निग्धरूक्षं कफोदये ॥ ६६ ॥
क्षीणक्षामशरीरस्य दीपनं स्नेहसंयुतम् ॥
दीपनं बहुपित्तस्य तिक्तं मधुरकैर्युतम् ॥ ६७ ॥

प्रसेको द्विविधो वातिकः श्लैष्मिकश्च । तत्र मंदाग्नेः श्लेष्मप्रकोपजे प्रसेके मंदवह्नेर्दीपनं रूक्षतिक्तं यद् द्रव्यं तत्प्रयोज्यं । न घृतं नापि मधुराम्ललवणादिकम् । श्लेष्मजप्रसेकस्य च लक्षणम् । श्लेष्मणोऽतिप्रसेकेन वायुः श्लेष्माणमस्यतीत्यादि । कृशस्य पुनर्मंदाग्नेः कफोदये सति व्यत्यासात् पर्यायेणाप्यतिक्रमैर्व्यतिहारार्थः । व्यत्यासात् स्निग्धरूक्षं योज्यं । स्निग्धं योजयित्वा रूक्षं योज्यम् । रूक्षं योजयित्वा स्निग्धं योज्यमित्यर्थः । यदि हि कृशे बहुकफे रूक्षे च नरे रूक्षमेव युंज्यात् । ततो रूक्षे केवले युज्यमाने कार्श्यस्य वृद्धिः स्यात् । अथ स्नेहमेव युंज्यात् । ततः स्नेहे केवले युज्यमाने कफवृद्धिः स्यादिति व्यत्यासेन स्निग्धरूक्षमुपयुक्तं । क्षीणक्षामशरीरस्य तु कफोदये दीपनं द्रव्यपंचकोलादिकं स्नेहैर्घृतादिसंयुतं स्नेहसंयुक्तं युंज्यात् । बहुपित्तस्य मंदाग्नेस्तिक्तं मधुरकैर्द्रव्यैर्युक्तं दीपनं योज्यम् । बहुवातस्य मंदाग्नेर्नरस्य स्नेहोऽम्ललवणैर्युक्तः प्रायेण शस्यते । स्नेहस्य मंदाग्निविषयेभ्योऽन्यद्रव्येभ्यः प्रायेण प्राधान्यं सर्वपुरुषं प्रति द्योतयितुमिदं श्रुति ।

स्नेहोऽम्ललवणैर्युक्तो बहुवातस्य शस्यते ।
स्नेहमेव परं विद्याद्दुर्बलानलदीपनम् ॥ ६८ ॥
नालं स्नेहसमिद्धस्य शमायान्नं सुगुर्वपि ।

एवेत्यवधारणे । परं प्रधानम् । स्नेहमेव मंदाग्नेर्विद्यान्न ततोन्यद्द्रव्यम् । तस्मान्मंदाग्नेर्दोषप्रतिपत्तिपक्षैरौषधैर्युक्तः स्नेहो बाहुल्येन पथ्यः। अत एवेदं कारणं निर्दिशन्नाह। नालमित्यादि यस्मात्स्नेहोद्दीपितस्याग्नेः सुष्टुगुर्वप्यन्नं शमाय नालं पर्याप्तम् । तस्मात् स्नेह एव दुर्बलानलदीपनाय श्रेष्ठः ।

योऽल्पाग्नित्वात्कफे क्षीणे वर्चः पक्वमपि श्लथम् ॥ ६९ ॥
मुंचेद्यद्दौषधयुतं स पिबेदल्पशो घृतम् ।
तेन स्वमार्गमानीतः स्वकर्मणि नियोजितः ॥ ७० ॥
समानो दीपयत्यग्निमग्नेः संधुक्षको हि सः ।

यो नरोऽल्पाग्नित्वात्कफे क्षीणे सति पुरीषं पक्वमपि शिथिलं मुंचेत् स

Indira Gandhi National Centre for the Arts

नरोऽल्पमल्पं घृतं पिबेत्। किंभूतम्। यद्दोषधयुतं सैंधवशुंठीयुक्तम्। तेन सर्पिषा समानः स्वमार्गमानीय स्वकर्मण्यन्नपचनाख्ये नियोजितोऽग्निं संदीपयति। यतोऽसौ समानोऽग्नेः संधुक्षकः।

पुरीषं यश्च कृच्छ्रेण कठिनत्वाद्विमुंचति ॥ ७१ ॥
स घृतं लवणैर्युक्तं नरोऽन्नावग्रहं पिबेत्।

यश्च पुरुषः पुरीषं काठिन्यात्संहतत्वाद्धेतोः कृच्छ्रेण मुंचति। स नरो लवणैः पंचभिर्युक्तं घृतं पिबेत्। किं भूतं। अन्नावग्रहमन्नेनावग्रहः सहसोर्ध्वकायगमनप्रतिबंधोऽवष्टंभो यस्य तदेवं घृतं पीत्वाऽन्नं भोक्तव्यमित्यर्थः।

रौक्ष्यान्मंदेऽनले सर्पिस्तैलं वा दीपनैः पिबेत् ॥ ७२ ॥

रौक्ष्याद्धेतोर्मंदेऽग्नौ सति सर्पिरथवा तैलं दीपनैर्युतं पिबेत्।

क्षारचूर्णासवारिष्टान् मंदे स्नेहातिपानतः।

स्नेहातिपानाद्धेतोर्मंदेऽग्नौ सति क्षारादीन् पिबेत्।

उदावर्तात्प्रयोक्तव्या निरूहस्नेहबस्तयः ॥ ७३ ॥

उदावर्तात्पुनर्मंदेऽग्नौ सति निरूहस्नेहबस्तयः मोक्तव्याः।

दोषातिवृध्याऽमंदेऽग्नौ संशुद्धेऽन्नविधिं चरेत्।

दोषातिवृध्या मंदेऽग्नौ सति वमनविरेचनादिभिर्हृतदोषः कृतशुद्धिरत्र विधिपेयादिक्रममाचरेत्।

व्याधिमुक्तस्य मंदेऽग्नौ सर्पिरेव तु दीपनम् ॥ ७४ ॥

व्याधिमुक्तस्य मंदेऽग्नौ सर्पिरेव दीपनं स्यान्नान्यत्तथा द्रव्यम्।

अध्वोपवासक्षामत्वैर्यवाग्वा पाययेद्घृतम्।
अन्नावपीडितं बल्यं दीपनं बृंहणं च तत् ॥ ७५ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

अध्वोपवासक्षामत्वैर्मंदेऽग्नौ यवाग्वा सहघृतं पाययेद्वैद्य इति शेषः। किंभूतं। अल्पेनावपीडितमन्नावपीडितं मध्यभक्तं घृतमित्यर्थः। एवं पीतं बल्यं बृंहणं दीपनं च तद्भवति।

दीर्घकालप्रसंगात्तु क्षामक्षीणकृशान्नरान्।
प्रसहानां रसैः साम्लैर्भोजयेत्पिशिताशिनां॥ ७६॥
लघूष्णकटुशोधित्वाद् दीपयंत्याशु तेऽनलम्।
मांसोपचितमांसत्वात्परं च बलवर्धनम्॥ ७७॥

दीर्घकालप्रसंगात्तु मंदेऽग्नौ सत्यसम्यगाहाररसपरिणत्या हेतुभूतया क्षामक्षीणकृशान्नरान् पिशिताशिनां प्रसहादीनां रसैः साम्लैर्भोजयेत्। कस्मात्तानेतान् भोजयेदित्याह। लघूष्णेत्यादि लघुत्वादुष्णत्वादित्यादि लघुत्वात्कटुत्वाच्छोधनत्वाच्च ते रसाः शीघ्रमग्निं दीपयंति। भावप्रधाननिर्देशः पूर्वश्चार्थे योज्यः। ननु प्रागभ्यधायि। गुरूष्णस्निग्धमधुरा वर्गाश्चस्तो यथोत्तरमिति। इह च प्रसहानां लघुत्वमुच्यतस्तदिमे वचसी परस्परं व्याघाते। अत्र ब्रूमः। लाघवशब्दोत्र क्रियाविशेषार्थो धावनप्लवनलंघनादिका चेष्टा तस्याः पाटवविशेषो लाघवं। यथा च प्रागध्यगीष्ट। लाघवं कर्म सामर्थ्यमिति। एवं चात्राविरोधः। हेतुनिर्देशादन्येप्येवं प्राया ये मांसरसास्तानप्येतान् भोजयेदिति। ते च प्रसहा मांसोपचितमांसत्वाद्धेतोः सुष्ठु बलं वर्धयंति।

स्नेहासवसुरारिष्टचूर्णक्काथहिताशनैः।
सम्यक्प्रयुक्तैर्देहस्य बलमग्नेश्च वर्धते॥ ७८॥

स्नेहादिभिः सम्यक् प्रयुक्तैः शरीरस्याग्नेश्च बलं वर्धते। तस्मात् स्नेहादयो यथावस्थं प्रयोज्या इति भावः। अधुना स्नेहस्याग्निवृद्धिकरत्व दृष्टांतेन दर्शयति।

दीप्तो यथैव स्थाणुश्च बाह्योग्निः सारदारुभिः।
सस्नेहैर्जायते तद्वदाहारैः कोष्ठगोऽनलः॥ ७९॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

यथा येन प्रकारेण सारदारुभिः शमीखदिरादिभिः सस्नेहैर्बाह्योग्नि- र्दीप्तः स्थाणुः स्थिरश्च जायते तथैव कोष्ठकोग्निः सस्नेहैः पथ्यरूपैराहारैः पटुतरः स्थिरश्च संपद्यते ।

नाऽभोजनेन कायाग्निर्दीप्यते नातिभोजनात् ।
यथा निरिंधनो वन्हिरल्पो वाऽतींधनान्वितः ॥ ८० ॥

नाभोजनेन कायाग्निर्दीप्यते । नचातिभोजनेन । अत्रैव दृष्टांतमाह । यथा बाह्योग्निर्निरंधनो न दीप्यते नश्यति । अल्पोऽग्निर्बाह्योऽतींधनेन बहु- भिर्दारुभिरावृतो नश्यति न दीप्यते । एवं कोष्टाग्निरप्यभोजनातिभोजनाभ्यां नश्यति न दीप्यत इत्यर्थः ।

यदा क्षीणे कफे पित्तं स्वस्थाने पवनानुगम् ।
प्रवृद्धं वर्धयत्यग्निं तदाऽसौ सानिलोऽनलः ॥ ८१ ॥
पक्त्वान्नमाशु धातूंश्च सर्वानोजश्च संक्षिपन् ।
मारयेत्स्यान्नरः स्वस्थो भुक्ते जीर्णे तु ताम्यति ॥ ८२ ॥
तृट्कासदाहमूर्छाद्या व्याधयोऽत्यग्निसंभवाः ।

यस्मिन् काले कफे क्षीणे क्षयं यातेऽत एव स्वस्थान आमाशयाख्ये पित्तं वृद्धं । किं भूतं । पवनानुगम् । मारुतेन धमनस्वभावेन पश्चाद्युक्तं। अत एव तत्पित्तमग्निं वर्धयति । तदा तस्मिन्काले ऽसावनलो जाठराग्निः सानिलः पवनसहितोऽन्नं पक्काऽनंतरं पक्तव्याभावात्सर्वान् धातून् पक्काऽऽशु पुरुषं मारयेत् । किं कुर्वन् । ओजश्च संक्षिपन् संहरन् विनाशयन्नित्यर्थः । ननु पित्तानिलयोर्द्वयोः प्रकृतत्वात्सपित्ताऽनिलोऽनल इति वक्तुमुयुक्तं स्यात् । नैवं । पित्तं वन्हिर्वन्हिजं चेति कृत्वा तदानीं जठराग्निना सहैकतां प्राप्तं पित्तमिति सानिलोनल इति निर्दिष्टं । सोत्यग्निपीडितो ना पुरुषो भुक्ते स्वस्थः स्यात् । जीर्णे तु ताम्यति । उपतप्यते । अनेकार्थत्वाद्धातूनामुपतापा- र्थस्ताम्यति । तमकलक्षणेऽपि प्रागभ्यगीष्ट । अथास्योपद्रवान् वक्ति । तृष्णादयो रोगा अत्यग्नेः संभवंति ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

तमत्यग्निं गुरुस्निग्धमंदसांद्रहिमस्थिरैः ॥ ८३ ॥
अन्नपानैर्नयेच्छांतिं दीप्तमग्निमिवांबुभिः ।

तमत्यग्निं भस्मकाख्यं गुरुस्निग्धादिभिरन्नपानैः शांतिं नयेत् । क-मिव । दीप्तमिद्धमग्निं बाह्यं यथा जलैः ।

मुहुर्मुहुरजीर्णेऽपि भोज्यान्यस्योपहारयेत् ॥ ८४ ॥
निरिंधनोंतरं लब्ध्वा यथैनं न विपादयेत् ।

मुहुर्मुहुः क्षणे क्षणेऽजीर्णेऽपि भोज्यानि कृशरादीन्युपहारयेदाहारार्थं प्रकल्पयेत् । अजीर्णेपीत्यपिशब्दात्किमुत जीर्णे भोज्यान्युपहारयेदिति । कि-मित्येवं क्रियत इत्याह । यथेत्याह यस्मात्तस्मात्तथा तेन प्रकारेणाजीर्णेऽपि पुनः पुनराहारोपयोगेन निरिंधनोऽग्निरंतरमवकाशं लब्ध्वा यथा एनं न विपादयेत् । कानि भोज्यानीत्याह ।

कृशरां पायसं स्निग्धं पैष्टिकं गुडवैकृतम् ॥ ८५ ॥
अश्नीयादौदकानूपपिशितानि भृतानि च ।
मत्स्यान्विशेषतः श्लक्ष्णान् स्थिरतोयचराश्च ये ॥ ८६ ॥

कृशरामित्यादीनि भुंजीत। गुडवैकृतमिति । विकृतमेवं वैकृतम् । प्रज्ञादि-त्वादण् । तथौदकानां कच्छपादीनां पिशितानि । तथाऽऽनूपानि वराहा-दीनां भृतानि मेदुराणि भक्षयेत् । विशेषेण मत्स्यान् । श्लक्ष्णानपरुषान् । चशब्दाद्ये च स्थिरतोयचरा अवहजलाश्रितास्तानप्यश्नीयात् ।

आविकं सुभृतं मांसमद्यादत्यग्निवारणम् ।

आविकं मांसं सुभृतमतीवमेदुरमत्यग्निवारणमद्यात् ।

पयः सहमधूच्छिष्टं घृतं वा तृषितः पिबेत् ॥ ८७ ॥
गोधूमचूर्णं पयसा बहुसर्पिःपरिप्लुतम् ।
आनूपरससंयुक्तान्वा स्नेहांस्तैलविवर्जितान् ॥ ८८ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

श्यामात्रिवृद्भिपक्वं वा पयो दद्याद्विरेचनम् ।
असकृत्पित्तहरणं पायसं प्रतिभोजनम् ॥ ८९ ॥

तथा तृषितः सन् पयः पिबेत् । किंभूतं । सहमधूच्छिष्टं समदनं सर्पिर्वा । एवंभूतं पिबेत् । गोधूमचूर्णं बहुघृतं क्षीरेणालोडितं पिबेत् । अथवाऽनुपमांसरसान्वितान् स्नेहान् पिबेत् । किंभूतान् । तैलस्य पित्तकृत्त्वान्निषेधः । अथवा श्यामात्रिवृद्भ्यां विपक्वं क्षीरं विरेचनं दद्यात् । तथा पुनः पुनः पित्तस्याहरणे पायसस्य प्रतिभोजनं हितं ।

अधुना संक्षेपेण चिकित्सामाह ।

यत्किंचिद्गुरु मेध्यं च श्लेष्मकारि च भोजनम् ।
सर्वं तदत्यग्निहितं भुक्त्वा च स्वपनं दिवा ॥ ९० ॥

यद्गुरुभोजनं मेदस्करं श्लेष्मकरं च तदत्यग्नये हितं । भुक्त्वा च यद्दिवा स्वपनं तच्च हितं ।

ननु किमिति गुर्वादिभोजनमत्यग्नये दीयत इत्याह ।

आहारमग्निः पचति दोषानाहारवर्जितः ।
धातून् क्षीणेषु दोषेषु जीवितं धातुसंक्षये ॥ ९१ ॥

अग्निः पूर्वमाहारं पचति । आहाररहितस्त्वग्निर्दोषान् पचति । तदभावाद्धातून् पचति । धातुसंक्षये सति जीवितं पचति नाशयतीत्यर्थः ।

एतत्प्रकृत्यैव विरुद्धमन्नं संयोगसंस्कारवशेन चेदम् ।
इत्याद्यविज्ञाय यथेष्टचेष्टाश्चरंति यत्साग्निबलस्य शक्तिः॥९२॥
तस्मादग्निं पालयेत्सर्वयत्नैस्तस्मिन्नष्टे याति ना नाशमेव ।
दोषैर्ग्रस्ते ग्रस्यते रोगसंघैर्युक्ते तु स्यान्नीरुजो दीर्घजीवी॥९३॥

एतदन्नं प्रकृत्या स्वभावेनैव विरुद्धमपथ्यं यथा करमर्दकदधिसर्षपशाकफाणितशुष्कमांसविरूढकाममूलकलकुचादिकं । संयोगविरुद्धं यथा । क्षीरमम्लेन सहानूपमामिषं माषैः सहेत्यादि । संस्कारविरुद्धं यथा । हारीतमांसं हारिद्रशूलप्रोतं हारिद्रादिवन्हिना पाचितमित्यादि । एवमिदं

Indira Gandhi National Centre for the Arts

प्रकृत्यादिविरुद्धं संयोगस्य संस्कारस्य च वशेन सामर्थ्ये चेदं विरुद्धं। आदिग्रहणान्मात्राकालादिपरिग्रहः। तत्र मात्राविरुद्धं यथा। मधुघृतं। समकालवशेनेदं यथा। रात्रिपर्युषिता काकमाची। पात्रवशेनेदं यथा। कांस्ये दशाहमुषितं सर्पिः। इत्याद्यविज्ञायाबुध्वाऽपर्यालोच्य यथेष्टचेष्टा यथाभिलाषमाहारमासेवमाना यच्चरंति। साऽग्निबलस्य शक्तिः सामर्थ्यं। यत एवं तस्मादग्निमलयेत्सर्वान्नैरखिलक्रियानुष्ठानैः। तस्मिन्नग्नौ नष्टे क्षीणे ना पुरुषो नाशं याति दोषैर्ग्रस्तवन्हौ ना पुरुषो रोगसंघैर्ग्रस्यते पीड्यते। युक्ते स्वच्छे पुनरग्नौ नीरुजो दीर्घजीवी च भवेदिति शेषः। उपजातिशालिन्यौ वृत्ते।

इति श्रीमदरुणदत्तविरचितायां चिकित्सितस्थाने ग्रहणीदोषचिकित्सितं नाम दशमोऽध्यायः॥ १०॥

एकादशोऽध्यायः।

ग्रहणीदोषचिकित्सितादनंतरं मूत्राघातचिकित्सितमारभ्यते। संबंधश्चात्र स्तंभनत्वात्। तथा च प्रागभ्यैष्ट न बस्तिबस्तिशिरोमेढ्र कटीवृषणपायवः। एकसंबंधनाः प्रोक्ता गुदास्थिविवराश्रया इति। तेनेदमाह।

अथातो मूत्राघातचिकित्सितं व्याख्यास्यामः॥
कृच्छ्रे वातघ्नतैलाक्तमधोनाभेः समीरजे।
सुस्निग्धैः स्वेदयेदंगं पिंडसेकावगाहनैः॥ १॥

कृच्छ्रे मूत्रकृच्छ्रे आदिपदलोपं कृत्वा। एवं निर्दिष्टं। यथा। मांसरसे रस इति। मूत्रकृच्छ्रे वातोत्थेऽंगं शरीरं वातघ्नतैलेन बलातैलेन बलातैलादिनाऽभ्यक्तमधो नाभेः समंतात् स्वेदैः पिंडादिभिः सुष्टुस्निग्धैर्नरूक्षैः स्वेदयेत्।

दशमूलबलैरंडयवाभीरुपुनर्नवैः।
कुलत्थकोलपत्तूरवृश्चीवोपलभेदकैः॥ २॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

तैलसर्पिर्वराहर्क्षवसाः क्वथितकल्कितैः ।
सपंचलवणाः सिद्धाः पीताः शूलहराः परम् ॥ ३ ॥

दशमूलादिभिः क्वथितकल्कितैस्तैलसर्पिर्वराहर्क्षवसाः सिद्धाः पक्वाःसहपंचलवणैर्वर्तंत इति सपंचलवणाः पीताः परं सुष्ठु शूलहराः ।

द्रव्याण्येतानि पानान्ने तथा पिंडोपनाहने ।
सहतैलफलैर्युंज्यात्साम्लानि स्नेहवंति च ॥ ४ ॥

एतानि दशमूलादीनि द्रव्याणि पानान्ने तद्विजयाय तथा पिंडोपनाहाख्यं स्वेदद्वयं तैलफलैः सह युंज्यात् । सार्थानि फलानि नालिकेराक्षोडादीनि तैलफलानि । यथा यूपायदारुः । तैः सह । केचित्तु तैलफलानि तिलानाहुः । किंभूतानि । सीम्लानि सहाम्लैस्त्वक्रारनालादिभिर्वर्त्तंत इति साम्लानि तथा स्नेहवन्ति बहुस्नेहानि । भूमनिमतुप् ।

सौवर्चलाढ्यां मदिरां पिबेन्मूत्ररुजापहाम् ।

तथा मदिरां बहुसौवर्चलां मूत्ररुजापहां पिबेत् ।

पैत्ते युंजीत शिशिरं सेकलेपावगाहनम् ॥ ५ ॥

पैत्ते मूत्रकृच्छ्रे शीतलं सेकलेपावगाहनं युंजीत ।

पिबेद्वरीं गोक्षुरकं विदारीं सकसेरुकाम् ।
तृणाख्यं पंचमूलं च पाक्यं समधुशर्करम् ॥ ६ ॥

तथा शतावर्यादिकं पाक्यं कृत्वा समधुशर्करं पिबेत् ।

वृषकं त्रपुसैर्वारु लट्वाबीजानि कुंकुमम् ।
द्राक्षांभोभिः पिबेत्सर्वान् मूत्राघातानपोहति ॥ ७ ॥

वृषकादिकं कल्कीकृत्य द्राक्षाजलेन पिबन् सर्वान् मूत्राघातान्पराकरोति । अपोहतीत्युपसर्गादस्यत्यूहोर्वावचनमिति परस्मैपदं । वृषकः पाषाणभेदकः । लट्वाबीजं कुसुंभबीजम् ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

एर्वारुबीजयष्ट्याह्वदार्वीर्वा तंडुलांबुना ।
तोयेन कल्कं द्राक्षायाः पिबेत्पर्युषितेन वा ॥ ८ ॥

एर्वारुबीजादिकं वा तंडुलांभसा पिबेत् । पूर्वगुणम् । पर्युषितेन वा जलेन द्राक्षाकल्कं पिबेत् ।

कफजे वमनं स्वेदं तीक्ष्णोष्णकटुभोजनम् ।
यवानां विकृतीः क्षारं कालसेयं च शीलयेत् ॥ ९ ॥

कफजे मूत्रकृच्छ्रे वमनादीनि शीलयेत् ।

पिबेन्मद्येन सूक्ष्मैलां धात्रीफलरसेन वा ।
सारसास्थिश्वदंष्ट्रैलाव्योषं वा मधुमूत्रवत् ॥ १० ॥
स्वरसं कंटकार्या वा पाययेन्माक्षिकान्वितम् ।
शितिवारकबीजं वा तक्रेण श्लक्ष्णचूर्णितम् ॥ ११ ॥
धवसप्ताह्वकुटजं गुडूचीचतुरंगुलम् ।
कटुकैलाकरंजं च पाक्यं समधुसाधितम् ॥ १२ ॥
तैर्वा पेयां प्रवालं वा चूर्णितं तंडुलांबुना ।
स तैलं पाटलाक्षारं सप्तकृत्वोऽथवा स्रुतम् ॥ १३ ॥

तथा मद्येन सूक्ष्मैलां पिबेत् । आमलकरसेन वा सूक्ष्मैलां पिबेत् । सारस्थ्यादीनि मधुयुक्तानि गोमूत्रेण पिबेत् । अथवा कंटकार्याः स्वरसं समाक्षिकं पाययेत् । शितिवारकस्य करंजस्य बीजं श्लक्ष्णपिष्टं तक्रेण सह पाययेत् । धवादिभिः कृतंपाक्यं काथं वा समधु पाययेत् । तैर्धवादिभिः साधितां पेयां पाययेत् । प्रवालं विद्रुमं रजीकृतं तंडुलांभसा पाययेत् । पाटलायाः क्षारं सप्तवारान् स्रुतं तैलेन वा पाययेत् ।

पाटलीयावशूकाभ्यां पारिभद्रात्तिलादपि ।
क्षारोदकेन मदिरां त्वगेलोषकसंयुताम् ॥ १४ ॥
पिबेद्गुडोपदंशान्वा लिह्यादेतान् पृथक् पृथक् ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

पाटलीयवक्षाराभ्यां क्षारोदकेन तथा पारिभद्र तिलक्षारोदकेन मदिरां त्वगलोषकसंयुक्तां पिबेत् । ऊषकः कल्लरः । गुडोपदंशान्वेति । अथवा गुडमुपदंश्य एतान् त्वगादीन् पृथक् पृथग् लिह्यात् ।

संनिपातात्मके सर्वं यथावस्थमिदं हितम् ॥ १५ ॥
अश्मन्यथ चिरोत्थाने वातबस्त्यादिकेषु च ।

सन्निपातात्मके मूत्रकृच्छ्रे सर्वमिदं पूर्वोक्तं पृथग् दोषात्मकमूत्रकृच्छ्रनिर्दिष्टं यथावस्थमवस्थामपेक्ष्य हितं । न केवलं सन्निपातात्मके कृच्छ्रे माङ् निर्दिष्टं पृथक् दोषात्मकमूत्रकृच्छ्रचिकित्सितं हितं । यावदश्मर्यामप्यचिरोत्थानमचिरकाल उत्थानं जन्म यस्य तस्मिन् हितं । च शब्दाद्वातबस्त्यादिकेषु मूत्राघातेषु हितं । आदिशब्देन वातकुंडलीकादयो गृह्यंते ।

अश्मरी दारुणो व्याधिरंतक प्रतिमो मतः ॥ १६ ॥
तरुणो भेषजैः साध्यः प्रवृद्धश्छेदमर्हति ।

अश्मरी दारुणो व्याधिरंतकप्रतिमस्तत्तुल्यो मतः । शीघ्रप्राणहरत्वात् । स चाश्मरी तरुणश्चिरोत्पन्न औषधैः साध्यः साधयितुं शक्यः । प्रवृद्धः सपुनश्छेदनं पाटनं शस्त्रेणार्हति ।

तस्य पूर्वेषु रूपेषु स्नेहादिक्रम इष्यते ॥ १७ ॥

तस्याश्मर्याख्यस्य व्याधेः प्राग्रूपेषु स्नेहादिक्रम इष्यते । आदिशब्दः स्वेदनवमनादीनां ग्रहाय । अथ स्नेहमाह ।

पाषाणभेदो वसुको वशिरोऽश्मंतको वरी ।
कपोतवंकातिबलाभल्लूकोशीरकच्छकम् ॥ १८ ॥
वृक्षादनी शाकफलं व्याघ्री गुंठत्रिकंटकम् ।
यवाः कुलत्थाः कोलानि वरुणः कतकात्फलम् ॥ १९ ॥
ऊषकादिप्रतीवापमेषां क्वाथे शृतं घृतम् ।
भिनत्ति वातसंभूतां तत्पीतं शीघ्रमश्मरीम् ॥ २० ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

पाषाणभेदादीनां क्वाथे घृतं शृतमूषकादिगणोक्तं द्रव्यमतिवापेन कल्कं सत्पीतं वातजामश्मरीं भिनत्ति । वसुक ईश्वरमल्लिका । वशीरं सामुद्रलवणम् । अश्मंतको मालुकपर्णः । कपोतवंका सुवर्चला । भल्लूकः स्योनाकः ।

गंधर्वहस्तबृहती व्याघ्रीगोक्षुरकेक्षुरात् ।
मूलकल्कं पिबेद्दध्ना मधुरेणाश्मभेदनम् ॥ २१ ॥

गंधर्वहस्तादीनां समाहारद्वंद्वः । अनित्यमागमशासनमिति तु प्रकृतम् । एरंडादीनां द्रव्याणां यन्मूलं तत्कल्कीकृत्य मधुरेण दध्ना पिबेदश्मभेदनं चात्र प्रकृतत्वाद्वाताश्मरीभेदनं गम्यते ।

कुशः काशः शरो गुंठ इत्कटो मोरटोऽश्मभित् ।
दर्भो विदारी वाराही शालीमूलं त्रिकंटकः ॥ २२ ॥
भल्लुकः पाटली पाठा पत्तूरः सकुरंटकः ।
पुनर्नवा शिरीषश्च तेषां क्वाथे पचेद्घृतम् ॥ २३ ॥
पिष्टेन त्रपुसादीनां बीजेनेंदीवरेण च ।
मधुकेन शिलाजेन तत्पित्ताश्मरिभेदनम् ॥ २४ ॥

कुशादीनां क्वाथे त्रपुसादीनां पूर्वोक्तानां त्रपुसैर्वारुलट्वादीनां बीजेन नीलोत्पलबीजेन मधुकेन च पिष्टेन शिलाजतुना च घृतं पिबेत् । तत्पित्ताश्मरीभेदनं भवति । शोधनादिगणसंग्रहोक्तास्तु त्रपुसादयोऽत्र न गृह्यंते तदंतःपातिनां पित्तविरोधिनां सर्पिरादीनां द्रव्याणां तत्र पाठात् ।

वरुणादिः समीरघ्नौ गणावेलाहरेणुका ।
गुग्गुलुर्मरिचं कुष्टं चित्रकः ससुराह्वयः ॥ २५ ॥
तैः कल्कितैः कृतावाप मूषकादिगणेन च ।
भिनत्ति कफजामाशु साधितं घृतमश्मरीम् ॥ २६ ॥

वरुणसैर्यकेत्यादिवरुणादिर्गणः समीरणघ्नौ गणौ वीरतरादिस्तथा विदार्यादिरेतैर्वरुणादिभिर्द्रव्यैः कल्कीकृतैस्तथोषकादिगणेन ऊषकशुद्धमित्यादिना कृतावापं च कल्कं च कृत्वा घृतं साधितमाशु कफजामश्मरीं हंति ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

क्षारक्षीरयवाग्वादि द्रव्यैः स्वैः स्वैश्च कल्पयेत् ।

क्षारादि च स्वैः स्वैस्तद्योग्यैर्द्रव्यैः कल्पयेत् ।

पिचुकांकोल्लकतकशार्केदीवरजैः फलैः ॥ २७ ॥
पीतमुष्णांबु सगुडं शर्करापातनं परम् ।

पिचुकादिभिरुष्णांबु सगुडं पीतं शर्करायाः परं शातनं । पिचुकः शीतिवारकः ।

क्रौंचोष्ट्ररासभास्थीनि श्वदंष्ट्रा तालपत्रिका ॥ २८ ॥
अजमोदाकदंबस्य मूलं विश्वस्य चौषधम् ।
पीतानि शर्करां भिद्युः सुरयोष्णोदकेन वा ॥ २९ ॥

क्रौंचास्थ्यादीनि पीतानि सुरयोष्णजलेन वा शर्करां हन्युः ।

नृत्यकुंडलबीजानां चूर्णं माक्षिकसंयुतम् ।
अविक्षीरेण सप्ताहं पीतमश्मरिपातनम् ॥ ३० ॥

तुंबरीबीजानां चूर्णं माक्षीकान्वितमविक्षीरेण सप्ताहं पीतमश्मरिपातनं । अत्राश्मरिशब्दस्य ण्यापोः संज्ञाछंदसोरिति ह्रस्वः ।

क्वाथश्च शिग्रुमूलोत्थः कदुष्णोऽश्मरिपातनः ।

सोभांजनकमूलक्वाथश्च कोष्णः पीतोऽश्मरिपातनः ।

तिलापामार्गकदलीपलाशयवसंभवः ॥ ३१ ॥
क्षारः पेयोऽविमूत्रेण शर्करास्वश्मरीषु च ।

तिलादिसंभवः क्षारोऽविमूत्रेण शर्करास्वश्मरीषु च विषये पेयः ।

कपोतवंकामूलं वा पिबेदेकं सुरादिभिः ॥ ३२ ॥
तत्सिद्धं वा पिबेत्क्षीरं वेदनाभिरुपद्रुतः ।
हरीतक्यस्थिसिद्धं वा साधितं वा पुनर्नवैः ॥ ३३ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

क्षीरान्नभुग्बर्हिशिखामूलं वा तंडुलांबुना ।

कपोतवंकाया मूलं केवलं सुरोष्णजलादिभिः पिबेत् । तया कपोतवंकया सिद्धं शृतं वा क्षीरं वेदनोपद्रुतः पिबेत् । हरीतक्यस्थिभिः सिद्धं वा क्षीरमथवा पुनर्नवपक्वं क्षीरं पिबेत् । मयूरशिखामूलं तंडुलांभसा पिबेत् । किंभूतः । क्षीरान्नाशी सन् ।

मूत्राघातेषु विभजेदतः शेषेष्वपि क्रियाम् ॥ ३४ ॥

अतोऽस्मात्पूर्वोक्ताच्चिकित्सितात् तद्यथायोगं शेषेष्वपि मूत्राघातेषु मूत्रातीतादिष्वपि क्रियां विभजेन्निरूप्य कुर्यात् ।

बृहत्यादिगणे सिद्धं द्विगुणीकृतगोक्षुरे ।
तोयं पयो वा सर्पिर्वा सर्वमूत्रविकारजित् ॥ ३५ ॥

बृहत्यादिगणे द्विगुणीकृतगोक्षुरे जलं पक्वं क्षीरं वा सर्पिर्वा सर्वान्मूत्रविकारान् जयति ।

देवदारु घनं मूर्वां यष्टी मधु हरीतकीम् ।
मूत्राघातेषु सर्वेषु सुराक्षीरजलैः पिबेत् ॥ ३६ ॥

देवदार्वादीन् सुरादीनामन्यतमेन सर्वेषु मूत्राघातेषु पिबेत् ।

रसं वा धन्वयासस्य कषायं ककुभस्य वा ।
सुखांभसा वा त्रिफलां पिष्टां सैंधवसंयुताम् ॥ ३७ ॥
व्याघ्रीगोक्षुरकक्वाथे यवागूं वा सफाणिताम् ।
क्वाथे वीरतरादेर्वा ताम्रचूडरसेऽपि वा ॥ ३८ ॥
अद्याद्वीरतराद्येन भावितं वा शिलाजतु ।

धन्वयवासकस्य रसं वा ककुभस्य क्वाथं वा त्रिफलामुष्णोदकेन पिष्टां सैंधवान्वितां पिबेत् । कंटकारिकागोक्षुरक्वाथसिद्धां वा यवागूं सफाणितां पिबेत् । वीरतरादेः क्वाथे वा सिद्धां पेयां पिबेत् । अथवा ताम्रचूडस्य

Indira Gandhi National Centre for the Arts

कुक्कुटस्य मांसरसे सिद्धां पेयां पिबेत्। शिलाजतु वीरतरादिगणेन वा भावितमद्यात्।

मद्यं वा निगदं पीत्वा रथेनाश्वेन वा व्रजन् ॥ ३९ ॥
शीघ्रवेगेन संक्षोभात् तथास्य च्यवतेऽश्मरी ।

अथवा पुराणं मद्यं पीत्वा रथेनाश्वेन वा शीघ्रवेगेन गच्छेत्। तथा तेन प्रकारेण संक्षोभितस्य तस्याश्मरी च्यवते।

सर्वथा चोपयोक्तव्यो वर्गो वीरतरादिकः ॥ ४० ॥
रेकार्थं तैल्वकं सर्पिर्बस्तिकर्म च शीलयेत् ।
विशेषादुत्तरान् बस्तीन्

सर्वेण च प्रकारेण क्वाथपेयाजलादिषु वीरतरादिको योज्यः। विरेचनार्थं तैल्वकं शम्याकेनेत्यादिना साधितं सर्पिरुपयोक्तव्यम्। तथा बस्तिकर्म प्राक् स्नेह एक इत्यादि शीलयेत्। विशेषेणात्रोत्तरबस्तीनभ्यसेत्।

शुक्राश्मर्यां च शोधिते ॥ ४१ ॥
तैर्मूत्रमार्गे बलवान् शुक्राशयविशुद्धये ।
पुमान् सुतृप्तो वृष्याणां मांसानां कुक्कुटस्य च ॥ ४२ ॥
कामं सकामाः सेवेत प्रमदा मददायिनीः ।

शुक्राश्मर्यां च तैरुत्तरबस्तिभिर्मूत्रमार्गे शोधिते सति पुमान् वृष्याणां द्रव्याणां कुक्कुटस्य मांसानां च सुहितः सन् यथेच्छं मददायिनीः प्रमदाः सेवेत। शुक्राशयविशुद्धये कुक्कुटस्य वृष्यत्वेनैव ग्रहणमतिशयेन कुक्कुटस्यात्र पथ्यत्वमिति ज्ञापनार्थमुपादानम्।

सिद्धैरुपक्रमैरेभिर्नचेच्छान्तिस्तदा भिषक् ॥ ४३ ॥
इति राजानमापृच्छ्य शस्त्रं साध्ववचारयेत् ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

एभिः पूर्वोक्तैरुपक्रमैः सिद्धैरश्मरीहरैर्यदि शमो न स्यात् । तदेति राजानमापृच्छ्याश्मर्या हरणं शस्त्रं साध्ववचारयेत् । किमापृच्छयेत्याह ।

अक्रियायां ध्रुवो मृत्युः क्रियायां संशयो भवेत् ॥ ४४ ॥
निश्चितस्यापि वैद्यस्य बहुशः सिद्धकर्मणः ।

हे नृपते जातव्याधावक्रियायां चिकित्सां विना ध्रुवोऽवश्यं मृत्युः स्यात् । अपरंच क्रियायां चिकित्सायां क्रियमाणायां निश्चितस्यापि शास्त्रार्थविदोपि वैद्यस्य तथा बहुशोऽनेकशः सिद्धकर्मणो निष्पन्नक्रियाक्रमस्यापि संशयो भवेत् । कदाचिज्जीवति न वा एवं प्रकारेण राजानमापृच्छ्य ।

अथातुरमुपस्निग्धं शुद्धमीषच्च कर्शितम् ॥ ४५ ॥
अभ्यक्तस्विन्नवपुषमभुक्तं कृतमंगलम् ।
आजानुफलकस्थस्य नरस्यांकेव्यपाश्रितम् ॥ ४६ ॥
पूर्वेण कायेनोत्तानं निषण्णं वस्त्रचुंभले ।
ततोऽस्याकुंचिते जानुकूर्परे वाससा दृढम् ॥ ४७ ॥
सहाश्रयमनुष्येण बद्धस्याश्वासितस्य च ।
नाभेः समंतादभ्यज्यादधस्तस्याश्च वामतः ॥ ४८ ॥
मृदित्वा मुष्टिना कामं यावदश्मर्यधोगता ।
तैलाक्ते वर्धितनखे तर्जनीमध्यमे ततः ॥ ४९ ॥
अदक्षिणे गुदेऽगुल्यौ प्रणिधायानुसेवनीम् ।
आसाद्य वलयं नाभ्यामश्मरीं गुदमेढ्रयोः ॥ ५० ॥
कृत्वांतरे तथा बस्तिं निर्वलीकमनायतम् ।
उत्पीडयेदंगुलिभ्यां यावद्ग्रंथिरिवोन्नतम् ॥ ५१ ॥
शल्यं स्यात्सेवनीं मुक्त्वा यवमात्रेण पाटयेत् ।
अश्ममानेन न यथा भिद्यते सा तथा हरेत् ॥ ५२ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

समग्रं सर्पवक्रेण स्त्रीणां बस्तिस्तु पार्श्वगः ।
गर्भाशयाश्रयस्तासां शस्त्रमुत्संगवत्ततः ॥ ९३ ॥
न्यसेदतोऽन्यथा ह्यासां मूत्रस्रावी व्रणो भवेत् ।
मूत्रप्रसेकक्षरणान्नरस्याप्यपि चैकधा ॥ ९४ ॥
बस्तिभेदोऽश्मरीहेतुः सिद्धिं याति न तु द्विधा ।

अथ राजपृच्छनादनंतरमातुरमुपस्निग्धादिरूपं कृत्वा ततोऽस्य नाभेरधोऽभ्यज्यात् । पूर्वमुपस्निग्धः पश्चाद्बद्धस्तमुपस्निग्धं शुद्धम् । तथा मनाक् कर्षितम् । तथाऽभ्यक्तस्विन्नशरीरं च । तथाऽभुक्तमकृताहारम् । तथा कृतमंगलं विहितस्वस्त्ययनम् । तथा नरस्यान्यस्यांकमाश्रितम् । किंकृतस्य आजानुफलकस्थस्य । फलक आसनविशेषः। आजानुजानुप्रसारणो यः फलकस्तस्मिन् स्थितस्य । तथा पूर्वेण कायेनोत्तानं तथा वस्त्रचुंभले निषण्णं । चुंभलस्तृणमयो घटादीनां चलनरक्षणार्थमाधारविशेषो यः क्रियते स उच्यते। तथारूपो वस्त्रमयचुंभलो वस्त्रचुंभले. वस्त्रं वेष्टयित्वा कृत आसनविशेषस्तस्मिन्नुपविष्टस्य । तथाभूतस्यानंतरमाकुंचित ईषत्कुटिलीकृते जानुकूर्परे सति । जानुनी च कूर्परे च जानुकूर्परे तस्मिन् । तथाऽऽश्रयमनुष्येण सहवाससा बद्धस्य दृढं कृत्वा । एवं यंत्रितस्याश्रयश्चासौ मनुष्यश्च । कस्याश्रयः । प्रकृतत्वादातुरस्य । तमाश्रित्यातुरस्य स्थितत्वात् । तथाऽऽश्वासितस्य निरामयो भवसीत्येवं प्रायाभिर्वाग्भिः । शीतपवनादिभिश्च सांत्वितस्य । ततो नाभेरधः समंतात् परितोऽभ्यज्यात् । तस्याश्च नाभेर्वामतो वामपार्श्वे मृदित्वा मुष्टिनाऽऽक्रमेत् पीडयेत्तावद्यावदश्मर्यधोगताऽधः प्रतिपन्ना । ततोनंतरमदक्षिणे वामे तर्जनीमध्यांगुल्यौ वर्धितनखे तथा तैलाभ्यक्ते कृत्वा गुदे प्रणिधायानुसेवनीमनंतरं वलयं ताभ्यामासाद्याश्मरीं प्राप्य गुदमेढ्रयोरंतरे मध्ये कृत्वा तत्र नीत्वा तथा बस्तिं निर्वलिकं कृत्वा तथा तमनायतमविस्तीर्णं संनिवेश्यानंतरमंगुलिभ्यां वामहस्ततर्जनीमध्यमाभ्यां प्रकृतत्वादश्मरीमुत्पीडयेत् । तावद्यावच्छल्यमश्मर्याख्यं ग्रंथिरिवोन्नतं स्यात् । अनंतरं सेवन्यां वामपार्श्वे सेवनीं यवमात्रेण त्यक्त्वा वर्जयित्वा पाटयेच्छस्त्रेण । कियन्मात्रम् । अश्मर्यानुमानेन अश्मरी-

Indira Gandhi National Centre for the Arts

प्रमाणेन भिनत्तु ततोधिकमूनं वा। व्रणं च कृत्वाऽश्मरीं समग्रं निरवशेषं यथा भवत्येवं सर्पफणवदग्रवक्रेण यंत्रेण हरेत्। तथा चाकर्षेद्यथा सा ह्रियमाणा न भिद्यते। भिन्ना हि पुनर्वृद्धिमियात्। स्त्रीणां तु बस्तिः पार्श्वतो भवनगर्भाशयाश्रयो यस्मात्तत उत्संगवदधः शस्त्रं न्यसन् पातयेत्। अतोऽस्माच्छस्त्रपातनविधानादन्यथाऽश्मर्याहरणार्थं शस्त्रपातनेन मूत्रस्रावी व्रणो भवेत्। न केवलं स्त्रीणां मूत्रप्रसेकक्षणनात् मूत्रस्रावी व्रणो भवेत्। यावद् दीर्घकालानुबंधी मूत्रप्रसेकक्षणनान्नरस्यापि। अपि चान्यच्चैकधा एकतो बस्तिभेदोऽश्मरीहेतुस्तन्निमित्तः सिध्यति। क्रियाभ्यासान्नित्यमतिवृद्धत्वाच्च शल्यस्येति नतु सहसा शस्त्राद्यभिघातहेतुज एकतोपि संभिन्नो बस्तिः सिध्यति। मर्मविभागेप्यवादीत्। धनुर्वक्रो बस्तिः सद्यो निहंतीति। अश्मरीहेतुरपि यो बस्तिभेदो द्विधोभयतः सोपि न सिध्यति व्रणस्वभावात्।

विंशल्यमुष्णपानीयद्रोण्यां तमवगाहयेत् ॥ ९५ ॥
तथा न पूर्यतेऽस्रेण बस्तिः पूर्णे तु पीडयेत्।
मेढ्रतः क्षीरिवृक्षांबु

उष्णपानीयद्रोण्यां तमातुरमवगाहयेत्। तथा तेनावगाहनेन बस्तिरस्रेण न पूर्यते। एवमपि कृते दैवादस्रेण तु पूर्णे बस्तौ क्षीरीवृक्षांबुमेढ्रातः मेढ्रे पीडयेत्। क्षीरीवृक्षकषायेणोत्तरबस्तिं दद्यादित्यर्थः। न्यग्रोधोदुंबराश्वत्थकपीतनप्लक्षाः क्षीरिणः।

मूत्रं संशुद्धयेत्ततः ॥ ९६ ॥
कुर्याद्गुडस्य सौहित्यं मध्वाज्याक्तव्रणः पिबेत्।
द्वौ कालौ सघृतां कोष्णां यवागूं मूत्रशोधनैः ॥ ९७ ॥
त्र्यहं दशाहं पयसा गुडाढ्येनाल्पमोदनम्।
भुंजीतोर्ध्वं फलाम्लैश्च रसैर्जांगलचारिणाम् ॥ ९८ ॥

ततोनंतरं मूत्रस्य संशुध्यर्थं गुडस्य सौहित्यं तृप्तिं कुर्यात्। ततो मध्वाज्याक्तव्रणो नरो द्वौ कालौ त्रपुसैर्वारुककूष्मांडगोक्षुरादिभिः कृतां

Indira Gandhi National Centre for the Arts

यवागूं सघृतां कोष्णां त्र्यहं पिबेत्। अनंतरं दशाहं गुडाढ्येन बहुगुडेन क्षीरेणाल्पमोदनमद्यात्। ऊर्ध्वं दशाहादनंतरं जांगलचारिणां प्राणिनां रसैर्मांसरसैरोदनं च मात्रया भुंजीत। फलाम्लैरिति। कोलदाडिमाद्यम्लैर्न तु मस्तुकांजिकाद्यम्लैरित्यर्थः।

क्षीरीवृक्षकषायेण व्रणं प्रक्षाल्य लेपयेत्।
प्रपौंडरीकमंजिष्ठायष्ट्याह्वनयनौषधैः ॥ ५९ ॥
व्रणाभ्यंगं पचेत्तैलमेभिरेव निशान्वितैः।

क्षीरीवृक्षकषायेण व्रणं प्रक्षाल्य प्रपौंडरीकादिभिर्लेपयेत्। नयनौषधं पट्टिकालोध्रं। व्रणमेभिरेव प्रपौंडरीकादिभिर्हरिद्रान्वितैर्व्रणाभ्यंगविषये तैलं पचेत्।

दशाहं स्वेदयेच्चैनं स्वमार्गं सप्तरात्रतः ॥ ६० ॥
मूत्रे त्वगच्छति दहेदश्मरीव्रणमग्निना।
स्वमार्गप्रतिपत्तौ तु स्वादुप्रायैरुपाचरेत् ॥ ६१ ॥
तं बस्तिभिर्

एवं च व्रणं दशाहं स्वेदयेत्। स्वेदनादनंतरं तु पुनः सप्तरात्रेण स्वमार्गं मूत्रेऽगच्छति सत्यश्मरीव्रणमग्निना दहेद्वैद्य इति। मूत्रस्य स्वमार्गप्रतिपत्तौ सत्यां तमातुरं स्वादुप्रायैर्मधुरभूयिष्ठद्रव्यसाधितैर्बस्तिभिरुत्तरबस्त्यादिभेदभिन्नैरुपाचरेदुपक्रमेत्।

नचारोहेद्वर्षं रूढव्रणोपि सः।
नगनागाश्ववृक्षस्त्रीरथान्नाप्सु प्लवेत सः ॥ ६२ ॥

रूढव्रणोप्यश्मर्यातुरो वर्षं यावन्नगादीन्नारोहेत्। अप्सु च न प्लवेत्।

मूत्रशुक्रवहौ बस्तिवृषणौ सेवनीं गुदम्।
मूत्रप्रसेकं योनिं च शस्त्रेणाष्टौ विवर्जयेत् ॥ ६३ ॥

अश्मरीव्रणावसरे तदर्थमन्यार्थमपि मूत्रवहादीन् दोषान् शस्त्रेण वर्जयेत्।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

तत्र मूत्रवहस्रोतोच्छेदान्मूत्रपूर्णबस्तेर्मरणं स्यात् । शुक्रवहस्रोतसश्छेदान्मरणं वाच्यं वा । बस्तिगुदच्छेदात्तयो मरणं । वृषणस्रोतश्छेदाद्ध्वजाभंगः। सेवनीयोनिच्छेदाद्रुजाप्रादुर्भावः । मूत्रप्रसेकस्रोतच्छेदान्मूत्रप्रस्रवणमिति ।

इति श्रीमदरुणदत्तविरचितायां मूत्राघातचिकित्सितंनामैकादशोऽध्यायः।

द्वादशोऽध्यायः ।

मूत्राघातचिकित्सितादनंतरं प्रमेहचिकित्सितव्याख्यानमुपक्रम्यते ।

अथातः प्रमेहचिकित्सितं व्याख्यास्यामः ।

संबंधश्चास्य पूर्ववद्बोध्यः ।

मेहिनो बलिनः कुर्यादादौ वमनरेचने ॥
स्निग्धस्य सर्षपारिष्टनिकुंभाक्षकरंजकैः ॥ १ ॥
तैलैस्त्रिकंटकाद्येन यथा स्वं साधितेन वा ।
स्नेहेन मुस्तदेवाह्वनागरप्रतिवापवत् ॥ २ ॥
सुरसादिकषायेण दद्यादास्थापनं ततः ।
न्यग्रोधादेस्तु पित्तार्त्तं रसैः शुद्धं च तर्पयेत् ॥ ३ ॥

बलवता मेहिनः पुंसोऽपरेभ्यउपक्रमेभ्यस्तत्तद्योगेभ्यः प्रथमं वमनविरेचने कुर्यान्मेहक्लेदप्रशमनाय । किंभूतस्य सर्षपादिजैस्तैलैः स्निग्धस्य त्रिकंटकाद्येन वा स्नेहेन स्निग्धस्य। त्रिकंटकनिशारोध्रेत्यादि स्नेहो वक्ष्यमाणः । यथा स्वं दोषसात्म्यादिवशाद्द्रव्यैः साधितेन वा स्नेहेन स्निग्धस्य । ततो वमनविरेचनकरणादनंतरं जातबलाय मेहिने सुरसयुगेत्यादेः संबंधिना कषायेणास्थापनं दद्यात् । किं भूतं । मुस्तादिप्रतिवापवत् । स प्रतिवापो विद्यते यस्य तदेवं । पित्तले पुनर्न्यग्रोधपिप्पलीत्यादेः कषायेणास्थापनं दद्यात् । प्रतिवापांतरानिर्देशादत्र पूर्वोक्त एव प्रतिवापो योज्यः । अनंतरं शुद्धं प्रमेहिणं रसैस्तर्पयेत् । यद्यपि रसैरिति सामान्यनिर्देशान्निर्विशेषदेश-

Indira Gandhi National Centre for the Arts

संजातप्राणिमांसरसैस्तर्पणं प्राप्तं । तथापि योग्यतावशाज्जांगलप्राणिमांसरसैस्तर्पयेदिति बोध्यं । नत्वानूपादिमांसरसैरपि । तेषां मेदो मूत्रकफावहत्वेन व्याधिवर्धनहेतुत्वात् ।

मूत्रग्रहरुजागुल्मक्षयाद्यास्त्वपतर्पणात् ।
तस्मोनुबंधरक्षार्थं शमनानि प्रयोजयेत् ॥ ४ ॥

यतोऽपतर्पणान्मूत्रग्रहादीनि जायंते ततो हेतोरनुबंधरक्षार्थं शमनानि प्रयोजयेत् । अन्यथा प्रमेह उपशांतोऽपि निदानलेशमासाद्य पुनः प्रादुर्भवेत् । ननु मूत्रग्रहादीन्येतावदस्तु । शेषा आदिशब्देनैव गृहीष्यंते किं मूत्रग्रहरुजागुल्मक्षयाद्या इति । सत्यं । मूत्रग्रहरुजा गुल्मक्षया यथा अवश्यमपतर्पणात्प्रमेहिणो जायंते तथा नापरे तज्जातीया इति ।

असंशोध्यस्य तान्येव सर्वमेहेषु पाययेत् ।

असंशोध्यो वमने गर्भिण्यादिः । विरेके नवज्वरादिः । एतस्यासंशोध्यस्य तान्येव शमनानि सर्वेषु प्रमेहेषु पाययेत् । एवेत्यवधारणे । नतु शोधनादिरूपमित्यर्थः । तान्येवाह ।

धात्रीरसप्लुतां प्राण्हे हरिद्रां माक्षिकान्विताम् ॥ ५ ॥
दार्वीसुराह्वत्रिफलामुस्ता वा क्वथिता जले ।
चित्रकत्रिफलादार्वीकलिंगान्वा समाक्षिकान् ।
मधुयुक्तं गुडूच्या वा रसमामलकस्य वा ॥ ६ ॥

आमलकीरसालोडितां हरिद्रां समाक्षिकां प्रभाते पाययेत् । दार्वीदेवदारुवरामुस्ता जले क्वथिता वा पाययेत् । चित्रकादीन्वा क्वथितान् समाक्षिकान् पाययेत् । समाक्षिकं गुडूचीरसं धात्रीरसं वा ।

रोध्राभयातोयदकट्फलानां पाठाविडंगार्जुनधान्यकानाम् ।
गायत्रिदार्वीकृमिघ्नचानां कफे त्रयः क्षौद्रयुताः कषायाः ॥ ७

Indira Gandhi National Centre for the Arts

उशीररोध्रार्जुनचंदनानां पटोलनिंबामलकामृतानाम् ।
रोध्रांबुकालीयकधातकीनां पित्ते त्रयः क्षौद्रयुताः कषायाः॥८

रोध्रादीनां श्लोकपादोक्तानां कषायाः क्षौद्रयुतास्त्रयः कफे हिताः । एवमुशीरादीनां माक्षिकान्विताः कषायास्त्रयः पित्ते हिताः । उपजातीवृत्ते ।

यथा स्वमेभिः पानान्नं यवगोधूमभावनाम् ।

एभिरोध्रादिभिर्यथायोगं पानमन्नं च कल्पयेत् । यवगोधूमभावनाश्च कल्पयेत् ।

वातोल्बणेषु स्नेहांश्च प्रमेहेषु प्रकल्पयेत् ॥ ९ ॥

वाताधिकेषु प्रमेहेषु स्नेहांश्च तैरेव कल्पयेत् । नकेवलमन्नभावनाम् ।

अपूपसक्तुवाट्यादिर्यवानां विकृतिर्हिता ।
गवाश्वगुदमुक्तानामथवा वेणुजन्मनाम् ॥ १० ॥
तृणधान्यानि मुद्गाद्याः शालिर्जीर्णः सषष्टिकः ।
श्रीकुक्कुटोम्लः खलकस्तिलसर्षपकिट्टजः ॥ ११ ॥
कपित्थं तिंदुकं जंबुस्तत्कृता रागखांडवाः ।
तिक्तं शाकं मधु श्रेष्ठा भक्ष्याः शुष्काः ससक्तवः ॥१२॥
धन्वमांसानि शूल्यानि परिशुष्काण्ययस्कृतिः ।
मध्वरिष्टासवा जीर्णाः सीधुः पक्वरसोद्भवः ॥ १३ ॥
तथासनादिसारांबुदर्भांभो माक्षिकोदकम् ।

यवानां विकृतिरपूपादिः प्रमेहे हिताः । अथवा यवानां गवाश्वगुदमुक्तानामपूपादिर्विकृतिर्हिता । वेणुजानां वा यवानां विकृतिर्हिता । तृणधान्यानि नीवारश्यामाकादीनि तथा मुद्गाद्यास्तथा पुराणशालिः षष्टिकश्चेति हितानि । श्रीकुक्कुटसंज्ञोऽम्लः खलको हितः । किंभूतः । तिलसर्षपकिट्टजस्तिलसर्षपपिण्याकजन्मा तदुपादानकारणेन मुद्गाद्युपादानकारणः । स च मालवकेषु प्रसिद्धः । आर्द्रकशकलनिस्तुषगोधूमादिना च क्रियते । तथा

Indira Gandhi National Centre for the Arts

कपित्थादयो हिताः। तैः कपित्थादिभिः कृता रागाः खांडवाश्च हिताः। तिक्तकादीनि शाकानि च हितानि। श्रेष्ठा त्रिफला। शूल्यानीति शूलायां पक्वानि। शूलात्पाक इति यत्। तानि च सुपक्वत्वात् परिशुष्काणि। तथा अयस्कृतिर्वक्ष्यमाणा। तथा मध्वादयः पुराणाः। पक्वरसः सीधुः। तथा ऽसनादिसारवर्गस्यांभो दर्भजलं माक्षीकोदकं च हितम्।

वासितेषु वराक्वाथे शर्वरींशोषितेष्वहः॥ १४॥
यवेषु सुकृतान्सक्तून्सक्षौद्रान्सीधुना पिबेत्।

तथा यवेषु सुकृतान् सक्तून् कृत्वा सक्षौद्रान् सीधुना पचेत्। आलोड्य पिबेत्। पक्वरसोद्भवेन तस्य यो गतः स न स्यात्। यवेष्विति निमित्तसप्तमी। किंभूतेषु यवेषु। वराक्वाथे त्रिफलाकषाये शर्वरीं सकलां रात्रिं वासितेष्वभिषुतेष्वनंतरमहःशोषितेषु। तत्रात्यंतसंयोगे द्वितीया।

शालसप्ताह्वकंपिल्लवृक्षकाक्षकपित्थजम्॥ १५॥
रोहीतकं च कुसुमं मधुनाऽद्यात्सुचूर्णितम्।
कफपित्तप्रमेहेषु पिबेद्धात्रीरसेन वा॥ १६॥

शालादिजं पुष्पं सूक्ष्मरजीकृतं मधुनाऽद्यात्। कफपित्तप्रमेहेषु धात्रीरसेन वा पिबेत्।

त्रिकंटकनिशारोध्रसोमवल्कवचार्जुनैः।
पद्मकाश्मंतकारिष्टचंदनागुरुदीप्यकैः॥ १७॥
पटोलमुस्तमंजिष्ठामाद्रीभल्लातकैः पचेत्।
तैलं वातकफे पित्ते घृतं मिश्रेषु मिश्रकम्॥ १८॥

त्रिकंटकादिभिः कल्कीकृतैस्तैलं पचेद्वातकफजे प्रमेहे। पित्तजे एभिरेव घृतं पचेत्। मिश्रेषु दोषेषु मिश्रकं घृततैले पचेत्।

दशमूलं शठीं दंतीं सुराह्वं द्विपुनर्नवम्।
मूलं स्नुगर्कयोः पथ्यां भूकदंबमरुष्करम्॥ १९॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

करंजवरुणान्मूलं पिप्पल्याः पौष्करं च यत् ।
पृथक् दशपलं प्रस्थान् यवकोलकुलत्थतः ॥ २० ॥
त्रींश्चाष्टगुणिते तोये विपचेत्पादवर्त्तिना ।
तेन द्विपिप्पलीचव्यवचानिचुलरोहिषैः ॥ २१ ॥
त्रिवृद्विडंगकंपिल्लभार्ङ्गीबिल्वैश्च साधयेत् ।
प्रस्थं घृताज्जयेत्सर्वांस्तन्मेहान् पिटिकाविषम् ॥ २२ ॥
पांडुविद्रधिगुल्मार्शःशोफशोषगरोदरम् ।
श्वासं कासं वमिं वृद्धिं प्लीहानं वातशोणितम् ॥ २३ ॥
कुष्टोन्मादावपस्मारं धान्वंतरमिदं घृतम् ।

स्नुगर्कमूलं करंजमूलं । वरणमूलं पिप्पलीमूलम् । पौष्करं च यदिति पुष्करमूलं चेत्यर्थः । दशमूलादिकं पृथक् प्रत्येकं दशपलप्रमाणं यवकोलकुलत्थांस्त्रीन् प्रस्थांश्चाष्टगुणिते जले च पिबेत् । तेन जलेन पादवर्तिना पादशेषेण द्विपिप्पल्यादिभिश्च सामान्यपरिभाषोक्तात्प्रामाणाद्घृतात्प्रस्थं पचेत् । तद्घृतं सर्वान् प्रमेहान् पिटिकादींश्च जयेत् ।

रोध्रमूर्वाशठीवेल्लभार्ङ्गीनतनखप्लवान् ॥ २४ ॥
कलिंगकुष्टक्रमुकप्रियंग्वतिविषाग्निकान् ।
द्वे विशाले चतुर्जातं भूनिंबकटुरोहिणीम् ॥ २५ ॥
यवानीं पौष्करं पाठां ग्रंथिं चव्यं फलत्रयम् ।
कर्षांशमंबुकलशे पादशेषे स्नुते हिमे ॥ २६ ॥
द्वौ प्रस्थौ माक्षिकात्क्षिप्त्वा रक्षेत्पक्षमुपेक्षया ।
रोध्रासवोऽयं मेहार्शःश्वित्रकुष्टारुचिकृमीन् ॥ २७ ॥
पांडुत्वग्ग्रहणीदोषं स्थूलतां च नियच्छति ।

रोध्रादि प्रत्येकं कर्षप्रमाणं जलकलशे पादशेषे स्नुते शीते च माक्षिकात् द्वौ प्रस्थौ क्षिप्त्वा पक्षमात्रमचलं कृत्वा रक्षेत् । अयं रोध्रासवो मेहादीन्नाशयेत् ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

साधयेदसनादीनां पलानां विंशतिं पृथक् ॥ २८ ॥
द्विवहेऽपां क्षिपेत्तत्र पादस्थे द्वे शते गुडात् ।
क्षौद्राढकार्धं पलिकं वत्सकादि च कल्कितम् ॥ २९ ॥
तत्क्षौद्रपिप्पलीचूर्ण प्रदिग्धे घृतभाजने ।
स्थितं दृढे जतुमृते यवराशौ निधापयेत् ॥ ३० ॥
खदिरांगारतप्तानि बहुशोऽत्र निमज्जयेत् ।
तनूनि तीक्ष्णलोहस्य पत्राण्यालोहसंक्षयात् ॥ ३१ ॥
अयस्कृतिः स्थिता पीता पूर्वस्मादधिका गुणैः ।

असनादीनामसनतिनिशयेत्यादिगणोक्तानां द्रव्याणां पृथक् प्रत्येकं पलानां विंशतिं विंशतिपलान्यपां द्वि वहे जलद्रोणाष्टके साधयेत् । तत्र तस्मिन्पादशेषे शृते शीते च सति गुडस्य द्वे शते क्षिपेत् । माक्षिकस्यार्धाढकं । वत्सकमूर्वेत्यादिकं च पृथक् पालिकं कल्कितं कृत्वा क्षिपेत् । अनंतरमंतर्माक्षिकपिप्पलीचूर्णप्रलिप्ते घृतभाजने दृढे जतुलिप्ते स्थितं यवराशौ स्थापयेत् । अनंतरं खदिरांगारतप्तानि तीक्ष्णलोहपत्राणि तनूनि पुनः पुनरत्र निमज्जयेत् । यावत्संक्षयं विलीनवृत्तित्वमायाति । अयस्कृतिरियं स्थिता संपन्ना पीता पूर्वस्माद्रोधासवाद्गुणैरधिका । अत्र च संग्रहोक्ता दशमूलारिष्टादयसः परिमाणं कल्प्यं प्रायोऽत्र प्रस्थमात्रं । एवमन्यत्रापि द्रवद्रव्यमपेक्ष्य नरसिंहघृतादावनयैव दिशाऽयसः परिमाणं कल्पनीयं ।

रूक्षमुद्वर्त्तनं गाढं व्यायामो निशि जागरः ॥ ३२ ॥
यच्चान्यच्छ्लेष्ममेदोघ्नं बहिरंतश्च तद्धितम् ।

तस्मिन्प्रमेह उद्वर्त्तनं रूक्षं तथा गाढं नतु शिथिलं हितं । तथा व्यायामरात्रिजागरौ च । अपरमपि यदेवं प्रायं श्लेष्ममेदोहरं बहिरंतश्च तच्च प्रमेहिणे हितं ।

सुभावितां सारजलैस्तुलां पीत्वा शिलोद्भवात् ॥ ३३ ॥
सारांबुनैव भुंजानः शालिजांगलजै रसैः ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

सर्वानभिभवेन्मेहान् सुबहूपद्रवानपि ॥ ३४ ॥
गंडमालार्बुदग्रंथिस्थौल्यकुष्टभगंदरान् ।
कृमिश्लीपदशोफांश्च परं चैतद्रसायनम् ॥ ३५ ॥

सारा असनखदिरादयस्तेषां जलैः काथैः शिलाह्वया तुलां सुभावितां पीत्वा सारांबुनैव जांगलप्राणिमांसजै रसैः शाल्योदनैः सर्वान्मेहान्सुबहूपद्रवानपि जयेत् । गंडमालादींश्च । इदं चोत्कृष्टं रसायनं ।

अधनश्छत्रपादत्ररहितो मुनिवर्त्तनः ।
योजनानां शतं यायात्खनेद्वा सलिलाशयान् ॥ ३६ ॥
गोशकृन्मूत्रवर्त्तिर्वा गोभिरेव सह भ्रमेत् ।

धनरहितः प्रमेही छत्रपादत्ररहितो मुनिवृत्तिः सन् योजनानां शतं यायात् ; अथवा सलिलाशयान् खनेत् । अथवा गोशकृन्मूत्रवर्त्तनो गोभिरेव सह भ्रमेत् ।

बृंहयेदौषधाहारैरमेदो मूत्रलैः कृशम् ॥ ३७ ॥

कृशं नरमौषधयुक्तैराहारैर्बृंहयेत् । किंभूतैः । अमेदोमूत्रकरैः ।

शराविकाद्याः पिटिकाः शोफवत्समुपाचरेत् ।
अपक्का व्रणवत् पक्वास्

शराविकाकच्छपिकेत्याद्याः पिटिका अपक्काः सतीः शोफवदुपक्रमेत् । व्रणवत्पक्काः पुनर्व्रणवत्तदुपाचरेत् ।

तासां प्राग्रूप एव च ॥ ३८ ॥
क्षीरिवृक्षांबु पानाय बस्तमूत्रं च शस्यते ।
तीक्ष्णं च शोधनं प्रायो दुर्विरेच्या हि मेहिनः ॥ ३९ ॥

तासां च पूर्वरूपावस्थायामेव क्षीरीवृक्षांबु पानाय शस्यते । छागमूत्रं च तथा शोधनं विरेचनं तीक्ष्णं शस्यते । कुत इत्याह । यस्मात् प्रमेहिणो दुःखेन विरेचयितुं शक्यंते ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

तैलमेलादिना कुर्याद्गणेन व्रणरोपणम् ।
उद्वर्तने कषायं तु वर्गेणारग्वधादिना ॥ ४० ॥
परिषेकोऽसनाद्येन पानान्ने वत्सकादिना ।

एलायुग्मेत्यादिना गणेन तैलं व्रणरोपणं कुर्यात् । उद्वर्त्तन आरग्वधेंद्रयवेत्यादिना गणेन कषायं तूद्वर्त्तनार्थं कुर्यात् । असनतिनिसेत्यादिना परिषेकःस्यात् । पानमन्नं च वत्सकमूर्वेत्यादिना संस्कृतं कुर्यात् ।

पाठा चित्रकशाङ्गेष्टा सारिवा कंटकारिका ॥ ४१ ॥
सप्ताह्वं कौटजं मूलं सोमवल्कं नृपद्रुमम् ।
संचूर्ण्य मधुना लिह्यात्तद्वच्चूर्णं न वाप्यसम् ॥ ४२ ॥

पाठादीन् संचूर्ण्य मधुनाऽवलेहयेत् । न वायसं चूर्णं तद्वन्माक्षिकेण लिह्यात् ।

मधुमेहित्वमापन्नो भिषग्भिः परिवर्जितः ।
शिलाजतुतुलामद्यात्प्रमेहार्तः पुनर्नवः ॥ ४३ ॥

मधुमेहित्वमपि प्राप्तो भिषग्भिश्च परिवर्जितो मेही शिलाजतु पलशतं कुर्यात् । कृतशिलाजतुतुलश्चासौ पुनर्नवो भवति । खारणादे च विशेषोपक्रमा उक्ताः । यथा । अश्वत्थचंदनागरुपाठाक्काथो जलाभमेहे तु । इक्षुरसाभे पाठाकमिहंतृसंबंधिनः क्काथः । सांद्राकारे मेहे हिताढकी कर्णिकारो वा । क्काथस्तथार्जुनस्य पातव्यो वारुणीमेहे । पिष्टे ससिता रजनी पातव्या शिशिरतोयेन । निंबश्च शुक्रमेहे तप्तजलेनाथवा सुरया । सिकतामेहे चित्रकबाल्हीककुष्टनिःक्काथः । शीतलमेहे क्काथः पिचुमंदकृतश्च पातव्यः । पाषाणभित्तु सुरया क्कथितः शस्तः शनैर्मेहे । गोक्षुरकस्य कषायो लालामेहे फलत्रिकेन सह । शल्लक्युशीरसैंधववचा हिताः क्षारमेहिनः पिष्टाः । क्कथिताश्च नीलमेहे रोध्रसमंगाकदंबाःस्युः । क्काथो बिभीतकस्य तु कल्को वा कालमेहिनां शस्तः। धातकीपद्मकविकसाक्काथः कल्कोऽपि वा निशामेहे । मांजिष्ठे स्युस्त्रिफला जलदं जलपद्मकं रोध्रम् । लोहितमेहे

Indira Gandhi National Centre for the Arts

युंज्यात्रिफलाक्वाथेन संयुतं गिरिजम् । वालकं त्रिवृता धात्री मुस्तं च सरसांजनम् । कटुकातिविषारोध्रं खदिरेणांभसा पिबेत् । प्रायः शोधनमेतद्धि प्रधानं समुदाहृतमिति ।

इतिश्रीमृगांकदत्तपुत्रश्रीमदरुणदत्तविरचितायामष्टांगहृदयटीकायां सर्वसुंदराख्यायां चिकित्सितस्थाने प्रमेहचिकित्सितो नाम द्वादशोऽध्यायः।१२।

त्रयोदशोऽध्यायः ।

अस्मादनंतरं विद्रधिवृद्धिचिकित्सितमारभ्यते प्रमेहोपद्रवभूतत्वाद्विद्रधेः । इत्याह ।

अथातो विद्रधिवृद्धिचिकित्सितं व्याख्यास्यामः ।
विद्रधिं सर्वमेवामं शोफवत्समुपाचरेत् ।
प्रततं च हरेद्रक्तं पक्के तु व्रणवत्क्रिया ॥ १ ॥

आमं सर्वमेव विद्रधिं शोफवदुपक्रमेत् । अनवरतं च रक्तमाहरेत् । अनंतरं पक्के सति व्रणवत्क्रिया । विशेषेण चिकित्सितमाह ।

पंचमूलजलैर्धौतं वातिकं लवणोत्तरैः
भद्रादिवर्गयष्ट्याह्वतिलैरालेपयेद्व्रणम् ॥ २ ॥

वातिकं व्रणं वातविद्रधावर्थाज्जातं पंचमूलजलैः प्रक्षालितं भद्रदारुनतेत्यादिना मधुयष्टिकया तिलैश्च लवणाद्यैर्लेपयेत् ।

वैरेचनिकयुक्तेन त्रैवृतेन विशोध्य च ।
विदारीवर्गसिद्धेन त्रैवृतेनैव रोपयेत् ॥ ३ ॥

वैरेचनिकयुक्तेन निकुंभकुंभेत्यादिवर्गोक्तेन त्रैवृतेन त्रैवृताख्येन विशोधयित्वा ततो विदारिपंचांगुलेत्यादिद्रव्यसिद्धेन त्रैवृतेनैव स्नेहेन व्रणं रोपयेत्।

क्षालितं क्षीरितोयेन लिंपेद्यष्ट्यमृतातिलैः ।
पैत्तं घृतेन सिद्धेन मंजिष्ठोशीरपद्मकैः ॥ ४ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

पयस्या द्विनिशाश्रेष्ठायष्टीदुग्धैश्च रोपयेत् ।
न्यग्रोधादिप्रवालत्वक्फलैर्वा

पैत्तं व्रणं क्षीरितोयेन धौतं । क्षीरिणो न्यग्रोधादयः। मधुयष्टिकागुडूचीतिलैर्लिपेद्बहिः। घृतेनेत्यादि । मंजिष्ठादिभिर्घृतेन सिद्धेन रोपयेत्। सामान्यपरिभाषोक्तप्रमाणेन द्रवं जलं घृतं समं क्षीरमित्यत्र पाकक्रमः । न्यग्रोधेत्यादि। प्रवालश्च त्वक्च फलं च प्रवालत्वक्फलानि । न्यग्रोधादीनां प्रवालत्वक्फलैः सिद्धेन वा घृतेन रोपयेत् ।

कफजं पुनः ॥ ५ ॥
आरग्वधांबुना धौतं सक्तुकुंभनिशातिलैः ।
लिंपेत्कुलत्थिकादंतीत्रिवृच्छ्यामाग्नितिल्वकैः ॥ ६ ॥
ससैंधवैः सगोमूत्रैस्तैलं कुर्वीत रोपणम् ।

कफजं तु व्रणमारग्वधांबुना धौतं सक्त्वादिभिर्लिंपेत्। कुलत्थिकादिभिर्द्रव्यैस्तैलं रोपणं कुर्वीत ।

रक्तागंतूद्भवे कार्या पित्तविद्रधिवत्क्रिया ॥ ७ ॥

रक्तोद्भवे तथाऽऽगंतुजे क्षतोद्भवे च विद्रधौ पित्तविद्रधितुल्या क्रिया स्यात्।

वरुणादिगणक्वाथमपक्वेऽभ्यंतरे स्थिते ।
ऊषकादिप्रतीवापं पूर्वाण्हे विद्रधौ पिबेत् ॥ ८ ॥

अंतरे विद्रधौ वरुणादिगणक्वाथमूषकादिप्रतिवापं पूर्वाण्हे पिबेत्।

घृतं विरेचनद्रव्यैः सिद्धं ताभ्यां च पाययेत् ।
निरूहं स्नेहबस्तिं च ताभ्यामेव प्रकल्पयेत् ॥ ९ ॥

विरेचनद्रव्यैर्यथादोषं घृतं च सिद्धं तथा ताभ्यां वरुणादिगणाभ्यां वरुणादिगणोषकादिगणाभ्यां सिद्धं घृतमपक्वाभ्यंतरोत्थिते विद्रधौ पाययेत्। ताभ्यामेव गणाभ्यां निरूहान्वासने निरूपयितव्ये ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

पाऩभोजनलेपेषु मधुशिग्रुः प्रयोजितः ।
दत्तावापो यथादोषमपक्कं हंति विद्रधिम् ॥ १० ॥

पानादिषु मधुशिग्रुः प्रयोजितो दत्तावापो वितीर्णकल्कः सामर्थ्यात्तत्क्काथः पक्कं विद्रधिं हंति ।

त्रायंतीत्रिफलानिंबकटुकामधुकं समम् ।
त्रिवृत्पटोलमूलाभ्यां चत्वारोंशाः पृथक् पृथक् ॥ ११ ॥
मसूरान्निस्तुषादष्टौ तत्क्काथः सघृतो जयेत् ।
विद्रधीगुल्मवीसर्पदाहमोहमदज्वरान् ॥ १२ ॥
तृण्मूर्छाछर्दिहृद्रोगपित्तासृक्कुष्टकामलाः ।

त्रायंत्यादिकं सर्वं समांशं त्रिवृतायाश्चत्वारोंशाः पटोलमूलाच्च निस्तुषमसूरादष्टादित्येतैः क्काथो घृतसहितो विद्रध्यादीन् पराकुर्यात् ।

कुडवं त्रायमाणायाः साध्यमष्टगुणेऽभसि ॥ १३ ॥
कुडवं तद्रसाद्धात्रीस्वरसात्क्षीरतो घृतात् ।
कर्षांशं कल्कितं तिक्तात्रायंतीधन्वयासकम् ॥ १४ ॥
मुस्तातामलकीवीराजीवंतीचंदनोत्पलम् ।
पचेदेकत्र संयोज्य तद्घृतं पूर्ववद्गुणैः ॥ १५ ॥

त्रायमाणायाः कुडवमष्टगुणे जले साध्यं । तद्रसात्त्रायमाणाक्काथात् कुडवं धात्रीस्वरसात्क्षीराद्घृताच्च प्रत्येकं कुडवं कर्षांशं प्रत्येकं कल्कीकृतं तिक्तादि एकत्र मिश्रयित्वा पचेत् । तदेतद् घृतं पूर्वगुणं ।

द्राक्षा मधूकं खर्जूरं विदारी सशतावरी ।
परूषकाणि त्रिफला तत्क्काथे पाचयेद्घृतम् ॥ १६ ॥
क्षीरेक्षुधात्रीनिर्यासे प्राणदाकल्कसंयुतम् ।
तच्छीतं शर्कराक्षौद्रपादिकं पूर्ववद्गुणैः ॥ १७ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

द्राक्षादिभिः क्वाथे क्षीर इक्षुरसे धात्रीरसे हरीतकीकल्कयुतं घृतं सामान्यपरिभाषया पचेत् । तद्घृतं शीतं सच्छर्कराक्षौद्रपादयुतं पूर्वगुणं । शार्कराक्षौद्रपादिकमित्यतइति पगाविति ठक् ।

हरेच्छृंगादिभिरसृक् सिरया वा यथांतिकम् ।

शृंगादिभी रक्तं हरेत् । सिरया वा यथासमीपमस्रं हरेत् ।

विद्रधिं पच्यमानं च कोष्टस्थं बहिरुन्नतम् ॥ १८ ॥
ज्ञात्वोपनाहयेत्

विद्रधिं कोष्टस्थं कोष्टगतं बहिरुन्नतं पच्यमानं बुध्वोपनाहयेत् । उपनद्धं कुर्यात् ।

शूले स्थिते तत्रैव पिंडिते ।
तत्पार्श्वपीडनात्सुप्तौ दाहादिष्वल्पकेषु च ॥ १९ ॥
पक्वस्याद्विद्रधिं भित्त्वा व्रणवत्तमुपाचरेत् ।

तत्रैव शूले पिंडिते स्थिते यं दोषमाश्रित्योन्नद्धस्तिष्ठति तथा तत् पार्श्वे पीडनेन सुप्तौ स्वपने तथा दाहादिष्वल्पकेषु । आदिशब्देनोषादयो गृह्यंते । एतेषु सत्सु पक्वो विद्रधिः स्यात् । तं भित्त्वा संछेद्य व्रणवदुपक्रमेत् ।

अंतर्भागस्य चाप्येतच्चिन्हं पक्वस्य विद्रधेः ॥ २० ॥

अंतर्भागस्य च विद्रधेरेतदेव चिन्हं ।

पक्वः स्रोतांसि संपूर्य सयात्यूर्ध्वमधोथवा ।
स्वयं प्रवृत्तं तं दोषमुपेक्षेत हिताशिनः ॥ २१ ॥
दशाहं द्वादशाहं वा रक्षन् भिषगुपद्रवान् ।
असम्यग्वहति क्लेदे वरणादिसुखांभसा ॥ २२ ॥
पाययेन्मधुशिग्रुं वा यवागूं तेन वा कृताम् ।

तदाऽसौ पक्वः सन् स्रोतांसि क्लेदयित्वोर्ध्वं मयात्यधो वा तं दोषं स्वयं प्रवृत्तं पतंतं हिताशिन उपेक्षेत न किंचिदुपक्रमांतरं कुर्वीत ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

दशाहं द्वादशाहं वा वैद्य उपद्रवान्रक्षेत्। क्लेदे च यथावदवहति सति वरणादिमुष्णांबुना पाययेद्वैद्य इति शेषः। दशाहमिति दशानामह्नां समाहार इति समासे राजाहःसखिभ्यष्टजिति टच्। न संख्यादेः समाहार इत्यह्नादेशनिषेधः। नस्ताद्धित इति टिलोपः। स नपुंसकमिति नपुंसकत्वं। कालाध्वनोरिति द्वितीया। अथवा मधुशिग्रुं पाययेत्। तेन वा मधुशिग्रुणा कृतां पेयां पाययेत्।

यवकोलकुलत्थोत्थयूषैरन्नं च शस्यते ॥ २३ ॥

यवादिजैर्यूषैः सहान्नं च शस्यते।

ऊर्ध्वं दशाहात्त्रायंतीसर्पिषा तैल्वकेन वा।
शोधयेद्बलतः शुद्धः सक्षौद्रं तिक्तकं पिबेत् ॥ २४ ॥

दशाहादनंतरं त्रायंतीघृतेन कृतेन कुडवं त्रायमाणाया इत्यादिनाऽथवा तिल्वकेन शम्याकेन त्रिवृतयोरित्यादिना शोधयेद्यथाबलम्। शुद्धः सन् क्षौद्रेण सह तिक्तकं पिबेत्।

सर्वशो गुल्मवच्चैनं यथादोषमुपाचरेत्।

सर्वेण प्रकारेण गुल्मवदेनं विद्रधिं यथादोषमुपक्रमेत्।

सर्वावस्थासु सर्वासु गुग्गुलुं विद्रधीषु च ॥ २५ ॥
कषायैर्योगिकैर्युंज्यात्स्वैः स्वैस्तद्वच्छिलाजतु।

विद्रधीषु सर्वासु सर्वावस्थास्वेव गुग्गुलुं यौगिकैः स्वैः स्वैर्योग्यैः कषायैर्युंज्यात्। तद्वत्तथैव कषायैः सह शिलाजतु युंज्यात्।

पाकं च वारयेद्यत्नात्सिद्धिः पक्के हि दैविकी ॥ २६ ॥
अपि चाशु विदाहित्वाद्विद्रधिः सोऽभिधीयते।
सति चालोचयेन्मेहे प्रमेहाणां चिकित्सितम् ॥ २७ ॥

पाकं च यत्नेन वारयेत्। हि यस्मात्पक्के सति दैविकी सिद्धिर्नतु भिषग्वशानुगेत्यर्थः। आशु च विदाहित्वात्सोयं रोगो विद्रधिरित्युच्यते। तस्मात्तस्य

Indira Gandhi National Centre for the Arts

पाकरक्षायां यतितव्यमित्यर्थः। मेहे च सति प्रमेहाणां चिकित्सितमालोचयेत्। च शब्दाद्विद्रधिचिकित्सितोक्तमपि कुर्यात्।

स्तनजे व्रणवत्सर्वं नत्वेनमुपनाहयेत्।
पाटयेत्पालयन्स्तन्यवाहिनीः कृष्णचूचुकौ ॥ २८ ॥
सर्वास्वामाद्यवस्थासु निर्दुहीत च तत्स्तनम्।

स्तनजे विद्रधावुपनाहं वर्जयित्वा सर्वमेव व्रणक्रियाक्रमं कुर्यात्। विद्रधिशब्दः पुंस्त्रीलिंगः। स्तनविद्रधिं च पाटयेद्वैद्यः। स्तन्यवाहिनीः शिराः कृष्णचूचुकौ च पालयन्। सर्वासु चामाद्यवस्थासु तस्य विद्रधेः संबंधिनं स्तनं निर्दुहीत। आदिशब्दः पच्यमानपाकावस्थयोर्ग्रहणार्थः। इति विद्रधिचिकित्सितमुक्त्वा वृद्धिचिकित्सितमाह।

शोधयेत्त्रिवृतास्निग्धं वृद्धौ स्नेहैश्चलात्मके ॥ २९ ॥
कौशाम्रतिल्वकैरंडसुकुमारकमिश्रकैः।

चलात्मके वृद्धौ सति वृध्यामयिनं त्रिवृताख्येन स्नेहेनासमन्तात् स्निग्धं संतं शोधयेत्। अत्र च सामान्योक्तमप्यपक्वस्य त्रैवृतस्य न तथा प्रयोगः प्रशस्यत इति पूर्वोक्तया रीत्या विदारिवर्गसिद्धस्योपयोगः कार्य इति केचिन्मन्यंते। कैः स्नेहैः कौशाम्रादिभिः सिद्धैः सुकुमारकमत्रैव वक्ष्यमाणं मिश्रकं च गुल्मचिकित्सिते।

ततोऽनिलघ्ननिर्यूहकल्कस्नेहैर्निरूहयेत् ॥ ३० ॥
रसेन भोजितं यष्टितैलेनान्वासयेदनु।
स्वेदप्रलेपा वातघ्नाः पक्वे भित्त्वा व्रणक्रियाः ॥ ३१ ॥

ततः शोधनादनंतरं वातघ्नकषायकल्कस्नेहैर्निरूहयेत्। अनु निरूहस्य पश्चान्मांसरसेन भोजितं संतं मधुयष्टिकातैलेनानुवासयेत्। स्वेदाः प्रलेपाश्च वातघ्ना हिताः। पक्वे वृद्धौ भित्त्वा पाटयित्वा व्रणक्रियां कुर्यात्।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

पित्तरक्तोद्भवे वृद्धावामपक्के यथायथम् ।
शोफव्रणक्रियां कुर्यात् प्रततं च हरेदसृक् ॥ ३२ ॥

पित्तरक्तोत्थिते वृद्धावामे पक्के च यथास्वमामशोफक्रियां कुर्यात् । पक्के व्रणक्रियां कुर्यात् । सततं च रक्तमाकर्षेत् ।

गोमूत्रेण पिबेत्कल्कं श्लैष्मिके पीतदारुजम् ।
विम्लापनादृते चात्र श्लेष्मग्रंथिक्रमो हितः ॥ ३३ ॥
पक्के च पाटिते तैलमिष्यते व्रणशोधनम् ।
सुमनोरुष्करांकोल्लसप्तपर्णेषु साधितम् ॥ ३४ ॥
पटोलनिंबरजनीविडंगकुटजेषु च ।

श्लैष्मिके वृद्धौ दार्वीकल्कं गोमूत्रेण पिबेत् । अस्य च श्लैष्मिकवृद्धेर्विम्लापनमंतरेण श्लेष्मग्रंथिचिकित्सितं हितं । विम्लापनं तैस्तैर्मर्दनोपायैर्विमर्दनं । पक्के पाटिते सति सुमनोरुष्करादिभिः कुटजांतैः साधितं तैलं व्रणशोधनमिष्यते ।

मेदोजं मूत्रपिष्टेन सुस्विन्नं सुरसादिना ॥ ३५ ॥
शिरोविरेकद्रव्यैर्वा वर्जयन्फलसेवनीम् ।
दारयेद्वृद्धिपत्रेण सम्यङ्मेदसि सूद्धृते ॥ ३६ ॥
व्रणं माक्षीककासीससैंधवप्रतिसारितम् ।
सीव्येदभ्यंजनं चास्य योज्यं मेदोविशुद्धये ॥ ३७ ॥
मनःशिलैलासुमनोग्रंथिभल्लातकैः कृतम् ।
तैलमाव्रणसंधानात्स्नेहस्वेदौ च शीलयेत् ॥ ३८ ॥

मेदोजं वृद्धिरोगं गोमूत्रपिष्टेन सुरसादिना गणेन सुस्विन्नं शिरोविरेकद्रव्यैर्वा सुस्विन्नं वृद्धिपत्रेण सम्यक् कृत्वा दारयेत् । किं कुर्वन् । फलसेवनीं वर्जयन् परिहरन् । अनंतरं मेदसि सूद्धृते सति माक्षिकादिभिः प्रतिसारितं व्रणं

Indira Gandhi National Centre for the Arts

सीव्येत्। अनंतरमस्याभ्यंजनं तैलं मनःशिलादिभिः कृतं सिद्धं मेदोविशुद्धये योज्यं। व्रणसंधानं यावत् स्नेहं स्वेदं च शीलयेत्।

मूत्रजं स्वेदितं स्निग्धैर्वस्त्रपट्टेन वेष्टितम्।
विध्येदधस्तात्सेवन्याः स्रावयेच्च यथोदरम् ॥ ३९ ॥
व्रणं च स्थगिकाबद्धं रोपयेत्

मूत्रजं वृद्धिं सेवन्या अधस्तात् स्निग्धैः स्वेदितं तथा वस्त्रपट्टेन वेष्टितं विध्येत्। जलोदरवच्च स्रावयेत्। द्विद्वारनलिकया पिच्छनलिकया वा क्रमेण व्रणं च स्थगिकाख्येन बंधविशेषेण बद्धं रोपयेत्।

अंत्रहेतुके।
फलकोशमसंप्राप्ते चिकित्सा वातवृद्धिवत् ॥४० ॥

अंत्रजे वृद्धौ फलकोशमसंप्राप्ते सति वातवृद्धिसदृशीं चिकित्सां कुर्यात्।

पचेत्पुनर्नवतुलां तथा दशपलाः पृथक्।
दशमूलपयस्याश्व गंधैरंडशतावरीः ॥ ४१ ॥
द्विदर्भशरकाशेक्षुमूलपोटगलान्विताः।
वहेपामष्टभागस्थे तत्र त्रिंशत्पलं गुडात् ॥ ४२ ॥
प्रस्थमेरंडतैलस्य द्वौ घृतात्पयसस्तथा।
आवपेद् द्विपलांशं च कृष्णातन्मूलसैंधवम् ॥ ४३ ॥
यष्टीमधुकमृद्वीकायवानि नागराणि च।
तत्सिद्धं सुकुमाराख्यं सुकुमारं रसायनम् ॥ ४४ ॥
वातातपाध्वयानादिपरिहार्येष्वयंत्रणम्।
प्रयोज्यं सुकुमाराणामीश्वराणां सुखात्मनाम् ॥ ४५ ॥
नृणां स्त्रीवृंदभर्तॄणामलक्ष्मीकलिनाशनम्।
सर्वकालोपयोगेन कांतिलावण्यपुष्टिदम् ॥ ४६ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

वर्ध्मविद्रधिगुल्मार्शोयोनिमेढ्रानिलार्तिषु ।
शोफोदरखुडप्लीहविड्विबंधेषु चोत्तमम् ॥ ४७ ॥

पुनर्नवस्य तुलां जलस्य वहे पचेत् । तथा दशमूलादीनि पृथग्दशपलप्रमाणानि । पोटगलो नलः । अष्टभागशेषे च तस्मिन् गुडात्त्रिंशत्पलान्येरंडतैलात् प्रस्थं घृतस्य प्रस्थौ द्वौ क्षीरप्रस्थौ द्वौ क्षिपेत् । द्विपलप्रमाणं पिप्पल्यादिकं तदेतत्पक्वं सुकुमारसंज्ञं घृतं रसायनं सुकुमारम् । अत एव वातातपादिष्वयंत्रणं सुकुमाराणामीश्वरादीनां प्रयोज्यं । अलक्ष्मीकलिघ्नं सर्वकालोपयोगात्कांत्यादिदं वर्ध्माद्यार्तिषु श्रेष्ठम् ।

यायाद्वर्ध्म न चेच्छांतिं स्नेहरेकानुवासनैः ।
बस्तिकर्मपुरः कृत्वा वंक्षणस्थं ततो दहेत् ॥ ४८ ॥
अग्निना मार्गरोधार्थं मरुतः

यदि स्नेहादिभिर्वर्ध्म शांतिं न गच्छेत् ततो बस्तिकर्म कृत्वा वंक्षणस्थितं वर्ध्ममरुतो मार्गरोधार्थमग्निना दहेत् ।

ऽर्धेंदुवक्रया ।
अंगुष्ठस्योपरिस्नावपीतं तंतुसमं च यत् ॥ ४९ ॥
उत्क्षिप्य सूच्या तत्तिर्यग्दहेच्छित्वा यतो गदः ।
ततोऽन्यपार्श्वेऽन्येत्वाहुर्दहेद्वानामिकांगुलेः ॥ ५० ॥
गुल्मेऽन्यैर्वातकफजे प्लीन्हि चायं विधिः स्मृतः ।
कनिष्ठिकानामिकयोर्विश्वाच्यां च यतो गदः ॥ ५१ ॥

यतो यस्मिन्पार्श्वे गदो विद्यते । तत्पार्श्वस्थस्यांगुष्ठस्योपरि पृष्ठे स्नावपीतं यत्तंतु तुल्यम् । ततः स्नावोत्क्षिप्यार्धेंदुवक्रया सूच्या तिर्यक् छित्वाऽनंतरं तद्दहेदित्येके वदंति । अन्य आचार्या एवमाहुः । ततः पार्श्वात् यतोऽसौ गदस्तिष्ठति ततो यदन्यत्पार्श्वं तस्मिन् पार्श्वेऽगुष्ठस्योपरि यत्स्नावस्तथाविधं यत्तत्पूर्वं दहेदिति । अन्येत्वेवं वदंति । अनामिकाया अंगुलेरुपरि यत्स्नावस्तथा रूपं तत्पूर्ववद्दहेदिति । अन्यैराचार्यैर्वातकफजे

Indira Gandhi National Centre for the Arts

गुल्मे प्लीन्हि च एष एवानंतरोक्तो विधिः स्मृतः। तथा विश्वाच्यां वातव्याधिविशेषे यतो यस्मिन् पार्श्वेऽसौ गदस्तस्मिन् पार्श्वे कनिष्ठिकाऽनामिकयोरुपरि यत्स्नावपीतं तंतुसमं तदुत्क्षिप्य तिर्यक्छित्वा दहेदिति।

इति श्रीमदरुणदत्तविरचितायां सर्वांगसुंदराख्यायां चिकित्सितस्थाने विद्रधिवृद्धिचिकित्सितं नाम त्रयोदशोऽध्यायः॥ १३॥

चतुर्दशोऽध्यायः।

अस्मादनंतरं गुल्मचिकित्सितमारभ्यते। संबंधश्चास्य प्रायेणैकयोगक्षमत्वं वातकारणत्वात्।

अथातो गुल्मचिकित्सितं व्याख्यास्यामः।

गुल्मं बद्धशकृद्वातं वातिकं तीव्रवेदनम्।
रूक्षशीतोद्भवं तैलैः साधयेद्वातरोगिकैः॥ १॥
पानान्नान्वासनाभ्यंगैः स्निग्धस्य स्वेदमाचरेत्।
आनाहवेदनास्तंभविबंधेषु विशेषतः॥ २॥
स्रोतसां मार्दवं कृत्वा जित्वा मारुतमुल्बणम्।
भित्वा विबंधं स्निग्धस्य स्वेदो गुल्ममपोहति॥ ३॥

वातिकं गुल्मं तीव्ररुजं पुरीषवातग्रहं रूक्षशीतोद्भूतं वातचिकित्सितोक्तैस्तैलैः साधयेत्। पानान्नान्वासनाभ्यंगैःस्निग्धस्य गुल्मिनः स्वेदमाचरेत्। पानशब्देन स्नेहपानं वेद्यं स्निग्धस्येति वचनात्। आनाहादिषु विशेषेण स्वेदमाचरेत्। यस्मात्स्वेदः स्निग्धस्य पुंसः स्रोतोमृदुत्वं विधाय मारुतमुल्बणं च जित्वा तथा विबंधं भित्वा गुल्ममपोहति।

स्नेहपानं हितं गुल्मे विशेषेणोर्ध्वनाभिजे।
पक्वाशयगते बस्तिरुभयं जठराश्रये॥ ४॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

गुल्मे स्नेहपानं हितम्। ऊर्ध्वनाभिजे गुल्मे विशेषेण स्नेहपानं हितम्। पक्काशयगते बस्तिर्हितः। जठराश्रित उभयं स्नेहपानं बस्त्याख्यं हितम्।

दीप्तेऽग्नौ वातिके गुल्मे विबंधेऽनिलवर्चसोः।
बृंहणीन्यन्नपानानि स्निग्धोष्णानि प्रदापयेत्॥ ५॥
पुनः पुनः स्नेहपानं

वातिके गुल्मे वन्हौ समिद्धे सति वातशकृतोश्च विबंधे सति बृंहणान्यन्नादीनि स्निग्धोष्णानि च प्रयोजयेत्। तथा पुनःपुनः स्नेहपानं प्रदापयेत्।

निरूहाः सानुवासनाः।
प्रयोज्या वातजे गुल्मे कफपित्तानुरक्षिणः॥ ६॥

निरूहाश्च सहानुवासना वातिके गुल्मे कफपित्तानुरक्षिणो नरस्य प्रयोज्याः।

बस्तिकर्म परं विद्याद्गुल्मघ्नं तद्धि मारुतम्।
स्वस्थाने प्रथमं जित्वा सद्यो गुल्ममपोहति॥ ७॥
तस्मादभीक्ष्णशो गुल्मा निरूहैः सानुवासनैः।
प्रयुज्यमानैः शाम्यंति वातपित्तकफात्मकाः॥ ८॥

बस्तिकर्म परमतिशयेन गुल्मघ्नं विद्यात्। यस्मात्तद्बस्तिकर्म स्वस्थाने पक्काशयाख्ये प्रथमं पवनं जित्वा सद्यः शीघ्रं गुल्मं जयति। यत एवं तस्मात्कारणान्नित्यं गुल्मा निरूहैः सानुवासनैः प्रयुज्यमानैः शाम्यंति वातपित्तकफोत्थाः।

हिंगुसौवर्चलव्योषबिडदाडिमदीप्यकैः।
पुष्कराजाजिधान्याम्लवेतसक्षारचित्रकैः॥ ९॥
शठीवचाजगंधैलासुरसैर्दधिसंयुतैः।
शूलानाहहरं सर्पिः साधयेद्वातगुल्मिनाम्॥ १०॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

हिंग्वादिभिर्दधियुक्तैर्घृतं साधयेत् । तच्च पीतं वातगुल्मवर्तां शूलादिजित् । द्रव्येभ्यश्चतुर्गुणं घृतं । घृतसमं दधि । घृताच्चतुर्गुणं जलमित्यत्र पाकक्रमः ।

हपुषोषणपृथ्वीकापंचकोलकदीप्यकैः ।
साजाजिसैंधवैर्दध्ना दुग्धेन च रसेन च ॥ ११ ॥
दाडिमान्मूलकात्कोलात्पचेत्सर्पिर्निहंति तत् ।
वातगुल्मोदरानाहपार्श्वहृत्कोष्ठवेदनाः ॥ १२ ॥
योन्यर्शोग्रहणीदोषकासश्वासारुचिज्वरान् ।

हपुषादिभिर्घृताच्चतुर्थांशैर्द्रव्यैर्दधिदुग्धाभ्यां दाडिममूलकबदररसैःसमैः सर्पिःपचेत् । तच्च वातगुल्मादीन् पराकुर्यात् ।

दशमूलं बलां कालां सुषवीं द्वौ पुनर्नवौ ॥ १३ ॥
पौष्करैरंडरास्नाश्वगंधभार्ङ्ग्यमृताशठीः ।
पचेद्गंधपलाशं च द्रोणेऽपां द्विपलोन्मितम् ॥ १४ ॥
यवैः कोलैः कुलत्थैश्च माषैश्च प्रास्थिकैः सह ।
क्वाथेऽस्मिन्दधिपात्रे च घृतप्रस्थं विपाचयेत् ॥ १५ ॥
स्वरसैर्दाडिमाम्रातमातुलुंगोद्भवैर्युतम् ।
तथा तुषांबुधान्याम्लयुतैः श्लक्ष्णैश्च कल्कितैः ॥ १६ ॥
भार्ङ्गीतुंबुरुषड्ग्रंथाग्रंथिरास्नाग्निधान्यकैः ।
यवानकयवान्यम्लवेतसासितजीरकैः ॥ १७ ॥
अजाजीहिंगुहपुषाकारवीवृषकोषकैः ।
निकुंभकुंभमूर्वेभपिप्पलीवेल्लदाडिमैः ॥ १८ ॥
श्वदंष्ट्रात्रपुसैर्वारुबीजहिंस्राश्मभेदकैः ।
मिसिद्विक्षारसुरससारिवानीलिनीफलैः ॥ १९ ॥
त्रिकटुत्रिपटूपेतैर्दाधिकं तद्व्यपोहति ।
रोगानाशुतरान्पूर्वान्कष्टानपि च शीलितम् ॥ २० ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

अपस्मारगरोन्मादमूत्राघातानिलामयान् ।

दशमूलादीन् पृथग्द्विपलप्रमाणान् यवादिभिः प्रस्थप्रमाणैः सह जलद्रोणे पचेत् । काला नीलिनी । सुषवी स्थूलजीरकः । गंधपलाशो गंधपत्रं । अस्मिन् क्वाथे सामान्यपरिभाषया कृते दधिपात्रे च घृतप्रस्थं विपाचयेत् । किं भूतं दाडिमादिजैः स्वरसैस्तथा तुषांब्वादिभिश्च सर्पिःसमैर्युतं । तथा भार्ग्यादिभिः कल्कीकृतैरुपेतं । यवानको यवानीभेदः । कारवी अजमोदः । वृषको वासकः । उषक ऊरुः । इभपिप्पली गजपिप्पली । अश्मभेदः पाषाणभेदः । तदेतद्दाधिकं नाम घृतं पूर्वोक्तानामयान् द्राक्स्वरं हंति । अपस्मारादींश्च कृच्छ्रानप्यभ्यस्तं हंति । यदि चात्र स्वरसालाभस्तदा तंत्रांतरोक्ता कल्पना कार्या । तंत्रांतरे चोक्तं । प्रस्थं गृहीत्वा चूर्णस्य तोयस्य प्रस्थमावपेत् । अहोरात्रं स्थितं पूतं तत्स्यात्स्वरसवद्गुणैः । मुनिरप्यूचे । स्वरसानामलाभे त्वयं विधिः । चूर्णानामाढकमाढकमुदकस्याहोरात्रस्थितं मृदितपूतमावपेत् तत्स्वरसवत् प्रयोज्यमिति ।

त्र्यूषणत्रिफलाधान्यचविकावेल्लचित्रकैः ॥ २१ ॥
कल्कीकृतैर्घृतं पक्वं सक्षीरं वातगुल्मनुत् ।

त्र्यूषणादिभिः कल्कीकृतैर्घृतं समानक्षीरं चतुर्गुणजलपक्वं वातगुल्मं नुदति।

तुलां लशुनकंदानां पृथक्पंचपलांशकम् ॥ २२ ॥
पंचमूलं महच्चांबुभारार्धे तद्विपाचयेत् ।
पादशेषं तदर्धेन दाडिमस्वरसं सुराम् ॥ २३ ॥
धान्याम्लं दधि चादाय पिष्टांश्चार्धपलांशकान् ।
त्र्यूषणत्रिफलाहिंगुयवानीचव्यदीप्यकान् ॥ २४ ॥
साम्लवेतससिंधूत्थदेवदारून्पचेद्घृतात् ।
तैः प्रस्थं तत्परं सर्ववातगुल्मविकारजित् ॥ २५ ॥

लशुनमूलतुलां पलशतं महत् पंचमूलं च प्रत्येकं पंचपलदशं । तदेतत्तोयाद्दशशते पादशेषं विपाचयेत् । पादशेषादर्धेन दाडिमस्वरसं सुरां

धान्याम्लं दधि च गृहीत्वा त्र्यूषणादींश्च द्विकार्षिकानादाय तैर्घृतात् प्रस्थं पचेत्। तद्घृतं सर्ववातगुल्मविकारजित्।

षट्पलं वा पिबेत् सर्पिर्यदुक्तं राजयक्ष्मणि ।
प्रसन्नया वा क्षीरार्थः सुरया दाडिमेन वा ॥ २६ ॥
घृते मारुतगुल्मघ्नः कार्यो दध्नः सरेण वा ।

राजयक्ष्मचिकित्सिते यदुक्तं षट्पलं घृतं तद्वा पिबेत्। राजयक्ष्मणीति विशेषणं स्पष्टार्थं। घृते षट्पलाख्ये क्षीरार्थः प्रसन्नया वा कार्यः। अथवा सुरया दाडिमेन वा। दधिसरेण वा। एवं क्षीरं हित्वा प्रसंनाद्यन्यतमेन साधितं घृतं षट्पलं वातगुल्मजित्स्यात्।

वातगुल्मे कफो वृद्धो हत्वाग्निमरुचिं यदि ॥ २७ ॥
हृल्लासं गौरवं तंद्रां जनयेदुल्लिखेत्तु तम् ।

वातजे गुल्मे श्लेष्मा वृद्धः सन्नग्निं हत्वा यद्यरुच्यादीन् जनयेत्। तदा तं कफमुल्लिखेदुद्वमेत्।

शूलानाहविबंधेषु ज्ञात्वा सस्नेहमाशयम् ॥ २८ ॥
निर्यूहचूर्णवटकाः प्रयोज्या घृतभेषजैः ।

शूलादिषु सत्सु सस्नेहमाशयं ज्ञात्वा घृतोक्तैरौषधै रनंतरोक्तानां घृतानामौषधैः क्वाथचूर्णगुटिका वा सहप्रयोज्याः।

कोलदाडिमघर्मांबुतक्रमद्याम्लकांजिकैः ॥ २९ ॥
मंडेन वा पिबेत्प्रातश्चूर्णान्यन्नस्य वा पुरः ।

कोलाद्यंबुभिस्तक्रादिभिर्वा प्रातश्चूर्णानि घृतौषधीनां संबंधीनि तच्छ्रावक्ष्माण्यन्यान्यपि पिबेत्। अथवा अन्नस्याहारस्य पुरः पूर्वं पिबेत्।

चूर्णानि मातुलुंगस्य भावितान्यसकृद्रसे ।
कुर्वीत कार्मुकतरान् वटकान् कफवातयोः ॥ ३० ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

चूर्णानि मातुलुंगरसेन मुहुर्मुहुर्भावितानि वटकान् कर्मकरणसमर्थान् कुर्वीत। कफवातयोः कफवातिके गुल्म इत्यर्थः।

हिंगुवचाविजयापशुगंधादाडिमदीप्यकधान्यकपाठाः।
पुष्करमूलशठीहपुषाग्निक्षारयुगत्रिपटुत्रिकटूनि ॥ ३१ ॥
साजाजिचव्यं सहतित्तिडीकं सवेतसाम्लं विनिहंति चूर्णम्।
हृत्पार्श्वबस्तित्रिकयोनिपायुशूलानि वाय्वामकफोद्भवानि॥३२॥
कृच्छ्रान् गुल्मान्वातविण्मूत्रसंगं कंठे बंधं हृद्ग्रहं पांडुरोगम्।
अन्नाश्रद्धाप्लीहदुर्नामहिध्मावध्माध्मानश्वासकासाग्निसादान्३३

हिंग्वादिकमेतच्चूर्णं हृच्छूलादीन्निहंति तथा कृच्छ्रगुल्मादींश्च। दोधकोपजातिशालिन्यः।

लवणयवानीदीप्यककणनागरमुत्तरोत्तरं वृद्धम्।
सर्वसमांशहरीतकीचूर्णं वैश्वानरः साक्षात् ॥ ३४ ॥

लवणादिकं क्रमेणोत्तरोत्तरं भागवृद्धं सर्वसमभागा हरीतकीति चूर्णमेतत्साक्षाद्वैश्वानरो दीप्तनगुणसामान्यात्। आर्या वृत्तम्।

त्रिकटुकमजमोदा सैंधवं जीरके द्वे
समधरणधृतानामष्टमो हिंगुभागः।
प्रथमकवलभोज्यः सर्पिषा चूर्णकोऽयं
जनयति भृशमग्निं वातगुल्मं निहंति ॥ ३५ ॥

त्रिकटुकादीनां समानां समधरणधृतानां समप्रमाणस्थापितानां हिंगुभागोष्टमो देय इत्यध्याहार्यं। केचित्त्वेवं व्याख्यानयंति। धरणशब्देन पलस्य दशमो भाग उच्यते। धरणे धृता धरणधृताः। समाश्च ते धरणधृताश्च तेषां समधरणधृतानां त्रिकटुकादीनामष्टमो हिंगुभागो देयः। स च प्रथमकवले भोज्यो भक्षणीयः। सर्पिषा सम्यक् प्रयुक्तो मिश्रितो जठराग्निं जनयति। वातगुल्मं च हंति। मालिनीवृत्तम्।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

हिंगूग्राविडशुंठ्यजाजिविजयावाल्याभिधानामयैः
चूर्णः कुंभनिकुंभमूलसहितैर्भागोत्तरं वर्धितैः ।
पीतः कोष्णजलेन कोष्टजरुजोगुल्मोदरादीनयम्
शार्दूलः प्रसभं प्रमथ्य हरति व्याधीन् मृगौघानिव॥३६॥

हिंगूग्रेत्यादिभिर्भागोत्तरमंशाधिकं वर्धितैश्चूर्णः कोष्णजलेन पीतो जठररुजादीन् पराकरोति । अयं शार्दूलाख्यश्चूर्णो हठात् प्रमथ्य व्याधीन् मृगौघानिव । शार्दूलः सिंहोऽप्यत एव श्लेषोपमोऽयमलंकारः । तथा शार्दूलशब्देन शार्दूलविक्रीडितं वृत्तमुपलक्ष्यते । यथा भीमशब्देन भीमसेन इति । शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम् ।

सिंधूत्थपथ्याकणदीप्यकानां चूर्णानि तोयैः पिबतां कवोष्णैः ।
प्रयाति नाशं कफवातजन्मा नाराचनिर्भिन्न इवामयौघः॥३७॥

सिंधूत्थादीनां चूर्णानि कोष्णैस्तोयैः पिबतां कफवातजो रोगसंघो नाशं याति । क इव । नाराचेन निर्भिन्न इवेत्युपमा । उपजातिवृत्तं ।

पूतीकपत्रगजचिर्भटचव्यवह्निव्योषंचसंस्तरचितंलवणोपधानम् ।
दग्ध्वाविचूर्ण्यदधिमस्तुयुतंप्रयोज्यंगुल्मोदरश्वयथुपांडुगदोद्भवेषु॥३८

पूतिकादिद्रव्यं संस्तरचितं यथाक्रमनिर्दिष्टमुपर्युपरिभावेन संस्तीर्णं तथा लवणोपधानं लवणं सर्वोपर्युपधानं दत्त्वाऽनंतरं दग्ध्वा संचूर्ण्य ततो दधिमस्तुना युतं गुल्मादिषु प्रयोज्यं । वसंततिलकावृत्तम् ।

हिंगुत्रिगुणं सैंधवमस्मात्त्रिगुणं तु तैलमैरंडम् ।
तत्त्रिगुणरसोनरसं गुल्मोदरवर्ध्मशूलघ्नम् ॥ ३९ ॥

सैंधवं हिंगुतस्त्रिगुणम् । अस्माच्च सैंधवादेरंडतैलं त्रिगुणं । तस्माच्चैरंडतैलात्त्रिगुणं रसोनस्य रसम् । तदेतद्गुल्मादिघ्नम् । आर्या वृत्तम् ।

मस्तुलुंगरसो हिंगुदाडिमं विडसैंधवम् ।
सुरामंडेन पातव्यं वातगुल्मरुजापहम् ॥ ४० ॥

Indira Gandhi National
Centre for the Arts

मातुलुंगरसक्वदिकं सुरादिकं सुरामंडेन पातव्यं वातगुल्मपीडाहरम् ।

शुंठ्याः कर्षं गुडस्य द्वौ धौतात्कृष्णतिलात्पलम् ।
खादन्नेकत्र संचूर्ण्य कोष्णक्षीरानुपोजयेत् ॥ ४१ ॥
वातहृद्रोगगुल्मार्शोयोनिशूलशकृद्ग्रहान् ।

शुंठ्याः कर्षौ गुडस्य द्वौ कर्षौ लुंचितकृष्णतिलात्पलमित्येकत्र मिश्रयित्वा खादन् कोष्णक्षीरानुपः सन् वातहृद्रोगादीन् जयेत् ।

पिबेदेरंडतैलं तु वातगुल्मी प्रसन्नया ॥ ४२ ॥
श्लेष्मण्यनुबले वायौ पित्ते तु पयसा सह ।

वातकफानुगे सत्येरंडतैलं प्रसन्नया सह गुल्मवान् पिबेत् । पित्ते त्वनुगते पयसा सहैरंडतैलं पिबेत् ।

विवृद्धं यदि वा पित्तं संतापं वातगुल्मिनः ॥ ४३ ॥
कुर्याद्विरेचनीयोऽसौ सस्नेहैरानुलोमिकैः ।
तापानुवृत्तावेवं च रक्तं तस्याऽवसेचयेत् ॥ ४४ ॥

वातगुल्मिनः पित्तं विवृद्धं यदि संतापं कुर्यात् तदाऽसौ वातगुल्मी विरेचनीयो विरेचनार्हकैरानुलोमिकैर्द्रव्यैः स्नेहयुतैः । एवं विरिक्तस्यापि तापानुवर्त्तने सति तस्य रक्तस्रावं कुर्यात् ।

साधयेच्छुद्धशुष्कस्य लशुनस्य चतुःपलम् ।
क्षीरोदकेऽष्टगुणिते क्षीरशेषं च पाचयेत् ॥ ४५ ॥
वातगुल्ममुदावर्तं गृध्रसीं विषमज्वरम् ।
हृद्रोगं विद्रधिं शोषं साधयत्याशु तत्पयः ॥ ४६ ॥

क्षीरं चोदकं च क्षीरोदकम् । तस्मिन् लशुनादष्टगुणे शुद्धशुष्कस्य लशुनस्य चतुष्पलं साधयेत् । ततः क्षीरशेषं विपाचयेत् । तच्च क्षीरशेषं वातगुल्मादीन्यभिभवति ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

तैलं प्रसन्नागोमूत्रमारनालं यवाग्रजः ।
गुल्मं जठरमानाहं पीतमेकत्र साधयेत् ॥ ४७ ॥

तैलादिकं मिलितं पीतं गुल्मादीन्हंति ।

चित्रकग्रंथिकैरंडशुंठीक्वाथः परं हितः ।
शूलानाहविबंधेषु सहिंगुबिडसैंधवः ॥ ४८ ॥

चित्रकादिक्वाथो हिंग्वादियुतः परं शूलादिषु हितः ।

पुष्करैरंडयोर्मूलं यवधन्वयवासकम् ।
जलेन क्वथितं पीतं कोष्टदाहरुजापहम् ॥ ४९ ॥

पुष्करैरंडमूलादिकं जलेन क्वथितं पीतं कोष्टदाहादिहृत् ।

वाट्याह्वैरंडदर्भाणां मूलं दारु महौषधम् ।
पीतं निःक्वाथ्य तोयेन कोष्टपृष्ठांससशूलजित् ॥ ५० ॥

वाट्याह्वादीनां मूलं देवदार्वादियुक्तोयेन क्वथितं पीतं कोष्टादिशूलजित् ।

शिलाजं पयसाऽनल्पपंचमूलसृतेन वा ।
वातगुल्मी पिबेद्वाट्यमुदावर्ते तु भोजयेत् ॥ ५१ ॥
स्निग्धं पैप्पलिकैर्यूषैर्मूलकानां रसेन वा ।
बद्धविण्मारुतोऽश्नीयात्क्षीरेणोष्णेन यावकम् ॥ ५२ ॥
कुल्माषान्वा बहुस्नेहान् भक्षयेल्लवणोत्तरान् ।

शिलाजतु वा महत्पंचमूलक्वथितेन क्षीरेण सह वातगुल्मी पिबेत् । उदावर्ते सति वाट्यं स्निग्धं सस्नेहं पिप्पलीसंसृतैर्यूषैः सह भोजयेत् । अथवा मूलकरसेनाश्नीयात् । बद्धविण्मारुत उष्णेन क्षीरेण यावकमश्नीयात् । अथवा कुल्माषान्बहुस्नेहान् लवणप्रधानान् भक्षयेत् ।

नीलिनीत्रिवृतादंतीपथ्याकंपिल्लकैः सह ॥ ५३ ॥
समलाय घृतं देयं सबिडक्षारनागरम् ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

नीलिन्यादिभिः सह सदोषाय नराय बिडादियुतं घृतं देयम् ।

नीलिनीं त्रिफलां रास्नां बलां कटुकरोहिणीम् ॥ ९४ ॥
पचेद्विडंगं व्याघ्रीं च पालिकानि जलाढके ।
रसेऽष्टभागशेषे तु घृतप्रस्थं विपाचयेत् ॥ ९५ ॥
दध्नः प्रस्थेन संयोज्य सुधाक्षीरपलेन च ।
ततो घृतपलं दद्याद्यवागूमंडमिश्रितम् ॥ ९६ ॥
जीर्णे सम्यग्विरिक्तं च भोजयेद्रसभोजनम् ।
गुल्मकुष्टोदरव्यंगशोफपाण्ड्वामयज्वरान् ॥ ९७ ॥
श्वित्रं प्लीहानमुन्मादं हंत्येतन्नीलिनीघृतम् ।

नीलिन्यादीन् पलिकान् जलाढके पचेत् । अष्टभागशेषे च रसे दधिप्रस्थेन सुधाक्षीरपलेन च मिश्रयित्वा घृतप्रस्थं विपाचयेत् । ततो घृतपलं यवागूमंडमिश्रितं दद्यात् । जीर्णे च घृते सम्यग्विरिक्तं नरं रसयुतं भोजनं भोजयेत् । एतच्च नीलिनीघृतं गुल्मादीन्हंति ।

कुक्कुटाश्च मयूराश्च तित्तिरीक्रौंचवर्तकाः ॥ ९८ ॥
शालयो मदिराः सर्पिर्वातगुल्मचिकित्सितम् ।

कुक्कुटादयो वातगुल्मचिकित्सितमुपक्रमः ।

मितमुष्णं द्रवं स्निग्धं भोजनं वातगुल्मिनाम् ॥ ९९ ॥
समंडावारुणीपानं तप्तं वा धान्यकैर्जलम् ।

वातगुल्मिनां च भोजनमितमुष्णं द्रवं स्निग्धं च स्यात् । वारुणीं समंडधान्यकं शृतं जलं वा पानं स्यात् ।

स्निग्धोष्णेनोदिते गुल्मे पैत्तिके स्रंसनं हितम् ॥ १०० ॥
द्राक्षाभयागुडरसं कंपिल्लं वा मधुद्रुतम् ॥
कल्पोक्तं रक्तपित्तोक्तं

Indira Gandhi National Centre for the Arts

पैत्तिके गुल्मे स्निग्धोष्णेनोत्थिते सति स्रंसनं हितं। तदेव विरेचनमाह। द्राक्षाभयागुडरसं स्रंसनं हितं। अथवा मधुद्रुतं कंपिल्लं स्रंसनं हितं। कल्पोक्तं विरेचनं कल्पविरेचनं कल्पविहितं रक्तपित्तोक्तं त्रिवृतात्रिफलेत्यादिकं हितं।

गुल्मे रूक्षौष्णजे पुनः ॥ ६१ ॥
परं संशमनं सर्पिस्तिक्तं वासाघृतं शृतम्।
तृणाख्यपंचककाथे जीवनीयगणेन वा ॥ ६२ ॥
शृतं तेनैव वा क्षीरं न्यग्रोधादिगणेन वा।

रूक्षोष्णजे पैत्तिके गुल्मे सर्पिस्तिक्तं कुष्टचिकित्सितोक्तं तथा वासाघृतं संशमनं श्रेष्ठं। तृणाख्यं पंचकं काशेक्षिवत्यादि। तच्च काथे शृतं घृतं हितं। अथवा जीवनीयगणेन शृतं घृतं हितं। तेनैव जीवनीयगणेन शृतं क्षीरं हितं। न्यग्रोधादिगणेन वा शृतं क्षीरं हितं।

तत्रापि स्रंसनं युंज्याच्छीघ्रमात्ययिके भिषक् ॥ ६३ ॥
वैरेचनिकसिद्धेन सर्पिषा पयसाऽपि वा।

तत्रापि न केवलं स्निग्धोष्णजे रूक्षोष्णजेऽपि पैत्तिके सामान्यतो वा समुत्पन्ने गुल्मेऽऽत्ययिके शीघ्रं स्रंसनं युंज्यात्। केनेत्याह। विरेचनविहितद्रव्यसिद्धेन सर्पिषा क्षीरेण वा।

रसेनामलकेक्षूणां घृतप्रस्थं विपाचयेत् ॥ ६४ ॥
पथ्यापादं पिबेत्सर्पिस्तत्सिद्धं पित्तगुल्मनुत्।
पिबेद्वा तैल्वकं सर्पिर्यच्चोक्तं पित्तविद्रधौ ॥ ६५ ॥

आमलकस्येक्षोश्च रसेन घृताच्चतुर्गुणितेनाढकमानेन पथ्यापादं घृतप्रस्थं विपाचयेत्। तच्च सिद्धं पित्तगुल्मं हंति। तैल्वकमथवा सर्पिः पिबेत्। यच्च पित्तविद्रधावुक्तं घृतं तच्च पिबेत्।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

द्राक्षां पयस्यां मधुकं चंदनं पद्मकं मधु ।
पिबेत्तंडुलतोयेन पित्तगुल्मोपशांतये ॥ ६६ ॥

द्राक्षादि तंडुलजलेन पित्तगुल्मशांतये पिबेत् ।

द्विपलं त्रायमाणाया जलद्विप्रस्थसाधितम् ।
अष्टभागस्थितं पूतं कोष्णं क्षीरसमं पिबेत् ॥ ६७ ॥
पिबेदुपरितस्योष्णं क्षीरमेव यथाबलम् ।
तेन निर्हृतदोषस्य गुल्मः शाम्यति पैत्तिकः ॥ ६८ ॥

त्रायंत्यो द्विपलं जलद्विप्रस्थसाधितमष्टभागावशेषं पटेन पूतं क्षीरसमं पिबेत् । तस्योपरि कोष्णं क्षीरमेव यथाशक्ति पिबन्नान्यत्किंचित् । तेन क्षीरेणापहृतदोषस्य गुल्मः पैत्तिकः शाम्यति ।

दाहेऽभ्यंगो घृतैः शीतैः साज्यैर्लेपो हिमौषधैः ।
स्पर्शः सरोरुहां पत्रैः पात्रैश्च प्रचलज्जलैः ॥ ६९ ॥

पैत्तिके गुल्मेदाहे सति घृतैः शीतैः शीतवीर्यसाधितैः स्पर्शतश्च शीतैरभ्यंगस्तथा लेपः शीतवीर्यौषधैः सघृतैः स्यात् । पद्मपत्रैः पात्रैश्च प्रचलज्जलैः स्पर्शः ।

विदाहपूर्वरूपेषु शूले वन्हेश्च मार्दवे ।
बहुशोपहरेद्रक्तं पित्तगुल्मे विशेषतः ॥ ७० ॥

विदाहपूर्वरूपेषु गुल्मेषु तथा शूले वन्हिमांद्ये च सति बहून् वारान् रक्तं हरेत् । पित्तगुल्मे विशेषेणास्त्रं हरेत् ।

छिन्नमूला विदह्यंते न गुल्मा यांति च क्षयम् ।
रक्तं हि व्यम्लतां याति तच्च नास्ति नचाऽस्ति रुक् ॥ ७१ ॥

छिन्नमुला गुल्मा न विदह्यंते न पाकं यांति च पुनः क्षयं यांति हि

Indira Gandhi National Centre for the Arts

यस्माद्रक्तमंतः स्थितं व्यम्लीभावं याति । तच्च रक्तं नास्ति ततस्तदुत्था रुक् चापि नास्ति ।

हृतदोषं परिम्लानं जांगलैस्तर्पितं रसैः ।
समाश्वस्तं सशेषार्तिं सर्पिरभ्यासयेत्पुनः ॥ ७२ ॥

हृतदोषं परिम्लानं नरं जांगलमांसरसैस्तर्पितं समाश्वस्तं संतं सशेषार्तिं सर्पिरभ्यासयेत् ।

रक्तपित्तातिवृद्धत्वात्क्रियामनुपलभ्य वा ।
गुल्मे पाकोन्मुखे सर्वा पित्तविद्रधिवत्क्रिया ॥ ७३ ॥

रक्तपित्तातिवृद्धत्वाद्धेतोः क्रियां वाऽनुपलभ्यानासाद्य गुल्मे पाकोन्मुखे सति सर्वा पित्तविद्रधितुल्या क्रिया स्यात् ।

शालिर्गव्याजपयसा पटोली जांगलं घृतम् ।
धात्रीपरूषकं द्राक्षा खर्जूरं दाडिमं सिताम् ॥ ७४ ॥
भोज्यं पानेऽबुबलया बृहत्याद्यैश्च सधितम् ।

शाल्यादि भोज्यं । पाने बलया साधितं जलं बृहत्यादिना वा ।

श्लेष्मजे वामयेत्पूर्वमवम्यमुपवासयेत् ॥ ७५ ॥
तिक्तोष्णकटुसंसर्ग्या वन्हिं संधुक्षयेत्ततः ।
हिंग्वादिभिश्च द्विगुणक्षारहिंग्वम्लवेतसैः ॥ ७६ ॥

श्लेष्मजे गुल्मे पूर्वं वामयेदवमनार्हंतु लंघयेत् कृतोपवासस्य तिक्तोष्णकटुद्रव्ययुतया संसर्ग्या वन्हिं दीपयेत् । तथा हिंग्वादिभिरग्निं संधुक्षयेत् । किंभूतैः । द्विगुणानि क्षारहिंग्वाम्लवेतसानि येषु तैः ।

निगूढं यदि वोन्नद्धं स्तिमितं कठिनं स्थिरम् ।
आनाहादियुतं गुल्मं संशोध्य विनयेदनु ॥ ७७ ॥
घृतं सक्षारकटुकं पातव्यं कफगुल्मिना ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

निगूढादिधर्मयुक्तं गुल्मं संशोध्य विनयेदुपशमयेत्। पश्चात्कफगुल्मिना घृतं क्षारकटुकयुतं पातव्यं।

सव्योषक्षारलवणं सहिंगुविडदाडिमम् ॥ ७८ ॥
कफगुल्मं जयत्याशु दशमूलसृतं घृतम् ।

व्योषादियुतं दशमूलपक्वं सर्पिः कफगुल्मं शीघ्रमेव हंति ।

भल्लातकानां द्विपलं पंचमूलं पलोन्मितम् ॥ ७९ ॥
अल्पं तोयाढके साध्यं पादशेषेण तेन च ।
तुल्यं घृतं तुल्यपयो विपचेदक्षसंमितैः ॥ ८० ॥
विडंगहिंगुसिंधूत्थयावशूकशठीविडैः ।
सद्वीपिरास्नायष्ट्याह्वषड्ग्रंथाकणनागरैः ॥ ८१ ॥
एतद्भल्लातकघृतं कफगुल्महरं परम् ।
प्लीहपांड्वामयश्वासग्रहणीरोगकासनुत् ॥ ८२ ॥

भल्लातकानां द्विपलं ह्रस्वं पंचमूलं पृथक् पलप्रमाणं तोयाढके साधनीयं। पादशेषेण च तेन क्वाथेन समं सर्पिस्तुल्यं क्षीरं विडंगादिभिः कल्कीभूतैः कार्षिकैर्विपाचयेत्। एतच्च भल्लातकघृतं परमत्यर्थं सुष्टु कफगुल्महरं प्लीहादिजिच्च।

ततोऽस्य गुल्मे देहे च समस्ते स्वेदमाचरेत् ।

ततो घृतपानादनंतरं। गुल्मे देहे चास्य समस्ते स्वेदमाचरेत्।

सर्वत्र गुल्मे प्रथमं स्नेहस्वेदोपपादिते ॥ ८३ ॥
या क्रिया क्रियते याति सा सिद्धिं न विरूक्षिते ।

सर्वस्मिन्नष्टविधे च गुल्मे प्रथमं स्नेहस्वेदाभ्यामुपपादिते सति या क्रिया क्रियते सा सिद्धिं याति। या तु विरूक्षिते सति क्रिया सा सिद्धिं न याति।

स्निग्धस्विन्नशरीरस्य गुल्मे शैथिल्यमागते ॥ ८४ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

यथोक्तां घटिकां न्यसेद्गृहीतेऽपनयेच्च ताम् ।
वस्त्रांतरं ततः कृत्वा छिंद्याद्गुल्मं प्रमाणवित् ॥ ८५ ॥
विमार्गाजपदादर्शैर्यथालाभं प्रपीडयेत् ।
प्रमृज्याद्गुल्ममेवैकं न त्वंत्रहृदयं स्पृशेत् ॥ ८६ ॥

स्निग्धस्विन्नशरीरस्य गुल्मे शैथिल्यं याते सति यंत्रविध्युदितां घटिकां योजयेत् । गृहीते च गुल्मे तामप्यसारयेत् । अनंतरं वस्त्रव्यवहितं गुल्मं कृत्वा प्रमाणविद्विर्मार्गादिभिर्यथालाभं भिंद्याद्विदारयेत्सूचिकादिना विमार्गो दारुमयः शस्त्राकृतिर्वस्तुविशेषश्चर्मकारसंबंधी । तथा गुल्ममेव केवलं प्रपीडयेत् प्रमृज्याच्च । न पुनरंत्रं हृदयं स्पृशेत् ।

तिलैरंडातसीबीजसर्षपैः परिलिप्य च ।
श्लेष्मगुल्ममयस्पात्रैःसुखोष्णैः स्वेदयेत्ततः ॥ ८७ ॥

अथवा कफगुल्मं तिलादिभिः परिलिप्यानंतरं लोहभाजनैः सुखोष्णैः स्वेदयेत् । अयस्पात्रैरिति । अतः कृकमीत्यादिना सादेशः ।

एवं च विसृतं स्थानात् कफगुल्मं विरेचनैः ।
सस्नेहैर्वस्तिभिश्चैनं शोधयेद्दशमूलकैः ॥ ८८ ॥

एवमस्मिन्प्रकारे कृते सति स्थानाच्चलितं कफगुल्मं स्नेहयुक्तैर्विरेचनैर्बस्तिभिश्च दशमूलकैः शोधयेत् ।

पिप्पल्यामलकद्राक्षाश्यामाद्यैः पालिकैः पचेत् ।
एरंडतैलहविषोः प्रस्थौ पयसि षड्गुणे ॥ ८९ ॥
सिद्धोयं मिश्रकः स्नेहो गुल्मिनां स्रंसनं हितम् ।
वृद्धिविद्रधिशूलेषु वातव्याधिषु चामृतम् ॥ ९० ॥

पिप्पल्यादिभिः पलोन्मितैरेरंडतैलसर्पिषोः प्रस्थौ द्वौ षड्गुणे क्षीरे पचेत् । अयं मिश्रकाख्यः स्नेहो गुल्मिनां परं स्रंसनं वृध्यादिषु चामृततुल्यं ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

पिबेद्वा नीलिनीसर्पिर्मात्रया द्विपलीकया ।
तथैव सुकुमाराख्यं घृतान्यौदरिकाणि वा ॥ ९१ ॥

अथवा नीलिनीघृतं प्रागुक्तं स्रंसनं द्विपलमात्रया पिबेत्। तथैव द्विपलमात्रया सुकुमाराख्यं घृतं विद्रध्युक्तं स्रंसनार्थं पिबेत्। उदरचिकित्सितोक्तानि वा घृतानि पिबेत्।

द्रोणेंऽभसः पचेद्दंत्याः पलानां पंचविंशतिम् ।
चित्रकस्य तथा पथ्यास्तावतीस्तद्रसे स्रुते ॥ ९२ ॥
द्विप्रस्थे साधयेत्पूते क्षिपेद्दंतीसमं गुडम् ।
तैलात्पलानि चत्वारि त्रिवृतायाश्च चूर्णतः ॥ ९३ ॥
कणाकर्षौ तथा शुंठ्याः सिद्धे लेहे तु शीतले ।
मधुतैलसमं दद्याच्चतुर्जाताच्चतुर्थिकाम् ॥ ९४ ॥
अतो हरीतकीमेकां सावलेहपलामदन् ।
सुखं विरिच्यते स्निग्धो दोषप्रस्थमनामयः ॥ ९५ ॥
गुल्महृद्रोगदुर्नामशोफानाहगरोदरान् ।
कुष्ठोत्क्लेशारुचिप्लीहग्रहणीविषमज्वरान् ॥ ९६ ॥
घ्नंति दंती हरीतक्यः पांडुतां च सकामलाम् ।

जलद्रोणे दंतीपलानां पंचविंशतिं चित्रकस्य पलानां पंचविंशतिं हरीतकीस्तावतीः पंचविंशतिं पचेत्। तद्रसे स्रुते द्विप्रस्थदघ्ने पूते पथ्यासहिते दंतीतुल्यं गुडं क्षिपेत्। तैलपलानि त्रिवृत्पलानि चत्वारि कणायाः कर्षौ द्वौ। शुंठ्याश्च सिद्धे चास्मिन् लेहे तु सुशीते तैलतुल्यं माक्षिकं दद्यात्। चतुर्जातात्समुदिताच्चतुर्थिकां पलापरसंज्ञां दद्यात्। अतो लेहात् पथ्यामेकां सावलेहपलयुतां भक्षयेत्। स्निग्धो नरः सुखं दोषप्रस्थं विरिच्यते निरामयः। एता दंतीहरीतक्यः प्लीहादीन् घ्नंति।

सुधाक्षीरद्रवं चूर्णं त्रिवृतायाः सुभावितम् ॥ ९७ ॥
कार्षिकं मधुसर्पिर्भ्यां लीढ्वा साधु विरिच्यते ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

सुधाक्षीरेण द्रवं त्रिवृतायाश्चूर्णं मकृतत्वात्सुधाक्षीरेणैव सुभावितं कर्षप्रमाणम् मधुसर्पिर्भ्यां लीढ्वा सम्यग्विरिच्यते ।

कुष्टश्यामात्रिवृद्दंतीविजयाक्षारगुग्गुलुम् ॥ ९८ ॥
गोमूत्रेण पिबेदेकं तेन गुग्गुलुमेव वा ।

कुष्टादीन् गोमूत्रेण पिबेत् । अथवा तेन गोमूत्रेण गुग्गुलुमेकमेव पिबेत् ।

निरूहान्कल्पसिध्युक्तान् योजयेद्गुल्मनाशनान् ॥ ९९ ॥

कल्पसिध्युक्तान्निरूहान् गुल्मनाशनान् योजयेत् ।

कृतमूलं महावास्तुं कठिनं स्तिमितं गुरुम् ।
गूढमांसं जयेद्गुल्मं क्षारारिष्टाग्निकर्मभिः ॥ १०० ॥
एकांतरं द्व्यंतरं वा विश्रमय्याथवा त्र्यहम् ।
शरीरदोषबलयोर्वर्धनक्षपणोद्यतः ॥ १०१ ॥

कृतमूलादि धर्मयुक्तं गुल्मं क्षारादिभिर्जयेत् । एकांतरं द्व्यंतरं वा त्र्यहं वा विश्रमय्य शरीरदोषबलयोर्यथाक्रमं वर्धनक्षपणयोरुद्यतः सन् ।

अर्शोश्मरीग्रहण्युक्ताः क्षारा योज्याः कफोल्बणे ।

कफाधिके गुल्मेऽर्शोऽश्मरीग्रहणीषूक्ता ये क्षारास्ते योज्याः ।

देवदारुत्रिवृद्दंतीकटुकापंचकोलकम् ॥ १०२ ॥
स्वर्जिकायावशूकाख्यौ श्रेष्ठापाठोपकुंचिकाः ।
कुष्टं सर्पसुगंधां च द्व्यक्षांशं पटुपंचकम् ॥ १०३ ॥
पालिकं चूर्णितं तैलवसादधिघृताप्लुतम् ।
घटास्यांतः पचेत्पक्वमग्निवर्णे घटे च तम् ॥ १०४ ॥
क्षारं गृहीत्वा क्षीराज्यतक्रमद्यादिभिः पिबेत् ।
गुल्मोदावर्तवर्ध्माशोंजठरग्रहणीकृमीन् ॥ १०५ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

अपस्मारगरोन्मादयोनिशुक्रामयाश्मरीः ।
क्षारोऽगदोयं शमयेद्विषं चाखुभुजंगजम् ॥ १०६ ॥

देवदार्वादिसुगंधापर्यंतं द्विकार्षिकं लवणपंचकं पालिकमेतत्समस्तं चूर्णीकृतं तैलवसादधिघृतैराप्लुतमालोडितं घटस्य मध्येंऽतर्धूमं पचेत् । सर्वसुगंधा नाकुली । अग्निवर्णे च घटे सति पक्वं तं क्षारं गृहीत्वा यथादोषं क्षीरादिभिः पिबेत् । गुल्मादीन् जयेदयं क्षारोऽगद आखुजं भुजंगमजं च विषं द्राक् शमयेत् ।

श्लेष्माणं मधुरं स्निग्धं रसक्षीरघृताशिनः ।
छित्वा भित्त्वाऽऽशयं क्षारः क्षारत्वात्पातयत्यधः॥१०७॥

श्लेष्माणं मधुरं स्निग्धं मांसरसाद्याशिनः क्षारः क्षारत्वादाशयं छित्वा भित्त्वाऽधस्तात्पातयति ।

मंदेऽग्नावरुचौ सात्म्यैर्मद्यैः सस्नेहमश्नताम् ।
योजयेदासवारिष्टान्निगदान्मार्गशुद्धये ॥ १०८ ॥

मंदेऽग्नावरुचौ च सत्यां मद्यैः सात्म्यैः सह सस्नेहमाहारमश्नतामासवादीन् मार्गशुद्धये योजयेत् । अधुनाऽत्र पानमाह ।

शालयः षष्टिका जीर्णाः कुलत्था जांगलं पलम् ।
चिरिबिल्वाग्नितर्कारीयवानीवरणांकुराः ॥ १०९ ॥
शिग्रुस्तरुणबिल्वानि बालं शुष्कं च मूलकम् ।
बीजपूरकहिंग्वम्लवेतसक्षारदाडिमम् ॥ ११० ॥
व्योषं तक्रं घृतं तैलं भक्तं पानं तु वारुणी ।
धान्याम्लं मस्तु तक्रं च यवानीविडचूर्णितम् ॥ १११ ॥
पंचमूलसृतं वारि जीर्णं मार्द्वीकमेव वा ।

शालय इत्यादिभक्तांतं भक्तं । पानं तु वा वारुण्यादिमार्द्वीकांतं ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

पिप्पलीपिप्पलीमूलचित्रकाजाजिसैंधवैः ॥ ११२ ॥
सुरा गुल्मं जयत्याशु जांगलश्च विमिश्रितः ।

पिप्पल्यादिभिः सह सुरा शीघ्रमेव गुल्मं जयति। जांगलश्च पिप्पल्यादिभिर्विमिश्रितो गुल्मं जयति ।

वमनैर्लंघनैः स्वेदैः सर्पिःपानैर्विरेचनैः ॥ ११३ ॥
बस्तिक्षारासवारिष्टगुलिकापथ्यभोजनैः ।
श्लैष्मिको बद्धमूलत्वाद्यदि गुल्मो न शाम्यति ॥ ११४ ॥
तस्य दाहं हृते रक्ते कुर्यादंते शरादिभिः ।

वमनादिभिः प्रयुक्तैः श्लैष्मिको गुल्मो बद्धमूलत्वाद्यदि न शाम्यति। तस्य गुल्मस्य हृते रक्तेंते दाहं शरादिभिः कुर्यात् ।

अथ दाहविधानं प्रस्तूयते ।

अथ गुल्मं सपर्यंतं वाससांतरितं भिषक् ॥ ११५ ॥
नाभिबस्त्यंत्रहृदयं रोमराजीं च वर्जयेत् ।
नातिगाढं परिमृशेच्छरेण ज्वलताऽथवा ॥ ११६ ॥
लोहेनारणिकोत्थेन दारुणा तैंदुकेन वा ।
ततोऽग्निवेगे शमिते शीतैर्व्रणइव क्रिया ॥ ११७ ॥

गुल्मं पर्यंतैः सह वस्त्रेणांतरितमाच्छादितं नाभ्यादिवर्जयन्नातिगाढेन परामृशेद्वैद्यः शरेण लोहेन वा ज्वलता। किंभूतेन। आरणिकोत्थेन। अथवा तैंदुकेन काष्ठेन। अनंतरमग्निवर्णे शमिते सति शीतैः प्रदेहादिभिर्व्रण इव क्रिया स्यात् ।

आमान्वये तु पेयाद्यैः संधुक्ष्याग्निं विलंघिते ।
स्वं स्वं कुर्यात्क्रमं मिश्रं मिश्रदोषे च कालवित् ॥ ११८ ॥

आमान्वये च सति वन्हिं पेयाद्यैः संधुक्ष्य विलंघिते सति स्वं स्वं क्रमं यथादोषं कुर्यात्। मिश्रदोषे मिश्रं क्रमं कुर्यात्कालविद्वैद्यः ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

गतप्रसवकालायै नार्यै गुल्मेऽस्रसंभवे ।
स्निग्धस्विन्नशरीरायै दद्यात्स्नेहविरेचनम् ॥ ११९ ॥

नार्यै अस्रसंभवे गुल्मे सति स्नेहविरेचनं दद्यात्। किंभूतायै । गतः प्रसवकालो यस्यास्तस्यै इति। एवं हि पुराणत्वे सुखसाध्यता रक्तगुल्मस्य स्यात् सुनिश्चितत्वं च। तथा स्निग्धं स्विन्नं शरीरं यस्यास्तस्यै।

तिलक्वाथो घृतगुडव्योषभार्ङ्गीरजोन्वितः ।
पानं रक्तभवे गुल्मे नष्टे पुष्पे च योषितः ॥ १२० ॥

रक्तोत्थे गुल्मे तिलक्वाथो घृतादियुक्तः पाने योषितः पुष्पे च नष्टे पानं भवेत्।

भार्ङ्गी कृष्णा करंजत्वग्ग्रंथिकामरदारुजम् ।
चूर्णं तिलानां क्वाथेन पीतं गुल्मरुजापहम् ॥ १२१ ॥

भार्ङ्ग्यादिजं चूर्णं तिलक्वाथेन पीतं गुल्मरुजाहृत्।

पलाशक्षारपात्रे द्वे द्वे पात्रे तैलसर्पिषोः ।
गुल्मशैथिल्यजननीं पक्त्वा मात्रां प्रयोजयेत् ॥ १२२ ॥

पलाशक्षारपात्रे द्वे तैलसर्पिषोर्द्वे पात्रे पक्त्वा गुल्मशैथिल्यजननीं मात्रां प्रयोजयेत्। स्नेहाच्चतुर्गुणं तोयमत्राक्षेप्तव्यम्।

न प्रभिद्येत यद्येवं दद्याद्योनिविरेचनम् ।

एवं कृते सति यदि न प्रभिद्येत रक्तगुल्मस्तदा योनिरेचनं दद्यात्। तदाह।

क्षारेण युक्तं पललं सुधाक्षीरेण वा ततः ॥ १२३ ॥
ताभ्यां वा भावितान्दद्याद्योनौ कटुकमत्स्यकान् ।
वराहमत्स्यपित्ताभ्यां नक्तकान्वा सुभावितान् ॥ १२४ ॥
किण्वं वा सगुडक्षारं दद्याद्योनौ विशुद्धये ।
रक्तपित्तहरं क्षारं लेहयेन्मधुसर्पिषा ॥ १२५ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

लशुनं मदिरां तीक्ष्णां मत्स्यांश्चास्यै प्रयोजयेत् ।
बस्तिं सक्षीरगोमूत्रं सक्षारं दाशमूलिकम् ॥ १२६ ॥

क्षारयुक्तं भृष्टतिलचूर्णं ततस्तस्यां योनौ दद्यात् । सुधाक्षीरेण वाऽन्वितं पललं दद्यात् । ताभ्यां क्षारसुधाक्षीराभ्यां भावितान् कटुमत्स्यकान् योनौ दद्यात् । वराहमत्स्ययोः पित्ताभ्यां कटुकमत्स्यकान्सुभावितान् योनौ दद्यात् । अथवा किण्वं गुडक्षारान्वितं योनिविशुद्ध्यर्थं योनौ दद्यात् । रक्तपित्तहरं क्षारं लेहयेन्मधुसर्पिषा । लशुनं मदिरां तीक्ष्णां मत्स्यांश्चास्यै प्रयोजयेत् । दाशमूलिकं बस्तिं कल्पोक्तं क्षीरगोमूत्रसहितं क्षारान्वितमस्यै दद्यात् ।

अवर्तमाने रुधिरे हितं गुल्मप्रभेदनम् ॥

रक्तेऽप्रवर्तमाने सति गुल्मप्रभेदनं हितम् ।

यमकाभ्यक्तदेहायाः प्रवृत्ते समुपेक्षणम् ॥ १२७ ॥
रसौदनस्तथाऽऽहारः पानं च तरुणी सुरा ।

प्रवृत्ते रक्ते सति यमकाभ्यक्तगात्रायाः समुपेक्षणं हितं । तथाऽऽहारे रसौदनो हितः । तरुणी सुरा च पानम् ।

रुधिरेऽतिप्रवृत्ते तु रक्तपित्तहराः क्रियाः ॥ १२८ ॥
कार्या वातरुगार्तायाः सर्वा वातहराः पुनः ।
आनाहादावुदावर्त्तबलासघ्न्यौ यथायथम् ॥ १२९ ॥

रुधिरेऽतिप्रवृत्ते पुन रक्तपित्तहराः क्रियाः कार्याः । वातरुगार्तायाः पुनः सर्वा वातहराः क्रियाः कार्याः । आनाहादौ सत्युदावर्तबलासघ्निताः क्रियाः कार्या इति ।

इति श्रीमदरुणदत्तविरचितायां सर्वांगसुंदराख्यायां चिकित्सास्थाने गुल्मचिकित्सितं नाम चतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

पंचदशोऽध्यायः ।

अस्मादनंतरमुदरचिकित्सितं प्रक्रम्यते । संबंधश्चास्य गुल्मोत्पत्तौ किल । यथा वायुः प्रधानं कारणं प्रायस्तथोदराणामपीत्याह ।

अथात उदरचिकित्सितं व्याख्यास्यामः ॥

दोषातिमात्रोपचयात्स्रोतोमार्गनिरोधनात् ।
संभवत्युदरं तस्मान्नित्यमेनं विरेचयेत् ॥ १ ॥

दोषाणामतिमात्रमुपचयो वृद्धिस्तस्मात्स्रोतसां मार्गा मुखरूपाणि छिद्राणि तेषां निरोधाद्भवत्युदरं । ततस्तस्मादेनमुदरिणमभीक्ष्णं विरेचयेत् । प्रायेण वातप्रधानत्वादस्य व्याधेः स्निग्धं विरेचनमाह ।

पाययेत्तैलमैरंडं समूत्रं सपयोऽपि वा ।
मासं द्वौ वाऽथवा गव्यं मूत्रं माहिषमेव वा ॥ २ ॥
पिबेद् गोक्षीरभुक् स्याद्वा करभीक्षीरवर्तनः ।
दाहानाहातितृण्मूर्च्छापरीतस्तु विशेषतः ॥ ३ ॥

तैलमैरंडगोमूत्रान्वितं क्षीरयुतं वा मासमेकमथवा द्वौ मासौ पाययेत् । दोषादिवशाद्गव्यं मूत्रं माहिषं वा मूत्रं पिबेत् । अथवा गोक्षीरभुग्भवेत् । करभीक्षीरवर्त्तनो वा स्यात् । दाहादियुतस्तु विशेषेणैवंवृत्तिः स्यात् ।

रूक्षाणां बहुवातानां दोषसंशुद्धिकांक्षिणाम् ।
स्नेहनीयानि सर्पींषि जठरघ्नानि योजयेत् ॥ ४ ॥

रूक्षादीनां स्नेहनीयानि सर्पींष्युदरहंतॄणि योजयेत् ।

षट्पलं दशमूलांबु मस्तुद्व्याढकसाधितम् ।

पंचकोलयवक्षारमिति षट्पलं दशमूलांबुना मस्तुनो द्व्याढकेन च साधितं घृतप्रस्थं षट्पलोपलक्षणलक्षितं योजयेत् ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

नागरं त्रिपलं प्रस्थं घृततैलात्तथाढकम् ॥ ५ ॥
मस्तुनः साधयित्वैतत्पिबेत्सर्वोदरापहम् ।
कफमारुतसंभूते गुल्मे च परमं हितम् ॥ ६ ॥

तथा शुंठ्याः पलत्रयं प्रस्थं घृततैलान्मस्तुन आढकमेतत्साधयित्वा सर्वोदरापहं पिबेत् । कफमारुतोत्थे च गुल्मे सुष्ठु हितमेतत् ।

चतुर्गुणे जले मूत्रे द्विगुणे चित्रकात्पले ।
कल्के सिद्धं घृतप्रस्थं सक्षारं जठरी पिबेत् ॥ ७ ॥

सर्पिषः प्रस्थं तदपेक्षया चतुर्गुणे गोमूत्रे जले द्विगुणे चित्रकपले कल्के सिद्धं सयवक्षारमुदरी पिबेत् ।

यवकोलकुलत्थानां पंचमूलस्य चांभसा ।
सुरासौवीरकाभ्यां च सिद्धं वा पाययेद्घृतम् ॥ ८ ॥

यवादिक्वाथेन सुराकांजिकाभ्यां सिद्धं वा घृतं पाययेत् ।

एभिः स्निग्धाय संजाते बले शांते च मारुते ।
स्रस्ते दोषाशये दद्यात्कल्पदृष्टं विरेचनम् ॥ ९ ॥

एभिः स्नेहैः स्निग्धाय नराय बले च संजाते सति पवने च शांते स्रस्ते दोषाशये सति कल्पोक्तं विरेचनं दद्यात् ।

पटोलमूलं त्रिफलां निशां वेल्लं च कार्षिकम् ।
कंपिल्लनीलिनीकुंभभागान् द्वित्रिचतुर्गुणान् ॥ १० ॥
पिबेत्संचूर्ण्य मूत्रेण पेयां पूर्वं ततो रसैः ।
विरक्तो जांगलैर्दद्यात्ततः षड्दिवसं पयः ॥ ११ ॥
सृतं पिबेद्व्योषयुतं पीतमेवं पुनः पुनः ।
हंति सर्वोदराण्येतच्चूर्णं जातोदकान्यपि ॥ १२ ॥

पटोलमूलादिकार्षिकं कंपिल्लादीनां भागान् क्रमेण द्वित्रिचतुर्गुणान्

Indira Gandhi National Centre for the Arts

संचूर्ण्य गोमूत्रेण पिबेत् । अनंतरं विरक्तः सन् पेयां भुक्त्वा जांगलमांसरसैः शाल्यादिकमद्यात् । ततोऽनंतरं षड्दिवसानि क्वथितं क्षीरं त्रिकटुयुतं पिबेत् । एवं पुनरेतत्पीतं सर्वोदराणि जातसलिलान्यपि हंति ।

गवाक्षीं शंखिनीं दंतीं तिल्वकस्य त्वचं वचाम् ।
पिबेत्कर्कंधुमृद्वीकाकोलांभोमूत्रसीधुभिः ॥ १३ ॥

गवाक्ष्यादिकं चूर्णं कर्कंध्वादिजलमूत्रसीध्वन्यतमेन पिबेत् ।

यवानी हपुषाधान्यं शतपुष्पोपकुंचिका ।
कारवी पिप्पलीमूलमजगंधा शठी वचा ॥ १४ ॥
चित्रकाजाजिकं व्योषं स्वर्णक्षीरी फलत्रयम् ।
द्वौ क्षारौ पौष्करं मूलं कुष्टं लवणपंचकम् ॥ १५ ॥
विडंगं च समांशानि दंत्या भागत्रयं तथा ।
त्रिवृद्विशाले द्विगुणे सातला च चतुर्गुणा ॥ १६ ॥
एष नारायणो नाम चूर्णो रोगगणापहः ।
नैनं प्राप्याभिवर्धंते रोगा विष्णुमिवासुराः ॥ १७ ॥
तक्रेणोदरिभिः पेयो गुल्मिभिर्बदरांबुना ।
आनाहवाते सुरया वातरोगे प्रसन्नया ॥ १८ ॥
दधिमंडेन विट्संगे दाडिमांभोभिरर्शसैः ।
परिकर्ते सवृक्षाम्लैरुष्णांबुभिरजीर्णके ॥ १९ ॥
भगंदरे पांडुरोगे कासे श्वासे गलग्रहे ।
हृद्रोगे ग्रहणीदोषे कुष्ठे मंदेऽनले ज्वरे ॥ २० ॥
दंष्ट्राविषे मूलविषे सगरे कृत्रिमे विषे ।
यथार्हं स्निग्धकोष्टेन पेयमेतद्विरेचनम् ॥ २१॥

यवान्यादीनि विडंगपर्यंतानि समांशानि । दंत्या भागास्त्रयः। त्रिवृद्विशालयोर्द्वौ द्वौ भागौ । सातलायाश्च चत्वारः । एषश्चूर्णो नारायणो नाम

Indira Gandhi National Centre for the Arts

रोगगणापहः । एनं चूर्णं माप्य रोगा नाभिवर्धते । कं के । यथा विष्णुमिवासुराः । उदरीभिरेषस्तक्रेण पेयः । गुल्मादिभिर्बदरवारिभिः पेयः । भगंदरादिष्वेतद्यथास्नेहपीतेन विरेचनमेतत्पेयं ।

हपुषां कांचनक्षीरीं त्रिफलां नीलिनीफलम् ।
त्रायंतीं रोहिणीं तिक्तां सातलां त्रिवृतां वचाम् ॥ २२ ॥
सैंधवं काललवणं पिप्पलीं चेति चूर्णयेत् ।
दाडिमत्रिफलामांसरसमूत्रसुखोदकैः ॥ २३ ॥
पेयोऽयं सर्वगुल्मेषु ष्लीन्हिसर्वोदरेषु च ।
श्वित्रे कुष्टेष्वजरके सदने विषमेऽनले ॥ २४ ॥
शोफार्शःपांडुरोगेषु कामलायां हलीमके ।
वातपित्तकफांश्चाशु विरेकेण प्रसाधयेत् ॥ २५ ॥

हपुषादिकमेतच्चूर्णं दाडिमादिरसैः पेयं गुल्मादिषु विरेकेण वैतदाशु वातपित्तकफान् संप्रसाधयेत् । काललवणं कृष्णलवणं ।

नीलिनीं निचुलं व्योषं क्षारौ लवणपंचकम् ।
चित्रकं च पिबेच्चूर्णं सर्पिषोदरगुल्मनुत् ॥ २६ ॥

नीलिन्यादिकं चूर्णं सर्पिषा पिबेत् । उदरगुल्मघ्नं ।

पूर्ववच्च पिबेद् दुग्धं क्षामः शुद्धोंतरांतरा ।
कारभं गव्यमाजं वा दद्यादात्ययिके गदे ॥ २७ ॥
स्नेहमेव विरेकार्थे दुर्बलेभ्यो विशेषतः ।

पूर्ववच्च यथा पटोलमूलादिके चूर्णे कथितं तथैव शुद्धः क्षामः सन् जांगलरंसादनंतरमंतरांतरा मध्ये मध्ये दुग्धं पिबेत् । कारभं गव्यं छागं वा क्षीरं । आत्ययिके रोगे विरेकार्थे स्नेहमेव दद्यात् । दुर्बलेभ्यो वा विशेषेण ।

हरीतकीसूक्ष्मरजः प्रस्थयुक्तं घृताढकम् ॥२८॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

अग्नौ विलाप्य मथितं खजेन यवपल्लके ।
निधापयेत्ततो मासादुद्धृतं गालितं पचेत् ॥ २९ ॥
हरीतकीनां क्वाथेन दध्ना चाम्लेन संयुतम् ।
उदरं गरमष्ठीलामानाहं गुल्मविद्रधिम् ॥ ३० ॥
हंत्येतत्कुष्ठमुन्मादमपस्मारं च पानतः ।

हरीतकीसूक्ष्मरजश्चूर्णं प्रस्थयुक्तं घृतस्याढकमग्नौ विलाप्य खजेनालोडितं यवपल्लके यवराशिमध्ये निधापयेत् । ततो मासादनंतरमुद्धृतं गालितं हरीतकीनां क्वाथेन सामान्यपरिभाषोक्तप्रमाणेनाम्लेन दध्ना संयुतं च पचेत् । एतच्च पानेनोदरादीन् हंति ।

स्नुक्क्षीरयुक्ताद्गोक्षीराच्छृतशीतात्खजाहतात् ॥ ३१ ॥
यज्जातमाज्यं स्नुक्क्षीरसिद्धं तच्च तथा गुणम् ।

स्नुक्क्षीरमिश्रिताद्गोक्षीराच्छृतशीतात् खजेनाहताद्यज्जातं सर्पिस्तत्स्नुक्क्षीरपक्वं पूर्वगुणं ।

क्षीरद्रोणं सुधाक्षीरप्रस्थार्धेन युतं दधि ॥ ३२ ॥
जातं मथित्वा तत्सर्पिस्त्रिवृत्सिद्धं च तद्गुणम् ।

क्षीरद्रोणं स्नुक्क्षीरप्रस्थार्धेन युतं दधिजातं मथित्वा तत्सर्पिस्त्रिवृतात्पक्वं पूर्वगुणं ।

तथा सिद्धं घृतप्रस्थं पयस्यष्टगुणे पिबेत् ॥ ३३ ॥
स्नुक्क्षीरपलकल्केन त्रिवृताषट्पलेन च ।

तथा सिद्धं पूर्ववत्पक्वं घृतप्रस्थं क्षीरेऽष्टगुणे स्नुक्क्षीरपलकल्केन त्रिवृताषट्पलेन च पिबेत् ।

एषां चानु पिबेत्पेयां रसं स्वादु पयोऽथवा ॥ ३४ ॥

एषां च घृतादीनां पश्चात् पेयादीन् पिबेत् ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

घृते जीर्णे विरिक्तश्च कोष्णं नागरसाधितम् ।
पिबेदंबु ततः पेयां ततो यूषं कुलत्थजम् ॥ ३५ ॥

घृते जीर्णे विरिक्तश्च सन् कोष्णं शुंठीसाधितं जलं पिबेत् । अनंतरं पेयां पिबेत् कुलत्थयूषं च पिबेत् ।

पिबेद्रूक्षस्त्र्यहं त्वेवं भूयो वा प्रतिभोजितः ।
पुनः पुनः पिबेत्सर्पिरानुपूर्व्याऽनयैव च ॥ ३६ ॥

एवं त्र्यहं रूक्षः सन् पुनरपि प्रतिभोजितः पुनः पुनरनेनैव क्रमेण सर्पिः पिबेत् ।

घृतान्येतानि सिद्धानि विदध्यात्कुशलो भिषक् ।
गुल्मानां गरदोषाणामुदराणां च शांतये ॥ ३७ ॥

एतानि प्रागुक्तानि सिद्धानि घृतानि कुशलो वैद्यः कुर्वीत गुल्मादीनां शांतये ।

पीलुकल्कोपसिद्धं वा घृतमानाहभेदनम् ।
तैल्वकं नीलिनीसर्पिः स्नेहं वा मिश्रकं पिबेत् ॥ ३८ ॥

पीलुकल्कपक्वं घृतमानाहभेदनं पिबेत् । तैल्वकं वा नीलिनीघृतं मिश्रकं वा स्नेहं पिबेत् ।

हृतदोषः क्रमादश्नन् लघुशाल्योदनं प्रति ।

हृतदोषः क्रमेण शाल्योदनमतिलघुगुणयुक्तमल्पं खादेत् । एवं संसर्जनक्रम आदरितव्यः ।

उपयुंजीत जठरी दोषशेषनिवृत्तये ॥ ३९ ॥
हरीतकीसहस्रं वा गोमूत्रेण पयोनुपः ।
सहस्रं पिप्पलीनां वा स्नुक्क्षीरेण सुभावितम् ॥ ४० ॥
पिप्पलीं वर्द्धमानां वा क्षीराशी वा शिलाजतु ।
तद्वद्वा गुग्गुलुं क्षीरं तुल्यार्द्रकरसं तथा ॥ ४१ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

जठरी दोषशेषस्य निवृत्तये हरीतकीसहस्रं गोमूत्रेणासकृद्भावितं पयोनुपः सन् खादेत् । अथवा स्नुहीदुग्धेनासकृद्भावितं पिप्पलीसहस्रमुपयुंजीत। पिप्पलीं वर्धमानां वा रसायनविधानेनोपयुंजीत । अथवा दुग्धाशनः सन्नद्रिजमुपयुंजीत । तथैव गुग्गुलुं प्रयुंजीत । तथा तुल्यार्द्रकरसं क्षीरमुपयुंजीत ।

चित्रकामरदारुभ्यां कल्कं क्षीरेण वा पिबेत् ।
मासं युक्तस्तथा हस्तिपिप्पलीविश्वभेषजम् ॥ ४२ ॥

अथवा चित्रकदेवदारुणोः कल्कं क्षीरेण पिबेत् । तथा मासं हस्तिपिप्पलीविश्वभेषजकल्कं युक्तो नियतः सन् क्षीरेण पिबेत् ।

विडंगं चित्रको दंती चव्यं व्योषं च तैः पयः ।
कल्कैः कोलसमैः पीत्वा प्रवृद्धमुदरं जयेत् ॥ ४३ ॥

विडंगादिभिः कल्कैः कोलप्रमाणैरालोडितं पयः पीत्वा प्रवृद्धमुदरं जयेत् ।

भोज्यं भुंजीत वा मासं स्नुहीक्षीरघृतान्वितम् ।
उत्कारिकां वा स्नुक्क्षीरपीतपथ्याकणाकृताम् ॥ ४४ ॥

स्नुक्क्षीरादियुतं भोज्यमाहारं मासं वा भुंजीत । स्नुक्क्षीरसिद्धं घृतं स्नुक्क्षीरघृतम् । स्नुक्क्षीरयुतं वा घृतं स्नुक्क्षीरघृतम् । उत्कारिकां स्नुक्क्षीरप्लुतयुतां भुंजीत । पीतः कोरंटकः ।

पार्श्वशूलमुपस्तंभहृद्ग्रहं च समीरणः ।
यदि कुर्यात् ततस्तैलं बिल्वक्षारान्वितं पिबेत् ॥ ४५ ॥
पक्वं वा टिंटुकबलापलाश तिलनालजैः ।
क्षारैः कदल्यपामार्गतर्कारीजैः पृथक्कृतैः ॥ ४६ ॥

समीरणः पार्श्वशूलादिकं यदि कुर्यात् ततस्तैलं बिल्वादियुतं पिबेत् । अथवा मयूरजंघादिजैः क्षारैः कदल्यपामार्गतर्कारिजैः पृथक्कृतैः पक्वं तैलं पिबेत् ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

कफे वातेन पित्ते वा ताभ्यां वाप्यावृतेऽनिले ।
बलिनः स्वौषधं युक्तं तैलमैरंडजं हितम् ॥ ४७ ॥

कफे वातेनावृते पित्ते वा वातेनावृते ताभ्यां कफपित्ताभ्यां वाऽऽवृतेऽनिले सति बलिनो नरस्य स्वौषधयुतमेरंडतैलं हितं ।

देवदारुपलाशार्कहस्तिपिप्पलिशिग्रुकैः ।
साश्वकर्णैः सगोमूत्रैः प्रदिह्यादुदरं बहिः ॥ ४८ ॥

देवदार्वादिभिर्गोमूत्रसहितैर्विरिक्तं म्लानमुदरं बाह्यांतः प्रलिंपेत् ।

वृश्चिकालीवचाशुंठीपंचमूलपुनर्नवात् ।
वर्षाभूधान्यकुष्ठाच्च क्वाथैर्मूत्रैश्च सेचयेत् ॥ ४९ ॥

वृश्चिकाल्यादीनां क्वाथैर्मूत्रैश्च जठरं सेचयेत् ।

विरिक्तं म्लानमुदरं स्वेदितं साल्वलादिभिः ।
वाससा वेष्टयेदेवं वायुर्नाऽऽध्मापयेत्पुनः ॥ ५० ॥

उदरं विरिक्तं म्लानं साल्वलादिभिः स्वेदितं तनो वस्त्रेण वेष्टयेत् । एवं कृते सति वायुर्न पुनराध्मापयेत् ।

सुविरिक्तस्य यस्य स्यादाध्मानं पुनरेव तम् ।
सुस्निग्धैरम्ललवणैर्निरूहैः समुपाचरेत् ॥ ५१ ॥

सुविरक्तस्य नरस्य यस्य पुनराध्मानं स्यात्तमुदरिणं नरं पुनरेव निरूहैः सुस्निग्धैरम्ललवणैश्चोपाचरेत् ।

सोपस्तंभोऽपि वा वायुराध्मापयति यं नरम् ।
तीक्ष्णाः सक्षारगोमूत्राः शस्यंते तस्य बस्तयः ॥ ५२ ॥

सहोपस्तंभेन कफाद्याधारकेण वर्तते सोपस्तंभो वायुर्यं नरमाध्मापयति तस्य तीक्ष्णा बस्तयः क्षारगोमूत्राभ्यां सह शस्यंते ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

इति सामान्यतः प्रोक्ताः सिद्धा जठरिणां क्रियाः ।

इत्येवं सामान्येनोदरिणां क्रियाः सिद्धाः प्रोक्ताः ।

वातोदरेऽथ बलिनं विदार्यादिशृतं घृतम् ॥ ५३ ॥
पाययेत्तु ततः स्निग्धं स्वेदितांगं विरेचयेत् ।
बहुशस्तैल्वकेनैनं सर्पिषा मिश्रकेण वा ॥ ५४ ॥

वातोदरे सति बलवंतं पुरुषं विदार्यादिगणेन पक्वं घृतं पाययेत् । अनंतरं स्निग्धं स्वेदितशरीरमेनं बहुशस्तैल्वकेन घृतेन विरेचयेत् । मिश्रकेण वा घृतेन विरेचयेत् ।

कृते संसर्जने क्षीरं बलार्थमवचारयेत् ।
प्रागुत्क्लेशान्निवर्तेत बले लब्धे क्रमात्पयः ॥ ५५ ॥

कृते संसर्जने सति क्षीरं बलदानाय दद्यात् । उत्क्लेशात् प्रायेण कफोपचितेरुत्क्लेशं दृष्ट्वानंतरं बले लब्धे सति क्रमेण क्षीरं निवर्तयेन्नसहसैव ।

यूषै रसैर्वा मंदाम्ललवणैरेधितानलम् ।
सोदावर्तं पुनः स्निग्धं स्विन्नमास्थापयेत्ततः ॥ ५६ ॥
तीक्ष्णाधोभागयुक्तेन दाशमूलिकबस्तिना ।

ततोनंतरमुदरिणं यूषादिभिः समिद्धाग्निमुदावर्तवंतं पुनरपि स्निग्धं स्विन्नं दाशमूलिकबस्तिना निरूहयेत् । दाशमूलिको बस्तिर्द्विपंचमूलत्रिवृत्फलमूलानि साधयेदित्यादिः कल्पोक्तः । तेन । किंभूतेन । तीक्ष्णाधोभागयुक्तेन । अधोभागेऽधस्ताच्छरीरे युक्तो यो भागः । तीक्ष्णश्चासावधोभागश्च तत्रयुक्तश्च तेन ।

तिलोरुबूकतैलेन वातघ्नाम्लसृतेन च ॥ ५७ ॥
स्फुरणाक्षेपसंध्यस्थिपार्श्वपृष्ठत्रिकार्तिषु ।
रूक्षं बद्धशकृद्वातं दीप्ताग्निमनुवासयेत् ॥ ५८ ॥
अविरेच्यस्य शमना बस्तिक्षीरघृतादयः ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

रूक्षं बद्धशकृद्वातं दीप्तानलं तिलैरेरंडतैलेन वातघ्नैर्द्रव्यैरम्लैश्च शृतेनानुवासयेत्। स्फुरणादिसद्भावे सत्यविरेच्यस्य उदरिणो नरस्य शमनाय बस्त्यादयः प्रयोज्याः। न तु विरेच्यो नवज्वरीत्यादयो विरेचनविधावुक्ताः।

बलिनं स्वादुसिद्धेन पैत्ते संस्नेह्य सर्पिषा ॥ ५९ ॥
श्यामात्रिभंडीत्रिफलाविपक्केन विरेचयेत्।
सितामधुघृताढ्येन निरूहोऽस्य ततो हितः ॥ ६० ॥
न्यग्रोधादिकषायेण स्नेहबस्तिश्च तच्छृतः।

बलवंतं पुरुषं पैत्ते जठरे सति मधुरवर्गसिद्धेन घृतेन संस्नेह्य श्यामादिभिर्विपक्केन सर्पिषा विरेचयेत्। श्यामा मालविका। त्रिभंडी त्रिवृत्। अनंतरं शर्करामाक्षिकघृतबहुलेन तथा तेनैव न्यग्रोधादिकषायेण शृतः पक्कोऽस्यातुरस्य निरूहो हितः। तेनैव न्यग्रोधादिना विपक्वः स्नेहबस्तिरनुवासने हितः। ननु बलिनमित्ययुक्तम्। यतः प्रागभ्यधायि। नष्टचेष्टा बलाहारा इति। अत्रोच्यते। भेषजवेगसहिष्णुमात्रमत्र बलवत्त्वं परिकल्प्य बलिनमित्युक्तम् नतु प्रकृष्टबलवंतमित्यदोषः।

दुर्बलं त्वनुवास्यादौ शोधयेत्क्षीरबस्तिभिः ॥ ६१ ॥
जाते चाग्निबले स्निग्धं भूयो भूयो विरेचयेत्।
क्षीरेण सत्रिवृत्कल्केनोरुबूकशृतेन तम् ॥ ६२ ॥
सातलात्रायमाणाभ्यां शृतेनारग्वधेन वा।
सकफे वा समूत्रेण सतिक्ताज्येन सानिले ॥ ६३ ॥
पयसान्यतमेनैषां विदार्यादिशृतेन वा।
भुंजीत जठरं चास्य पायसेनोपनाहयेत् ॥ ६४ ॥

दुर्बलं तु नरं प्रागनुवास्य क्षीरबस्तिभिः शोधयेत्। अग्निबले च जाते स्निग्धं सतं पुनः पुनर्विरेचयेत्। केन। क्षीरेण। त्रिवृच्चूर्णयुतेनैरंडतैलशृतेन वा क्षीरेण सातलात्रायंतीभ्यां वा शृतेन पयसा कर्णिकारेण वा

Indira Gandhi National Centre for the Arts

शृतेन क्षीरेणारग्वधेन पित्तोदरिणः सुतरां बलापेक्षित्वाद्दुर्बलमित्युक्तं । कफयुते पैत्ते समूत्रेण क्षीरेणैषामन्यतमेन सानिले पैत्ते तिक्ताज्येन सह पयसा पूर्वोक्तद्रव्याणामन्यतमेन शृतेन विरेचयेत्। तिक्तद्रव्ययुतमाज्यं तिक्ताज्यं कुष्टोक्तम्। तिक्तं घृतं वा विदार्यादिशृतेन वा पयसा भुंजीत भोजनं कुर्वीत। जठरं चास्य पायसेनोपनाहयेत्।

पुनः क्षीरं पुनर्बस्तिं पुनरेव विरेचनम्।
क्रमेण ध्रुवमातिष्ठन्यतः पित्तोदरं जयेत्॥ ६५॥

पुनः क्षीरं पुनर्बस्तिं पुनरेव विरेचनं क्रमेण ध्रुवमातिष्ठन्नाचरन् यतो यत्नवान् सन् पित्तोदरं जयेत्। पुनः क्षीरमित्यादिषु पुनः शब्दो वीप्सार्थः। एतच्च क्रमेण ध्रुवमातिष्ठन्नित्यतो लब्धम्।

वत्सकादिविपक्केन कफे संस्नेह्य सर्पिषा।
स्विन्नं स्नुक्क्षीरसिद्धेन बलवंतं विरेचितम्॥ ६६॥
संसर्जयेत्कटुक्षारयुक्तैरन्नैः कफापहैः।

कफे कफोदरे बलवंतमुदरिणं वत्सकादिविपक्केन सर्पिषा संस्नेह्य स्विन्नं संतं स्नुक्क्षीरसिद्धेन घृतेन बलिनं विरेचितं संतं संसर्जयेत्। पेयाद्यन्नैरुपक्रमेत्। किंभूतैः। कटुक्षारद्रव्ययुतैरन्नैः कफघ्नैः। कटुक्षारयुतानां कफघ्नत्वेपि कफघ्नैरित्युक्तमतिशयार्थम्।

मूत्रत्र्यूषणतैलाढ्यो निरूहोऽस्य ततो हितः॥ ६७॥
मुष्ककादिकषायेण स्नेहबस्तिश्च तच्छृतः।
भोजनं व्योषदुग्धेन कौलत्थेन रसेन वा॥ ६८॥

ततः संसर्जनादनंतरं निरूहो गोमूत्रत्रिकटुकतैलबहुलो मुष्ककादिवर्गक्वाथेनास्य कफोदरिणो हितः। स्नेहबस्तिरनुवासनम्। तेनैव शृतो हितः। भोजनं व्योषयुक्तेन दुग्धेन सह हितं कुलत्थरसेन वा।

स्तैमित्यारुचिहृल्लासैर्मंदेऽग्नौ मद्यपाय च।
दद्यादरिष्टान् क्षारांश्च कफस्त्यानस्थिरोदरे॥ ६९॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

मद्यपाय नराय मंदेऽग्नौ स्तैमित्यादौ च सत्यरिष्टान् क्षारांश्च दद्यात्। कफेन स्त्यानं स्थिरं जठरं यस्य तस्मिन्निदं कार्यम्।

हिंगूपकुल्ये त्रिफलां देवदारु निशाद्वयम्।
भल्लातकं शिग्रुफलं कटुकां तिक्तकं वचाम्॥ ७० ॥
शुंठीं माद्रीं घनं कुष्टं सरलं पटुपंचकम्।
दाहयेज्जर्जरीकृत्य दधिस्नेहचतुष्कवत्॥ ७१ ॥
अंतर्धूमं ततः क्षाराद्विडालपदकं पिबेत्।
मदिरादधिमंडोष्णजलारिष्टसुरासवैः॥ ७२ ॥
उदरं गुल्ममष्ठीलां तून्यौ शोफं विषूचिकाम्।
प्लीहहृद्रोगगुदजानुदावर्तं च नाशयेत्॥ ७३ ॥

हिंग्वादिकं जर्जरीकृत्य दधिस्नेहचतुष्कयुतमंतर्धूमं दाहयेत्। तस्मात् क्षाराद्विडालपदकं मदिरादिभिः पिबेत्। एष च क्षार उदरगुल्मादीन् नाशयेत्।

जयेदरिष्टगोमूत्रचूर्णायस्कृतिपानतः।
सक्षारतैलपानैश्च दुर्बलस्य कफोदरम्॥ ७४ ॥

दुर्बलस्य नरस्य कफोदरमरिष्टादिपानेन जयेत्। क्षारयुततैलपानैश्च जयेत्। अयस्कृतिः प्रमेहचिकित्सिते प्रोक्ता।

उपनाह्यं ससिद्धार्थकिण्वैर्बीजैश्च मूलकात्।
कल्कितैरुदरस्वेदमभीक्ष्णं चात्र योजयेत्॥ ७५ ॥

तथोपनाह्यं जठरमस्य दुर्बलस्य मूलकबीजैः कल्कितैः ससर्षपकिण्वैर्जयेत्। तथा नित्यमुदरस्वेदमत्र योजयेत्।

संनिपातोदरे कुर्यान्नातिक्षीणबलानले।
दोषोद्रेकानुरोधेन प्रत्याख्याय क्रियामिमाम्॥ ७६ ॥
दंतीद्रवंतीफलजं तैलं पाने च शस्यते।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

संनिपातोदरेऽर्थात्सन्निपातोदरवति नरे नातिक्षीणबलानलेऽधिकदोषानुरोधेन तद्दशेनैव क्रियामिमामनंतरोक्तां कुर्यात्। किं कृत्वा। प्रत्याख्याय। अक्रियायां ध्रुवोमृत्युः क्रियायां संशयो भवेदिति। एतदुदरमशक्यप्रतिकारमित्येवमुक्त्वा। अथोपक्रममाह। दंत्यादितैलं पाने च शस्यते।

क्रियानिवृत्ते जठरे त्रिदोषे तु विशेषतः ॥ ७७ ॥
दद्यादापृच्छच्य तज्ज्ञातीन् पातुं मद्येन कल्कितम्।
मूलं काकादनीगुंजाकरवीरकसंभवम् ॥ ७८ ॥

क्रियामतिक्रांते जठरे विशेषेण त्रिदोषजे तस्योदरिणो बंधून् पृष्ट्वा यथैतद्विषं विषमं किं जीवयत्युत मारयतीति संदेह इत्याद्युक्त्वा प्रयोज्यं वक्ष्यमाणं चैतत्। पातुमित्यादि। काकादन्यादिजं मूलं कल्कितं मद्येन पातुं दद्यात्। काकादनी काकणंतिका।

पानभोजनसंयुक्तं दद्याद्वा स्थावरं विषम्।
यस्मिन्वा कुपितः सर्पो विमुंचति फले विषम् ॥ ७९ ॥
तेनास्य दोषसंघातः स्थिरो लीनो विमार्गगः।
बहिः प्रवर्तते भिन्नो विषेणाशु प्रमाथिना ॥ ८० ॥
तथा व्रजत्यगदतां शरीरांतरमेव वा।

अथवा पानभोजनसंयुक्तं स्थावरं विषं दद्यात्। यस्मिन् फले सर्पः कुपितो विषं मुंचति तद्वा दद्यात्। तेन विषेण प्रमाथिनास्य दोषसंघातो भिन्नो बहिः प्रवर्तते। किंभूतः। स्थिरस्तथा लीनो धात्वादिषु। तथोन्मार्गगामी। तथा तेन प्रकारेणानुष्ठितेनोदर्यगदतां निर्व्याधितां व्रजति। शरीरांतरं वा याति म्रियत इत्यर्थः।

हृतदोषं तु शीतांबु स्नातं तं पाययेत्पयः ॥ ८१ ॥
पेयां वा त्रिवृतः शाकं मंडूक्या वास्तुकस्य वा।
कालशाकं यवाख्यं वा खादेत्स्वरससाधितम् ॥ ८२ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

निरम्ललवणस्नेहं स्विन्नास्विन्नमनन्नभुक् ।
मासमेकं ततश्चैवं तृषितः स्वरसं पिबेत् ॥ ८३ ॥

हृतदोषं च तं शीतजलेन स्नातं संतं पयः शीतं पाययेत् । पेयामथवा त्रिवृच्छाकं मंडूकीशाकं वास्तुकशाकं कालशाकं यवशाकं वा खादेत् । किंभूतं । स्वरसेन साधितं । तथाऽम्ललवणस्नेहवर्जितं । तथा स्विन्नास्विन्नभोजी सन् । स्विन्नास्विन्नमिति क्तेननञ्विशिष्टेनेति समासः । मासमेकं यावदेतदश्नीयात् । तृषितः सन् स्वरसं प्रकृतत्वात्तच्छाकस्य पिबेत् ।

एवं विनिर्हृते शाकैर्दोषे मासात् परं ततः ।
दुर्बलाय प्रयुंजीत प्राणभृत्कारभं पयः ॥ ८४ ॥

एवं शाकविशेषेण दोषे निर्हृते प्रायेण जलाख्ये ततोऽनंतरं मासात् परं दुर्बलाय पुरुषाय कारभं क्षीरं प्राणकरं प्रयुंजीत ।

प्लीहोदरे यथादोषं स्निग्धस्य स्वेदितस्य च ।
सिरां भुक्तवतो दध्ना वामबाहौ विमोक्षयेत् ॥ ८५ ॥

प्लीहोदरे दोषानुसारेण स्निग्धस्य स्वेदितस्य च दध्ना भुक्तवतः सिरां वामे बाहौ विमोक्षयेत् ।

लब्धे बले च भूयोऽपि स्नेहपीतं विशोधितम् ।
समुद्रशुक्तिजं क्षारं पयसा पाययेत्तथा ॥ ८६ ॥
अम्लशृतं बिडकणाचूर्णाढ्यं नक्तमालजम् ।
सोभांजनस्य वा क्वाथं सैंधवाग्निकणान्वितम् ॥ ८७ ॥
हिंग्वादिचूर्णं क्षाराज्यं युंजीत च यथाबलम् ।

बले च जाते पुनरपि स्नेहपीतं विशोधितं संतं क्षारं समुद्रशुक्त्युत्थं पयसा पाययेत् । तथा करंजजं क्षारमम्लैः कांजिकादिभिः शृतं बिडकणाचूर्णभूयिष्ठं पाययेत् । अथवा सोभांजनस्य क्वाथं सैंधवादियुतं पिबेत् । हिंग्वादिजं चूर्णं क्षारं तथा घृतं षट्पलादि यथाबलं प्रयुंजीत । ननु यथाबलं ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

इहोच्यते । मा कृच्छ्राभ्यधिकमिति । नष्टचेष्टाबलाहारा इति । तदिमे वाक्ये परस्परंव्याघाते । ब्रूमः । बलशब्देन भेषजबलं सोढुं शक्तं यद्बलमात्रं तदिह परिकल्पितं । पूर्वं च प्रकृष्टं यद्बलं तद्विवक्षितमिति नात्रपूर्वापरव्याहतत्वम् ।

पिप्पली नागरं दंती समांशं द्विगुणाभयम् ॥ ८८ ॥
बिडार्धांशयुतं चूर्णमिदमुष्णांबुना पिबेत् ।

पिप्पलीनागरयोर्द्वावंशौ । दंत्या द्वौ भागौ हरीतक्याश्च द्वौ भागौ बिडलवणस्यार्धभाग इत्येवं चूर्णमुष्णांबुना पिबेत् ।

विडंगं चित्रकं सक्तून् सघृतान् सैंधवं वचाम् ॥ ८९ ॥
दग्ध्वा कपाले पयसा गुल्मप्लीहापहं पिबेत् ।

विडंगादिकं कपाले कर्परे दग्ध्वा क्षीरेण गुल्मप्लीहघ्नं पिबेत् ।

तैलोन्मिश्रैर्बदरकपत्रैः संमर्दितैः समुपनद्धः ॥ ९० ॥
मुशलेन पीडितोऽनु याति प्लीहा पयोभुजो नाशम् ।

बदरकस्य पत्रैस्तैलमिश्रितैः सुष्टुमर्दितैः समुपनद्धोऽनुपश्चाच्च मुशलेन पीडितः प्लीहा क्षीराशिनो नाशं व्रजति । उपगीतिवृत्तं ।

रोहीतकलताः कृत्ताः खंडशः साभयाजले ॥ ९१ ॥
मूत्रे वाऽसुनुयात्तत्तु सप्तरात्रस्थितं पिबेत् ।
कामलाप्लीहगुल्मार्शः कृमिमेहोदरापहम् ॥ ९२ ॥

रोहीतकस्य लताः खंडं खंडं कृत्ताः सहरीतकीजले मूत्रे वाऽसुनुयात् । तच्च सप्तरात्रं स्थितं जलं मूत्रं वा पिबेत् । हरीतक्याश्च लेहवद्भुंजीत तत्पीतं कामलादिघ्नम् ।

रोहीतकत्वचः कृत्वा पलानां पंचविंशतिम् ।
कोलद्विप्रस्थसंयुक्तं कषायमुपकल्पयेत् ॥ ९३ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

पालिकैः पंचकोलैस्तु तैः समस्तैश्च तुल्यया ।
हरीतकत्वचा पिष्टैर्घृतप्रस्थं विपाचयेत् ॥ ९४ ॥
प्लीहाभिवृद्धिं शमयत्येतदाशु प्रयोजितम् ।

रोहीतकत्वचः पलानां पंचविंशतिं कृत्वा बदरमस्थद्वयसंयुक्तं कषायमवतारयेत् । पंचकोलैः पालिकैस्तैः समस्तैः पंचकोलैर्हरीतकीत्वचा तुल्यया पिष्टैर्घृतप्रस्थं विपाचयेत् । एतद्घृतं प्रयोजितं प्लीहाभिवृद्धिं द्रागेव शमयति ।

कदल्यास्तिलनालानां क्षारेण क्षुरकस्य च ॥ ९५ ॥
तैलं पक्वं जयेत्पानात्प्लीहानं कफवातजम् ।

कदल्यादीनां क्षारेण तैलं पक्वं पानेन कफवातोत्थं प्लीहानं पराकरोति ।

अशांतौ गुल्मविधिना योजयेदग्निकर्म च ॥ ९६ ॥
अप्रीतपिच्छासलिले प्लीन्हि वातकफोल्बणे ।

एवमप्यनुपशांतौ वातकफोत्थे प्लीन्ह्यसंजातपिच्छोदके गुल्मविधानेनाग्निकर्म योजयेत् ।

पैत्तिके जीवनीयानि सर्पींषि क्षीरबस्तयः ॥ ९७ ॥
रक्तावसेकः संशुद्धिः क्षीरपानं च शस्यते ।

पैत्तिके पित्तोल्बणे प्लीन्हि जीवनीयगणसाधितानि सर्पींषि तथा क्षीरबस्ति रक्तावसेकादि च शस्यते । सिरां भुक्तवतो दध्ना वामबाहौ विमोक्षयेदित्यनेनैव रक्तावसेकस्योक्तत्वात् पुनर्वचनं प्रकर्षार्थम् । पित्ताधिक्ये हि रक्तातिवृद्धिः । तस्मादतिरक्तस्रावो योज्य इति प्रतिपादनार्थमेतदुक्तम् ।

यकृति प्लीहवत्कर्म दक्षिणे तु भुजे सिराम् ॥ ९८ ॥

यकृति प्लीहवत् कर्म कार्यं । सिरां पुनर्दक्षिणे बाहौ मोक्षयेत् ।

स्विन्नाय बद्धोदरिणे मूत्रतीक्ष्णौषधान्वितम् ।
सतैलं लवणं दद्यान्निरूहं सानुवासनम् ॥ ९९ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

परिस्रंसीनि चान्नानि तीक्ष्णं चास्मै विरेचनम् ।
उदावर्तहरं कर्म कार्यं यच्चानिलापहम् ॥ १०० ॥

बद्धोदरिणे पुरुषाय स्विन्नाय गोमूत्रतीक्ष्णौषधयुतं तैलं सैंधवाभ्यां सह निरूहं दद्यात्सानुवासनं । पूर्वमनुवासनं पश्चाच्चेत्यर्थः । उदरिणः स्वेद-निषेधाद्बद्धोदरिणः स्वेदानुज्ञानमपवाद इति नैतत्पूर्वापरव्याहतं । परिस्रं-सीन्यनुलोमकराण्यन्नान्यस्मै च जठरिणे तीक्ष्णं च विरेचनं दद्यात् । उदावर्तहरं कर्म यच्च वातघ्नं तच्च कार्यं ।

छिद्रोदरमृते स्वेदात्श्लेष्मोदरवदाचरेत् ।
जातं जातं जलं स्राव्यमेवं तद्यापयेद्भिषक् ॥ १०१ ॥

छिद्रोदरं स्वेदमंतरेण श्लेष्मोदरवदुपक्रमेत् । यदा तु कथंचिद्रसश्छिद्रैः परिस्रवन् जठरमापूरयित्वा जलं भवेत्तदा तज्जातं सलिलं स्राव्यं न च सकृदेव स्राव्यमिति प्रतिपादनार्थं वीप्सा । जातं जातं जलं स्राव्यमिति । कियंतं कालं स्राव्यमित्याह । एवमित्यादि । एवमनेन प्रकारेण तद्बद्धोदरं यापयेत् । स्वास्थ्यमितियोग्यतयात्र संबध्यते तेनैव स्वास्थ्यं मापयेदिति बोध्यं नतु याप्यं विदध्यादिति व्याख्येयं । नहि याप्यमुदरमस्ति ।

अपां दोषहराण्यादौ योजयेदुदकोदरे ।
मूत्रयुक्तानि तीक्ष्णानि विविधक्षारवंति च ॥ १०२ ॥
दीपनीयैः कफघ्नैश्च तमाहारैरुपाचरेत् ।

उदकोदरे पूर्वमपां दोषहराणि योजयेत् । तानि सर्वाणि गोमूत्रयुक्तानि तथा तीक्ष्णानि तथा विविधाः क्षारा विद्यंते येषु तानि विविधक्षारवंति । अनेकक्षारयुक्तानीत्यर्थः । नन्वपामित्यनर्थकं योजयेदुदकोदर इत्यनेनैवोद-कहरत्वस्य सिद्धत्वात् । अत्रोच्यते । अपां च हरणानि यश्च तत्र संसृष्टो-दोषोऽद्भिस्तस्य च हरणानि जलसंसृष्टदोषहरणानि तु प्रतिपादयितुमुक्तम् । आदाविति निर्देशात् । पश्चाद्वातादिदोषानुसारेण चायं क्रमः कार्य इति द्योतयति । तथा भोजनैर्दीपनीयैः कफापहैश्चोपाचरेत् ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

क्षारं छागकरीषाणां शृतं मूत्रेऽग्निना पचेत् ॥ १०३ ॥
घनीभवति तस्मिंश्च कर्षांशं चूर्णितं क्षिपेत् ।
पिप्पलीपिप्पलीमूलं शुंठीलवणपंचकम् ॥ १०४ ॥
निकुंभकुंभत्रिफलास्वर्णक्षीरीविषाणिकाः ।
स्वर्जिकाक्षारषड्ग्रंथासातलायवशूकजम् ॥ १०५ ॥
कोलाभा गुटिकाः कृत्वा ततः सौवीरकाप्लुताः ।
पिबेदजरके शोफे प्रवृद्धे चोदकोदरे ॥ १०६ ॥

क्षारं छागकरीषाणां मूत्रे शृतं चाग्निना पचेत् । अस्मिंश्च क्षारजले घनीभवति सति कर्षांशं रजीकृतं पिप्पल्यादिकं क्षिपेत् । ततस्तस्मात्क्षाराद्गुलिकाः कोलाभाः कृत्वा सौवीरकालोडिता अजरकादौ पिबेत् ।

इत्यौषधैरप्रशमे त्रिषु बद्धोदरादिषु ।
प्रयुंजीत भिषक् शस्त्रमार्तबंधुनृपार्थितः ॥ १०७ ॥

इत्येवमौषधैरशांतौ सत्यां त्रिषु बद्धच्छिद्रोदकोदरेषु वैद्य आर्तज्ञातिभिर्नृपेण चाभ्यर्थितः सन् शस्त्रं प्रयुंजीत ।

स्निग्धस्विन्नतनोर्नाभेरधोबद्धक्षतांत्रयोः ।
पाटयेदुदरं मुक्त्वा वामतश्चतुरंगुलात् ॥ १०८ ॥
चतुरंगुलमानं तु निष्कास्यांत्राणि तेन च ।
निरीक्ष्यापनयेद्वालमललेपोपलादिकम् ॥ १०९ ॥
छिद्रे तु शल्यमुद्धृत्य विशोध्यांत्रं परिस्रवम् ।
मर्कोटैर्दंशयेच्छिद्रं तेषु लग्नेषु चाहरेत् ॥ ११० ॥
कायं मूर्ध्नोनुचांत्राणि यथास्थानं निवेशयेत् ।
अक्तानि मधुसर्पिर्भ्यामथ सीव्येद्बहिर्व्रणम् ॥ १११ ॥
ततः कृष्णमृदा लिप्य बध्नीयाद्यष्टिमिश्रया ।
निवातस्थः पयोवृत्तिः स्नेहद्रोण्यां वसेत्ततः ॥ ११२ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

बद्धक्षतांत्रयोर्विद्धोदरे छिद्रोदरे च स्निग्धस्विन्नशरीरस्य नाभेरध उदरं चतुरंगुलाद्वामेन मुक्त्वा चतुरंगुलप्रमाणं पाटयेत्। तेन च छिद्रेणांत्राणि बहिर्निष्कास्य बालमललेपोपलादिकमपनयेदिति बद्धोदरोपक्रमः। छिद्रोदरोपक्रममाह। छिद्रे तु परिस्राविणि शल्यमुद्धृत्य परिस्रवमांत्रं विशोध्यानंतरं मर्कोटैश्छिद्रं दंशयेत्। तेषु च मर्कोटेषु भक्षयितुं लग्नेषु मूर्धः शिरसोपरं कायं मर्कोटानामाकर्षेदनुपश्चाच्चांत्राणि मधुसर्पिर्भ्यामक्तानि यथास्थानं स्थापयेत्। अनंतरं बहिर्व्रणं सीव्येत। बहिःशब्दनिर्देशादाभ्यंतरगतं न सीव्येदिति गम्यते। ततोनंतरं कृष्णमृदा मधुयष्टिकामिश्रयाऽऽलिप्य बध्नीयात्। अनंतरं निवातस्थः क्षीरवृत्तिः सन् स्नेहद्रोण्यां वसेत्। अधुना जलोदरस्यान्येषामपि जातजलानां जठराणां चिकित्सार्थमाह।

सजले जठरे तैलैरभ्यक्तस्यानिलापहैः।
स्विन्नस्योष्णांबुनाऽऽकक्षमुदरे परिवेष्टिते ॥ ११३ ॥
बद्धच्छिद्रोदितस्थाने विध्येदंगुलमात्रकम्।
निधाय तस्मिन्नाडीं च स्रावयेदर्धमंभसः ॥ ११४ ॥
अथास्य नाडीमाकृष्य तैलेन लवणेन च।
व्रणमभ्यज्य बध्वा च वेष्टयेद्वाससोदरम् ॥ ११५ ॥
तृतीयेऽन्हि चतुर्थे वा यावदाषोडशं दिनम्।
तस्य विश्रम्य विश्रम्य स्रावयेदल्पशो जलम् ॥ ११६ ॥
विवेष्टयेद्गाढतरं जठरं च श्लथाश्लथम्।
निःस्रुते लंघितः पेयामस्नेहलवणां पिबेत् ॥ ११७ ॥

सजले जठरिणो जठरे तैलैस्तिलानां तैलैः सर्षपैरंडतैलादिभिरनिलघ्नैरभ्यक्तस्य तथोष्णांबुना स्विन्नस्याकक्षं कक्षांतं यावदुदरं पटेन वस्त्रेणावेष्टिते तदुदरं वस्त्रेणैव वेष्टयित्वा बद्धच्छिद्रयोर्यत्कथितं स्थानं तस्मिन् स्थानेऽगुंलप्रमाणं विध्येत। तस्मिंश्च छिद्रे नाडीं निधाय जलस्योदरस्थस्यार्धं स्रावयेत्। जलस्रावादनंतरमस्योदरिणो नाडीमाकृष्य सलवणेन तैलेन व्रणमभ्यज्य बध्वा च वाससा जठरं वेष्टयेत्। तृतीये दिवसेऽथवा चतुर्थे यावदाषोडशं

Indira Gandhi National Centre for the Arts

दिनं तस्योदरिणो विश्रम्य विश्रम्याल्पशोल्पमल्पीकृत्वा जलं दोषं स्रावयेत्। सहसा हि प्रचुरजलस्रवणादपायः स्यात् । तस्मात् स्रुतिदिवसादनंतरं तृतीये चतुर्थे पंचमादौ वा दिने शरीरबलाबलमपेक्ष्य षोडशदिनं मर्यादीकृत्य बलस्रावणं कार्यं जठरं च शिथिलं वाससा गाढतरं विवेष्टयेत्। निस्रुते च जलेऽसौ जठरी लंघितः सन् पेयामस्नेहलवणां पिबेत्। नत्वत्र ईषदर्थ ईषत्स्नेहलवणं क्लेदरक्षार्थं वातकोपरक्षार्थं च। अन्यथा हि रूक्षां निर्लवणां पिबेदित्येवं निर्देशमाचार्यः कुर्यात् ।

स्यात्क्षीरवृत्तिः षण्मासांस्त्रीन्पेयां पयसा पिबेत् ।
त्रींश्चान्यान्पयसैवाद्यात् फलाम्लेन रसेन वा ॥ ११८ ॥
अल्पशः स्नेहलवणं जीर्णं श्यामाककोद्रवम् ।
प्रयतो वत्सरेणैवं विजयेत्तज्जलोदरम् ॥ ११९ ॥

षण्मासान् क्षीरवृत्तिः स्यात् । त्रीन्मासान् क्षीरपेयां पिबेत्। त्रींश्चान्यान्मासान् पयसैव जीर्णं श्यामाककोद्रवमद्यात् । फलाम्लेन वा मांसरसेन । कथं । अल्पमल्पं । तथैव स्नेहलवणं । अनेन प्रकारेण प्रयतः सलिलोदरं वत्सरेण विजयेत् ।

वर्ज्येषु यंत्रितो दिष्टे नात्यदिष्टे जितेंद्रियः ।

वर्ज्येष्वाहारविहारादिष्वत्यर्थेम्ललवणादिषु यंत्रित उदरी स्यात्। दिष्टे कथितेऽन्नपानादौ नातियंत्रितः स्यात् । अदिष्टेऽकथिते पुनरन्नपानादौ जितेंद्रियः स्यादलोलुपेन तत्र भवितव्यमित्यर्थः ।

जलोदरचिकित्साप्रसंगेन सर्वोदरचिकित्सामाह ।

सर्वमेवोदरं प्रायो दोषसंघातजं यतः ॥ १२० ॥
अतो वातादिशमनी क्रिया सर्वं प्रशस्यते ।

सर्वोदरं बाहुल्येन दोषसंघातोत्थं यस्मादस्मात्सर्वत्रोदरे वातादिशमनी क्रिया प्रशस्यते । प्रायोग्रहणं किंचित् प्राक्तनकर्मनिमित्तमुदरं नावश्यं दोषसंघातजमिति ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

वन्हिर्मंदत्वमायाति दोषैः कुक्षौ प्रपूरिते ॥ १२१ ॥
तस्माद्भोज्यानि भोज्यानि दीपनानि लघूनि च ।
सपंचमूलान्यल्पाम्लपटुस्नेहकटूनि च ॥ १२२ ॥

वन्हिर्मंदत्वं यत आगच्छति दोषैरुदरे प्रपूरिते सति तस्मात्कारणाद्भोज्यान्याहारभोज्यानि भक्षयितव्यानि जठरिभिर्दीपनानि लघूनि च । तथा सह पंचमूलेन तथाऽल्पाम्लादयो येषु तानि ।

भावितानां गवां मूत्रे षष्टिकानां च तंडुलैः ।
यवागूं पयसा सिद्धां प्रकामं भोजयेन्नरम् ॥ १२३ ॥
पिबेदिक्षुरसं चानु जठराणां निवृत्तये ।
स्वं स्वं स्थानं व्रजंत्येषां वातपित्तकफास्तथा ॥ १२४ ॥

गोमूत्रे भावितानां षष्टिकानां तंडुलैर्यवागूं क्षीरेण सिद्धां प्रकाममिच्छया नरं भोजयेत् । अनु पश्चादिक्षुरसं च पिबेदुदराणां शांत्यर्थम् । तथा वातपित्तकफाश्चैषामुदरिणां स्वं स्वं स्थानं व्रजंति ।

अत्यर्थोष्णाम्ललवणं रूक्षं ग्राहि हिमं गुरु ।
गुडं तैलकृतं शाकं वारिपानावगाहयोः ॥ १२५ ॥
अयासाध्वदिवास्वप्नयानानि च परित्यजेत् ।

अत्यर्थोष्णाम्ललवणादिकं जठरी त्यजेत् । वारिपानावगाहयोर्यदि त्यजेत् तर्हि किं पेयमित्याह ।

नात्यर्थसांद्रं मधुरं तक्रं पाने प्रशस्यते ॥ १२६ ॥
सकणालवणं वाते पित्ते सौषणशर्करम् ।
यवानीसैंधवाजाजीमधुव्योषैः कफोदरे ॥ १२७ ॥
त्र्यूषणक्षारलवणैः संयुतं निचयोदरे ।
मधुतैलवचाशुंठीशताह्वाकुष्ठसैंधवैः ॥ १२८ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

प्लीह्नि बद्धे तु हपुषायवानीपटुजादिभिः ।
सकृष्णा माक्षिकं छिद्रे व्योषवत्सलिलोदरे ॥ १२९ ॥

तक्रमीषत्सांद्रं मधुरं पाने प्रशस्यते । तच्च पवने सपिप्पलिसैंधवं श्रेष्ठम् । पित्ते समरिचशर्करम् । यवान्यादिभिः सह कफोदरे हितं । त्रिकटुकादिभिः संयुक्तं सन्निपातोदरे । मधुतैलादिभिः प्लीहोदरे । हपुषादिभिर्युतं बद्धोदरे । पिप्पलीमधुयुतं छिद्रोदरे । जलोदरे व्योषयुतं श्रेष्ठम् ।

गौरवारोचकानाहमंदवह्न्यतिसारिणाम् ।
तक्रं वातकफार्तानाममृतत्वाय कल्प्यते ॥ १३० ॥

वातकफादीनां गौरवारोचकादियुतानां तक्रममृतत्वाय कल्प्यते संपद्यते । एतच्च ब्रुवन् वातकफयोर्वृद्धावपि देयमिति द्योतयति ।

प्रयोगाणां च सर्वेषामनुक्षीरं प्रयोजयेत् ।
स्थैर्यकृत्सर्वधातूनां बल्यं दोषानुबंधहृत् ।

सर्वेषां च प्रयोगाणामनुक्षीरं तक्रं च प्रयोजयेत् । तच्च तक्रं सर्वधातूनां स्थिरत्वं करोति । तथा बल्यं स्याद्दोषानुबंधत्वं हरति ।

भेषजोपचितांगानां क्षीरमेवामृतायते ॥ १३१ ॥

भेषजेनोपचितं शरीरं येषां तेषां क्षीरमेवामृतत्वाय संपद्यते ।

इति श्रीमदरुणदत्तविरचितायामष्टांगहृदयटीकायां चिकित्सितस्थान उदरचिकित्सितं नाम पंचदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

षोडशोऽध्यायः ।

अस्मादनंतरं पांडुरोगचिकित्सितं व्याख्यातुमुपक्रम्यते । संबंधश्चास्य निदान एवोक्तः ।

अथातः पांडुरोगचिकित्सितं व्याख्यास्यामः ।
पांड्वामयी पिबेत्सर्पिरादौ कल्याणकाह्वयम् ।
पंचगव्यं महातिक्तं घृतं वाऽऽरग्वधादिना ॥ १ ॥

पांड्वातुरः कल्याणकाख्यं सर्पिरादौ पिबेत् । आदावित्यनेनैतद्गमयति । अस्मिन्व्याधौ प्राधान्येन पित्तचिकित्सा कार्या । तदनु वातकफयोः । तथा च पित्तस्यैवैतद्व्याधिकर्तृत्वे प्राधान्यम् । अत एव च निदानेऽभ्यगीष्ट । पित्तप्रधानाः कुपिता इत्यादि । तस्मात् पित्तस्योपशांत्यै सर्पिःपानं युक्तम् । पंचगव्यं घृतमपस्मारप्रतिषेधोक्तं । महातिक्तं कुष्टं चिकित्सितोक्तम् । आरग्वधादिगणेन वा पक्वं घृतं पिबेत् ।

दाडिमात्कुडवो धान्यात्कुडवार्धं पलं पलम् ।
चित्रकाच्छृंगबेराच्च पिप्पल्यर्धपलं च तैः ॥ २ ॥
कल्कितैर्विंशतिपलं घृतस्य सलिलाढके ।
सिद्धं हृत्पांडुगुल्मार्शः प्लीहवातकफार्तिनुत् ॥ ३ ॥
दीपनं श्वासकासघ्नं मूढवातानुलोमनम् ।
दुःखप्रसविनीनां च वंध्यानां च प्रशस्यते ॥ ४ ॥

दाडिमस्य कुडवं धान्यकात्कुडवार्धं चित्रकशुंठ्योः प्रत्येकं पलम् । पिप्पल्या द्वौ कर्षौ तैः पिष्टैर्घृतस्य पलानि विंशतिं तोयाढके पचेत् । तच्च सिद्धं हृदयार्तिजित् । दीपनादिगुणयुक्तं च । दुःखप्रसविनीनां स्त्रीणां वंध्यानामप्रसविनीनां च शस्यते ।

स्नेहितं वामयेत्तीक्ष्णैः पुनः स्निग्धं च शोधयेत् ।
पयसा मूत्रयुक्तेन बहुशः केवलेन वा ॥ ५ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

स्नेहितं पांडुरोगिणं तीक्ष्णैर्वामयेत् । पुनरपि स्निग्धं च बहुशः क्षीरेण मूत्रयुतेन शोधयेत् केवलेन वा पयसा शोधयेत् ।

दंतीफलरसे कोष्णे काश्मर्यांजलिमासुतम् ।
द्राक्षांजलिं वा मृदितं तत् पिबेत् पांडुरोगजित् ॥ ६ ॥
मूत्रेण पिष्टां पथ्यां वा तत्सिद्धं वा फलत्रयम् ।

दंतीफलरसे कोष्णे काश्मर्यांजलिमासुतमथवा द्राक्षांजलिं मर्दितं पिबेत् । तदेतदुभयमपि पांडुरोगघ्नम् । गोमूत्रेण पिष्टां हरीतकीं वा पिबेत् । तेन गोमूत्रेण सिद्धं क्वथितं फलत्रयं वा पिबेत् ।

स्वर्णक्षीरीत्रिवृच्छ्यामाभद्रदारुमहौषधम् ॥ ७ ॥
गोमूत्रांजलिना पिष्टं शृतं तेनैव वा पिबेत् ।
साधितं क्षीरमेभिर्वा पिबेद्दोषानुलोमनम् ॥ ८ ॥

स्वर्णक्षीर्यादिकं गोमूत्रांजलिना पिष्टमथवा तेनैव गोमूत्रेण शृतं पिबेत् । एभिर्वा स्वर्णक्षीर्यादिभिर्द्रव्यैः क्षीरं साधितं दोषानुलोमकरं पिबेत् ।

मूत्रे स्थितं वा सप्ताहं पयसाऽयोरजः पिबेत् ।
जीर्णे क्षीरेण भुंजीत रसेन मधुरेण वा ॥ ९ ॥

गोमूत्रेण सप्ताहं स्थितं लोहचूर्णं क्षीरेण पिबेत् । जीर्णे तस्मिन् दुग्धेन सहान्नं भुंजीत । मांसरसेन वा मधुरेण नत्वम्लेन ।

शुद्धश्चोभयतो लिह्यात्पथ्यां मधुघृतद्रुताम् ।

शुद्धश्चोभयतः पायुतो मूर्धतश्च हरीतकींमधुघृतद्रुतां लिह्यात् ।

विशाला कटुका मुस्ता कुष्ठं दारुकलिंगकाः ॥ १० ॥
कर्षांशाद्विपिचुर्मूर्वा कर्षार्धांशा घुणप्रिया ।
पीत्वा तच्चूर्णमंभोभिः सुखैर्लिह्यात्ततो मधु ॥ ११ ॥
पांडुरोगं ज्वरं दाहं कासं श्वासमरोचकम् ।
गुल्मानाहामवातांश्च रक्तपित्तं च तज्जयेत् ॥ १२ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

विशालादयः षट्कर्षमात्राः । मूर्वापि द्विकर्षप्रमाणा । अर्द्धकर्षदग्री अतिविषा । तदेतच्चूर्णं कोष्णांबुना पीत्वा माक्षिकं लिह्यात् । एतच्च पांडुरोगादीन्हंति ॥

वासागुडूचीत्रिफलाकट्वीभूनिंबनिंबजः ।
क्वाथः क्षौद्रयुतो हंति पांडुपित्तास्रकामलाः ॥ १३ ॥

वासादिक्वाथो मधुयुतः पांडादीन् हंति ।

व्योषाग्निवेल्लत्रिफलामुस्तैस्तुल्यमयोरजः ।
चूर्णितं तक्रमध्वाज्यकोष्णांभोभिः प्रयोजितम् ॥ १४ ॥
कामलापांडुहृद्रोगकुष्ठार्शोमेहनाशनम् ।

व्योषादिभिस्तुल्यमयोरजश्चूर्णितं तक्रादिभिरुपयोजितं कामलादिनाशनं ।

गुडनागरमंडूरतिलांशान्मानतः समान् ॥ १५ ॥
पिप्पलीद्विगुणान्दद्याद्गुटिकां पांडुरोगिणे ।

गुडादिकान् समभागान् पिप्पलीद्विगुणानिमां गुलिकां पांडुरोगिणे दद्यात् ।

ताप्यं दार्व्यास्त्वचं चव्यं ग्रंथिकं देवदारु च ॥ १६ ॥
व्योषादि नवकं चैतच्चूर्णयेद् द्विगुणं ततः ।
मंडूरं चांजननिभं सर्वतोष्टगुणेऽथ तत् ॥ १७ ॥
पृथग्विपक्के गोमूत्रे वटकीकरणक्षमे ।
प्रक्षिप्य वटकान्कुर्यात्तान्खादेत्तक्रभोजनः ॥ १८ ॥
एते मंडूरवटकाः प्राणदाः पांडुरोगिणाम् ।
कुष्ठान्यजरकं शोफमुरुस्तंभमरोचकम् ॥ १९ ॥
अर्शांसि कामलां मेहान् प्लीहानं शमयंति च ।

ताप्यादिकं व्योषादिनवकं च पूर्वोक्तं चूर्णयेत् । ततस्तेभ्यो द्विगुणं मंडूरमंजनसदृशं सर्वेभ्योऽष्टगुणे मूत्रे पृथक् विपक्के च वटकीकरणक्षमे घने सति

Indira Gandhi National Centre for the Arts

प्रक्षिप्य वटकान् कुर्यात् । तांश्च तक्रप्रधानभोजनः सन् भाश्नीयात् । एते मंडूरवटकाः पांडुामयिनां प्राणदास्तथा कुष्टादीन् घ्नंति ।

ताप्याद्रिजतुरौप्यायोमलाः पंचपलाः पृथक् ॥ २० ॥
चित्रकत्रिफलाव्योषविडंगैः पालिकैः सह ।
शर्कराष्टपलोन्मिश्राश्चूर्णिता मधुना द्रुताः ॥ २१ ॥
पांडुरोगं विषं कासं यक्ष्माणं विषम ज्वरम् ।
कुष्टान्यजरकं मेहं शोफं श्वासमरोचकम् ॥ २२ ॥
विशेषाद्धंत्यपस्मारं कामलां गुदजानि च ।

ताप्यादयः पृथक्पंचपलाश्चित्रकादिभिः पालिकैः सह शर्कराष्टपलयुताश्चूर्णीकृता मधुना द्रवीकृताः पांडुरोगादीन् घ्नंति । विशेषेणापस्मारादींश्च ।

कौटजत्रिफलानिंबपटोलघननागरैः ॥ २३ ॥
भावितानि दशाहानि रसैर्द्वित्रिगुणानि वा ।
शिलाजतुपलान्यष्टौ तावती सितशर्करा ॥ २४ ॥
त्वक्क्षीरीपिप्पली धात्री कर्कटाख्याः पलोन्मिताः ।
निदग्ध्याः फलमूलाभ्यां पलं युक्त्या त्रिजातकम् ॥ २५ ॥
मधु त्रिपलसंयुक्तं कुर्यादक्षसमान् गुडान् ।
दाडिमांबुपयः पक्षिरसतोयसुरासवान् ॥ २६ ॥
तान् भक्षयित्वानुपिबेन्निरन्नो भुक्त एव वा ।
पांडुकुष्टज्वरप्लीहतमकार्शो भगंदरम् ॥ २७ ॥
हृन्मूत्रपूतीशुक्राग्निदोषशोषगरोदरम् ।
कासासृग्दरपित्तासृक्शोफगुल्मगलामयान् ॥ २८ ॥
मेहवर्ध्मभ्रमान् हन्युः सर्वदोषहराः शिवाः ।

कौटजादिभिर्द्रव्यै रसतां गतैः क्वाथीकृतैरित्यर्थः । शिलाजतु पलान्यष्टौ दशाहानि द्विगुणानि त्रिगुणानि वा मासमेकं भावितानि । अहः शब्दो

Indira Gandhi National Centre for the Arts

वारोपलक्षणार्थः। तदयमाद्यार्थोंवतिष्ठते। शिलाजतुपलाष्टकं केवलं जलधौतं कौटजादिकं तत्तुल्यमष्टगुणिते जले क्वथितं ततोऽष्टभागावशेषरसं गृहीत्वा तेन रसेन दश वारान् द्वित्रिगुणान्वा भावयेदिति। तावत्यष्टपलप्रमाणा सितशर्करात्वक्क्षीर्यादिकं पलोन्मितं कंटकार्याः फलमूलयोः पलम्। त्रिजातकं युक्त्या यावता त्रिजातकेनातिसौगंध्यं हीनसौगंध्यं वा न स्यात्। एवं न हीनमात्रमेतद्देयमव्यापकत्वान्नवातिमात्रमप्यतिव्यापकत्वेनायोगार्हत्वात्। मधुनस्त्रिभिः पलैः संयुक्तान् कार्षिकान् गुडान् विदध्यात्। तान् गुडान् भक्षयित्वाऽनु पश्चाद्दाडिमजलादीनि यथायोगं पिबेन्निरन्नः कृताहारो वा। ते च वटकाः पांड्वादीन् हन्युः। सर्वदोषहराः शिवाश्च स्युः।

द्राक्षाप्रस्थं कणाप्रस्थं शर्करार्धतुला तथा ॥ २९ ॥
द्विपलं मधुकं शुंठीत्वक्षीरीं च विचूर्णितम्।
धात्रीफलरसे द्रोणे तत्क्षिप्त्वा लेहवत्पचेत् ॥ ३० ॥
शीतान्मधुप्रस्थयुताल्लिह्यात्पाणितलं ततः।
हलीमकं पांडुरोगं कामलां च नियच्छति ॥ ३१ ॥

द्राक्षायाः षोडशपलानि पिप्पल्याश्च शर्करायाः पलानि पंचाशत्। यष्ट्यादिकं रजीकृतं द्विपलप्रमाणम्। धात्रीफलरसस्य द्रोणे सर्वमेतत्क्षिप्त्वा लेहमिव पचेत्। तस्माल्लेहाच्छीतान्मधुनः प्रस्थयुतात् पाणितलं कर्षमात्रं लिह्यात्। स च लेहो हलीमकादीन्नियच्छति पराकरोति।

कनीयः पंचमूलांबु शस्यते पानभोजने।
पांडूनां कामलार्तानां मृद्वीकामलकाद्रसः ॥ ३२ ॥

पानभोजने च शस्यते ह्रस्वपंचमूलजलम्। मृद्वीकारस आमलकरसश्च पांडुरोगिणां कामलार्तानां च शस्यते।

इति सामान्यतः प्रोक्तं पांडुरोगभिषग्जितम्।
विकल्प्य योज्यं विदुषा पृथग्दोषबलं प्रति ॥ ३३ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

इत्येवं पांडुरोगे सामान्येन भिषग्जितमौषधं प्रोक्तम्। भिषज्धातुः कंड्वादौ भिषज्यते स्मक्तः भिषग्जितं। तदभिज्ञेन वैद्येन विकल्प्य निरूप्य पृथग्दोषबलं लक्षणीकृत्य योज्यम्।

स्नेहप्रायं पवनजे तिक्तशीतं तु पैत्तिके।
श्लैष्मिके कटुरूक्षोष्णं विमिश्रं सांनिपातिके ॥ ३४ ॥

पवनजे पांडौ स्नेहप्रायं स्नेहभूयिष्ठं भेषजं। तिक्तशीतप्रायं तु पैत्तिके। श्लैष्मिके तु कटुरूक्षोष्णभूयिष्ठं। सांनिपातिके विमिश्रं चिकित्सितम्।

मृदं निर्यातयेत्कायात्तीक्ष्णैः संशोधनैः पुरः।
बलाधानानि सर्पींषि शुद्धे कोष्ठे तु योजयेत् ॥ ३५ ॥

कायाच्छरीरान्मृदं शल्यभूतं स्थितम् तीक्ष्णैः संशोधनैः स्नुहीक्षीरादिभिर्निर्हरेत्पुरः पूर्वं। शुद्धे तु कोष्ठे बलाधानानि घृतानि योजयेत्। तान्येवाह

व्योषबिल्वद्विरजनीत्रिफलाद्विपुनर्नवम्।
मुस्तान्ययोरजः पाठा विडंगं देवदारु च ॥ ३६ ॥
वृश्चिकाली च भार्ङ्गी च सक्षीरैस्तैः शृतं घृतम्।
सर्वान्प्रशमयत्याशु विकारान्मृत्तिकाकृतान् ॥ ३७ ॥

व्योषादिभिर्घृतचतुर्थांशैः शृतानि समेन क्षीरेण तच्चतुर्गुणजलेन घृतं शृतं सर्वान् विकारान् मृत्तिकाकृतान् शमयति।

तद्वत्केसरयष्ट्याह्वपिप्पलीक्षीरशाड्वलैः।

केसरादिभिः पक्वं सर्पिस्तद्वत् पूर्वगुणम्।

मृद्द्वेषणाय तल्लौल्ये वितरेद्भाविता मृदम् ॥ ३८ ॥
वेल्लाग्निनिंबप्रसवैः पाठया मूर्वयाऽथवा।

मृद्द्वेषणार्थे तस्यां मृदि लौल्ये लोलुपत्वे सति वेल्लादिभिर्भावितां मृदं दद्यात्।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

मृद्भेदभिन्नदोषानुगमाद्योज्यं च भेषजम् ॥ ३९ ॥

मृदो भेदो विशेष: कृष्णपांडुरादि: । तेन भिन्नो विशेषितो यो दोषस्तस्य वातादेर्ज्ञानात् । मृत्कषायानिलं पित्तमूषरामधुरात्कफं दूषयित्वा । एवं लक्षणैर्दोषानुगमाद्भेषजं योज्यम् । नैवमेवं मृद्भक्षणमात्रविज्ञानेन । मृन्निर्हरणौषधं चैतद्धेतुविपरीतमेवेत्यवेहि । यतो मृदा हेतुभूतया य: पांडुरोग उदभूत्तस्य मृन्निर्हरणं विपरीतमेव ।

कामलायां तु पित्तघ्नं पांडुरोगाविरोधि यत् ।

कामलायां पित्तहरमौषधं यत् पांडुरोगाविरोधि तद्देयम् ।

पथ्याशतरसे पथ्यावृंतार्धशतकल्कित: ॥ ४० ॥
प्रस्थ: सिद्धो घृताद्गुल्मकामलापांडुरोगनुत् ।

पथ्याशतक्वाथे पथ्यावृंतपंचाशत्कल्कीकृतो घृतप्रस्थ: पक्व: कामलादिघ्न: ।

आरग्वधं रसेनेक्षोर्विदार्यामलकस्य वा ॥ ४१ ॥
सत्र्यूषणं बिल्वमात्रं पाययेत्कामलापहम् ।

इक्षो रसेन विदार्या रसेनामलकरसेन वा कर्णिकाराद्यन्यतमरसेन सह त्रिकटुकं पलप्रमाणमारग्वधं कामलापहं पाययेत् ।

पिबेन्निकुंभकल्कं वा द्विगुणं शीतवारिणा ॥ ४२ ॥
कुंभस्य चूर्णं सक्षौद्रं त्रैफलेन रसेन वा ।

निकुंभकल्कं वा पलद्वयप्रमाणं शिशिरजलेन पिबेत् । कुंभचूर्णं क्षौद्रसहितं वा त्रैफलेन क्वाथेन पिबेत् ।

त्रिफलाया गुडूच्या वा दार्व्या निंबस्य वा रसम् ॥ ४३ ॥
प्रात: प्रातर्मधुयुतं कामलार्ताय योजयेत् ।

त्रिफलाद्यन्यतमरसं मधुयुतं प्रात: प्रात: कामलिने योजयेत् ।

निशागैरिकधात्रीभि: कामलापहमंजनम् ॥ ४४ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

निशादिभिरंजनं कामलाहृत् ।

तिलपिष्टनिभं यस्तु कामलावान्सृजेन्मलम् ।
कफरुद्धपथं तस्य पित्तं कफहरैर्जयेत् ॥ ४५ ॥

यः पुनः कामलावान्मलं तिलपिष्टसदृशं मुंचेत्तस्य कफरुद्धमार्गं । तस्यातुरस्य कफघ्नैर्द्रव्यैः पित्तं जयेत् ।

रूक्षशीतगुरुस्वादुव्यायामबलनिग्रहैः ।
कफसंमूर्छितो वायुर्यदा पित्तं बहिः क्षिपेत् ॥ ४६ ॥
हारिद्रनेत्रमूत्रत्वक्श्वेतवर्चास्तदा नरः ।
भवेत्साटोपविष्टंभो गुरुणा हृदयेन च ॥ ४७ ॥
दौर्बल्याल्पाग्निपार्श्वार्तिहिध्माश्वासारुचिज्वरैः ।
क्रमेणाल्पेऽनुषज्येत पित्ते शाखासमाश्रिते ॥ ४८ ॥
रसैस्तं रूक्षकट्वम्लैः शिखितित्तिरिदक्षजैः ।
शुष्कमूलकजैर्यूषैः कुलत्थोत्थैश्च भोजयेत् ॥ ४९ ॥
भृशाम्लतीक्ष्णकटुकलवणोष्णं च शस्यते ।
सबीजपूरकरसं लिह्याद्व्योषं तथाशयम् ॥ ५० ॥
स्वं पित्तमेति तेनास्य शकृदप्यनुरज्यते ।
वायुश्च याति प्रशमं सहाटोपाद्युपद्रवैः ॥ ५१ ॥
निवृत्तोपद्रवस्यास्य कार्यः कामलिको विधिः ।

रूक्षादिभिः पवनः कुपितः कफेन मिश्रितो यदा पित्तं बहिः क्षिपेत् तदा हारिद्रनेत्रादिः पुरुषो भवेदाटोपादिमांश्च । हृदयेन च गुरुणा युक्तः । दौर्बल्यादिभिः क्रमेण कुपितो वायुरल्पे पित्ते शाखासमाश्रितेऽनुषज्येत । अनुषज्येति कर्मकर्तरि । तं तादृशं नरं रसै रूक्षकट्वम्लैर्मयूरादिमांसजैस्तथा शुष्कमूलकोद्भवैर्यूषैस्तथा कुलत्थोत्थैर्भोजयेत् । भृशाम्लादिकं च भोजनं शस्यते । तथा बीजपूरकरससहितं व्योषं लिह्यात् । एवं कृते सत्यस्य पित्तं

Indira Gandhi National Centre for the Arts

स्वमाशयमेति । शकृच्चानुरज्यते वायुश्च प्रशमं यात्याटोपांत्रकूजनादिभिरुपद्रवैः सह । अस्यातुरस्याप्तातोपद्रवस्य सतः कामलाविहितो विधिः कार्यः ।

गोमूत्रेण पिबेत्कुंभकामलायां शिलाजतु ॥ ५२ ॥
मासं माक्षिकधातुं वा किट्टं वाऽथ हिरण्यजम् ।

कुंभकामलायां गोमूत्रेणालेडितं शिलाजतु पिबेत् । धातुमाक्षिकं वा पिबेत् । गोमूत्रेण मासं यावत् पिबेत् । हिरण्यजं रूप्योत्थं मलं वा गोमूत्रेण पिबेत् ।

गुडूचीस्वरसक्षीरसाधितेन हलीमकी ॥ ५३ ॥
महिषीहविषा स्निग्धः पिबेद्धात्रीरसेन तु ।
त्रिवृतां तद्विरिक्तोऽद्यात्स्वादु पित्तानिलापहम् ॥ ५४ ॥
द्राक्षालेहं च पूर्वोक्तं सर्पींषि मधुराणि च ।
यापनान्क्षीरबस्तींश्च शीलयेत्सानुवासनान् ॥ ५५ ॥
मार्द्वीकारिष्टयोगांश्च पिबेद्युक्त्याग्निवृद्धये ।
कासिकं वाभयालेहं पिप्पलीमधुकं बलाम् ॥ ५६ ॥
पयसा च प्रयुंजीत यथादोषं यथाबलम् ।

हलीमकवान् गुडूचीस्वरसक्षीरपक्वेन महिषीघृतेन स्निग्धः सन् त्रिवृतां धात्रीरसेन पिबेत् । गुडूचीस्वरसोऽत्र घृताच्चतुर्गुणः क्षीरं घृतसममिति पाकक्रमः । तथा त्रिवृतया विरिक्ते सति मधुरं वातपित्तघ्नं चादद्यात् । प्रागुक्तं च द्राक्षालेहं भक्षयेत् । मधुरद्रव्यसाधितानि घृतानि चाद्यात् । यापनान्प्राणकारिणः क्षीरबस्तींश्च शीलयेदनुवासनसहितान् मार्द्वीकारिष्टयोगांश्च युक्तया वन्हिवृद्धये पिबेत् । अभयालेहं चागस्त्यं कासचिकित्सितोक्तं प्रस्थोन्मिते यवक्वाथे विंशतिविजया इत्यादि शीलयेत् । क्षीरेण च पिप्पलीं मधुयष्टिकां बलां च युंजीत यथादोषाद्बलाच्च ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

पांडुरोगेषु कुशलः शोफोक्तं च क्रियाक्रमम् ॥ ९७ ॥

पांडुरोगेषु शोफचिकित्सितं च क्रियाक्रमं सुधीः प्रयुंजीत ।

इति श्रीमदरुणदत्तविरचितायामष्टांगहृदयटीकायां चिकित्सितस्थाने पांडुरोगचिकित्सितं नाम षोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥

सप्तदशोऽध्यायः ।

पांडुरोगचिकित्सितादनंतरं शोफचिकित्सितं व्याख्यातुं प्रक्रम्यते ॥

अथातः श्वयथुचिकित्सितं व्याख्यास्यामः ।

संबंधश्चास्य निदान एवोक्त इत्याह ।

सर्वत्रे सर्वांगसरे दोषजे श्वयथौ पुरा ।
सामे विशोषितो भुक्त्वा लघुकोष्णांभसा पिबेत् ॥ १ ॥
नागरातिविषादारुविडंगेंद्रयवोषणम् ।
अथवा विजयाशुंठीदेवदारुपुनर्नवम् ॥ २ ॥
नवायसं वा दोषाढ्यः शुध्यै मूत्रहरीतकीः ।
वराक्वाथेन कटुकाकुंभाग्र्यरुयूषणानि वा ॥ ३ ॥
अथवा गुग्गुलुं तद्वज्जतु वा शैलसंभवम् ।

सर्वत्र दोषजे श्वयथौ सर्वांगजे तथा सामे विशोषितः सन् लघु भुक्त्वा कोष्णेन जलेन नागरादि पिबेत् । विशोषणमत्रोपवासः । अथवा विजयादीन् कोष्णांभसा पिबेत् । दोषबहुलो नवायसं पांडुरोगोक्तं पिबेत् । शुध्यर्थं गोमूत्रेण हरीतकीः शीलयेत् । त्रिफलाक्वाथेन सह कटुकात्रिवृतालोहचूर्णकटुत्रिकाणि शीलयेत् । वराक्वाथेन कुंभादीन् गुग्गुलुं वा शिलाजतु वा त्रिफलाक्वाथेनैव शीलयेत् ।

मंदाग्निः शीलयेदामगुरुभिन्नविबद्धविट् ॥ ४ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

तक्रं सौवर्चलव्योषक्षौद्रयुक्तं गुडाभयम् ।
तक्रानुपानमथवा तद्वद्वा गुडनागरम् ॥ ५ ॥

मंदाग्निरामगुरुभिन्नविबद्धविट् सन् तक्रं सौवर्चलादियुतं शीलयेत् । गुडयुतामभयां तक्रानुपानां वा । तथैव गुडनागरं तक्रानुपानं शीलयेत् ।

आर्द्रकं वा समगुडं प्रकुंचार्धविवर्धितम् ।
परं पंचपलं मासं यूषक्षीररसाशनः ॥ ६ ॥
गुल्मोदरार्शःश्वयथुप्रमेहान् श्वासप्रतिश्यालसकाविपाकान् ।
सकामलाशोफमनोविकारान् कासं कफं चैव जयेत्प्रयोगः॥७॥

आर्द्रकं वा तुल्यगुडं पलार्धेन प्रतिदिनं वर्धितं परं पंचपलं यावदेकस्मिन्नेव दिने पलपंचकप्रमाणं स्यात्पुनरपि ह्रासयेदर्धपलं यावत् । एवं मासं यावदेषप्रयोगो यथोचितं कफपित्तवाताधिको यूषादिभोजी स्यात् । एषश्च प्रयोगो गुल्मादींश्चतुर्दशकफांतान् जयेत् ।

घृतमार्द्रकनागरस्य कल्कस्वरसाभ्यां पयसा च साधयित्वा ।
श्वयथुक्षवथूदराग्निसादैरभिभूतोऽपि पिबन् भवत्यरोगः ॥ ८ ॥

घृतमार्द्रकनागरस्य कल्कं स्वरसाभ्यां पयसा च साधयित्वा पक्का पिबन् शोफादिभिरभिभूतोपि निरामयः स्यात् । आर्द्रनागरमार्द्रकमुच्यते । उपजात्यौपच्छंदसिके वृत्ते ।

निरामो बद्धशमलः पिबेच्छ्वयथुपीडितः ।
त्रिकटुत्रिवृतादंतीचित्रकैः साधितं पयः ॥ ९ ॥
मूत्रं गोर्वा महिष्या वा सक्षीरं क्षीरभोजनः ।
सप्ताहं मासमथवा स्यादुष्ट्रीक्षीरवर्तनः ॥ १० ॥

निरामो बद्धपुरीषः शोफार्तः सन् त्रिवृतादिभिः साधितं पयः पिबेत् । गोर्महिष्या वा संबंधि मूत्रं सक्षीरभोजनः सन् पिबेत् । तथोष्ट्रीक्षीरभोजनः पानाहाराभ्यां विना सप्ताहमथवा मासं स्यात् । उष्ट्रीक्षीरवर्तन इत्यत्र कुकु-

Indira Gandhi National Centre for the Arts

ट्यादीनां मंडादिषु पुंवद्भावो वक्तव्यः। इत्युष्ट्रीशब्दस्य पुंवद्भावः। केचि-दुष्ट्रीक्षीरमिति जगुः।

यवानकं यवक्षारं यवानीं पंचकोलकम्।
मरिचं दाडिमं पाठां धानकामम्लवेतसम्॥ ११॥
बालबिल्वं च कर्षांशं साधयेत्सलिलाढके।
तेन पक्वो घृतप्रस्थः शोफार्शोगुल्ममेहहा॥ १२॥

यवानकादि कर्षांशं जलाढके पचेत्। तेन क्वाथेन घृतप्रस्थः पक्वः शोफादिहा स्यात्। ब्रह्मादिशब्दस्य मायिकत्वाच्छोपशब्दोत्तरादावपि-हंतेःक्विप्।

दध्नश्चित्रकगर्भाद्वा घृतं तत्तक्रसंयुतम्।
पक्वं सचित्रकं तद्वद्गुणैः

चित्रकगर्भाद्दध्नश्चित्रकश्चूर्णमिश्रितात्क्षीराद्यज्जातं दधि तस्मान्मथ्य-मानात्तक्रेण चित्रकतक्रेण संयुक्तं पक्वं तद्वद्यवानकादिघृतसदृशं गुणैः।

भुंज्याच्च कालवित्॥ १३॥
धान्वंतरं महातिक्तं कल्याणमभयाघृतम्।

कालविदवस्थादोषादिविद्धान्वंतरं महातिक्तकल्याणकमभयाघृतं युंज्यात्।

दशमूलकषायस्य कंसे पथ्याशतं पचेत्॥ १४॥
दत्त्वा गुडतुलां तस्मिन् लेहे दद्याद्विचूर्णितम्।
त्रिजातकं त्रिकटुकं किंचिच्च यवशूकजम्॥ १५॥
प्रस्थार्धं च हिमे क्षौद्रात्त न्निहंत्युपयोजितम्।
प्रवृद्धशोफज्वरमेहगुल्मकार्श्यामवाताम्लकरक्तपित्तम्।
वैवर्ण्यमूत्रानिलशुक्रदोषश्वासारुचिप्लीहगरोदरं च॥ १६॥

दशमूलकषायस्याढके पथ्याशतं पचेत्। अत्र च सामान्यपरिभाषया क्वाथ्यद्रव्यस्य च दशमूलस्य च द्वात्रिंशत् पलानि भवंति। एवं च

Indira Gandhi National Centre for the Arts

तंत्रांतविरोधः । तथा तत्रैवं कथ्यते । द्विपंचमूलस्य तुलाकषाये कंसेभयानां च शतं गुडाच्चेति । तदेवं विरोधं पश्यंतो व्याख्यामेवंविधां विद्वांसो विदधति । दशमूलस्य तुला तस्याः कषायो दशमूलकषाय इति । मयूरव्यंसकादित्वादुत्तरपदलोपी समासः । एवं दशमूलस्य पलशतं तत्क्वाथ्यस्याढके पथ्याशतं पचेत् । गुडतुलां दत्त्वा तस्मिन् लेहे विचूर्णितं त्रिजातकादि दद्यात् । एतेषां च प्रमाणं वासिष्टलेहवत् कल्प्यम् । यवक्षारस्य कर्षमात्रं देयं । तंत्रांतरेप्युक्तम् । त्र्योषाच्चतुष्पलं दद्यात्त्रिपलं त्रिसुगंधतः । कर्षमात्रं यवक्षारादिति । शांते च सति माक्षिकात्प्रस्थार्धं देयं । तदेतदुपयोजितं प्रवृद्धशोफादीन् हंति । खारणादस्तु जगाद । दशमूलाढकमभयाशतसहितं पाचयेदपां द्रोणे । अवशेषितचतुरंशे तस्मिन्पुनः क्षिपेत् पथ्याः इति । उपजातिवृत्तम् ।

पुराणयवशाल्यन्नं दशमूलांबुसाधितम् ।
अल्पमल्प पटुस्नेहं भोजनं श्वयथोर्हितम् ॥ १७ ॥
क्षारव्योषान्वितैर्मौद्गैः कौलत्थैः सकणै रसैः ।
तथा जांगलजैः कूर्मगोधाशल्यकजैरपि ॥ १८ ॥
अनम्लं मथितं पाने मद्यान्यौषधवंति च ।

श्वयथोः पुराणयवादिदशमूलक्वाथसाधितमल्पम् तथाल्पलवणस्नेहं भोजनं हितं । कैः सह । मौद्गरसैः । किंभूतैः । क्षारत्र्यूषणयुक्तैः । तथा कौलत्थरसैः । किंभूतैः । सपिप्पलीकैः । तथा च मुनिः । कुलत्थयूषस्तु सपिप्पलीको मौद्गस्तु सत्र्यूषणयावशूकः । रसैस्तथा जांगलविष्किराणां सकूर्मगोधाशिखिशल्लकानामिति । अत्र शिखिनो जांगलविष्किरत्वेन गृहीता अपि पथ्यतरत्वप्रतिपादनार्थं पुनरुपात्ताः । तथायमेव तंत्रकृदष्टांगावतारेऽध्यगीष्ट । दशमूलांभसा सिद्धैर्व्योषक्षाररजोन्वितैः । रसैर्जांगलजैर्मौद्गैः कौलत्थैर्मौलकैरपीति । तथेत्यादि । तथा जांगलमांसजैस्तथा गोधादिजैस्तथा कच्छपादिजैश्च । पाने मथितमनम्लं मद्यानि च सौषधानि हितानि ।

अजाजीशठीजीवंतीकारवीपौष्कराग्निकैः ॥ १९ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

बिल्वमध्ययवक्षारवृक्षाम्लैर्बदरोन्मितैः ।
कृता पेयाऽऽज्यतैलाभ्यां युक्तिभृष्टा परं हिता ॥ २० ॥
शोफातिसारहृद्रोगगुल्मार्शोल्पाग्निमेहिनाम् ।

अजाजीप्रभृतिभिः पेया घृततैलाभ्यां युक्त्या भृष्टाऽतिशयेन शोफादिमतां हिता ।

गुणैस्तद्वच्च पाठायाः पंचकोलेन साधिता ॥ २१ ॥

पंचकोलेन बदरोन्मितेन साधिता पेया गुणैस्तद्वच्च पूर्वोक्तगुणा । तथैव पाठायाः साधिता पेया स्यात् ।

शैलेयकुष्ठ स्थौणेयरेणुकागुरुपद्मकैः ।
श्रीवेष्टकनखस्पृक्कादेवदारुप्रियंगुभिः ॥ २२ ॥
मांसीमागधिकावन्यधान्यध्यामकबालकैः ।
चतुर्जातकतालीसमुस्तागंधपलाशकैः ॥ २३ ॥
कुर्यादभ्यंजनं तैलं लेपं स्नानाय तूदकम् ।

तथा शैलेयादिभिरभ्यंजनतैलं तथा लेपं स्नानार्थमुदकं च कुर्यात् ।

स्नानं वा निंबवर्षाभूनक्तमालार्कवारिणा ॥ २४ ॥

निंबादिवारिणा च स्नानं कुर्यात् ।

एकांगशोफे वर्षाभूकरवीरककिंशुकैः ।
विशालात्रिफलारोध्रनलिकादेवदारुभिः ॥ २५ ॥
हिंस्राकोशातकीमाद्रीतालपर्णीजयंतिभिः ।
स्थूलकाकादनीशालनाकुलीवृषपर्णिभिः ॥ २६ ॥
श्व दंष्ट्रि हस्तिकर्णैश्च सुखोष्णैर्लेपनं हितम् ।

एकांगजे शोफे पुनर्नवादिभिर्जलपिष्टैः सुखोष्णैर्लेपो हितः । इति सामान्येन श्वयथोरुपक्रमः ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

अथानिलोत्थे श्वयथौ मासार्धं त्रिवृतं पिबेत् ॥ २७ ॥
तैलमैरंडजं वातविड्विबंधे तदेव तु ।
प्राग्भक्ते पयसा युक्तं रसैर्वा कारयेत्तथा ॥ २८ ॥
स्वेदाभ्यंगान्समीरघ्नान् लेपमेकांगगे पुनः ।
मातुलुंगाग्निमंथेन शुंठीहिंस्रामराह्वयैः ॥ २९ ॥

अनिलजे शोफे पक्षं यावत्रिवृतं तथैरंडतैलं पिबेत् । वातविड्विबंधे सति तदेव पूर्वोक्तमौषधं प्राग्भक्तं क्षीरेण सिद्धं मांसरसेन वा पिबेत् । तथा स्वेदाभ्यंगान् वातघ्नान् कारयेद्वैद्य इति शेषः । तथानिलोत्थ एकांगगे शोफे मातुलुंगादिभिर्लेपं कारयेत् । हिंस्रा सिंही ।

पैत्ते तिक्तं पिबेत्सर्पिर्न्यग्रोधाद्येन वा सृतम् ।
क्षीरं तृड्दाहमोहेषु लेपाभ्यंगाश्च शीतलाः ॥ ३० ॥

पित्तश्वयथौ तिक्तकाख्यं घृतं पिबेत् । न्यग्रोधादिगणेन वा सृतं पिबेत् । तथा तृडादिषु क्षीरं पिबेत् । तथा लेपाभ्यंगाः शीता हिताः ।

पटोलमूलत्रायंतीयष्टयाह्वकटुकाभयाः ।
दारुदार्वीहिमं दंती विशाला निचुलं कणा ॥ ३१ ॥
तैः क्वाथः सघृतः पीतो हंत्यंतस्तापतृड्भ्रमान् ।
ससंनिपातवीसर्पशोफदाहविषज्वरान् ॥ ३२ ॥

पटोलादीनां क्वाथो घृतसहितः पीतोऽतस्तापतृष्णादीन् हंति ।

आरग्वधादिना सिद्धं तैलं श्लेष्मोद्भवे पिबेत् ।

कफोद्भवे शोफ आरग्वधादिना सिद्धं तैलं पिबेत् ।

स्रोतोविबंधे मंदेऽग्नावरुचौ स्तिमिताशयः ॥ ३३ ॥
क्षारचूर्णासवारिष्टमूत्रतक्राणि शीलयेत् ।

स्रोतोविबंधे सति वन्हौ च मंदेऽरोचके च सति स्तिमिताशयः सन् क्षार चूर्णासवारिष्टमूत्रतक्राणि शीलयेत् ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

कृष्णापुराणपिण्याकशिग्रुत्वक्सिकतातसीः ॥ ३४ ॥
प्रलेपोन्मर्दने युंज्यात्सुखोष्णा मूत्रकल्किताः ।

कृष्णादीन् कोष्णान् प्रलेप उन्मर्दने च मूत्रकल्कितान् युंजीत ।

स्नानं मूत्रांभसी सिद्धे कुष्टतर्कारिचित्रकैः ॥ ३५ ॥
कुलत्थनागराभ्यां वा चंडागुरुविलेपने ।

मूत्रजले कुष्टादिभिः सिद्धे स्नानाय हिते । कुलत्थशुंठीभ्यां वा क्वथिते गोमूत्रजले हिते । विलेपने चंडागुरुणि हिते ।

कालाजशृंगीसरलबस्तगंधाह्वयाह्वयाः ॥ ३६ ॥
एकैषिका च लेपःस्याच्छ्वयथावेकगात्रजे ।

कालाजशृंग्यादय एकांगके शोफे लेपः स्यात् । काला नीलिनी । बस्तगंधा कारवी । एकैषिका त्रिवृता ।

यथादोषं यथासन्नं शुद्धिं रक्तावसेचनम् ॥ ३७ ॥
कुर्वीत मिश्रदोषे तु दोषोद्रेकबलात्क्रियाम् ।

यथादोषं दोषानुसारेण शुद्धिं तथा रक्तावसेचनं यथासन्नं कुर्वीत । संसर्गजे तु यथाभ्यधिकदोषानुसारेण क्रियां कुर्यात् ।

अजाजिपाठाघनपंचकोलव्याघ्रीरजन्यः सुखतोयपाताः ३८
शोफं त्रिदोषं चिरजं प्रवृद्धं निघ्नंति भूनिंबमहौषधैश्च ।

अजाज्यादयः कोष्णजलपीताः शोफं त्रिदोषोत्थं चिरकालोत्पन्नं वृद्धिंगतं निघ्नंति । भूनिंबनागरे च हतइति वचनपरिणामेन संबंधः । उपजातिवृत्तं ।

अमृताद्वितयं त्रिवाटिकां सुरकाष्ठं सपुरं सगोजलम् ॥ ३९ ॥
श्वयथूदरकुष्टपांडुताक्रिमिमेहोर्ध्वकफानिलापहम् ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

अमृतायुग्गलादिकं गुग्गुलुसहितं गोमूत्रेण पीतं शोफादीन् हंति । वैतालीयं । क्यादोष्टौसमश्चलनसमोत्रपरेण युज्यतेनेताः । षड्विनिरंतरायुतः ।

इति निजमधिकृत्य पथ्यमुक्तं क्षतजनिते क्षतजं विशोधनीयम् ।
स्नुतिहिमघृतलेपसेकरेकैर्विषजनिते विषजिच्च शोफ इष्टम्॥४०

इति पूर्वोक्तेन प्रकारेण निजं शोफं दोषजमधिकृत्य चिकित्सितमुक्तं । क्षतोत्थे शोफे क्षतजमसृग् विशोध्यं । कैः । रक्तस्रावादिभिः । विषजनिते शोफे विषहरमिष्टं । पुष्पिताग्रा ।

ग्राम्यानूपं पिशितमबलं शुष्कशाकं तिलान्नम्
गौडं पिष्टान्नं दधि सलवणं विज्जलं मद्यमम्लम् ।
धानावल्लूरंसमशमनमथो गुर्वसात्म्यं विदाहि
स्वप्नं रात्रौ श्वयथुगदवान्वर्जयेन्मैथुनं च ॥ ४१ ॥

ग्राम्यादिमांसादि शोफी वर्जयेत् । म्लौ न्यौ यौ ज्ञेया कुसुमितलतावेल्लिताक्षुत्रुलोकैः ।

इति श्रीमृगांकदत्तपुत्रश्रीमदरुणदत्तविरचितायामष्टांगहृदयटीकायां सर्वांगसुंदराख्यायां चिकित्सितस्थाने श्वयथुचिकित्सितं नाम सप्तदशोऽध्यायः।१७

अष्टादशोऽध्यायः ।

अस्मादनंतरं विसर्पचिकित्सितमुत्सेधसामान्याच्चिकित्सासादृश्याच्च व्याख्यायते।

अथातो विसर्पचिकित्सितं व्याख्यास्यामः ॥

आदावेव विसर्पेषु हितं लंघनरूक्षणम् ।
रक्तावसेको वमनं विरेकः स्नेहनं न तु ॥ १ ॥

विसर्पेषु पूर्वमेव लंघनादि हितम् । स्नेहनं तु न हितम् ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

प्रच्छर्दनं विसर्पघ्नं सयष्टींद्रयवं फलम् ।
पटोलपिप्पलीनिंबपल्लवैर्वा समन्वितम् ॥ २ ॥

वमनं विसर्पघ्नं मदनफलं मधुयष्टिकेंद्रयवान्वितम् हितं । पटोलादिभि-र्युतं वा मदनफलं हितम् ।

रसेन युक्तं त्रायंत्या द्राक्षायास्त्रैफलेन वा ।
विरेचनं त्रिवृच्चूर्णं पयसा सर्पिषाऽथवा ॥ ३ ॥
योज्यं कोष्ठगते दोषे विशेषेण विशोधनम् ।

त्रिवृच्चूर्णं त्रायंत्या रसेन युक्तं द्राक्षारसेन वा त्रिफलारसेन वा विरे-चनं योज्यम् । क्षीरेण घृतेन वा त्रिवृच्चूर्णं युक्तम् । कोष्ठगते दोषे विशे-षेण शोधनं योज्यम् ।

अविशोध्यस्य दोषेऽल्पे शमनं चंदनोत्पलम् ॥ ४ ॥
मस्तुनिंबपटोलं वा पटोलादिकमेव वा ।
सारिवामलकोशीरमुस्तं वा कथितं जले ॥ ५ ॥

अशोधनार्हस्य पुंसोल्पे दोषे शमनं चंदनोत्पलं योज्यं । मस्तुनिंबपटोलं वा । पटोलकटुरोहिणीत्यादिकं वा सारिवादिकं वा जले कथितं ।

दुरालभां पर्पटकं गुडूचीं विश्वभेषजम् ।
पाक्यं शीतकषायं वा तृष्णावीसर्पवान् पिबेत् ॥ ६ ॥

दुरालभादिकं कथितं शीतकषायं वा तृष्णादिमान् पिबेत् ।

दार्वीपटोलकटुकामसूरत्रिफलास्तथा ।
सनिंबयष्टीत्रायंतीः कथिता घृतमूर्छिताः ॥ ७ ॥

तथा दार्व्यादीन्निंबादिभिः सह कथितान् सर्पिर्विमिश्रितान् पिबेत् ।

शाखादुष्टे तु रुधिरे रक्तमेवादितो हरेत् ।
त्वग्मांसस्नायुसंक्लेदो रक्तक्लेदाद्धि जायते ॥ ८ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

रक्ते च शाखादुष्टे सति प्रथमं रुधिरमेव हरेत्। कुत इत्याह। त्वग्मांसेत्यादि। यस्मात्त्वगादिषु क्लेदो रक्तक्लेदाज्जायते तस्माद्रक्तं निर्हरेत्।

निरामे श्लेष्मणि क्षीणे वातपित्तोत्तरे हितम्।
घृतं तिक्तं महातिक्तं सृतं वा त्रायमाणया ॥ ९ ॥

निरामे पुंसि तथा वातपित्ताधिके कफे च क्षीणे घृतं तिक्तकादिकं हितं। पूर्वं सामान्येन विसर्पिणः स्नेहनं निषिद्धं। अवस्थाविशेषेण च स्नेहनमिदमुक्तमिति पूर्वापरव्याहतत्वमत्र नाशंकनीयम्।

निर्हृतेऽस्रे विशुद्धेंतर्दोषे त्वग्मांससंश्रये।
बहिःक्रियाः प्रदेहाद्याः सद्यो वीसर्पशांतये ॥ १० ॥

रक्ते निर्हृतेंऽतर्विशुद्धे दोषे त्वग्मांसाश्रिते सति प्रलेपसेकाद्या बहिःक्रियाः परिमार्जने विधेयाः। शीघ्रमेव विसर्पशांतये स्युः।

शताह्वामुस्तवाराहीवंशार्तगलधान्यकम्।
सुराह्वा कृष्णगंधा च कुष्ठं वा लेपनं चले ॥ ११ ॥

शतपुष्पादिकं चले वाते विसर्पे प्रलेपनं हितम्। आर्तगलो नीलःसहचरः।

न्यग्रोधादिगणः पित्ते तथा पद्मोत्पलादिकम्।

न्यग्रोधादिगणः पित्तविसर्पे प्रलेपो हितः। तथा पित्तविसर्पे पद्मोत्पलादिकं दशग्रंथ्यो[illegible] तंत्रादवधार्यं। यथा षड्वरणाख्यो योगः। संग्रहे चैवं पठ्यते। पद्मोत्पलशैवालपंकदूर्वामृणालशृंगाटककसेरुकशर्कराह्रीबेरचंदनमुक्तामणिगैरिकपयस्याप्रपौंडरीकमधुकपद्मकघृतक्षीराणीति।

न्यग्रोधपादास्तरुणाः कदलीगर्भसंयुताः ॥ १२ ॥
बिसग्रंथिश्च लेपः स्याच्छतधौतघृताप्लुतः।
पद्मिनीकर्दमः शीतः पिष्टं मौक्तिकमेव वा ॥ १३ ॥
शंखः प्रवालं शुक्तिर्वा गैरिकं वा घृतान्वितम्।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

न्यग्रोधस्य पादास्तरुणा अभिनवकदलीगर्भानि ता बिसग्रंथिश्च लेपोऽयं शतधौतघृतालोडितः । तथा पद्मिनीपंकः शिशिरो मौक्तिकं वा जलपिष्टं । शंखो वा पिष्टो, विद्रुमो वा शुक्तिर्वाऽथवा गैरिकं घृतयुक्तं लेपो हितः ।

त्रिफलापद्मकोशीरसमंगाकरवीरकम् ॥ १४ ॥
नलमूलान्यनंता च लेपः श्लेष्मविसर्पहा ।

त्रिफलादिभिर्लेपः श्लेष्मविसर्पहृत् ।

धवसप्ताह्वखदिरदेवदारुकुरंटकम् ॥ १५ ॥
समुस्तारग्वधं लेपो वर्गो वा वरुणादिकः ।
आरग्वधस्य पत्राणि त्वचः श्लेष्मांतकोद्भवाः ॥ १६ ॥
इंद्राणीशाकं काकाह्वाशिरीषकुसुमानि च ।

धवादिकं वरुणसैर्यकेत्यादिर्वा कर्णिकारस्य वा पत्राणि श्लेष्मांतकत्वचो वा इंद्राण्यादयो वा लेपः ।

सेकव्रणाभ्यंगहविर्लेपचूर्णान् यथायथम् ॥ १७ ॥
एतैरेवौषधैः कुर्याद्वायौ लेपा घृताधिकाः ।

एभिरेव श्लेष्मविसर्पलेपौषधैः सेकादीन् कुर्यात् । व्रणाभ्यंगाय हविरित्यश्वघासवत्समासः । वायौ ये लेपा उक्तास्ते घृताधिकाः कार्याः । अधिकशब्देनिर्देशाच्चेदं गमयति । अन्यत्रापि पित्तविसर्पे कफविसर्पे च ये लेपा उक्तास्तेऽपि सघृताः कार्या नत्वघृता इत्यर्थः ।

कफस्थानगते सामे पित्तस्थानगतेऽथवा ॥ १८ ॥
आशीतोष्णा हिता रूक्षा रक्तपित्ते घृतान्विताः ।
अत्यर्थशीतास्तनवस्तनुवस्त्रांतरास्थिताः ॥ १९ ॥
योज्याः क्षणे क्षणेऽन्येऽन्ये मंदवीर्यास्त एव च ।

कफस्थानगते सामे वायौ किंचिच्छीतोष्णरूक्षाश्च प्रलेपा हिताः । पित्तस्थानगते च रक्तपित्ते घृतान्विताः । अत्यंतशीतास्तनवस्तथा तनुवस्त्रांतरा-

Indira Gandhi National Centre for the Arts

स्थिताः क्षणे क्षणेऽपरे यं ज्याः । च शब्दो यस्मादर्थे । यस्मात्त एव पुनः पुनः प्रयुज्यमाना मंदवीर्याः स्युः ।

संसृष्टदोषे संसृष्टमेतत्कर्म प्रशस्यते ॥ २० ॥

संसृष्टदोषे विसर्पे उभयरूपे च संसर्गाख्ये सन्निपाताख्ये चैतत्कर्मेदं चिकित्सितम्। यत्प्रतिदोषमुक्तं तदेव यथायथं संसृष्टं कृत्वा तत्र प्रशस्यते। इति साभिप्रायेन संसृष्टदोषचिकित्सितमुक्त्वा वातपित्तजादिष्वग्निविसर्पादिषूपक्रममाह ।

शतधौतघृतेनाग्निं प्रदिह्यात्केवलेन वा ।
सेचयेद्घृतमंडेन शीतेन मधुकांबुना ॥ २१ ॥
शीतांभसांभोजजलैः क्षीरेणेक्षुरसेन वा ।
पानलेपनसेकेषु महातिक्तं परं हितम् ॥ २२ ॥

अग्निशब्देनाग्निवीसर्प उपलक्ष्यते । तस्य च लक्षणं । वातपित्तांतरेकफइत्यादियावद्दुःप्रबोधे श्रुते निद्रां सोऽग्निविसर्प उच्यत इति । तमग्निविसर्पं शतधौतघृतेन प्रलेपयेत् । सेचयेदित्यादि । अथवा केवलेन घृतमंडेन सेचयेत्। शिशिरेण मधुयष्टीजलेन वा सेचयेत् । एवं शर्कराजलेन मुस्तजलेन क्षीरेणेक्षुरसेन चेति योज्यं । पानादिषु महातिक्तं सुष्ठु हितम् ।

ग्रंथ्याख्ये रक्तपित्तघ्नं कृत्वा सम्यग्यथोदितम् ।
कफानिलघ्नं कर्मेष्टं पिंडस्वेदोपनाहनम् ॥ २३ ॥

ग्रंथिविसर्पे रक्तपित्तघ्नं कर्म कृत्वा ततः कफानिलघ्नं कर्म पिंडस्वेदादिकमिष्टम् ।

ग्रंथिवीसर्पशूले तु तैलेनोष्णेन सेचयेत् ।
दशमूलविपक्केन तद्वन्मूत्रैर्जलेन वा ॥ २४ ॥

ग्रंथिवीसर्पशूले सति दशमूलविपक्केनोष्णेन तैलेन सेचयेत् । तथैव मू-

Indira Gandhi National Centre for the Arts

त्रैर्दशमूलत्रिपक्कैरिति वचनपरिणामेन संबंधः। जलेन वा दशमूलक-थितेन सेचयेत्।

सुखोष्णया प्रदिह्याद्वा पिष्टया कृष्णगंधया।
नक्तमालत्वचा शुष्कमूलकैः कलिनाऽथवा ॥ २५ ॥

अथवा कृष्णगंधया पिष्टया सुखोष्णया प्रदिह्यात्। अथवा नक्तमाल-त्वचा पिष्टया सुखोष्णया प्रदिह्यात्। शुष्कमूलकैः पिष्टैः सुखोष्णैरथवा कलिना बिभीतकेन सुखोष्णेन लेपयेत्।

दंतीचित्रकमूलत्वक्सुधार्कपयसीगुडः।
भल्लातकास्थिकासीसलेपो भिंद्याच्छिलामपि ॥ २६ ॥
बहिर्मार्गाश्रितं ग्रंथिं किं पुनः कफसंभवम्।
दीर्घकालस्थितं ग्रंथिमेभिर्भिंद्याच्च भेषजैः ॥ २७ ॥

दंत्यादिभिर्द्रव्यैर्लेपः शिलामपि भिंद्यात्। किमुत कफजं बाह्यमार्गा-श्रितं ग्रंथिं लेपो न भिंद्यात्। चिरकालावस्थितं ग्रंथिमेभिरेव पूर्वोक्तैरौष-धैर्भिंद्यात्।

मूलकानां कुलत्थानां यूषैः सक्षारदाडिमैः।
गोधूमान्नैर्यवान्नैश्च ससीधुमधुशर्करैः ॥ २८ ॥
सक्षौद्रैर्वारुणीमंडैर्मातुलुंगरसान्वितैः।
त्रिफलायाः प्रयोगैश्च पिप्पल्याः क्षौद्रसंयुतैः ॥ २९ ॥
देवदारुगुडूच्योश्च प्रयोगैर्गिरिजस्य च।
मुस्तभल्लातसक्तूनां प्रयोगैर्माक्षिकस्य च ॥ ३० ॥
धूमैर्विरेकैः शिरसः पूर्वोक्तैर्गुल्मभेदनैः।
तप्तायोहेमलवणपाषाणादिप्रपीडनैः ॥ ३१ ॥

मूलकादियूषादिभिः सक्षारदाडिमैर्गोधूमादिभोजनैस्तथा पानैः ससीधु-मधुशर्करैस्तथा सक्षौद्रैर्वारुणीमंडैर्मातुलुंगरसान्वितैस्तथा त्रिफलायाः प्र-

येगैरित्यारभ्य प्रवृत्तप्रायोहेमलवणपाषाणादिप्रपीडनैर्दीर्घकालस्थितं ग्रंथिं भिंद्यादित्यनुवर्त्य योज्यम् ।

आभिः क्रियाभिः सिद्धाभिर्विविधाभिर्बले स्थितः ।
ग्रंथिः पाषाणकठिनो यदि नैवोपशाम्यति ॥ ३२ ॥
अथास्य दाहः क्षारेण शरैर्हेम्नापि वा हितः ।
पाकिभिः पाचयित्वा तु पाटयित्वा तमुद्धरेत् ॥ ३३ ॥

आभिः पूर्वोक्ताभिः क्रियाभिः सिद्धाभिः सिद्धर्षिप्रणीतत्वादविसंवादिनीभिस्तथा विविधाभिरनेकप्रकारादिभिः प्रयुक्ताभिर्बले स्थितो यदि ग्रंथिर्दीर्घकालानुबंधत्वादतिप्रवृद्ध अत एव पाषाणकठिनो यदि नैवोपशाम्यति । अनंतरमस्य दाहः क्षारेण हितः । अग्निना शरैर्हेम्नापि वा हितः । अथवा पाकिभिरौषधैर्बाह्यांतःशोधितैःपाचयित्वा पाटयित्वा तं ग्रंथिमुद्धरेत् ।

मोक्षयेद्बहुशश्चास्य रक्तमुत्क्लेशमागतम् ।
पुनश्चापहृते रक्ते वातश्लेष्मजिदौषधम् ॥ ३४ ॥

अस्यग्रंथेर्ग्रंथिवीसर्पस्य ततो रक्तमुत्क्लेशमागतम् विकारकरणं प्रत्युन्मुखतां प्राप्तं बहुशो मोक्षयेत् । पुनश्च रक्तेऽपहृते वातश्लेष्मजिदौषधं तत्र हितम् ।

प्रक्लिन्ने दाहपाकाभ्यां बाह्यांतर्व्रणवत्क्रिया ।
दार्वीविडंगकंपिल्लैःसिद्धं तैलं व्रणे हितम् ॥ ३५ ॥
दूर्वास्वरससिद्धं तु कफपित्तोत्तरे घृतम् ।

प्रक्लिन्ने सर्वस्मिन् विसर्पे दाहपाकाभ्यां चोपलक्षिते बाह्यांतर्व्रणवत्क्रिया स्यात् । तथा दार्व्यादिभिः सिद्धं तैलं व्रणे हितं वातप्रधाने वीसर्पे इत्यर्थाद्गम्यते । तथा कफपित्तोत्तरे वीसर्पे दूर्वास्वरसेन पक्वं घृतं हितम् ।

एकतः सर्वकर्माणि रक्तमोक्षणमेकतः ॥ ३६ ॥

एकत एकस्मिंश्चिकित्सापक्षे सर्वकर्माणि यथानिर्दिष्टानि रक्तमोक्षण-

Indira Gandhi National Centre for the Arts

मेकत एकस्मिन् पक्षे। एवं विसर्पोद्दिष्टया सर्वचिकित्सया रक्तमोक्षणस्य च वीसर्पशमने तुल्यत्वात्। ननु कथमेतत्स्यादित्याह।

विसर्पो नह्यसंसृष्टः सोऽस्रपित्तेन जायते।
रक्तमेवाश्रयश्चास्य बहुशोऽस्रं हरेदतः॥ ३७॥

यस्माद्विसर्पः सर्वो रक्तपित्तेनासंसृष्टोऽसंबद्धो न जायते। न कदाचिद्रक्तपित्ताभ्यामंतरेणोत्पद्यत इत्यर्थः। अस्य च विसर्पस्य रक्तमेवाश्रयो नान्यः। अतोस्माद्बहुशो बहून् वारान् रक्तमेव हरेत्।

न घृतं बहुदोषाय देयं यन्न विरेचनम्।
तेन दोषोह्युपस्तब्धस्त्वग्रक्तपिशितं पचेत्॥ ३८॥

बहुदोषाय विसर्पिणे तद्घृतं न देयं यद्विरेचनं न भवति। पित्तं हि वीसर्पे प्राधान्येन चिकित्स्यं। पित्तस्य च विरेचनमुपक्रमप्रधानमिति। तेन घृतेन विरेचनेन यस्मादुपस्तब्धस्तंभितो दोषस्त्वग्रक्तमांसानि पचेत्। तस्माद्विरेचनकरमेव घृतं योज्यमिति।

इति श्रीमृगांकदत्तपुत्रश्रीमदरुणदत्तविरचितायां वीसर्पचिकित्सितंनामाष्टादशोऽध्यायः॥ १८॥

एकोनविंशोऽध्यायः।

अस्मादनंतरं कुष्टचिकित्सितमारभ्यते। संबंधश्चास्य निदानएवोक्त इत्याह।

अथातः कुष्टचिकित्सितं व्याख्यास्यामः॥

अथ रक्तमांसादिदूषणात्तत्स्रवणादामयस्वभावाच्च कायकार्श्यं कुष्टिनः प्रायेणावश्यं भावि। अनेनैवानुसारेण वक्ष्यति। स्नेहैराप्याययेच्चैनं कुष्टैरंतरांतर इत्याह।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

कुष्ठिनं स्नेहपानेन पूर्वं सर्वमुपाचरेत् ।

कुष्ठवंतं नरं सर्वमेव स्नेहपानैरुपक्रमेच्छरीराप्यायनार्थम् । पूर्वमस्य स्नेहोपयोगो युक्त इत्यर्थः ।

तत्र वातोत्तरे तैलं घृतं वा साधितं हितम् ॥ १ ॥
दशमूलामृतैरंडशार्ङ्गष्टामेषशृंगिभिः ।

तस्मिन्वातोत्तरे कुष्ठे दशमूलादिभिः पक्वं तैलं घृतं वा हितम् ।

पटोलनिंबकटुकादार्वीपाठादुरालभाः ॥ २ ॥
पर्पटं त्रायमाणां च पलांशं पाचयेदपाम् ।
द्व्याढकेऽष्टांशशेषेण तेन कर्षोन्मितैस्तथा ॥ ३ ॥
त्रायंतीमुस्तभूनिंबकलिंगकणचंदनैः ।
सर्पिषो द्वादशपलं पचेत्तत्तिक्तकं जयेत् ॥ ४ ॥
पित्तकुष्ठपरीसर्पपिटिकादाहतृड्भ्रमान् ।
कंडुपांडुमयान् गंडान् दुष्टनाडीव्रणापचीः ॥ ५ ॥
विस्फोटविद्रधीगुल्मशोफोन्मादमदानपि ।
हृद्रोगतिमिरव्यंगग्रहणीश्वित्रकामलाः ॥ ६ ॥
भगंदरमपस्मारमुदरं प्रदरं गरम् ।
अर्शोस्रपित्तमन्यांश्च सुकृच्छ्रान् पित्तजान् गदान् ॥ ७ ॥

पटोलादिपलांशं जले द्व्याढके पाचयेत् । तेनाष्टभागशेषेण क्वाथेन तथा कर्षमात्रैस्त्रायंत्यादिभिर्घृतस्य पलानि द्वादश पचेत् । तदेवं तिक्तकाख्यं सर्पिः पित्तकुष्ठादीन् जयेत् । अपरानपि पित्तजानामयान् हंति । एतैश्च द्वादशपलमात्रं पक्वं प्रकृष्टगुणं स्यादिति दृष्टं तत्त्वदर्शिभिर्महर्षिभिः ।

सप्तच्छदः पर्पटकः शम्याकः कटुका वचा ।
त्रिफला पद्मकं पाठा रजन्यौ सारिवे कणे ॥ ८ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

निंबचंदनयष्ट्याह्वविशालेंद्रयवामृताः ।
किराततिक्तकं सेव्यं वृषो मूर्वा शतावरी ॥ ९ ॥
पटोलातिविषामुस्तात्रायंतीधन्वयासकम् ।
तैर्जलेऽष्टगुणे सर्पिर्द्विगुणामलकीरसे ॥ १० ॥
सिद्धं तिक्तान्महातिक्तं गुणैरभ्यधिकं मतम् ।

सप्तच्छदादिभिः कल्कैर्घृतादष्टगुणे जले द्विगुणामलकरसे सर्पिः पक्वं महातिक्तसंज्ञं गुणैश्चाभ्यधिकं तिक्तान्मतं मुनीनामिति शेषः ।

कफोत्तरे घृतं सिद्धं निंबसप्ताह्वचित्रकैः ॥ ११ ॥
कुष्ठोषणवचाशालप्रियालचतुरंगुलैः ।

कफोत्तरे निंबादिभिः कल्कीकृतैः पक्वं घृतं पिबेत् ।

सर्वेषु चारुष्करजं तौवरं सार्षपं पिबेत् ॥ १२ ॥
स्नेहं घृतं वा कृमिजित्पथ्याभल्लातकैः सृतम् ।

सर्वेषु च कुष्ठेषु भल्लातकोत्थं तुवरजं सर्षपजं वा स्नेहमथवा घृतं विडंगादिभिः साधितं पिबेत् ।

आरग्वधस्य मूलेन शतकृत्वः सृतं घृतम् ॥ १३ ॥
पिबेत्कुष्ठं जयत्याशु भजन् सखादिरं जलम् ।

कर्णिकारस्य मूलेन शतवारान् घृतं पक्वं पिबन् कुष्ठं जयति खदिरयुतं पानीयं सेवमानः ।

एभिरेव यथास्वं च स्नेहैरभ्यंजनं हितम् ॥ १४ ॥

एभिरेव पूर्वोक्तैः स्नेहैर्यथायोगमभ्यंजनं हितम् ।

स्निग्धस्य शोधनं योज्यं विसर्पे यदुदाहृतम् ।

स्निग्धस्य कुष्ठिनः शोधनं योज्यं यद्विसर्पे कथितं तत्र चोक्तम् रसेन युक्तस्त्रायंत्या द्राक्षया इत्यादि ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

ललाटहस्तपादेषु शिराश्चास्य विमोक्षयेत् ॥ १५ ॥
प्रच्छानमल्पके कुष्टे शृंगाद्याश्च यथायथम् ।

ललाटादिषु चास्यातुरस्य बलापेक्षी वैद्यो शिरां विमोक्षयेत् । अत्यल्पे कुष्टे प्रच्छानं स्यात् । यथा यथास्वं शृंगाद्याश्च स्युः ।

स्नेहैराप्याययेच्चैनं कुष्टघ्नैरंतरांतरा ॥ १६ ॥
मुक्तरक्तविरिक्तस्य रिक्तकोष्टस्य कुष्टिनः ।
प्रभंजनस्तथा ह्यस्य न स्याद्देहप्रभंजनः ॥ १७ ॥

अंतरांतरा स्रुतरक्तं कृतविरेकं च कुष्टघ्नैः स्नेहैरेनं कुष्टिनमाप्याययेत् । एवं कृते सत्यस्य कुष्टिनो मुक्तरक्तस्य तथा विरिक्तस्यात एव रिक्तकोष्टस्य प्रभंजनो देहस्य प्रभंजनो विघातको न स्यात् ।

वासामृतानिंबवरापटोलव्याघ्रीकरंजोदककल्कपक्वम् ।
सर्पिर्विसर्पज्वरकामलास्रकुष्टापहं वज्रकमामनंति ॥ १८ ॥

वासादिभिः सिद्धं सर्पिर्विसर्पादिघ्नं । एतच्च वज्रकसंज्ञं घृतं वदंति । इंद्रवज्रावृत्तं ।

त्रिफलात्रिकटुद्विकंटकारिकटुकाकुंभनिकुंभराजवृक्षैः ।
सवचातिविषाग्निकैः सपाठैः पिचुभागैर्नववज्रदुग्धमुष्टया ॥ १९ ॥
पिष्टैः सिद्धं सर्पिषः प्रस्थमेभिः क्रूरे कोष्ठे स्नेहनं रेचनं च ।
कुष्टश्वित्रप्लीहवर्ध्माश्मगुल्मान्हन्यात्कृच्छ्रांस्तन्महावज्रकाख्यम् २०

त्रिफलादिभिः कार्षिकैः प्रत्यग्रस्नुहीक्षीरपलेन सहपिष्टैरेभिरौषधैर्घृतप्रस्थं चतुर्गुणजलसिद्धं क्रूरकोष्ठे स्नेहनं स्यात् । रेचनं च । तथा कुष्टादीन् दारुणान्हन्यात् । तच्च महावज्रकं नाम । उपच्छंदसिकशालिन्यौ वृत्ते ।

दंत्याढकमपां द्रोणे पक्त्वा तेन घृतं पचेत् ।
धामार्गवपले पीतं तदूर्ध्वाधो विशुद्धिकृत् ॥ २१ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

दंत्याः षोडश पलानि जलद्रोणे पचेत्। तेन क्राथेन राजक्षेशातकीपले घृतं पचेत्। तत्पीतमूर्ध्वाधो विशुद्धिकरं।

आवर्तकीतुलां द्रोणे पचेदष्टांशशेषितम्।
तन्मूलैस्तत्र निर्यूहे घृतप्रस्थं विपाचयेत्॥ २२॥
पीत्वा तदेकदिवसांतरितं सुजीर्णे
भुंजीत कोद्रवसंस्कृतकांजिकेन। सु
कुष्टं किलासमपचीं च विजेतुमिच्छन्
इच्छन्प्रजां च विपुलां ग्रहणं स्मृतिं च॥ २३॥

आवर्तक्याः शतं द्रोणेऽपामष्टांशशेषितं पचेत्। तत्र क्राथे तस्या मूलैः कल्कीकृतैर्घृतप्रस्थं विपाचयेत्। तद्घृतमेकदिवसांतरितं पीत्वा सुष्टुजीर्णे च घृते कोद्रवसंस्कृतेन कांजिकेन सह भुंजीत। कुष्टादीन् विजिगीषुः। प्रजां च विस्तीर्णामिच्छन्। ग्रहणं स्मृतिं चाभिलषन्। वसंततिलकावृत्तं।

यतेर्लेलीतकवसा क्षौद्रजातीरसान्विता।
कुष्टघ्नी समसर्पिर्वा सगायत्र्यसनोदका॥ २४॥

यतेर्ब्रह्मचर्यस्थितस्य लेलीतकवसा माक्षीकजातीरसयुता कुष्टघ्नी स्यात्। लेलीतकवसा सौवर्चललवणतैलं गंधकमेके। जातीरसो बोलः। अथवा समघृता खदिरासनोदकसहिता कुष्टघ्नी स्यात्।

शालयो यवगोधूमाः कोरदूषाः प्रियंगवः।
मुद्रा मसूरास्तुवरी तिक्तशाकानि जांगलम्॥ २५॥
वरापटोलखदिरनिंबारुष्करयोजितम्।
मद्यान्यौषधगर्भाणि मथितं चेंदुराजिमत्॥ २६॥
अन्नपानं हितं कुष्टे न त्वम्ललवणोषणम्।
दधिदुग्धगुडानूपतिलमाषांस्त्यजेत्तराम्॥ २७॥

शाल्यादिकमन्नपानं च वरादिभिर्योजितं कुष्टे हितम्। इंदुराजिर्बाकुची।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

अम्लादिकमन्नपानं न हितं कुष्ठे स्यात् । तथा दध्यादीनतिशयेन वर्जयेत् । प्रतिरोगं च यन्निदानवर्जनं तच्चिकित्सितमेवेत्यवगंतव्यम् ।

पटोलमूलत्रिफलाविशालाः पृथक्त्रिभागा पचितत्रिशाणाः ।
स्युस्त्रायमाणा कटुरोहिणी च भागार्धिके नागरपादयुक्ते ॥ २८ ॥
एतत्पलं जर्जरितं विपक्वं जले पिबेद्दोषविशोधनाय ।
जीर्णे रसैर्धन्वमृगद्विजानां पुराणशाल्योदनमाददीत ॥ २९ ॥
कुष्ठं किलासं ग्रहणीप्रदोषमर्शांसि कृच्छ्राणि हलीमकं च ।
षड्रात्रियोगेन निहंति चैतद् हृद्वस्तिशूलं विषमज्वरं च ॥ ३० ॥

पृथक् प्रत्येकं त्रिभागेनापचितो न्यूनस्तृतीयः शाणो येषां ते पटोलादयः पंचपृथक्त्रिभागापचितत्रिशाणाः । लोकेपि चैवं प्रयुक्ता एव ; यथा त्रिभागोनास्त्रयो द्रम्मा देया इति । अत्र हि द्वौ द्रम्मौ तृतीयश्चद्रम्मस्त्रिभागेन हीन इति गम्यते । तदेवं पटोलस्य शाणौ द्वौ धानकाश्चतस्रो भवंति । षड्धानको हि शाणः । एवं पटोलमूलादिद्रव्याणां पंचानां प्रत्येकं षोडशधानकाः स्युः । स्यात्त्रायमाणा कटुरोहिणी च भागार्धिका । किंभूते । नागरपादयुक्ते सत्यौ नतु केवले । तदयमर्थः । त्रायंत्या धानकाः षट् । कटुकाया धानकाः षट् नागरस्य धानकाश्चतस्रः । षोडशधानकाह्यत्र मूलद्रव्यभागः । तदेवं पटोलादीनां पंचानामशीतिर्धानकाः । त्रायंतीकटुकयोः शुंठीपादयुतयोः षोडशधानकाः । इति षण्णवतिधानकाभिः पलं भवति । तदिदं पलं जर्जरितं किंचिच्चूर्णितं जले विपक्वं दोषविशुध्यर्थं पिबेत् । जीर्णे सत्यौषधे जांगलमृगपक्षिणां मांसरसैः सह पुराणशाल्योदनमश्नीयात् । उपजाती वृत्ते । एतच्च पीतं षड्रात्रयोगेन षड्दिनान्युपयुक्तं कुष्ठादीन् हंति । इंद्रवज्रा वृत्तं ।

विडंगसारामलकाभयानां पलत्रयं त्रीणि पलानि कुंभात् ।
गुडस्य च द्वादशमासमेष जितात्मनां हंत्युपयुज्यमानः ॥ ३१ ॥
कुष्ठं श्वित्रं श्वासकासोदरार्शोमेहप्लीहग्रंथ्यरुर्जंतुगुल्मान् ।
सिद्धं योगं प्राह यक्षो मुमुक्षोर्भिक्षोः प्राणान्माणिभद्रः किलेमम् ३२

Indira Gandhi National Centre for the Arts

विडंगसारादीनां समुदितानां पलत्रयं त्रीणि पलानि। कुंभात्रिवृतायाः त्रीणि पलानि गुडस्य च द्वादशपलानि। एषः प्रयोगो जितेंद्रियाणां मासमुपयुज्यमानो वक्ष्यमाणान् गदान्हंति। उपेंद्रवज्रातु जगौजगौगः। मासशब्दोपादानाच्च प्रत्यहमस्माद्योगादर्धपलं धानकानवरिक्तिकात्रयसहितमभ्यवहरणीयत्वेनात्रावतिष्ठते। अन्यत्रापि प्रदेशे य एवंविधो निर्देशस्तत्र परिमाणकल्पनायामयमेव न्यायोऽनुमंतव्यः। माणिभद्राख्यो यक्षो भिक्षोः प्राणान्मुमुक्षोर्जीवितं जिहासोरिमं सिद्धं योगं प्राणकरं प्राह जगदेष्यर्थैः। अत्रभूते काले प्राहेति न तथा साधुकिलेत्यागमिकत्वं च सूचयति। शालिनीवृत्तं।

भूनिंबनिंबत्रिफलापद्मकातिविषाकणाः।
मूर्वा पटोली द्विनिशा पाठातिक्तेंद्रवारुणीः॥ ३३ ॥
सकलिंगवचास्तुल्या द्विगुणाश्च यथोत्तरम्।
लिह्याद्दंती त्रिवृद्ब्राह्मीश्चूर्णिता मधुसर्पिषा॥ ३४ ॥
कुष्टमेहप्रसुप्तीनां परमं स्यात्तदौषधम्।

भूनिंबादयस्तुल्या दंत्यादयश्च यथोत्तरम्। द्विगुणाश्चूर्णिता मधुसर्पिषा लिह्यात्। कुष्टादीनामेतत्परं भेषजम्।

वराविडंगकृष्णा वा लिह्यात्तैलाज्यमाक्षिकैः॥ ३५ ॥

त्रिफलादीन्वा तैलघृतमाक्षिकैर्लिह्यात्।

काकोदुंबरिकावेल्लनिंबाब्दव्योषकल्कवान्।
हंति वृक्षकनिर्यूहः पानात्सर्वांस्त्वगामयान्॥ ३६ ॥

काकोदुंबरिकादिकल्कवान् वृक्षकक्राथः पानात्सर्वान् त्वग्रोगान्हंति। काकोदुंबरिका फल्गुः। वृक्षको वत्सकः।

कुटजाग्निनिंबनृपतरुखदिरासनसप्तपर्णनिर्यूहे।
सिद्धा मधुवृतयुक्ताः कुष्टघ्नीर्भक्षयेदभयाः।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

कुटजादिक्वाथे सिद्धाः पक्वा हरीतकीर्मधुघृतसंयुक्ताः कुष्टनुदो भक्षयेत्। आर्यावृत्तम्।

दार्वीखदिरनिंबानां त्वक् क्वाथः कुष्टसूदनः॥ ३७ ॥

दार्व्यादीनां त्वक्क्वाथः कुष्टनाशनः स्यात्।

निशात्वक्षानिंबपटोलमूलतिक्तावचालोहितयष्टिकाभिः।
कृतः कषायः कफपित्तकुष्टं सुसेवितो धर्म इवोच्छिनत्ति॥३८
एभिरेव च शृतं घृतमुख्यं भेषजैर्जयति मारुतकुष्टम्।
कल्पयेत्खदिरनिंबगुडूचीदेवदारुरजनीः पृथगेवम् ॥ ३९ ॥

निशादिभिः कषायः कृतः कफपित्तजं कुष्टमुद्दलयति। सुष्टुसेवितो यथा धर्मः। एभिरेव पूर्वोक्तैरौषधैः पक्वं वरं घृतं वातकुष्टं जयति। एवमनयैव कल्पनया पृथक् खदिरादीन् कल्पयेत्। उपजातिस्वागते वृत्ते।

पाठादार्वीवन्हिघुणेष्टाकटुकाभि
र्मूत्रंयुक्तं शक्रयवैश्चोष्णजलं च।
कुष्टी पीत्वा मासमरुक् स्याद्गुदकीली
मेहीशोफीपांडुरजीर्णीकृमिमांश्च ॥ ४० ॥

पाठादिभिरिंद्रयवैश्च गोमूत्रं युक्तमथवोष्णजलं मासं पीत्वा कुष्टी नीरुक् स्यात्। अर्शसादिश्च। वैदेरंध्रैर्म्लौयसगौमत्तमयूरम्।

लाक्षादंतीमधुरसवराह्वीपिपाठाविडंगं
प्रत्यक्पुष्पीत्रिकटुरजनीसप्तपर्णाटरूषम्।
रक्तानिंबं सुरतरुकृतं पंचमूल्यौ च चूर्णम्
पीत्वा मासं जयति हितभुग्गव्यमूत्रेण कुष्टम् ॥ ४१ ॥

लाक्षादिचूर्णं गोमूत्रेण मासं पीत्वा हितभोजी सन् कुष्टं जयति। रक्ता मंजिष्टा। सुरतरुशब्दस्य नपुंसकत्वमौषधवाचित्वाल्लोकाश्रयत्वाल्लिंग-

Indira Gandhi National Centre for the Arts

स्येति वा । पंचमूल्यौ दशमूलमित्यर्थः । मंदाक्रांतामभयनतरुगगः समुद्रर्तुलोकैः ।

निशाकणानागरवेल्लतौवरं सवह्निताप्यं क्रमशो विवर्धितम् ।
गवांबु पीतं वटकीकृतं तथा निहंति कुष्टानि सुदारुणान्यपि ॥४२

निशादिकं क्रमेण विवर्धितं गोमूत्रेण पीतमथवा वटकीकृतं कुष्टानि सुकृच्छ्राण्यपि निहंति । उशीतिवंशस्थमिदंजतौजरौ ।

त्रिकटूत्तमातिलारुष्करराज्यमाक्षिकसितोपला विहिता ।
गुलिका रसायनं स्यात्कुष्टजिच्च वृष्या च सप्तसमा॥ ४३॥

त्रिकटुकादिभिर्गुलिका विहिता रसायनं कुष्टघ्नद् वृष्या च स्यात् । एवं च सप्तसमाख्यौत्रिकटुकत्रिफलेह्यत्र समुदायरूपत्वाद् द्व एव कल्पिते । आर्या विपुलातुयान्थया पादभाक् ।

चंद्रशकलाग्निरजनीविडंगतुवरास्थ्यरुष्करत्रिफलाभिः ।
वटका गुडांशक्लृप्ताः समस्तकुष्टानि नाशयंत्यभ्यस्ताः ॥४४॥

चंद्रशकलादिभिर्वटका गुडांशेन क्लृप्ताः शीलिता निःशेषकुष्टानि घ्नंति । चंद्रशकला बाकूची । आर्या गीतिः ।

विडंगभल्लातकबाकुचीनां सद्वीपिवाराहिहरीतकीनाम् ।
सलांगलीकृष्णतिलोपकुल्या गुडेन पिंडी विनिहंति कुष्टम्॥४५

विडंगादीनां चूर्णेन गुडेन पिंडीलांगलिकायन्विता कुष्टं विजयते ।

शशांकलेखा सविडंगमूला सपिप्पलीका सहुताशमूला ।
सयोमला सामलका सतैला कुष्टानि कृच्छ्राणि निहंति लीढा४६

शशांकलेखाविडंगादिभिः सह तैलेन लीढा कृच्छ्राणि कुष्टानि विनाशयंति । उपजातिवृत्तम् ।

पथ्यातिलगुडैः पिंडी कुष्टं सारुष्करैर्जयेत् ।
गुडारुष्करजंतुघ्नसोमराजीकृताऽथवा ॥ ४७ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

पथ्यादिभिः सभल्लातकैः पिंडी कुष्टं जयेत्। गुडादिभिर्वा कृता पिंडी कुष्टं हंति।

विडंगाद्रिजतु क्षौद्रं सर्पिष्मत्खादिरं रजः।
किटिभश्वित्रदद्रुघ्नं खादेन्मितहिताशनः ॥ ४८ ॥

खदिरचूर्णं विडंगादियुतं मितहितभोजनः किटिभादिघ्नं खादेत्।

सितातैलकमिघ्नानि धात्र्यायोमलपिप्पलीः।
लिहानः सर्वकुष्टानि जयत्यतिगुरूण्यपि ॥ ४९ ॥

सितादीनि लिहानो शेषकुष्टानि कृच्छ्राण्यपि जयति।

मुस्तं व्योषं त्रिफला मंजिष्टादारुपंचमूले द्वे।
सप्तच्छदनिंबत्वक्सविशालाचित्रकोमूर्वा ॥ ५० ॥
चूर्णं तर्पणभागैर्नवभिः संयोजितं समध्वंशम्।
नित्यं कुष्टनिबर्हणमेतत्प्रायोगिकं खादन् ॥ ५१ ॥
श्वयथुं सपांडुरोगं श्वित्रं ग्रहणीप्रदोषमर्शांसि।
वर्ध्मभगंदरपिडकाकंडूकोठापचीर्हंति ॥ ५२ ॥

मुस्तादिकं समभागं सक्तुभागैर्नवभिः संयोजितं मध्वंशेन युतमेतच्चूर्णं प्रायोगिकं प्रयोगयोग्यं कुष्टघ्नं सततं खादेत्। आर्यास्तिस्रः।

रसायनप्रयोगेण तुवरास्थीनि शीलयेत्।
भल्लातकं बाकुचिकां वन्हिमूलं शिलाह्वयम् ॥ ५३ ॥

रसायनोक्तेन विधिना तुवरास्थीनि शीलयेत्। भल्लातकं वा सोमराजीं वा चित्रकमूलं वा शिलाजतु वा।

इति दोषे विजितेंतस्त्वक्स्थेशमनं बहिः प्रलेपादिहितम्।
तीक्ष्णालेपोत्क्लिष्टं कुष्टं हि विवृद्धिमेति मलिने देहे॥५४॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

इत्येवं प्रकारेणांतर्विजिते दोषेऽत एव त्वक्स्थे बहिः प्रलेपादि हितम्। आदिशब्देन स्नानादिपरिग्रहः। ननु बहिर्भागस्थं कुष्टं किमिति पूर्वमेव प्रलेपादिना न जीयत इत्याह। तीक्ष्णेत्यादि। यस्मात्तीक्ष्णेन लेपेनोत्क्लिष्टमुत्क्लेशं भापितं कुष्टं मलिने सदोषे काये विवृद्धिं याति। तस्मादंतःशुद्धे काये प्रलेपादिकं हितम्। आर्या गीतिः।

स्थिरकठिनमंडलानां कुष्टानां पोटलैर्हितः स्वेदः।
स्विन्नोत्सन्नं कुष्ठं शस्त्रैर्लिखितं प्रलेपनैर्लिंपेत् ॥ ९५ ॥

स्थिराणि कठिनानि च मंडलानि येषां कुष्टानां तेषां पोटलैः स्वेदो हितः। स्विन्नोत्सन्नं कुष्टं शस्त्रैर्लिखितं प्रलेपैर्लिंपेत्। गीतिरार्या।

येषु न शस्त्रं क्रमते स्पर्शेन्द्रियनाशनेषु कुष्टेषु।
तेषु निपात्यः क्षारो रक्तं दोषं च विस्राव्यम् ॥ ९६ ॥

येषु कुष्टेषु स्पर्शेंद्रियनाशनेषु शस्त्रं न क्रमते तेषु रक्तं दोषं च विस्राव्य क्षारो निपातनीयः। क्रमत इति क्रमुत्साहेत्यादिना तङ्।

लेपोतिकठिन परुषे सुप्ते कुष्टे स्थिरे पुराणे च।
पीतागदस्य कार्यो विषैः समंत्रोऽगदैश्चानु ॥ ९७ ॥

पाषाणवत्कठिने तथा परुषस्पर्शे तथा सुप्ते स्थिरीभूते तथा पुराणे च कुष्टे सत्यातुरस्योपयुक्तो गदस्य विषैर्मंत्रसहितैर्लेपः कार्यः। अनु पश्चादगदैश्च लेपः।

स्तब्धानिसुप्तसुप्तान्यस्वेदनकंडुलानि कुष्टानि।
घृष्टानि शुष्कगोमयफेनकशस्त्रैः प्रदेह्यानि ॥ ९८ ॥

कुष्टानि स्तब्धानि तथाऽतिसुप्तानि तथा स्वेदनानि कंडूवंति च शुष्कगोमयादिभिर्घृष्टान्यनंतरं प्रलेप्यानि।

मुस्तात्रिफलामदनं करंज आरग्वधकलिंगयवाः।
सप्ताह्वकुष्टफलिनीदार्व्यसिद्धार्थकं स्नानम् ॥ ९९ ॥

एष कषायो वमनं विरेचनं वर्णकरस्तथोग्धर्षः ।
त्वग्दोषकुष्टशोफप्रबाधनः पांडुरोगघ्नः ॥ ६० ॥

मुस्तादयः स्नानं स्यात् । एष एव कषायो वमनं वर्णकरस्तथोग्धर्षस्त्वग्दोषादिप्रबाधनः पांडुरोगहृच्च स्यात् ।

करवीरनिंबकुटजाच्छम्याकाच्चित्रकाच्च मूलानाम् ।
मूत्रे दर्वीलिपीक्वाथो लेपेन कुष्टघ्नः ॥ ६१ ॥

करवीरमूलादिना चतुर्गुणे गोमूत्रे क्वथिते दर्वीलिपी क्वाथो लेपेन कुष्टापहः ।

श्वेतकरवीरमूलं कुटजकरंजात्फलं त्वचो दार्व्याः ।
सुमनःप्रवालयुक्तो लेपः कुष्टापहः सिद्धः ॥ ६२ ॥

सितकरवीरमूलादयः सुमनःपल्लवयुतो लेपो निश्चितं कुष्टघ्नः ।

शैरिषीत्वग्पुष्पं कार्पास्याराजवृक्षपत्राणि ।
पिष्टी च काकमाची चतुर्विधः कुष्टहा लेपः ॥ ६३ ॥
व्योषसर्षपनिशागृहधूमैर्यावशूकपटुचित्रककुष्टैः ।
कोलमात्रगुटिकार्धविषांशा श्वित्रकुष्टहरणो वरलेपः ॥ ६४

शिरीषत्वगादिलेपश्चतुःप्रकारः कुष्टजित् । व्योषादिभिर्द्रव्यैः समांशैस्तदर्धविषोपेतैः कोलप्रमाणा वटिका लेपतः श्वित्रं कुष्टं हंति । आर्याऽष्टौ ।

निंबं हरिद्रे सुरसं पटोलं कुष्टाश्वगंधे सुरदारुशिग्रुः ।
ससर्षपं तुंबरुधान्यवन्यं चंडाचचूर्णानि समानि कुर्यात् ॥ ६५ ॥
तैस्तक्रपिष्टैः प्रथमं शरीरं तैलाक्तमुद्वर्तयितुं यतेत ।
तेनास्य कंडूपिटिकाः सकोठाः कुष्टानि शोफाश्च शमं व्रजंति ६६

पूर्वं तैलाभ्यक्तं शरीरं निंबादिभिः समभागेन चूर्णीकृतैरुद्वर्तनार्थं यत्नं कुर्यात् । तथा । एवं कृते स्यातुरस्य कंड्वादयः शाम्यंति । उद्वर्तनानंतरमुष्णजलस्नानं कार्यं ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

मुस्तामृतासंगकटंकटेरीकासीसकंपिल्लककुष्टरोध्राः ।
गंधोपलः सर्जरसो विडंगं मनःशिलालेकरवीरकत्वक् ॥६७॥
तैलाक्तगात्रस्य कृतानि चूर्णान्येतानि दद्यादवचूर्णनार्थम् ।
दद्रुः सकंडूः किटिभानि पामा विचर्चिका चेति तथा न संति ६८

मुस्तादीनि समान्येतानि चूर्णानि कृत्वा तानि तैलाभ्यक्तदेहस्याव-चूर्णनार्थं दद्यात् । तथा । एवमवचूर्णिते सति दद्रुरित्यादयो नश्यंति । चत्वार्येतान्युपजातिसंज्ञानि वृत्तानि ।

स्नुग्गंडे सर्षपात्कल्कः कुकूलानलपाचितः ।
लेपाद्विचर्चिकां हंति रागवेग इव त्रपाम् ॥ ६९ ॥
मनःशिलालेमरिचानि तैलमार्कं पयः कुष्टहरः प्रदेहः ।
तथा करंजप्रपुनाटबीजं कुष्टान्वितं गोसलिलेन पिष्टम् ७०

सर्षपाणां कल्कः स्नुह्यागंडे कुकूलाग्नौ पाचितो लेपेन विचर्चिकां हंति । रागवेगो लज्जां यथा । मनःशिलादयः प्रलेपात् कुष्टहृत्प्रदेव करंजादिगोमूत्रपिष्टं । उपजातिवृत्तं ।

गुग्गुलुमरिचविडंगैः सर्षपकासीससर्जरसमुस्तैः ।
श्रीवेष्टकालगंधैर्मनःशिलाकुष्टकंपिल्लैः ॥ ७१ ॥
उभयहरिद्रासहितैश्चाक्रिकतैलेन मिश्रितैरेभिः ।
दिनकरकराभितप्तैः कुष्टं घृष्टं च नष्टं च ॥ ७२ ॥

गुग्गुल्वादिभिरेतैश्चक्रजतैलेन मिश्रितैः सूर्यरश्मितप्तैर्घृष्टं कुष्टं द्राक् नश्यति । चाक्रिकं तैलं सद्यः पीडितं चक्रस्थमेवोष्णं तैलं । केचित्तुबहुकालक्रमे तैलपीडनात् कोट्टककाष्ठादेनदारुकाष्ठवत् खंडशः पाटिताद्युक्त्या यत्तैलं गृह्यते तच्चक्रतैलमित्याहुः ।

मरिचं तमालपत्रं कुष्टं समनःशिलं सकासीसम् ।
तैलेन युक्तमुषितं सप्ताहं भाजने ताम्रे ॥ ७३ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

तेनालिप्तं सिध्मं सप्ताहाद्धर्मसेविनोऽपैति ।
मासान्नवं किलासं स्नानेन विना विशुद्धस्य ॥ ७४ ॥

मरिचादिकं तैलेन युक्तं सप्तदिनानि ताम्रभाजने स्थितं तेन च मरिचादिना सिध्ममालिप्तं घर्मसेविनो नरस्य सप्ताहेनापैति । मासाधस्सद्योत्थितं श्वित्रं नश्यति । स्नानेन विना विशुद्धस्य नरस्य । चतस्र आर्याः । आर्याश्च जघनचपलाः ।

मयूरकक्षारजले सप्तकृत्वः परिस्रुते ।
सिद्धं ज्योतिष्मतीतैलमभ्यंगात्सिध्मनाशनम् ॥ ७५ ॥

अपामार्गक्षारोदके सप्तवारान् परिस्रुते सुवर्णलतातैलं पक्वमभ्यंगेन सिध्मं नाशयति ।

वायसजंघामूलं वमनीपत्राणि मूलकाद्बीजम् ।
तक्रेण भौमवारे लेपः सिध्मापहः सिद्धः ॥ ७६ ॥

काकजंघामूलं वमन्याः पत्रं मूलकबीजं तक्रेणांगारकदिने लेपः सिध्मघ्नः सिद्धः ।

जीवंतीमंजिष्ठादार्वीकंपिल्लकं पयस्तुत्थम् ।
एष घृततैलपाकः सिद्धः सिद्धे च सर्जरसः ॥ ७७ ॥
देयः समधूच्छिष्टो विपादिका तेन नश्यति ह्यक्ता ।
चर्मैककुष्ठकिटिभं कुष्ठं शाम्यत्यलसकं च ॥ ७८ ॥

एष घृततैलपाकः घृततैलाभ्यां पाको यस्य योगस्य स घृततैलपाको गमकत्वात्समासः । सिद्धो निष्पन्नः । सिद्धेऽस्मिन्पाके सर्जरसो मदनेन सह देयः । तेन सिद्धेन योगेन विपादिकाऽभ्यक्ता नश्यति । तथा चर्मैककुष्ठादिकं च शाम्यति । क्षीरमत्रार्कं ग्राह्यं यौगिकत्वाद्वृद्धवैद्यव्यवहाराच्च । आर्यास्तिस्रः ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

मूलंसप्ताह्वात्त्वक्शिरिषाश्वमारादर्कान्मालत्याश्चित्रकास्फोतनिंबात्।
बीजं कारंजं सार्षपं प्रापुनाटं श्रेष्ठा जंतुघ्नं त्र्यूषणं द्वे हरिद्रे ॥७९॥
तैलंतैलं साधितं तैः समूत्रैस्त्वग्दोषाणां दुष्टनाडीव्रणानाम् ।
अभ्यंगेन श्लेष्मवातोद्भवानां नाशायालं वज्रकं वज्रतुल्यम्॥८०॥

सप्तपर्णमूलं शिरीषादीनां त्वक् करंजादीनां बीजं तथा त्रिफलादय एतैर्गोमूत्रसहितैस्तिलतैलं पक्वा वातकफोद्भवानां त्वग्दोषाणां तथा दुष्टनाडीव्रणानामभ्यंगेन नाशाय वज्रकसंज्ञमेतदलं समर्थम् । तथा वज्रतुल्यमव्याहतशक्तित्वात् ।

एरंडतार्क्ष्यघननीपकदंबभार्ङ्गीकंपिल्लवेल्लफलिनीसुरवारुणीभिः ।
निर्गुंड्यरुष्करसुराह्वसुवर्णदुग्धाश्रीवेष्टगुग्गुलुशिलापटुतालविश्वैः ८१
तुल्यस्नुगर्कदुग्धं सिद्धं तैलं स्मृतं महावज्रम् ।
अतिशयितवज्रकगुणं श्वित्रार्शोग्रंथिमालाघ्नम् ॥ ८२ ॥

एरंडादिभिस्तुल्यस्नुगर्कदुग्धमिश्रं तैलं पक्वं महावज्रसंज्ञं स्मृतम् । अतिशयेन वज्रकगुणं श्वित्रादिघ्नम् । वसंततिलके आर्या च ।

कुष्टाश्वमारभृंगार्कमूत्रस्नुक्क्षीरसैंधवैः ।
तैलं सिद्धं विषावापमभ्यंगात्कुष्टजित्परम् ॥ ८३ ॥

कुष्टादिभिः सिद्धं तैलं विषावापमभ्यंगात्परं कुष्टहृत् ।

सिद्धं सिक्थकसिंदूरपुरतुत्थकतार्क्ष्यजैः ।
कच्छूं विचर्चिकां वाऽऽशु कटुतैलं नियच्छति ॥ ८४ ॥

सिक्थकादिभिः पक्वं सर्षपतैलं कच्छ्वादीन्निहंति ।

लाक्षाव्योषं प्रापुनाटं च बीजं सश्रीवेष्टं कुष्टसिद्धार्थकाश्च ।
तक्रोन्मिश्रः स्याद्धरिद्रा च लेपो दद्रुघ्नोक्तो मूलकोत्थं च बीजम् ८५

Indira Gandhi National Centre for the Arts

लाक्षादयो निशा च तक्रोन्मिश्रो दद्रुषु लेप उक्तः । मूलकबीजं च तक्रमिश्रं तद्वत् । शालिनीवृत्तम् ।

चित्रकसोभांजनकौ गुडूच्यपामार्गदेवदारूणी ।
खदिरौ धवश्च लेपः श्यामा दंती द्रवंती च ॥ ८६ ॥

लाक्षारसांजनैलापुनर्नवा चेति कुष्ठिनां लेपाः ।
दधिमंडयुताः पादैः षट् प्रोक्ता मारुतकफघ्नाः ॥ ८७ ॥

चित्रकादयो दधिमंडान्विताः पादैः षड्वातश्लेष्मकुष्टघ्ना गदिताः । तत्र चित्रकसोभांजनकाविह्येको लेपः। गुडूच्यपामार्गदेवदारुणीति द्वितीयः । एवमन्येपि वेद्याः । आर्ये ।

जलवाप्यलोहकेसरपत्रप्लवचंदनमृणालानि ।
भागोत्तराणि सिद्धं प्रलेपनं पित्तकफकुष्टे ॥ ८८ ॥

जलादीनि भागोत्तराणि सिद्धः पित्तकफकुष्टे प्रलेपः । जलं वालकं । वाप्यं कुष्टम् । जघनचपलार्या ।

तिक्तघृतैर्धौतघृतैरभ्यंगो दह्यमानकुष्टेषु ।
तैलैश्चंदनमधुकप्रपौंडरीकोत्पलयुतैश्च ॥ ८९ ॥
क्लेदे प्रपतति चांगे दाहे विस्फोटके च चर्मदले ।
शीताः प्रदेहसेका व्यधनविरेकौ घृतं तिक्तम् ॥ ९० ॥

तिक्तद्रव्यसाधितैर्घृतैस्तथा जलेन धौतैर्घृतैरभ्यंगो दाहयुक्तेषु कुष्टेषु हितः । क्लेदे च प्रकर्षेण पतति सति तैलैश्चंदनादिभिर्युक्तैरभ्यंगः । चशब्दाद्घृतैश्च । प्रकृतत्वाद्धितः । अंगे दाहादिमति शीतप्रदेहसेकास्तिक्तं च घृतं हितम् । व्यधनं सिराव्यधः ।

खदिरवृषनिंबकुटजाः श्रेष्ठाः कृमिजित्पटोलमधुपर्ण्यः ।
अंतर्बहिःप्रयुक्ताः कृमिकुष्टनुदः सगोमूत्राः ॥ ९१ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

खदिरादयो गोमूत्रान्विता अभ्यंतरं बाह्यतश्च युक्ताः 'कृमियुतकुष्टहृतः ।

वातोत्तरेषु सर्पिर्वमनं श्लेष्मोत्तरेषु कुष्टेषु ।
पित्तोत्तरेषु मोक्षो रक्तस्य विरेचनं चाग्र्यम् ॥ ९२ ॥

वाताधिकेषु कुष्टेषु घृतमग्रे पूर्वं हितम् । श्लेष्माधिकेषु च वमनम् । पित्तोत्तरेषु रक्तमोक्षो विरेचनं चाग्रे हितम् ।

ये लेपाः कुष्टानां युज्यंते निर्हृतास्रदोषाणाम् ।
संशोधिताशयानां सद्यः सिद्धिर्भवति तेषाम् ॥ ९३ ॥

निर्हृतास्रदोषाणां तथा संशोधिताशयानां कुष्टानां ये लेपा युज्यंते तेषां सद्यः शीघ्रमेव सिद्धिरामयनिवृत्तिर्भवति । अत एवेदमाह ।

दोषे हृतेऽपनीते रक्ते बाह्यांतरे कृते शमने ।
स्नेहे च कालयुक्ते न कुष्टमतिवर्तते साध्यम् ॥ ९४ ॥

दोषे वातादौ हृते रक्तेऽपनीते बाह्येऽभ्यंतरे शमने कृते स्नेहे कृते च काले युक्ते कुष्टं साध्यं नातिवर्तते । अपितूपशाम्यति । आर्या षट् । अन्यत्र बधनचपलाः ।

बहुदोषः संशोध्यः कुष्टी बहुशोनुरक्षता प्राणान् ।
दोषे ह्यतिमात्रहृते वायुर्हन्यादबलमाशु ॥ ९५ ॥

बहुदोषः कुष्टी प्राणान् रक्षता भिषजा पुनः पुनः संशोध्यः । एकहेलयैव कस्मान्न शोध्यत इत्याह । यस्माद्दोषेऽतिमात्रहृते सत्यबलं नरं वातो द्रागेव हन्यात् । आर्या ।

पक्षात्पक्षाच्छर्दनान्यभ्युपेयान्मासान्मासाच्छोधनान्यप्यधस्तात् ।
शुद्धिर्मूर्ध्निस्यात्त्रिरात्रात्त्रिरात्रात्षष्ठे षष्ठे मास्यसृग्मोक्षणानि ॥ ९६ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

असौ कुष्ठी पक्षेण वमनानि सेवेत । मासान्मासादधःशोधनानि भजेत्। शिरसि त्रिरात्रे त्रिरात्रे शुद्धिः स्यात् । षष्ठे मासि रक्तमोक्षश्च स्यात् ।

यो दुर्वांतो दुर्विरिक्तोथवा स्यात्कुष्ठी दोषैरुद्धतैर्व्याप्यतेऽसौ ।
निःसंदेहं यात्यसाध्यत्वमेवं तस्मात्कृत्स्नान्निर्हरेदस्य दोषान्९७

यः कुष्ठी कृतासम्यग्वमनविरेचनः स्यात् । असावुद्धतैर्दोषैर्व्याप्यते । एवं निश्चयेनासाध्यत्वं याति । तस्माद्धेतोरस्य कुष्ठिनः कृत्स्नान्निखिलान् दोषान्निर्हरेत् । शालिनीवृत्तम् ।

व्रतदमयमसेवात्यागशीलाभियोगो
द्विजसुरगुरुपूजा सर्वसत्त्वेषु मैत्री ।
शिवशिवसुतताराभास्कराराधनानि
प्रकटितमलपापं कुष्ठमुन्मूलयंति ॥ ९८ ॥

व्रतादिसेवात्यागाद्यभ्यासो द्विजादिपूजा सर्वसत्त्वमैत्री शिवाद्याराधनानि कुष्ठं प्रकटितमलपापं नाशयंति । मालिनीवृत्तम् ।

इति श्रीमृगांकदत्तपुत्रारुणदत्तविरचितायामष्टांगहृदयटीकायां चिकित्सास्थाने कुष्ठचिकित्सितं नामैकोनविंशोऽध्यायः ॥ १९ ॥

विंशोऽध्यायः ।

अस्मादनंतरं श्वित्रकृमिचिकित्सितं व्याख्यायते ॥

अथातः श्वित्रकृमिचिकित्सितं व्याख्यास्यामः ।

चिकित्सासाम्यमाह ।

कुष्ठादपि बीभत्सं यच्छीघ्रतरं च यात्यसाध्यत्वम् ।
श्वित्रमतस्तच्छांत्यै यत्रेत दीप्ते यथा भवने ॥ १ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

यद्यस्मात्कुष्टादपि बीभत्सं जुगुप्सितं निंद्यं तथा शीघ्रतरमसाध्यत्वं श्वित्रं याति। अतोऽस्माद्धेतोस्तस्य श्वित्रस्य शमाय यत्नं कुर्वीत्। यथा ज्वलिते गृहे। आर्या।

संशोधनं विशेषात्प्रयोजयेत्पूर्वमेव देहस्य।
श्वित्रे स्रंसनमग्र्यं मलयूरस इष्यते सगुडः॥ २॥
तं पीत्वा भ्यक्ततनुर्यथाबलं सूर्यपादसंतापम्।
सेवेत विरिक्ततनुस्त्र्यहं पिपासुः पिबेत्पेयाम्॥ ३॥

प्रथममेव शरीरस्य संशोधनं विशेषेण प्रयोजयेत्। तदेवाह। श्वित्रे मलयूरसो वाकूचिकाक्वाथः सह गुडया स्नुह्या सगुडो विरेचनमिष्यते। मुखचपला। तं क्वाथं पीत्वाऽभ्यक्तशरीरः सन् यथाशक्ति सूर्यकिरणसंतापं भजेत्। विरिक्तश्च सन् पिपासितः पेयां त्रीणि दिनानि पिबेत्।

श्वित्रेऽगे ये स्फोटा जायन्ते कंटकेन तान् भिंद्यात्।
स्फोटेषु निस्रुतेषु तु प्रातः प्रातः पिबेत् त्रिदिनम्॥ ४॥
मलयुमसनं प्रियंगूं शतपुष्पां चांभसा समुत्क्वाथ्य।
पालाशं वा क्षारं यथाबलं फाणितोपेतम्॥ ५॥

श्वित्रे साभ्यंगे ये स्फोटा उद्भवन्ति तांस्फोटकान् कंटकेन भिंद्यात्। स्फोटेषु निस्रुतेषु सत्सु प्रातः प्रातस्त्रीणि दिनानि मलयादीनि समुत्क्वाथ्य पिबेत्। पालाशं वा क्षारं फाणितयुक्तं यथाशक्ति पिबेत्। तिस्र आर्याः।

फल्ग्वक्षवृक्षवल्कलनिर्यूहेणेंदुराजिकाकल्कम्॥
पीत्वोष्णस्थितस्य जाते स्फोटे तक्रेण भोजनं निर्लवणम्॥६॥

फल्गो अक्षस्य च त्वचो निर्यूहः क्वाथस्तेन बाकूच्याः कल्कं पीत्वा उष्ण आतपे स्थितस्य स्फोटेषु जातेषु सत्सु तक्रेण सह भोजनं निर्लवणं हितम्। आर्यागीतिः।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

गव्यं मूत्रं चित्रकव्योषयुक्तं सर्पिःकुंभे स्थापितं क्षौद्रमिश्रम् ।
पक्षादूर्ध्वं श्वित्रिभिः पेयमेतत्कार्यं चास्मै कुष्ठदृष्टं विधानम् ॥७॥

गोमूत्रं चित्रकादियुक्तं माक्षीकान्वितं घृतकुंभे स्थापितं पक्षं यावत् पक्षादूर्ध्वं श्वित्रवेता तत्पेयं। अस्मै च श्वित्रिणे कुष्ठोक्तं विधानं। अस्मै इति क्रियाग्रहणात्संप्रदानत्वं।

मार्कवमथवा खादेद्भृष्टं तैलेन लोहपात्रस्थम् ।
बीजकसृतं च दुग्धं तदनुपिबेच्छ्वित्रनाशाय ॥ ८ ॥

भृंगराजं वा तैलेन भ्रष्टं लोहपात्रस्थं खादेत्। भुक्त्वा च पश्चाद्बीजकसृतं क्षीरं श्वित्रशांत्यै पिबेत्। आर्या।

पूतीकार्कव्याधिघातस्नुहीनां मूत्रे पिष्टाः पल्लवा जातिजाश्च ।
घ्नंत्यालेपाच्छ्वित्रदुर्नामदद्रूपामाकोठान्दुष्टनाडीव्रणांश्च ॥ ९ ॥

पूतिकादीनां पल्लवा गोमूत्रेण पिष्टास्तथा जातिपल्लवा गोमूत्रपिष्टाः प्रलेपतः श्वित्रादीन् घ्नंति।

द्वैपं दग्धं चर्म मातंगजं वा श्वित्रे लेपस्तैलयुक्तो वरिष्ठः ॥

द्वीपिसंबंधि चर्म दग्धं हस्तिजं च चर्म दग्धं तैलान्वितो लेपः श्वित्रेऽतिशयेन वरः।

पूतिःकीटो राजवृक्षोद्भवेन क्षारेणाक्तः श्वित्रमेकोपि हन्ति॥ १०

पूतिःकीटो राजवृक्षजेन क्षारेण लेपत एक एव श्वित्रं हंति। पूतिःकीटो वर्षाकालोद्भवः। पिलिंदिकेति लोके प्रसिद्धः। शालिन्यौवृत्ते।

रात्रौ गोमूत्रे चासितान् जर्जरांगानन्हिच्छायायां शोषयेत्स्फोटहेतून्।
एवं वारांस्त्रींस्तैस्ततःश्लक्ष्णपिष्टैःस्नुह्या क्षीरेण श्वित्रनाशाय लेपः ११

स्फोटहेतून् भल्लातकान् जर्जरीकृतान्निशि गोमूत्रे स्थितान् दिवसे छा-

Indira Gandhi National Centre for the Arts

यायां शोषयेत् । एवं त्रीन् वारान्मूत्रस्थितांश्छोषयेत् । शोषितांश्च ततोनंतरं तैः स्नुहीक्षीरेण श्लक्ष्णपिष्टैः श्वित्रशांत्यै लेपः । वैश्वदेवी ।

अक्षतैलकृतो लेपः कृष्णसर्पोद्भवा मषी ।
शिखिपित्तं तथा दग्धं ह्रीवेरं वा तदाप्लुतम् ॥ १२ ॥

कृष्णसर्पजा मषी ह्यक्षतैलेन द्रुतो लेपो मयूरपित्तलेपश्च पूर्वगुणः । अथवा ह्रीबेरं दग्धं तेनाक्षतैलेनालोडितं लेपस्तद्वत् ।

कुडवो वल्गुजबीजाद्धरितालचतुर्थभागसंमिश्रः ।
मूत्रेण गवां पिष्टः सवर्णकरणं परं श्वित्रे ॥ १३ ॥

बाकूचीबीजं पलचतुष्टयम् । हरितालपलं गोमूत्रेण पिष्टं श्वित्रे सवर्णकरं स्यात् । आर्या ।

क्षारे सुदग्धे गजलिंडजे च गजस्य मूत्रेण परिस्रुते च ।
द्रोणप्रमाणे दशभागयुक्तं दत्त्वा पचेद्बीजमवल्गुजानाम् ॥ १४ ॥
श्वित्रं जयेच्चिक्कणतांगतेन तेन प्रलिंपन्बहुशः प्रघृष्टम् ।
कुष्टं मषीं वा तिलकालकं वा यद्वा व्रणे स्यादधिमांसजातम् ॥ १५ ॥

गजपुरीषजे क्षारे सुदग्धे द्रोणप्रमाणे यथाप्रमाणं गजस्य मूत्रेण क्षारविधिना परिस्रुतेऽस्मिन्बाकूचीबीजं दत्त्वा पचेत् । किंभूतम् । दशभागयुक्तम् । दशभिर्भागैः प्रकृतत्वात् क्षारस्य संबंधिभिर्मिश्रितं तेन चिक्कणतां गतेन पुरुषो बहुशः प्रघृष्टं श्वित्रं प्रलिंपन् जयेत् । कुष्टादींश्चाधिमांसरूपता यच्च व्रणे स्यात्तच्च जयेत् । उपजाती ।

भल्लातकद्वीपिसुधार्कमूलं गुंजाफलं त्र्यूषणशंखचूर्णम् ।
तुत्थं सकुष्टं लवणानि पंच क्षारद्वयं लांगलिकां च पक्त्वा ॥ १६ ॥
स्नुगर्कदुग्धे घनमायसस्थं शलाकया तद्विदधीत लेपम् ।
कुष्टे किलासे तिलकालकेषु मषेषु दुर्नामसु चर्मकीले ॥ १७ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

शुध्द्या शोणितमोक्षैर्विरूक्षणैर्भक्षणैश्च सक्तूनाम् ।
श्वित्रं कस्यचिदेव प्रशाम्यति क्षीणपापस्य ॥ १८ ॥

भल्लातकादिकं स्नुम्र्कयोर्दुग्धे पक्का घनमायसपात्रस्थितं तदेतच्छलाकया लेपं कुष्टादिषु विदधीत । इंद्रवज्रोपजाती । श्वित्रं कस्यचिदेव नरस्य क्षीणकलुषस्य शुध्यादिभिः श्याम्यति । आर्या ।

इति श्वित्रचिकित्सा ।

अस्मादनंतरं क्रमिचिकित्सितं व्याख्यायते चिकित्सासामान्यात् ।

स्निग्धस्विन्ने गुडक्षीरमत्स्याद्यैः क्रमिणोदरे ।
उत्क्लेशितक्रमिकफे शर्वरीं तां सुखोषिते ॥ १९ ॥
सुरसादिगणं मूत्रे क्वाथयित्वार्धवारिणि ।
तं कषायं कणागालक्रमिजित्कल्कयोजितम् ॥ २० ॥
सतैलस्वर्जिकाक्षारं युंज्याद्बस्तिं ततोहनि ।
तस्मिन्नेव निरूढं तं पाययेत विरेचनम् ॥ २१ ॥
त्रिवृत्कल्कं फलकणाकषायालोडितं ततः ।
ऊर्ध्वाधः शोधिते कुर्यात्पंचकोलयुतं क्रमम् ॥ २२ ॥
कटुतिक्तकषायाणां कषायैः परिषेचनम् ।
काले विडंगतैलेन ततस्तमनुवासयेत् ॥ २३ ॥

क्रमिणमुदरं यस्येति पामादित्वादन्प्रत्ययः । तस्मिन् क्रमिणोदरे स्निग्धस्विन्ने तथा गुडादिभिरुत्क्लेशिताः स्वस्थानाच्च्याविताः क्रमयः कफश्च यस्य तस्मिंस्तथाभूते उदरे तथा समुत्क्लेशितादनंतरं तां रात्रिं सुखोषिते सति सतैलस्वर्जिकाक्षारं बस्तिं युंज्यात् । कथमित्याह । सुरसादिगणं गोमूत्रेऽर्धवारिणि क्वाथयित्वा ततस्तं कषायं कणादीनां कल्केन योजितं मिश्रं कृत्वा । ततो निरूहादनंतरं तस्मिन्नेवाहनि तं निरूढं विरेचनं त्रिवृत्कल्कं फलादिकषायालोडितं पाययेत् । ततोनंतरमूर्ध्वाधः शोधिते

Indira Gandhi National Centre for the Arts

तस्मिन् पंचकोलयुतं क्रमं पेयाविलेप्यादिकं कुर्यात् । ततः कुट्वादिभिः कषायैः परिषेचितं समनंतरं यदा संधुक्षितोऽग्निस्तदा तस्मिन्काले विडंगतैलेन तमनुवासयेत् ।

शिरोरोगनिषेधोक्तमाचरेन्मूर्धगेष्वनु ।
उद्रिक्ततिक्तकटुकमल्पस्नेहं च भोजनम् ॥ २४ ॥

शिरोरोगप्रतिषेधे यदुक्तं तन्मूर्ध्वगेषु कृमिष्वाचरेत् । अनु पश्चात् प्रभूततिक्तकटुकमल्पस्नेहं च भोजनमाचरेत् ।

विडंगकृष्णामरिचपिप्पलीमूलशिग्रुभिः ।
पिबेत्ससर्जिकाक्षारं यवागूं तक्रसाधिताम् ॥ २५ ॥

तथा विडंगादिभिस्तक्रसाधितां पेयां पिबेत् ।

रसं शिरीषकिणिहीपारिभद्रककेंबुकात् ।
पलाशबीजपत्तूरपूतिकाद्वा पृथक् पिबेत् ॥ २६ ॥
सक्षौद्रं सुरसादीन्वा लिह्यात्क्षौद्रयुतान् पृथक् ।

शिरीषादिरसं पिबेत् । किणिही गिरिकर्णिका । पलाशबीजादीनां वा रसं माक्षिकान्वितं पृथक् पिबेत् । अथवा सुरसादीन् क्षौद्रयुतान् पृथग् लिह्यात् ।

शतकृत्वोऽश्वविट्चूर्णं विडंगक्वाथभावितम् ॥ २७ ॥
कृमिमान्मधुना लिह्याद्भावितं वा वरारसैः ।

अश्वपुरीषचूर्णं बहून् वारान् विडंगक्वाथेन भावितमथवाऽश्वशकृच्चूर्णं त्रिफलाक्वाथेन साधितं मधुना कृमिमाल्लिह्यात् ।

शिरोगतेषु कृमिषु चूर्णं प्रधमनं च तत् ॥ २८ ॥

शिरोगतेषु कृमिषु तच्छिरोरोगनिषेधोक्तं चूर्णं प्रधमनं नस्यं वा चरेत् ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

आखुकर्णीकिसलयैः सुपिष्टैः पिष्टमिश्रितैः ।
पक्त्वा पूपलिकां खादेद्धान्याम्लं च पिबेदनु ॥ २९ ॥
सपंचकोललवणमसांद्रं तक्रमेव वा ।

तथा मूषीककर्णीपल्लवैः सूक्ष्मचूर्णितैः शालिचूर्णमिश्रितैः पूपलिकां पक्त्वा खादेत्तदनुपश्चाच्च धान्याम्लं पिबेत् । अथवा तक्रं मथितं पंचकोललवणयुतं पिबेत् ।

नीपमार्कवनिर्गुंडीपल्लवेष्वप्ययं विधिः ॥ ३० ॥
विडंगचूर्णमिश्रैर्वा पिष्टैर्भक्ष्यान् प्रकल्पयेत् ।

नीपादिष्वयमेव पूर्वोक्तो मूषिकपर्णीपल्लवविधिः कल्प्यः । अथवा पिष्टैर्विडंगचूर्णमिश्रितैर्भक्ष्यान् प्रकल्पयेत् ।

विडंगतंडुलैर्युक्तमर्धांशैरातपस्थितम् ॥ ३१ ॥
दिनमारुष्करं तैलं पाने बस्तौ च योजयेत् ।
सुराह्वसरलस्नेहं पृथगेवं प्रकल्पयेत् ॥ ३२ ॥

अरुष्करजं तैलं पाने बस्तौ च योजयेत् । किंभूतम् । अर्धभागप्रमाणैर्विडंगतंडुलैर्मिश्रितं तथा दिनमातपस्थितम् । दिनमित्यंतसंयोगे द्वितीया । देवदार्वादितैलं पृथगेवं विडंगतंडुलान्वितमातपस्थितं कल्पयेत् ।

पुरीषजेषु सुतरां दद्याद्बस्तिविरेचने ।

पुरीषजेषु कृमिषु सुतरां बस्तिं विरेचनं च स्यात् ।

शिरोविरेकं वमनं शमनं कफजन्मसु ॥ ३३ ॥

कफजन्मसु कृमिषु शिरोविरेकं नस्यं वमनं शमनं च कुर्यात् ।

रक्तजानां प्रतीकारं कुर्यात्कुष्टचिकित्सितात् ।
इंद्रलुप्तविधिश्चात्र विधेयो रोमभोजिषु ॥ ३४ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

रक्तोत्थानां क्रमीणां कुष्टचिकित्सितात्प्रतीकारं विदध्यात् । ल्यबूलोपे पंचमी । कुष्टचिकित्सितोक्तमपेक्ष्येत्यर्थः । रोमभोजिषु क्रमिष्विंद्रलुप्तविधिरुत्तरे वक्ष्यमाणशिरोरोगप्रतिषेधः कार्यः ।

क्षीराणि मांसानि घृतं गुडं च दधीनि शाकानि च पर्णवंति ।
समासतोम्लान्मधुरान् रसांश्च क्रमीन् जिहासुः परिवर्जयेच्च॥३९॥

क्रमीन् जिहासुः क्षीरादीन् वर्जयेत् । उपजातिवृत्तम् ।

इति श्रीमदरुणदत्तविरचितायां सर्वांगसुंदराख्यटीकायां चिकित्सितस्थाने श्वित्रक्रमिचिकित्सितं नाम विंशोऽध्यायः ॥ २० ॥

एकविंशोऽध्यायः ।

अस्मादनंतरं वातव्याधिचिकित्सितं व्याख्यातुमुपक्रम्यते । सर्वचिकित्साबाधितत्वात् ।

अथातो वातव्याधिचिकित्सितं व्याख्यास्यामः ॥

केवलं निरुपस्तंभमादौ स्नेहैरुपाचरेत् ।
वायुं सर्पिर्वसामज्जातैलपानैर्नरं ततः ॥ १ ॥
स्नेहाक्रांतं समाश्वास्य पयोभिः स्नेहयेत्पुनः ।
यूषैर्ग्राम्योदकानूपरसैर्वा स्नेहसंयुतैः ॥ २ ॥
पायसैः कृसरैः साम्ललवणैः सानुवासनैः ।
वातघ्नैस्तर्पणैश्चान्नैः सुस्निग्धैः स्वेदयेत्ततः ॥ ३ ॥
स्वभ्यक्तं स्नेहसंयुक्तैः संकराद्यैः पुनः पुनः ।

केवलं शुद्धं तथा निरुपस्तंभमन्येनाधानकेन समीपसंभविनाऽनाधारितमीदृशं वायुं स्नेहैरादावेवोपाचरेत् । कथमित्याह । सर्पिरित्यादि । ननु तैलस्य पवनविजये प्राधान्यादेवं निर्देशः कर्तुं युक्तः । तैलवसामज्जासर्पिः-

Indira Gandhi National Centre for the Arts

पानैरिति । युक्तमाह भवान् । किंत्वाजन्मसात्म्यात्सर्पिःप्रधानमनवरतमिति सर्पिः प्रागुपन्यस्तम् । सर्पिःपानादिभिस्तावत्स्नेहयेत् । यावत्स्नेहोद्वेगः क्रम इत्यादिस्नेहलक्षणं स्यात् । स्नेहाक्रांतं च नरं पयोभिः समाश्वास्य पुनःपुनर्यूषादिभिः स्नेहान्वितैः स्नेहयेत् । तथा तर्पणैश्चान्नैः सुस्निग्धैः स्नेहयेत् । ततोनंतरं सुष्ठ्वभ्यक्तं संतं शंकराद्यैः स्वेदैः स्वेदविधिगदितैः पुनःपुनः स्वेदयेद् । एवं स्वेदिते सति यो गुणः स्यात्तमाह ।

स्नेहाक्तं स्विन्नमंगं तु वक्रं स्तब्धं सवेदनम् ॥ ४ ॥
यथेष्टमानामयितुं सुखमेव हि शक्यते ।

स्नेहाभ्यक्तं गात्रं स्विन्नं सद्वक्रं स्तब्धं च तथा सरुजं यथेष्टं सुखमेवानामयितुं शक्यते । ग्लहृलसंचल्नेऽनुपसर्गाणां वामिनुमीप्रति नामयितुमित्यत्र न ह्रस्वत्वं । एतदेव दृष्टांतद्वारेण प्रतिपादयन्नाह ।

शुष्काण्यपि हि काष्ठानि स्नेहस्वेदोपपादनैः ॥ ५ ॥
शक्यं कर्मण्यतां नेतुं किमु गात्राणि जीवताम् ।

हि यस्माच्छुष्काण्यपि काष्ठानि स्नेहस्वेदसंयोजनेन कर्मण्यतां नेतुं शक्यन्ते । किं पुनर्जीवतां गात्राणि न शक्यंते । शक्यंत एवेत्यर्थः । शक्यमिति पूर्वोक्तक्रममात्रे नपुंसकत्वमेकत्वं वा । यथा कालिदासस्य । शक्यमंगुलिभिरुद्धृतैरधः शाखिनां पतितपुष्पकोमलैः । पत्रजर्जरशशिप्रभालवैरेभिरुत्कचयितुं तवालकानिति ।

हर्षतोद्गरुगायामशोफस्तंभग्रहादयः ॥ ६ ॥
स्विन्नस्याशु प्रशाम्यंति मार्दवं चोपजायते ।

स्विन्नस्य पुंसो हर्षादयः शीघ्रं प्रशाम्यंति मृदुत्वं च गात्रेषु जायते ।

स्नेहश्च धातून् संशुष्कान् पुष्णात्याशु प्रयोजितः ॥ ७ ॥
बलमग्निबलं पुष्टिं प्राणं चास्याभिवर्धयेत् ।

तथा स्विन्नस्य स्नेह उपयोजितो धातून् विशुष्कान् द्रागेव पुष्णाति तथाऽस्य वातरोगिणो बलादीनभिवर्धयेत् ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

असक्तं पुनः स्नेहैः स्वेदैश्च प्रतिपादयेत् ॥ ८ ॥
तथा स्नेहमृदौ कोष्ठे न तिष्ठंत्यनिलामयाः ।

तमातुरं पुनः स्नेहस्वेदाभ्यां योजयेत् । तथैवं कृते स्नेहमृदौ कोष्ठे सति सर्वे वातरोगा नश्यंति ।

यद्येतेन सदोत्थात्कर्मणा न प्रशाम्यति ॥ ९ ॥
मृदुभिः स्नेहसंयुक्तैर्भेषजैस्तं विशोधयेत् ।

अनेन कर्मणा चेन्न शाम्यति वातामयस्तदा तं वातामयिनं मृदुभिर्द्रव्यैः कर्णिकारादिभिः स्नेहान्वितैर्विशोधयेत् ।

घृतं तिल्वकसिद्धं वा सातलासिद्धमेव वा ॥ १० ॥
पयसैरंडतैलं वा पिबेद्दोषहरं शिवम् ।

तिल्वकेन पक्वं सातलया वा पक्वं क्षीरेण वा सहैरंडतैलं पिबेत् । तच्च पीतं दोषहरं शिवं च स्यात् । ननु किमित्यनुलोमनं क्रियत इत्याह ।

स्निग्धाम्ललवणोष्णाद्यैराहारैर्हि मलश्चितः ॥ ११ ॥
स्रोतो रुध्वाऽनिलं रुध्यात्तस्मात्तमनुलोमयेत् ।

यस्मात्स्निग्धादिभिराहारैर्मलश्चितः स्रोतांसि रुध्वा वायुं रुध्यात् । तस्मान्मारुतमनुलोमयेत् ।

दुर्बलो यो विरेच्यः स्यात्तं निरूहैरुपाचरेत् ॥ १२ ॥
दीपनैः पाचनीयैर्वा भोज्यैर्वा तद्युतैर्नरम् ।
संशुद्धस्योत्थिते चाग्नौ स्नेहस्वेदौ पुनर्हितौ ॥ १३ ॥

यो नरो दुर्बलो विरेचनार्हो भवेत्तं नरं निरूहैरुपाचरेत् । किंभूतैः । दीपनैः पाचनीयैश्च । अथवा तद्युक्तैर्दीपनीयपाचनीययुतैर्भोज्यैरुपाचरेत् । अनंतरं सम्यक्शुद्धस्य वन्हावुत्थिते सति पुनरपि स्नेहस्वेदौ हितौ ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

आमाशयगते वायौ वमितप्रतिभोजिते ।
सुखांबुना षट्चरणं वचादिं वा प्रयोजयेत् ॥ १४ ॥
संधुक्षितेऽग्नौ परतो विधिः केवलवातिकः ।
मत्स्यान्नाभिप्रदेशस्थे सिद्धान्बिल्वशलाटुभिः ॥ १५ ॥

आमाशयगते वाते सति तथा वमितश्चासौ प्रतिभोजितश्च तस्मिन्वमिते प्रतिभोजिते नरे उष्णजलेन षट्चरणं वचादिगणं प्रयोजयेत् । षट्चरणयोगः संग्रहादेवावगंतव्यः । तत्रैवं पठ्यते । दार्वीकलिंगकटुकातिविषाभिपाठामूत्रेण सूक्ष्मरजसा धरणप्रमाणाः । पीता जयंति गुदजोदरकुष्ठमेहकोष्ठानिलाढ्यपवनग्रहणीप्रदोषानिति । धरणं पलस्य दशमो भागः । अग्नौ संदीपिते सति तत्परं केवलं वातिको विधिः कार्य इति शेषः । नाभिप्रदेशस्थे वाते मत्स्यान् बिल्वशलाटुभिः सिद्धान् योजयेत् ।

बस्तिकर्म त्वधोनाभेः शस्यते चावपीडकः ।

अधोनाभेः स्थिते वातेऽवपीडकः शस्यते । चशब्दान्मत्स्याश्च ।

कोष्टगे क्षारचूर्णाद्या हिताः पाचनदीपनाः ॥ १६ ॥

कोष्टगे वायौ क्षाराद्याः पाचना दीपनाश्च हिताः ।

हृत्स्थे पयः स्थिरासिद्धम्

हृदयस्थिते समीरणे क्षीरं शालिपर्ण्या शृतं हितम् ।

शिरोबस्तिः शिरोगते ।
स्नैहिकं नावनं धूमः श्रोत्रादीनां च तर्पणम् ॥ १७ ॥

शिरोगते तु शिरोबस्तिः शस्यते । स्नेहिकं नस्यं तथा धूमः कर्णादितर्पणं च हितम् ।

स्वेदाभ्यंगनिवातानि हृद्यं चान्नं त्वगाश्रिते ।

त्वक्स्थे मरुति स्वेदादीनि हितानि । हृदयप्रियं चान्नं च हितम् ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

शीताः प्रदेहा रक्तस्थे विरेको रक्तमोक्षणम् ॥ १८ ॥

रक्तस्थे मरुति शीताः प्रदेहा रक्तमोक्षणं च हितम्।

विरेको मांसमेदस्थे निरूहाः शमनानि च।

मांसमेदःस्थिते वायौ विरेकस्तथा निरूहाः शमनानि च हितानि।

बाह्याभ्यंतरतः स्नेहैरस्थिमज्जागतं जयेत् ॥ १९ ॥

अस्थिमज्जास्थं मारुतं बाह्याभ्यंतरतः स्नेहैर्जयेत्।

प्रहर्षोऽन्नं च शुक्रस्थे बलशुक्रकरं हितम्।

शुक्रस्थे समीरणे प्रहर्षणं तथा बलशुक्रकारि चान्नं हितम्।

विबद्धमार्गं दृष्ट्वा तु शुक्रं दद्याद्विरेचनम् ॥ २० ॥
विरिक्तं प्रतिभुक्तं च पूर्वोक्तां कारयेत्क्रियाम्।

शुक्रं च रुद्धमार्गं दृष्ट्वा विरेकं च स्यात्। विरिक्तं प्रतिभुक्तं च नरं पूर्वोदितां क्रियां कारयेत्। द्वयोरन्यतरस्यामितिप्रतिभुक्तस्यापिकर्मत्वम्।

गर्भे शुष्के तु वातेन बालानां च विशुष्यताम् ॥ २१ ॥
सिताकाश्मर्यमधुकैः सिद्धमुत्थापने पयः।

वातेन गर्भे शुष्के सति बालानां च विशुष्यतां शर्करादिभिः सिद्धं क्षीरमुत्थापने हितम्।

स्नावसंधिशिरोप्राप्ते स्नेहदाहोपनाहनम् ॥ २२ ॥

स्नावादिप्राप्ते स्नेहदाहोपनाहनं हितम्।

तैलं संकुचितेऽभ्यंगो माषसैंधवसाधितम्।

संकुचितेऽगे सति माषसैंधवसाधितं तैलमभ्यंगः।

आगारधूमलवणतैलैर्लेपः स्नुतेऽसृजि ॥ २३ ॥
सुप्तेऽगे वेष्टयुक्ते तु कर्त्तव्यमुपनाहनम्।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

रक्ते स्रुते सत्यागारधूमादिभिर्लेपः । सुप्ते गात्रे तथा वेष्टनयुक्ते चोपनाहः कार्यः । उत्क्षेपकादीनामसाध्यान्महात्ययत्वादपतानकस्य तावच्चिकित्सामाह ।

अथापतानकेनार्तमस्रस्ताक्षमवेपनम् ॥ २४ ॥
अस्तब्धमेढ्रमस्वेदं बहिरायामवर्जितम् ।
अखट्वाघातिनं चैनं त्वरितं समुपाचरेत् ॥ २५ ॥

अथानंतरं वातव्याधयः संज्ञानिर्दिष्टाः प्रस्तूयंते । एनमपतानकार्तं नरमस्रस्ताक्षादियुक्तं यावदखट्वाघातिनं च त्वरितं कृत्वोपक्रमेत् ।

तत्र प्रागेव सुस्निग्धं स्विन्नांगे तीक्ष्णनावनम् ।
स्रोतोविशुद्धये युंज्यादच्छपानं ततो घृतम् ॥ २६ ॥
विदार्यादिगणक्वाथदधिक्षीररसैः शृतम् ।
नातिमात्रं तथा वायुर्व्याप्नोति सहसैव च ॥ २७ ॥

तस्मिन्नपतानकार्ते नरे पूर्वमेव च सुष्टुस्निग्धांगे स्विन्नांगे च तीक्ष्णं नस्यं त्रिकटुकादिना स्रोतोविशुद्धये योज्यं । ततोनंतरमच्छपानं घृतं युंजीत । कतरदित्याह । विदार्यादिगणसृतम् । घृताद्विदार्यादिगणक्वाथश्चतुर्गुणो दधिक्षीररसाः सर्पिःसमा ग्राह्याः । तथा एवं कृते सति मारुतोऽतिमात्रं न व्याप्नोति । सहसा झटित्येव च नाश्नुते ।

कुलत्थयवकोलानि भद्रदार्वादिकं गणम् ।
निःक्वाथ्यानूपमांसं च तेनाम्लैः पयसापि च ॥ २८ ॥
स्वादु स्कंधप्रतीवापं महास्नेहं विपाचयेत् ।
सेकाभ्यंगावगाहान्नपानस्यानुवासनैः ॥ २९ ॥
संहंति वातं ते ते च स्नेहस्वेदाः सुयोजिताः ।

कुलत्थादीनानूपमांसं च निःक्वाथ्यैतेन क्वाथेनाम्लैर्धान्याम्लादिभिः स्वादुस्कंधकृतकल्कं महास्नेहं विपाचयेत् । स महास्नेहो वातं हंति । ते ते च पूर्वोक्ताः स्नेहाः स्वेदाः सम्यग्योजिताः पवनं घ्नंति ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

वेगांतरेषु मूर्धानमसकृच्चास्य रेचयेत्॥ ३० ॥
अवपीडैः प्रधमनैस्तीक्ष्णैः श्लेष्मनिबर्हणैः ।
श्वसनासु विमुक्तासु तथा संज्ञां स विंदति ॥ ३१ ॥

वेगांतरेषु वेगांतरालेषु मूर्धानमसकृद्बहून् वारान् रेचयेत् । कैरित्याह । अवपीडैः । कल्काद्यैरवपीडस्तु सतीक्ष्णैर्मूर्धरेचन इत्युक्तैः । तथा प्रधमनैर्ध्मानं विरेचनैश्चूर्णैर्युंज्यादित्युक्तैः । एतैश्च तीक्ष्णैस्तीक्ष्णद्रव्यैकृतैरतएव श्लेष्मनाशनैः । एवं कृते सति श्वसनासु श्लेष्मविमुक्तासु संज्ञां चेतनां स रोगी लभते । प्राणनाड्यो हृदाश्रिताः श्वसना इत्युच्यंते ।

सौवर्चलाभयाव्योषसिद्धं सर्पिश्चलेऽधिके ।

वायावधिके सौवर्चलादिभिः कल्कीकृतैः सिद्धं सर्पिर्हितम् ।

पलाष्टकं तिल्वकतो वरायाः प्रस्थं पलांशं गुरुपंचमूलम् ॥३२
सैरंडसिंहीत्रिवृतं घटेऽपां पक्त्वा पचेत्पादसृतेन तेन ।
दध्नः पात्रे यावशूकात्त्रिबिल्वैः सर्पिः प्रस्थं हंति तत्सेव्यमानम् ।
दुष्टान्वातानेकसर्वांगसंस्थान्योनिव्यापद्गुल्मवर्ध्मोदरं च ॥३३॥

तिल्वकतो लोध्रात् पलाष्टकं त्रिफलायाः प्रस्थं महत्पंचमूलं पृथक् पलभागं । किंभूतं पंचमूलम् । एरंडव्याघ्रीत्रिवृताभिर्युक्तम् । एतेऽपि पलांशा इत्यर्थः । जलद्रोणे पचेत् । तेन च पादावशेषेण तथा दध्न आढके यवक्षारपलैस्त्रिभिर्घृतप्रस्थं पचेत् । एतच्च घृतं सेव्यमानं दुष्टवातादीन्हंति । उपजातिशालिन्यौ वृत्ते ।

विधिस्तिल्वकवज्ज्ञेयो शम्याकाशोकयोरपि ।

तिल्वकस्येव तिल्वकवन्महानिंबस्याशोकस्य विधिर्ज्ञेयः ।

चिकित्सितमिदं कुर्याच्छुद्धवातापतानके ॥ ३४ ॥
संसृष्टदोषे संसृष्टं

एवमुपक्रमं शुद्धवातापतानके कुर्यात् । संसृष्टदोषे संसृष्टं दोषद्वयोक्तं चिकित्सितं कुर्यात् ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

चूर्णयित्वा कफान्विते ।
तुंबरूण्यभयाहिंगुपौष्करं लवणत्रयम् ॥ ३५ ॥
यवक्काथांबुना पेयं हृत्पार्श्वार्त्यपतंत्रके ।
हिंगु सौवर्चलं शुंठी दाडिमं साम्लवेतसम् ॥ ३६ ॥
पिबेद्वा श्लेष्मपवनहृद्रोगोक्तं च शस्यते ।

कफयुक्ते तुंबुर्वादिकं चूर्णयित्वा यवक्काथजलेन पेयम् । हृत्पीडादिषु । अथवा हिंग्वादिकं यवक्काथांबुना पेयम् । श्लेष्मवाते हृद्रोगे च यत्कथितं तच्च शस्यते ।

आयामयोरर्दितवद्बाह्याभ्यांतरयोः क्रिया ॥ ३७ ॥
तैलद्रोण्यां च शयनमांतरोऽत्र सुदुस्तरः ।

आयामयोर्बाह्याभ्यंतरयोरर्दितवत्क्रिया स्यात् । तैलद्रोण्यां शयनं चात्रानयोर्मध्यादांतर आयामः सुष्टुदुस्तरोऽतिकष्टसाध्यः ।

विवर्णदंतवदनः स्रस्तांगो नष्टचेतनः ॥ ३८ ॥
प्रस्विद्यंश्च धनुःकंभी दशरात्रं न जीवति ।

विवर्णदंतास्यः स्रस्तांगादिः प्रस्वेदवांश्च धनुष्कंभी दशरात्रं न जीवति ।

वेगेष्वतोन्यथा जीवेन्मंदेषु विनतो जडः ॥ ३९ ॥
खंजः कुणिः पक्षहतः पंगुलो विकलोऽथवा ।
हनुस्रंसे हनूस्निग्धस्विन्नौ स्वस्थानमानयेत् ॥ ४० ॥
उन्नामयेच्च कुशलश्चिबुकं विवृते मुखे ।
नामयेत्संवृते शेषमेकायामवदाचरेत् ॥ ४१ ॥

अतोऽन्यथा विवर्णदंतादिविपर्ययेण तथा मंदेषु वेगेषु सत्सु जीवेत् । जीवंश्च विनतादिगुणः स्यात् । हनुस्रंसे तु हनूस्निग्धस्विन्नौ संतौ स्वस्थानं प्रापयेत् । कुशलो भिषग्विवृते मुखे सति चिबुकमूर्ध्वं नामयेत् । शेषं चिकित्सितमेकायामवदाचरेत् । अर्दितवदाचरेत् ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

जिव्हास्तंभे यथावस्थं कार्यं वातचिकित्सितम् ।

जिव्हायाः स्तंभे सति यथावस्थं वातस्योपक्रमः कार्यः । स्नेहनस्वेदान्वितः ।

अर्दिते नावनं मूर्ध्नि तैलं श्रोत्राक्षितर्पणम् ॥ ४२ ॥
सशोफे वमनं दाहरागयुक्ते सिराव्यधः ।

अर्दिते नावनादि चिकित्सितं । शोफान्विते सति वमनं कार्यम् । दाहादियुक्ते सति सिराव्यधः ।

स्नेहनं स्नेहसंयुक्तं पक्षाघाते विरेचनम् ॥ ४३ ॥

पक्षाघाते स्नेहनं तथा विरेकः कार्यः स्नेहान्वितः ।

अवबाहौ हितं नस्यं स्नेहश्रोत्तरभक्तिकः ।

अवबाहौ नस्यादि हितम् । आमे तूपवास एव हित इत्युवाच संग्रहे ।

ऊरुस्तंभे न च स्नेहो न च संशोधनं हितम् ॥ ४४ ॥
श्लेष्माममेदोबाहुल्याद्युक्त्या तत्क्षपणान्यतः ।
कुर्याद्रूक्षोपचारश्च यवश्यामाककोद्रवाः ॥ ४५ ॥
शाकैरलवणैः शस्ताः किंचित्तैलैर्जलैः शृतैः ।
जांगलैरघृतैर्मांसैर्मध्वंभोरिष्टपायिनः ॥ ४६ ॥
वत्सकादिर्हरिद्रादिर्वचादिर्वा ससैंधवैः ।
आमवाते सुखांभोभिः पेयः षट्चरणोऽथवा ॥ ४७ ॥

ऊरुस्तंभे तु स्नेहादि न हितं श्लेष्माममेदोबाहुल्यात् । अस्माच्च हेतोस्तयोराम-श्लेष्मणोः क्षपणानि क्षयकारणानि युंज्यात् । रूक्षोपचारार्थं मध्वंभोरिष्टपायिनो यवादयः शाकैरीषल्लवणैस्तथा जलैः शृतैस्तथा मांसैः सह । किंभूतैर्जांगलैस्तथा घृतरहितैर्हिताः ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

लिह्यात्क्षौद्रेण वा श्रेष्ठाचव्यतिक्ताकणाघनान् ।
कल्कं समधु वा चव्यपथ्याग्निसुरदारुजम् ॥ ४८ ॥
मूत्रैर्वा शीलयेत्पथ्यां गुग्गुलुं गिरिसंभवम् ।

अथवा क्षौद्रेण त्रिफलादिकं कल्कं लिह्यात् । चव्यादिकं वा कल्कं माक्षिकान्वितं लिह्यात् । अथवा गोमूत्रेण हरीतकीमभ्यसेत् । तथा गुग्गुलुं शिलाजतु वा शीलयेत् ।

व्योषाग्निमुस्तत्रिफलाविडंगैर्गुग्गुलुं समम् ॥ ४९ ॥
खादन् सर्वान् जयेद्व्याधीन् मेदःश्लेष्मामवातजान् ।

व्योषादिभिर्नवभिर्द्रव्यैर्गुग्गुलुं तुल्यं भक्षयन् सर्वान्मेदःश्लेष्मामवातजान् व्याधीन् हंति ।

शाम्यत्येवं कफाक्रांतः समेदस्कः प्रभंजनः ॥ ५० ॥
क्षारमूत्रान्वितान् स्वेदान् सेकानुद्वर्तनानि च ।
कुर्याल्लिह्याच्च मूत्राढ्यैः करंजफलसर्षपैः ॥ ५१ ॥
मूलैर्वाप्यर्कतर्कारीनिंबजैः ससुराह्वयैः ।
सक्षौद्रसर्षपापक्कलोष्ठवल्मीकमृत्तिकैः ॥ ५२ ॥

एवं प्रागुक्ते क्रियाक्रमे कृते सति कफावृतो मरुत् समेदस्कश्च शाम्यति । तथा क्षारमूत्रयुतान् स्वेदादीन् कुर्यात् । तथा करंजफलसर्षपैः प्रभूतमूत्रालोडितैर्लिंपेत् । अथवा मूलैरर्कादिजैः क्षौद्रादियुतैर्लिंपेत् ।

कफक्षयार्थं व्यायामे सह्ये चैनं प्रवर्तयेत् ।
स्थलान्युल्लंघयेन्नारीः शक्तितः परिशीलयेत् ॥ ५३ ॥
स्थिरतोयं सरःक्षेमं प्रतिस्रोतो नदीं तरेत् ।
श्लेष्ममेदःक्षये चात्र स्नेहादीनवचारयेत् ॥ ५४ ॥

एनमूरुस्तंभिणं सोढुं शक्ये व्यायामे मेदःकफक्षयाय प्रवर्तयेत् । शक्य इति शक्तिसहोश्चेतियत् । व्यायामं शनैः कारयेदित्यर्थः । तमेव व्यायाममा-

Indira Gandhi National Centre for the Arts

ह। स्थलान्युलंघयेत्। नारीर्यथाशक्ति शीलयेत्। स्थिरतोयं सरस्तरेत्। क्षेमं ग्राहादिरहितम्। तथा नदींस्तरेत्। कथं। प्रतिस्रोतः स्रोतोऽभिमुखं। श्लेष्ममेदःक्षये सत्यस्मिन् स्नेहादीनवचारयेत्।

स्थानदूष्यादि चालोच्य कार्या शेषेष्वपि क्रिया।

शेषेषु च वातरोगेषु स्थानदूष्यादीन्निरूप्य चिकित्सितं कार्यम्।

सहचरं सुरदारुसनागरं क्वथितमंभसि तैलविमिश्रितम्।
पवनपीडितदेहगतिः पिबेद् द्रुतविलंबितगो भवतीच्छया ९५

सहचरादि क्वथितं तैलयुतं पिबन्मारुतार्दितशरीर इच्छया द्रुतगमनो विलंबितगमनो वा भवति। तंत्रकृता सुमतिनैतद्वा तस्य वृत्तस्य नामापि श्लिष्टं कृत्वा निबद्धं। द्रुतविलंबिताख्यमेतद्वृत्तं। तस्य च लक्षणं। द्रुतविलंबितमाह नभौ भरौ इति।

रास्नामहौषधद्वीपिपिप्पलीशठिपौष्करम्।
पिष्ट्वा विपाचयेत्सर्पिर्वातरोगहरं परम् ॥ ९६ ॥

रास्नादीन् पिष्ट्वा सर्पिः सामान्यपरिभाषया विपाचयेत्। तच्च सुष्टु वातरोगहृत्।

निंबामृतावृषपटोलनिदिग्धिकानां
भागान् पृथग् दश पलान् विपचेद्घटेऽपाम्।
अष्टांशशेषितरसेन पुनश्च तेन
प्रस्थं घृतस्य विपचेत्पिचुभागकल्कैः ॥ ९७ ॥
पाठाविडंगसुरदारुगजोपकुल्या-
द्विक्षारनागरनिशामिशिचव्यकुष्टैः।
तेजोवतीमरिचवत्सकदीप्यकाग्नि
रोहिण्यरुष्करवचाकणमूलयुक्तैः ॥ ९८ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

मंजिष्ठयातिविषया विषया यवान्या
संशुद्धगुग्गुलुपलैरपि पंचसंख्यैः ।
तत्सेवितं प्रधमति प्रबलं समीरं
संध्यस्थिमज्जगतमप्यथ कुष्टमीदृक् ॥ ५९ ॥
नाडीव्रणार्बुदभगंदरगंडमाला
जत्रूर्ध्वसर्वगदगुल्मगुदोत्थमेहान् ।
यक्ष्मारुचिश्वसनपीनसकासशोफ
हृत्पांडुरोगमदविद्रधिवातरक्तम् ॥ ६० ॥

निंबादीनां पृथक् पृथग् दशपलानंबुद्रोणे पचेत् । तेनाष्टांशशेषेण क्वाथेन पाठादिभिर्यवान्यंतैः कल्कीकृतैः कर्षांशैः श्रेष्ठगुग्गुलुपलैश्च पंचभिः सर्पिषः पुनः प्रस्थं विपचेत् । तत्सर्पिः शीलितं वायुमतिबलं संध्यादिगतमपि पराकरोति । कुष्टमपीदृशं संध्यादिगतं हन्ति । तथा नाडीव्रणादीन् शमयति । वसंततिलकावृत्तम् ।

बलाबिल्वशृते क्षीरे घृतमंडं विपाचयेत् ।
तस्य शुक्तिः प्रकुंचो वा नस्यं वाते शिरोगते ॥ ६१ ॥

बलाबिल्वाभ्यां क्वथिते क्षीरे घृतमंडं विपाचयेत् । तस्य घृतमंडस्य पक्वस्य कर्षद्वयं पलं वा नस्यं शिरोगते वाते प्रयोक्तव्यम् ।

तद्वत्सिद्धा वसा नक्रमत्स्यकूर्मचुलूकजा ।
विशेषेण प्रयोक्तव्या केवले मातरिश्वनि ॥ ६२ ॥

तद्वन्मंडवन्नक्रादिजा वसा केवले वाते विशेषेण प्रयोज्या ।

जीर्णपिण्याकंपंचमूलंपृथक्चक्वाथ्यंक्वाथाभ्यामेकतस्तैलमाभ्याम् ।
क्षीरादष्टांशंपाचयेत्तेनपानाद्वातान्श्येयुःश्लेष्मयुक्ताविशेषात् ॥ ६३ ॥

जीर्णं पिण्याकं पंचमूलं च पृथक् पृथक् क्वाथ्य क्वाथाभ्यामेताभ्यां तैलमेकत

एकस्मिन् तैलं मिश्रितं क्षीरादष्टांशं पाचयेत् । तेन तैलेन वाता नश्यंति । विशेषेण कफयुक्ताः । वैश्वदेवी ।

प्रसारिणी तुलाक्वाथे तैलप्रस्थं पयः समम् ।
द्विमेदामिशिमंजिष्टाकुष्टरास्नाकुचंदनैः ॥ ६४ ॥
जीवकर्षभकाकोलीयुगुलामरदारुभिः ।
कल्कितैर्विपचेत्सर्वमारुतामयनाशनम् ॥ ६५ ॥

प्रसारिणीतुलाक्वाथे तैलप्रस्थं क्षीरसमं द्विमेदादिभिः कल्कितैः सामान्यपरिभाषयोक्तकल्कप्रमाणैर्विपचेत् । तच्चाशेषवातरोगघ्नम् ।

समूलशाखस्य सहाचरस्य तुलां समेतां दशमूलतश्च
पलानि पंचाशदभीरुतश्च पादावशेषं विपचेद्वहेऽपाम् ।
तत्रसेव्यनखकुष्टहिमैलास्पृक्प्रियंगुनलिकांबुशिलाजैः
लोहितानलदलोहसुराह्वैः कोपनामिशितुरुष्कनतैश्च ॥६६॥
तुल्यंक्षीरंपालिकैस्तैलपात्रंसिद्धंकृच्छ्रान्शीलितंहंतिवातान् ।
कंपाक्षेपस्तंभशोषादियुक्तान्गुल्मोन्मादौपीनसंयोनिरोगान् ॥६७

सहाचरस्य मूलशाखान्वितस्य तुलां समेतां दशमूलाच्च तुलां शतावर्याः पलानि पंचाशज्जलस्य चतुर्द्रोणे पादावशेषं पचेत् । तस्मिन्पादावशेषे सेव्यादिभिः पालिकैस्तैलाढकं तुल्यक्षीरं सिद्धं शीलितं कृच्छ्रान्मारुतान् कंपादियुतान् गुल्मादींश्च हंति । स्वागताशालिन्यौ वृत्ते ।

सहाचरतुलायास्तु रसे तैलाढकं पचेत् ।
मूलकल्काद्दशपलं पयो दत्वा चतुर्गुणम् ॥ ६८ ॥
अथवा नतषड्ग्रंथास्थिराकुष्टसुराह्वयान् ।
शैलानलदशैलेयशताह्वारक्तचंदनान् ॥ ६९ ॥
सिद्धेऽस्मिन् शर्कराचूर्णादष्टादशपलं क्षिपेत् ।
भेडस्य संमतं तैलं तत्कृच्छ्रानिलामयान् ॥ ७० ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

वस्तकुंडलिकोन्मादगुल्मवर्ध्मादिकान् जयेत् ।

सहचरतुलायाः क्वाथे तैलाढकं पचेत् । मूलकल्कादशपलानि क्षीरं तैलचतुर्गुणं दध्यादिल्येवं पाकः । अथवा सहाचरतुलायाः क्वाथे नतादिभिः सिद्धेऽस्मिन् तैले शर्करारजसोऽष्टादशपलानि क्षिपेत् । एतच्च भेडाख्यस्य महर्षेः संमतं दारुणान् वस्तरोगान् वातकुंडलिकादींश्च जयेत् ।

बलाशतं छिन्नरुहापादं रास्नाष्टभागिकम् ॥ ७१ ॥
जलाढक शते पक्त्वा शतभागस्थिते रसे ।
दधिमस्त्विक्षुनिर्यासशुक्तैस्तैलाढकं समैः ॥ ७२ ॥
पचेत्साजपयोधाशं कल्कैरेभिः पलोन्मितैः ।
शठीसरलदार्वेलामंजिष्ठागुरुचंदनैः ॥ ७३ ॥
पद्मकातिबलामुस्ताशूर्पपर्णीहरेणुभिः ।
यष्ट्याह्वसुरसव्याघ्रनखर्षभकजीवकैः ॥ ७४ ॥
पलाशरसकस्तूरीनीलिकाजातिकोशकैः ।
स्पृक्काकुंकुमशैलेयजाती कटुफलांबुभिः ॥ ७५ ॥
त्वक्कुंदरुककर्पूरतुरुष्कश्रीनिवासकैः ।
लवंगनखकंकोलकुष्ठमांसीप्रियंगुभिः ॥ ७६ ॥
स्थौणेयतगरध्यामवचामदनकप्लवैः ।
सनागकेसरैः सिद्धे दद्याच्चात्रावतारिते ॥ ७७ ॥
पत्रकल्कं ततः पूतं विधिना तत्प्रयोजितम् ।
कासश्वासज्वरच्छर्दिमूर्छागुल्मक्षतक्षयान् ॥ ७८ ॥
प्लीहशोषमपस्मारमलक्ष्मीं च प्रणाशयेत् ।
बलातैलमिदं श्रेष्ठं वातव्याधिविनाशनम् ॥ ७९ ॥

बलायाः शतं गुडूच्याः पंचविंशतिपलानि रास्नायाः सार्धानि द्वादशपलानि । एतच्च जलाढकशते पक्त्वाऽऽढकमात्रस्थिते क्वाथे दध्यादिभि-

Indira Gandhi National Centre for the Arts

स्तुल्यैस्तैलाढकमजाक्षीरस्यार्धाढकं षठ्यादिभिः पलोन्मितैः पचेत् । कटुफलं लघु कंकोलकं । प्लवः कुटंनटः । अवतारिते चास्मिन्पत्रकल्कं दद्यात् । अनंतरमेतत्तैलं विधिना प्रयोजितं कासादीन्हंति । एतद्बलातैलं श्रेष्ठं गर्भव्यापदुक्तब्रिलातैलात् । तथा वातरोगघ्नं ।

पाने नस्येऽन्वासनेऽभ्यंजने च स्नेहाः काले सम्यगेते प्रयुक्ताः।
दुष्टान्वातानाशु शांतिं नयेयुर्वंध्या नारीः पुत्रभाजश्च कुर्युः ८०

एते पूर्वोक्ताः स्नेहाः पानादिषु कालेऽवसरे प्रयुक्ता दुष्टान् वातान् द्रागेव शमयेयुः। वंध्याश्च नारीः पुत्रभाजो विदध्युः । शालिनीवृत्तम् ।

स्नेहस्वेदैर्द्रुतः श्लेष्मा यदा पक्वाशये स्थितः ।
पित्तं वा दर्शयेद्रूपं बस्तिभिस्तं विनिर्जयेत् ॥ ८१ ॥

स्नेहस्वेदैश्च यदा कफो द्रुतो द्रवत्वं प्राप्तः पक्वाशयस्थो रूपं दर्शयेदथवा पित्तं रूपं दर्शयेत्तं कफं पित्तं वा बस्तिभिर्विनिर्जयेत् ।

इति श्रीमृगांकदत्तपुत्रश्रीमदरुणदत्तविरचितायामष्टांगहृदयटीकायां सर्वांगसुंदराख्यायां चिकित्सितस्थाने वातव्याधिचिकित्सितमेकविंशोऽध्यायः २१

द्वाविंशोऽध्यायः ।

अस्मादनंतरं वातरक्तचिकित्सितमारभ्यते । यतो वातशोणिताख्यो व्याधिः प्रायो वातव्याधिरेव वा शोणितयुक्तेन वायुना कृतत्वाद्बहुवक्तव्याच्च पृथगस्योपदेश इत्यत आह ।

अथातो वातशोणितचिकित्सितं व्याख्यास्यामः ।
वातशोणितिनो रक्तं स्निग्धस्य बहुशो हरेत् ।
अल्पाल्पं पालयन् वायुं यथादोषं यथाबलम् ॥ १ ॥

वातशोणितिनो नरस्य स्निग्धस्य सतो बहून् वारान् लोहितमल्पाल्पं

Indira Gandhi National Centre for the Arts

हरेद्वातकोपभयात् । अत एवाह । पालयन्वायुं । तथा यथादोषं दोषानतिक्रमेण तद्वी बलानतिक्रमेण यथादोषमित्युपलक्षणार्थं । दूष्याद्यनतिक्रमेणापि रक्तं हरेत् ।

रुग्रागतोददाहेषु जलौकाभिर्विनिर्हरेत् ।
शृंगतुंबैश्चिमिचिमाकंडूरुग्दूयनान्वितम् ॥ २ ॥
प्रच्छानेन सिराभिर्वा देशाद्देशांतरं व्रजेत् ।

रुग्रागादिषु सत्सु जलौकाभी रुधिरं हरेत् । चिमिचिमान्वितं रक्तंशृंगतुंबैर्हरेत् । देशाद्देशांतरं गच्छेदसृक् प्रच्छानेन शिरया वा हरेत् ।

अंगम्लानौ तु नै स्राव्यं रूक्षं वातोत्तरं च यत् ॥ ३ ॥
गंभीरं श्वयथुं स्तंभं कंपस्नायुशिरामयान् ।
ग्लानिमन्यांश्च वातोत्थान् कुर्याद्वायुरसृक्क्षयात् ॥ ४ ॥

अंगम्लानौ तु सत्यां न स्राव्यं स्यात् । तथा रूक्षं वातोत्तरं च यद्रक्तं तदपि न स्राव्यं । रूक्षं सति वातचिकित्सितं सेवेत । ननु कस्माद्रक्तस्रावो न विधीयत इत्याह । वायुरसृक्क्षयाद्गंभीरशोफादीन् कुर्यात् ।

विरेच्यः स्नेहयित्वा तु स्नेहयुक्तैर्विरेचनैः ।

।विरेचनयोग्यः पुरुषः स्नेहयित्वा विरेचनद्रव्यैः स्नेहयुतैर्विरेचनीयः ।

वातोत्तरे वातरक्ते पुराणं पाययेद्घृतम् ॥ ५ ॥

वाताधिके वातरक्ते पुराणं घृतं पाययेत् ।

श्रावणीक्षीरकाकोलीक्षीरिणीजीवकैः समैः ।
सिद्धं सर्षपकैः सर्पिः सक्षीरं वातरक्तनुत् ॥ ६ ॥

श्रावण्यादिभिः कल्कीकृतैः सिद्धं घृतं कटुयुक्तं वातशोणितहृत् ।

द्राक्षामधूकवारिभ्यां सिद्धं वा सासितोपलम् ।
घृतं पिबेत्तथा क्षीरं गुडूचीस्वरसे सृतम् ॥ ७ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

तैलं पयः शर्करां च पाययेद्वासुमूर्छितम् ।

द्राक्षामधुकयोः क्वाथे सिद्धं वा घृतं सशर्करं पिबेत् । क्षीरं च गुडूचीस्वरसे क्वथितं पिबेत् । तैलादि वा संमिश्रितं पाययेत् ।

बलाशतावरीरास्नादशमूलैः सपीलुभिः ॥ ८ ॥
श्यामैरंडस्थिराभिश्च वातार्तिघ्नं शृतं पयः ।

बलादिभिः शृतं पयो वातरुजां नाशनं स्यात् ।

धारोष्णं मूत्रयुक्तं वा क्षीरं दोषानुलोमनम् ॥ ९ ॥

धारोष्णं क्षीरं गोमूत्रयुक्तं वा दोषानुलोमनं स्यात् ।

पैत्ते पक्का वरीतिक्तापटोलत्रिफलामृताः ।
पिबेद्घृतं वा क्षीरं वा स्वादु तिक्तकसाधितम् ॥ १० ॥

पैत्ते पित्ताधिके वातशोणिते शतावर्यादीन् पक्का पिबेत् । स्वादुतिक्तद्रव्यैः साधितं घृतं क्षीरं वा पिबेत् ।

क्षीरेणैरंडतैलं च प्रयोगेण पिबेन्नरः ।
बहुदोषो विरेकार्थं जीर्णे क्षीरोदनाशनः ॥ ११ ॥

बहुदोषो नरो विरेकार्थमेरंडतैलं क्षीरेण पिबेत् । जीर्णे तस्मिन् क्षीरोदनाशी स्यात् ।

कषायमभयानां वा पाययेद्घृतभर्जितम् ।
क्षीरानुपानं त्रिवृताचूर्णं द्राक्षारसेन वा ॥ १२ ॥

अथवा हरीतकीनां क्वाथं घृतभर्जितं पाययेत् । त्रिवृतामूलचूर्णं क्षीरानुपानं द्राक्षारसेन वा पाययेत् ।

निर्हरेद्वा मलं तस्य सघृतैः क्षीरबस्तिभिः ।
नहि बस्तिसमं किंचिद्वातरक्तचिकित्सितम् । १३ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

विशेषात्पायुपार्श्वोरूपर्वास्थिजठरार्तिषु ।

अथवा तस्य वातरक्तवतो मलं क्षीरबस्तिभिर्घृतान्वितैर्निर्हरेत् । यस्माद्वस्तितुल्यं नान्यद्वातरक्तचिकित्सितमस्ति । विशेषेण पार्श्वादिपीडासु बस्तिर्हितः ।

मुस्तद्राक्षाहरिद्राणां पिबेत्क्वाथं कफोल्बणे ॥ १४ ॥
सक्षौद्रं त्रिफलाया वा गुडूचीं वा यथा तथा ।

मुस्तादीनां क्वाथं माक्षिकान्वितं कफोत्तरे वातशोणिते पिबेत् । त्रिफलायाः क्वाथं वा समाक्षिकं पिबेत् । सर्वेण प्रकारेण वा गुडूचीं वा पिबेत् ।

यथार्हस्नेहपीतं च वामितं मृदु रूक्षयेत् ॥ १५ ॥

यो यस्यार्हः स्नेहस्तं पीतवंतं कृतवमनं च मृदु कृत्वा रूक्षयेत् ।

त्रिफलाव्योषपत्रैलात्वक्क्षीरीचित्रकं वचाम् ।
विडंगं पिप्पलीमूलं लोमशं वृषकं त्वचम् ॥ १६ ॥
ऋद्धिं लांगलिकं चव्यं समभागानि पेषयेत् ।
कल्कैर्लिप्त्वायसीं पात्रीं मध्यान्हे भक्षयेदिदम् ॥ १७ ॥
वातास्रे सर्वदोषेऽपि परं शूलान्विते हितम् ।

त्रिफलादीनि समांशानि जलेन पेषयेत् । पिष्ट्वा च प्रभाते लौहीं पात्रीं लिप्त्वा मध्यान्ह इदं भक्षयेत् । एतच्च वातरक्ते सर्वदोषेऽपि परं शूलयुक्ते हितम् ।

कोकिलाक्षकनिर्यूहः पीतस्तच्छाकभोजिना ॥ १८ ॥
कृपाभ्यास इव क्रोधं वातरक्तं नियच्छति ।

कोकिलाक्षकशाकभोजिना कोकिलाक्षकक्वाथः पीतो वातरक्तं शमयति । कृपाभ्यासः क्रोधं यथा ।

पंचमूलस्य धात्र्या वा रसैर्लैलीतकीं वसाम् ॥ १९ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

खुडं सुरूढमभ्यंगे ब्रह्मचारी पिबन् जयेत् ।

पंचमूलस्य रसैरामलकरसैर्वा लेलीतकीं वसां ब्रह्मचारी पिबन् शरीरे खुडं सुस्थिरीभूतमपि जयेत् ।

इत्याभ्यंतरमुद्दिष्टं कर्म बाह्यमतः परम् ॥ २० ॥

इत्येवमाभ्यंतरं कर्मचिकित्सितमुक्तम् । अतः परं बाह्यं कर्मोच्यते ।

आरनालाढके तैलं पादसर्जरसं सृतम् ।
प्रभूते खजितं तोये ज्वरदाहार्तिनुत्परम् ॥ २१ ॥

कांजिकस्याढके तैलं चतुर्भागं सर्जरसं पक्वं प्रभूते जले मथितं परं ज्वरदाहार्तिनुत् ।

समधूच्छिष्टमंजिष्टं ससर्जरससारिवम् ।
पिंडतैलं तदभ्यंगाद्वातरक्तरुजापहम् ॥ २२ ॥

पूर्वोक्तं तैलं पक्वं सहमधूच्छिष्टं मंजिष्टासर्जरससारिवाभिरेवापरूपाभिर्वर्तते यत्तदेवंभूतं सत्पिंडतैलमुच्यते । तच्चाभ्यंगाद्वातरक्तरुजाहरम् ।

दशमूले सृतं क्षीरं सद्यः शूलनिवारणम् ।
परिषेकोऽनिलप्राये तद्वत्कोष्णेन सर्पिषा ॥ २३ ॥

दशमूलेन क्षीरं सिद्धं शीघ्रमेव शूलहृत् परिषेकेनेत्यर्थादवगम्यते । अत एवाह परिषेकोऽनिलप्राये तथैव कोष्णेन सर्पिषा ।

स्नेहैर्मधुरसिद्धैर्वा चतुर्भिः परिषेचयेत् ।
स्तंभाक्षेपकशूलार्तं कोष्णैर्दाहे तु शीतलैः ॥ २४ ॥

अथवा स्तंभादिभिरार्तं नरं चतुर्भिर्मधुरद्रव्यसाधितैः स्नेहैः कोष्णैः परिषेचयेत् । दाहे पुनस्तैरेव शीतैः परिषेचयेत् ।

तद्वद्गव्याविकच्छागैः क्षीरैस्तैलविमिश्रितैः ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

गव्याविकैच्छागैः क्षीरैस्तैलविमिश्रितैः स्तंभाक्षेपकहिध्मासु शूलार्तं तद्वत्भाग्वत्परिषेचयेत्। दाहे पुनरेतैरेव शीतैः परिषेचयेत्।

निकाथैर्जीवनीयानां पंचमूलस्य वा लघोः ॥ २५ ॥

जीवनीयानां द्रव्याणां निकाथैर्लघोर्वा पंचमूलस्य काथैः कोष्णैः स्तंभार्यार्तं परिषेचयेत्। दाहे तु शीतलैः।

द्राक्षेक्षुरसमद्यानि दधिमस्त्वम्लकांजिकम्।
सेकार्थं तंडुलक्षौद्र शर्करांभश्च शस्यते ॥ २६ ॥

दाहे द्राक्षारस इक्षुरसमद्यानि दधिमस्त्वम्लकांजिकं सेकार्थं शस्यते। तथा तंडुलांभः क्षौद्रांभः शर्करांभश्च सेकार्थं शस्यते।

प्रियाः प्रियंवदा नार्यश्चंदनार्द्रकरस्तनाः।
स्पर्शशीताः सुखस्पर्शा घ्नंति दाहं रुजं क्लमम् ॥ २७ ॥

नार्यः प्रिया वल्लभाः प्रियवचसश्चंदनेनार्द्राः कराश्च स्तना यासां ता एवंविधाः स्पर्शेन शीताः सुखस्पर्शाश्च दाहं क्लमं च घ्नंति।

सरागे सरुजे दाहे रक्तं हृत्वा प्रलेपयेत्।
प्रपौंडरीकमंजिष्ठादार्वीमधुकचंदनैः ॥ २८ ॥
ससितोपलकासेक्षुमसूरैरकसक्तुभिः।
लेपो रुग्दाहवीसर्परागशोफनिबर्हणः ॥ २९ ॥

दाहे सरागे सरुजे सति रक्तं हृत्वा प्रपौंडरीकादिभिर्लेपः कार्यः। स च लेपो रुग्दाहादिनिबर्हणः। दार्वी दारुहरिद्रा। मधुकं यष्टीमधु। सितोपला शर्करा। एरकासक्तुः एरकाबीजसक्तुः।

वातघ्नैः साधितः स्निग्धः कृशरो मुद्गपायसः।
तिलसर्षपपिंडश्च शूलघ्नमुपनाहनम् ॥ ३० ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

कृशरस्तिलमुद्गादिकृतो वातघ्नैः साधितो मुद्गपायसो मुद्गैः क्षीरे यं मिश्रितस्तिलसर्षपपिंडश्च एतदुपनाहनं शूलघ्नम्।

औदक प्रसहानूपवेसवाराः सुसंस्कृताः ।
जीवनीयौषधस्नेहयुक्ताः स्युरुपनाहने ॥ ३१ ॥
स्तंभतोदरुगायामशोफांगग्रहनाशनाः ।
जीवनीयौषधैः सिद्धा सपयस्का वसाऽपि वा ॥ ३२ ॥

औदकाद्या जीवनीयौषधैः साधिताः स्नेहयुक्ताः सुसंस्कृता उपनाहेन स्तंभादिनाशनाः स्युः । अथवा औदकादीनां वसा जीवनीयौषधैः सिद्धाः सपयस्का स्तंभादिनाशना स्यात्।

घृतं सहचरान् मूलं जीवंतीच्छागलं पयः ।
लेपः पिष्ट्वा तिलास्तद्वद्भृष्टाः पयसि निर्वृताः ॥ ३३ ॥

सहचरीजीवंतीमूलकल्को घृतच्छागलपयोमिश्रो लेप उपयोगी भवति। भृष्टास्तिला भृष्टा भर्जिताः पयसि क्षीरे निर्वृताः प्रक्षिप्तास्तद्वत् प्राग्वत् प्रलेपो योज्यः ।

क्षीरपिष्टक्षुमालेपमेरंडस्य फलानि वा ।
कुर्यात्शूलनिवृत्त्यर्थं शताह्वां वाऽनिलेऽधिके ॥ ३४ ॥

क्षुमामतसीं क्षीरेण पिष्टामधिकेऽनिलशूले शूलनिवृत्त्यर्थं लेपं कुर्यात् । यद्वा । एरंडस्य फलानि क्षीरपिष्टानि शूलनिवृत्त्यर्थं लेपं कुर्यात् । यद्वा । शताह्वां शतपुष्पां क्षीरे पिष्ट्वा शूलनिवृत्त्यर्थं लेपं कुर्यात् ।

मूत्रक्षारसुरापक्वं घृतमभ्यंजने हितम् ।

मूत्रादिभिः सिद्धं घृतमधिकेऽनिलेऽभ्यंजने हितम्।

सिद्धं समधुसूक्तं वा सेकाभ्यंगे

सूक्तं चुक्रं समाक्षीकं सेके परिषेकेऽभ्यंगे च हितम् ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

कफोत्तरे ॥ ३५ ॥

गृहधूमो वचा कुष्टं शताह्वा रजनीद्वयम् ।
प्रलेपः शूलनुद्वातरक्ते

वातकफोत्तरे वातरक्ते गृहधूमादिप्रलेपो हितो भवति । शताह्वा शतपुष्पा । रजनीद्वयं हरिद्रे द्वे ।

वातकफोत्तरे ॥ ३६ ॥

मधुशिग्रोर्हितं तद्वद्बीजं धान्याम्लसंयुतम् ।

वातकफोत्तरे वातरक्ते मधुशिग्रोर्बीजं काञ्जिकसंयुक्तम् तद्वत् प्रलेपे हितम् ।

मुहूर्तलिप्तमम्लैश्च सिंचेद्वातकफोत्तरे ॥ ३७ ॥

वातकफोत्तरे वातरक्ते मुहूर्तलिप्तमर्थादेवं कांजिकपिष्टमधुशिग्रुबीजेन लिप्तमम्लैः सूक्तादिभिः सिंचेत् ।

उत्तानं लेपनाभ्यंगपरिषेकावगाहनैः ।

उत्तानं वातरक्तं लेपादिभिराचरेत् चिकित्सेत् ।

विरेकास्थापनैः स्नेहपानैर्गंभीरमाचरेत् ॥ ३८ ॥

गंभीरं वातशोणितं विरेकादिभिराचरेत् ।

वातश्लेष्मोत्तरे कोष्णा लेपाद्यास्तत्र शीतलैः ।
विदाहशोफरुक्कंडूविवृद्धिः स्तंभनाद्भवेत् ॥ ३९ ॥

वातश्लेष्मोत्तर उत्ताने वातशोणिते लेपाद्याः कोष्णा हिताः । तत्र तस्मिन्वातश्लेष्मोत्तरे शीतलैर्लेपनैः स्तंभनाद्विदाहादीनां विवृद्धिर्भवति ।

पित्तरक्तोत्तरे वातरक्ते लेपादयो हिमाः ।
उष्णैः शोषोपरुग्रागस्वेदापदरणोद्भवः ॥ ४० ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

वातरक्ते पित्तरक्तोत्तरे हिमाः शीता लेपादयो हिताः । तत्र पित्तरक्तोत्तरे वातरक्त उष्णैर्लेपैः प्लोषादयो भवंति ।

मधुयष्ट्याः पलशतं कषाये पादशेषिते ।
तैलाढकं समक्षीरं पचेत्कल्कैः पलोन्मितैः ॥ ४१ ॥
स्थिरातामलकीदूर्वापयस्याभीरुचंदनैः ।
लोहहंसपदीमांसीद्विमेदामधुपर्णिभिः ॥ ४२ ॥
काकोलीक्षीरकाकोलीशतपुष्पार्द्धिपद्मकैः ।
जीवंतीजीवकर्षभकत्वक्पत्रनखवालकैः ॥ ४३ ॥
प्रपौंडरीकमंजिष्ठासारिवैंद्रीवितुन्नकैः ।
चतुःप्रयोगं वातासृक्पित्तदाहज्वरार्तिनुत् ॥ ४४ ॥

मधुयष्ट्याः पलशतं क्वाथकल्पनया क्वथितं तस्मिन्कषाये पादशेषिते चतुर्भागविशिष्टे तैलस्याढकम् समक्षीरमाढकप्रमाणेन क्षीरेण तुल्यं स्थिरादिभिः पलोन्मितैः कल्कीकृतैर्युक्तं पचेत् । तत्तैलं चतुःप्रयोगं पाने नस्येऽनुवासने बस्तौ योजितं वातासृगादीनामर्तिनुद्भवेत् । स्थिरा शालिपर्णी । तामलकी भूधात्री । पयस्याऽर्कपुष्पी । अभीरुः शतावरी । लोहमगरु । हंसपादी त्रिपादी । कीटमांसी मधुपर्णी । गुडूची । ऐंद्री विशाला । वितुन्नकं परिपेलवम् ।

बलाकल्ककषायाभ्यां तैलं क्षीरसमं पचेत् ।
सहस्रशतपाकं तद्वातासृग्वातरोगनुत् ॥ ४५ ॥
रसायनं मुख्यतममिंद्रियाणां प्रसादनम् ।
जीवनं बृंहणं स्वर्यं शुक्रासृग्दोषनाशनम् ॥ ४६ ॥

बलाकषायेण कल्केन च तैलं क्षीरेण समं तुल्यं पचेत् । तत्तैलं सहस्रपाकं शतपाकं वातशोणितोद्भववातरक्तहरम् । तथा मुख्यतमं श्रेष्ठं तद्रसायनमिंद्रियाणां चक्षुरादीनां प्रसादनम् । प्रसादजनकं जीवनम् प्राणधारणम् । बृंहणमुपचयकरं । स्वर्यं स्वरकरम् । शुक्रासृग्दोषाणां नाशनम् ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

कुपिते मार्गसंरोधान्मेदसो वा कफस्य वा ।
अतिवृद्ध्यानिले शस्तमादौ स्नेहनबृंहणम् ॥ ४७ ॥
कृत्वा तत्राढ्यवातोक्तं वातशोणितिकं ततः ।
भेषजं स्नेहनं कुर्याद्यच्च रक्तप्रसादनम् ॥ ४८ ॥

अनिले वाते मेदसो वृद्ध्या कफस्य वाऽतिवृद्ध्या मार्गसंरोधात् कारणात् कुपिते स्नेहनबृंहणमौषधमादौ शस्तम् । तत्र मेदसावृते कफावृते वात आढ्यवातोक्तं यच्चिकित्सितम् तत्कार्यं । ततोनंतरं वातशोणितिकं स्नेहनं भेषजं कुर्यात् । यच्चापि रक्तस्य प्रसादनं तदपि कुर्यात् । वातशोणितचिकित्सितमुक्त्वा प्राणादिचिकित्सामाह ।

प्राणादिकोपे युगपद्यथोद्दिष्टं यथामयम् ।
यथासन्नं च भैषज्यं विकल्प्यं स्याद्यथाबलम् ॥ ४९ ॥

प्राणादीनां पंचानां युगपत्तुल्यकालं कोपे यथोद्दिष्टं यथोक्तं वातव्याधिचिकित्सानतिक्रमेण यथामयम् प्राणादिकोपजनितरोगाद्यपेक्ष्य यथासन्नं प्राणादीनामन्यतममासन्नमतिक्रम्य यस्मिन्नेव रोगे य एव प्राणादीनामन्यतममेव चिकित्सेत् । यथाबलं बलानतिक्रमेण प्राणादीनामन्यतमस्य बलिनः पूर्वं प्रतीकारं कुर्यात् । इत्येवमत्र भेषजमौषधं विकल्प्यं कल्पनीयं स्याद्भवेत् ।

नीते निरामतां सामे स्वेदलंघनपाचनैः ।
रूक्षैश्चालेपसेकाद्यैः कुर्यात्केवलवातनुत् ॥ ५० ॥

सामे वाते स्वेदादिभिस्तथा रूक्षैः सेकलेपादिभिर्निरामतां नीते पश्चात्केवलवातनुत् शुद्धवातचिकित्सितं कुर्यात् ।

शोषाक्षेपणसंकोचस्तंभस्वपनकंपनम् ।
हनुस्तंसोर्दितं खाञ्ज्यं पांगुल्यं खुडवातता ॥ ५१ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

संधिच्युतिः पक्षवधो मेदोमज्जास्थिगा गदाः ।
एते स्थानस्य गांभीर्यात्सिध्येयुर्यत्नतो न वा ॥ ९२ ॥
तस्माज्जयेन्नवानेतान् बलिनो निरुपद्रवान् ।

शोषोंगशोषः । अक्षेपणमायामः । संकोचोंगावयवानां । स्तंभो दंडवत् स्तब्धता । स्वपनमचैतन्यम् । कंपनं वेपथुः । हनुस्रंसो हनुभ्रंशः । अर्दितं वायुना वक्रीकृतं वक्रार्धं । खांज्यम् खंजता । पांगुल्यं पंगुत्वं । खुडवातं वातशोणितम् । संधीनां च्युतिः स्थानभ्रंशः । पक्षवधः पक्षाघातः । तथा ये गदा रोगा मेदोस्थिस्थास्तथा भवंति त एते स्थानस्य गांभीर्यभावेन जाता न वाऽचिरकालोत्पन्ना यत्नतः सिद्धेयुः । बलिनः पुंसः । तस्मादेतान्शोषादीन् शीघ्रजन्मनो जयेच्चिकित्सेत ।

वायौ पित्तावृते शीतामुष्णां च बहुशः क्रियाम् ॥ ९३ ॥
व्यत्यासाद् योजयेत्सर्पिर्जीवनीयं च पाययेत् ।
धन्वमांसं यवाः शालिर्विरेकः क्षीरवान्मृदुः ॥ ९४ ॥

वायौ पित्तावृते व्यत्यासात्पर्यायेण शीतामुष्णां च क्रियां बहुशः शतशो योजयेत् । तथा जीवनीयं सर्पिस्तमातुरं पाययेत् । अत्र च पित्तावृते वायौ धन्वमांसं जांगलं पिशितं योज्यम् । यवाः शालयश्च तथा क्षीरवान् क्षीरयुक्तो मृदुर्विरेको योज्यः ।

सक्षीरा बस्तयः क्षीरं पंचमूलबलासृतम् ।
कालेऽनुवासनं तैलं मधुरौषधसाधितम् ॥ ९५ ॥

अत्र पित्तावृते वायौ बस्तयः सक्षीरा योज्याः । पंचमूलं महत् । तेन बलासहितेन सृतं क्षीरं प्रयोक्तव्यम् । काले यथावसरमनुवासनयोग्यैर्मधुरौषधसाधितैस्तैलैरनुवासनं देयम् ।

यष्टीमधुबलातैलघृतक्षीरैश्च सेचनम् ।
पंचमूलकषायेण वारिणा शीतलेन च ॥ ९६ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

मधुयष्टितैलेन बलातैलेन घृतेन क्षीरेण च सेचनं हितम् । पंचमूलस्य कषायेण क्वाथेन वा शीतलेन वारिणा पित्तावृते वाते सेचनं योज्यम् ।

कफावृते यवान्नानि जांगला मृगपक्षिणः ।
स्वेदास्तीक्ष्णा निरूहाश्च वमनं सविरेचनम् ॥ ५७ ॥
पुराणसर्पिस्तैलं च तिलसर्षपजं हितम् ।

कफावृते यवान्नानि हितानि । जांगला मृगाः पक्षिणश्च तथा स्वेदा हिताः । तीक्ष्णा निरूहा आस्थापनविशेषाश्च । तीक्ष्णं वमनं सविरेचनं हितम् । पुराणं च सर्पिः सर्षपजं च तैलं हितम् ।

संसृष्टे कफपित्ताभ्यां पित्तमादौ विनिर्जयेत् ॥ ५८ ॥

कफपित्ताभ्यां द्वाभ्यां संसृष्टे वात आदावेव पित्तं विनिर्हरेत् । पश्चात्कफं वातयुक्तं जयेत् ।

कारयेद्रक्तसंसृष्टे वात शोणितिकीं क्रियाम् ।

रक्तसंसृष्टे वाते वातशोणितिकीं क्रियां कारयेत् ।

स्वेदाभ्यंगरसाः क्षीरं स्नेहो मांसावृते हितः ॥ ५९ ॥

मांसावृते स्वेदाभ्यंगमांसरसः क्षीरं स्नेहश्च यथायोगमेतद्धितम् ।

प्रमेहमेदोवातघ्नमाढ्यवाते भिषग्जितम् ।

आढ्यवाते मेदसा वृते वायौ प्रमेहघ्नं मेदोघ्नं वातघ्नं च भिषग्जितमौषधं हितम् ।

महास्नेहोस्थिमज्जस्थे पूर्वोक्तं रेतसावृते ॥ ६० ॥

अस्थिमज्जस्थे वाते महास्नेहो घृतमज्जावसातैलैः सिद्धो यद्वा नारायणादिर्हितः । रेतसावृते पूर्वोक्तवातव्याधौ शुक्रस्थवातोक्तं हितम् ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

अन्नावृते पाचनीयं वमनं दीपनं लघु ।

अन्नावृते पाचनीयमौषधं वमनं हितम् । दीपनीयमाग्नेयं यदौषधं लघु च प्रकृत्या तत्सर्वं हितम् ।

मूत्रावृते मूत्रलानि स्वेदा उत्तरबस्तयः ॥ ६१ ॥

मूत्रेणावृते वाते मूत्रलानि त्रपुसादीनि स्वेदाश्चोत्तरबस्तयो हिताः ।

एरंडतैलं वर्चःस्थे बस्तिस्नेहाश्च भेदिनः ।

वर्चसावृते वाते एरंडतैलं बस्तयश्च स्नेहाश्च भेदिनो हिताः ।

कफपित्ताविरुद्धं यद्यच्च वातानुलोमनम् ॥ ६२ ॥
सर्वस्थानावृते त्वाशु तत्कार्यं मातरिश्वनि ।

सर्वस्थानावृते मातरिश्वनि वायावाशु शीघ्रमेव यदौषधं कफपित्तयोरविरुद्धं वातस्य चानुलोमनं तत्कार्यम् ।

अनभिष्यंदि च स्निग्धं स्रोतसां शुद्धिकारणम् ॥ ६३ ॥
पाचना बस्तयः प्रायो मधुराः सानुवासनाः ।
प्रसमीक्ष्य बलाधिक्यं मृदुकार्यं विरेचनम् ॥ ६४ ॥
रसायनानां सर्वेषामुपयोगः प्रशस्यते ।
शिलाह्वस्य विशेषेण पयसा शुद्धगुग्गुलोः ॥ ६५ ॥
लेहो वा भार्ङ्गवस्तद्वदेकादशसिता सितः ।

तस्मिन् सर्वधात्वावृते मातरिश्वनि यदनभिष्यंदि स्निग्धं स्रोतसां यच्छुद्धिकरं तत्सर्वमत्र पानौषधं योज्यम् । पाचनसंज्ञा बस्तयो बाहुल्येन मधुराः सानुवासनाः स्नेहबस्तयश्च हिताः । बलस्याधिक्यं प्रसमीक्ष्य कृत्वा मृदुकायविरेचनं हितम् । सर्वेषां रसायनप्रयोगाणामुपयोगः शस्यते । विशेषेणास्यर्थं शिलाजतुनः पयसा सह प्रयोगः प्रशस्यते । तथा शुद्धस्य गुग्गु-

Indira Gandhi National Centre for the Arts

लोः प्रयोगः। भार्ङ्गवो लेह्यो ब्राह्मरसायनोक्तश्च्यवनप्राशो वा तद्वदेकादश सितासिते ब्राह्मरसायनोक्तः शस्यते।

अपाने त्वावृते सर्वं दीपनं ग्राहि भेषजम् ॥ ६६ ॥
वातानुलोमनं कार्यं मूत्राशयविशोधनम् ।

अपानेन वायौ येन केनचिदावृते सर्वं भेषजं दीपनमग्नेर्ग्राहि संग्रहणं वातस्यानुलोमनं मूत्राशयस्य बस्तेर्विशोधनं तत्सर्वं कार्यम्।

इति संक्षेपतः प्रोक्तमावृतानां चिकित्सितम् ॥ ६७ ॥
प्राणादीनां भिषक्कुर्याद्वितर्क्य स्वयमेव तत् ।

इत्यनंतरोक्तेन प्रकारेणावृतानां संक्षेपतश्चिकित्सितमौषधमुक्तम्। तत्प्राणादीनां पंचानामावृतानां चिकित्सितम्। तत्पूर्वोक्तं वितर्क्य भिषक् स्वयमेव विचार्य कुर्यात्

उदानं योजयेदूर्ध्वमपानं चानुलोमयेत् ॥ ६८ ॥
समानं शमयेद्विद्वांस्त्रिधा व्यानं च योजयेत् ।
प्राणो रक्ष्यश्चतुर्भ्योऽपि तत्स्थितौ देहसंस्थितिः ॥ ६९ ॥
स्वं स्वं स्थानं नयेदेवं वृत्तान्वातान्विमार्गगान् ।

उदानाख्यं वायुमूर्ध्वमेव योजयेत्। यतोऽसौ सदैवोर्ध्वगामी तथा प्रयतेत यथोर्ध्वगामी भवति। अपानाख्यं चानिलमनुलोमयेदधोगतिर्ह्ययं सदैव समीरस्तस्मादधोगमनं यथा यस्य संपद्येत्तथा चिकित्सितं कार्यमित्यर्थः। समानाख्यं वायुं विद्वान्वैद्यो वातघ्नैरौषधैः शमयेत्। अयमभिप्रायो ग्रंथकृतः। किल नास्योर्ध्वगामिता नैवाधोगामिता यथा संपद्यते तथा चिकित्सितं हितम्। किं तर्हि स्वस्थानप्रतिपत्तिरेवेत्येवं चिकित्सा कार्येति। व्यानाख्यं तु वायुं त्रिधा योजयेदूर्ध्वाधोमध्यगमनं यथाऽस्य शरीरे संपद्येत तथा चिकित्सा कार्येति। तथा प्राणो वायुश्चतुर्भ्योऽप्युदानापानसमानव्यानेभ्योऽपि सर्वप्रयत्नेन रक्ष्यः। यथोदानादिभिर्नास्य बाधा संपद्यते तथा चिकित्सा

Indira Gandhi National Centre for the Arts.

कार्येत्यर्थः। यतस्तस्य प्राणस्य स्थितौ सत्यां देहस्य शरीरस्य स्थिति जींवनं भवति प्राणं विना न जीवतीत्यर्थः। एवमनेन प्रकारेण वातान्वि- मार्गगानावृतान् स्वं स्वं स्थानं नयेत्।

सर्वं चावरणं पित्तरक्तसंसर्गवर्जितम् ॥ ७० ॥
रसायनविधानेन लशुनो हंति शीलितः।

सर्वमेवावरणं वातानां पित्तरक्तसंसर्गवर्जितं रसायनविधिना शीलितो लशुनो हंति। एतेन पित्तरक्तसंसृष्टमावरणं वर्जयित्वा सर्वावरणान्यन्यानि लशुनः केवल एव निहंति।

पित्तावृते पित्तहरं मरुतश्चानुलोमनम् ॥ ७१ ॥

पित्तावृत उदानादौ पित्तहरं पवनस्य चानुलोमनं हितम्।

रक्तावृतेऽपि तद्वच्च खुडोक्तं यच्च भेषजम्।
रक्तपित्तानिलहरं विविधं च रसायनम् ॥ ७२ ॥

रक्तावृते तद्वत् पित्तहरं तथैव मारुतानुलोमनं हितम्। यच्च खुडोक्तं वातशोणितोक्तं भेषजं तथा पित्तरक्तानिलहरं च हितम्। विविधं रसायनं च। विविधं नानाप्रकारं सर्वदोषदूष्यादिकं चालोक्य यथायोगं विधेयम्।

यथानिदानं निर्दिष्टमिति सम्यक्चिकित्सितम्।
आयुर्वेदफलं स्थानमेतत्सद्योऽर्त्तिनाशनम् ॥ ७३ ॥

इत्यनेन प्रकारेण यथानिदानं निदानानतिक्रमेण यथोद्देशस्तथा निर्देशः। अनया रीत्या सर्वमेव चिकित्सितं निर्दिष्टमेतच्चायुर्वेदफलभूतं स्थानमेतदु- पदेशेन सद्योऽर्तिनाशनाद्धेतोः।

चिकित्सितं हितं पथ्यं प्रायश्चित्तं भिषग्जितम्।
भेषजं शमनं शस्तं पर्यायैः स्मृतमौषधम् ॥ ७४ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

चिकित्सितादय औषधस्य पर्यायाः स्मृता इति ।

इति श्रीमृगांकदत्तपुत्रश्रीमदरुणदत्तविरचितायामष्टांगहृदयटीकायां सर्वसुंदराख्यायां चिकित्सितस्थाने वातशोणिताचिकित्साख्यो द्वाविंशोऽध्यायः ॥ २२ ॥

IGNCA RAR
ACC. No. 951

Indira Gandhi National Centre for the Arts